परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

❊ जन्मदिवस 19–03–1971 ❊ मुनिदीक्षा–11–05–1989 ❊ आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

जैन शिलालेखसंग्रह

= 03

संग्रहकर्त्ता
पण्डित विजयमूर्त्ति

प्रकाशक
माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला समिति
मुम्बई (महाराष्ट्र)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त-शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त-चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि-परिवार

माणिकचन्द्र-दिगम्बर-जैनग्रन्थमाला, पुष्प ४६.

जैन-शिलालेखसंग्रह

(तृतीय भाग)

संग्रहकर्त्ता

पं० विजयमूर्ति एम० ए० शास्त्राचार्य

प्रस्तावना (द्वितीय-तृतीय भाग की) लेखक

डा० गुलाबचन्द्र चौधरी एम० ए०, पी-एच० डी०, आचार्य

पुस्तकाध्यक्ष एवं प्राध्यापक

नवनालन्दा महाविहार, नालन्दा (पटना)

प्रकाशिका

श्रीमाणिकचन्द्र-दिगम्बर-जैनग्रन्थमाला समिति

मुम्बई

विक्रम संवत् २०१३

वीर नि० सं० २४८३

मूल्य.....

प्रकाशक—

मंत्री, माणिकचन्द्र-जैनग्रन्थमाला

हीराबाग, बम्बई ४

मार्च १९५७

मुद्रक—

शारदा मुद्रण

ठठेरी बाजार, वाराणसी

विषय-सूची

		पृष्ठ
प्राक्कथन		
प्रकाशकीय निवेदन		
प्रस्तावना		
१. जैनों का अभिलेख साहित्य : परिचय		१–६
२. मथुरा के लेख : एक अध्ययन		६–२२
३. जैन संघ का परिचय		२२–६६
४. राजवंश और जैनधर्म		६६–१२२
अ. उत्तर भारत के राजवंश	६६–७५	
आ. दक्षिण भारत के राजवंश	७५–११२	
इ. दक्षिण भारत के छोटे राजवंश एवं सामन्त गण	११२–१२२	
५. जैन सेनापति एवं मन्त्रिगण		१२२–१३३
६. जनवर्ग एवं जैनधर्म		१३४–१३८
७. जैनधर्म प्रतिपालक महिलाएँ		१३८–१४५
८. धार्मिक उदारता एवं सहिष्णुता		१४५–१४६
९. जैन धर्म पर संकट		१४६–१५०
१०. जैन धर्म के केन्द्र		१५०–१७
सहायक ग्रन्थनिर्देश		१७
लेख (तिथिक्रम से) नं० ३०३–८४६		१–५६
अनुक्रमणिका १ (लेखों के प्रातिस्थान)		१
अनुक्रमणिका २ (विशेष नाम सूची)		८

प्राक्-कथन

जैन-शिलालेखसंग्रह, भाग १, का जब मैंने आज से कोई बत्तीस वर्ष पूर्व सम्पादन किया था, तब मुझे यह आशा थी कि शेष प्राप्य जैन शिलालेखों के संग्रह भी शीघ्र ही क्रमशः प्रस्तुत किये जा सकेंगे। किन्तु वह कार्य शीघ्र सम्पन्न न हो सका। तथापि इस योजना की चिन्ता माणिकचन्द्र ग्रंथमाला के कर्णधार श्रद्धेय पं० नाथूराम जी प्रेमी को बनी ही रही। उसी के फलस्वरूप गेरीनो की शिलालेख सूची के अनुसार अब यह संग्रह कार्य भाग दूसरे और तीसरे में पूरा हो गया है। गेरीनो की सूची बनने के पश्चात् जो जैन लेख प्रकाश में आये हैं, तथा जो महत्त्वपूर्ण लेख उस सूची में उल्लिखित होने से छूट गये हैं उनका संकलन करना अब भी शेष रहा है।

यह तो मानी हुई बात है कि देश, धर्म और समाज के इतिहास में पाषाण, ताम्रपट आदि लेख सर्वोपरि प्रामाणिक होते हैं। भारत का प्राचीन इतिहास तभी से विधिवत् प्रस्तुत किया जा सका है जब से कि इन शिला आदि लेखों के अध्ययन अनुशीलन की ओर ध्यान दिया गया है। जितने शिलालेख प्रस्तुत संग्रह में समाविष्ट हैं वे सभी गत सौ वर्षों में समय समय पर यथास्थान पत्रिकाओं आदि में प्रकाशित हो चुके हैं और उनसे प्राप्य राजनीतिक वृत्तान्त का उपयोग भी प्रायः किया जा चुका है। किंतु जैन इतिहास के निर्माण में उनका पूर्णतः उपयोग करना अभी भी शेष है। इस संग्रह में जो मौर्य सम्राट् अशोक से लेकर कुषाण, गुप्त, चालुक्य, गंग, कदम्ब, राष्ट्रकूट आदि राजवंशों के काल के जैन लेख संकलित हैं उनमें भारतीय इतिहास और विशेषतः जैन धर्म के प्राचीन इतिहास की बड़ी बहुमूल्य सामग्री बिखरी हुई पड़ी है जिसका अध्ययन कर जैन इतिहास को परिष्कृत करना आवश्यक है।

शिलालेखसंग्रह के प्रथम भाग की भूमिका में मैंने वहाँ संकलित लेखों का विभिन्न दृष्टियों से एक अध्ययन प्रस्तुत किया था। अब इस भाग के साथ

तब से आगे प्रकाशित दोनों भागों का सुविस्तृत और सूक्ष्म अध्ययन डॉ० गुलाब चन्द्र चौधरी द्वारा प्रस्तुत किया गया है जो बहुत महत्त्वपूर्ण है। मुझे भरोसा है कि डॉ० चौधरी के इस परिश्रम से जैन इतिहास का बड़ा उपकार होगा। इनकी प्रस्तावना से प्रकाश में आने वाली कुछ विशेष बातें निम्न प्रकार हैं:—

(१) मथुरा की खुदाई से प्रकाश में आई मूर्तियों में प्रमाणित हुआ कि आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व जैन प्रतिमायें नग्न ही बनाई जाती थीं। मूर्तियों में वस्त्रों का प्रदर्शन लगभग पाँचवीं शती से पूर्व नहीं पाया जाता।

(२) प्राचीन काल की प्रतिमाओं में तीर्थंकरों के बैल आदि विशेष चिह्न बनाने की प्रथा नहीं थी। केवल आदिनाथ के केश (जटा) तथा पार्श्व और सुपार्श्व के सर्पफण मूर्तियों में दिखलाये जाते थे।

(३) तीर्थंकरों के साथ साथ यक्ष यक्षिणियों की पूजा का भी प्राचीन काल से ही प्रचार था और उनकी भी मूर्तियाँ स्थापित की जाती थीं।

(४) मथुरा से जो जैन मूर्तियों की प्रतिष्ठा संबंधी लेख मिले हैं उनमें गणिकायें, गणिकापुत्रियाँ, नर्तकियाँ और लुहार, सुनार, गंधीगिर आदि जातियों के लोग भी पूजा प्रतिष्ठादि धार्मिक कार्यों में भाग लेते हुए पाये जाते हैं।

(५) मथुरा के लेखों से सिद्ध होता है कि उत्तर भारत में भी मातृपरम्परा के उल्लेख की प्रथा थी। वात्सीपुत्र, गोतिमीपुत्र, मोगलिपुत्र, कौशिकीपुत्र आदि जैसे नाम पाये जाते हैं।

(६) मथुरा के लेखों में जो जैन मुनियों के गणों, कुलों और शाखाओं के उल्लेख मिलते हैं उनसे कल्पसूत्र की स्थविरावली की प्रामाणिकता सिद्ध होती है।

(७) कदंब वंश के लेखों के अनुसार ४-५ वीं शती के लगभग दक्षिण भारत में निर्ग्रन्थ महाश्रमण, श्वेतपट महाश्रमण तथा यापनीय और कूर्चक संघों का अस्तित्व पाया जाता है। ये सब सम्प्रदाय प्रायः मिल जुल कर रहते थे।

(८) मूलसंघ का सर्व प्रथम उल्लेख गंग वंश के माधव वर्मा द्वितीय और उसके पुत्र अविनीत (सन् ४००-४२५ के लगभग) के लेखों में पाया जाता है। किन्तु इन लेखों से किसी गण, गच्छ, अन्वय आदि का कोई उल्लेख

नहीं है। गण गच्छादि के उल्लेख सन् ६८७ और उसके पश्चात्कालीन लेखों में उत्तरोत्तर बढ़ते हुए पाये जाते हैं।

(६) पाँचवीं छठी शती के लेखों में नन्दिसंघ और नन्दिगच्छ तथा श्री मूलमूलगण और पुन्नागवृक्षमूलगण के उल्लेख यापनीय संघ के अन्तर्गत मिलते हैं। ग्यारहवीं शती से नन्दि संघ का उल्लेख द्रविड संघ के साथ तथा बारहवीं शती से मूलसंघ के साथ दिखाई पड़ता है।

(१०) यापनीय संघ के अन्तर्गत वलहारि या वलगार गण के उल्लेख दशवीं शती तक पाये जाते हैं। ग्यारहवीं शती से वलात्कार गण मूलसंघ से संबद्ध प्रकट होता है।

(११) मर्कारा के जिस ताम्रपत्र लेख के आधार पर कोण्डकुन्दान्वय का अस्तित्व पाँचवीं शती में माना जाता है वह लेख परीक्षण करने पर बनावटी सिद्ध होता है, तथा देशीय गण को जो परम्परा उस लेख में दी गई है वही लेख नं० १५० (सन् ९३१) के बाद की मालुम होता है।

(१२) कोण्डकुन्दान्वय का स्वतंत्र प्रयोग आठवीं नौवीं शती के लेख में देखा गया है तथा मूलसंघ कोण्डकुन्दान्वय का एक साथ सर्व प्रथम प्रयोग लेख नं० १८० (लगभग १०४८ ई०) में हुआ पाया जाता है।

डॉ० चौधरी की प्रस्तावना में प्रकट होने वाले ये तथ्य हमारी अनेक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक मान्यताओं को चुनौती देने वाले हैं। अतएव इनपर गंभीर विचार करने तथा उनसे फलित होने वाली बातों को अपने इतिहास में यथोचित रूप से समाविष्ट करने की आवश्यकता है। इस दृष्टि से इन शिलालेखों तथा डॉ० चौधरी की प्रस्तावना का यह प्रकाशन बड़ा महत्वपूर्ण है।

मुजफ्फरपुर,
१४-३-१९५७

हीरालाल जैन
डायरेक्टर, प्राकृत जैन विद्यापीठ,
मुजफ्फरपुर (बिहार)

प्रकाशकीय निवेदन

जैन-शिलालेख संग्रह का पहला भाग सन् १९२८ में निकला था। दूसरा भाग उसके चौबीस वर्ष बाद सन् १९५२ में और यह तीसरा भाग उसके लगभग पाँच वर्ष बाद प्रकाशित हो रहा है। अर्थात् सब मिलाकर इन तीन भागों के प्रकाशन में कोई तीस वर्ष लग गये।

पहले भाग के साथ में सुहृद्वर डा० हीरालाल जी ने उसके लेखों का १६२ पृष्ठों का एक सुविस्तृत अध्ययन लिखा था। दूसरे भाग के साथ उसके लेखों का परिचय देने का कोई प्रश्न न हो सका, इसलिए अब इस तीसरे भाग में दोनों भागों के लेखों का अध्ययन करके डा० गुलाबचन्द्र जी चौधरी, एम० ए०, पी-एच० डी०, आचार्य ने १७५ पृष्ठों की भूमिका लिख दी है जिसमें जैन सम्प्रदाय के संघों, गणों, गच्छों, राजवंशों, सामन्तों, श्रेष्ठियों, जैन-तीर्थों आदि पर विस्तृत प्रकाश डाला है।

डा० चौधरी स्याद्वाद विद्यालय काशी के स्नातक हैं और इस समय नालन्दा के पाली बौद्ध विद्यापीठ में पुस्तकाध्यक्ष एवं प्राध्यापक हैं। दो वर्ष पहले इन्हें हिन्दूविश्वविद्यालय से "पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ नादर्न इण्डिया फ्राम जैन सोर्सेज" से (जैन स्रोतों से प्राप्त किया गया उत्तर भारत का राजनीतिक इतिहास) महानिबन्ध पर 'डाक्टरेट' की उपाधि मिली थी। चूँकि जैन साधनों से उक्त महानिबन्ध तैयार किया गया था, और इसके लिए इन्हें अनेक शिलालेखों को भी छान-बीन करनी पड़ी थी, इस लिए इस ग्रंथ की यह भूमिका लिखने के लिए वही उपयुक्त समझे गये और उन्होंने भी मेरे आग्रह को स्वीकार कर लिया। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि उन्होंने यह काम एक इतिहास-संशोधक की दृष्टि से बड़ी लगन के साथ परिश्रमपूर्वक किया है। इसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

इसमें ऐसी अनेक बातों पर प्रकाश डाला गया है जो अभी तक अन्धकार में थीं और जिनकी ओर ध्यान देना इतिहासज्ञों के लिए परम आवश्यक है। इनमें से कुछ बातों की तरफ डा० हीरालाल जी ने 'प्राक्कथन' में हमारा ध्यान आकर्षित किया है।

इन तीन भागों में वे सब लेख आ गए हैं जिनकी सूची डा० गेरिनो ने संकलित की थी और जिसका नाम Repertoire de Epigraphie Jaina है।

उक्त सूची के प्रकाशित होने के बाद और भी सैकड़ों लेख प्रकाश में आये हैं और उनका प्रकाशित होना भी आवश्यक है। परन्तु माणिक्यचन्द्र ग्रन्थमाला का फण्ड समाप्त हो गया है और इधर दीर्घकालव्यापिनी अस्वस्थता के कारण मेरी शक्तियों ने भी जवाब दे दिया है, इसलिए अब यह आशा तो नहीं है कि उक्त लेख-संग्रह भी चौथे भाग के रूप में प्रकाशित कर सकूँगा। फिर भी विश्वास तो रखना ही चाहिए कि किसी न किसी इतिहास प्रेमी के द्वारा यह आवश्यक कार्य अविलम्ब पूरा होगा। मुझे सन्तोष है कि मेरी एक बहुत बड़ी आशा इन तीस वर्षों में किसी तरह पूरी हो गयी।

दूसरे भाग के समान इस भाग का संकलन भी श्री विजयमूर्ति जी एम० ए०, शास्त्राचार्य ने किया है। इसमें उन्हें भी बहुत परिश्रम करना पड़ा है। विभिन्न लाइब्रेरियों में जाकर 'इण्डियन एण्टीक्वेरी', 'एपिग्राफिया इंडिका' आदि की पुरानी फाइलों में से प्रत्येक लेख को ढूँढ़ना, उन्हें रोमन लिपि से नागरी में उतारना और फिर उनका सारांश लिखना समयसाध्य और श्रमसाध्य तो है ही। इसके लिए वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

बम्बई
२४-३-५७

नाथूराम प्रेमी
मंत्री

प्रस्तावना

१. जैनों का अभिलेख साहित्यः एक परिचय

भारतीय इतिहास के विविध अंगों के ज्ञान के लिए अभिलेख साहित्य बड़ा ही प्रामाणिक साधन है। यह साधन भारतवर्ष में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध भी है और विशेष कर दक्षिण भारत में। जैनों का अभिलेख साहित्य बड़ा ही विशाल है। वैसे तो जैनों के ये लेख भारतवर्ष के प्रत्येक कोने से प्राप्त हुए हैं। पर इनका प्राचुर्य दक्षिण और पश्चिम भारत में विशेषतः देखा जाता है।

ये लेख जल्दी न नष्ट होने वाले पाषाण एवं धातु द्रव्यों पर उत्कीर्ण पाये जाते हैं। इसलिए इनमें कालान्तर में सम्भावित संशोधन और परिवर्तन की वैसी कम गुंजाइश होती है जैसी कि अन्य साहित्यिक कृतियों में देखी जाती है। इसलिए इनसे प्राप्त होने वाले तथ्यों को प्रथम श्रेणी का महत्व दिया जाता है।

पाषाणनिर्मित द्रव्यों पर पाये जाने वाले जैनों के लेख कई प्रकार के हैं, जैसे चट्टानों एवं गुफाओं में मिलने वाले लेख, उदाहरण के रूप में लेख नं० २,७,६१ एवं एलोरा, पञ्चपाण्डवमलै, वल्लीमलै और तिरुमलै से प्राप्त लेख; मंदिरों से प्राप्त लेख, जैसे श्रवण बेल्गोल, हुम्मच एवं अन्य तीर्थ स्थानों के कई लेख; मूर्तियों के पादुका पट्ट पर उत्कीर्ण लेख जैसे श्रवण बेल्गोल, आबू, गिरनार, शत्रुंजय, महोबा, खजुराहो, ग्वालियर से प्राप्त होने वाले कतिपय प्रतिमा-लेख; स्तम्भों पर उत्कीर्ण लेख, जैसे मथुरा से प्राप्त लेख नं० ४३,४४ एवं कहायूं का लेख तथा दक्षिण भारत से प्राप्त मानस्तम्भों एवं सल्लेखना मरण के स्मारक स्वरूप निर्मित निषिधिकलसों पर के लेख; मथुरा से प्राप्त कतिपय लेख स्तूपों पर तथा शिलापट्टों पर, मथुरा के आयागपटों के लेख और शासन पत्र के रूप में लेख नं० २२८,३३२,३७४ आदि प्राप्त हुए हैं।

ताम्रादि धातुओं पर भी उत्कीर्ण अनेकों जैन लेख पाये जाते हैं, उदाहरण के रूप में मर्कारा का ताम्रपत्र एवं कदम्ब वंश के कतिपय लेख समझने चाहिये।

इन लेखों में अधिकांश पर काल निर्देश देखा गया है, चाहे वह शासन करने वाले राजा का संवत् हो, चाहे वह शक संवत्, विक्रम संवत् या ज्योतिष् शास्त्रप्रणीत प्लव, खर आदि संवत् हो। ये संवत् राजनीतिक, धार्मिक, एवं सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से बड़े महत्त्व के हैं।

जैन लेखों की प्रकृति समझने के लिये, हम उन्हें अनेक दृष्टियों से विभक्त कर सकते हैं, जैसे उत्तर भारत के लेख, दक्षिण भारत के लेख, दिगम्बर सम्प्रदाय के, श्वेताम्बर सम्प्रदाय के, राजनीतिक, धार्मिक तथा भाषावार संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, तामिल आदि,इसी तरह लिपि के अनुसार भी। पर वास्तव में इनके दो ही भेद करना ठीक है, एक तो राजनीतिक शासन पत्रों के रूप में या अधिकारिवर्ग द्वारा उत्कीर्ण और दूसरे सांस्कृतिक, जनवर्ग से सम्बन्धित। राजनीतिक एवं अधिकारिवर्ग से सम्बंधित लेख प्रायः प्रशस्तियों के रूप में होते हैं। इनमें राजाओं की अनेक विरुदावलों, सामरिक विजय, वंश परिचय आदि के साथ मंदिर, मूर्ति या पुरोहित आदि के लिए भूमिदान, ग्रामदानादि का वर्णन होता है। सांस्कृतिक एवं जनवर्ग से सम्बंधित लेखों का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। ये लेख अपनी धार्मिक मान्यता के लिए भक्त एवं श्रद्धालु पुरुष या स्त्रीवर्ग द्वारा लिखाये जाते थे। ऐसे लेख १-२ पंक्ति के रूप में मूर्ति के पादुकापट्टों पर तथा कुटुम्ब एवं व्यक्ति की प्रशंसा में उच्च कोटि के काव्य रूप में भी पाये जाते हैं। इनसे अनेक जातियों के सामाजिक इतिहास और जैनाचार्यों के संघ, गण, गच्छ, पट्टावली के रूप में धार्मिक इतिहास के अतिरिक्त सांस्कृतिक एवं राजनीतिक इतिहास का परिचय मिलता है। इन लेखों में प्रायः मूर्तियों, धर्मस्थानों, और मंदिरों के निर्माण का काल अङ्कित रहता है। जिससे कला और धर्म के विकास-क्रम को समझने में बड़ी सहायता मिलती है, और सामाजिक स्थिति का परिज्ञान—एक देश से दूसरे देश में जैन कब फैले और वहाँ जैन धर्म का प्रसार अधिकाधिक कब हुआ—भी हो जाता है। अनेक जैन भक्त पुरुषों और महिलाओं के नाम भी इन लेखों से

ज्ञात होते हैं जो कि भाषाशास्त्र की दृष्टि से बड़े महत्व के हैं। अधिकांश नाम अपभ्रंश और तत्कालीन लोक भाषा के रूप को प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत लेख संग्रह से ज्ञात सांस्कृतिक इतिहास का एक छोटा चित्र यहाँ दिया जाता है। लोग अपने कल्याण के लिए, माता, पिता, भाई, बहिन आदि के कल्याण के लिए, गुरु के स्मृत्यर्थ, राजा, महामण्डलेश्वर आदि के सम्मानार्थ मंदिर या मूर्ति का निर्माण कराते थे और उनकी मरम्मत, पूजा, ऋषियों के आहार, पुजारी की आजीविका, नये कार्यों के लिये तथा शास्त्र लिखने वालों के भोजन के लिए दान देते थे। दातव्य वस्तुओं में ग्राम, भूमि, खेत, तालाब, कुँआ, दुकान, भवन, कोल्हू, हाथ के तेल की चक्की, चावल, सुपारी का बगीचा, साधारण बगीचे, चुंगी से प्राप्त आमदनी, तथा निष्क,पण, गद्याण,होन्नु (ये सब एक प्रकार के सिक्के हैं) घी एवं मुफ्त श्रम आदि हैं। एक लेख (१६८) में ब्राह्मण को कुमारिकाओं की भेंट का उल्लेख है जो देवदासी प्रथा की याद दिलाता है। ग्राम या भूमि के दान में प्रायः यह ध्यान रखा जाता था कि वे दान सर्व करों से मुक्त कराकर दिये जाँय (२२६,४०४ आदि)। उत्सवों पर ही दान देने की प्रथा थी। बहुत से लेखों से ज्ञात होता है कि दानादि द्रव्य, चंद्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण, उत्तरायण-संक्रांति या पूर्णिमा आदि के दिन दान दिये जाते थे (१०२,१२७,३०१,६४६ आदि)। मूर्तियों के निर्माण में हम देखते हैं कि लोग प्रायः तीर्थंकरों की मूर्तियाँ बनवाते थे—उनमें विशेषतः आदिनाथ, शान्तिनाथ, चंद्रप्रभ, कुंथुनाथ, पार्श्वनाथ एवं वर्धमान की मूर्तियाँ होती थीं। तीर्थंकरों के अतिरिक्त हम दक्षिण भारत में बाहुबली की मूर्ति भी देखते हैं। भक्त या शिष्यगण अपने आचार्यों की मूर्तियाँ या पादुका (चरण) भी बनवाते थे। यक्ष-यक्षिणियों की पूजा भी प्रचलित थी। हुम्मच पद्मावती की पूजा का प्रमुख केन्द्र था। लेखों में अम्बिका देवी (३४६) और ज्वालामालिनी (७५८) की मूर्तियों का भी उल्लेख मिलता है। प्रतिमाएँ प्रायः पाषाण और धातु की बनती थीं, पर एक लेख (१६७) में पंच धातु की प्रतिमा का उल्लेख है। मंदिर प्रायः पाषाण या ईंट के बनते थे, पर कुछ लेखों (२७७,२०४) में लकड़ी

के मंदिर का भी उल्लेख है। पूजा के अनेक प्रकार होते थे (३३८)।

धर्मप्राण महिलावर्ग एवं पुरुषवर्ग सारे जीवन को धर्म की आराधना में व्यतीत कर अन्तिम क्षणों में समाधिमरण पूर्वक देहोत्सर्ग करता था। चौदहवीं शताब्दी के लगभग दक्षिण प्रांत में जैन महिलावर्ग के बीच सतीप्रथा का भी प्रवेश हो गया था (५५६,५७४,६०५)। राजघराने की महिलाएँ अपने पति के शासन में हाथ बटाती थीं।

जमीन प्रायः नापकर दान में दी जाती थी। लेखों में विविध प्रकार की नापों का उल्लेख है जैसे निवर्तन (लेख नं० १०१,१६०२) भेरुण्ड दण्ड (१८१) मत्तर (२१०) कम्म (२४१) कुण्डिदेश दण्ड (३३४) हाथ (३२०) तथा स्तम्भ (३३४) आदि। चावल आदि की नाप के लिए मत्त (१८१) तथा तेल की नाप के लिए करघटिका (२२८) का भी उल्लेख मिलता है।

विविध प्रकार के आय करों के नाम भी लेखों से ज्ञात होते हैं। जैसे अन्नि-याय बावदण्ड विरै (१६७, तामिल देश में ; सिद्धाय कर (३१२) नमस्य (२१०) हालदारे (६७३)। तत्कालीन अनेकों सिक्कों के नाम भी लेखों में मिलते हैं, जैसे गुप्त कालीन कार्षापण (६४) निष्क (४६४) सुवर्ण गद्याण (१६७) लोक्कि गद्याण (२५३) गद्याण (१६७,६७३) होन्नु (४११,६७३) विंशो-पक (२२८) आदि।

गाँव के अधिकारी के रूप में सेनवोव (पटवारी, २१०,२२६,२५१) महा महत्तु, (७१०) एवं हेर्गडे या पेर्गडे (२०८) के नाम पाते हैं। पटवारी लोग अच्छे पढ़े लिखे होते थे। एक लेख (२५१) में एक पटवारी को लेख रचने वाला लिखा है।

यह एक छोटा सा चित्र है। विस्तृत के लिए भूमिका के विविध प्रकरणों को देखना चाहिये।

लेख पद्धतिः—प्रत्येक पाषाण लेख या ताम्र लेख, यदि वह बहुत ही छोटा केवल नाम मात्र का या छोटा-सा दानपत्र नहीं हुआ तो, प्रायः देखा गया

है कि उसमें एक निश्चित शैली का अनुसरण किया जाता है। प्रारम्भ में बहुधा मंगलाचरण होता है। वह छोटे वाक्य के रूप में 'सर्वज्ञाय नमः, सिद्धेभ्यः' आदि या पद्य के रूप में जिनशासन को नमस्कार या किसी देवता या अनेक देवताओं को नमस्कार आदि। इसके बाद प्रशस्ति प्रारम्भ होती है जिसमें राजा के नाम युद्ध में विजय आदि तथा वंशपरम्परा का वर्णन होता है। यह वर्णन कभी कभी ऐसे सांचे में ढले हुए के समान होता है कि एक राजा के शासनकाल के सभी लेखों में एकसा विवरण मिलता है। लेख का यही हिस्सा राजनीतिक इतिहास के विद्यार्थी के लिए बड़े महत्त्व का होता है। इस अंश के बाद राजा से भिन्न अगर कोई दाता है तो उसका, उसके वंश एवं वैभव आदि का वर्णन आता है। साथ में देय पात्र का वर्णन आता है। यदि वह मुनि व आचार्य हुआ तो उसकी गुरुपरम्परा संघ, कुल, गण, गच्छ, अन्वय आदि का वर्णन होता है। यदि वह मंदिर आदि पूर्तस्थान हुआ तो उसका भी वर्णन होता है। इसके बाद देय वस्तु- धन, दलान, भूमि, शुल्क, तेल आदि जो होता है उसका भी खुलासा वर्णन मिलता है। भूमि के दान में उसकी सभी परिधियों का वर्णन होता है। इसके बाद दान की रक्षा के लिए विशेष अनुरोध किया जाता है। इसमें दान को जो क्षति पहुचाते हैं उनकी भर्त्सना और जो रक्षा करते हैं उनके प्रशंसावाक्य दिये जाते हैं। अंत में लेख को उत्कीर्ण करने वाले का या निर्माता का नाम होता है।

जैन लेख संग्रह:—जैन शिला लेखों की संख्या इतनी अधिक है कि उनका संग्रह एक साथ करना कठिन है। इधर माणिकचंद्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला से दिगम्बर सम्प्रदाय से सम्बंधित लेखों का संग्रह तीन भागों में निकला है। बाबू कामताप्रसाद ने एक छोटा प्रतिमालेख संग्रह निकाला है। जैन ही श्वेताम्बर जैन शिलालेखों के संग्रह स्वर्गीय बाबू पूरणचंद्र नाहर ने जैन लेख संग्रह नाम से तीन भाग में, मुनि जयंतविजय जी ने अर्बुद प्राचीन लेख संग्रह पांच भाग में, विजयधर्म सूरि के प्राचीन लेख संग्रह और जैन धातु प्रतिमा लेख संग्रह एवं मुनि कांतिसागर जी का जैन प्रतिमा लेख दो भाग तथा उपाध्याय विनयसागर जी का प्रतिष्ठा लेख संग्रह आदि प्रकाशित हो चुके हैं।

जैन धर्म और जैन समाज के इतिहास निर्माण में इन लेखों का जितना महत्व है वैसा ही भारतीय इतिहास के लिखने में भी है। भारतीय इतिहास के अनेक परिच्छेदों के निर्माण करने में, उन्हें संशोधित एवं प्राप्त तथ्यों को दृढ़ करने में इन लेखों का बड़ा उपयोग है। भारतीय इतिहास के निर्माण में जैन साहित्यिक उपादानों की भले ही अब तक उपेक्षा हुई हो पर वर्षा, सर्दी एवं गर्मी के आघातों से सुरक्षित इन लेखों से प्राप्त अटल तथ्यों को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

प्रस्तुत लेख संग्रहः—प्रस्तुत लेखों का संग्रह श्रद्धेय पं० नाथूराम जी प्रेमी की सत्कृपा एवं प्रेरणा का फल है। इसके प्रथम भाग का संकलन एवं सम्पादन डा० हीरालाल जी जैन ने २८-२९ वर्ष पहले किया था। उक्त भाग में ५००लेख श्रवण बेल्गोल और उसके आस पास के कुछ स्थानों के हैं। इसके बहुत वर्षों बाद श्रद्धेय प्रेमी जी ने पं०विजयमूर्ति जी एम० ए० शास्त्राचार्य से द्वितीय एवं तृतीय भाग का संकलन कराया। इन दो भागों में ८४६लेख संगृहीत हैं। इसके संकलन में प्रसिद्ध फ्रेन्च विद्वान् स्व० ए० गेरीनो द्वारा प्रकाशित जैन शिलालेखों की एक विस्तृत तालिका Repertoire Epigraphie Jaina की सहायता ली गई है। वह तालिका सन् १९०८ में प्रकाशित हुई थी, इसलिए इस संग्रह में उक्त सन् या उससे पहले तक के प्रकाशित लेख ही आ सके हैं, बाद का एक भी लेख नहीं। सभी लेखों का संग्रह तिथिक्रम से किया गया है। उनमें प्रथम भाग में प्रकाशित लेखों का एवं श्वेताम्बर लेखों का यथास्थान निर्देश मात्र कर दिया गया है इससे ग्रन्थ का कलेवर बढ़ नहीं सका।

सन् १९०८ से अब तक अनेक जैन लेख प्रकाश में आ चुके हैं। उनका भी तिथिक्रम से संकलन आवश्यक है। ग्रन्थमाला को चाहिये कि उन लेखों को भी संग्रह कराकर प्रकाशित करे।

२ मथुरा के लेखः एक अध्ययन

प्रस्तुत संग्रह में मथुरा से प्राप्त ८५ लेख संगृहीत हैं। इनमें नं० ४ से लेकर १६ तक के लेखों को अक्षरों की बनावट की दृष्टि से डा० बूल्हर ने ईसा

के सूचक हैं। लेख में इसके जिनमत देवगण का उल्लेख है जो कि पुन्नाट था। कुछ शिलालेख का शासक था तथा जिनकी का मठ था। उसने अर्हत् भगवान के स्नपन की पूजा सम्मान आदि के लिए कर्नाटक देश के तिरु कुछ खेत दान में दिये थे।

यह वंश के कई लेखों में अकलंक महादेवाड के अवन्त कुल के कुलाचार्यों का जिन मन्दिरों बनवाने का उल्लेख है। अवन्त नरेशों में दुष्यन्त हो गये हैं। अकलंक के नाम का कोई कुलवंश था इसमें इतिहासज्ञ एक मत नहीं है। फिर भी समकालीन गङ्गवंशों के इतिहास पर दृष्टिपात करने से यह प्रतीत होता है उसे कुलवंश अवश्य होना चाहिये। कुलवंश अवन्त का नामान्तर हो।

३. चालुक्य वंश:—प्रस्तुत संग्रह में इस वंश के सम्बन्धित अनेकों लेख संग्रहीत हैं जिनसे ज्ञात होता है कि ये मानव्य गोत्र तथा हारीति के वंशज थे, यह इनका मूलकुल था। इस वंश के राजाओं की मातृभाषा कन्नड़ थी। अधिकांश उपाधियाँ भी। इस वंश की एक शाखा जिसे पश्चिमी चालुक्य कहा जाता है वातापी (बादामी) नामक स्थान से ६ वीं शताब्दी से ८ वीं शताब्दी तक शासन करती रही और दूसरी दो शाखाओं वेंगी से १०वीं से १२वीं तक कल्याणी नामक स्थान से। इन तीन शाखाओं में से पहली पूर्वी चालुक्य के नाम से विख्यात थी और अंतिम वेंगी के वेंगी नामक स्थान से ७ वीं शताब्दी से ११-१२ वीं शताब्दी तक सम्बन्ध रही। इस तरह इस वंश ने दक्षिण भारत के बहुभाग पर शासन किया।

(क) पश्चिमी चालुक्य:—जैन लेखों में इस वंश का सबसे प्राचीन दानपत्र (५०६) शक सं० ४१२ (ई० ४८९) का आइहोल से मिला है। यह ई० सन् अश्वयुद्धोज का था। तदनुसार उस शाक ने चोल, चेर, केरल, पाण्डव और कलिङ्ग के राजाओं को कर देने वाला बना दिया था उसे सामन्त

---

१. डॉ० ज्योतिप्रसाद, जैन लेख संग्रह, जैन एन्टीक्वेरी, भाग २२, अंक २, पृ० १-११

प्रकार की हिन्दू और बौद्ध सामग्री भी प्राप्त हुई है जिससे ज्ञात होता है कि जैन धर्म की बढ़ती देखकर, हिन्दुओं और बौद्धों ने भी मथुरा को अपना केन्द्र बना लिया था। यह स्थान प्राचीन काल में जैनियों का अतिशय क्षेत्र था।

डा० फ्यूरर को इसी टीले से एक जैन स्तूप भी मिला था। स्तूप की एक ओर विशाल मन्दिर दिगम्बर सम्प्रदाय का और दूसरा श्वेताम्बर सम्प्रदाय का मिला, पर वे खनन कार्य की असावधानी से छिन्न भिन्न हो गये। खोदने के समय के फोटुओं में ये तथ्य अब भी मौजूद हैं। लेख नं० ५९ से ज्ञात होता है कि इस स्तूप का नाम 'देवनिर्मित बौद्ध स्तूप' था। लेख एक प्रतिमा की चौकी पर पाया गया है जो उक्त स्तूप पर प्रतिष्ठित की गई थी। लेख में कुषाण संवत् ७९ दिया गया है। इस संवत् में कुषाण नरेश वासुदेव का राज्य था। ईस्वी सन् की गणना में इस मूर्ति की प्रतिष्ठा ७९ + ७८=१५७ ईस्वी में हुई थी। उस समय भी यह स्तूप इतना पुराना हो गया था कि लोग इसके वास्तविक बनाने वाले को एकदम भूल गये थे और उसे देवों का बनाया (देवनिर्मित) हुआ मानते थे। इससे प्रतीत होता है कि 'बौद्ध स्तूप' बहुत ही प्राचीन स्तूप था जिसका कि निर्माण कम से कम ईसा पूर्व ५-६ वीं शताब्दी में हुआ होगा। इस अनुमान की पुष्टि का दूसरा प्रमाण यह भी है कि तिब्बतीय विद्वान् तारनाथ ने लिखा है कि मौर्य-काल की कला यक्ष-कला कहलाती थी और उससे पूर्व की कला देवनिर्मित-कला। अतः सिद्ध है कि कंकाली टीले का स्तूप कम से कम मौर्य-काल से पहले अवश्य बना था। जिनप्रभ सूरि (१३ वीं १४ वीं १ नं०) ने विविधतीर्थकल्प में लिखा है कि पहले यह स्तूप स्वर्ण का बना था, इसमें रत्न जड़े थे, इसे मुनि धर्मरुचि और धर्मघोष की इच्छा से कुबेरा देवी ने सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ की पुण्यस्मृति में बनवाया था। तत्पश्चात् २३ वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ के समय में इसका निर्माण ईंटों से हुआ था और पाषाण का एक मन्दिर इसके बाहर बनाया गया था। पुनः वीर भगवान् के केवलज्ञान प्राप्त करने के १३०० वर्ष बाद वप्पभट्टि सूरि ने इस स्तूप को भग० पार्श्वनाथ के नाम पर अर्पण करने के लिए इसकी मरम्मत कराई थी। भग० महावीर को केवलज्ञान की

पूर्व १५० से लेकर ईसा की प्रथम शताब्दी के बीच का सिद्ध किया है। नं० १७ से ८६ तक के लेख कुषाणकालीन हैं जिनमें कुछेक पर सम्राट् कनिष्क, हुविष्क एवं वासुदेव के राज्यसंवत्सर दिये गये हैं और कुछेक बिना संवत्सर के हैं। शेष लेख गुप्तकाल से लेकर ११वीं शताब्दी तक के हैं।

इनमें से ८ लेख तो आयागपटों[1] पर, २ लेख ध्वज[2] स्तम्भों पर, ३ लेख तोरणों[3] पर, १ लेख नैगमेष[4] (यक्षप्रतिमा) पर, १ लेख सरस्वती[5] की मूर्ति पर, ५ लेख सर्वतोभद्र[6] प्रतिमाओं पर, और शेष लेख प्रतिमापट्ट या मूर्तियों की चौकियों पर उत्कीर्ण मिले हैं।

उक्त तथा अन्य मथुरा के कंकाली टीले से प्राप्त हुई थी। इस टीले पर कंकाली देवी का एक मन्दिर है। मन्दिर भी एक छोटी-सी झोपड़ी के रूप में है, जिसमें नक्काशीदार एक स्तम्भ का टुकड़ा रखा गया है, जिसे लोग कंकाली देवी मानकर पूजते हैं। इस तरह देवी के नाम से इस टीले का नाम कंकाली पड़ गया।

इसकी सर्व प्रथम खुदाई सन् १८७१ में जनरल कनिंघम ने की थी जिसमें उन्हें तीर्थंकरों की अनेक मूर्तियां मिलीं जिनमें कुछ पर कुषाण वंशी प्रतापी सम्राट् कनिष्क के ५ वें वर्ष से लेकर वासुदेव के राज्य के कुषाण संवत् ९८ तक के लेख खुदे। दूसरी खुदाई सन् १८८८-९१ में डा० फ्यूरर ने विस्तृत रूप से की जिससे ७३७ मूर्तियाँ तथा अन्य शिल्पसामग्री प्राप्त हुई। उसके पश्चात् पं० राधाकृष्ण ने भी यहाँ की खुदाई की और अनेक महत्वपूर्ण सामग्री प्राप्त की। इस तरह कंकाली टीला जैन सामग्री के लिए एक निधान सिद्ध हुआ। यहाँ से अनेक

१—नं० ५,८,९,१५,१७,७१,७३,८१

२—नं० ४३,४४

३—नं० ४,१४,६८

४—नं० १३

५—नं० ५५

६—नं० २२,२६,२७,४१,१७३

ठोस था और गृहनिर्माण की मितव्ययिता के कारण भीतर की ओर केवल ये दीवारें ही बना दी गई थीं। इस कारण भीतर के कुछ हिस्से में ईंट चिनने की जरूरत न रहीं। स्तूप के बाहर की ओर तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ बनी थीं।

यहाँ एक और जैन स्तूप था, उस पर का बहुत छोटा सा लेख मिला है। वह ईसा की तीसरी या चौथी शताब्दी का मालूम होता है।

इन स्तूपों के अतिरिक्त यहाँ कई आयागपट्ट मिले हैं। जिनसे ८ लेख प्रस्तुत संग्रह में संकलित हुए हैं। ये आयागपट्ट पत्थर के वे चौकोर पटिये होते हैं जो अनेकों प्रकार के माङ्गलिक चिन्हों से अंकित करके किसी तीर्थंकर को चढ़ाये जाते थे। मथुरा के इन आयाग पट्टों का जैन कला में विशेष स्थान है। एक आयाग-पट्ट (जिस पर लेख नं० ७१ उत्कीर्ण है) पर १ मीन मिथुन, २ देव विमान गृह, ३ श्रीवत्स, ४ वर्धमानक, ५ त्रिरत्न, ६ पुष्पमाला, ७ वैजयन्ती और ८ पूर्णघट ये अष्ट मांगालिक चिह्न मिले हैं। दूसरे अन्य आयागपट्टों पर नंद्यावर्त स्वस्तिक, कमल आदि चिह्न अङ्कित हैं।

इन पर उत्कीर्ण लेखों से ज्ञात होता है कि ये मन्दिरों में अर्हन्तों की पूजा के लिए रखे जाते थे। अधिकांश में अर्हन्तों की प्रतिमाएँ हैं, कुछ में चरणचिह्न हैं। तीन आयागपट्टों पर स्तूपों के चित्र अङ्कित मिले हैं। लेख नं० ८ और १५ वाले आयागपट्ट इनमें से हीं हैं। लेख नं० ८ वाला आयागपट्ट (मथुरा संग्रहालय २) अधिक महत्व का है। अनुमान किया जाता है कि उक्त आयाग-पट्ट पर उत्कीर्ण तोरण और वेदिका मण्डित स्तूप मथुरा के विशाल जैन स्तूप की प्रतिकृति है। लेख के अनुसार श्रमणों की श्राविका गणिका लोणशोभिका की पुत्री गणिका वासु ने अपनी माता, पुत्री, पुत्र और अपने समस्त कुटुम्ब के साथ अर्हत् का एक मन्दिर एक आयागसभा, पानीगृह और एक पाषाणासन बनवाये।

इसके अतिरिक्त कंकाली टीले से स्तूप की प्रतिकृति और पूजन आदि के महोत्सव को चित्रित करनेवाले कुछ इमारतों के अंश भी मिले हैं। लेख नं०

६८ ऐसे ही एक तोरण के अंशमात्र से लिया गया है। इस तोरण पर एक नग्न साधु चित्रित है जिसकी कलाई पर एक खण्ड वस्त्र लटका हुआ[1] है।

यहाँ से सैकड़ों जैन तीर्थंकरों एवं यक्ष-यक्षिणियों की मूर्तियाँ मिली हैं। ये मूर्तियाँ बड़े सादे ढंग से बनाई गई हैं। तीर्थंकरों की मूर्तियाँ खड्गासन एवं पद्मासन दोनों प्रकार की मिली हैं। प्रारम्भिक शताब्दियों की मूर्तियाँ नग्न हैं। इनमें अधिकांश मूर्तियाँ आदिनाथ, अजितनाथ, सुपार्श्वनाथ, शान्तिनाथ, अरिष्टनेमि और वर्धमान की मिली हैं। उस काल में तीर्थंकर के चिन्हों—लाञ्छनों—का आविष्कार न होने के कारण मूर्तियों में प्रायः एक दूसरे से भेद नहीं है। हाँ, आदिनाथ के केश (जटाएं) तथा पार्श्व और सुपार्श्व के सर्पफण इनको पहचानने में सहायक होते हैं। जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ नग्न होने के कारण, वक्षस्थल पर श्रीवत्स चिह्न होने से और शिर पर उष्णीष न होने कारण इस काल की बौद्ध मूर्तियों से अलग आसानी से पहचानी जा सकती हैं।

मथुरा से इसी समय की चौमुखी मूर्तियाँ मिली हैं जो सर्वतोभद्रिका प्रतिमा अर्थात् वह गुप्त मूर्ति जो चारों ओर से देखी जा सके, कहलाती थीं। इन प्रतिमाओं में चारों ओर एक तीर्थंकर की मूर्ति बनी होती है। चौमुखी मूर्तियों में आदिनाथ, महावीर और सुपार्श्वनाथ अवश्य होते हैं। ऐसी मूर्तियाँ कुषाण और गुप्त काल में बहुतायत से बनती थीं। ईसवी सन् ४७५ के लगभग उत्तर भारत पर हूणों के भयानक आक्रमणों से मथुरा के स्थापत्य को बड़ा धक्का लगा। अतः ईसवी ६वीं के पश्चात् मथुरा से जो नमूने हमें मिले हैं वे भोंड़े और भद्दे हैं। उनमें पहले की सी सजीवता नहीं है। इसी काल के लगभग छिन्नशीर्ष मूर्तियों में कपड़े दिखाये जाने लगे, और सर्वप्रथम राजसिंहासन, यक्ष यक्षिणी, त्रिछत्र एवं गजेन्द्र आदि प्रदर्शित होने लगे जो उत्तर गुप्तकाल और उसके बाद की जैन मूर्तियों के विशेष लक्षण हैं। इन्हीं के साथ मध्यकाल में मथुरा के शिल्पियों ने यक्ष यक्षिणियों और जैन मातृकाओं की भी पृथ

१—बाबू कामताप्रसाद जैन इसे जैनों के अर्धफालकसम्प्रदाय से संबंधित बताते हैं, देखो जैन सि० भास्कर भाग ८ अंक २ पृष्ठ ६३-६६

मूर्तियाँ बनाना प्रारम्भ कीं। जैन मातृकाओं में आदिनाथ की यक्षिणी चक्रेश्वरी, तथा नेमिनाथ की अम्बिका देवी की मूर्तियाँ यहाँ मिली हैं। यक्ष धरणेन्द्र की मूर्ति भी मिली है।

इन मूर्तियों के सिवाय यहाँ नैगमेष नामक एक यक्ष की भी मूर्ति मिली है। नैगमेष या हरि नैगमेष जैन मान्यता के अनुसार सन्तानोत्पत्ति के प्रमुख देवता थे। इनकी पुरुष और स्त्री दोनों विग्रहों में मूर्तियाँ मिली हैं। संभवतः पुरुषशरीर की मूर्तियाँ पुरुषों के पूजने के लिए और स्त्रीशरीर की मूर्तियाँ स्त्रियों के लिए थीं। इनका मुख बकरी के आकार का होता है। इनके हाथों या कन्धों पर खेलते हुए बच्चे चिन्हित किये गये हैं। गले में लम्बी मोती की माला भी है जो कि इनका विशेष चिह्न है। कुषाणकाल में इन मूर्तियों की विशेष पूजा होती थी। लेख नं० १३ ऐसी ही एक मूर्ति पर से लिया गया है।

मथुरा से प्राप्त ये लेख ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सामाजिक दृष्टि से बड़े महत्त्व के हैं। इनमें उल्लिखित शक एवं कुषाण राजाओं के नाम तथा तिथियों से हमें उनके क्रमिक इतिहास तथा राज्य काल की अवधि का पता चलता है।

लेख नं ५ वें में स्वामी महाक्षत्रप शोडास का संवत्सर ४२ तथा मास दिन दिये हुए हैं। शोडास, महाक्षत्रप रंजुवुल का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था। रंजुवुल शक नरेश मोअ के अधीन मथुरा का महाशासक था। यह मोअ ईसा पूर्व ६० के लगभग अफगानिस्तान एवं पंजाब का शासक था। उसके अधीन मथुरा का शासक रंजुवुल पीछे स्वतंत्र हो गया था जैसा कि उसकी शाही उपाधियों से मालूम होता है। लेख में शोडास की स्वामी एवं महाक्षत्रप उपाधियाँ दी गई हैं जो कि उसके स्वतन्त्र शासक होने की परिचायक हैं। यदि उक्त लेख का संवत्सर ४२ विक्रम-संवत् माना जाय जैसा कि स्टीन कोनो सा० का मत है, तो शोडास ईसा पूर्व १७-१६ में राज्य करता था।

शकों के राज्य पर अधिकार करनेवाले थे कुषाणवंशी राजा। इनका राज्य भारत वर्ष पर ईसा की प्रथम शताब्दी के मध्य से स्थापित हुआ था। इस वंश का सबसे बड़ा प्रतापी राजा कनिष्क हुआ, जिसने अपने राज्याभिषेक के समय

से एक संवत् चलाया था जो कि विद्वानों के मत से सन् ७८ ई० से प्रारम्भ होता है। इतिहासज्ञों के अनुसार कनिष्क ने सन् १०० ई० तक अर्थात् २२ वर्ष राज्य किया। इसके बाद उसके उत्तराधिकारी वासिष्क ने सन् १०८ तक, तत्पश्चात् उसके उत्तराधिकारी हुविष्क ने सन् १३८ तक तथा उसके उत्तराधिकारी वासुदेव ने सन् १७६ तक राज्य किया।

प्रस्तुत संग्रह में लेख नं० १६ में देवपुत्र कनिष्क लिखा है और राज्य सं० ५ दिया है। इसी तरह लेख नं०२४ में महाराज राजातिराज देवपुत्र षाहि कनिष्क तथा राज्य सं० ७ दिया है और लेख नं० २५ में महाराज कनिष्क तथा सं० ६ दिया गया है। इन लेखों के सिवाय लेख नं० १७,१८,१६,२०,२१,२६,२८, २६,३०,३३ और ३४ में राजा का नाम तो अंकित नहीं है पर राज्य संवत्सर से मालूम होता है कि ये कनिष्क के ४थे वर्ष से लेकर २२वें तक के लेख हैं। लेख नं ३५-३८ तक कुषाण सं० २५ से २६ तक के हैं जो कि वासिष्क के के राज्य काल के होते हैं। यद्यपि इनमें राजा का नाम या तो दिया ही नहीं गया या स्पष्ट उत्कीर्ण नहीं हो पाया है। लेख नं० ४० से ५६ तक के लेख कुषाण सं० ३१ से ६० के भीतर के हैं जो कि हुविष्क के शासनकाल के हैं। इनमें लेख नं० ४३,४५,४८,५० और ५६ में तो हुविष्क का नाम दिया हुआ है। लेख नं० ५८ से ७० तक कुषाण सं० ६२ से ६८ के अन्तर्गत हैं जो कि वासुदेव के राज्यकाल में पड़ते हैं उनमें से ६२,६५ और ६६ में तो वासुदेव का नाम भी दिया हुआ है। इतिहासज्ञों के मत से लेख नं० ६६ वासुदेव के राज्य की अन्तिम अवधि का द्योतक है।

यहाँ लेखों के सम्बन्ध में यह सब विस्तार पूर्वक इस लिए लिखना पड़ा कि इस संग्रह में मूल से कतिपय लेखों पर दूसरे राजाओं का नाम दिया गया है जो कि इतिहासज्ञों के लिये भ्रम उत्पन्न कर सकता है। इन राजाओं में कनिष्क वासिष्क एवं हुविष्क तो बौद्ध धर्म प्रतिपालक थे और वासुदेव शैव मत का, पर अपने शासन में वे लोग अन्य धर्मों के प्रति बड़े उदार थे। इनके राज्यकाल में जैन धर्म का हित सुरक्षित था और वह खूब समृद्ध स्थिति में था।

सामाजिक इतिहास की दृष्टि से भी ये लेख बड़े महत्व के हैं। इन लेखों में गणिका (८) नर्तकी (१५) लुहार (३१,५४) गन्धिक (४१,४२,६२,६६) सुनार (६७), ग्रामिक (४४) तथा श्रेष्ठी (१६,२६,४३) आदि जातियों या वर्ग के लोगों के नाम मिलते हैं जिन्होंने मूर्ति आदि का निर्माण, प्रतिष्ठा एवं दान कार्य किये थे। इनसे विदित होता है कि २ हजार वर्ष पहले जैन संघ में सभी व्यवसाय के लोग बराबरी से धर्माराधन करते थे। अधिकांश लेखों में दातावर्ग के रूप में स्त्रियों की प्रधानता है जो बड़े गर्व के साथ अपने पुण्य का भागधेय अपने माता-पिता सास-ससुर पुत्र-पुत्री, भाई आदि आत्मीयों को बनाती थीं (१४)। इन स्त्रियों में बहुतसी विधवाएं थीं जो वैधव्य के शोक से घर गृहस्थी छोड़कर विरक्त हो जैन संघ में आर्यिका हो गयीं थीं। लेख नं० ४२ में ऐसी ही स्त्री कुमारमित्रा थी जिसे लेख में आर्या कुमारमित्रा लिखा है तथा उसे संशित, मक्षित एवं बोधित कहा गया है।

इन लेखों से एक और महत्व की बात सूचित होती है कि उस समय लोग अपने व्यक्तिवाचक नाम के साथ माता का नाम जोड़ते थे जैसे वात्सीपुत्र, तेवणी-पुत्र, वैहिदरीपुत्र, गोतिपुत्र, मोगलिपुत्र एवं कौशिकिपुत्र आदि। ऐसे नाम संस्कृतिक-इतिहास निर्माण की दृष्टि से मूल्यवान् हैं।

जैन धर्म के प्राचीन इतिहास की दृष्टि से मथुरा के ये लेख और भी बड़े महत्त्व के हैं। इन लेखों में मूर्ति के संस्थापक ने न केवल अपना ही नाम उत्कीर्ण कराया है बल्कि अपने धर्मगुरुओं का नाम भी, जिनके कि सम्प्रदाय का वह था। इनमें आचार्यों की उपाधियाँ—आर्य, गणी, वाचक, महावाचक, आतपिक आदि जो कि उस समय प्रचलित थीं, दी गई हैं। लेखों में अनेक गणों, कुलों और शाखाओं के नाम भी दिये गये हैं। ठीक इस प्रकार के गण, कुल एवं शाखा, श्वेताम्बर आगम 'कल्पसूत्र' की स्थाविरावली में तथा कुछ वाचक आचार्यों के नाम नन्दिसूत्र की पट्टावली में मिलते हैं। महत्त्व की बात तो यह है कि लेखों के कुछ हिस्सा घिस जाने या पत्थर के कारीगर द्वारा गलत ढंग से उत्कीर्ण

प्राप्ति ईसा से लगभग ५५० वर्ष पहले हुई थी, अतः इस स्तूप की मरम्मत १३०० वर्ष बाद अर्थात् सन् ७५० के लगभग में हुई होगी। और पार्श्वनाथ के समय में इसके ईंटों से बनाये जाने का काल ईसा से ६०० वर्ष से भी पूर्व निश्चित होता है। संभव है देवनिर्मित शब्द यही द्योतित करता है। यदि यह संभावना ठीक है तो भारत वर्ष के जितने स्तूप एवं इमारतें हैं उनमें यह स्तूप सबसे प्राचीन समझना चाहिये।

स्तूप का मूल अभी तक विद्वानों के विवाद का विषय है। किन्हीं का मत है कि यह प्राचीन यज्ञशालाओं का अनुकरण है जब कि दूसरे इसे भग० बुद्ध के उलटकर रखे गये भिक्षापात्र के आधार पर निर्मित मानते हैं। कभी कभी विशिष्ट पुरुषों के स्मारक रूप में भी स्तूप बनते थे और उसमें उनके अस्थिफूल रखे जाते थे। पर यह आवश्यक नहीं कि सभी स्तूप ऐसे हों। सारनाथ के धमेख स्तूप और चौखण्डी स्तूप में कनिंघम को कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ।

स्तूप का तलभाग गोल होता है। नीचे एक गोल चबूतरा, उसके ऊपर ढोल या कुएं के आकार की इमारत और उसके भी ऊपर एक अर्ध गोलाकार गुंबज (छतरी) होती है। चबूतरे पर स्तूप के चारों ओर एक प्रदक्षिणा पथ छोड़कर पत्थर की लम्बी खड़ी और आड़ी पटरियों का एक घेरा (Railing) बना रहता है। इस घेरे में अधिकतर चारों दिशाओं में तोरण (gate way) बने होते हैं। ये तोरण बड़े ही सुन्दर बनाये जाते हैं। पत्थर के दो स्तम्भ खड़े करके उनके ऊपर के शिरों पर तीन आड़ी पटरियां लगा देते हैं। उन्हीं के नीचे से आने जाने का रास्ता रहता है। तोरण तक जाने के लिए सीढ़ियां रहती हैं। ये स्तूप पोले और ठोस दोनों तरह के मिले हैं।

मथुरा के जैन स्तूप का वर्णन इस प्रकार है:—इस स्तूप के तले का व्यास ४७ फीट था। यह ईंटों का बना था, ईंटें आपस में बराबर न थी किन्तु छोटी बड़ी थीं। इसकी भूमि का ढाँचा इक्के गाड़ी के आकार का था। केन्द्र से बाहर की दीवार तक आठ व्यासार्ध, जिनपर आठ दीवारें स्तूप के भीतर-भीतर ऊपर तक बनी थीं। इन दीवारों के बीच में मिट्टी भरी हुई मिली है। कदाचित् यह स्तूप

अनेक लेखों से प्राप्त ठानिय कुल के रूप में प्राप्त हुआ है। इसी तरह चतुर्थ 'पण्हवाहण' तो पण्हवणय कुल (६६) मालुम होता है। उक्त गण की चार शाखायें थीं। प्रथम 'उच्चानगरि' तो अनेक लेखों की उच्छेनगरी ही है। द्वितीय 'विज्जाहरी' शाखा लेख नं० ६२ की विद्याधरी शाखा मालूम होती है। तृतीय 'वइरी' शाखा को हम अनेक लेखों में वेरिय, वेर, वैर, वइर के रूप में देख सकते हैं। चतुर्थ 'मज्झिमिल्ला' शाखा लेख नं० ६६ की मज्झम शाखा ही समझना चाहिये

आर्य श्रीगुप्त गणी से 'चारण' गण निकला था जो कि मथुरा के अनेक लेखों में वारण गण के रूप में पढ़ा गया है। उससे सम्बन्धित ७ कुलों में से 'पीइ-धम्मिअ' लेख नं० ३४ एवं ४७ का पेतवमिक मालुम होता है। 'हालिज्ज' कुल लेख नं० १७,४४ एवं ८० का आर्य हाटिकिय प्रतीत होता है। 'पूसमित्तिज्ज' लेख नं० ३७ का पुष्यमित्रीय तथा 'अज्जवेडय' कुल लेख नं० ४५ का आर्यचेटिय एवं नं० ५२ का अय्यमित्त (?) और 'कण्हसय' लेख नं० ७६ का कनियसिक विदित होते हैं। इसी तरह उक्त गण की चार शाखाओं में 'हारियमालागारी' लेख नं० ४५ की 'हरीतमालकाधी,' 'वज्जनागरी' लेख नं० ११,४४ एवं ८० की वाज्र-नगरी, 'संकासीआ' लेख नं० ५२ की सं (कासिया) तथा 'गवेधुका' लेख नं० ७६ में ओद (संभव गोदुक) के रूप में पढ़ी गयी है।

इस तरह ३ गण, १२ कुल एवं १० शाखाओं के नाम लेखों और कल्पसूत्र स्थविरावली में बराबर मिल जाते हैं। केवल लेख नं० ८२ के वारण गण के नाडिक कुल का मिलान नहीं हो सका है। संभव है यह नाम अन्य नामों के समान लिखने की अशुद्धियों के कारण अज्ञात सा प्रतीत होता है।

कल्पसूत्र स्थविरावली के अनुसार काल की दृष्टि से इन गणों, कुलों और शाखाओं का आविर्भाव वीर सं० २४५-२९१ अर्थात् ई० पूर्व २८२-२३६ के बीच हुआ था और मथुरा के लेखों से मालूम होता है कि ये गुप्त संवत् ११३ अर्थात् सन् ४३४ तक बराबर चलते रहे।

मथुरा के इन लेखों में उक्त गणों, कुलों एवं शाखाओं के सिवाय अनेकों आचार्यों के नाम आते हैं जो कि वाचक आदि पद से विभूषित थे। श्वेताम्बर आगम नन्दिसूत्र में एक वाचक वंश की पट्टावली दी हुई है, जिसके अनेकों नामों का मिलान शिलालेखों के नामों से किया जा सकता है। उक्त पट्टावली में सुधर्म गणधर की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए ७वें आर्य स्थूलभद्र के शिष्य सुहस्ति से चलने वाले वाचक वंश का वर्णन है जो कि वीर निर्वाण सं० २४५ से लेकर ९९४ तक अर्थात् ई० पूर्व २८२ से लेकर सन् ४६७ तक चलता रहा। उक्त वंश में ही आर्य देवर्धि क्षमाश्रमण हुए थे जिन्होंने वर्तमान श्वेताम्बर आगमों को अन्तिम रूप दिया था। उक्त पट्टावली में गण, कुल एवं शाखाओं का नाम बिल्कुल नहीं दिया। संभव है वहाँ गण, कुल शाखादि को महत्त्व न दे वाचक पदधारी आचार्यों का नाम ही गिनाया गया है। जो भी हो, यहाँ उक्त पट्टावली और लेखों के कुछ नामों में काल दृष्टि से साम्य प्रकट किया जाता है।

१३—आर्य समुद्र, वीर नि० सं०...महावाचक, गणि समदि (ले० नं०५२)

१४—आर्य मंगु[1], „ ४६७[2] गणि मंगुहस्ति („ ५४)

१५—आर्य नन्दिल क्षमण आर्य नन्दिक („ ४१)

गणी नन्दी („ ६७)

१६—आर्य नागहस्ति („ ६२०[3]-६८९) वाचक आर्य धस्तुहस्ति („ ५४)

१—मुनि दर्शनविजय, पट्टावली समुच्चय, भा० १ पृष्ठ १३ पर आर्य मंगुकी गाथा के अनन्तर दो प्रक्षिप्त गाथाएं आती हैं, जिनमें अज्जधम्म, भद्दगुप्त, अज्जवयर, अज्जरक्खित के नाम आते हैं।

२—वही, पृष्ठ ४७, तपागच्छपट्टावली। इस पट्टावली का रचना काल विक्रम सं० १६४६ है।

३—वही, पृष्ठ १६, 'सिरि दुषमाकाल समणसंघथयं' नामक पट्टावली का

एवं हस्तहस्ति[1] (ले० नं० ५५)

२२—भूतदिन्न (वी० नि० ६०४–६८३[2]) दन्तिल (,, ६२)

लेख नं० ५२ पर जिसमें कि महावाचक गणि समदि का नाम आता है, कुषाण संवत् ५० अंकित है जो कि गणना में वीर निर्वाण सं० ६५५ आता है[3]। नन्दिसूत्र पट्टावली में आर्य समुद्र का नाम आर्य मंगु से पहले आता है। आर्य मंगु का समय पट्टावली के अनुसार वीर नि० सं० ४६७ है। यदि यह ठीक है तब तो आर्य समुद्र का समय भी आर्य मंगु से पहले होना चाहिये। लेख में दिया गया कुषाण सं० ५० (वी०नि० सं० ६५५) यदि आर्य समदि का समय है तो इस हिसाब से पट्टावली के समय और लेख के समय में लगभग १८८ वर्ष का अन्तर आता है। पर वास्तव में लेख नं० ५२ में आर्य समदि का समय नहीं दिया गया बल्कि वह आर्य दिनर (?) आदि की एक शिष्या द्वारा मूर्ति स्थापना का समय है। उक्त लेख में समदि शब्द के बाद कई अक्षर घिस गये हैं। यदि

रचना काल वि० सं० १३२७ है।

१. शुद्ध नाम हस्ति-हस्ति प्रतीत होता है। हस्ति का पर्यायवाची नाग होता है। यह संभव है कि नागहस्ति को लेख मे हस्ति-हस्ति लिखा गया है। संभव है लेख को उत्कीर्ण करने वाले की भूल से हस्ति शब्द घस्तु हो गया हो, और दूसरे लेख में हस्ति का हस्त हो गया हो।

२. वही, पृष्ठ १८, दिन्न और दत्तिल दोनों शब्द दत्त शब्द के प्राकृत रूप होते हैं।

३. जैन परम्परा के अनुसार वीर निर्वाण का समय विक्रम सं० से ४७० वर्ष पूर्व है, अतः ई० सन् पूर्व ५२७ होगा। कुषाण संवत् ईस्वी सन् ७८ से प्रारंभ होता है अतः कुषाण संवत् के प्रारंभ में ५२७+७८= ६०५ वीर निर्वाण सं० समझना चाहिये। डा० याकोबी के मतानुसार वीर निर्वाण ई० सन् पूर्व ४६७ में होता है।

अक्षरों की पूर्ति आढचर या आढचरी[1] शब्द से की जाय तो यह कहा जा सकता है कि वह शिष्य या उसके गुरु, महावाचक समदि के आढचरी या आढचर थे। आढचर शब्द का यदि यह अर्थ मान लिया जाय कि उक्त आचार्य की परम्परा में विश्वास करने वाला तो यह संभावना करनी पड़ेगी कि महावाचक समदि की परम्परा १८८ वर्ष या उसके कुछ अधिक वर्षों तक चलती रही[2]। इसी हालत में लेख और पट्टावली के आर्य समदि और आर्य समुद्र का समीकरण संभव है।

इसी तरह गणि आर्य मंगुहस्ति का उल्लेख करने वाले लेख नं०५५ का समय कुषण सं० ५२ दिया गया है जो कि वी० नि० सं० ६५७ होता है। इस लेख में जो समय दिया गया है वह है वाचक आर्य वसुहस्ति के शिष्य एवं गणी आर्य मंगुहस्ति के आढचर वाचक आर्य दिन्न का। पट्टावली में आर्य मंगु का समय वी० नि० सं०४६७ दिया गया है। लेखगत समय वी० नि० सं० ४७७ (कुषण सं० ५२) से संगति बैठाने के लिए यहाँ यह समझना चाहिए कि आर्य मंगु की परम्परा कम से कम १६० वर्ष तक चलती रही।

---

१. मथुरा के लेख नं० १७ में सढचरी, ४३ में सढचरिय, ५४ में सढचरो तथा ५५ में अढचरो शब्द आते हैं।

२. यह संभावना इसलिए करना पड़ी कि उस काल में एक समय में ही आचार्यों की कई परम्परायें चलती थीं। श्वेताम्बर जैन पट्टावलियों के देखने से यह बात भली भाँति विदित होती है कि आर्य सुहस्ति के बाद ऐसी अनेक परम्पराओं का उद्गम हुआ था। कोई वाचक परम्परा थी, कोई युगप्रधान परम्परा थी तथा कोई गुरु परम्परा थी आदि, तथा उन आचार्यों से कई गण, कुल और शाखा निकले थे। जिन परम्पराओं की स्मृति रही उनका अंकन तो हो गया, शेष कालदोष से लुप्त हो गई।

किये जाने या लेखों का गलत छापा लेने तथा नकल को गलत पढ़े जाने पर भी उक्त दोनों पट्टावलियों के कई नामों के साथ साम्य स्थापित किया जा सकता है।

संभव है सम्प्रदाय का नाम गण, उसके विभाग का नाम कुल तथा उसके उपविभाग का नाम शाखा था। ये नाम जैन श्रमणों के उन विभिन्न संघों की ओर संकेत करते हैं जो कि ईसा पूर्व की कुछ शताब्दियों में जैन श्रमणों में अपनी अपनी आचार्य परम्परा और पर्यटन भूमि की विभिन्नता के कारण पैदा होना शुरु हुए थे।

कल्पसूत्र स्थविरावली के अनुसार वर्धमान स्वामी की परम्परा में ६ वीं पीढ़ी में आर्य सुहस्ति हुए जो कि आर्य स्थूलभद्र के अन्तेवासी थे। इन आर्य सुहस्ति के १२ अन्तेवासी थे। इनमें से आर्य रोहण, आर्य कामर्धि, आर्य सुस्थित तथा सुप्रतिबुद्ध एवं आर्य श्रीगुप्त से निकलने वाले गण, कुल एवं शाखाओं के कई एक नाम लेखों में पहिचाने जा सके हैं।

तदनुसार आर्य रोहण गणों से 'उद्देह' गण निकला जो कि हमारे लेख २४ एवं ६६ का 'उदेंकिय' गण समझना चाहिये। उक्त गणके ६ कुल थे जिनमें से केवल दो की पहिचान हो सकी है। 'नागभूय' कुल हमारे लेख नं० २४ का 'नागभूतिय' होना चाहिये। 'परिहासक' गलत रूप से लिखा या पढ़ा जाकर लेख नं० ६६ में पुरिष के रूप में प्रतीत होता है। उक्त गण की चार शाखायें थीं जिनमें एक शाखा 'पुण्ण पत्तिका' लेख नं० ६६ की पेतपुत्रिका होना चाहिये।

आर्य कामर्धि गणों से वेसवाडिय गण निकला। यद्यपि यह नाम लेखों में स्पष्ट रूपसे उत्कीर्ण नहीं मिला लेकिन उक्त गणके चारकुलों में से एक 'मेहियकुल' मेहिक के रूप में २६ और ६३ वें लेख में प्राप्त हुआ है।

आर्य सुस्थित एवं सुप्रतिबुद्ध गणों से 'कोडिय' गण निकला जो कि अनेकों लेखों में कोटिय के रूप में मिलता है। इस गण के चार कुलों में पहले कुल 'बंभलिज' को तो अनेकों लेखों का ब्रह्मदासिक कुल ही समझना चाहिये। दूसरा 'वत्थलिज' भी लेख नं० २७ कावच्छलिय प्रतीत होता है। तृतीय 'वाणिज' कुल

दोनों आचार्यों को क्षमाश्रमण और महावाचक भी लिखा है[1]। इन्हें उक्त ग्रन्थों में यतिवृषभ का गुरु कहा है[2]।

इसी तरह लेख नं० ६२ के आर्य दत्तिल, नन्दिसूत्र पट्टा० के २२ वें वाचक आर्य भूतदिन्न मालूम होते हैं। दत्तिल का समय गुप्त संवत् ११३ अर्थात् सन् ४३४ ई० होता है जो कि वीर नि० सं० ६६१ है। पट्टावली में भूतदिन्न का समय भी वीर नि० सं० ६०४से ६८३ दिया गया है। इस समय के अन्तर्गत लेख का समय आ जाता है।

यद्यपि लेखों के तथा नन्दिसूत्र पट्टावली के एवं कल्पसूत्र थेरावली के अन्य कुछ नामों में साम्य सा प्रतीत होता है—जैसे न० पट्टा० के स्कन्दिल या पंडिल्ल का लेख नं० २४, ३२ एवं ३६ के आर्य संघिक या संघि से तथा सिंहसूरि का लेख नं० ३१, ३२ के सिंह या सीह से और कल्पसूत्र थे० के २७ वें पट्टधर वृद्ध क्ष नाम लेख नं० ५६ एवं ५८ के वृद्धहस्ति से तथा २३ वें पट्टधर गेहिल या ष्ठ का लेख नं० २३ के गाढक व ज्येष्ठ हस्ति से— पर कालक्रम के विचार से यह समीकरण व्यर्थ सा है। यहाँ पट्टावली और लेखों के इन नामों से इतना तो अवश्य ज्ञात होता है कि ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में जैन मुनियों के प्रायः ऐसे नाम होते थे।

जो भी हो, पर मथुरा के शिलालेखों के आचार्यों और उनके गणों, कुलों और शाखाओं के नाम जैनधर्म के इतिहास की दृष्टि से बड़े महत्त्व के हैं। हम इन गणों आदि के अस्तित्व से उस महान् युग का, उसके जीवन की गति विधि

१—पुरातन जैन वाक्य सूची, भूमिका, पृष्ट ३०.

२—यतिवृषभ का समय अभी तक ठीक रूप से निश्चित नहीं हुआ। विद्वान् लोग इन्हें सन् ४७८ के लगभग का मानते हैं, पर श्रद्धेय प्रेमी जी की संभावना कि वे और पहले के आचार्य हैं (जैन सा० और इति० द्वि० सं०, पृष्ठ २१)। विद्वानों का ध्यान मैं अपनी संभावना की ओर खींचता हूँ।

का तथा साथ ही सम्प्रदायों की परम्परा को रखने में विशेष सावधानी का अनुमान कर सकते हैं[1]।

३. जैन संघ का परिचय

मथुरा के प्राचीन लेखों की चर्चा के प्रसंग में हम देख चुके हैं कि कल्पसूत्र स्थविरावली और नन्दिसूत्र पट्टावली में अङ्कित कुछ गण, कुल और शाखाओं का अस्तित्व गुप्तकाल (ले० नं० ६२) तक अवश्य था। इसके बाद हमें ऐसे लेख नहीं मिले जिनसे कहा जाय कि उक्त परम्परा चलती रही हो। गुप्तकाल

---

१. इस अध्याय के लिखने में सहायक ग्रन्थों का निर्देश—

जी० बूलर, इण्डियन सेक्ट आफ जैन्स, लन्दन, १९०३.

जे० इ० लोजेन्डे, सीथियन पीरियड, लीडन, १९४९.

इ० जे० रेप्सन, केम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इंडिया, भाग १, दिल्ली, १९५५.

ह० याकोबी, कल्पसूत्र, अंग्रेजी अनुवाद (से० बु० ई० भाग २२) आक्स फोर्ड, १८८४.

जे० फर्ग्युसन एण्ड जे० बर्जेस, हिस्ट्री आफ इंडियन एण्ड ईस्टर्न आर्किटेक्चर, भाग २, १९१०.

उमाकान्त प्रेमचन्द शाह, स्टडीज इन जैन आर्ट, बनारस, १९५५.

पं० नाथूराम प्रेमी, जैन साहित्य और इतिहास, बम्बई, १९४२, १९५६.

डा० हीरालाल जैन, षट्खण्डागम, प्रथम, द्वितीय पुस्तक।

मजूमदार और पुसलकर, एज आफ इम्पीरियल यूनिटी, बम्बई।

मुनि दर्शनविजय जी, पट्टावली समुच्चय, प्रथम भाग, वीरमगाम १९२३.

त्रिपुटी महाराज, जैन परम्परानो इतिहास अहमदाबाद १९५२.

प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ।

जैन हितैषी भाग, १०, १३.

जैन सिद्धान्त भास्कर।

अनेकान्त।

के ही कुछ लेखों से तथा बाद के सैकड़ों लेखों पर सरसरी दृष्टि डालने से हमें दक्षिण भारत में कुछ नये संघों और उनकी नई शाखाओं — गण, गच्छ, अन्वय एवं बलियों के नाम दिखाई पड़ते हैं। ऐसा मालूम होता है कि दक्षिण भारत में उत्तर भारत की परम्परा शायद उसी रूप में चालू न रही थी। हम श्रवण बेल्गोल के एक लेख (प्र० मा० नं० १) से जानते हैं कि दक्षिण भारत में सर्व प्रथम भद्रबाहु द्वितीय आये थे और वहाँ जैन धर्म की प्रतिष्ठा इनसे ही हुई थी, पर कदम्ब वंशी नरेशों के एक लेख (९८) से मालूम होता है कि ईसा की ४-५ वीं शताब्दी में जैन संघ के वहाँ विशाल दो सम्प्रदाय—श्वेतपट महाश्रमण संघ और निर्ग्रन्थ महाश्रमण संघ—का अस्तित्व था। इसी तरह इस वंश के कई लेखों में जैनों के यापनीय[1] और कूर्चक[2] नामक संघों का उल्लेख मिलता है जो कि एक प्रकार से उक्त दोनों से भिन्न थे।

दक्षिण भारत में निर्ग्रन्थ सम्प्रदाय एवं यापनीय तथा कूर्चक तथा सम्प्रदायों की स्थापना किसने की यह बात स्पष्ट रूप से हमें लेखों से विदित नहीं होती, पर यह कहने में शायद आपत्ति न होगी कि निर्ग्रन्थ सम्प्रदाय वहां भद्रबाहु (द्वितीय) द्वारा स्थापित हुआ था। लेख नं० ९८ और ९९ (सन् ४७०-४९० के लगभग) में इस सम्प्रदाय का उल्लेख है पर इसके बाद इस नाम से नहीं। वैसे तो प्राचीन काल में निर्ग्रन्थ या निगण्ठ (लेख नं० १) शब्द भग० महावीर और उनके अनुयायी सम्प्रदाय मात्र के लिए प्रयुक्त होता था पर इन लेखों

---

१. यह सम्प्रदाय सिद्धांत दृष्टि से श्वेताम्बर सम्प्रदाय से अधिक मिलता जुलता था, परन्तु संघ के साधु नग्न रहते एवं अनुयायी नग्न मुर्तियों की स्थापना करते एवं पूजते थे। इसका अस्तित्व १५-१६ वीं शताब्दी तक दक्षिण भारत में था। परिचय आगे दिया गया है।

२. कूर्चक सम्प्रदाय का परिचय आगे दिया गया है।

में श्वेताम्बर और यापनीय सम्प्रदाय से भिन्न अर्थ में प्रयुक्त होने के कारण इसे दिगम्बर सम्प्रदाय अर्थ में ही लेना सयुक्तिक होगा। । इस संघ का प्रारंभिक रूप क्या था यह तो ईसा से पूर्व तथा ईसा के बाद ४-५ वीं शताब्दियों के लेखों से विदित नहीं होता पर कदम्ब नरेश मृगेशवर्मा के उपर्युक्त लेख नं० ९८-९९ से ज्ञात होता है कि इस सम्प्रदाय के मुनियों के नाम पर दान में ग्राम और भूमि आदि दी जाती थी।

लेख नं० ९८ से ज्ञात होता है कि देवगिरि नामक स्थान में श्वेताम्बर और दिगम्बर सम्प्रदाय मिल जुल कर रहते थे और शायद उनका एक ही मन्दिर था। इसके बाद हम निर्ग्रन्थ सम्प्रदाय का नाम तो लेखों में नहीं पाते पर गंग-वंश के नरेश माधववर्म द्वितीय (सन् ४०० के लगभग) और उसके पुत्र अविनीत (सन् ४२५ या उसके बाद) के लेखों (९० और ९४) में सर्व प्रथम मूल संघ का उल्लेख पाते हैं जो कि ९-१० वीं शताब्दी के लेखों में और उसके बाद के लेखों में प्रचुर मात्रा में निर्दिष्ट है। विद्वानों की धारणा है कि दक्षिण भारत में श्वेता० सम्प्रदाय से दिगम्बर सम्प्रदाय को पृथक् बतलाने के लिए ही संभवतः मूलसंघ का प्रयोग किया गया है। यदि यह बात ठीक है तो कहना होगा कि निर्ग्रन्थ सम्प्रदाय ही उस समय से मूलसंघ कहलाने लगा हो[1]। प्रस्तुत

---

१. श्रद्धेय पं० नाथूराम जी प्रेमी मूलसंघ के नाम को तीसरी चौथी शताब्दि के लेखों में न देख संभावना करते हैं कि मूलसंघ यह नामकरण अपने से अतिरिक्त दूसरों को अमूल—जिनका कोई मूल आधार नहीं—बतलाने के लिए ही किया गया है। और यह तो वह स्वयं ही उद्घोषित कर रहा है कि उस समय उसके प्रतिपक्षी दूसरे दलों का अस्तित्व था। (जैन साहित्य और इति० द्वि० संस्करण, पृष्ठ ४८५)

लेख नं० ४१ एवं ६७ के आर्य नन्दिक या गणी नन्दिय, नन्दिसूत्र पट्टावली के १५ वें आर्य नन्दिल खमण प्रतीत होते हैं। लेखों में उनका समय कुषाण सं० ३२ तथा ९३ दिया हुआ है जो कि गणना में वीर नि० ६३७ तथा ६९८ होता है। इस तरह उनका समय ६१ वर्ष आता है। पर पट्टावली की गणना में उक्त समय आर्य नागहस्ति को दिया गया है तथा नन्दिल के समय का कोई उल्लेख नहीं। यद्यपि यहाँ लेख और पट्टावली के समय को देखते हुए एक समय में दो वाचक आचार्य-नन्दिल और नागहस्ति-के होने का आपत्ति दोष आता है पर मथुराके लेखों में तो एक एक, दो दो वर्ष के बीच या एक ही समय में अनेक वाचक आचार्यों को होता देख उक्त दोनों आचार्यों को एक समय में संभावना कोई बाधक सी प्रतीत नहीं होती।

लेख नं० ५४ एवं ५५ के आर्य धस्तुहस्ति तथा हस्तहस्ति तो काल की दृष्टिसे भी पट्टावली के १६ वें पट्टधर नागहस्ति मालूम होते हैं। लेखों से ज्ञात समय और पट्टावली में दिये गये उन के समय में कोई गड़बड़ी पैदा नहीं होती। लेखों के कुषाण संवत् ५२ और ५४ अर्थात् वीर नि०सं० ६५७ और ६५९, पट्टावली में दिये गये नागहस्ति के समय वीर नि० ६२०-६८९ के अन्तर्गत आ जाते हैं। इस तरह लेखगत यह समकालीन उल्लेख अद्भुत है।

लेख नं० ५४ और ५५ की एक और बात विशेष उल्लेखनीय है। लेख नं० ५४ में आर्य नागहस्ति (धस्तुहस्ति) और मंगुहस्ति का तथा लेख नं० ५५ में नागहस्ति (हस्तहस्ति) और माघहस्ति का एक साथ उल्लेख है। माघहस्ति संभव है मंगु,मंखु या मंजु का नामान्तर या शब्दान्तर हो या शिल्पी की असावधानी से ऐसा उत्कीर्ण होगया हो। यदि यह अनुमान सही है तो दोनों लेखों में इन दोनों आचार्यों का एक साथ उल्लेख कुछ विशेष अर्थ रखता है। दिगम्बर परम्परा के धवलादि ग्रन्थों में आर्य मंखु और नागहस्ति को सहपाठी कहा गया है.[1]। मंगु और मंखु एकार्थक हैं। धवला और जयधवला इन दोनों में इस

१— षट्खंण्डागम की भूमिका,पुस्तक २ पृष्ट३८

लाभ देते थे, तो दूसरी ओर सैद्धान्तिक मान्यता में श्वेताम्बरों के समान स्त्रीमुक्ति, केवलीकवलाहार और सग्रन्थावस्था आदि भी मानते थे। वे प्राचीन जैनागम ग्रन्थों का पठन-पाठन करते थे पर उनके आगम शायद श्वेताम्बरों के वर्तमान आगमों से पाठभेद को लिए हुए कुछ भिन्न थे। संभव है यह सम्प्रदाय श्वेताम्बर दिगम्बरों के बीच की एक कड़ी था। इस सम्प्रदाय में अनेकों प्रतिभाशाली विद्वान्, आचार्य एवं कवि हुए हैं जिन्होंने संस्कृत प्राकृत और कन्नड भाषा में सैकड़ों प्रतिष्ठित ग्रन्थ लिखे हैं। श्रद्धेय पण्डित नाथूराम जी प्रेमी ने खोजकर बतलाया है कि इन विद्वानों में शिवार्य, अपराजित, पाल्यकीर्ति शाकटायन, महावीर और स्वयम्भू कवि थे। वे संभावना करते हैं कि उमास्वाति, वट्टकेरि, यतिवृषभ आदि भी शायद यापनीय हों[1]।

प्रस्तुत संग्रह में इन संघ का प्रकट या अप्रकट रूप से उल्लेख करने वाले अनेकों लेख हैं जिनसे इनके गणों एवं गच्छों का परिचय मिलता है। इस संघ के कतिपय गणों के सम्बन्ध में, लेखों के तिथिक्रम से अध्ययन करने पर मालूम होता है कि वे पीछे दिगम्बर सम्प्रदाय के अन्य दूसरे संघों द्वारा आत्मसात् कर लिये गये, या उनका पुनः संस्कार किया गया, या वे काल के थपेड़े में लुप्त हो गये। लेखों के विश्लेषण से यह बात स्पष्ट हो जाती है। यह सम्प्रदाय बड़ा ही राज्यमान्य था। लेखों से विदित होता है कि कदम्ब, चालुक्य, गंग, राष्ट्रकूट और रट्ट वंश के राजाओं ने इस संघ को और इसके साधुओं को अनेकों भूमिदानादि किये थे।

कदम्ब वंश के लेख नं० ९९, १०० तथा १०५ से ज्ञात होता है कि उस वंश के प्रारम्भिक राजाओं के काल में यह संघ बड़ा ही प्रभावक था। कदम्ब नरेश मृगेशवर्मा (सन् ४७०-४९०) ने पलासिका स्थान में इस संघ को अन्य दूसरे संघों—निर्ग्रन्थ एवं कूर्चकों के साथ भूमिदान द्वारा सत्कृत किया था (९९)। उक्त नरेश के पुत्र रविवर्मा ने इस संघ के प्रमुख आचार्य कुमारदत्त को पुरखेटक

१—देखिए, जैन साहित्य और इतिहास, द्वितीय संस्करण के अनेक स्थल

ग्राम दान में दिया था (१००)। इसी तरह कदम्ब वंश की दूसरी शाखा के युवराज देववर्मा ने भी यापनीय संघ को कुछ क्षेत्रों का दान देकर सत्कृत किया था (१०५)। लेख नं० १०५ में 'यापनीयसंघेभ्यः' यह बहुवचन प्रयोग द्योतित करता है कि यापनीय संघ के कई अवान्तर भेद थे।

यद्यपि इन लेखों से इस सम्प्रदाय पर विशेष प्रकाश नहीं मिलता पर लेख नं० १०६,१२१, १२४, १४३ आदि से इसके गणों और गच्छों का साधारण परिचय मिलता है। इन लेखों से ज्ञात होता है कि इस सम्प्रदाय में नन्दिसंघ नन्दि गच्छ) प्राचीन तथा प्रमुख था। इस संघ के आचार्यों का नाम विशेषतः नन्द्यन्त और कीर्त्यन्त (१२४) होता था। नन्दिसंघ कई गणों में विभक्त था या संघ की व्यवस्था की दृष्टि से कल्पित भेदों में बांट दिया गया था। उनमें कनकोपलसम्भूत वृक्षमूलगण[1] (१०६) श्रीमूलमूलगण (१२१) तथा पुन्नागवृक्षमूलगण प्रमुख (१२४) थे। हम देखते हैं कि गणों के ये नाम कतिपय वृक्षों के नामों से सम्बन्धित हैं। वृक्षों के ये नाम भी या तो विभिन्न साधु समुदाय का चिह्न रहे होंगे जैसे विभिन्न राजवंशों के सिंह, बन्दर आदि चिह्न होते हैं या वे लोग अमुक अमुक वृक्ष विशेष वाले स्थान से शुरू शुरू में सम्बन्धित रहे होंगे और

१—लेख में मूलगुण लिखा है जो कि अशुद्ध प्रतीत होता है। पं० नाथूराम जी प्रेमी लेख नं० १०६ के मूल गण को मूलसंघ समझ बैठे हैं (जै०सा०इति० द्वि० सं० पृ० ४८५-) पर मूलसंघ को मूलगण कहीं नहीं लिखा गया और न वह उस अर्थ में ही प्रयुक्त हुआ है। मूलगण उक्त लेखों में तीन जगह आया है जो कि कुछ वृक्षान्त नामों से विशेषित है। चूँकि ले० नं० १२१ और १२४वें वृक्षमूलपरक गण नन्दिसंघ से सम्बन्धित हैं इसलिए ले० नं० १०६ के कनकोपल सम्भूत मूलगण की भी नन्दि संघ से सम्बन्धित होने की संभावना है। लेखों से ज्ञात होता है कि नन्दिसंघ आठवीं और नवीं शता० में सर्वप्रथम यापनीय सम्प्रदाय के अन्तर्गत था तो नन्दिसंघ से सम्बद्ध उस काल के गणों को उस सम्प्रदाय से ही सम्बद्ध समझना चाहिए।

तत्कालीन सुविधा की दृष्टि से नामकरण किया गया होगा पर पीछे वही नाम रूढ़िगत हो गया। इनमें पुन्नाग=नागकेशर के समीप से आने वाले साधु पुन्नागवृक्षमूलगण, श्रीमूल=शाल्मलि=सेमर के वृक्ष के पास से आने से श्रीमूल, मूलगण तथा कनक=चम्पा, पलाश या धतूरा, उपल=पाषाण या रत्न अर्थात् उक्त वृक्षों से घिरे पाषाणों के पास से आने या वहीं बैठने आदि के कारण कनकोपलसम्भूत मूलगण[1] नाम पड़ा होगा, ऐसा प्रतीत होता है।

उक्त लेखों में लेख नं० १०६ (सन् ४८८ ई०) से कनकोपलसम्भूतवृक्ष मूलगण के आचार्यों की गुरुपंक्ति इस प्रकार है—सिद्धनन्दि,[2] चितकाचार्य (जिनके पाँच सौ शिष्य थे), नागदेव और जिननन्दि। जिननन्दि के लिए चालुक्य नरेश चयसिंह के एक सामन्त सेन्द्रक वंशी सामियार ने एक जैन मन्दिर बनवा कर, एक गाँव और कुछ जमीन दान में दी थी। इसी तरह ले० नं० १२१ में चन्द्रनन्दि, कुमारनन्दि, कीर्तिनन्दि और विमलचन्द्राचार्य के उल्लेख के सिवाय उसका संक्षिप्त वर्णन है। लेख में श्रीमूल मूलगण के अन्तर्गत एरेगित्तूर गण और पुलिकल गच्छ का उल्लेख है जो प्रतीत होता है कि कोई स्थानीय भेद रहा होगा। उक्त गणों के विमलचन्द्राचार्य के उपदेश से गङ्ग नरेश श्रीपुरुष के ५०वें वर्ष में उसके एक सामन्त निगुंन्दराज परमगूल ने जैन मन्दिर बनवाकर सर्व करों से मुक्त करा कर एक गाँव दान में दिया था। इसी प्रकार पुन्नाग वृक्ष मूलगण के आचार्यों की परम्परा लेख नं० १२४ में इस प्रकार दी गई—श्री कित्याचार्य (चितकाचार्य?), इनके बाद अनेकों आचार्य होने पर कुविलाचार्य, विजयकीर्ति और अर्ककीर्ति। अर्ककीर्ति के लिए राष्ट्रकूट नरेश। प्रभूतवर्ष गोविन्द तृतीय ने अपने सामन्त चाकिराज की प्रार्थना पर सन् ८१२

---

१. लेख नं० १०६ में उसे काकोपलाम्नाय भी लिखा है। संभव है यह उसका दूसरा नाम हो या उसकी अवान्तर शाखा हो।

२. ये बड़े वैयाकरण थे, इनके मत का उल्लेख शाकटायन व्याकरण में किया गया है।

ई० में शिला ग्राम के जैन मन्दिर के प्रबन्ध के लिए उलनङ्कल नाम का गाँव दान में दिया था। उक्त मुनि ने चालिक्यन के नानजे विनयादित्य की शनिबाधा को दूर किया था। यह लेख गोविन्द तृतीय के पुत्र अमोघवर्ष प्रथम के राजपद पाने के केवल एक वर्ष पहले का है। अमोघवर्ष के समय ही यापनीय संघ में शाकटायन व्याकरण के कर्ता आचार्य पाल्यकीर्ति (शाकटायन) हुए हैं। श्रद्धेय प्रेमी जी सम्भावना करते हैं कि पाल्यकीर्ति इस लेख के अर्ककीर्ति के या तो शिष्य थे या सबर्मा थे।[1]

यापनीय नन्दिसंघ के कनकोपलादि गणों का अस्तित्व बाद के लेखों से नहीं मालूम होता इसलिए यह कहना कठिन है कि उनका क्या हुआ। पर लेख नं० २५० (सन् ११०८) में पुन्नागवृक्ष मूलगण को इस मूल संघ के अन्तर्गत अंकित पाते हैं। संभव है पीछे वह मूलसंघ द्वारा आत्मसात् कर लिया गया हो।

उपर्युक्त लेखों से कर्नाटक प्रान्त में यापनीय सम्प्रदाय का परिचय मिलता है। कर्नाटक के समान ही तामिल प्रान्त में भी यापनीय सम्प्रदाय का अच्छा प्रचार था, यह बात इन लेख नं० १४३-१४४ से विदित होती है। लेख नं० १४३ में यापनीय सम्प्रदाय के नन्दि गच्छ (संघ) के कोटिमडुवगण का उल्लेख है और उसके आचार्यों—जिननन्दि, दिवाकर, श्रीमान्दिर देव (धीरदेव)—का नाम दिया गया है। धीरदेव कक्कानरण जिनालय के अधिष्ठाता थे। उस जिनालय के लिए पूर्वीय चालुक्यवंश के अम्मराज द्वितीय ने सेनापति (कटकराज) दुर्गराज की प्रार्थना पर उक्त संघ के लिए एक गांव दान में दिया था। उसी राजा के दूसरे एक लेख नं० १४४ में अडुकलिगच्छ वलहारिगण के आचार्यों की गुरु पंक्ति इस प्रकार दी गई है—सकलचन्द्र, अय्यपोटि और अर्हनन्दि। अर्हनन्दि मुनि को अम्मराज द्वितीय ने सर्वलोकाश्रय जिनालय की भोजनशाला की मरम्मत कराने के लिए अत्तिलिनाडु प्रान्त के कलुवुम्बर नामक ग्राम को दान में दिया था। यद्यपि उक्त लेख में स्पष्ट रूप से यापनीय या नन्दिसंघ का उल्लेख नहीं है पर अडुकलिगच्छ वलहारि गण का अन्य संघों के साथ निर्देश न देख तथा एक

१. जैन साहित्य और इतिहास (द्वि० सं०) पृष्ठ १६७.

ही नरेश से उक्त दोनों लेखों को सम्बद्ध देख ऐसा प्रतीत होता है कि बलहारि गण और अडुकलिगच्छ भी यापनीय सम्प्रदाय के थे। इस सम्बन्ध में हमें इसलिए और विश्वास करना पड़ता है कि लेख नं० १८१ (सन् १६४८ ई०) में केवल बलगार गण[1] (बलहारि गण) का उल्लेख है और नन्द्यन्त नाम वाले मेघनन्दि और केशवनन्दि (अग्रोपवासी) मुनियों का नाम दिया गया है। इस तरह किसी और संघ के साथ उल्लेख न देख तथा नन्द्यन्त नाम के कारण, उक्त गण को यापनीय मानने में हमें कोई आपत्ति नहीं दिखती।

इस सम्प्रदाय के नन्दिसंघ और बलहारि या बलगार गण का पीछे क्या हुआ सो तो मालूम नहीं क्योंकि इससे सम्बन्धित पीछे की शताब्दियों के कोई लेख नहीं मिले। हाँ, ११ वीं शताब्दी के (लेखों १८८ सन् १०५८ आदि) से नन्दि संघ को द्रविड गण या द्रविड संघ के साथ विशेष रूप से तथा १२ वीं शताब्दी के लेखों (२५५ प्रथम भाग ४७ सन् १११५ ई० आदि) से मूल संघ के साथ कतिपय लेखों में उल्लेख देख हम यह अनुमान करते हैं कि प्रारम्भ में द्रविड संघ को चलाने वाले या तो इस संघ के साधु थे या ११ वीं शताब्दी में नव संगठित द्रविड संघ ने इस संघ को अपना आधार बनाया था। पीछे मूल संघ का पुनर्गठन करने वाले साधु समूह ने इस संघ को अपने अन्तर्गत भी मान्यता प्रदान की। इसी तरह बलहारि या बलगार गण का उल्लेख ११वीं शताब्दी के उत्तरार्ध (२०८) से बलात्कार गण के रूप में मूल संघ से सम्बद्ध मिलता है। यह सम्भव है कि बलिहारि एवं बलगार शब्द का ही परिवर्तित एवं सुसंस्कृत रूप (बलात्कार[2]) हो और यापनीय संघ के उक्त गण को मूल संघ के संगठन कर्ताओं ने पीछे अधीन कर लिया हो।

---

१. बलगार शब्द स्थान विशेष का द्योतक है। उस स्थान से निकले साधु समुदाय का नाम बलगार गण पड़ा। बलगार नामक एक ग्राम भी था (मेडीवल जैनिज्म, पृ० ३२७)।

२. बलात्कार शब्द स्थानविशेष का द्योतक नहीं प्रतीत होता। स्थान-विशेष के अर्थ में संभव है, वह शब्दानुकरण मात्र हो।

रट्टवंशी नरेशों के लेखों से इस संप्रदाय के दो और नये गणों पता चलता है। वे हैं कारेय गण और कण्डूर गण। लेख नं० १३० से ज्ञात होता है कि कुरुंश के प्रथम नरेश पृथ्वीराम के गुरु इन्द्रकीर्ति (गुणकीर्ति के शिष्य) मैलाप तीर्थ कारेय गण के थे। कारेय गण निश्चित रूप से यापनीय था यह बात हमें जैन एन्टिक्वेरी भाग ६, अंक २, पृष्ठ ६८, ६९ में अङ्कित दो लेखों (५३-५५) से मालूम होती है। लेख नं० १३० के सिवाय लेख नं० १८० में भी कारेय गण का उल्लेख है और वहाँ मैलापतीर्थ के स्थान में मैलापान्वय लिखा है तथा गुरुपरम्परा लेख नं० १३० के गुणकीर्ति से प्रारम्भ की गई है। दोनों लेखों को मिलाकर कारेय गण मैलाप अन्वय की परम्परा इस प्रकार बनती है— मूल भट्टारक, गुणकीर्ति, इन्द्रकीर्ति, नागचन्द्र (गुणकीर्ति के शिष्य) जिनचन्द्र, शुभकीर्ति, देवकीर्ति। देवकीर्ति मुनि को किसी अमोघवर्ष नरेश के गंग सामन्त ने जैन मन्दिर बनवाकर एक गाँव दान में दिया था। लेख में शक संवत् २३१ दिया गया है जो कि अशुद्ध प्रतीत होता है। कारेयगण का इस संग्रह के अन्य लेखों में और कोई उल्लेख नहीं है।

इस सम्प्रदाय के कण्डूर गण का अस्तित्व रट्ट नरेशों के दो लेखों नं० १६० और २०५ से विदित होता है। लेख नं० १६० (सन् ९८० ई०) में यापनीय कण्डूर गण की गुरुपरम्परा इस प्रकार है—देवचन्द्र, देवसिंह, रविचन्द्र अर्हणन्दि, शुभचन्द्र, मौनि देव और प्रभाचन्द्र देव। लेख नं० २०५ में कण्डूर गण के रविचन्द्र और अर्हणन्दि (१६०) का उल्लेख है। इस गण का ११ वीं शताब्दी में क्या हुआ सो तो मालूम नहीं पर मूल संघके ११ वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से मिलने वाले लेखों (२०७, २०९ आदि) में कण्डूर गण[1] के रूप में उल्लेख देख ऐसा लगता है कि यापनीय कण्डूर गण ही मूल संघ द्वारा आत्मसात् कर लिया गया है।

इस तरह लेखगत प्रमाणों से हम देखते हैं कि यह संघ ४ थीं से १० वीं

१. कण्डूर से कादूर और बाद में अणूर का प्रचलन हुआ, ऐसा प्रतीत होता है।

शताब्दी या उसके कुछ बाद तक अच्छा संगठित था इसमें कई प्रभावशाली गण थे जिन में से पुन्नागवृक्ष मूलगण, वल्लहारि गण और कण्डूर गण मूलसंघ में शामिल कर लिए गये और नन्दिसंघ को द्रविड संघ और पीछे मूलसंघ ने अपना लिया।

कूर्चकसंघ

कर्नाटक प्रान्त में ईस्वी पांचवी शताब्दी या उसके पहले जैनों का एक सम्प्रदाय कूर्चक नाम से था और कदम्बवंशी राजाओं के लेखों (९८, ९९) से ज्ञात होता है कि वह निर्ग्रन्थ संघ, श्वेतपट (श्वेताम्बर) संघ एवं यापनीय संघ से पृथक् था। श्रद्धेय प्रेमी जी का अनुमान है कि यह कूर्चक जैन साधुओं का ऐसा सम्प्रदाय होना चाहिये जो दाढ़ी-मूंछ रखता हो। प्राचीनकाल में जटाधारी, शिखाधारी, मुड़िया, कूर्चक, वल्कवास और नग्न आदि अनेक प्रकार के अजैन साधु थे। जान पड़ता है कि इसी तरह जैनों में भी साधुओं का ऐसा सम्प्रदाय था जो दाढ़ी-मूंछ (कूर्चक) रखने के कारण कूर्चक[1] कहलाता होगा। वरांगचरित्र के कर्ता जटाचार्य सिंहनन्दि सम्भव हैं ऐसे ही साधुओं में थे जिनकी जटाओं का वर्णन (जटाः प्रचलवृत्तयः) आचार्य जिनसेन ने अपने आदिपुराण में किया है।

कदम्बवंशी राजाओं के एक लेख (९९) में इस सम्प्रदाय का यापनीय और निर्ग्रन्थों के साथ उल्लेख है। लेख में 'यापनीयनिर्ग्रन्थकूर्चकानां' बहुवचनान्त पद सूचित करता है कि यापनीय, निर्ग्रन्थ और कूर्चक तीन पृथक् सम्प्रदाय थे। कूर्चक सम्प्रदाय के भी कई संघ थे इससे उक्त सम्प्रदाय का लेख नं १०३ में बहुवचन (कूर्चकानाम्) प्रयोग किया है। यदि लेख नं० ९९ के कूर्चक पद को बहुवचनान्त मान निर्ग्रन्थ पद को उसका विशेषण मान लें, तो कहना होगा कि वह संघ निर्ग्रन्थ अर्थात् दिगम्बर सम्प्रदाय का ही एक भेद था। कदम्ब मृगेशवर्मा ने अन्य दो जैन सम्प्रदायों के समय इसे भी भूमिदान देकर सत्कृत किया था। दूसरे एक लेख (१०३) में इस संघ के अवान्तर वारिषेणाचार्य संघ का उल्लेख

है। साथ में लिखा है कि उक्तसंघ के प्रधान मुनि चन्द्रक्षान्त को कदम्ब नरेश हरिवर्मा ने अपने पितृव्य शिवरथ के उपदेशसे सिंह सेनापति के पुत्र मृगेश द्वारा निर्मापित जैन मन्दिर की अष्टाह्निका पूजा के लिए तथा सर्व संघ के भोजन के लिए वनुन्तवाटक नामक ग्राम दान में दिया था। लेख नं० १०४ में अहरिष्टि नामक एक और श्रमण संघ का उल्लेख है जिसे सेन्द्रक सामन्त भानुशक्ति की प्रार्थना पर कदम्ब नरेश हरिवर्मा ने मरदे नामक ग्राम दान में दिया था। उक्त संघ के आचार्य धर्मनन्दि को यह दान में भेंट किया गया था ताकि वे अपने अर्धान चैत्यालय की पूजा आदि का प्रबन्ध कर सकें और इस दान का उपयोग साधुओं के लिए भी कर सकें। यद्यपि इस लेख में कूर्चक सम्प्रदाय का उल्लेख नहीं है तथापि ज्ञात पड़ता है कि वारिषेणाचार्य संघ के समान ही अहरिष्टि श्रमण संघ भी कूर्चकों का एक भेद था।

द्राविड़ संघ

द्रविड़ देश में रहने वाले जैन साधु समुदाय का नाम द्राविड़ संघ है। इस संघ के अनेकों लेख प्रस्तुत संग्रह में हैं। इन लेखों में इसे द्रमिड़, द्रविड़, द्रविण, द्रविड, द्राविड, दविल, दरविल या तिरुल नाम से उल्लिखित किया गया है। नामगत ये सब भेद लेखक या उत्कीर्णक के कारण हुए प्रतीत होते हैं। द्रविड़ देश वास्तव में वर्तमान आन्ध्र और मद्रास प्रान्त का कुछ हिस्सा है जिसे सुविधा की दृष्टि से तामिल देश भी कह सकते हैं। इस देश में जैनधर्म पहुँचने का समय बहुत प्राचीन है। उस देश के प्राचीन साधु समुदाय का कोई संघ रहा होगा। उसका क्या नाम था यह हमें मालुम नहीं पर देवसेनाचार्य ने अपने दर्शनसार में अन्य संघों के उत्पत्ति के वर्णन में द्राविड़ संघ के सम्बन्ध में लिखा है कि पूज्यपाद के शिष्य वज्रनन्दि ने वि० सं० ५२६ में दक्षिण मथुरा (मदुरा) में द्राविड़संघ की स्थापना की। इस संघ को वहाँ जैनाभासों में गिनाया गया है और वज्रनन्दि के

१. जैन साहित्य और इतिहास (द्वितीय संस्करण) पृष्ठ ५५६-५६३

विषय में लिखा है कि उस दुष्ट ने कछार, खेत, वसदि और वाणिज्य से जीविका निर्वाह करते हुए शीतल जल से स्नान करते हुए प्रचुर पाप अर्जित किया।[1] इस कथन में सचाई कहां तक है यह तो हम नहीं कह सकते पर इन लेखों में इस संघ के अनेक प्रतिष्ठित और विद्वान् आचार्यों को देखते हुए ऐसा लगता है कि शायद संघीय विद्वेष के कारण मूलसंघ के उक्त आचार्य ने एक प्राचीन आचार्य के सम्बन्ध में ऐसी कटूक्ति कह दी हो।

इस संघ से सम्बन्धित इस संग्रह के सभी लेख ईस्वी १०–११वीं शताब्दी या उसके ही बाद के हैं। इससे पहले इसकी प्राचीनता का द्योतक शायद ही कोई लेख मिला हो, तथा दसवीं शताब्दी से पहले का ऐसा कोई ग्रन्थ भी नहीं जो इस संघ के इतिहास पर प्रकाश डालें।

इस संघ के प्रायः सभी लेख कोङ्गाल्ववंशी, शान्तरवंशी तथा होय्सल-वंशी राजाओं के राज्यकाल के हैं जिससे ज्ञात होता है कि उन वंशों के नरेशों का इस संघ को संरक्षण प्राप्त था। अधिकांश लेख होय्सल नरेशों के हैं। इन लेखों से यह भी ज्ञात होता है कि इस संघ के आचार्यों ने पद्मावती देवी की पूजा एवं प्रतिष्ठा के प्रसार में बड़ा योग दिया था। इस संघ के कई लेखों में शान्तर और होय्सलवंश के आदि राजाओं द्वारा राज्य सत्ता पाने में पद्मावती के चमत्कार या प्रभाव की सहायता दिखायी गई है। लेखों से यह भी ज्ञात होता है कि इस संघ के साधु वसदि या जैन मन्दिरों में रहते थे। उनका जीर्णोद्धार और ऋषियों को आहार दान, तथा भूमि, जागीर आदि का प्रबन्ध करते थे।

---

१. सिरिपुज्जपादसीसो दाविडसंघस्स कारगो दुट्ठो।
णामेण वज्जणंदी पाहुडवेदी महासत्थो ॥ २५ ॥
पञ्चसए छव्वीसे विक्कमरायस्स मरणपत्तस्स।
दक्खिणमहुरा जादो दाविडसंघो महामोहो ॥ २६ ॥
कच्छं खेत्तं वसहिं वाणिज्जं कारिऊण जीवन्तो।
ण्हंतो सीयलनीरे पावं पउरं च संचेदि ॥ २७ ॥

इस संघ के आदि एवं प्राचीन कुछ लेख होय्सलों के उत्पत्ति स्थान अङ्गदि (सोसेवूर) से ही प्राप्त हुए हैं। इस स्थान के एक लेख नं० १६६ (सन् ९९० के लगभग) में इस संघ को द्रविड संघ कोण्डकुन्दान्वय, तथा दूसरे लेख नं० १७८ (सन् १०४० ई० ?) में मूलसंघ द्रविडान्वय लिखा है। पर ई० ११ वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के लेख नं० १८८,१८९,१९०,१९२,२०२, २१४,२१५,२१६ और २२६ में इसका द्रविड़ गण के रूप में नन्दिसंघ इरुङ्गलान्वय या अरुङ्गलान्वय के साथ उल्लेख किया गया है। इन निर्देशों से यह अनुमान होता है कि प्रारम्भ में नव संगठित द्रविड़ संघ ने अपना आधार या तो मूलसंघ को या कुन्दकुन्दान्वय को बनाया होगा पर पीछे यापनीय सम्प्रदाय के विशेष प्रभावशाली नन्दिसंघ में इस सम्प्रदाय ने अपना व्यावहारिक रूप पाने के लिए उससे विशेष सम्बन्ध रखा या द्रविड़ गण के रूप में उक्त संघ के अन्तर्गत हो गया। पीछे यह द्रविड़ गण इतना प्रभावशाली हुआ कि उसे ही संघ का रूप दे दिया गया और साथ में कुछ लेखों (२१३-२१५) में नन्दिसंघ को नन्दिगण के रूप में निर्दिष्ट किया गया पर पीछे उसको उसी रूप (नन्दिसंघ) में उल्लेख किया गया है। दर्शनसार (१० वीं शता०) में द्रविड़ संघ को यापनीयों के साथ जो जैनाभास कहा गया है, वह संभव है, इस ओर ही संकेत कर रहा है।

होय्सलों के उत्पत्तिस्थान अङ्गदि (सोसेवूर) से इस संघ के आदि एवं प्राचीन लेखों की प्राप्ति से हम अनुमान करते हैं कि इस संघ के प्रारम्भिक आचार्यों ने जैन धर्म संरक्षक होय्सल नरेशों को ऊपर उठाने में अवश्य सहायता की होगी, अथवा प्रगतिशील दोनों–राज्य एवं संघ–ने एक दूसरे को बढ़ाने की कोशिश की होगी[1]। होय्सल वंश के अनेकों नरेश और सेनापति इस संघ के

---

१. बहुत संभव है कि होय्सल वंश के समुद्धारक सुदत्तमुनि (४५७) या वर्धमान मुनि (६६७) लेख नं० १६६ में आये त्रिकाल मौनि देव हों या विमलचन्द्राचार्य के सधर्मा कोई और मुनि हों।

भक्त थे हालां कि उन्होंने अपनी भक्ति एवं आदर दूसरे जैन संघों के प्रति भी प्रदर्शित किया है। धार्मिक उदारता सचमुच में उस युग की देन थी।

इसके बाद इस नवीन संघ के एक प्रमुख आचार्य के रूप में वज्रपाणि पण्डित का नाम आता है। लेख नं० १७८ में इन्हें द्रविड़ान्वय मूलसंघ का तथा नं० १८५ में सूरस्थ गण का लिखा है। पिछले लेख में उनकी एक गृहस्थ शिष्या के दान का उल्लेख है। लेख नं० १७८ की शुरू की पंक्तियां भग्न हैं पर 'तर्काच्चालित' आदि विशेषणों से प्रतीत होता है कि ये बड़े तार्किक थे ये होय्सल नरेश राचमल्ल भूपाल (नृपकाम) के गुरु थे और इन्होंने होय्सलों के उत्पत्तिस्थान सोसेवूर में अपना जीवन बिता कर संन्यास मरण किया था लेख में यद्यपि काल निर्देश नहीं है फिर भी उनका समय द्रविड़ संघ का प्रथम साहित्यिक उल्लेख करने वाले ग्रन्थ दर्शनसार और होय्सल नृपकाल के समय के आसपास होना चाहिये। देवसेनाचार्य के दर्शनसार में जिस वज्रनन्दि का वर्णन किया गया है और उनके द्वारा प्रवृत्त जिस शिथिलाचार की ओर संकेत किया गया है, उससे प्रतीत होता है कि इस संघ की स्थापना देवसेन के समय (१० वीं शता०) या उससे कुछ पूर्व हुई है। वि० सं० ५२६ के जिस वज्रनन्दि को ग्रन्थकर्ता ने शिथिलाचार फैलाने का दोषी ठहराया है, उसका उल्लेख किसी लेख या उनसे पूर्व किसी ग्रन्थ में नहीं मिलता। फिर जिन कटुशब्दों द्वारा एक संघ के अनुयायी द्वारा दूसरे संघ के प्रतिष्ठापक आचार्य की भर्त्सना की गई इससे प्रतीत होता है कि वे समकालीन या कुछ ही समय पूर्ववर्ती रहे होंगे। संभव है इस लेख के वज्रपाणि ही वज्रनन्दि हों, पर इस अनुमान की पुष्टि के लिए अभी और प्रमाणों की आवश्यकता है।

वज्रपाणि पण्डित की आगे पीछे की गुरुपरम्परा का वर्णन हमें किसी लेख से प्राप्त नहीं हुआ। इसके बाद इस संघ के लेखों में नन्दिसंघ के आचार्यों की परम्परा चलने लगती है। इस संघ के अनेकों ऐसे लेख हैं जो कि पट्टावली कहे जा सकते हैं पर उनमें गुरुपरम्परा का क्रम व्यवस्थित न होने से कम से कम प्राचीन आचार्यों के क्रम पर विश्वास नहीं किया जा सकता। अनेकों लेखों

(२१३-२१४ आदि) में वर्धमान, एवं गौतमस्वामी के उल्लेख पूर्वक कतिपय प्रसिद्ध जैनाचार्यों का निर्देश किया गया है—जैसे कोण्डकुन्दाचार्य, भद्रबाहु, समन्तभद्र-स्वामी, सिंहनन्दि, अकलंक देव, वज्रनन्दि, पूज्यपाद स्वामी आदि। इन लेखों में यह दिखाने का प्रयत्न किया गया है कि प्रायः सभी प्रतिष्ठित प्राचीन आचार्य द्रविड़ संघ के नन्दिसंघ के अन्तर्गत थे। हम पहले संभावना कर चुके हैं कि नन्दि संघ द्रविड़ संघ में यापनीय संघ से आया है। नन्दिसंघ की एक प्राचीन प्राकृत पट्टावली भी है[1] जिसमें भगवान् महावीर के बाद ६८३ वर्षों तक की परम्परा दी गई है। उसके बाद के क्रम का उल्लेख करने वाली कोई प्रामाणिक पट्टावली उपलब्ध नहीं होती। संभव है द्रविड़ संघ में आकर नन्दिसंघ के पश्चात्कालीन आचार्यों ने अपनी स्मृति से कुछ परम्परा को सुरक्षित रखने के लिए लेखों में उक्त आचार्यों का निर्देश किया हो। यह निर्देश सूचित करता है कि उक्त आचार्य उस नन्दिसंघ के अन्तर्गत थे जो कि प्रारम्भिक शताब्दियों में यापनीय संघ था।

इस संघ के अन्तर्गत नन्दिसंघ के साथ प्रत्येक लेख में अरुङ्गलान्वय का उल्लेख मिलता है। अरुङ्गलान्वय किसी स्थानविशेष की अपेक्षा सूचित करता है। अरुङ्गल नाम का स्थान भी तामिल प्रान्त के गुडियपत्तन तालुका में है जो कि एक प्राचीन जैन स्थान था। हम यापनीय संघ के वर्णन में देख चुके हैं कि तामिल प्रान्त में यापनीय नन्दिसंघ का अस्तित्व पूर्वीय चालुक्यों के राज्य में था। द्रविड़ संघ, नन्दिसंघ, अरुङ्गलान्वय इन तीनों शब्दों का एकत्र प्रयोग हमें निःसन्देह सूचित करता है कि वह तामिल प्रान्त का नन्दिसंघ था जो कि अरुङ्गल स्थान से उद्भूत हुआ था। इससे अब हमें यह कहने में संकोच न होना चाहिये कि तामिल प्रान्त के यापनीयों के नन्दिसंघ से ही द्रविड़ संघ के नन्दि-संघ को उत्तराधिकार मिला था।

---

१. षट्खंडागम, पुस्तक १, पृ० २४-२७। संभव है यह पट्टावली प्राचीन यापनीय नन्दिसंघ की हो।

११-१२ वीं शताब्दी में इस संघ के मुनियों की गद्दियाँ कोङ्गाल्व राज्य के मुल्लूर तथा शान्तर राजाओं की राजधानी हुम्मच में थीं। हुम्मच से प्राप्त लेख नं० २१३-२१६ में इस संघ के अनेकों आचार्यों का परिचय मिलता है। इनमें श्रेयांस पण्डित, उनके सधर्मा कमलभद्र और वादीभसिंह अजितसेन पण्डित के पूर्ववर्ती और समकालीन आचार्यों की परम्परा दी गई है। जो इस प्रकार है:—

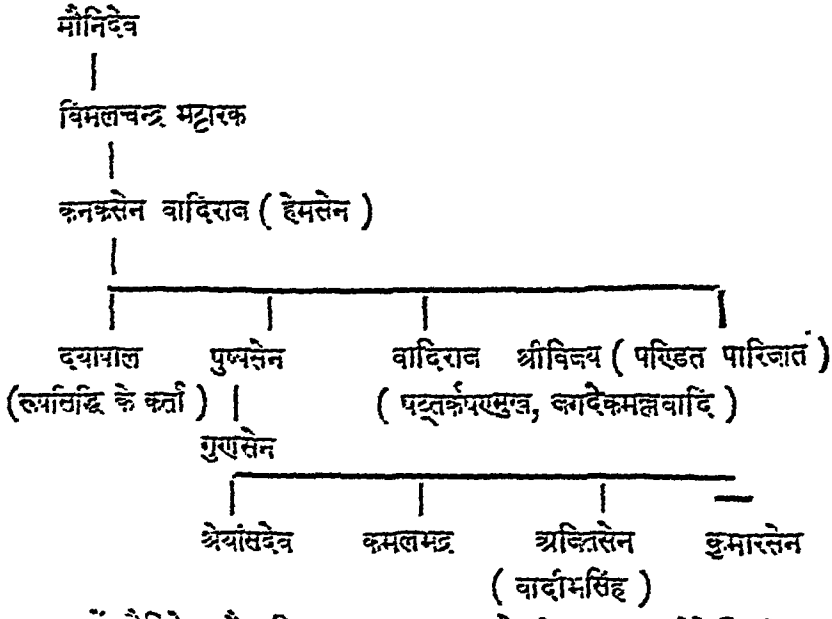

इनमें मौनिदेव और विमलचन्द्र भट्टारक वे ही मालुम होते हैं जिनका उल्लेख अंगदि से प्राप्त लेख नं० १६६ (लगभग ९९० ई०) में द्रविड़ संघ कुन्दकुन्दान्वय के आचार्य के रूप में किया गया गया है। शायद ये ही द्रविड़ संघ के आदि प्रवर्तक आचार्य रहे हों। कनकसेन वादिराज का दूसरा नाम लेख नं० २१३ और २१५ में हेमसेन दिया गया है। संस्कृत में कनक और हेम का अर्थ भी एक होता है। इन्हें श्रीविजय, वादिराज, दयापाल आदि के गुरु के रूप में कहा गया है। वादिराज की उपाधियाँ षट्तर्कषण्मुख और

जगदेकमल्लवादी थीं। वादिराज की हमें एक उपाधि मालुम होती है, क्योंकि लेख नं० ३४७ में इनका असली नाम श्री वर्धमान जगदेकमल्ल वादिराज दिया गया है। इनके सबमी दयासिंधि नामक व्याकरण ग्रन्थ के कर्ता दयापाल थे। मल्लिषेण प्रशस्ति (२६०, प्रथम भाग ५४) में उपर्युक्त पट्टावली के अनेकों आचार्यों का उल्लेख तथा प्रशंसावाक्य दिये गये हैं। उसमें वादिराज के गुरु का नाम मतिसागर दिया गया है और दयापाल को उनका सबमी माना गया है। उसी प्रशस्ति के ३५ वें पद्य में मतिसागर की प्रशंसा के बाद ३६-३७वें पद्य में हेमसेन मुनि की प्रशंसा की गई है, पर दोनों आचार्यों का कोई सम्बन्ध नहीं बतलाया गया। हेमसेन तो निःसन्देह हुम्मच के उक्त दोनों लेखों के कनकसेन वादिराज (हेमसेन) ही हैं। पर वादिराज के गुरु मतिसागर भी थे, यह बात हमें उनकी षट्तर्कमुख प्रतिमा के परिचायक उनके न्यायशास्त्र के ग्रन्थ न्यायविनिश्चयविवरण की प्रशस्ति से मालुम होती है। इनसे यह सिद्ध होता है कि मतिसागर और हेमसेन (कनकसेन) दो व्यक्ति थे। संभव है एक तो वादिराज के दीक्षागुरु और दूसरे विद्यागुरु रहे हों। हमारे इस आशय का समर्थन न्यायविनिश्चयविवरण की प्रशस्ति के दूसरे पद्य से भी होता है जहाँ श्लेषात्मक ढंग से जिनेन्द्र की स्तुति करते हुए वादिराज ने 'सन्मतिसागरकनकसेनागाध्यम्' लिखा है। वादिराज बड़े ही विद्वान्, लेखक एवं वादी आचार्य थे। इन्हें चालुक्य नरेश जयसिंह तृतीय जगदेकमल्ल (सन् १०१६-१०४४) ने जगदेकमल्लवादि नामक उपाधि दी थी (२६० पद्य ४२, प्रथम भाग ५४)। लेख नं० २१५ में इन्हें अकलंक, धर्मकीर्ति और अक्षपाद के प्रतिनिधिरूप माना गया है।

वादिराज के अन्य सबमीओं में पुष्यसेन और श्रीविजय पण्डित थे। पुष्यसेन हमें वे ही प्रतीत होते हैं जिनकी पादुकाओं की स्थापना का स्मारक लेख नं० १७७ (सन् १०२० के लगभग) में है। इनके शिष्य का नाम गुणसेन था जिनके कई लेख मुल्लूर से प्राप्त हुए हैं। ये कोङ्गाल्व नरेश राजेन्द्र चोल के कुलगुरु थे (१८८-१९२)। लेख नं० २०१ में इन्हें पोय्सलाचारि लिखा

है जिससे ज्ञात होता है कि इनका प्रभाव होय्सल राजाओं पर भी था। लेख नं० २०२ (सन् १०६४ ई०) इनके समाधिमरण का स्मारक है और उन्हें द्रविल गण, नन्दिसंघ, अरुङ्गलान्वय का नाथ तथा अनेक शास्त्रों का वेत्ता लिखा है। लेख नं० १७७ और लेख नं० २०२ में अंकित वर्षों से ज्ञात होता है कि वे ३४ वर्षों (१०३० ई०–१०६४ ई०) तक बराबर जिनशासन की प्रभावना करते रहे। हुम्मच के लेख नं० २१३ में इनका नाम वादिराज के बाद की पीढ़ी के आचार्यों में दिया गया है और मल्लिषेण प्रशस्ति के पद्य ५३ में इनकी प्रशंसा की गयी है।

श्रीविजय पण्डित के सम्बन्ध में लेख नं० २१३ से विदित होता है कि वे अनेक प्रतिष्ठित आचार्यों के गुरु थे। उनका दूसरा नाम वोडेयदेव या ओडेयदेव था जो कि तिरुगुडि के निडुम्बरे तीर्थ, अरुङ्गलान्वय, नन्दिगण के अधीश्वर थे। इन्हें तामिल प्रान्त (तामेल्लरु) से सम्बन्धित बताया गया है (२१४) पर इनका अधिक समय हुम्मच में बीता था ऐसा उक्त स्थान से प्राप्त लेखों से मालुम होता है। इनके गृहस्थ शिष्यों में नन्नि शान्तर एवं प्रसिद्ध जैन महिला चट्टलदेवी प्रमुख थे।

श्रीविजय के शिष्यों में श्रेयांसदेव को लेख नं० २१३ में उर्वीतिलक जिनालय का प्रतिष्ठापक लिखा है। दूसरे शिष्य कमलभद्र लेख नं० २१४ और २१६ के अनुसार भुजबल शान्तर आदि तथा चट्टल देवी द्वारा सम्मानित थे। तीसरे शिष्य अजितसेन[1] बड़े ही विद्वान् थे। उनकी कई उपाधियाँ थीं—जैसे शब्द-

---

१. कुछ विद्वान् इन अजितसेन वादीभसिंह का गद्यचिन्तामणि और क्षत्रचूडामणि के कर्ता वादीभसिंह अजितसेन से साम्य स्थापित करते हैं, पर यह ठीक नहीं क्योंकि ग्रन्थकर्ता अजितसेन के गुरु का नाम पुष्पसेन था। इस लेख के अजितसेन के गुरु सधर्मा एक पुष्पसेन अवश्य थे पर वे ग्रन्थकर्ता अजितसेन के गुरु थे यह लेखों से नहीं ज्ञात होता।

चतुर्मुख, तार्किकचक्रवर्ती एवं वादीभसिंह (२१४)। लेख नं० २४८ में इन्हें वादिवरट्ट, तार्किक चक्रवर्ती एवं वादीभपञ्चानन कहा गया है। ये विक्रम शान्तर द्वारा पूजित थे। उसने पञ्चवसदि जिनालय के लिए इन्हें ग्रामादि भेंट में दिये थे (२२६)। पीछे विक्रम शान्तर के पुत्र त्रिभुवनमल्ल शान्तर ने अपनी दादी की स्मृति में इन्हीं गुरु का स्मरण कर एक मन्दिर का शिलान्यास किया था (२४८)। इन मुनि के अन्तिम समय का स्मारक लेख नं० १३२ है जिसका समय लगभग १०६० ई० दिया गया है। लेख नं० २१४ में इनके सधर्मा मुनि कुमारसेन का नाम दिया गया है जो कि वैद्यगजकेशरी थे। लेख नं० २१३ में इनके समकालीन शान्तिदेव और दयापाल नामक दो मुनियों का उल्लेख है। शान्तिदेव के सम्बन्ध में मल्लिषेण प्रशस्ति में लिखा है कि इनके पवित्र पादकमलों की पूजा होय्सल विनयादित्य द्वितीय (सन् १०४७ से, ११०० ई०) करता था। लेख नं० २०० से भी यह बात समर्थित होती है। इस लेख के अनुसार सन् १०६२ में इनकी मृत्यु के उपलक्ष्य में एक स्मारक खड़ा किया गया था। दयापाल के सम्बन्ध में मल्लिषेण प्रशस्ति में केवल प्रशंसा पद दिये गये हैं।

हुम्मच के लेखों से प्राप्त इतिवृत्त के बाद इस संग्रह के अनेकों लेखों से[1] जो संघ की आचार्यपरम्परा ज्ञात होती है वह इस प्रकार है—

१—इस संग्रह के अन्य लेख हैं—२६४, २६५, २७४, २८७, २८८, २९० ३०५, ३१६, ३२६, ३२७, ३४७, ३५१, ३७३, ३७५, ३७६, ३८०, ४१०, ४२५ और ४९६.

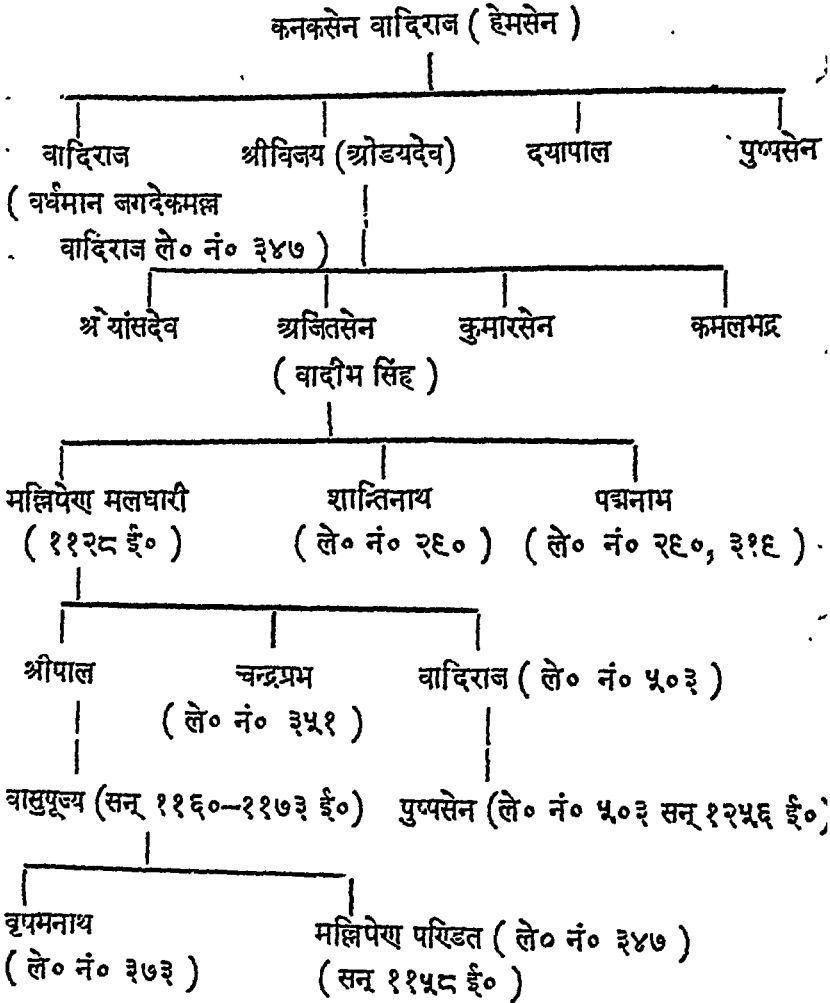

मूलसंघ के गण, गच्छ एवं अन्वय

हम पहले लिख चुके हैं कि यापनीय और द्रविड संघ के वर्णन के बाद मूलसंघ के गण गच्छादि का लेखों से प्राप्त होने वाले वाला परिचय देंगे। इसके सम्बन्ध में ११ वीं शताब्दी के आचार्य इन्द्रनन्दि के श्रुतावतार में और उसके

अनुकरण पर पीछे १४ वीं शताब्दी में लिखे गये लेखों (५६६ प्रथम भा० १०५ और ६२५ प्रथम भाग० १०८) में लिखा है कि अर्हद्बलि आचार्य ने आपसी द्वेष को घटाने के लिए सेन, नन्दि, देव और सिंह नाम से चार संघों की रचना की थी अथवा अकलंक देव के स्वर्गवास के बाद संघ, देश भेद से उक्त चार भेदों में विभाजित हो गया, इनमें कोई चरित्रभेद नहीं है आदि, पर ऊपर जैन संघ के विकासक्रम को दिखाते हुए हमें यह लगता है कि यह बहुत कुछ मूलसंघ कुन्दकुन्दान्वय को नव संगठित करने वाले आचार्यों की कल्पना थी इसके पीछे ऐतिहासिक आधार कम है।

देवगण—लेखों के निर्देशानुसार मूलसंघ के अन्य गणों से देवगण कुछ प्राचीन है यह हम कह आये हैं। इस गण का अस्तित्व लक्ष्मेश्वर से प्राप्त चार लेखों (१११,११३,११४ और १४६) से तथा कडवन्ति से प्राप्त ११ वीं शताब्दी के एक लेख (१६३) से मालुम होता है। इसके पश्चात् और लेखों में इसका उल्लेख नहीं मिलता। देवगण यह नाम कैसे पड़ा यह तो तत्कालीन लेखों से ज्ञात नहीं होता पर उक्त गण के सभी आचार्यों के नाम देवान्त देख यह लगता है कि इससे ही देवगण नाम पड़ा हो। आचार्यों के नाम इस प्रकार हैं—पूज्यपाद, उदयदेव, (११३) रामदेव, जयदेव, विनयदेव (११४) एकदेव, जयदेव (१४६) अङ्कदेव, महीदेव (१६३)। इनमें पूज्यपाद को कुछ इतिहासज्ञ अकलंकदेव पूज्यपाद मानते हैं। यदि यह सत्य है तो कहना होगा कि अकलंकदेव ही इस गण के प्रतिष्ठापक थे।

सेनगण—देवगण के समान सेनगण भी प्राचीन है। एक दृष्टि से तो उससे भी प्राचीन है। यद्यपि लेखों में इसका सर्वप्रथम उल्लेख मूलगुण्ड से प्राप्त लेख नं० १३७ (सन् ६०३) में हुआ है पर इसके पहले नवमी शताब्दी के उत्तरार्ध (सन् ८६८ के पहले) में उत्तरपुराण के रचयिता गुणभद्र ने अपने गुरु जिनसेन और दादागुरु वीरसेन को सेनान्वय का कहा है। पर जिनसेन

और वीरसेन ने जयधवला और धवला टीका में अपने वंश को पञ्चस्तूपान्वय[1] लिखा है। यह पञ्चस्तूपान्वय ईसा की पांचवीं शताब्दी में निर्ग्रन्थ सम्प्रदाय के साधुओं का एक संघ था यह बात पहाड़पुर (जिला राजशाही, बंगाल) से प्राप्त एक लेख से मालुम होती है[2]। पञ्चस्तूपान्वय का सेनान्वय के रूप में सर्वप्रथम उल्लेख गुणभद्र ने, संभव है अपने गुरुओं के सेनान्त नाम को देखते हुए किया है। इससे हम कह सकते हैं कि गुणभद्र के गुरु जिनसेनाचार्य इस गण के आदि आचार्य थे।

मूलगुण्ड के लेख नं० १३७ में सेनगण को सेनान्वय लिखा है और किसी आसार्य नाम के व्यक्ति द्वारा उक्त वंश के कनकसेन मुनि को एक खेत दान देने का उल्लेख है। लेख में कनकसेन को वीरसेन का शिष्य लिखा है और वीरसेन के आगे दो नाम—पूज्यपाद और कुमारसेन—दिये हैं पर उनसे वीरसेन का संबन्ध नहीं बतलाया। हमारी समझ में पूज्यपाद देवगण के अकलंक देव पूज्यपाद थे जिनकी कृतियों का मर्म वीरसेन स्वामी ने अच्छी तरह समझा था और काल की दृष्टि से भी वीरसेन (सातवीं का उत्तरार्ध और आठवीं का पूर्वार्ध) अकलंकदेव (सातवीं शताब्दी) से दूर नहीं है। कुमारसेन का उल्लेख द्वितीय जिनसेन (पुन्नाटसंघीय) ने अपने हरिवंशपुराण में वीरसेन गुरु से पहले किया है और उनके शिष्य के रूप में प्रभाचन्द्राचार्य को लिखा है।

इसके बाद इस गण के लेखों में सेनगण के साथ पोगरि गच्छ का उल्लेख है जो कि १३ वीं शताब्दी तक के लेखों में मिलता है। इन लेखों में जिस तरह आचार्यों का निर्देश है। उससे इस वंश की कोई गुरुपरम्परा नहीं निर्मित की जा सकती। लेख नं० १८६ (सन् १०५४ ई०) २१७ (१०७७ई०) तथा ५११ (सन् १२७१ ई०) में एक महासेन नामक मुनि का नाम आता है।

---

१. पञ्चस्तूपान्वय का मूल कुछ विद्वान् पूर्वीय बंगाल से और कुछ मथुरा के पञ्चस्तूपों से, जिनका उल्लेख हरिषेण के कथाकोष में है, मानते हैं।

२. जैन सिद्धान्तभास्कर भाग १६, किरण १, पृष्ठ १–६।

उन्हें ब्रह्मसेन का प्रशिष्य और आर्यसेन का शिष्य लिखा है तथा लेख नं० २१७ में गुणभद्र के सहधर्मी के रूप में लिखा है और उनके किसी विद्वान् शिष्य रामसेन का नाम दिया है पर लेख नं० ५११ में वीरसेन, जिनसेन और गुणभद्र का उल्लेख कर बिना कोई सम्बन्ध बताये महासेन और उसके बाद उनके शिष्य पद्मसेन का नाम है। इस सबसे यह मालुम होता है कि तीनों लेखों के महासेन जुदे २ व्यक्ति थे। हिरे आवलि से इस गण के पाँच लेख प्राप्त हुए हैं जो कि १२ वीं से १५ वीं शताब्दी के बीच के हैं। जिससे प्रतीत होता है कि यह स्थान इस गण के साधुओं का प्रमुख केन्द्र रहा है। लेख नं० ५३८ (१३ वीं शताब्दी का उत्तरार्ध) में सेनगण के साथ कुन्दकुन्दान्वय जुड़ा है और किन्हीं कनकसेन का उल्लेख है, तथा लेख नं० ६१४ (सन् १४२१ ई०) में इस गण के मुनिभद्र स्वामी का नाम दिया गया है। संभव है १५ वीं शताब्दी से इस गण का प्रभाव क्षीण होने लगा था।

देशिय गण और कोण्डकुन्दान्वय:—देशिय गण इस संग्रह के अनेकों लेखों में देशिय, देशिक, देशिग, देसिय, देसिग एवं महादेशिगण नाम से कहा गया है। इन नामों से ऐसा लगता है कि देशिय शब्द देश शब्द से निकला है। देश का साधारण अर्थ प्रान्त होता है। दक्षिण भारत में कर्नाटक प्रान्त के उस हिस्से को, जो कि पश्चिमी घाट के उच्चभूमि भाग (बालाघाट) और गोदावरी नदी के बीच में है, एक समय देश नाम से कहते थे। वहाँ के ब्राह्मण अब भी देशस्थ ब्राह्मण कहलाते हैं। संभव है कि देश नामक प्रान्त में में रहने वाले साधु समुदाय को शुरू में देशिय कहा जाता हो और पीछे वही एक प्रमुख गण के रूप में परिणत हुआ हो[1]।

प्रचलित कुन्दकुन्दान्वय का लेखगत प्राचीन नाम कोण्डकुन्दान्वय है। जिसका अर्थ होता है कोण्डकुन्दपुर से निकला मुनि वंश जैसे अरुङ्गलान्वय, पुन्नाटान्वय किरुगान्वय आदि। पर जहाँ वह किसी गण या संघ के विशेषण रूप में

१—देशीगण, जैन एन्टीक्वेरी, भाग १ अं० ३, पृष्ठ ६३-६६.

प्रयुक्त हुआ है वहाँ उस परम्परा से सम्बद्ध गण या संघ समझना चाहिये। कुछ विद्वान् साहित्यिक आधारों के बल पर सिद्ध करते हैं कि मूलसंघ और कोण्डकुन्दान्वय पर्यायवाची हैं, आचार्य कुन्दकुन्द ही मूलसंघ के आदि प्रवर्तक हैं आदि, पर यह बात ११ वीं शताब्दी के पहले किसी लेख से सिद्ध नहीं होती। मूलसंघ कोण्डकुन्दान्वय का एक साथ सर्व प्रथम प्रयोग लेख नं० १८० (लगभग सन् १०४४ ई०) में हुआ है। हाँ, कोण्डकुन्दान्वय का स्वतन्त्र प्रयोग ८-९ वीं शताब्दी के लेख नं० १२२, १२३ और १३२ में देखा गया है। लेख नं० १२३ (सन् ८०२ ई०) में कोण्डकुन्दान्वय को गण भी माना गया है। लेख नं० १३२ में इस अन्वय के एक आचार्य मौनि सिद्धान्तदेव भट्टार का नाम दिया गया है। लेख नं० १२२-१२३ में इस वंश के तीन आचार्यों-तोरणाचार्य, पुष्पनन्दि और प्रभाचन्द्र-के नाम दिये गये हैं। लेख नं० १२२ से ज्ञात होता है कि गङ्गनरेश मारसिंह प्रथम के प्रभावक सेनापति श्रीविजय ने मण्णे में एक विशाल जिनालय बनाकर प्रभाचन्द्र मुनि को वसदि के लिये एक गाँव और कुछ भूमियाँ दान में दीं। इसी तरह लेख नं० १२३ से ज्ञात होता है कि उक्त श्रीविजय द्वारा निर्मापित जिनभवन के लिए प्रभाचन्द्र मुनि के शिष्य वप्पय्य ने एक गाँव दान में दिया। पुष्पनन्दि के शिष्य प्रभाचन्द्र कौन थे, यह अन्य आधारों से पता नहीं लगता। लेख में इन्हें चन्द्रमा के समान निर्मल चारित्र वाला लिखा है। पुष्पनन्दि को गणाग्रणी (१२२) और उपशम भावना से कल्मष हीन (१२३) तथा उनके गुरु तारेणाचार्य को कोण्डकुन्दान्वय में उत्पन्न तथा शाल्मलि ग्राम का निवासी बतलाया गया है। लेख नं० १२२ में इनके सम्बन्ध में लिखा है कि उन्होंने अज्ञान अन्धकार को नष्ट कर सत्पथ में लोगों को स्थापित किया था तथा अपने तेज से पृथ्वी को प्रकाशित करते हुए वे सूर्य के समान सुशोभित थे।

कोण्डकुन्दान्वय के साथ देशीय गण का सर्वप्रथम प्रयोग लेख नं० १५०* (सन् ९३१ ई०) में हुआ है। कुछ विद्वान् मर्कारा के ताम्रपत्रों (९५) को प्राचीन (सन् ४६६ ई०) मानकर देशीयगण कोण्डकुन्दान्वय का अस्तित्व एवं

उल्लेख बहुत प्राचीन मानते हैं पर परीक्षण करने पर उक्त लेख बनावटी सिद्ध होता है[1], तथा देशीयगण की जो परंपरा वहाँ दी गई है वह लेख नं० १५० के बाद की मालुम होती है।

---

१. मर्कारा के ताम्रपत्र सन् १८७२ में इण्डियन एण्टीक्वेरी भाग १, पृष्ठ ३६३-३६५ में स्व० बी० एल० राइस महोदय ने मूल तथा अनुवाद के साथ प्रकाशित करवाये थे। ये ताम्रपत्र ८ इञ्च लंबे तथा ३.२ इञ्च चौड़े हैं पर मोटाई में एक से नहीं। इनमें गङ्गवंशी नरेश कोंगुणि प्रथम से लेकर अविनीत तक की वंशावली दी गई है और लिखा है कि अकालवर्ष पृथ्वीवल्लभ के मंत्री (जिसका नाम नहीं दिया गया) ने (किसी) संवत् ३८८ के माघ महीने की शुक्ल ५, सोमवार, स्वातिनक्षत्र में वदणेगुप्पे नामक ग्राम तलवन नगर के श्रीविजय जिनालय के लिए देशिगण, कोण्डकुन्द अन्वय के चन्द्रणन्दि भट्टार (जिनकी गुरुपरम्परा लेख में दी गई है) को भेंट में दिया।

लेख का परिचय देते हुए बर्जेस महोदय ने लेख के संवत् को विल्सन सा० के 'मेकेन्जी कलेक्शन' के आधार पर शक संवत् माना है पर ज्योतिष शास्त्र के आधार पर उक्त संवत् के दिन और नक्षत्र को ठीक नहीं बतलाया। तदनुसार सोमवार, स्वाति नक्षत्र के स्थान में वहाँ बुधवार उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र होना चाहिए था।

दूसरी एक और बात कि, लेख में आगे 'अविनीत महाधिराजेन दत्तेन' आदि शब्द लिखकर अविनीत और अकालवर्ष के मंत्री के बीच क्या संबन्ध था यह स्पष्ट नहीं किया गया।

लेख की आगे की पंक्तियों से द्योतित होता है कि 'उसने (मंत्री ने) आस पास के ६ गाँवों पर आतङ्क फैलाकर उन पर अधिकार करके सन्धि द्वारा उयम्बलि एवं तलवनपुर को लेकर तथा पिरिकेरे में राजकीय अधिकारों को संचालित कर (राजमान अनुमोदन) एक मनोहर ग्राम 'वदणेगुप्पे' दान में दिया था' (अनुवाद इ० ए० भाग, पृष्ठ ३६५)। उपर्युक्त

वर्णन हमें बलात् राष्ट्रकूट वंश के इतिहास की ओर ले जाता है। इस वंश में अकाल वर्ष उपाधिधारी तीन नरेश हुए हैं। उन सभी का नाम कृष्ण था। कृष्ण प्रथम का समय सन् ७५८ से ७७८ ई० के लगभग, द्वितीय का सन् ७७६ से ६१४ के लगभग, तथा तृतीय का सन् ६३७ से ६६८ ई० के लगभग बतलाया जाता है।

लेख का तलवनपुर वर्तमान तलकाड नामक ग्राम ही है जो कि मैसूर से २८ मील दूर कावेरी के बायें किनारे पर स्थित है। गङ्ग वंश की राजधानी यहीं थी। वदरेगुप्पे, तलकाड से ५-६ मील दक्षिण में नदी के दूसरे किनारे 'वदनकूपम्' नामक ग्राम के रूप में पहिचाना गया है (दि० च० सरकार-सक्शेसर आफ सातवाहनाज, पृष्ठ २६८)। गंग राज्य के एक प्रान्त गङ्गवाडी पर, जिसमें कि तलवनपुर, मण्णे (मान्यपुर) आदि अवस्थित हैं, राष्ट्रकूट कृष्ण प्रथम (अकालवर्ष) ने आधिपत्य स्थापित किया था यह हमें मन्ने से प्राप्त तलेगांव-ताम्रपत्रों से विदित होता है (अल्तेकर-राष्ट्रकूटाज, पृ० ४४)। इसके बाद राष्ट्रकूट साम्राज्य के अन्त होने तक गङ्ग-प्रान्त राष्ट्रकूट नरेशों के अधीन था। अतएव मर्करा के ताम्रपत्रों के अकाल वर्ष पृथुवीवल्लभ को उक्त वंश के तीन अकालवर्ष उपाधिधारी नरेशों में से एक होना चाहिए।

यह कौन नरेश था इस बात का पता हमें यदि लेख में मंत्री का नाम दिया होता तो कुछ हद तक लग सकता था पर दुर्भाग्य से वह नहीं दिया गया। फिर भी श्रीविजय जिनालय का नाम (जिसके लिए दान दिया गया था) हमें इस सम्बन्ध में कुछ सहायता देता दिखाई देता है। इस संग्रह के मन्ने से प्राप्त दो लेखों (१२२-१२३) में एक श्रीविजय का उल्लेख है जो कि सन् ७६७ ई० में गङ्ग नरेश मारसिंह के प्रभावक सेनापति के रूप में और सन् ८०२ में राष्ट्रकूट गोविन्द तृतीय (सन् ७८३-८१४ ई०) के ज्येष्ठ भ्राता एवं गङ्गवाडी प्रान्त के उपशासक (Viceroy) कम्म (स्तम्भ-रणावलोक) के अधीन तथा मन्ने के आसपास के क्षेत्र का महासामन्त एवं

शासक के रूप में बतलाया गया है। यह श्रीविजय बड़ा ही जिनभक्त था। इसने मण्णे में एक विशाल जिनालय बनवाया था (१२२, १२३)। इस संग्रह के बाहर के एक जैन लेख (मै० आ० रि० १९२१, पृष्ठ ३१) से ज्ञात होता है कि राष्ट्रकूट कम्भ ने सन् ८०७ ई० में अपने पुत्र की प्रार्थना पर तलवनपुर के श्रीविजय जिनालय के लिए कोण्डकुन्दान्वय के कुमारनन्दि भटार के प्रशिष्य एवं एलवाचार्य के शिष्य वर्धमान गुरु को वदणेगुप्पे ग्राम दान में दिया। यह श्रीविजय जिनालय बहुत कर जिनभक्त महासामन्त श्रीविजय द्वारा ही निर्मापित हुआ था (सालेतोरे-'मेडीवल जैनिज्म' पृष्ठ ३८)।

उपर्युक्त विवेचन से ऐसा प्रतीत होता है कि तलवननगर में श्रीविजय जिनालय का निर्माण राष्ट्रकूट नरेश गोविन्द तृतीय के शासनकाल में हुआ था इसलिए उक्त ताम्रपत्रों का अकालवर्ष राष्ट्रकूट कृष्ण प्रथम तो हो नहीं सकता, क्योंकि वह गोविन्द तृतीय का पितामह था। तब उसे कृष्ण द्वितीय या तृतीय में से कोई होना चाहिए।

अब हम मर्करा के ताम्रपत्रों के उस वक्तव्य की ओर ध्यान देते हैं जिसमें अकालवर्ष के मन्त्री द्वारा आसपास के गांवों पर आतंक या आक्रमण आदि की चर्चा है। तलवनपुर पर आक्रमण का संकेत हमें कृष्ण तृतीय के राज्यकाल में मिलता है। उक्त नरेश ने अपने बहनोई एवं सामन्त गङ्ग नृप बुतुग द्वितीय का पक्ष लेकर तलवनपुर पर चढ़ाई की (संभव है मन्त्री द्वारा की) और उसके ज्येष्ठ भ्राता राचमल्ल तृतीय का वध कर गङ्गवंश की राजगद्दी पर उसे बैठाया (अल्तेकर, राष्ट्रकूटाज, पृ० ११२–११३)। यह एक घरेलू झगड़ा रहा होगा, इसीलिए मर्करा के ताम्रपत्रों में इसका संक्षिप्त में आभास दिया गया है। कृष्ण तृतीय को 'अकालवर्ष पृथुवीवल्लभ इस समूचे नाम से कहा जाता था, यह बात हरसोल ताम्रपत्रों से भी समर्थित होती है (अल्तेकर, राष्ट्रकूटाज, पृ० १२०)।

यदि किन्हीं कारणों से मर्करा के ताम्रपत्रों को प्राचीन भी मान लिया जाय तो उस लेख के सन् ४६६ के बाद और लेख नं० १५० के सन् ६३१ के पहले ४-५ सौ वर्षों तक बीच के समय में कोण्डकुन्दान्वय और देशिय गण का एक साथ लेखगत कोई प्रयोग न मिलना आश्चर्य की बात है और इतने पहले उस लेख में उक्त दोनों का एकाकी प्रयोग मर्करा के ताम्रपत्रों की स्थिति को अजीब सी बना देता है।

कोण्डकुन्दान्वय के साथ प्रयुक्त होने के पहले देशिय गण का मूलसंघ के साथ प्रयोग एक लेख[1] (१२७ सन् ८६० ई०) में देखा गया है, पर उस लेख की अपनी कहानी है। वह बहुत समय तक ताम्रपत्र के रूप में था पर पीछे (लगभग १२ वीं शता०) मुनि मेघचन्द्र त्रैविद्य के शिष्य वीरनन्दि मुनि ने कुछ लोगों के आग्रह पर उसे पाषाण पर उत्कीर्ण कराया था। इन मेघचन्द्र और वीरनन्दि की शिष्यपरम्परा लेख नं० ५५२ (प्र० भा० ४१ = सन् १३१३) में दी गई है जहां उन्हें मूलसंघ देशीगण पुस्तक गच्छ कोण्डकुन्दान्वय का लिखा गया है। देशियगण की एक शाखा पुस्तक गच्छ थी यह बात हमें ई० ११वीं शताब्दी के प्रारम्भ के लेखों से ज्ञात होती है। मूलसंघ के साथ उसका प्रयोग भी ११ वीं शता० (लेख १८०) से होने लगता था पर इसके पहले और लेख नं० १२७ (सन् ८६० ई०) के बाद के करीब १५० वर्षों से ऊपर के समय में एक भी लेख में मूलसंघ के साथ देशियगण, पुस्तक गच्छ के प्रयोग को न देख; और

इस सबसे हमें लगता है कि मर्करा के प्राचीन ताम्रपत्रों को उक्त राजा के काल में पुनः नये रूप में उत्कीर्ण किया गया है तभी इन नामों एवं घटना आदि के साथ दान से सम्बन्धित देशीय गण, कोण्डकुन्दान्वय के आचार्यों के नाम लिखे गये हैं।

१—लेख में राष्ट्रकूट वंशावली दी गई है जो अन्य लेखों से भिन्न है, पर इसमें अमोघवर्ष के सम्बन्ध में जो घटनायें वर्णित हैं उनको इतिहासज्ञ महत्त्व देते हैं।

केवल उक्त लेख (१२७) में देख सन्देह सा होने लगता है। ऐसा प्रतीत होता है कि पीछे उत्कीर्ण करते समय उस लेख में संशोधन कर मूलसंघ ला दिया गया है और वह भी, संभव है, यह समझ कर लाया गया है कि लेख के उत्कीर्णन काल १२ वीं शता० में कोण्डकुन्दान्वय और मूलसंघ पर्यायवाची या एक हो गये थे।

इस संदर्भ में लेखीय आधारों से ऐसा प्रतीत होता है कि कोण्डकुन्दान्वय का प्रचलन ई० ७ वीं के उत्तरार्ध से प्रारम्भ हुआ था और उसने ८-९ वीं शताब्दी में प्रभावशाली बनने के प्रयत्न किये थे। उसका प्रथम प्रभाव कर्नाटक प्रान्त के देशस्थ साधुओं पर पड़ा जिसके सम्पर्क से वे कोण्डकुन्दान्वय देशियगण के कहलाने लगे। कोण्डकुन्दान्वय का कुछ प्रभाव द्रविड संघ पर भी पड़ा था ऐसा लेख नं० १६६ से ज्ञात होता है पर संभव है वह प्रभाव स्थायी न था क्योंकि और किसी लेख में द्रविड संघ कोण्डकुन्दान्वय नहीं दिया गया।

हम पहले देख चुके हैं कि मूलसंघ ४-५ वीं शताब्दी में दक्षिण भारत में विद्यमान था। उसकी धारा देवान्त और सेनान्त मुनियों के बीच देवगण और सेनगण के रूप में चल रही थी पर पिछली शताब्दियों जैसा उसका न तो संघटन था और न प्रभाव। ई० सन् ११ वीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही उसके पुनर्गठन एवं प्रभाव का क्रम चला ऐसा लेखों से ज्ञात होता है (१८० आदि)। द्रविड संघ के कुछ साधु भी एक बार उसके प्रभाव में थे (१७८)। मूलसंघ के बढ़ते हुए प्रभाव के भीतर यापनीय संघ के कतिपय गण भी इन्हीं शताब्दियों में आये थे, इस ओर हम संकेत कर चुके हैं। संभवतः उस समय नवोदित इतर जैन संघों—द्रविड संघ, काष्ठा संघ—के संघटनों (गण, गच्छ आदि) ने जैन जनता पर विशेष प्रभाव डालना शुरू किया था इसलिए मूलानुगामी मूलसंघ के साधु समूह ने मूल जैनत्व की रक्षा के लिये शायद आन्दोलन कर अपने पुनर्गठन के क्रम में इतर संघों के तत्कालीन अनुकूल गणों को अपने में मिलाने की चेष्टा की हो। यह प्रयत्न पिछली शताब्दियों तक जारी रहा और हम देखते हैं कि १२वीं शताब्दी में द्रविड संघ का एक मात्र आधार नन्दिसंघ भी मूलसंघ कोण्ड-

कुन्दान्वय के संरक्षण में आने लगा (२५५, प्रथम भाग ४७ आदि) और इस तरह १३वीं शताब्दी के बाद द्रविड संघ का नाम शेष रह गया। काष्ठासंघ उत्तर भारत में आकर अपने अस्तित्व को ईसा की १६वीं शताब्दी तक बनाये रखा यह लेखों से मालूम होता है।

इस चर्चा को हम आगे के अनुसंधान कर्ताओं पर छोड़ अपने प्रकृत विषय देशिय गण पर आते हैं। यह बात पहले कही गयी है कि इस गण के इतिहास की दृष्टि से लेख नं० १५० प्रथम है और मकरा के ताम्रपत्र द्वितीय हैं। लेख नं० १२७ को हमने सन्देह की दृष्टि से देखा है पर उक्त लेख में दिए गण-देशिय गण के आदि आचार्य के रूप में देवेन्द्र मुनि का नाम लेख नं० १५० और बाद के कई लेखों—२०४, २३३ (प्र० भा० ४६२) २५६ (प्र० भा० ५५)—से भी ज्ञात होता है। इसलिए गण की आचार्यपरम्परा की दृष्टि से और उसमें अंकित समय की दृष्टि से भी यदि हम उसे ही देशिय गण का प्रथम लेख मानकर लेख नं० १५० और मकरा के ताम्रपत्रों को दूसरा एवं तीसरा नम्बर दें तो कोई आपत्ति न होगी। उक्त लेखों से निम्न लिखित गुरुपरम्परा बनती है :—

त्रैकाल योगीश (१२७)
|
देवेन्द्र मुनि (सिद्धान्त भट्टार) (१२७, १५०)
|
चान्द्रायणदं भट्टार (१५०)
|
गुणचन्द्र „ (१५०, ६५)
|
अमयणन्दि „ (१५०–६५)
|
शीलभद्र भट्टार (६५)
|
जयणन्दि „ (६५)
|
गुणणन्दि „ (६५)
चन्दणन्दि „ (६५)

इस परम्परा में आदि मुनि त्रैकाल योगीश हैं जिनके सम्बन्ध में विशेष मालुम नहीं। देवेन्द्र सिद्धान्त के सम्बन्ध में कई लेखों को सूचित कर चुके हैं। इनका समय लेख नं० १२७ का ही समय सन् ८६० दिया गया है। १२वीं शताब्दी के द्वितीय, तृतीय और बाद के दशकों के लेखों—नं० २५५ (प्र० भा० ४७) २८५ (प्र० भा० ४३) ३२३ (प्र० भा० ५०) एवं ३८८ (प्र० भा० ४२) आदि—में देवेन्द्र मुनि का नाम तो अवश्य है पर उन्हें एक बड़े विद्वान् मुनि गुणनन्दि के तीन सौ शिष्यों में उत्कृष्टतम ७२ शिष्यों में से एक बताया गया है पर इस बात का उक्त लेखों से पहले के लेखों से समर्थन नहीं होता।

उक्त गुरुवंश में देवेन्द्र मुनि के बाद चान्द्रायणद भट्टार का नाम आता है जो कि आचार्य का नाम न मालुम होकर उपाधि मालुम होती है। लेख नं० २५६ में देवेन्द्र मुनि के शिष्य का नाम चतुर्मुखदेव दिया है और लिखा है कि वे चारों दिशाओं की ओर प्रस्तुत मुख होकर अष्टोपवास व्रत करते थे इससे चतुर्मुख कहलाये। चान्द्रायणद उपाधि भी चान्द्रायण व्रत को सूचित करती है जो कि अष्टोपवास ही जैसा है। शेष दूसरे मुनियों के सम्बन्ध में हमें विशेष मालुम नहीं। लेख नं० १२७ के अनुसार देवेन्द्र मुनि को अमोघवर्ष प्रथम ने तलेयूर ग्राम तथा दूसरे गाँवों की जमीनें दान में दी थीं। लेख नं० १५० में अभयणन्दि की व्रतपरायणा शिष्या नाणब्बे कन्ति का उल्लेख है तथा लेख नं० ६५ (मर्करा ताम्रपत्र) में चन्दणन्दि भटार को श्रीविजय जिनालय के लिए अकालवर्ष नृप (कृष्ण तृतीय) के मंत्री द्वारा वदणेगुप्पे नामक गांव के दान का उल्लेख है।

इस गण के आदिम आचार्यों के नाम के साथ भट्टार पद जुड़ा है। यह हमें उपर्युक्त केवल तीन लेखों से ही नहीं मालूम होता बल्कि लेख नं० १५८ और २०४ से भी ज्ञात होता है। यथार्थ में ९ वीं-१० वीं शताब्दी के अनेकों लेखों (१३१, १३२, १३४, १३५, १३६, १४४, १४६ आदि) में मुनियों की उपाधि भट्टार दी गई है। पीछे के लेखों में इस गण के आचार्यों की उपाधि सिद्धान्त-देव, सैद्धान्तिक तथा त्रैविद्य दी गई है।

प्रस्तुत संग्रह में देशियगण से संबन्धित ६५-७० लेख हैं पर कुछ ऐसे लेख हैं जिनसे ७-८ आचार्यों का एक गुरुवंश बन सकता है और कुछ से गण की विभिन्न पट्टावलियां। लेखों के पर्यालोडन से विदित होता है कि कर्नाटक प्रान्त के कई स्थानों में इस गण के केन्द्र थे। उन स्थानों में हनसोगे (चिक हनसोगे) प्रमुख था। यहाँ के आचार्यों से ही पीछे इस गण की हनसोगे वलि या गच्छ निकले हैं। गच्छ का साधारण अर्थ होता है शाखा और वलि (कन्नड शब्द वलय या वलग) का अर्थ होता है परिवार = आध्यात्मिक परिवार या समुदाय।

चिक हनसोगे से प्राप्त लेख नं० १७५, १९५, १९६ और २२३ से विदित होता है कि यहाँ इस गण की अनेक वसदियाँ (मन्दिर) थीं, जिन्हें चङ्गाल्व नरेशों द्वारा संरक्षण प्राप्त था। हनसोगे (पनसोगे) वलि या गच्छ के आचार्यों की लेख नं० २२३, २३२, २३९, २४१, २५३, २६९, २८४ एवं २८५ कीसहायता से प्राप्त एक परम्परा अगले पृष्ठ पर दी गई है। इसका बहुत कुछ समर्थन धवला के अन्त में दी गई आचार्य शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव की ग्रन्थप्रशस्ति से भी होता है[1]।

लेखों से प्राप्त इस गुरुपरम्परा में और प्रशस्ति में दी गई परम्परा में कुछ अन्तर है। प्रशस्ति में गुरुवंश कुन्दकुन्द, गृद्धपिच्छ और वलाकपिच्छ से चला है और इस परम्परा के पूर्णचन्द्र को देशिय गण के प्रतिष्ठापक देवेन्द्र सिद्धान्त से जोड़ने का प्रयत्न हुआ है। उनके बीच में वसुनन्दि और रविचन्द्र सिद्धान्तदेव नामक दो आचार्यों का नाम दिया गया है। देवेन्द्र सिद्धान्त के पहले गुणनन्दि पण्डित का नाम भी रखा गया है। मालुम होता है कि प्रशस्ति के आधार १२वीं शताब्दी के द्वितीय, तृतीय दशकों के लेख (२५५, २८५ आदि) रहे होंगे। प्रशस्ति के तथा अन्य लेखों के द्वितीय शुभचन्द्र सिद्धान्त देव प्रसिद्ध सेनापति गंगराज के गुरु थे।

---

[1] षट्खण्डागम, पुस्तक पृष्ठ ७–१०।

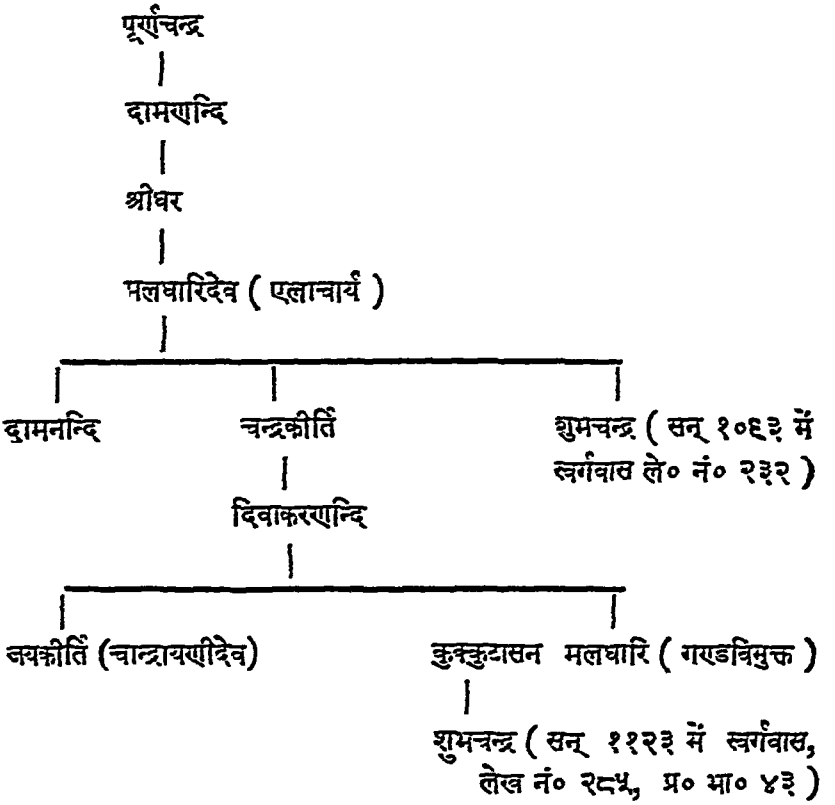

इस गण की एक और शाखा का नाम इंगुलेश्वर बलि है जिसके आचार्य गण प्रायः कोल्हापुर के आस पास रहते थे (४११ एवं ५७१ आदि)। इस से सम्बन्धित अनेकों लेख (४११,४६५, ५१४, ५२१, ५२४, ५२८, ५७१, ५८४, ५९६, ६००, ६२५ और ६७३) हैं पर इन लेखों से इस गण की ठीक गुरुपरम्परा नहीं दी जा सकती। १२–१३ वीं शताब्दी के लेखों में माधवनन्दि आचार्य का नाम प्रथम दिया गया है (४११, ४६५, ५१४ आदि)। १४ वीं-१५ वीं शताब्दी लेखों में अमयचन्द्र और उसके शिष्य श्रुतमुनि का नाम आगे आता है तथा १६ वीं शताब्दी के लेखों में चारुकीर्ति का नाम।

लेख ४७८ में इस गण की एक वाणद वलिय का नाम दिया गया है।

इस गण का प्रसिद्ध एवं प्रमुख गच्छ पुस्तक गच्छ है। जिसका कि उल्लेख अधिकांश लेखों में है। इसी गच्छ का दूसरा नाम वक्रगच्छ है (२५६, प्रथम भा० ५५ और ४२६)।

नन्दिगण:—मूलसंघ, कोण्डकुन्दावय, देशियगण, पुस्तक गच्छ से सम्बन्धित तथा सन् १११५ से ११७६ ई० के बीच के श्रवणबेल्गोल से प्राप्त लेख नं० २५५ (४७) २८५ (४३) ३३२ (५०) ३६२ (४०) और ३८८ (४२) में आचार्यों की कई पट्टावलियां दी गई हैं। इनमें बीच या अन्त में आचार्यों के साथ मूलसंघ देशियगण आदि लिखा है पर आदि में दो चार मंगलाचरण के श्लोकों के बाद केवल नन्दिगण का उल्लेख कर एक सामान्य परम्परा दी गई है जो इस प्रकार है:—

पद्मनन्दि (कोण्डकुन्द)

उनके अन्वय में

|

उमास्वाति (गृद्धपिच्छ)

|

बलाकपिच्छ

|

गुणनन्दि

|

देवेन्द्र सैद्धान्तिक

|

कलधौतनन्दि

लेख नं० ३६२ की थोड़ी विशेषता यह है कि बलाकपिच्छ के बाद समन्तभद्र, देवनन्दि (पूज्यपाद) और अकलंक का नाम दिया गया है। इनमें गुणनन्दि,

देवेन्द्र सिद्धान्त आदि देशियगण की परम्परा से सम्बन्धित हैं यह हम पहले देख चुके हैं पर उनके पहले के कोण्डकुन्दाचार्य,उमास्वाति,समन्तभद्र आदि आचार्यों के नाम द्रविड संघ से सम्बन्धित नन्दिगण के ११ वीं शताब्दी के लेखों (२१३, २१४,२८७ आदि) में भी दिखाई देते हैं। इस तरह मूलसंघ और द्रविडसंघ के लेखों में नन्दिगण के प्राचीन आचार्यों के प्रायः एक से नामों को देखकर ऐसा लगता है कि इन दोनों संघों में कोई प्राचीन नन्दिगण (संघ) बाहर से शामिल किया गया होगा, तथा ये सब आचार्य उसी गण के रहे होंगे और इस विषय में हम संकेत भी कर आये हैं कि यापनीय संघ के नन्दिसघ को ही द्रविड संघ और मूलसंघ ने अपनाया था। यापनीय संघ के साथ नन्दिसंघ के प्रगट या अप्रगट रूप से किये गये कतिपय उल्लेखों से यह ज्ञात होता है कि यापनीयों में नन्दिसंघ महत्त्वपूर्ण था (१०६, १२१, १२४, १४३)। प्राकृत भाषा में नन्दिसंघ की जो प्राचीन पट्टावली उपलब्ध है वह संभव है इसी संघ की थी[1]। उसमें वीर निर्वाण सं० ६८३ तक की वंशपरम्परा दी गई है। संस्कृत में नन्दिसंघ की एक और पट्टावली उपलब्ध है[2] पर वह मूलसंघ के पश्चात्कालीन आचार्यों की है उसका प्राकृत पट्टावलि से कोई सम्बन्ध नहीं।

इस सम्भावना के बाद उपर्युक्त मूलसंघ के लेखों में जो पट्टावलियाँ दी गई हैं उन पर हम संक्षिप्त में कह देना चाहते हैं कि लेख नं० २५५ (४७) और ३२२ (५०) में प्रायः एकसी गुरुपरम्परा दी गई है पर वह कलधौतनन्दि के बाद देशिय गण के उपर्युक्त निर्दिष्ट अन्य लेखों से नहीं मिलती। लेख नं० ३६२ (४०) में देशिय गण को नन्दि गण का प्रभेद कहा गया है और उसमें जो पट्टावली दी गई है वह जैन शिलालेखसंग्रह के प्रथम भाग की भूमिका के पृष्ठ सं० १३२ में अङ्कित है। लेख नं० २८५ (४३) में कलधौतनन्दि एवं रविचन्द्र के बाद जो गुरुपरम्परा मिलती है वह देशिय गण हनसोगे बलि की पट्टा-

१. षट्खण्डागम, पुस्तक १, पृष्ठ २४-२७
२. जैन सिद्धान्त भास्कर, भाग १, किरण ४ पृष्ठ ७१, ८१.

वली में हमने जो दी है वही है। लेख नं० ३८८ (४२) में हनसोगे वलि के मलधारि देव के बाद एक दूसरी गुरुपरम्परा दी गई है जो उक्त लेख से जान लेना चाहिये।

इसके बाद लेख नं० ५६६ (१०५, १४वीं शताब्दी) और ६२५ (१०८, १५ वीं शताब्दी) में नन्दिगण को नन्दिसंघ कहा गया है और उसे मूलसंघ के अर्थ में प्रयुक्त किया है। इन दोनों लेखों में सेन, नन्दि, देव और सिंह संघों का एक काल्पनिक इतिहास दिया गया है। लेख नं० १०५ के ऐतिहासिक महत्त्व के लिए प्रथम भाग की भूमिका के पृष्ठ १२८-१२७ देखें। ये दोनों लेख एक सुन्दर काव्य कहे जा सकते हैं।

सूरस्थगण:—मूलसंघ का एक गण सूरस्थ गण नाम से प्रसिद्ध था यह लेख नं० १८५, २३४, २६६, ३१८, ४६० और ५४१ से ज्ञात होता है। लेखों में इसका सूरस्त, सुराष्ट्र एवं सूरस्थ नाम से उल्लेख है। इन लेखों में इसके अन्वय गच्छ आदि का निर्देश नहीं है पर इस संग्रह के बाहर के कुछ लेखों से ज्ञात होता है कि इसमें चित्रकूट अन्वय या गच्छ था[1]। सूरस्थ एवं सूरस्त नाम कैसे पड़े यह कहना कठिन है। सुराष्ट्र नाम से प्रतीत होता है कि इस गण के साधु शुरू में सुराष्ट्र देश में रहते रहे होंगे, पर सुराष्ट्र का प्राकृत या अपभ्रंश रूप तो सुरट्ठ होता है सूरस्थ नहीं। संभव है उत्कीर्णक ने सुरट्ठ का पुनः संस्कृत रूप देने के प्रयत्न में सूरस्थ कर दिया हो पर यह भी एक दो लेख में सम्भव था सब में नहीं। इस तरह सूरस्थ गण की व्युत्पत्ति अब भी भ्रान्त है। हो सकता है कि कोई सूरस्त नाम का दक्षिण भारत में क्षेत्र हो जहाँ से इस गण के मुनियों ने अपना नाम ग्रहण किया हो।

सूरस्थ गण का सर्वप्रथम उल्लेख सन् ६६४ के एक जैन लेख में मिलता है। कहा जाता है कि सूरस्थ गण प्रारम्भ में मूल संघ के सेनगण से सम्बन्धित था[2]।

१. जैन एन्टीक्वेरी, भाग ११, अंक २, पृष्ठ ६३, ६५

२. जैनिज्म इन साउथ इण्डिया, लेख नं० ४६ पृष्ठ ३६७–३७४ (जीवराज ग्रन्थमाला सोलापुर)

इसके बाद प्रस्तुत संग्रह के ११ वीं शताब्दी के पूर्वार्ध के लेख नं० १८५ में इसका उल्लेख है जहाँ यह मूलसंघ के साथ द्रविड़ान्वय से युक्त है। इस पर हम अनुमान करते हैं कि द्रविड़ संघ के आदि गठन काल में, संभव है, इस गण के साधुओं ने भाग लिया हो या उस संघ के साधुगण मूलसंघ सूरस्थ गण में सम्मिलित रहे हों। इस गण के लेख, ११ वीं के पूर्वार्ध से लेकर १३ वीं शता० के अन्त तक के मिलते हैं। सभी लेख छोटे हैं केवल लेख नं २६६ को छोड़कर। इसमें सौभाग्य से इस गण की एक छोटी पट्टावली दी गई है जो इस प्रकार है:- अनन्तवीर्य, बालचन्द्र, प्रभाचन्द्र, कल्लेलेय देव (रामचन्द्र), अष्टोपवासि, हेमनन्दि, विनयनन्दि, एकवीर और उनके सधर्मा पल्लपण्डित (अभिमानदानिक)। लेख में पल्ल पण्डित की बड़ी प्रशंसा है। इनका समय सन् १११८ ई० (२६६) दिया गया है। इस गण के किसी भी लेख में कुन्दकुन्दान्वय का उल्लेख नहीं है। संभव है यह गण मूलसंघ की प्रभावशालिनी कुन्दकुन्दान्वय धारा में स्थान न पाने के कारण पिछली शताब्दियों में अपनी स्थिति को न सम्हाल सका हो।

क्राणूर गण:—क्राणूर गण के सम्बन्ध में यापनीय संघ के विवेचन में हम संभावना प्रकट कर आये हैं कि क्राणूर गण यापनीयों के कण्डूर गण के नाम का शब्दानुकरण है। कण्डूर या क्राणूर दोनों किसी स्थान विशेष को सूचित करते हैं जहाँ से कि उक्त गण के साधु समुदाय ने नाम ग्रहण किया है। इस गण के ११ वीं शताब्दी के उत्तरार्ध (२०७, सन् १०७४ ई०) से लेकर १४ वीं शताब्दी के अन्त तक लेख मिलते हैं। इस संग्रह में १७-१८ लेख इस गण से सम्बन्धित हैं जिनसे मालुम होता है कि इसमें प्रसिद्ध दो गच्छ थे—मेषपाषाण गच्छ (२१६, २६७, २७७, २६६, ३५३) तथा तिन्त्रिणीक गच्छ (२०६, २६३, ३१३, ३७७, ३८६, ४०८, ४३१, ४५६, ५८२)। मेषपाषाण का अर्थ है मेषों के बाँधने का पाषाण। यह कोई स्थल विशेष होना चाहिए जहाँ से इस गण के कि साधुओं का शुरू शुरू में सम्बन्ध रहा होगा। तिन्त्रिणीक एक वृक्ष का नाम है। ये पाषाणान्त और वृक्ष परक नाम इस गण के यापनीय संघ के साथ पूर्व सम्बन्ध

की स्तुति दिलाते हैं[1]।

लेख नं० २६७, २७७ और २९९ से मेषपाषाणगच्छ की इस प्रकार गुरु-परम्परा प्राप्त होती है (तिथिक्रम के अनुसार लेख नं० २९९ (पुरले) को सबसे पहले होना चाहिए)।

सिंहनन्दि आदि अनेकों आचार्यों के नाम बिना किसी सम्बन्ध को दिखाये

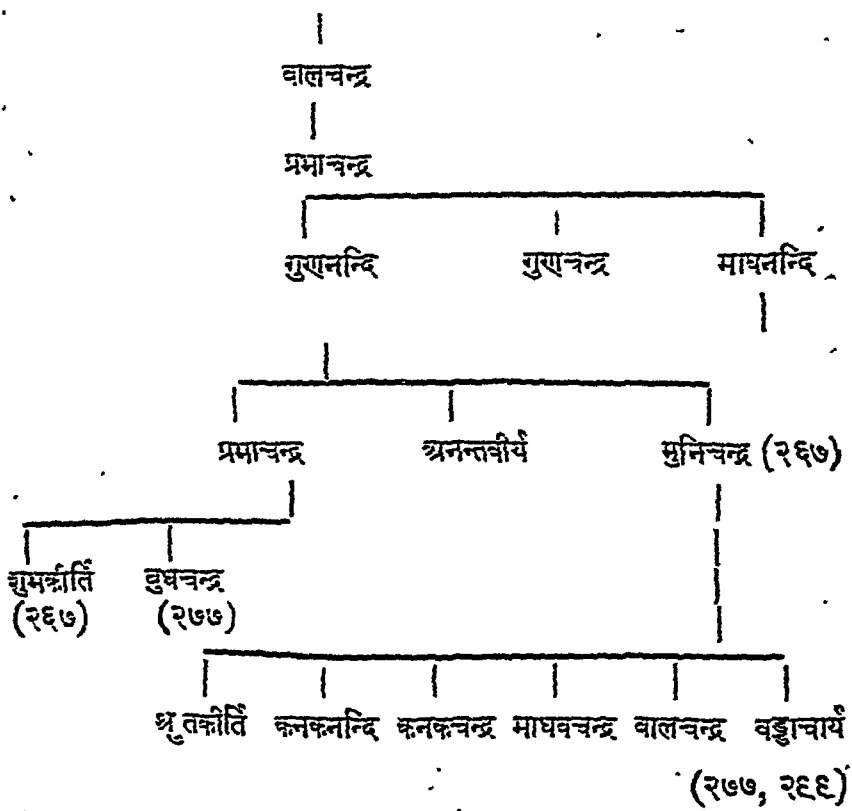

---

१. यापनीयों में श्रीमूलमूलगण पुन्नागवृक्षमूलगण तथा कनकोपल (कनकपाषाण) आदि गण थे। गण एवं गच्छ पीछे एकार्थ में भी प्रयुक्त हुए हैं।

इन लेखों में मूलसंघ कुन्दकुन्दान्वय के नाथ स्वरूप सिंहनन्दि आचार्य का उल्लेख है जिन्हें गंग महामण्डलिककुलतंवरण या समुद्धरण कहा गया है। लेख नं २७७ में अर्हद्बलि, वेट्टद-दामनन्दि भट्टारक, बालचन्द्र भट्टारक, मेघचन्द्र त्रैविद्य आदि आचार्यों के नाम बिना किसी सम्बन्ध बताये दिए गये हैं।

इन लेखों से ज्ञात होता है कि ११-१२ वीं शताब्दी के गंगनरेश भुवबल गंग बर्मदेव उसकी रानी गंग महादेवी तथा चार पुत्र मारसिंग, नन्नियं गंग, रक्कस गंग और भुवबल गंग चौथी और पांचवीं पीढ़ी के आचार्यों के भक्त थे और उन्हें दानादि से सम्मानित किया था।

क्राणूर गण के तिन्त्रिणीक गच्छ की आचार्य परम्परा लेख नं० ३१३, ३७७ ३८६, ४०८ और ४३१ से इस प्रकार मालुम होती है।

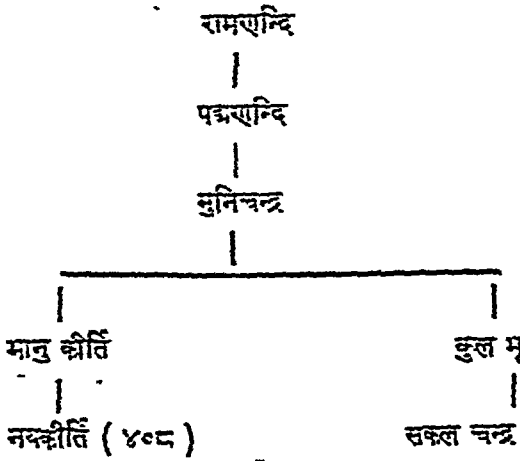

इनमें मुनिचन्द्र और उनके शिष्य की लेखों में बड़ी प्रशंसा है। वे पुलिगेरी के चालुक्यों के अधीन सामन्तों के गुरु थे। भानुकीर्ति यंत्र, तंत्र, मंत्र में प्रवीण थे। वे बन्दणिकापुर के अधिपति थे (३७७) तथा मण्डलाचार्य कहलाते थे और इस पद पर करीब ४० वर्ष तक रहे (३१३, ४०८)।

मूलसंघ के देशिय गण और क्राणूर गण की अपनी वसदियाँ होती थीं और उन दोनों में वास्तविक भेद था यह बात हमें दडिग से प्राप्त एक लेख से मालुम् होती है जिसमें लिखा है कि होय्सल सेनापति मरियाने और भरत ने दडिगण-केरे स्थान में पाँच वसदियाँ बनवायी थीं उनमें चार तो देशिय गण के लिए और एक क्राणूर गण के लिए[1]।

१४ वीं शताब्दी के बाद क्राणूर गण का प्रभाव वलात्कार गण के प्रभाव-शाली भट्टारकों के आगे क्षीण हो गया। इसके बाद इसके विरले ही उल्लेख मिलते हैं।

वलात्कार गणः—इस गण के सम्बन्ध में हम कह चुके हैं कि नामसाम्य को देखते हुए यह यापनीयों के वलिहारि या वलगार गण से निकला है। वलिहारि और वलगार, सम्भव है, स्थान विशेष के सूचक हैं[2] पर उससे निकले वलात्कार शब्द से ऐसा सूचित नहीं होता। वलात्कार शब्द का अर्थ पीछे १६ वीं शताब्दी के विद्वानों ने वतलाया है कि : चूंकि इस गण के आदि नायक पद्मनन्दि आचार्य ने सरस्वती को वलात्कार से बुलाया था इसलिए वलात्कार गण और सरस्वती गच्छ नाम प्रसिद्ध हुआ[3]। जो हो, लेखों से वलात्कार के इस अर्थ की कोई सूचना नहीं मिलती।

वलात्कार गण का सर्व प्रथम नाम ले० नं० २०८ (सन् १०७५ ई० के लगभग) में मिलता है जिसमें इस गण के चित्रकूटाम्नाय के मुनि मुनिचन्द्र और उनके शिष्य अनन्तकीर्ति का उल्लेख है। लेख २२७ (सन् १०८७ ई०) में इस गण के कुछ मुनियों की परम्परा दी गई है जो निम्न प्रकार है:—

---

१. जैन एण्टीक्वेरी भाग ६, अंक २; पृष्ठ ६६, नं० ५८

२. दक्षिण भारत में वलगार नामक एक गांव था (मेडीवल जैनिज्म, पृष्ठ ३२७)

३. जैन साहित्य और इतिहास (प्र० सं०) पृष्ठ ३४३।

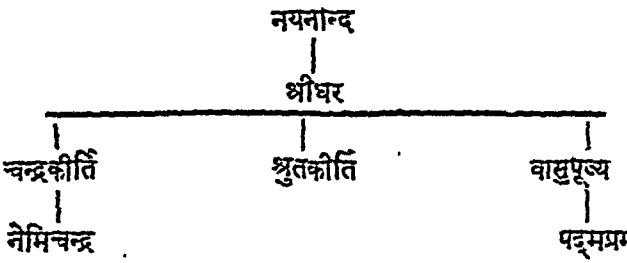

लेख के अन्त में गण का नाम वालकृकार गण दिया गया है। इसके बाद लेख नं० २४६ और ४४४ में इस गण के मुनि कुमुदचन्द्र भट्टारक व कुनुदेन्दु का नाम तथा उन्हें कुछ सेट्टियों द्वारा दान का उल्लेख है। लेखों में कोई समय नहीं दिया गया। इसके बाद चौदहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक इस गण के कोई लेख नहीं है। चौदहवीं शता० के उत्तरार्ध के लेखों से इस गण का विशेष प्रभाव द्योतित होता है। विजयनगर साम्राज्य के नरेश इनका सम्मान करते थे। लेख नं० ५६६ में वीर बुक्कराय के राज्यकाल में इस गण के एक अग्रणी आचार्य सिंहनन्दि का उल्लेख है। उनकी उपाधियाँ-राय, राजगुरु तथा मण्डलाचार्य थीं। उक्त लेख उनकी गृहस्थ शिष्या का समाधिमरण स्मारक है।

लेख नं० ५७२ (प्रथम भाग १११) और ५८५ में इस गण की निम्न प्रकार की परम्परा मिलती है :—

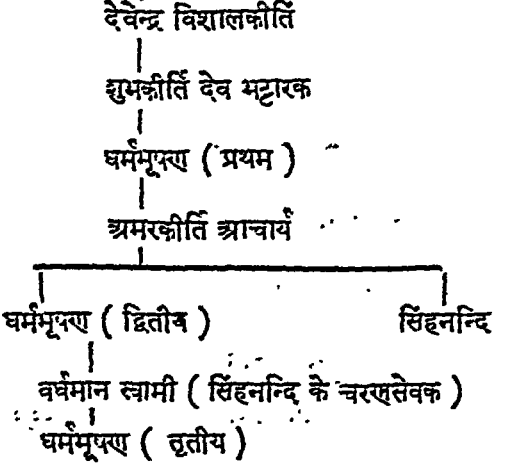

लेख नं० ५८५ बड़े महत्त्व का है। इसमें मूलसंघ के साथ नन्दिसंघ का तथा वलात्कार-गण के सारस्वत गच्छ का उल्लेख है। साथ ही इस गण के आदि आचार्य के रूप में पद्मनन्दि को लिखा है और उनके कुन्दकुन्द, वक्रग्रीव, एलाचार्य, गृध्रपिच्छ नाम दिए हैं। हमें लेखों से इस परम्परा के आचार्य अमरकीर्ति तक केवल प्रशंसा के अतिरिक्त विशेष कुछ नहीं मालुम होता है। लेख नं० ५७२ (सन् १३७२) से धर्मभूषण द्वितीय की। उनके शिष्य वर्धमान मुनि द्वारा निषद्या निर्माण का उल्लेख है। लेख नं० ५८५ में सिंहनन्दि आचार्य को सेनापति इरुगप का गुरु लिखा है। ये सिंहनन्दि वे ही प्रतीत होते हैं जिनका उल्लेख हमें लेख नं० ५६६ में मिला है। धर्मभूषण तृतीय का कुछ विद्वान् वर्तमान न्यायदीपिका ग्रंथ के कर्ता से साम्य स्थापित करते हैं[1]। ये विजयनगर सम्राट् देवराय के गुरु थे, यह बात हमें लेख नं० ६६७ के एक श्लोक से विदित होती है। देवराय प्रथम का समय सन् १४०६ ई० से १४२२ तक है। लेख में धर्मभूषण तृतीय का समय सन् १३८६ दिया गया है जो संभव है उनके पट्टारोहण के आस पास का समय हो।

लेख नं० ६६७ (सन् १५५४ के लगभग) और ६६१ (सन् १६०८ ई०) में इस गण की एक गुरुपरम्परा इस प्रकार दी गई :—

सिंहकीर्ति
|
मेरुनन्दि, वर्धमान आदि अ
⋮
विशालकीर्ति (सन् १४६७–१५५४ ई०)
|
विद्यानन्द (सन् १५०२–१५३० ई०)
|
देवेन्द्रकीर्ति (सन् १५३०–१५५० ई)
|
विशालकीर्ति द्वितीय (सन् १५५०–१६०८ ई०)

१. पं० दरबारीलाल न्यायाचार्य, न्यायदीपिका, प्रस्तावना, पृष्ठ ६२–६६।

लेख नं० ६६७ में जैनधर्म की प्रभावना करने वाले अनेकों आचार्यों का नाम शुरू में दिया गया है जो कि विभिन्न संघों एवं गणों से सम्बन्धित हैं। सिंहकीर्ति से पहले धर्मभूषण तृतीय का भी उल्लेख है पर उन दोनों के बीच कोई सम्बन्ध का निर्देश नहीं है। हो सकता है कि ये सिंहकीर्ति, धर्मभूषण तृतीय से जुदी किसी और गुरुपरम्परा के हों। उन्होंने दिल्ली के बादशाह मुहम्मद सुरित्राण की सभा में बौद्धादि वादियों को जीता था। इस बादशाह का समय सन् १३२६ से १३३७ तक था। मेरुनन्दि आदि के विषय में हमें कुछ नहीं मालुम। विशाल कीर्ति ने विजयनगर नरेश विरूपाक्ष के दरबार में विजय पत्र प्राप्त किया था तथा सिकन्दर सुरित्राण (सुल्तान सिकन्दर सूर सन् १५५४ ई०) के दरबार में विरोधियों को जीता था। इससे विशालकीर्ति का ८०-९० वर्ष का दीर्घ जीवन मालुम होता है। विद्यानंद की उपाधि वादी थी इन्होंने अनेकों दरबारों में विरोधियों को वाद में परास्त किया था। इनकी अनेक यशस्वी विजयों का वर्णन लेख में दिया गया[1] है। इसी तरह उनके शिष्य देवेन्द्रकीर्ति थे। लेख में तिथिका निर्देश नहीं है तथा वर्णन व्यतिक्रम से आचार्यपरम्परा ठीक नहीं मालुम हो पाती।

लेख नं० ६१७ में उत्तर भारत में बलात्कार गण के मदसारद गच्छ की गुरुपरम्परा दी गई है वह निम्न प्रकार है—

धर्म चन्द्र
|
रत्न कीर्ति
|
प्रभा चन्द्र
|
पद्मनन्दि
|
शुभचन्द्र

१. जैन एन्टीक्वेरी भाग ४ पृ०१–२१ तथा मेडीवल जैनिज्म, पृष्ठ ३७१–३७५।

इसी तरह लेख नं० ७०२ में पश्चिम भारत के बलात्कार गण सरस्वती गच्छ कुन्दकुन्दान्वय की भट्टारक परम्परा दी गई है जो इस प्रकार है—सकलकीर्ति, भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, विजयकीर्ति, शुभचंद्र, सुमतिकीर्ति, गुणकीर्ति, वादिभूषण, रामकीर्ति तथा पद्मनन्दि।

काष्ठासंघ

काष्ठासंघ की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक विवाद हैं। दसवीं शताब्दी में देवसेनाचार्यकृत दर्शनसार ग्रन्थ में लिखा है कि दक्षिण प्रांत में आचार्य जिनसेन के सतीर्थ्य विनयसेन के शिष्य कुमारसेन ने उत्तर पुराण के रचयिता गुणभद्र के दिवंगत (संवत् ९५३) होने के पश्चात् काष्ठासंघ की स्थापना की थी, पर यह उल्लेख कालक्रम आदि अनेक दृष्टियों से युक्तियुक्त नहीं प्रतीत होता है[1]। १७ वीं शताब्दी के एक ग्रन्थ वचनकोश में इस संघ की उत्पत्ति के सम्बन्ध में लिखा है कि उमास्वामी के पट्टाधिकारी लोहाचार्य ने इस संघ की स्थापना उत्तर भारत के अमरोहा नगर में की थी। इस कथन में सचाई जो हो पर १६-२० वीं शताब्दी के लेखों में काष्ठासंघ के अन्तर्गत लोहाचार्य अन्वय का उल्लेख मिलता है। प्रस्तुत संग्रह के एक लेख नं० ७५६ (सं० १८८१) में यही बात हम पाते हैं।

इस संग्रह में इस संघ से सम्बन्धित सभी लेख उत्तर और पश्चिम भारत से ही प्राप्त हुए हैं। लेख नं० ६३३ और ६४० में इसका नाम काञ्चीसंघ लिखा है, जो कि माथुरान्वय (मयूरान्वय) एवं पुष्करगण के साथ होने से लगता है कि यह काष्ठासंघ का ही अपर नाम होना चाहिए। इस संघ के प्रमुख गच्छ या शाखायें चार थीं:— नन्दितट, माथुर, बागड़ और लाटबागड़। ये चारों नाम बहुतकर स्थानों और प्रदेशों के नामों पर रखे गये हैं। नन्दितट से संबन्धित एक ले० नं० ११६ इस संग्रह के प्रथम भाग में है जिसमें कि नन्दितट को भूलकर मण्डितटं लिखा गया है। संभव है इस गच्छ का संबन्ध दक्षिण से था। माथुर गच्छ

१. जैन साहित्य और इतिहास, पृष्ठ २७७ (द्वि० सं०)।

या अन्वय से संबन्धित ६ लेख प्रस्तुत संग्रह में हैं। अथूणा से प्राप्त लेख नं० ३०५ क में यद्यपि काष्ठासंघ का उल्लेख नहीं है फिर भी उसके प्रसिद्ध अन्वय माथुरान्वय का निर्देश है और लेख से इस संघ के एक आचार्य छत्रसेन का नया नाम मालूम होता है। लेख नं० ५८६ में मसार से प्राप्त तीन प्रतिमालेखों में इस संघ के आचार्य कमलकीर्ति का नाम देकर एक लेख में उन्हें माथुरान्वय का लिखा है। ग्वालियर से प्राप्त दो लेख नं० ६३३ और ६४० में तोमरवंशीय नरेश डूंगरसिंह और उसके पुत्र कीर्तिसिंह (१५ वीं शता०) के समय इस संघ के कतिपय प्रतिष्ठित भट्टारकों के नाम मिलते हैं। लेख नं० ६३३ में भट्टा० गुणकीर्ति और उनके शिष्य यशःकीर्ति का उल्लेख है, साथ में प्रतिष्ठाचार्य श्री पण्डित रइधू का भी। भट्टा० यशःकीर्ति वे ही हैं जिन्होंने अपभ्रंश भाषा में पाण्डवपुराण (वि० सं० १४९७) और हरिवंशपुराण (वि० सं० १५००) की रचना की थी। अपभ्रंश चंदप्पहचरिउ भी इनकी रचना है। इन्होंने प्रसिद्ध कवि स्वयम्भू के हरिवंशपुराण की जीर्ण-शीर्ण खण्डित प्रति का समुद्धार भी किया था। ये गुणकीर्ति भट्टारक के अनुज तथा शिष्य भी थे। प्रतिष्ठाचार्य रइधू, प्रसिद्ध कवि रइधू ही हैं जिन्होंने बीसों ग्रन्थों की रचना की थी। ये महान् कवि होने के साथ साथ भट्टारकीय पण्डित थे, प्रतिष्ठा आदि में भाग लेते थे इसलिए प्रतिष्ठाचार्य कहलाते थे। ग्वालियर से प्राप्त ले० नं० ६४० में और बाजा गंज से प्राप्त लेख नं० ६४३ में इस संघ के कुछ दूसरे भट्टारकों के नाम गुरुपरम्परा पूर्वक मिलते हैं, वे हैं— क्षेमकीर्ति, हेमकीर्ति, विमलकीर्ति (६४०) तथा क्षेमकीर्ति, हेमकीर्ति, कमलकीर्ति एवं रत्नकीर्ति (६४३)। संभव है इन दोनों लेखों के भट्टारक एक परम्परा से सम्बन्धित थे और लेख नं० ६३३ की परम्परा से जुदे थे, क्योंकि ज्ञानार्णव की लेखक-प्रशस्ति से मालुम होता है कि उक्त लेख के भट्टारक यशः-कीर्ति के बाद उनकी गद्दी पर उनके शिष्य मलय कीर्ति और प्रशिष्य गुणभद्र भट्टारक हुए थे[1]। ले० नं० ६४३ में भट्टारक रत्नकीर्ति को मण्डलाचार्य लिखा

१. जैन साहित्य और इतिहास, पृष्ठ ५३५ (प्रथम संस्करण)।

है। माथुर गच्छ (अन्वय) पुष्कर गण का उल्लेख करने वाला सं० १८८१ का एक लेख पमोसा (कौशाम्बी) से प्राप्त हुआ है जिसमें भट्टारक जगत्कीर्ति और उनके शिष्य ललितकीर्ति का निर्देश है।

माथुर गच्छ या संघ का इतना प्रभाव था कि आचार्य देवसेन को अपने ग्रन्थ दर्शनसार में इसकी गणना अलग करना पड़ी। माथुर संघ नाम भी स्थान के कारण पड़ा है—मथुरा नगर या प्रान्त का जो मुनिसंघ है वह माथुर संघ। मथुरा प्राचीन काल से जैन धर्म का प्रमुख स्थान रहा है यह हम मथुरा से प्राप्त बहुसंख्यक लेखों से जान चुके हैं। स्थान सापेक्षिकता के कारण संघों, गणों एवं गच्छों के नाम को लेकर बाबू कामताप्रसाद जी जैन ने काष्ठासंघ की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कल्पना की है कि यह संघ मथुरा के निकट जमुना तट पर स्थित काष्ठा ग्राम से निकला[1] है, या हो सकता है कि काष्ठासंघ जैन मुनियों के उस साधुसमुदाय का नाम पड़ा जिसका मुख्य स्थान काष्ठा नामक स्थान[2] था।

काष्ठासंघ माथुरान्वय के प्रसिद्ध आचार्यों में सुभाषितरत्नसन्दोह आदि अनेक ग्रन्थों के रचयिता आ० अमितगति हो गये हैं जो परमार नरेश मुंज और भोज के समकालीन थे (वि० सं० १०२० से १०७३)।

काष्ठासंघ, की दूसरी शाखा लाट वागट से भी सम्बन्धित दो लेख प्रस्तुत संग्रह में हैं और वे हैं दूबकुण्ड से प्राप्त ले० नं० २२८ और २३५। सन १०८८ ई० के लेख नं० २२८ में इस शाखा (गण) के देवसेन, कुलभूषण, दुर्ल्लभसेन, शान्तिषेण एवं विजयकीर्ति नामक आचार्यों के नाम गुरु-शिष्यपरम्परा के रूप में दिये गये हैं। अन्तिम आचार्य विजयकीर्ति उक्त प्रशस्ति के रचयिता थे। यदि पूर्ववर्ती चार आचार्यों का समय १०० वर्ष मान लिया जाय

---

१. जैन सिद्धान्त भास्कर भा० २, किरण ४, पृष्ठ २८-२९।

२. पं० नाथूराम जी प्रेमी ने बतलाया है कि दिल्ली के उत्तर में जमुना के किनारे काष्ठा नगरी थी जिस पर नागवंशियों की एक शाखा का राज्य था १४वीं शताब्दी में 'मदनपारिजात' निबन्ध यहीं लिखा गया था।

तो उसे सन् १०८८ में से घटाने पर देवसेन का समय सन् ९८८ ई० के करीब आ जाता है। देवसेन अपने गण के उन्नत रोहणाद्रि थे। कुलभूषण, दुर्ललनेन निर्मल चरित्रवान् आचार्य थे। शान्तिषेण ने राजा भोज की सभा में अम्बरसेन आदि सैकड़ों वादियों को हराया था। लेख नं० २३५ में काष्ठासंघ के महाचार्य श्री देवसेन की पादुकाओं की स्थापना का उल्लेख है। यह लेख प्रथम लेख के ठीक सात वर्ष बाद का है। संभव है इस संघ के प्रमुख आचार्य देवसेन की स्मृति को बनाये रखने के लिए उनकी परम्परा के शिष्यों ने स्थापना की हो।

लाट बागड संघ में प्रद्युम्नचरित्र काव्य के कर्ता आचार्य महासेन हो गये हैं जो कि परमार राजा मुंज के समय वि० सं० १०५० के लगभग हुए हैं।

इस संघ के अन्य गणों गच्छों के विषय में इन लेखों से विशेष कुछ ज्ञात नहीं होता है।

---

४. राज वंश और जैन धर्म

जैन संघ का विस्तृत परिचय जानने के बाद अब हम इन लेखों से प्राप्त होने वाले उत्तर भारत और दक्षिण भारत के राज वंशों का परिचय तथा उनके समय में जैन धर्म की स्थितिका यथाशक्य वर्णन करते हैं।

अ. उत्तर भारत के राज वंश

यद्यपि इस संग्रह में दक्षिण भारत के लेख अधिक हैं फिर भी उत्तर भारत के जो भी लेख हैं उनसे प्राप्त राज वंशों का परिचय उन वंशों के इतिहास के लिए पूरक का काम देता है। इतना ही नहीं कुछ लेख तो ऐसे हैं जो कि कतिपय वंशों का परिचय देने में एक मात्र साधन समझे जाते हैं। उदाहरण के लिए उदयगिरि (उड़ीसा) से प्राप्त ले० नं० २ कलिंग सम्राट खारवेल के इतिहास पर, दूबकुण्ड से प्राप्त ले० नं० २८८ दूबकुण्ड के कच्छपघातों पर तथा ले० नं० ३०५ क अर्थूणा की परमार शाखा पर प्रकाश डालते हैं।

प्रस्तुत संग्रह का सर्वप्रथम लेख मौर्य सम्राट् अशोक का है जो कि उसके धर्म

शासनों में सातवाँ माना जाता है। इसका समय लगभग २४२ ई० पूर्व है। यह एक स्तम्भ पर खुदा हुआ है। शिलालेखों में जैनियों का सर्व प्रथम उल्लेख इसी लेख में निगण्ठ नाम से हुआ है। पाली भाषा में, जिससे कि इस लेख की भाषा बहुत कुछ मिलती है भगवान् महावीर का निगण्ठ नाटपुत्त शब्द से और जैनियों का निगण्ठ (निर्ग्रन्थ) नाम से बीसों जगह उल्लेख किया गया है। उक्त लेख से प्रगट होता है कि बौद्ध सम्राट् अशोक की धार्मिक नीति बड़ी उदार थी। उसने अन्य सम्प्रदायों के समान जैनों का भी अनेकविध उपकार करने के लिए धर्म महामात्य नियुक्त किये थे।

इस संग्रह का दूसरा लेख एक महत्त्वपूर्ण एवं प्रनिविधि लेख है। इसमें कलिंग के जैन सम्राट् खारवेल का इतिहास दिया गया है जो कि तत्कालीन राजनीतिक एवं धार्मिक इतिहास की दृष्टि से बड़े महत्त्व का है। यह लेख सन् १८२७ या उसके पूर्व स्टर्लिंग महोदय को मिला था। इसके बाद उसकी पाण्डुलिपि बनाने और उसे पढ़ने में उच्चकोटि के अनेकों विद्वानों ने अथक परिश्रम किया। उनमें जेम्स प्रिन्सेप, जनरल कनिंघम, राजेन्द्रलाल मित्र, भगवानलाल इन्द्र जी, राखालदास बनर्जी, और काशीप्रसाद जायसवाल के नाम प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है। डा० बेणीमाधव बरुआ ने इस लेख का महत्त्व आंकते हुए करीब ३०० पृष्ठों का एक ग्रन्थ ओल्ड ब्राह्मी इन्स्क्रिप्सन्स, नाम से लिखा है और अनेक तथ्यों के आधार से यह नया पाठ प्रस्तुत किया है। उन्होंने उक्त लेख का अध्ययन, खारवेल वंश से सम्बन्धित अन्य १४ जैन लेखों के साथ करके उक्त वंश का एक अच्छा परिचय दिया है। इस तरह इस महत्त्वपूर्ण लेख के अध्ययन में विद्वानों ने १०० से अधिक वर्ष लगाये। अशोक के लेखों के सिवाय, शायद ही अन्य किसी लेख का इस प्रकार अध्ययन किया गया हो। प्रस्तुत संग्रह में जो पाठ दिया है वह सन् १९२१ तक निर्धारित पाठों में से एक है। इस पर से जो निष्कर्ष निकले थे वे अब बहुत कुछ पुराने एवं भ्रामक कहे जा सकते हैं।

जो हो, खारवेल चेदि (महा मेघवाहन) वंश का तृतीय नरेश था। उदयगिरि से प्राप्त एक लेख से उसके पिता का नाम वक्रदेव ज्ञात होता है। उसने

अपने प्रारम्भिक जीवन के १५ वर्ष कुमारावस्था में और ९ वर्ष युवराज के रूप में बिताये। २४ वें वर्ष में उसका राज्याभिषेक हुआ। उसने लालाक वंश के हत्तिसिंह के प्रपौत्र की पुत्री से विवाह किया था। वह जैनधर्म का परम भक्त था इसलिए वह भिक्षुराजा एवं धर्मराजा कहलाता था। पर वह अन्धभक्त न था। अशोक के समान ही अन्य धर्म वालों (पाषण्ड) का भी आदर करता था। राजगद्दी सम्हालते ही उसने दिग्विजय प्रारम्भ की। अपने राज्य के दूसरे वर्ष में उसने दक्षिण भारत पर चढ़ाई की। उस समय उस देश का राजा सातवाहन वंश का सातकर्णि प्रथम था। राज्य के चतुर्थ वर्ष में उसने किसी विद्याधर नरेश की राजधानी पर अधिकार कर लिया तथा उसी वर्ष वरार प्रान्त के राष्ट्रिक और भोजकों को भी परास्त किया। आठवें वर्ष में उसने गोरथगिरि नामक पहाड़ी किले (गया जिले की 'बराबर' की पहाड़ियां) को नष्ट कर राजगृह पर चढ़ाई की, इस समाचार से मथुरा के यवन राजा के मन में भय का संचार हो गया। ग्यारहवें वर्ष में उसने मसुलीपट्टम् प्रदेश (मद्रास प्रान्त) के राजा की राजधानी पिथुड को नष्ट कर दिया और बारहवें वर्ष में मगधनरेश बहसतिमित्र[1] पर चढ़ाई कर नन्दराजा द्वारा कलिंग से लायी गयी एक जिनमूर्ति को छीन कर ले गया। उसी वर्ष उसने सुदूर दक्षिण के पाण्ड्य नरेश को भी हराया था।

लेख में उसके १४ वर्षों के कार्यों का वर्णन है जिससे ज्ञात होता है कि वह बड़ा ही प्रजाहितैषी था, अनेकों कलाओं में प्रवीण था तथा उसने अनेकों निर्माण कार्य कराये थे। अन्त में लिखा है कि जिनधर्म भक्त उस राजा ने जैन साधुओं के लिए कुमारी पर्वत (खण्डगिरि) पर ११७ गुफायें बनवायी थीं और पाभार स्थान में एक जैन मठ का निर्माण कराया तथा अनेक स्तम्भ, चैत्यादि भी बनवाये थे।

अनेक प्रमाणों के आधार से इस राजा का समय इतिहासज्ञ ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी के लगभग मानते हैं।

---

१. इस नरेश का मामा आपाढसेन जैनधर्म भक्त था यह बात प्रभोसा से प्राप्त ले० नं० ६ से ज्ञात होती है।

इस संग्रह में उदयगिरि खंडगिरि की गुफाओं से प्राप्त केवल तीन लेख दिए गये हैं। दो (२,३) तो खारवेल के वंश से सम्बन्धित हैं। तीसरा लेख (२४५ लग० ११ वीं शताब्दी) केसरीवंश के नरेश उद्योतकेसरी के समय का है।

इसके बाद कालक्रम से मथुरा के लेख आते हैं जिनसे हमें शकों के क्षत्रप तथा कुषाणवंशी राजाओं का परिचय मिलता है। उनका वर्णन पहले किया जा चुका है।

कुषाणों के बाद गुप्तवंश का राज्य आता है। इस वंश के केवल तीन लेख (६१,६२ एवं ६३) दिये गये हैं। लेख ६१ के प्रथम श्लोक में गुप्त संवत्सर १०६ दिया गया है। लेख ६२ में कुमारगुप्त का नाम एवं गुप्त संवत् ११३ दिया गया है। इस लेख की विशेषता यह है कि वह सूचित करता है कि उस समय में भी कल्पसूत्र की पट्टावली में निर्दिष्ट प्राचीन गण एवं शाखादि विद्यमान थे। लेख नं० ६३ स्कन्दगुप्त के राज्यकाल का है उसमें आदिकर्ता पंच तीर्थंकरों की प्रतिमा के स्थापन का उल्लेख है।

उत्तर भारत में गुप्तवंश के बाद ४०० वर्षों में होने वाले किसी राजवंश से संबंधित जैन लेख इस संग्रह में नहीं हैं। हाँ, हर्षवर्धन (सन् ६०६-६४७ ई०) का उल्लेख हमें एहोले से प्राप्त चालुक्य पुलकेशि के एक लेख (१०८) में मिलता है जिसमें लिखा है कि वह पुलकेशिद्वारा विगलितदर्प किया गया था (हार गया था)। इसी तरह उसी लेख में कलचूरि वंश का उल्लेख है जिसे पुलकेशि के चाचा मंगलीश ने हराया था।

इसके बाद ६ वीं शताब्दी के गुर्जर प्रतिहार वंश के प्रतापी राजा मिहिर-भोज के समय का एक लेख (१२८) देवगढ़ से प्राप्त होता है जिसमें ६१६ विक्रम सं० अङ्कित है। वहाँ उक्त नरेश को सम्राट् की उपाधि से भूषित पाते हैं। उसके महासामन्त विष्णुराम के शासन में आचार्य कमलदेव के शिष्य श्रीदेव ने शान्तिनाथ का एक मन्दिर बनवाया था। लेख से मालुम होता है कि समय देवगढ़ या उस क्षेत्र का नाम लुअच्छगिरि था।

गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य के पतन के बाद उत्तर भारत में अनेक छोटे छोटे राज्य उदित होते हैं। उनमें चन्देल, परमार, कच्छपघात उल्लेखनीय है। इस संग्रह में दुबकुण्ड से प्राप्त लेख (नं० २२८) में दुबकुण्ड शाखा के कच्छवाहों की वंशावली एवं प्रत्येक राजा का महत्व बतलाया गया है। इस वंश का द्वितीय नरेश अर्जुन, चन्देल नरेश विद्याधर के अधीन था तथा उसने गुर्जर प्रतिहार नरेश राज्यपाल को युद्ध में मार डाला था तृतीय नरेश अभिमन्यु के शस्त्र प्रयोग से परमार नरेश भोज भी डरता था। यह लेख इस वंश के पाँचवें नरेश विक्रमसिंह के समय का है। उक्त नरेश के नगर चन्दोभ (दुबकुण्ड) में कुछ जैन व्यापारियों ने काष्ठासंघ के मुनि विजयकीर्ति की प्रेरणा से एक मन्दिर का निर्माण कराया था। विक्रमसिंह ने उस मन्दिर के लिए कई प्रकार के दान भी दिये। उक्त लेख में काष्ठासंघ के महाचार्य देवसेन से लेकर विजयकीर्ति तक की पट्टावली दी गयी है।

कच्छपघातों की एक शाखा ग्वालियर से भी राज्य करती थी। उसके एक नरेश वज्रदाम के नाम एवं समय को सूचित करने वाला सुहानियाँ से प्राप्त एक लेख नं० १५३ है।

महोबे और खजुराहो से प्राप्त कतिपय लेखों में चन्देल नरेशों के नाम एवं संवत् दिये गये हैं। उनसे उनके राजनीतिक इतिहास पर कोई विशेष प्रकाश नहीं पड़ता, पर जैन धर्म की अच्छी स्थिति का पता अवश्य लगता है।

परमार वंश की मुख्य शाखा के जैन लेख इस संग्रह में नहीं है पर उसकी वांसवाड़ा एवं चन्द्रावती शाखा को बतलाने वाले लेख इस संग्रह में आ सके हैं। लेख नं० ३०५ क से वांसवाड़ा शाखा के मण्डलीक, चामुण्डराज एवं विजयराज का पता चलता है। इस लेख में काष्ठासंघ माथुरान्वय के एक नये आचार्य छत्र-सेन का नाम दिया गया है जो कि अच्छे वक्ता थे। लेख में उल्लेख है कि विजय-राज के राज्य में भूषण नामक एक जैन ने एक मूर्ति की स्थापना की थी।

चन्द्रावती के परमारों पर प्रकाश डालने वाले आबू से प्राप्त दो लेख

(४७१–७२) हैं। चूँकि उन लेखों का मूल उद्धृत नहीं हो सका इसलिए उनका महत्व बतलाने में कठिनाई है।

गुजरात के चौलुक्य वंश के प्रसिद्ध जैन सम्राट् कुमारपाल के राज्य का केवल एक लेख नं० ३३२ इस संग्रहमें लिया गया है। यद्यपि यह लेख किसी जैन घटना या दानादि से सम्बन्धित नहीं है पर चूँकि यह दिगम्बराचार्य रामकीर्ति की रचना है इसलिए संग्रह में आ सका है। यह लेख कुमारपाल के चित्तौड़ आगमन पर लिखाया गया था तथा उसमें उक्त नरेश द्वारा शाकम्भरीश की पराजय और सपादलक्ष देश को मर्दन करने का उल्लेख है। उस समय शाकम्भरी का पति अर्णोराज चौहान था जिसे कुमारपाल ने हराया था और पीछे उसकी बेटी से विवाह किया था। उक्त लेख से वह भी ज्ञात होता है कि उस समय तक कुमारपाल शिवभक्त था। उसने वहाँ समिधेश्वर के मन्दिर के लिए एक गाँव प्रदान किया था।

राजस्थान के चाहमानो (चोहानों) की विविध शाखाओं को द्योतन करने वाले भी कुछ लेख इस संग्रह में निर्दिष्ट हैं पर खेद है कि उनका मूल पाठ नहीं दिया गया जिससे उनका महत्त्व बतलाना कठिन है। बिजौलां से प्राप्त सन् ११७० ई० का लेख नं० ३७४ शाकम्भरी के चोहानों ने इतिहास के लिए प्रमुख लेख है। यद्यपि यह सोमेश्वर चौहान के राज्यकाल का है पर इस विशाल लेख में उसके पूर्व के २६ नरेशों की वंशावली एवं प्रत्येक का वर्णन दिया गया है।

इसी तरह लेख नं० ३५७-५५८ नडोले के चोहान अल्हणदेव के समय के हैं जिससे उक्त शाखा के चौहानों का परिचय मिलता है। सुन्ध पर्वत से प्राप्त लेख नं० ५०७ में जालौर की चौहान शाखा के कई नरेशों का वर्णन है। गुजरात के अन्तिम हिन्दू शासक वंश—बघेल वंश के लवणप्रसाद वीरधवल तथा उनके प्रसिद्ध मंत्री वस्तुपाल, तेजपाल की गतिविधियों एवं धार्मिक कार्यों का वर्णन भी हमारे संग्रह के एक लेख नं ४७६ से मिलता है।

१५ वीं शताब्दी में ग्वालियर स्थान से राज्य करने वाले तोमरवंशी डूङ्गरेन्द्र ७ के समय दो लेख (६३३ और ६४०) मिले हैं। ये लेख ग्वालियर के

संग्रह में मूलसंघ के प्रथम दो लेखों में हमें आचार्य वीरदेव[1] और चन्द्रनन्दि आचार्य का नाम मिलता है। उक्त आचार्यों ने जैन मन्दिरों की प्रतिष्ठा करायी थी और गङ्ग नरेश माधव द्वितीय और अविनीत ने कुछ भूमि और ग्रामादि दान में दिये थे।

उपर्युक्त लेखों में मूलसंघ के पश्चात्कालीन लेखों में दिखने वाले किसी गण, गच्छ एवं अन्वय तथा बलि का निर्देश नहीं है। उनका उल्लेख सातवीं के उत्तरार्ध (लेख नं० १११ सन् ६८७ ई०) से ही मिलता है। लेखों से प्राप्त होने वाले इस संघ के प्रमुख गणों का नाम इस प्रकार है:— देवगण, सेनगण, देशिय गण, सूरस्थगण, क्राणूरगण और बलात्कार गण। इन गणों का नामकरण प्रायः मुनियों के नामान्त शब्दों को लेकर या प्रान्त विशेष अथवा स्थान विशेष को लेकर किया गया है। इनमें लेखों के क्रमानुसार देवगण प्राचीन (७ वीं शता०) है। इसके बाद सेन, देशिय और सूरस्थ गण हैं। शेष का उल्लेख ११ वीं १२ वीं शताब्दी से ही मिलता है, इसके पहले नहीं। इन गणों और उनके अवान्तर भेदों का परिचय देने के पहले इनके समकालीन दूसरे जैन संघों—विशेष कर यापनीय, कूर्चक और द्रविड संघ—का परिचय देना आवश्यक है।

यापनीय संघ

यह संघ दक्षिण भारत की अपनी देन है। वहाँ के जलवायु और कठोर जीवन बिताने के प्रति आग्रह ने इस संघ को भग० महावीर द्वारा उपदिष्ट यथावत् जैनधर्म पालन करने में प्रेरणा दी। इस संघ के साधु एक ओर दिगम्बर साधुओं के समान उग्र चर्या के रूप में नग्न रहते, मोर की पिच्छी रखते तथा पाणितल भोजी थे एवं नग्न मूर्तियाँ पूजते थे और वन्दना करने वालों को धर्म-

---

१—संभव है ये वीरदेव राजगृह (बिहार) के सोन भण्डार से प्राप्त एक एक लेख (नं० ८७ ३री४थी श०) के आचार्य वैरदेव ही हों। देखो 'प्रसिद्ध जैन केन्द्र' प्रकरण।

नरेश का नाम, दडिग कोङ्गुणि देते हैं और उसका समय सन् १८८-२०० के लगभग मानते हैं[1]।

प्रस्तुत संग्रह में इस वंश का सबसे प्राचीन ले० नं० ६० है, जिसे गुप्त काल के प्रारंभ का होना चाहिये। इसमें कोङ्गुणिवर्मा प्रथम से माधववर्मा द्वितीय तक पाँच नरेशों की वंशावली दी गई है यदि प्रथम राजा के राज्य का प्रारंभ समय ई० सन् २०० के लगभग मान लिया जाय और प्रत्येक नरेश को ३५-४० वर्ष या उससे कुछ अधिक वर्ष का राज्यकाल दिया जाय (जो कि संभव है) तो लेख के अन्तिम राजा माधव द्वितीय का समय ई० सन् ३७५-४०० के लगभग या कुछ बाद आता है। उक्त लेख में इस बात का उल्लेख नहीं है कि कोङ्गुणि-वर्मा और उसके बाद के दो नरेश किस धर्म के प्रतिपालक थे। पर इस बात का वहाँ स्पष्ट निर्देश है कि तृतीय नरेश हरिवर्मा महाधिराज का उत्तराधिकारी विष्णु-गोप नारायण भक्त था और उसका उत्तराधिकारी माधववर्मा त्र्यम्बकभक्त था[2]। माधववर्मा द्वितीय ने चिर प्रनष्ट देवभोग, ब्रह्मदेय आदि को फिर से संचालित किया था और कलियुग में धर्मोद्धार किया था (६४)। इसका विवाह कदम्बवंशी नरेश काकुत्स्थवर्मा की बेटी से हुआ था क्योंकि गंगवंश के अनेक लेखों में इसके बेटे अविनीत को कदम्बनरेश कृष्णवर्मा (संभव है प्रथम) का प्रिय भागिनेय लिखा है[3] (६५, १२१, १२२)। कृष्णवर्मा काकुत्स्थवर्मा का द्वितीय पुत्र था। त्र्यम्बकभक्त होते हुए भी माधववर्मा द्वितीय की धार्मिक नीति बड़ी उदार थी।

---

१. मैसूर एण्ड कुर्ग इन्स्क्रिप्सन्स पृष्ठ,३२, ४६.

२. लुइस राइस महोदय सन्देह करते हैं कि इन ताम्रपत्रों में प्रत्येक राजा के साथ पूर्व निर्धारित या सांचे में ढले हुए के समान जो विवरणात्मक वाक्य दिये हैं, वे संभव है, तथ्य नहीं हैं। वे मानते हैं कि ब्राह्मण प्रभाव के कारण ताम्रपत्र उत्कीर्ण करने वाले ने स्वेच्छा पूर्वक तथ्यों को विकृत कर उनके जैन होने पर पर्दा डाला है।

पीछे कदम्बों का परिचय भी देखिये।

किले में जैन मूर्तियों के निर्माण कराने वाले जैन हितैषी नरेश डूंगरसिंह और कीर्तिसिंह के राज्य में जैन धर्म की स्थिति के सूचक हैं। नं० ६३६ (सन् १४५३ ई०) टोंक से प्राप्त एक लेख में लूंगरेन्द्र नरेश का उल्लेख है। लेख उक्त तोमरवंशी राजाओं के समकालीन है। लूंगरेन्द्र संभव है डूंगरेन्द्र (तोमरवंशी) का ही नाम है जो अशुद्ध रूप से उत्कीर्ण हो गया या पढ़ा गया है।

लेख नं० ६१७ (सन् १४२४) में मुस्लिम सरदार अलपखां के शासन-काल में देवगढ़ तीर्थ में जैन प्रवृत्तियों का निर्देश है।

आ. दक्षिण भारत के राजवंश

१. गङ्गवंश—दक्षिण भारत के प्राचीन राजवंशों में से एक गंग वंश माना जाता है। इस वंश का जैन धर्म से ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों से ही सम्बंध रहा है। ले० नं० २७७ (सन् ११२१ ई०) में इस वंश की दक्षिण भारत में स्थापना की कहानी दी गई जिससे ज्ञात होता कि उत्तर भारतवासी इक्ष्वाकुवंशीय किसी गंगदत्त से चलने वाले गंगवंश के दो राजकुमार दडिग और माधव ने इस की स्थापना क्रारूर गण (१) के जैनाचार्य सिंहनन्दि की सहायता से गंगवाडि ९६००० प्रान्त में की थी। उक्त लेख में सिंह नन्दि को 'गंगराज्य-समुद्धरणम्' कहा गया है। यद्यपि यह बहुत पश्चात्कालीन निर्देश है इसलिए इस लेख का वक्तव्य कहाँ तक सच है हम नहीं कह सकते। हाँ, इस वंश के शुरू के लेखों में ऐसा कोई कथन नहीं है। पर जैन गुरु ने इस वंश के आदि राजाओं की सहायता की थी यह बात ईस्वी सातवीं शताब्दी और उसके बाद के गंग वंशी तथा अन्य वंशों के लेखों से पुष्ट होती है[1]। इस वंश के प्रारम्भिक लेखों में गंगनरेशों को जाह्नवेय कुल एवं काण्वायन सगोत्र का कहा गया है (९०,९४) तथा प्रथम नरेश का नाम कोङ्गुणि महाधिराज दिया गया है। लु० राइस महोदय इस

१. भास्कर आनन्द सालेतोरे, मेडीवल जैनिज्म, पृष्ठ ९-१०

अविनीत का उत्तराधिकारी एवं पुत्र दुर्विनीत संस्कृत और कन्नड भाषा का बड़ा विद्वान् था। उसे एक ताम्रपत्र में 'शब्दावतारकार, देवभारतीनिबद्ध बृहत्कथा' आदि कहा गया है। राइस महोदय एवं डा० सालेतोरे आदि विद्वान् इस पद की व्याख्या कर यह सूचित करते हैं दुर्विनीत जैन वैय्याकरण पूज्यपाद का शिष्य था और उसने पूज्यपाद द्वारा लिखे शब्दावतार को कन्नड भाषा में परिवर्तित किया था[1]। उसने भारवि के किरातार्जुनीय काव्य के १५ सर्गों पर संस्कृत टीका भी लिखी थी (१२१-१२२)। इसके समय का उल्लेख किया जा चुका है। हां, इसके समकालीन कोई जैन लेख हमारे संग्रह में नहीं हैं।

इसके बाद इस वंश के राजाओं का वर्णन ई० सन् ७५० के लेख नं० ११६ तथा बाद के लेखों (१२०-१२२) में मिलता है। इससे ज्ञात होता है कि गङ्ग वंश एक स्वतन्त्र राज्य था, उसने किसी की पराधीनता स्वीकार न की थी। इन लेखों से दुर्विनीत के बाद के नरेशों—मुष्कर, श्रीविक्रम, भूविक्रम, शिवमार प्रथम (नवकाम) श्रीपुरुष, शिवमार द्वितीय एवं मारसिंह प्रथम तक वर्णन मिलता है। लेख नं० १२१ और १२२ में इन राजाओं की राजनीतिक सफलताओं और सामरिक विजयों का उल्लेख है।

शिवमार द्वितीय के पुत्र मारसिंह प्रथम के सम्बन्ध में उसके समकालीन लेख नं० १२२ से ज्ञात होता है कि ई० सन् ७६७ में वह युवराज ही था। उसके राज्यकाल का ऐसा कोई लेख नहीं मिला जिससे कहा जाय कि वह राजा हो सका हो।

इसके बाद ईस्वी सन् ७६७ से ८८६ तक इस वंश का कोई लेख इस संग्रह में नहीं आ सका।

मण्णे से प्राप्त सन् ८८२ ई० के एक लेख (१२३) से ज्ञात होता है कि राष्ट्रकूट गोविन्द तृतीय के समय में राष्ट्रकूट वंश दूसरे वंश की प्रतियोगिता में

---

[1] मेडीवल जैनिज्म, पृष्ठ १६–२३।

ऊपर उठ गया था। उसने गङ्गों को बहुत समय से पराधीन देख उन्हें मुक्त किया पर उनके उद्धत स्वभाव के कारण पुनः बांध दिया। गङ्ग वंश के पराधीन होने की बात सन् ८६० के कोन्नूर से प्राप्त एक लेख (१२७) से भी ज्ञात होती है। इतिहासज्ञों का अनुमान है कि गङ्ग वंश के इन बुरे दिनों में शिवमार द्वितीय उक्त वंश की गद्दी पर था। उसने राष्ट्रकूट वंश की अधीनता मान ली थी। इस राजा के सम्बन्ध में लेख नं० १८२ में लिखा है कि यह राष्ट्रकूट नरेश अमोघवर्ष प्रथम (८१४-८७७ ई०) का पञ्चमहाशब्दधारी महामण्डलेश्वर था। इसने कल्भावो में एक जैन मन्दिर बनवाकर उसके लिए एक गांव दान में दिया था।

इसके बाद भी जैनधर्म की परम्परा इस वंश के नरेशों में बराबर चलती रही। लेख नं० १३१ से ज्ञात होता है कि सन् ८८७ में सत्यवाक्य कोंगुणिवर्मा ने अपने राज्याभिषेक के १८ वें वर्ष में एक जैन मन्दिर के उद्देश से भट्टारक सर्वनन्दि के लिए १२ गांव दान में दिए थे। इतिहासज्ञ इस राजा को राचमल्ल द्वितीय मानते हैं जिसे राष्ट्रकूट नृप कृष्ण द्वितीय ने हराया था। इस लेख में और इसके बाद के लेखों में इस वंश की राजधानी का नाम कुवलालपुर (वर्तमान कोलार) और किले का नाम उच्च नन्दगिरि नाम दिया गया है। लेख नं० १३८ से विदित होता है कि सत्यवाक्य (राचमल्ल द्वितीय) तथा उनके भतीजे एरेयप्परस (चतुर्थ) ने कुमारसेन भट्टारक को दान दिया था। ले० नं० १३६ के अनुसार एरेयप्परस के पुत्र नीतिमार्ग अर्थात् राचमल्ल तृतीय का राज्य उत्तरोत्तर बढ़ रहा था। उसने कनकगिरि तीर्थवसदि को दुगुना कर भट्टारक कनकसेन को दान दिया।

सूदी से प्राप्त सन् ६३८ का एक लेख (१४२) इस वंश के इतिहास की दृष्टि से बड़े महत्त्व का है। इसमें गंगवंश की आदि से लेकर बूतुग द्वितीय तक सारे राजाओं की वंशावली दी गई है तथा कहीं कहीं उनके राजनीतिक महत्त्व के कार्यों का भी उल्लेख किया गया है। इस लेख में लिखा है कि बूतुग द्वितीय ने अपनी पत्नी द्वारा निर्मापित एक जैन मन्दिर के लिए कुछ भूमि दान में दी।

बूतुग, राचमल्ल तृतीय का भाई एवं उत्तराधिकारी था, तथा राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण तृतीय अकालवर्ष (९३८-९६६ ई०) का बहनोई और सामन्त राजा था।

बूतुग द्वितीय का पुत्र मारसिंह तृतीय इस वंश का बड़ा प्रतापी राजा हुआ है। लेख नं० १४६ और १५२[1] में इसकी जो अनेक उपाधियाँ दी गई हैं और उसके लिए जो प्रशंसात्मक वाक्य प्रयुक्त हुए हैं उनसे इसके प्रतापी होने में कोई संदेह नहीं रह जाता। लेख नं० १४६ के अनुसार उसने पुलिगेरे नामक स्थान में एक जिन मन्दिर बनवाया जो कि इसके नाम पर 'गंगकंदर्प जिनेन्द्र मन्दिर' कहलाता था। लेख न० १५२ के उल्लेखानुसार इसने अनेक पुण्य कार्य किए थे, और जैन धर्म के उत्थान में बड़ा योग दिया था। इसी लेख में उसकी अनेक सामारिक विजयों का उल्लेख है। उक्त लेख के अनुसार इस राजा ने अन्त में राज्य का परित्याग कर अजितसेन भट्टारक के समीप तीन दिवस तक सल्लेखना व्रत का पालन कर बंकापुर में देहोत्सर्ग किया था। यह राजा राष्ट्रकूट नरेशों का महासामन्त था और इसने कृष्ण तृतीय के लिए अनेक देश जीत कर दिये थे तथा इन्द्र चतुर्थ का राज्याभिषेक कराया था। इसका और इसके बेटे राचमल्ल चतुर्थ का मंत्री और सेनापति प्रसिद्ध चामुण्डराय था।

राचमल्ल चतुर्थ के समय का केवल एक लेख (१५४) प्रस्तुत संग्रह में है। उसने श्रवणबेल्गोल निवासी श्रीमत् अनन्तवीर्य के लिए पेर्गादूर नामक ग्राम तथा कुछ और दान दिये थे। इसके राज्यकाल में सेनापति चामुण्डराय ने श्रवणबेल्गोल स्थान में बाहुबलि की एक विशालमूर्ति का निर्माण कराया था।

गंग वंश के राजाओं में अन्तिम उल्लेखनीय नाम है रक्कसगंग पेर्म्मानडि सत्यमल्ल पंचम का जो कि सन् ९८४ में सिंहासनारूढ हुआ था। उसका असली नाम अरुमुलि देव था। वह बूतुग द्वितीय की दूसरी पत्नी रेवकन्निम्मदि से पुत्र वासव का पुत्र था। इसने अपनी कन्याओं के विवाह द्वारा पल्लवों

[1] शिलालेख संग्रह, प्रथम भाग, लेख नं० ३८.

और शान्तरवंश से संबन्ध स्थापित किया था। हुम्मच से प्राप्त लेख नं० २१३ से विदित होता है कि नन्नि आदि शान्तर राजकुमारों की अभिभाविका प्रसिद्ध जैन महिला चट्टल देवी इसी की पुत्री थी। इसके गुरु द्रविड संघ के विजय देव भट्टारक थे। इस राजा ने अपने वंश की गिरती हुई हालत को सुधारने का प्रयत्न किया पर सफल न हो सका।

यद्यपि इस वंश का अन्त सन् १००४ में राज राज चोल प्रथम की लड़ाई में हो गया, तो भी यह यत्र तत्र शाखाओं के रूप में जीवित बना रहा।

ऊपर निर्दिष्ट इस वंश के लेखों के अतिरिक्त दूसरे वंश के लेखों (नं० १७२, २२२, २५१, २५३, २६७, २७७, २९९, ३१४, ४३१) में गंगवंश के अनेकों महामण्डलेश्वरों एवं राजाओं का नाम आता है। ले० नं० २६७, २७७ एवं २९९ में तो इस वंश की प्रारम्भ से अन्त तक की वंशावली दी गई है, पर पीछे के राजाओं के सम्बन्ध में बहुत ही कम बातें मालुम होती हैं जिनसे क्रमबद्ध इतिहास नहीं लिखा जा सकता।

प्रस्तुत शिलालेख संग्रह के देखने से इस बात में तनिक भी सन्देह नहीं रह जाता कि इस वंश के राजा प्रारम्भ से ही जैन धर्म और साहित्य के उपासक एवं संरक्षक साथ ही अपनी उदारनीति के कारण दूसरे सम्प्रदायों को भी दान आदि द्वारा संरक्षण प्रदान करते थे। इस वंश के संरक्षण में जैन धर्म ने अपना स्वर्णयुग देखा है।

२. कदम्बवंशः—प्रस्तुत संग्रह में कदम्ब वंश से सम्बन्धित १० लेख (९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०२, १०३, १०४ और १०५) संग्रहीत हैं जिनमें कतिपय तो संस्कृत भाषा की सुन्दर काव्यात्मक शैली के नमूने हैं। यद्यपि इन लेखों में कोई काल-निर्देश नहीं है पर जिन राजाओं के ये लेख हैं उनका समय अन्य प्रमाणों से ज्ञात होता है इसलिए हमें इन्हें लगभग सन् ३९९ से ५५० के भीतर के मानना चाहिए।

इन लेखों से कदम्ब नरेशों के गोत्रादि विदित होते हैं। तदनुसार वे मानव्य गोत्र एवं हारितीपुत्र अंगिरस के वंशज तथा काकुस्थान्वयी थे। यद्यपि यह वंश

ब्राह्मणधर्मानुयायी था पर इसके कतिपय नरेशों की धार्मिक नीति बड़ी ही उदार थी और कुछ तो जैनधर्म प्रतिपालक भी थे। इस वंश का आदि नरेश मयूरशर्मा माना जाता है पर उपर्युक्त लेखों में उसका तथा उसके बाद के चार नरेशों का नाम नहीं दिया गया। प्रस्तुत लेखों में इस वंश के पांचवें नरेश काकुत्स्यवर्मा से ही वंश परम्परा का उल्लेख है।

काकुत्स्यवर्मा के समय का केवल एक लेख (९६) अबतक उपलब्ध हुआ है। इसमें काकुत्स्य वर्मा को कदम्बयुवराज लिखा है तथा उल्लेख है कि उसने ८० वें वर्ष में अपने एक जैन सेनापति श्रुतकीर्ति के लिए अर्हन्तों के खेट ग्राम में, बदोवर क्षेत्र दान में दिया था। लेख के ८० वां वर्ष को इतिहासज्ञ गुप्त संवत् का मानते हैं। इस मान्यता का आधार यह है कि कदम्बों का अपना कोई संवत् नहीं चला था तथा काकुत्स्यवर्मा की कुछ कन्याओं में से एक का विवाह गुप्त नरेश चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य द्वितीय (सन् ३७५-४१५ ई०) के एक पुत्र से हुआ[1] था। गुप्त संवत् के लेखों के अनुसार युवराज काकुत्स्यवर्मा का समय ३१९ +८०=३९९ ई० होना चाहिए। इसके बाद काकुत्स्यवर्मा ने राजा के रूप में कुछ वर्ष अवश्य राज्य किया होगा। हम गंग अविनीत के सम्बन्ध में लिख आये हैं कि उसे काकुत्स्यवर्मा की एक पुत्री विवाही गई थी। समय की दृष्टि से अविनीत (लग० सन् ४०० ई० के बाद) और काकुत्स्यवर्मा प्रायः समकालीन भी थे। काकुत्स्य वर्मा पलासिका में राज्य करता था, पर उसके पुत्र और प्रपौत्र वैजयन्ती से राज्य करते थे। सम्भव है पलासिका, कुछ समय के लिये उनसे छिन गई थी।

काकुत्स्यवर्मा का पुत्र शान्तिवर्मा था (९९) उसके सम्बन्ध का इस संग्रह में कोई लेख नहीं है। ले० नं० ९९ में इसके सम्बन्ध में लिखा है कि जैसे दुर्जन किसी स्त्री को बलात् खींचता है उसी तरह उसने शत्रु के गृह से लक्ष्मी को आकृष्ट [illegible] था। यह उल्लेख उसके किसी संघर्ष का द्योतक है। उसका बेटा मृगेश

---

[1] दि० च० सरकार, सक्शेसर आफ़ सातवाहनाज, पृष्ठ २५६

वर्मा हुआ जिसके राज्य काल के तीन लेख (९७, ९८, ९९) प्रस्तुत संग्रह में हैं। ले० नं० ९७ से ज्ञात होता है कि उसने अपने राज्य के तीसरे वर्ष में अर्हन्तदेव के अभिषेक, उल्लेपन एवं पूजनादि के लिए भूमिदान किया था। उसने अपने राज्य के चतुर्थ वर्ष में एक गाँव को तीन भागों में विभाजित कर एक भाग अर्हन्महाजिनेन्द्र के लिए, दूसरा भाग श्वेताम्बर श्रमण संघ तथा तीसरा भाग दिगम्बर श्रमण के उपभोग के लिए दान में दिया था (९८)। आठवें वर्ष में उसने पलाशिका नामक स्थान में एक जिनालय बनवाकर ३३ निवर्तन प्रमाण भूमि को यापनीयों के लिए तथा निर्ग्रन्थ सम्प्रदाय के कूर्चकों के उपभोग के लिए दान में दे दिया (९९)। ले० नं० ९९ में उसे एक धर्मविजयी नृप लिखा है। यह लेख राजनीतिक इतिहास की दृष्टि से महत्व का है। इसमें उसे उन्नत गंग कुल को नष्ट करने वाला तथा पल्लव वंश के लिए प्रलयाग्नि लिखा है[1]। इस लेख से ज्ञात होता है मृगेशवर्मा पलाशिका से राज्य कर रहा था।

मृगेशवर्मा के तीन बेटे थे रविवर्मा, भानुवर्मा और शिवरथ। उनमें रविवर्मा उसका उत्तराधिकारी हुआ। उसके राज्यकाल के तीन लेख (१००, १०१, १०२) इस संग्रह में हैं। ले० नं० १०० के अनुसार सेनापति श्रुतकीर्ति के पौत्र जयकीर्ति ने कदम्ब राजाओं द्वारा परम्परा से प्राप्त पुरुखेटक ग्राम को रविवर्मा की आज्ञा से अपने माता पिता के कल्याणार्थ यापनीय संघ के कुमारदत्त प्रमुख आचार्यों को दान में दे दिया। ले० नं० १०१ राजनीतिक इतिहास की दृष्टि से महत्व का है। इसमें लिखा है कि विष्णुवर्मा प्रभृति राजाओं को नष्ट कर तथा कांचीपति चण्ड-दण्ड को पराजित कर रविवर्मा पलाशिका में समवस्थित था। इतिहासज्ञ इस लेख के विष्णुवर्मा को काकुत्स्थवर्मा के द्वितीय पुत्र कृष्णवर्मा (प्रथम) का इस नाम वाला ज्येष्ठ पुत्र मानते हैं, जिसने सम्भव है, मुख्य शाखा के विरुद्ध विद्रोह खड़ा किया

---

१. इस लेख में गंगकुल के जिस नरेश से मतलब है वह पेल्लर शाखा का गंग नृप अच्युतवर्मा या माधव प्रथम होना चाहिये। पल्लव नृप को सिंहवर्मा का पुत्र स्कन्दवर्मा होना चाहिये। (सक्सेसर आफ सातवाहनाज, पृष्ठ २६४)।

था; तथा काञ्चीपति चण्डदण्ड को नन्दिवर्मा पल्लव या उसका कोई एक उत्तराधिकारी मानते हैं[1]। इस ले० के अनुसार दामकीर्ति (श्रुतकीर्ति का पुत्र) के अनुज श्रीकीर्ति ने अपनी माता के कल्याणार्थ अपने स्वामी रविवर्मा से चार निवर्तन भूमि लेकर जिनेन्द्र के लिए दान में दी। ले० नं० १०२ से ज्ञात होता है कि रविवर्मा के ११ वें राज्य वर्ष में उसके अनुज भानुवर्मा से किसी पण्डर भोजक ने १५ निवर्तन भूमि प्राप्त कर जिनेन्द्र के लिए दान में दे दी। रविवर्मा का राज्यकाल साधारणतः सन् ४७८ से ५१३ ई० के लगभग माना जाता है।

रविवर्मा का उत्तराधिकारी उसका पुत्र हरिवर्मा हुआ। इसके राज्य के दो लेख (१०३–१०४) इस संग्रह में हैं। ले० नं० १०३ से ज्ञात होता है कि उसने अपने राज्य के चतुर्थ वर्ष में अपने चाचा शिवरथ के उपदेश से पलाशिका में सिंह सेनापति के पुत्र मृगेश द्वारा निर्मापित जैन मन्दिर की अष्टाह्निका पूजा के लिए तथा सर्व संघ के भोजन के हेतु कूर्चकों के वारिषेणाचार्य संघ के हाथ में चन्द्रक्षान्त को प्रमुख बनाकर वसुन्तवाटक ग्राम दान में दिया। इसी तरह ले० नं १०४ से ज्ञात होता है कि उक्त नरेश ने अपने राज्य के पांचवें संवत्सर में सेन्द्रक राजा भानुवर्मा की प्रार्थना पर अरिष्टि नामक दूसरे श्रमण संघ के लिए मरदे नामक ग्राम दान में दिया। हरिवर्मा का राज्य काल सन् ५१३ से ५३४ ई० में माना जाता है।

कदम्बों की एक शाखा और थी जिसके कुछ नरेशों ने मुख्य शाखा से विद्रोह किया था यह हमें ले० नं० १०१ से ज्ञात होती है। इस शाखा से सम्बन्धित इस संग्रह में केवल एक लेख (१०५) है। जो कि कृष्णवर्मा प्रथम के राज्यकाल का है। इतिहासज्ञों ने इस कृष्णवर्मा को शान्तिवर्मा का अनुज एवं काकुत्थवर्मा का पुत्र माना[2] है। ले० नं० १०५ में उसके अश्वमेधयाजिन्, समरार्जित विपुल ऐश्वर्य, एकातपत्र आदि विशेषण दिये हैं जो कि इसके प्रताप

---

१. सक्शेसर आफ सातवाहनाज, पृष्ठ २७२–२७३।

२. सक्शेसर आफ सातवाहनाज, पृष्ठ २८२।

ले० नं० ६० के अनुसार उसने अपने राज्य के १३ वें वर्ष में आचार्य वारदेव[1] को सम्मति से मूलसंघ द्वारा प्रतिष्ठापित जिनालय के लिए कुछ भूमि और कुमारपुर गाँव दान में दिया था।

माधव द्वितीय का पुत्र एवं उत्तराधिकारी कोङ्गुणिवर्म धर्ममहाधिराज अविनीत था। ले० नं० ६४ में इसके प्रतापी होने का वर्णन है। लेख से ज्ञात होता है कि यह जैनधर्मानुयायी था। इसने अपने गुरु परमार्हत विजयकीर्ति के उपदेश से अपने राज्य के प्रथम वर्ष में ही मूलसंघ के चन्द्रनन्दि आदि द्वारा प्रतिष्ठापित उरनूर के जैन मन्दिर के लिए एक गाँव प्रदान किया था तथा एक दूसरे जिनमन्दिर के लिए चुंगी से प्राप्त धन का चतुर्थ भाग दान में दिया था। लु० राइस महोदय उक्त लेख का समय सन् ४२५ के लगभग मानते हैं। यदि उनका यह अनुमान सच है तो कहना होगा कि अविनीत सन् ४२५ के लगभग गद्दी पर बैठा था। अविनीत ने बहुत समय तक शासन किया था क्योंकि उसके बेटा दुर्विनीत का समय अनेक प्रमाणों के आधार पर लगभग सन् ४८० और ५२० ई० के बीच बैठता है[2]। अविनीत जैनधर्मानुयायी था यह बात मर्कारा से प्राप्त ताम्रपत्रों (६५) से भी सिद्ध होती है[3]।

---

१. जैन धर्म के केन्द्र प्रकरण में हमने इन वीरदेव और सोनभण्डार के वैरदेव मुनि में साम्य स्थापित किया है।

२. प्रो० ज्योतिप्रसाद जैन, 'गङ्गनरेश' दुर्विनीत का समय', जैन एन्टीक्वेरी, भाग १८, अंक २, पृष्ठ १–११।

३. मर्कारा से प्राप्त ताम्रपत्र असली नहीं है क्योंकि उनमें पश्चात्कालीन अकाल-वर्ष पृथ्वीवल्लभ (राष्ट्रकूट नरेश) का निर्देश है तथा जो आचार्यपरम्परा दी गई है वह ई० ६–१० वीं शताब्दी की मालुम होती है। लेख में सम्-योल्लेख के साथ यह निर्देश नहीं है कि वह किस (शक या विक्रम) संवत् का है।

आदि मण्डलीक राजाओं को दण्डित किया था। लेख का उद्देश्य है कि उक्त नरेश के शासनकाल में सेन्द्रकवंशी सामन्त सामियार ने अलक्तक नगर में एक जैन मन्दिर बनवाया था और राजाज्ञा लेकर चन्द्र ग्रहण के समय कुछ जमीनें और गाँव दान मे दिये। इस लेख के समय के सम्बन्ध में इतिहासज्ञ एकमत नहीं है। डा० रा० गो० भण्डारकर प्रभृति विद्वानों की धारणा है कि पुलकेशि प्रथम के सिंहासनारूढ होने का समय ई० सन् ५५० से पहले नहीं हो सकता, पर यह लेख उस नरेश के राज्यकाल को ६२ वर्ष पहले ले जाता है। जो हो, इस लेख में पुलकेशि प्रथम के वंश गोत्रादि के निर्देश के अतिरिक्त पितामह का नाम जयसिंह और पिता का नाम रणराग दिया गया है। ले० नं० १०६ से ज्ञात होता है कि रणराग के शासनकाल में उसके एक सेन्द्रक सामन्त दुर्ग-शक्ति ने पुलिगेरे के प्रसिद्ध शंख जिनालय के लिए भूमिदान दिया था।

पुलकेशि प्रथम का उत्तराधिकारी उसका बेटा कीर्तिवर्मा प्रथम था। उसके शासन काल के एक लेख (१०७) के कन्नड अंश से ज्ञात होता है कि कीर्ति वर्मा ने कुछ सरदारों के निवेदन पर जिनेन्द्र मन्दिर के पूजा विधान के लिए कुछ खेत प्रदान किये थे। इसी तरह उक्त लेख के संस्कृत अंश से ज्ञात होता है कि उसने अपने सरदारों द्वारा निर्मापित जिनालय एवं दानशाला आदि के लिए भी कुछ खेतों का दान दिया था।

कीर्तिवर्मा प्रथम का बेटा पुलकेशि द्वितीय हुआ जिसके काल का एक प्रसिद्ध लेख एहोले (१०८) से प्राप्त हुआ है, जिसे कविता के क्षेत्र में कालिदास एवं भारवि की कीर्ति पाने वाले जैन कवि रविकीर्ति ने रचा था। भारतवर्ष के तत्कालीन राजनीतिक इतिहास जानने के लिए यह लेख बड़े महत्त्व का है। इसमें पुलकेशि द्वितीय के पिता कीर्तिवर्मा और चाचा मंगलीश की सामरिक विजयों के उल्लेख के बाद पुलकेशि द्वारा राज्य प्राप्ति और उसकी विस्तृत दिग्विजय का वर्णन मिलता है। उक्त लेख के अनुसार पुलकेशि उत्तर भारत के सम्राट् हर्षवर्धन का समकालीन था और उसने दक्षिण की ओर बढ़ते हुए हर्ष का ह उत्साह) विगलित कर दिया था। लेख के अन्त में लिखा है कि प्रतापी पुल

केशि के आश्रित कवि रविकीर्ति ने पाषाण का एक जैन मन्दिर शक सं० ५५६ में बनवाया था।

इस वंश के अन्य ले० नं० १११, ११३, ११४ से ज्ञात होता है कि चालुक्य नरेश प्रारम्भ से लेकर जैन धर्म और उसके उपास्य स्थानों को संरक्षण देते आये हैं। ले० नं० १११ पुलकेशि द्वितीय के पौत्र विनयादित्य के राज्य-काल का है और नं० ११३ विजयादित्य तथा नं० ११४ विक्रमादित्य द्वितीय के राज्यकाल का है। इनसे विक्रमादित्य द्वितीय तक की वंशावली के अतिरिक्त हमें इन राजाओं के राजनीतिक इतिहास की कोई सूचना नहीं मिलती। ये लेख छोटे दान पत्र के रूप हैं। ले० नं० ११३ से मालुम होता है कि विजयादित्य ने अपने पिता के पुरोहित उदय देव पण्डित अर्थात् निरवद्य पण्डित को एक गाँव दान में दिया था। इसी तरह ११४ वें लेख से मालुम होता है कि विक्रमादित्य द्वितीय ने पुलिगेरे नगर में धवल जिनालय की मरम्मत एवं सजावट करायी थी। तथा मूलसंघ देवगण के विजयदेव पण्डिताचार्य के लिए जिनपूजा प्रबन्ध के हेतु भूमिदान दिया था।

विक्रमादित्य द्वितीय के बाद चालुक्य कुल के बुरे दिन आते हैं। यह बात हमें ले० नं० १२२, १२३, १२४, एवं १२७ से सूचित होती है। गंग और राष्ट्रकूट राजाओं ने इस साम्राज्य को तहस नहस कर दिया और लगभग २०० वर्षों तक यह फिर न पनप सका। इस बीच काल में इसका स्थान राष्ट्रकूट वंश को मिला।

इस राजवंश का इतिहास पढ़ने से मालुम होता है कि सन् ९७४ के आस पास तैलप द्वितीय ने इस वंश का पुनरुद्धार किया तथा कल्याणी नामक स्थान को राजधानी बनाया। नूतन शक्ति प्राप्त इस वंश के कतिपय राजाओं ने यद्यपि उतने उत्साह के साथ तो नहीं, फिर भी जैनधर्म की यथाशक्ति सेवा की। कवि-चरिते नामक ग्रन्थ से मालुम होता है कि तैलप द्वितीय महान् कन्नड जैन कवि रत्न का आश्रयदाता था। यह धारा नरेश मुंज और भोज का समकालीन था।

इसके हाथ ही मुंज की मृत्यु हुई थी[1]।

इसका पुत्र और उत्तराधिकारी सत्याश्रय इरिव वेडेंग हुआ जिसने सन् ९९७ से १००९ ई० तक शासन किया। इस नरेश के जैन गुरु द्रविडसंघ कुन्दकुन्दान्वय के विमलचन्द्र पण्डित देव थे (१६६)।

सत्याश्रय के दो उत्तराधिकारियों के सम्बन्ध में जैन लेखों से हमें विशेष कुछ नहीं विदित होता, पर जयसिंह तृतीय के सम्बन्ध में कुछ विवाद है। इस नरेश का राज्य सन् १०१५ से १०४२ ई० तक रहा। यह तैलप द्वितीय का पौत्र एवं सत्याश्रय का भतीजा था। कुछ विद्वानों का विश्वास है कि इसने अपनी पत्नी के प्रभाव में धर्म परिवर्तन कर वीर शैवमत अपना लिया था और वसवपुराण के कथनानुसार[2] उसकी पत्नी ने जैन श्रावकों को अनेक प्रकार की क्षति पहुँचाई थी। कुछ इतिहासज्ञों का यह अनुमान है कि यह नरेश अनेक जैन विद्वानों का आश्रयदाता था[3]। इसके राज्य में अनेक हिन्दू और जैन विद्वान् हुए हैं। उसके अनेक विरुदों में एक था मल्लिकामोद। श्रवणबेल्गोल के एक लेख[4] से ज्ञात होता है कि बलिपुर के मल्लिकामोद शान्तीश के चरण अर्चक थे मलधारि गुणचन्द्र। संभव है उक्त मन्दिर को इस राजा ने बनवाया हो या इसके नाम पर किसी दूसरे ने। जयसिंह तृतीय के उत्तराधिकारी सोमेश्वर प्रथम के राज्य में भी उक्त मन्दिर की प्रसिद्धि का उल्लेख ले० नं० २०४ में है।

इस राजा के समय के प्रमुख विद्वान् थे द्रविडसंघ के वादिराज, दयापाल एवं पुष्पसेण सिद्धान्त देव। लेख नं० २१३, २१६ एवं २४८ से ज्ञात होता है कि वादिराज की उपाधि षट्तर्कमुख थी। इनकी एक उपाधि जगदेकमल्लवादि भी थी जिसके सम्बन्ध में कतिपय लेखों से ज्ञात होता है कि यह उपाधि जयसिंह

---

१. इण्डियन एण्टिक्वेरी, भाग २१, पृष्ठ १६७-६८.
२. शर्मा, जैनिज्म एण्ड कर्नाटक कल्चर, पृष्ठ २५.
३. सालेतोरे, मेडीवल जैनिज्म, पृष्ठ ४३.
४. जैन शिलालेख संग्रह, प्रथम भाग, लेख नं० ५५, श्लोक नं० २०.

तृतीय जगदेकमल्ल ने अपने दरबार में किसी वादविजय के प्रसंग में उन्हें दी थी[1]।

उक्त नरेश का पुत्र एवं उत्तराधिकारी सोमेश्वर प्रथम हुआ जिसकी उपाधियाँ आहवमल्ल एवं त्रैलोक्यमल्ल थीं। इसने सन् १०४२ से १०६८ ई० तक राज्य किया। इसके राज्यकाल के ६ लेख (१८१, १८६, १८७, १६८, २०३, २०४) प्रस्तुत संग्रह में है, जो कि इसके अधीन नरेशों के हैं तथा जिनमें इसे अधिराजा के रूप में स्मरण किया गया है। लेख नं० १८६ से ज्ञात होता है कि इसकी रानी केतलदेवी के अधीन कर्मचारी चांकिराज ने त्रिभुवनतिलक जिनालय में तीन वेदियाँ बनवाईं और उक्त राजा और रानी की आज्ञा से अनेक प्रकार के दान दिए। ले० नं० २६०[2] से ज्ञात होता है कि इस आहवमल्ल विरुदधारी नृप ने अजितसेन भट्टारक को 'शब्दचतुर्मुख' की उपाधि दी थी। ले० नं० २१३ और ३२६ में अजितसेन भट्टारक की अन्य उपाधियों—वादीभसिंह और तार्किकचक्रवर्ती-के साथ उक्त उपाधि का भी उल्लेख है। ले० नं० २०४ सोमेश्वर प्रथम के राज्य के अन्तिम वर्ष का है इसमें उक्त राजा के राजनीतिक प्रभाव का अच्छी तरह परिचय दिया गया है तथा लिखा है कि इसने शक स० ६६० में प्रधान योग का उत्सव कर तुंगभद्रा में जलसमाधि ले ली थी। इसी लेख में इस नरेश के ज्येष्ठ पुत्र सोमेश्वर (द्वितीय) भुवनैकमल्ल का उल्लेख है, जिसका कि राज्य उसी वर्ष से प्रारम्भ होता है।

सोमेश्वर द्वितीय ने भी जैन धर्म का संरक्षण किया था। ले० नं० २०५ में यह नरेश रट्ट राजाओं के अधिपति राजा के रूप में स्मरण किया गया है। ले० नं० २०७ से ज्ञात होता है कि इस नरेश ने सन् १०७४ ई० में शान्तिनाथ मन्दिर के लिए मूलसंघान्वय तथा क्राणूर गण के कुलचन्द्र देव को नागरखण्ड में भूमिदान दिया था। ले० नं० २१० में प्रसंगवश भुवनैकमल्ल शान्तिनाथदेव मन्दिर

१. लेख नं० २१३ तथा ले० नं० २६० (प्रथम भाग का ५४ वां लेख)
२. जैन शिल लेख संग्रह, प्रथम भाग, ले० ५४

का उल्लेख है। संभव है भुवनैकमल्ल विरुदधारी उक्त नृप ने वह मन्दिर बनवाया था या उसमें शान्तिनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित करायी थी।

सोमेश्वर द्वितीय के बाद उसके भाई विक्रमादित्य षष्ठ का राज्य सन् १०७६ से ११२६ तक आता है। यह एक बड़ा प्रतापी राजा था। इसके चरित्र को चित्रित करते हुए प्रसिद्ध कवि बिल्हण ने विक्रमाङ्कदेवचरित काव्य लिखा है। इस संग्रह से इस राजा के राज्यकाल के २२ लेख संगृहीत हैं[1]। ये भी इस नरेश के अधीन सामन्त राजाओं द्वारा दानपत्र के रूप में हैं जो प्रायः सामन्त राजाओं के वंशों पर प्रकाश डालते हैं। इन लेखों में कुछ तो गंग वंश से, कुछ शान्तरों से कुछ रट्ट वंशसे, तथा कुछ होय्सल वंश से और कुछ सेना पतियों से संबंधित हैं। ये सब सामन्त घराने जैन धर्म प्रतिपालक थे और अपने लेखों तथा दानपत्रों में त्रिभुवनमल्ल विक्रमादित्य षष्ठ को सम्राट् के रूप में स्मरण करते हैं। ये लेख इस नरेश के द्वितीय वर्ष से ४८ वें वर्ष तक के हैं। ले० नं० २१७ से ज्ञात होता है कि उक्त नरेश ने अपने द्वितीय वर्ष में धारानाथ (परमार), सौराष्ट्र, अंग, कलिङ्ग, मगध आन्ध्र, अवन्ति एवं पाञ्चाल को वश में किया था। उसकी एक उपाधि गंगपेर्मा नडि थी क्योंकि उसकी माँ गंग वंश की राजकुमारी थी। उसने चालुक्य गंग पेर्म्मानडि चैत्यालय बनवाया था और एक समय अपने दण्डनाथ के अनुरोध प उस मन्दिर के प्रबन्धादि के लिए एक गांव मूलसंघ, सेनगण और पोगरिगच्छ के रामसेन मुनि को दान में दिया था। हमें कुछ ऐसे लेखों से मालुम होता है जो कि इस संग्रह में नहीं आये, कि इस राजा ने वेल्गोल प्रदेश में कई जिनाल बनवाये थे जिन्हें राजाधिराज चोल ने जला दिया था[2]। श्रवणबेलगोल की कत्तं

---

१. ले० नं० २१३, २१४, २१६, २१७, २१८, २१६, २२१, २२७, २३१ २४३, २४७, २४८, २५१, २५३, २६७, २७३ २७६, २७७, २८०, २८५ २६६, ३०८.

२. सालेतोरेः मेडीवल जैनिज्म, पृष्ठ १६४.

बस्ति से प्राप्त एक लेख[1] से ज्ञात होता है कि इस नरेश ने जैन मुनि वासवचन्द्र को बालसरस्वती की उपाधि दी थी।

ले० नं० २२७ में इसके एक प्रिय पुत्र का नाम जयकर्ण दिया गया है जो कि ज्ञात होता है उसके राज्यकाल में ही दिवंगत हो गया था। ले० नं० २६६ में इसके राज्य का शक सं० १०५४ दिया गया है जो कि ठीक न होने से १०३४ अर्थात् सन् १११२ ई० किया गया है।

विक्रमादित्य षष्ठ का उत्तराधिकारी उसका दूसरा बेटा सोमेश्वर तृतीय भूलोकमल्ल हुआ। इसका राज्यकाल सन् ११२६ से लेकर ११३८ तक है। ले० नं० २१८ (शक सं० १०००=१०७८ ई०) में जो कि विक्रमादित्य षष्ठ के द्वितीय वर्ष का है, भूलोकमल्ल सोमेश्वर का नाम एवं उसकी महाराजाधिराज उपाधि दी गई है। पर इतने पहले अपने पिता के राज्यकाल में उसका इस रूप में होना शंका का विषय है। यह लेख जाली सा मालूम होता है। ले० नं० २६२ इस नरेश के छठवें वर्ष का है जिसमें उल्लेख है कि इसके सामन्त नरेश मारसिंह ने कोडन-पूर्वदवल्लि गांव के पार्श्वनाथदेव की पूजा के लिए बहुत से क्षेत्र दान में दिये थे।

सोमेश्वर तृतीय का उत्तराधिकारी उसका ज्येष्ठ पुत्र पेर्म्मानडिदेवमल्ल हुआ। इसका शासन सन् ११३८-११५१ तक था। इसके शासनकाल के ६ लेख प्रस्तुत संग्रह में हैं जो कि उसके दण्डनायकों एवं सामन्तों से सम्बन्धित हैं। ये सभी दानपत्र के रूप में हैं।

जगदेकमल्ल के बाद इस वंश के राजाओं के ५ और लेख हैं। ३५६ वें लेख (सन् ११५६) में त्रिभुवनमल्ल नाम चालुक्य का उल्लेख या उक्त वर्ष में इस नाम के राजा का अस्तित्व अब तक अन्य स्रोतों से ज्ञात नहीं हुआ। ३५६ वें लेख (सन् ११६१) में भुवनैकराय पेर्म्मानडि का नाम आता है। संभव है यह

---

१. जैन शिलालेख संग्रह, प्रथम भाग, ले० नं० ५५, प्रस्तुत संग्रह का ५६ वां लेख।

भूलोकमल्ल का दूसरा नाम हो जो कि तैल तृतीय का पुत्र था। यह नरेश कलचूरि राजा बिज्जल के अधीन सन् ११६०–६१ में शासन करता था। ले० नं० ४०८ (सन् ११८२) इस वंश की पश्चात्कालीन वंशावली की दृष्टि से बड़े महत्त्व का है। इसमें ले० नं० ३१३ के समान ही चालुक्य वश की वंशावली तैल द्वितीय से दी गई है और जगदेकमल्ल के अनुज नूर्म्मडि तैल का उल्लेख है, तथा लिखा है कि चालुक्य राज्य की लक्ष्मी कलचूरि-तिलक बिज्जल के हाथ आ गई थी। यह नूर्म्मडि तैल, तैलप तृतीय हो था जिसने सन् ११५१–११५६ में राज्य किया था और जिसे बिज्जल कलचूरि ने राज्य से हटा दिया था। ले० नं० ४३५ में इस वंश के अन्तिम नरेश सोमेश्वर चतुर्थ का उल्लेख है जो कि तैलप तृतीय का तीसरा पुत्र था। ये लेख विशेषतः शान्तर, कलचूरि और होय्सल राजाओं से सम्बन्धित हैं। इनके विषय का वर्णन उन राजाओं के साथ किया जायगा।

(ख) पूर्वीय चालुक्यः—इस वंश की एक और शाखा पूर्वीय या वेंगी के चालुक्य नाम से प्रसिद्ध थी। इस शाखा की परम्परा पुलकेशि द्वितीय के भाई कुब्ज विष्णुवर्धन से चलती है। इसने सन् ६१५ से ६२३ ई० तक राज्य किया था। इस वंश के केवल तीन लेख हमारे संग्रह में हैं। ले० नं० १४३ (सन् ६४५) में कुब्ज विष्णुवर्धन से लेकर उस वंश के २३वें राजा अम्म द्वितीय (विजयादित्य षष्ठ) तक की वंशावली दी गई है। यह लेख बड़े महत्त्व का है। इसमें प्रत्येक राजाओं का शासनकाल तथा उत्तराधिकारक्रम अच्छी तरह दिया गया है। इस वंश के कतिपय नरेशों ने जैन धर्म का अच्छी तरह संरक्षण किया था। लेख का विषय है कि कटकाभरण जिनालय की पूजादि के हेतु अम्मराज विजयादित्य ने यापनीय संघ, नन्दि गच्छ के धीरदेव (श्रीमान्दिरदेव) मुनि को मलियपूण्डि नामक ग्राम दान में दिया। इसी तरह ले० नं० १४४ में, जो कि पूर्व लेख के समान ही वंशावली के परिचय की दृष्टि से महत्त्व का है तथा सुन्दर संस्कृत काव्य के रूप में है, उल्लेख है कि अम्मराज ने सर्वलोकाश्रय जिनभवन [illegible]रम्मत आदि के लिए वलहारि गण, अड्डकलि गच्छ के अर्हनन्दि मुनि को

कलुचुम्बरु नामक ग्राम दान में दिया। उक्त लेख में लिखा है कि यह दान पट्टवर्धिक कुल की तिलकभूता गणिकाजन में प्रमुख चामेकाम्बा[1] नामकी दान-दयाशालिनी श्राविका की प्रेरणा से दिया गया था। ले० नं० २१० (सन् १०७६) में चालुक्य चक्रवर्ती विजयादित्यवल्लभ और उसकी बहिन कुंकुमदेवी का उल्लेख है। इस लेख के काल निर्देश को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि उसे इस वंश का विजयादित्य सप्तम होना चाहिये जो कि अपने भतीजे चालुक्य राजेन्द्र द्वितीय (पीछे कुलोत्तुंग चोल नाम से प्रसिद्ध) के अधीन वेंगी का शासक था। उक्त लेख में लिखा है पुरिगेरी में कुंकुमदेवी ने एक जैनमन्दिर बनवाया था और श्रानन्दि पण्डित ने कतिपय खेतों का दान दिया था।

इस वंश की कुछ और स्वतन्त्र शाखायें थीं। उनमें से एक ले० नं० १२४ से मालुम होती है। उक्त लेख में राष्ट्रकूट गोविन्द तृतीय के राज्यकाल (सन् ८१२) में चालुक्य वंशी किसी विमलादित्य नृप का नाम आता है जो कि यशोवर्मन का पुत्र और बलवर्मा का प्रपौत्र था। उसने शनि की बाधा हटाने के लिए अपने जैनधर्मावलम्बी मामा गंगवंशी राचिराज के कहने से एक जैन मन्दिर के लिए एक गाँव दान में दिया था। इस राजा का नाम चालुक्यों की किसी वंशावली में नहीं मिलता। डा० भण्डारकर की मान्यता है कि पीछे ऐसे राजवंशों की कई शाखाएं स्वतन्त्र रूप से राज्य करती थीं।

४. चोलवंश:—दक्षिण भारत के सबसे प्राचीन वंशों में से चोल वंश एक था। समय समय पर इससे अनेक शाखायें निकली थीं। कोङ्गाल्व और निडुगल वंश ऐसे ही शाखाओं में से हैं जिनका परिचय इस भूमिका में दिया गया है। चोलवंश की प्रमुख शाखा के राजाओं का उल्लेख अन्य राजाओं के प्रसंग में जैन लेखों में कई बार आया है जो कि अनुक्रमणिका एवं लेखों से जाना जा सकता है। प्रस्तुत संग्रह में १० वें और ११ वें चोल नरेशों के राज्यकाल

---

१. श्रीराजचालुक्यान्वयपरिवारित पट्टवर्धिकान्वयतिलका। गणिकाजनमुख-कमलद्युमणिद्युतिरिह चामेकाम्बाभूत्।

के ३ लेख हैं जिनसे विदित होता है कि उक्त साम्राज्य में जैनधर्म सुरक्षित था। चोल परिवार के लोग जैन धर्म में रुचि रखते थे।

ले० नं० १६७ दशवें चोल नरेश राजराज प्रथम के राज्य के ८ वें वर्ष का है। इस लेख से ज्ञात होता है कि उसके अधीनस्थ लाटराज वीर चोल ने अपनी जैन पत्नी की प्रार्थना पर तिरुप्पानमलै देवता के पल्लिच्चन्दम् (जैन चैत्यालय) को एक गाँव की आमदनी बाँध दी थी। यह ले० नं० ६६२ ई० का है। इसी तरह ले० नं० १७१ उक्त राजा के २१ वें वर्ष का है। इस लेख में उल्लेख है कि तिरुमलै नामक पवित्र पर्वत पर किसी गुणवीर मामुनिवन् ने अपने उपाध्याय के नाम एक नहर या मोरी बनवायी थी। ले० नं० १७४ राजराज चोल के उत्तराधिकारी राजेन्द्र चोल प्रथम का है। लेख की महत्ता उसके हिन्दी सार में दे दी गई है। लेख में तिरुमलै पर्वत का वर्णन है तथा उसके ऊपर निर्मित कुन्दव्वे जिनालय के लिए दिये दान का उल्लेख है। उक्त जिनालय कुन्दव्वे नामक जैन महिला ने बनवाया था। कुन्दव्वे राजराज चोल की पुत्री एवं राजेन्द्र चोल की बहिन थी। यह पूर्वीय चालुक्य वंश के नरेश विमलादित्य को विवाही गई थी। इतिहासज्ञ मानते हैं कि विमलादित्य (सन् १०११-१०१४ ई०) अपने अन्तिम वर्षों में जैन हो गया[1] था।

५. राष्ट्रकूट वंश:—राष्ट्र कूट वंश के हमारे संग्रह में बहुत गिने चुने लेख संगृहीत हैं, जिनसे इस वंश की उत्पत्ति के सम्बंध में कुछ भी पता नहीं चलता कुछ लोग राष्ट्रकूट शब्द की व्युत्पत्ति रट्ट शब्द से मानते हैं और राष्ट्रकूटों को लट्टलूरपुरवराधीश्वर अर्थात् 'श्रेष्ठ नगर लट्टलूर के स्वामी' मानते हैं। पर रट्ट वंश को स्वतन्त्र माना जाता है और इस संग्रह में उनके अनेकों लेख संगृहीत हैं जिनमें उन्हें भी लट्टलूरपुरवराधीश्वर लिखा है।

राष्ट्रकूटों का राज्य आठवीं शताब्दी के मध्य भाग प्रारम्भ से होता है। इस वंश के ६ वें राजा दन्तिदुर्ग ने चालुक्य कीर्तिवर्मा द्वितीय से राज्य छीन कर राष्ट्र

---

[1] वेंकटरमनय्य ईस्टर्न चालुक्याज आफ वेंगी, पृष्ठ २८८.

कूट साम्राज्य की नींव डाली थी। इस राजा के सम्बंध में कहा जाता है कि इसने महान् आचार्य अकलङ्क का अपने दरबार में सम्मान किया था। श्रवणबेलगोल से प्राप्त एक लेख (२६०) में उल्लेख है कि अकलंक ने साहसतुंग के समक्ष उसकी प्रशंसा कर उसे अपनी विद्वत्ता से परिचित कराया था। इतिहासज्ञों के मत से साहसतुंग, दन्तिदुर्ग (द्वितीय) का ही विरुद था।

उसके उत्तराधिकारी कृष्ण प्रथम (सन् ७६८-७७२) ने चालुक्यों के सारे प्रदेशों को अपने अधीन कर लिया। कृष्ण के पश्चात् गोविन्द द्वितीय और उसके पुत्र ध्रुव ने राज्य किया। इस संग्रह के ले० नं० १२३ में कृष्ण प्रथम से ही वंशावली प्रारम्भ होती है। लेख में कृष्ण का दूसरा नाम बल्लभ दिया गया है और लिखा है कि उसने चालुक्य कुल से लक्ष्मी छीन ली थी। इस लेख के अनुसार उसका पुत्र और हुआ जिसने अपने ज्येष्ठ भाई से लक्ष्मी छीन ली थी। उस की सामरिक विजयों के सम्बन्ध में लिखा है कि उसने गंग, पल्लव, गौड एवं लाट को पराजित किया था। और ध्रुव का द्वितीय नाम था। उसी लेख में उसको निरुपम और कलिवल्लभ, दो उपाधियाँ दी गई हैं।

उक्त लेख में आगे लिखा है कि इसके पुत्र एवं उत्तराधिकारी गोविन्द तृतीय के राज्य भार सम्हालते ही राष्ट्रकूट वंश दूसरों से अलंघनीय हो गया उसने अकेले ही तत्कालीन विख्यात बारह नरेशों की शक्ति को नष्ट कर दिया था, तथा गुर्जर, मालव, विन्ध्याद्रि, पल्लव एवं वेंगी के चालुक्य राजाओं को जीत लिया था, गंगवंशी शिवमार द्वितीय को अपने अधीन कर लिया था। इसका दूसरा नाम प्रभूतवर्ष और निरुपम भी था। इसी लेख में लिखा है कि रणावलोक शौचकम्म देव, गोविन्दराज का बड़ा भाई था। इस कम्मदेव ने अपने भाई राजाधिराज प्रभूतवर्ष की आज्ञा से पेर्व्वडियूर नामक ग्राम को सर्व करों से मुक्त कर महासामन्त श्रीविजय द्वारा निर्मापित मन्दिर के लिए दान में दे दिया। लेख

---

१. जैन शिला ले० प्रथम भाग ले० नं० ५४ (६७). पद्य २१.

२. डा० अ० स० अल्तेकर : राष्ट्रकूट और उनका समय, पृष्ठ ४०६.

नं० २६०[1] में लिखा है कि आचार्य परवादिमल्ल ने अपने नाम की सार्थकता कृष्णराज को समझाई थी। उक्त लेख में साहसतुंग और कृष्ण के बीच एक शत्रुभयंकर विरुद वाले राजा का उल्लेख है। विद्वानों का अनुमान है कि उक्त लेख में तिथिक्रम का व्यतिक्रम किया गया है और उक्त लेख के शत्रु भयंकर को गोविन्द तृतीय होना चाहिए जिसने अपने पराक्रमसे राष्ट्रकूट वंशके गौरवको बढ़ाया था। कृष्ण को कृष्ण द्वितीय होने का अनुमान किया गया है जो कि गोविन्द तृतीय का पूर्ववर्ती नरेश था[2]। लेख नं० १२४ में प्रभूतवर्ष गोविन्द तृतीय के पूर्वज राजाओं की वंशावली उत्तम संस्कृत काव्य में गोविन्द प्रथम से लेकर उस तक दी गई है। इस गोविन्दराज ने अपने गंगवंशीय सामन्त चाकिराज की प्रार्थना पर शक सं० ७३५ में जालमंगल नामक ग्राम को यापनीय संघ के अन्तर्गत नन्दिसंघ के पुन्नागवृक्षमूलगण के अर्ककीर्ति मुनि को दान में दिया था।

प्रस्तुत संग्रह में इस वंश के तीसरे लेख (नं० १२७) में, जो गोविन्द तृतीय के पुत्र अमोघवर्ष प्रथम का है, राष्ट्रकूट वंश की एक वंशावली दी गई है जो कि दूसरी वंशावलियों से कुछ भिन्न है। लेख के हिन्दी सार में यह अन्तर दे दिया गया है। डा० दे० रा० भण्डारकर इस अन्तर को विशेष महत्त्व नहीं देते और इस लेख में वर्णित कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं की ओर संकेत करते हैं इसके पद्य १७–३४ से ज्ञात होता है कि अमोघ वर्ष के समय में अनेक आन्तरिक विद्रोह हुए थे। और सन् ८६० के पहले शाही ताकत को चुनौती देने के लिए कम से कम तीन ऐसे विद्रोह अवश्य हुए थे। पहला उस समय हुआ था जब कि अमोघवर्ष बालक था, दूसरा जब कि वह गुजरात के अपने चचेरे भाइयों से लड़ रहा था और तीसरा इसके कुछ बाद हुआ था। यद्यपि इन विद्रोहों का वह विस्तृत विवरण नहीं दिया गया पर मालुम होता है कि तीसरा विद्रोह बड़ा उग्र

१. जैन शिलालेख प्रथम भाग, ले० नं० ५४.
२. सालेतोरे, मेडीवल जैनिज्म, पृष्ठ ३६.

था और वनवासी के शानक बङ्केय ने समय पर पहुँच कर उस परिस्थिति का सामना किया। जान पड़ता है कि अमोघवर्ष के उत्तराधिकारी कृष्ण द्वितीय ने भी विद्रोहियों का साथ दिया था, पर जब उसने उनका साथ छोड़ दिया तो उस अकेले ने उन्हें नष्ट कर दिया। लेख का उद्देश्य है कि शक सं० ७२० में चन्द्रग्रहण के समय राजा अमोघवर्ष ने बंकेय की महत्त्वपूर्ण सेवा के उपलक्ष्य में, कोलनूर में उसके द्वारा स्थापित जैन मन्दिर के लिए तलेयूर नामक ग्राम तथा कुछ ग्रामों की भूमियाँ दान में दीं। यह बंकेय वह है जिसके नाम से बंकापुर राजधानी बनाई गई थी। इसी बंकेय के पुत्र सामन्त लोकादित्य के समय में जब कि अमोघवर्ष का पुत्र कृष्ण द्वितीय (अकालवर्ष) सार्वभौम था, गुणभद्र कृत उत्तरपुराण की पूजा हुई थी। उत्तरपुराण से हमें मालुम होता है कि अमोघवर्ष परम जैन भक्त था। उसके गुरु महापुराण, जयधवलादि ग्रन्थों के प्रणेता जिनसेनाचार्य थे[1]।

कृष्ण द्वितीय (अकालवर्ष) के राज्य काल का निर्देश करने वाले प्रस्तुत संग्रह में तीन लेख (१३०, १३७, १४०) हैं। १३० वें लेख के अनुसार राष्ट्रवंशीय पृथ्वीराम को प्रमुख अधिपति होने का पद राष्ट्रकूट राजा कृष्ण की अधीनता में मिला था। ऐसा जान पड़ता है कि लेख कृष्णराज के समय में उत्कीर्ण न होकर परवर्ती समय में उत्कीर्ण किया गया है क्योंकि उसमें पृथ्वीराम की ५–६ पीढ़ी बाद के वंशज राजा कन्न के दान का उल्लेख किया गया है। दूसरा लेख (१३७) मूलगुन्द से सन् ९०३ का मिला है। यह लेख अधूरा है इसमें कृष्ण द्वितीय के राज्यकाल में एक जैन मन्दिर के निर्माण एवं भूमिदान का उल्लेख है। ले० नं० १४० से ज्ञात होता है कि सन् ९१२ ई० में भी इस नरेश का राज्य था। इसके नागार्जुन नामक एक सामन्त की पत्नी सामन्त की मृत्यु के बाद राजा की आज्ञा से शासन करती थी और सन् ९१८ में एक बीमारी के कारण उसने समाधिमरण से देहोत्सर्ग किया था।

---

१. जैन साहित्य और इतिहास द्वितीय संस्करण (१९५६), पृष्ठ १५०

ले० नं० १८२ में अमोघवर्ष के उल्लेख के बाद गंगनरेश शिवमार सैगोट्ट का नाम दिया गया है जिससे मालुम होता है कि यह अमोघवर्ष प्रथम (सन् ८१४–८७७ ई०) के समय का है। पर लेख में गलत रूप से शक सं० २६१ दिया गया है और किसी कञ्चरस सैगोट्ट गंग का उल्लेख है जिससे लेख जाली मालुम होता है। फ्लीट महोदय इसके उत्तरार्ध भाग को सच्चा मानते हैं।

कृष्ण तृतीय (अकालवर्ष) के पौत्र इन्द्र चतुर्थ के सम्बन्ध में ले० नं०१६३ (सन् ९८२) से ज्ञात होता है कि वह पोलो के खेल में बड़ा निपुण था। उसने श्रवणबेलगोल में सल्लेखनापूर्वक मरण किया था। इस लेख में इन्द्र के अनेक विशे-ण दिये गये हैं और कहा गया है कि वह गंग गंगेय (बुतुग द्वितीय) का कन्यापुत्र एवं राजचूड़ामणि का दामाद था। ले० नं० १५२[1] से ज्ञात होता है कि राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण तृतीय के लिए गंग नरेश मारसिंह तृतीय ने गुर्जरप्रदेश को जीता था एवं और कृष्ण तृतीय के पौत्र इन्द्र चतुर्थ का राज्याभिषेक किया था। इन लेखों से ज्ञात होता है कि उस काल में इन दोनों राजवंशों में घनिष्टता थी।

६. कलचूरि वंश:—ले० नं० ४०८ से हमें ज्ञात होता है कि चालुक्य नूर्म्मडि तैल (तैल तृतीय) के बाद चालुक्य राज्य की लक्ष्मी कलचूरितिलक बिज्जल के हाथ चली आई। कलचूरि वंश बहुत प्राचीन है इसका उल्लेख हम एहोले के लेख (१०८) में पाते हैं जहाँ चालुक्य मंगलीश द्वारा उनके परास्त होने का उल्लेख है। कलचूरि वंश के अन्य लेखों से तथा इस संग्रह के लेख नं० ४०८, ४३५ से ज्ञात होता है कि ये अपनी उत्पत्ति उत्तर भारत के कालञ्जर नामक स्थान से मानते थे। लेख नं० ४०८ में बिज्जल की शूर वीरता का वर्णन है। उसका भाई मैलुगिदेव था। लेख से बिज्जल के तीन पुत्रों—सोविदेव (राय-मुरारि), शंकम (निःशंकमल्ल), आहवमल्ल (रायनारायण)—और पौत्र कन्दार का नाम एवं परिचय मिलता है। उक्त लेख में लिखा है कि राजा बिज्जल को सताङ्ग सम्पत्ति दिलाने वाला उसका एक जैन सेनापति रेचि था जो

१. जैन शिलालेख, सं० भाग १, ले० नं० ३८।

'वसुधैकबान्धव' कहलाता था। लेख का विषय है कि आहवमल्ल (रायनारायण) कलचूरि के शासनकाल में उक्त सेनापति ने मागुडि गाँव के रत्नत्रय चैत्यालय के लिए भानुकीर्ति सिद्धान्त देव को तलवे गांव दान में दिया था।

लेख नं ४३५ से मालुम होता है कि विज्जल के शासनकाल में वीरशैव मत का बोलबाला था। उक्त मत का आचार्य एकान्तदरामय्य जैनों पर अत्याचार कर रहा था (४३५, ४३६)। यद्यपि कलचूरि जैन धर्मानुयायी थे, उनके शासन पत्रों पर तीर्थंकर की पद्मासन मूर्ति, इन्द्रादि सेवकों के साथ बनायी जाती थी, पर विज्जल समय की गति देखते हुए वीर शैवों की ओर झुका, और कहा जाता है है कि उन्हीं के द्वारा उसकी मृत्यु भी हुई। लेख नं० ४६५ से ज्ञात होता है कि उसके सेनापति रेचि ने उसे छोड़ कर जैन धर्मावलम्बी होय्सल नरेश वीर बल्लाल द्वितीय का आश्रय लिया था। लेख नं० ४४८ में उल्लेख है कि कुन्तल देश से विज्जल के शासन को हटाकर बल्लाल होय्सल ने उसे अपने अधीन कर लिया था। इस तरह दक्षिण भारत में इस वंश का शीघ्र ही अन्त हो गया।

७. होय्सल वंश:—चालुक्यों के पतन के बाद दक्षिण भारत में दो नई शक्तियों का जन्म होता है। ये दोनों अपने को यादव वंश से उत्पन्न मानते हैं। उनमें चालुक्य साम्राज्य के दक्षिण भाग पर अधिकार करने वाले होय्सल थे और उत्तर भाग पर यादव (सेऊण)।

गङ्ग वंश के समान होय्सल वंश के अभ्युदय में जैन प्रतिभा का बड़ा भारी हाथ रहा। जैन गुरुओं ने इस वंश के उत्थान में योग देकर अहिंसा और अनेकान्त की दुन्दुभि को फिर एक बार दक्षिण प्रान्त में बजाया। इस वंश का उत्पत्ति स्थान सोसेवूर (सं० शशकपुर) था जिसे राइस सा० ने वर्तमान अङ्गडि (मुडगेरे तालुका, कडूर जिला, मैसूर राज्य) माना है। अंगडि से इस वंश से सम्बन्धित अनेकों लेख भी प्राप्त हुए हैं। यहीं इस वंश की कुलदेवता वासन्तिका देवी का मन्दिर अब भी विद्यमान है। संभव है यहीं इस वंश की उत्पत्ति से संबंधित एक महत्त्वपूर्ण घटना हुई थी जिसका उल्लेख कतिपय जैन

लेखों में मिलता है। श्रवणबेल्गोल से प्राप्त सन् ११२३ के एक लेख[1] से ज्ञात होता है कि एक समय इस वंश के प्रवर्तक प्रथम पुरुष सल से एक जैन मुनि ने एक कराल व्याघ्र को देखकर कहा कि–पोय्सल–हे सल! इसे मारो। लेख नं० ४५७ के अनुसार यह घटना इस प्रकार है:— कुन्तल आदि देशों का अधिपति, यदुकुल के सल को वनवास देश का मुख्य क्षेत्र दान में देना चाहता था। उस समय सुदत्त मुनिप ने पद्मावती को एक चींते के रूप में प्रकट करवाया। पद्मावती को चींते के रूप में देखते ही उन्होंने सल से कहा— पोय्सल (सल, मारो)। जिस पर उसने चींते को सल (डण्डे) से मारा और देवी पद्मावती के समक्ष उसके साहस का प्रदर्शन कराया। इससे राजा का नाम पोय्सल पड़ा।

इस घटना के उल्लेख से इतना तो मालुम होता है कि सल उस समय एक होनहार सरदार था जैन प्रतिभा को राज्याश्रय से वंचित होते समय यह आवश्यक प्रतीत हुआ कि वह किसी उदीयमान सरदार को आगे बढाये जो जिनधर्म को पुनः संरक्षण प्रदान करे। इतिहास हमें बताता है कि सचमुच ही इस वंश ने अपने अन्तिम दिनों तक जैन धर्म को आश्रय प्रदान किया था।

इस वंश के उद्गम होने के पहले अंगडि एक जैन केन्द्र था यह बात हमें लेख नं० १६६ से ज्ञात होती है। लेख नं० २०१ तथा अन्य लेखों से ज्ञात होता होता है कि इस वंश के शासक अपने को मले परोल गण्ड (पहाड़ी सामन्तों में मुख्य) मानते थे, जिससे मालुम होता है कि वे लोग पहाड़ी जाति के थे। यद्यपि प्रस्तुत संग्रह के लेखों से वंश के प्रारम्भ के तीन नरेश—सल, विनयादित्य प्रथम एवं नृपकाम–के सम्बन्ध में विशेष नहीं मालूम होता है पर अन्यत्र उल्लेखों से अनुमान किया जाता है कि ये तीनों नरेश सुदत्त मुनि के प्रभाव में थे[2]। नृपकाम के सम्बन्ध में ले० नं० ३४७ से ज्ञात होता है कि वह विनयादित्य

---

१. जै० शि० सं० प्रथम भाग, ५६; प्रस्तुत संग्रह का २८२ या २८३ वां लेख।
२. सालेतोरे, मेडीवल जैनिज्म, पृष्ठ ६४–७३

द्वितीय का पिता था। लेख नं० २७८[1] में वृत्तकार होयसल का जैन सेनापति गंगराज के पिता एचि के संरक्षक के रूप में उल्लेख है। लेख नं० १७८ के आधार पर कुछ इतिहासज्ञ इस नरेश का समय सन् १०२२ या १०४० (?) के लगभग निर्धारित करते हैं, तदनुसार इसका पूरा नाम राचमल्ल सेम्मनिडि था जो कि गंगवाडि के नृपतियों में प्रसिद्ध था[2]। इसके गुरु त्रिदंडिसंघ के वज्रपाणि ने सोनपुर (अन्नडि) में अपना जीवन व्यतीत कर अन्त में सन्यासपूर्वक देह त्यागा था। नृपतुंग का पुत्र विनयादित्य द्वितीय हुआ जिसने सन् १०४०—११०० के लगभग शासन किया। लेख नं० २६०[3] से ज्ञात होता है कि इसके गुरु शान्तिदेव थे, जिन की चरणसेवा से उसे राजलक्ष्मी प्राप्त हुई थी। लेख नं० २८६[4] में उल्लेख है कि उसने अनेक तालाब एवं जैन मन्दिर बनवाये थे। लेख नं० १२५ से ज्ञात होता है कि विनयादित्य के राज्यकाल में अन्नडि में नकर जिनालय नाम से एक प्रसिद्ध चैत्यालय था। ले० नं० २०० के अनुसार उक्त नरेश के गुरु शान्तिदेव सन् १०६२ ई० में दिवंगत हुए थे। उक्त अवसर पर उस नरेश ने और सभी नगरवासियों ने मिलकर उनकी स्मृति में एक स्मारक बनवाया था। यह नरेश चालुक्य नृप विक्रमादित्य षष्ठ का सामन्त था। उसका बेटा एरेयङ्ग (त्रिभुवनमल्ल) सोमेश्वर तृतीय भूलोकमल्ल चालुक्य का सामन्त था (२१८)। ले० नं० ४०३[5] और ३६३[6] में उसे चालुक्य नरेश का बलद (दक्षिण) भुजादण्ड कहा गया है। ले० नं० ३४८ में कई पद्यों द्वारा इसकी सामरिक वीरता की प्रशंसा

---

१. जै० शि० सं० प्रथम भाग लेख नं० ४४

२. राइस लेवल, हिस्टोरिकल इन्स्क्रिप्शन्स आफ सदर्न इण्डिया, पृष्ठ ३५१

३. जै० शि० सं० प्रथम भाग, ले० नं० ५४

४. वही—ले० नं० ५३.

५. वही—ले० नं० १२४.

६. वही—ले० नं० १३७ (?)

की गई है और अनेकों उपाधियाँ दी गई हैं। लेख नं० २३३[1] से, जो कि एरेयंग के राज्यकाल का ही है, ज्ञात होता है कि वह गंग मण्डल पर राज्य करता था। उसने अपने गुरु जैनतार्किक गोपनन्दि को श्रवणबेल्गोल की वसदियों के जीर्णोद्धार के हेतु कुछ ग्राम दान में दिये थे।

इतिहासज्ञों का अन्य लेखों के आधार पर विश्वास है कि एरेयंग अपने अन्तिम दिनों तक युवराज बना रहा और उसका वृद्ध पिता विनयादित्य गद्दी पर बैठा रहा। होय्सल वंश में एरेयंग प्रथम व्यक्ति था जिसने वीर गङ्ग उपाधि धारण की। पीछे इसके उत्तराधिकारियों में यह उपाधि बड़ी प्रिय समझी गई।

लेख नं० २६५ से ज्ञात होता है कि एरेयङ्ग की रानी एचलदेवी से बल्लाल, विष्णुवर्धन (बिट्टिग) एवं उदयादित्य नामक तीन पुत्र हुए। लेख नं० २६६ में इसके एक दामाद का उल्लेख है जिसका नाम हेम्माडिदेव था, यह गंगवंशोत्पन्न एवं जैन धर्मानुयायी था। लेख नं० २१८ के अनुसार मालुम होता है कि उसके ज्येष्ठ पुत्र बल्लाल ने कुछ समय के लिए शासन किया था यद्यपि उक्त लेख का शक संवत् १००० सन्देहास्पद है। इस लेख में बल्लाल के शौर्य की प्रशंसा भी है। लेख नं० ५६६ तथा ६२५[2] से ज्ञात होता है कि उसके जैन गुरु चारुकीर्ति मुनि थे जिन्होंने इसे असाध्य बीमारी से बचाया था। बल्लाल का शासन काल सन् ११०० से ११०६ ईस्वी तक माना जाता है।

बल्लाल का उत्तराधिकारी उसका भाई विष्णुवर्धन हुआ। यह इस वंश का सबसे बड़ा प्रतापी राजा था। इस राजा ने कर्नाटक देश को चोल आधिपत्य से मुक्त किया था। इस संग्रह में उसके राज्य के अनेकों लेख संग्रहीत हैं। लेख

---

१. वही—ले० नं० ४६२।

२. वही—ले० नं० १०५, १०८

नं० २६३, २६४, २८३, २८७, २८६, ३०४, ३४८, ३६३ एवं ४०३[1] में विष्णुवर्धन के अनेकों विरुदों तथा प्रतापादि का उल्लेख है। उसके आठ जैन सेनापतियों —गङ्गराज, बोप्प, पुणिस, बलदेव, मरियाने, भरत, ऐच एवं विष्णु ने अनेकों महत्व के युद्धों में उसे विजय प्रदान कर उसके राज्य को मजबूत बनाया था। लु० राइस महोदय की मान्यता है कि सन् १११६ ई० के पहले विष्णुवर्धन ने जैन धर्म को छोड़कर रामानुजाचार्य के प्रभाव में आकर वैष्णव धर्म ग्रहण कर लिया था। सत्य तो हो पर उसके मन पर जैन प्रभाव और कृतज्ञता इतनी अधिक थी कि जैनत्व के प्रति श्रद्धा एवं भक्ति में उसने कमी नहीं की थी। लेख नं० २८७ और ३०१ से ज्ञात होता है कि सन् ११२५ और ११३३ ई० में भी जैन धर्म के प्रति श्रद्धालु था। २८७ वें लेख के अनुसार उसने चोल सामन्त अदियम, पल्लव नरसिंह वर्म, कोङ्ग, कलपाल तथा अङ्गरन के राजाओं को पराजित किया था तथा पांडे वसदियों के जीर्णोद्धार के हेतु तथा ऋषियों को आहार दान देने के लिए अपने जैन गुरु द्रविड़ संघ के श्रीपाल त्रैविद्य देव को कल्य (शल्य) नामक ग्राम दान में दिया था। लेख नं० ३०१ (सन् ११३३) से विदित होता है कि उसके एक सेनापति बोप्पदेव द्वारा हनसोगेबलि के द्रोहघरट्ट जिनालय की स्थापना के बाद जिस समय पुरोहित लोग चढ़ाये हुए भोजन (शेषा) को विष्णुवर्धन के पास द्वारपुर ले गये, उसी समय वह एक शत्रु पर विजय प्राप्त कर आया था, तथा उसकी रानी लक्ष्मी महादेवी से पुत्ररत्न उत्पन्न हुआ था। उसने उनका स्वागत कर प्रणाम किया और यह समझकर कि इन्हीं पार्श्वनाथ भग०की स्थापना से उसे युद्ध में विजय, पुत्रोत्पत्ति एवं सुख समृद्धि मिली है, उसने देवता का नाम विजयपार्श्व तथा पुत्र का नाम विजय नरसिंह देव रखा था। ले० नं० २८३[2] से ज्ञात होता है कि उसकी एक पत्नी शान्तलदेवी जैन धर्म परायणा था। उसकी एक उपाधि थी उद्वृत्तसवतिगन्धवारणे अर्थात् उच्छृङ्खल सौतों के लिए मत्त हाथी। उसने श्रवणबेल्गोल में 'सवति गन्धवारण' वसदि भी बनवायी थी। उसके अनेक

१. वही—(२८३ से क्रमशः) ले० नं० ५६, ४६३, ५३, १४४, १३८, १२४, १३७।
२. वही—ले० नं० ५६

दानादि कार्यों का वर्णन जैन महिलाओं के प्रकरण में दिया गया है। विष्णुवर्धन से सम्बन्धित प्रायः सभी लेखों में उसके जैन सेनापतियो मन्त्रियों एवं अफसरों की शूर वीरता, दानादि कार्यों का वर्णन है जो कि प्रसगानुसार पृथक् किया गया है।

यद्यपि विष्णुवर्धन ने होय्सल वंश को दक्षिण भारत की राजनीति में समुन्नत बनाया था और अपने वंश के पूर्व अधिपति चालुक्य वंश से बहुत कुछ स्वतंत्र कर लिया था, पर वह सम्राट् का पद धारण न कर सका। लेख नं० २६५ से सिद्ध होता है कि वह चालुक्याभरण त्रिभुवनमल्ल (विक्रमादित्य षष्ठ) का आधिपत्य स्वीकार किया था। उसके अन्तिम वर्षों के लेखों (३१८ आदि) में भी उसे महामण्डलेश्वर कहा गया है।

इतिहासज्ञों की मान्यता है कि विष्णुवर्धन सन् ११४० ई० में दिवंगत हुआ और उसका बेटा नरसिंह (प्रथम) गद्दी पर आरूढ़ हुआ। यद्यपि विष्णुवर्धन के राज्यकाल का उल्लेख करने वाले लेख सन् ११४६ ई० तक के मिलते हैं पर या तो वे पुराने लेखों की पुनरावृत्ति हैं या जाली हैं। जैन लेखों में ऐसा ही एक लेख (३१८) उसकी मृत्यु के दो वर्ष बाद का है। विष्णुवर्धन को नरसिंह के अतिरिक्त एक और पुत्र था। ले० नं० २६३ (सन् ११३० ई०) से ज्ञात होता है कि उसका ज्येष्ठ पुत्र श्रीमन् त्रिभुवनकुमार बल्लालदेव राज्य कर रहा था। उसकी बहिनों में सबसे बड़ी हरियब्बरसि थी जो जैन धर्मपरायण थी। उक्त राजकुमार के संबंध में इससे अधिक और कुछ ज्ञात नहीं।

नरसिंह प्रथम के राज्यकाल के भी अनेकों लेख इस संग्रह में दिये गये हैं (३२४, ३२८, ३३३, ३३६, ३४७, ३४८, ३५१, ३५२, ३५६, ३६३, ३६७)। ये सामन्तों, सेनापतियों एवं अफसरों से सम्बन्धित हैं। लेख नं० ३४८[1] से ज्ञात होता है कि उक्त नरेश के भाण्डागारिक एवं मंत्री हुल्ल ने

१. वही-ले० नं० १३८.

श्रवणबेल्गोल में चतुर्विंशति जिन मन्दिर निर्माण कराया। यह मन्दिर आज-कल भी भण्डारिबस्ति कहलाता है। उक्त लेख में लिखा है कि एक समय नर-सिंह अपनी दिग्विजय के समय श्रवणबेल्गोल आये और उक्त जिनालय को देख प्रसन्न हो उसका नाम भव्य चूड़ामणि रखा। नरसिंह ने उस समय मन्दिर के पूजनादि प्रबन्ध के लिए 'सवणेरु' नामक ग्राम दान में दिया। यही बात ले० नं० ३४८ में भी लिखी है। अन्य लेखों से प्राप्त इसके सेनापतियों एवं महाप्रधानों का वर्णन दूसरे प्रकरण में दिया गया है। इन लेखों से ज्ञात होता है कि उक्त नरेश ने अपने शासनकाल में होय्सल वंश की समृद्धि के लिए कोई विशेष प्रयत्न नहीं किये। केवल अपने पिता द्वारा अर्जित राज्य वैभव और उसके यश का ही उपयोग करता रहा। लेख नं० ३३६ में इसकी एक उपाधि 'जगदेकमल्ल' दी गई है जो सूचित करती है कि यह चालुक्यों का आधिपत्य स्वीकार करता था।

नरसिंह का उत्तराधिकारी उसका प्रतापी बेटा बल्लाल द्वितीय हुआ जिसे लेखों में वीर बल्लाल कहा गया है। यह बड़ा बहादुर राजा था। इसने होय्सल वंश को स्वतन्त्र बनाया और राज्य में शान्ति एवं सुख समृद्धि स्थापित की। इसका राज्य सन् ११७३ से १२२० ई० तक अर्थात् ४८ वर्ष के लगभग रहा। इस नरेश के राज्यकाल के भी अनेकों लेख इस संग्रह में दिये गये हैं। लेख नं० ३७३ (सन् ११६८) इसकी युवराज अवस्था का है जिससे ज्ञात होता है कि यह अपने पिता के शासनकाल में सक्रिय सहयोग देता था। इसके जैन गुरु का नाम वासुपूज्य सिद्धान्त देव था। लेख नं० ३७६ और ३८११ इसके राज्य के प्रथम वर्ष के हैं। ले० नं० ३७६ से विदित होता है कि अपने पट्ट-बन्धोत्सव में महादान दिये थे। शक सं० १०६५ की श्रावण शुक्ल एकादशी (दशमी) रविवार को उसका राज्याभिषेक हुआ था। उस दिन उक्त लेखा-

१. वही—ले० नं० ४६१.

नुसार उसके महासांधिविग्रहिक मंत्री बूचिमय्य ने त्रिकूट जिनालय बनवा कर, उसकी पूजादि के लिए द्रविड संघ के वासुपूज्य सिद्धान्तदेव को मरिकली गाँव भेंट किया। इसी तरह लेख नं० ३८१ से विदित होता है कि उसका दण्डाधिप हुल्ल था। यह हुल्ल उसके पितामह विष्णुवर्धन के समय से ही उक्त वंश की सेवा में था। वल्लाल देव ने उस वर्ष भानुकीर्ति व्रतीन्द्र को पार्श्व और चतुर्विंशति तीर्थंकर की पूजा हेतु मारुहल्लि ग्राम दान में दिया तथा हुल्ल के अनुरोध से वेक्क गाँव भी भेंट में दिया। ले० नं० ३९६[1] में लिखा है कि वल्लाल ने अपने पिता द्वारा दिये गये तीन गाँवों के दान को हुल्ल मंत्री द्वारा पूरा कराया।

इस राजा के इस संग्रह के अनेक लेख उसके सेनापतियों, मंत्रियों एवं सेठों से संबंधित है जिनका वर्णन पीछे प्रकरणों में दिया गया है। उसकी सामूहिक विजयों के सम्बन्ध में ले० नं० ३९४ में लिखा है कि इसने उच्चंगि के किले को जीता था, तथा ले० नं० ४३१ से विदित होता है कि उसने सेवुण राजा को हराया और ले० नं० ४४८ से ज्ञात होता है कि उसने कुन्तल देश पर कलचूरि बिज्जल के शासन को हटाकर अपने अधीन किया था। ले० नं० ४६५ से मालुम होता है कि इसका एक जैन दण्डनायक रेचि था जो कि ४०८ वें ले० में कलचूरि वंश का दण्डाधिनाथ बतलाया गया है। दोनों लेखों का अध्ययन करने से मालुम होता है कलचूरि नरेश के धर्म परिवर्तन के कारण तथा वल्लाल द्वारा अपने स्वामी के परास्त होने पर संभव है वह उसका सेनापति हो गया हो।

वल्लाल द्वितीय के पुत्र नरसिंह द्वितीय के राज्य का केवल एक लेख (४७५)[2] हमारे संग्रह में हैं जिसमें उसकी पृथ्वीवल्लभ, महाराजाधिराज, सर्वज्ञचूड़ामणि आदि उपाधियाँ दी गई हैं। लेख में उक्त नरेश के राज्य में एक सेट द्वारा गोम्मटेश्वर की पूजा के हेतु किये गए दान का उल्लेख है।

---

१ वही—ले० नं० ९०.

२. वही—ले० नं० ८१.

हमें नरसिंह द्वितीय के पुत्र सोनेश्वर के समय के दो लेख (४९५[1] एवं ४९६) मिलते हैं। ले० नं० ४९५ में सोनेश्वर की विजय एवं कीर्ति का परिचय उनकी उपाधियों से ज्ञात होता है। उक्त नरेश के सेनापति शान्त और उसके पुत्र नातण्ण ने मनलकेरे में जैनमन्दिर का जीर्णोद्धार कराया था। द्वितीय लेख में वीर बल्लाल तक तो ठीक रूप से वंशावली दी गई पर पीछे की वंशावली नहीं। लेख में काल निर्देशको देखते हुए कहा जा सकता है कि यह उसके समय का है।

सोनेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी उसकी दो रानियों के दो पुत्र, नरसिंह तृतीय एवं रामनाथ हुए। नरसिंह तृतीय के चार लेख प्रस्तुत संग्रह में दिए गये हैं। ले० नं० ४९६ के अन्तर्गत दो लेखों से ज्ञात होता है कि सोमेश के पुत्र नर सिंह ने अपने चौका द्वारा बनवायी गई चहार दीवारी एवं मकान की मरम्मत कराकर विजयपार्श्वदेव की सेवा में अर्पण किया था तथा कुछ महीने बाद अपने उपनयन संस्कार के समय उक्त देव की पूजादि के निमित्त दान दिया था। ले० नं० ५१२[2] में उक्त नरेश द्वारा तथा होन्नवगेरे के सन्मुदेव द्वारा भूमिदान का उल्लेख है। ले० नं० ५२८[3] में होय्सलराय शब्द से इस नरेश का निर्देश इसके गुरु महामण्डलाचार्य माधनन्दि का उल्लेख तथा वेल्गोल के चौहरियों द्वारा भूमिदान का कथन है। चूँकि लेख का समय उक्त नरेश के राज्यकाल में पड़ता है इसलिए होय्सलराय से नरसिंह तृतीय ही समझना चाहिये।

अन्यत्र उल्लेखों से ज्ञात होता है कि रामनाथ तथा नरसिंह के उत्तराधिकारी बल्लाल तृतीय ने भी जैन धर्म को संरक्षण प्रदान किया था[4]।

इस तरह हम देखते हैं कि इस वंश के आदि पुरुष से लेकर अन्तिम राजा तक सभी जैन धर्म के प्रति श्रद्धालु, भक्त एवं उसे संरक्षण प्रदान करने वाले थे।

---

१. वही—ले० नं० ४९६.
२. ,, ले० नं० ९६.
३. ,, ले० नं० १२६.
४. सालेतोरे, मेडीवल जैनिज्म, पृष्ठ ८५–८६

८. विजय नगर राज्य:—होय्यसल साम्राज्य १३ वीं शताब्दी तक दक्षिण भारत में विद्यमान रहा पर मुसलमानों के दो तीन हमलों से वह ध्वस्त हो गया। उसका अन्तिम राजा वल्लाल तृतीय, मदुरा के सुल्तान गियासुद्दीन द्वारा मार डाला गया। दक्षिण के अन्य हिन्दू साम्राज्य भी खतरे में थे। वे सब सचेत हो विजय नगर के नायकों के झण्डे के नीचे आये।

विजय नगर साम्राज्य के संस्थापक अपने को यादव वंश का मानते हैं (५८५ श्लो० १५)। इस वंश का संस्थापक था संगमेश्वर या संगम (५६१) जिसके संबंध में हमें विशेष कुछ मालुम नहीं। इसके दो बेटों ने मिलकर हिन्दू शक्ति को नेतृत्व प्रदान किया। हरिहर प्रथम जिसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि वह सन् १३३६ में गद्दी पर बैठा था सन् १३५५ तक जीवित रहा। प्रस्तुत संग्रह में उसके समय के दो ले० नं० ५५८, ५५९ हैं जिनमें उसे महामण्डलेश्वर, हिन्दुवरायु, सुरताल श्री वीर कहा गया है। उसका उत्तराधिकारी उसका भाई बुक्कराय हुआ जिसने सन् १३५५ से १३७७ ई० तक राज्य किया। इसके राज्य के ६–७ ले० प्रस्तुत संग्रह में दिए गये हैं, जिनमें उसे महामण्डलेश्वर कहा गया है। ले० नं ५६९ में उसे पूर्व दक्षिण पश्चिम समुद्राधीश्वर तथा ले० नं० ५६२ में अभिनव बुक्कराय कहा गया है। ले० नं० ५६१ में उसके एक पुत्र विरुपण्ण वोडेयर का उल्लेख है। ले० नं० ५६१, ५६५[1] एवं ५६६ में उक्त नरेश की धार्मिक नीति का निरूपण है। तदनुसार वह अपने राज्य में जैन और वैष्णवों में कोई भेद नहीं देखता था और जब कभी विवाद के प्रश्न उठते थे तो दोनों के पारस्परिक मेल मिलाप कराने में उद्यत रहता था। उसके राज्य के शेष लेख प्रायः समाधिमरण के स्मारक हैं।

बुक्कराय का उत्तराधिकारी उसका पुत्र वीर हरिहरराय द्वितीय हुआ जिसने सन् १३७७ से १४०४ ई० तक शासन किया। इसके राज्यकाल के करीब १३

१. जैन शि० सं०, प्रथम भाग, ले० नं० १३६.

लेख इस संग्रह में हैं जो कि प्रायः साधारण जनता, सरदारों एवं सेनापतियों से सम्बंधित हैं। ले० नं० ५७६ में उसके एक जैन सेनापति वैचप्प का उल्लेख है जो कि उसके पिता के समय से उक्त पद पर था। उक्त लेख में उसकी कोंकण देश से लड़ाई का वर्णन है जिसमें वैचप्प की जीत हुई थी। ले० नं० ५८१ में हरिहर द्वितीय के पुत्र बुक्कराय द्वितीय तथा वैचप्प सेनापति के पुत्र इरुगप्प महामंत्री का उल्लेख है। ले० नं० ५८५ में वैच (वैचप्प) और इरुगप्प की प्रशंसा के साथ बुक्क और हरिहर की प्रशंसा है। सन् १३८६ में इरुगप्प ने विजयनगर में एक मन्दिर बनवाया और उसमें कुन्थु जिननाथ की स्थापना की थी। ले० नं० ५८६ में और उसके बाद के लेखों में महामण्डलेश्वर के स्थान में उक्त राजा की अरुवपति, गजपति आदि तथा महाराजाधिराज उपाधियां मिलती हैं। ले० नं० ६०२[1] में हरिहरराय की मृत्यु का उल्लेख है। उक्त लेखानुसार वह सन् १४०४ (शक नं० १३२६ भाद्रपद कृष्ण १० सोमवार) में दिवंगत हुआ था।

हरिहर द्वितीय का उत्तराधिकारी उसका बेटा बुक्क द्वितीय हुआ जिसने १४०४ से १४०६ ई० के बीच राज्य किया था पर उसके राज्य का एक भी जैन लेख प्रस्तुत संग्रह में नहीं है। उसका उत्तराधिकारी देवराय हुआ जो कि उसका भ्राता था। इसने १४०६ से १४२२ ई० तक राज्य किया। इसके राज्य के ६ लेख प्रस्तुत संग्रह में हैं। ले० नं० ६०४ में उसकी अधिराट् जैसी उपाधियाँ दी गई हैं तथा ६०५ में इसकी प्रशंसा की गई है। ले० नं० ६०६ में उसकी अनेक उपाधियों के साथ उसके जैन सेनापति गोप का उल्लेख है। लेख नं० ६१५ के अन्तर्गत दो लेखों से विदित होता है कि उसका एक बेटा हरिहरराय था जो कि जैन धर्मानुयायी था। उसने कनकगिरि के विजयनाथ देव की उपासना आदि के लिए मलेयूर ग्राम दान में दिया था।

ले० नं० ६१६ एवं ६२० में इस वंश की वंशावली दी गई है जिससे

---

१. वही—ले० नं० १२६

विदित होता है कि देवराय का उत्तराधिकारी विजय अर्थात् बुक्क तृतीय था जिसने कुछ ही महीने राज्य किया था। ले० नं० ६१८ में विजय बुक्कराय के सम्बंध में लिखा है कि उसने स्वर्ग प्राप्ति के लिए गुम्मटनाथ स्वामी की पूजा एवं सजावट के लिए तोटहल्लि गाँव भेंट में दिया था। वह भगवद् अर्हत् परमेश्वर का आराधक था। उसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र देवराय द्वितीय हुआ। ले० नं० ६१६ और ६२० में इस वंश की देवराय द्वितीय तक वंशावली दी गई है। ले० नं० ६१६ के अनुसार उक्त ताम्रपत्रों का दाता यही देवराय था। ६२० में इस वंश के प्रत्येक राजा की प्रशंसा में एक एक शार्दूलविक्रीडित छन्द दिया गया है। देवराय द्वितीय की प्रशंसा में अनेक छन्द हैं और कहा गया है कि उसने अपने पान सुपारी बगीचे में एक चैत्यालय बनवाया था और मन्दिर में श्री पार्श्वनाथ स्वामी की प्रतिमा विराजमान की थी। इस नरेश ने सन् १४२२ से १४४६ तक राज्य किया। ले० नं० ६३५[1] (सन् १४४६ ई०) में इसकी मृत्यु का संवत् दिया गया है।

देवराय द्वितीय का उत्तराधिकारी उसका बेटा मल्लिकार्जुन हुआ पर उसका एक भी लेख प्रस्तुत संग्रह में नहीं है। इसकी मृत्यु के बाद सन् १४६५ में उसका भाई विरूपाक्ष तृतीय गद्दी पर बैठा। उसका राज्य सन् १४८५ तक था। उसके समय का एक लेख नं० ६४६ (सन् १४७२) है जिसमें उसकी अनेक उपाधियाँ—पृथ्वीमनोवल्लभ, महाराजाधिराज, राजपरमेश्वर आदि–दी गई हैं ' यह संगम वंश का अन्तिम राजा था। इसके मंत्री सालुव नरसिंह ने इसे मार कर राज्य छीन लिया और इस तरह सन् १४८५ में इस वंश का अन्त हो गया। इस वंश के बाद विजयनगर पर शासन करने वाले अन्य वंश भी हुए हैं। उनमें तुलुव और आरवीडु वंश ख्यात हैं। तुलुव वंश के तृतीय नृप कृष्णदेव राय का नाम इतिहास में विशेष प्रसिद्ध है। अन्य उल्लेखों से ज्ञात होता है कि इसने

१. वही—ले० नं० १२५

जैन धर्म को अच्छी तरह संरक्षण प्रदान किया था [1]। उसका उत्तराधिकारी उसका भाई अच्युत राय हुआ था। लेख नं० ६६७ में लिखा है कि वादि विद्यानन्द नरसिंह के कुमार कृष्णराय के दरबार में परमतवादियों को अपने वाग्बल से परास्त किया था तथा उनके चरण कमलों को कृष्णराय के भाई अच्युतराय अपने मुकुट से पूजते थे।

विजय नगर राज्य पर शासन करने वाले आरवीडु वंश के दो नरेशों के राज्य काल के दो लेख नं० ६६१ (सन् १६०८) और ७१० (सन् १६३७) भी इस संग्रह में उपलब्ध हैं। प्रथम लेख वेङ्कटाद्रि प्रथम के समय का है। जिसमें उसे राजाधिराज आदि उपाधियां दी गई हैं और उल्लेख है कि मेलिगे नामक स्थान में बोम्मण श्रेष्ठी ने जिन मन्दिर बनवाकर अनन्त जिन की प्रतिष्ठा की थी। इसी तरह दूसरे लेख में वेङ्कटाद्रि द्वितीय का अनेक उपाधियों के साथ उल्लेख है। उसे कलिकाल अष्टम चक्रवर्ती कहा गया है। इस लेख में लिंगायत और जैनों के बीच उठे धार्मिक विवाद पर आपसी समझौता होने का उल्लेख है।

विजय नगर राज्य के लेखों को देखने से हमें भली भांति ज्ञात होता है कि जनता के बीच विशेषतः नायकों और गौडों के बीच जैन धर्म प्रिय था। वे उसका विधिवत् पालन करते, दान देते तथा अन्त में समाधि विधि पूर्वक देहत्याग करते थे। हिरियाबलि एवं नव निधि आदि ऐसे स्थान थे कि जहाँ समाधि विधि साधक आचार्य रहते थे। स्त्रियां अपने पति के मरने के बाद या तो सहगमन (सती होकर) या समाधि विधि से मरण करती थीं। सती प्रथा के दो तीन दृष्टान्तों से ज्ञात होता है कि जैन समाज हिन्दू संस्कारों से प्रभावित होने लगा था। उनके धार्मिक मामलों में वैष्णवों की ओर से भी समय समय पर बाधाएं आने लगी थीं।

६. मैसूर राज्यवंश:—मैसूर राज्य के सम्बंध के इस संग्रह में प्रायः वे ही लेख हैं जो कि जैनशिलालेख संग्रह प्रथम भाग में वर्णित हैं। केवल दो लेख नं० ७५८

---

१. देखो, लेख नं० ५५६, ५७४, ६०५,

(सन् १८२८ केलसुरु से प्राप्त) एवं नं० ७६४ (सन् १८२६) नरसीपुर से प्राप्त नये हैं, जो कि मुम्मुडि कृष्णराज चतुर्थ के राज्यकाल के हैं। इसका राज्य सन् १७६६ से १८३१ ई० तक था। पहले भाग के लेख नं० ४३३, ६८ एवं ४३४ इस संग्रह में लेख नं० ७५२, ७५७ एवं ७६६ के रूप में संगृहीत हैं, जो कि इसी नरेश के समय के समझने चाहिये, कृष्ण राज तृतीय (राज्य काल ई० १७३४–१७६१) के नहीं।

ई. दक्षिण भारत के छोटे राजवंश एवं सामन्त गण।

१. सेन्द्रक कुल:—इस कुल की उत्पत्ति नागवंश से कही जाती है। लेख नं० १०६ में इन्हें भुजगेन्द्रान्वय का कहा गया है। इनका देश नागरखण्ड था जो कि वनवासि प्रान्त का एक भाग था। पहले ये कदम्बों के सामन्त थे पर पीछे कदम्बों के पतन के बाद बादामी के चालुक्यों के सामन्त हो गये। प्रस्तुत संग्रह के लेख नं० १०४, १०६ एवं १०६ से ज्ञात होता है कि ये जैन धर्मानुयायी थे। इस वंश के सामन्त भानुशक्ति राजा ने कदम्ब हरिवर्मा से जैनमन्दिर की पूजा के लिए दान दिलाया था (१०४) तथा चालुक्य जयसिंह (प्रथम) के राज्य में सामन्त सामियार ने एक जैन मन्दिर बनवाया था (१०६)। लेख नं० १०६ से ज्ञात होता है कि चालुक्य रणराग के शासन काल में विजयशक्ति के पौत्र एवं कुन्दशक्ति के पुत्र दुर्गशक्ति ने पुलिगेरे के प्रसिद्ध शंख जिनालय के लिए भूमिदान दिया था।

२. नीगुंन्द वंश:—इस वंश का उल्लेख गंगवंश के एक लेख नं० १२१ में मिलता है। वहां लिखा है कि बाणकुल को भयभीत करने वाला दुण्डु नाम का एक नीगुंन्द नामक युवराज हुआ। उसका बेटा परगूल पृथ्वी नीगुंन्द राज हुआ उसकी पत्नी कुन्दाच्चि थी जिसकी माता पल्लव नरेश की पुत्री थी तथा उसका पिता सगर कुल का मरुवर्मा था। परगूल और उसका पिता दुण्डु दोनों जैन थे। पत्नी कुन्दाच्चि ने लोक तिलक नामक जैन मन्दिर बनवाया। जिसके लिए

परगूल ने अपने अधिपति नरेश से एक ग्राम दान में दिलाया था। उक्त लेख में दुण्डु के जैन गुरु विमलचन्द्राचार्य का उल्लेख है।

३. शान्तर वंश—दक्षिण भारत में जैन धर्म को शक्तिशाली बनाने में शान्तरवंशी राजाओं का बड़ा भारी हाथ था। प्रस्तुत संग्रह के अनेक जैन लेख इस बात के प्रमाण हैं।

शान्तर राजाओं के वंश का नाम उग्रवंश था और सातवीं शताब्दी के लगभग पश्चिमी चालुक्य नरेश विनयादित्य के शासनकाल में यह वंश हमारे सामने आता है। राज्य के रूप में इस वंश को स्थापित करने वाले प्रथम पुरुष का नाम जैन लेखों में, जिनदत्तराय मिलता है। लेख नं० १४६ के अनुसार यह जिनदत्तराय कलस राजाओं के खानदान कनककुल में उत्पन्न हुआ था। उसने जिनाभिषेक के लिए कुन्वलेपुर नामक गांव दान में दिया था। जिनदत्तराय के प्रताप का वर्णन ले० नं० १९८ में दिया गया है जिससे विदित होता है कि इसने पद्मावती देवी के प्रसाद को प्राप्त कर एक राक्षस के पुत्र को अपने भुजबल से भयभीत कर दिया था। ले० नं० २१३ और २४८ से जिनदत्तराय और उसके वंश के सम्बन्ध की अनेक सूचनायें मिलती हैं। इनसे मालुम होता है कि इस वंश की उत्पत्ति उत्तर भारत के मथुरा नगर में हुई थी और जिनदत्तराय ने पद्मावती के प्रसाद से पट्टिपोम्बुच्चपुर (वर्तमान हुम्मच) में अपना शासन स्थापित किया था। इसके बाद शान्तर लोगों की राजधानी बहुत समय तक हुम्मच ही रही। इस वंश के अनेकों लेख भी हुम्मच से ही प्राप्त हुए हैं।

जिनदत्तराय के वंश में कुछ समय बाद तोलापुरुष विक्रमशान्तर हुआ जिसने मौनिभट्टारक के लिए एक पाषाणवसदि (१३२) बनवाई थी। ले० नं० २१३ से विदित होता है कि विक्रम शान्तर ने एक महादान देकर सान्तलिगे हजार नाड् नाम का एक भिन्न राज्य स्थापित किया, इससे वह कन्दुकाचार्य, दानविनोद, विक्रमशान्तर इन तीन नामों से प्रसिद्ध हुआ। उसका पुत्र चागि शान्तर हुआ जिसने चागि समुद्र का निर्माण कराया था। उक्त लेख से ज्ञात होता है कि चागि के बाद क्रमशः वीर, कन्नर, कावदेव, त्यागि, नन्नि, राय, चिक्कवीर अम्मन

तथा तैल (सन् ८५० ई० के लगभग से १०२५ ई० के लगभग तक) इस वंश में उत्पन्न हुए। दुर्भाग्य से इन सबके सम्बन्ध में कोई लेख नहीं मिलते।

तैल (प्रथम) के तीन पुत्र थे उनमें वीर शान्तर (द्वितीय) ज्येष्ठ था। वही राज्य का अधिकारी हुआ। उसके राज्य के इस संग्रह में दो लेख हैं। ले० नं० १६७ में उसके अनेक विरुद दिये गये हैं। ले० नं० १६८ से ज्ञात होता है कि उसने समस्त विरोधियों को नष्ट कर अपने राज्य को निष्कण्टक कर दिया था। इस लेख में उसकी पत्नी चागलदेवी द्वारा निर्मापित तोरण एवं मन्दिर आदि कार्यों तथा दानों की प्रशंसा है। वीरशान्तर का अधिराजा त्रैलोक्यमल्ल चालुक्य (सोमेश्वर प्रथम-सन् १०४२–१०६८ ई०) था इसके नाम पर ही वीर शान्तर का दूसरा नाम त्रैलोक्यमल्ल पड़ा (१६७, १६८)। ले० नं० २१३ से ज्ञात होता है कि इसका विवाह जिन भक्त कुल गंगवंश में हुआ था। उसका ससुर रक्कस गंग था। उसकी पत्नी कञ्चलदेवी (वीर महादेवी) से उसे चार पुत्र उत्पन्न हुए—तैल, गोग्गिग, ओड्डुग और वर्म्म। ये सब जैन धर्म के परम भक्त थे। इन भाइयों ने अपनी जैन धर्मपरायणा मौसी चट्टलदेवी के सहयोग से जैन धर्म की प्रभावना के अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये थे। इस संग्रह में तैल-शान्तर के राज्यकाल के ७ लेख (२०३, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २२६) हैं जो सभी हुम्मच से प्राप्त हुए हैं। ले० नं० २०३ से ज्ञात होता है कि तैल द्वितीय ने सन् १०६६ में अपनी राजधानी पोम्बुच्चपुर में एक जिनालय बनवाया था, जिसका नाम भुजबल शान्तर जिनालय था। अन्य लेखों में उसके भाइयों के धार्मिक कार्यों का उल्लेख है। तैल द्वितीय भी अपने पिता के समान चालुक्य त्रिभुवन मल्ल (विक्रमादित्य षष्ठ) के अधीन था। उसका विरुद भी था त्रिभुवन मल्ल। उसने अपनी माता वीरव्वरसि की स्मृति में, बोदिधरट्ट अजित सेन पण्डितदेव का नाम लेकर एक बसदि की नींव रखी थी।

ले० नं० २४८ और ३२६ से ज्ञात होता है कि तैल शान्तर के पम्पादेवी नाम की एक पुत्री तथा श्रीवल्लभ नाम का पुत्र था तथा ओड्डुग शान्तर के तेल

(तृतीय) नामका पुत्र था। अन्यत्र उल्लेखों से ज्ञात होता है कि तैल तृतीय श्रीवल्लभ का उत्तराधिकारी हुआ[1]। ते० नं० ३४८ में इस वंश के अन्तिम ऐश का वर्णन है। यह लेख तैल चतुर्थ के वर्णन से प्रारम्भ होता है। तैल चतुर्थ, श्रीवल्लभ शान्तर का पुत्र था। इनकी पत्नी अक्कादेवी थीं जिससे काम, सिंह और अन्नप ये तीन पुत्र हुए। काम से लक्ष्मदेव और सिंगिदेव दो पुत्र तथा अतिया देव पुत्री हुई। काम, तैल चतुर्थ का उत्तराधिकारी हुआ और लक्ष्मदेव कामदेव का। उक्त लेख में अतियादेवी के दान कार्यों का वर्णन है। यह देवी गंगवंश के राजकुमार होन्नेयरस की पत्नी थीं।

यद्यपि पीछे के शान्तर नरेश वीर शैवधर्म की ओर झुक गये थे तो भी जैन धर्म को कृतज्ञता के भाव उनके मन में बराबर थे। १-२ शताब्दी बाद भी इस वंश के नायकों को अपने पूर्वजों के धर्म की याद बनी रही। कारकल से प्राप्त दो लेखों (६२४ और ६२७) से हमें ज्ञात होता है कि जिनदत्तराय के वंशज भैरव के पुत्र वीर पाण्ड्य ने कारकल में बाहुबलि की प्रतिमा बनाकर प्रतिष्ठित कराई थी तथा वहीं जिनके अन्य (क्षेत्रपाल) की प्रतिमा भी प्रतिष्ठापित की थी।

४. कोङ्गाल्ववंश:—कोङ्गाल्ववंश राजाओं का शासन कोङ्गलनाड ८००० प्रान्तर था जो कि वर्तमान कुर्ग के उत्तरीभाग येलु सावीर प्रान्त और मैसूर के हसन जिले के दक्षिणीभाग अर्कलगुद तालुका को शामिल किये था। यहाँ के पूर्व इतिहास का हमें पता नहीं पर ११वीं शताब्दी इस्वी से कोङ्गाल्व नरेशों के शिलालेखों से ज्ञात होता है कि उस समय यह क्षेत्र महत्वपूर्ण था।

इस वंश के जो भी लेख प्रस्तुत संग्रह में हैं उनसे उनके राजवंश का विशेष परिचय नहीं मिलता पर उनकी जैन धर्मपरायणता का परिचय अवश्य मिलता है। सन् १०५८ ई० के लेखों (१८८, १८६, १६०) से मालुम होता है कि राजेन्द्र कोङ्गाल्व ने अपने पिता द्वारा निर्मापित बस्ति के लिए भूमिदान दिया था। उसकी मां ने भी एक बस्ति बनवाई थी और उसमें अपने गुरु गुणसेन

१—राइस सेवेज, हिस्टोरिकल इन्स्क्रिप्शन्स आफ़ सदर्न इण्डिया, पृष्ठ ३६०

पण्डित देव की प्रतिमा प्रतिष्ठित की थी। ले० नं० १६० में राजेन्द्र का पूरा नाम राजेन्द्र चोल कोङ्गाल्व दिया गया है। सन् १०७० के एक त्रुटित लेख (२०६) में पृथुवि कोङ्गाल्व नाममात्र मिलता है उसके आगे का अंश नहीं पर ले०-नं०-२२०[1] में उसका पूरा नाम राजेन्द्र पृथ्वी कोङ्गाल्व अदटरादित्य दिया गया है। इसने अदटरादित्य नामक चैत्यालय निर्माण कराया था। पहले के उद्धृत लेखों और इस लेख से ज्ञात होता है कि उसका शासन काल कम से कम सन् १०५६ से १०७६ ई० तक अवश्य था। उक्त लेख में राजेन्द्र कोङ्गाल्व की महत्त्वपूर्ण अनेकों उपाधियाँ दी गई हैं जिनसे मालुम होता है कि वे सूर्यवंशी थे और चोलवंश से उनकी उत्पत्ति हुई थी। उन्हें ओरेयूर पुरवराधीश्वर कहा गया है। ओरेयूर व उरगपुर चोलराज्य की प्राचीन राजधानी थी। इस वंश के नरेश प्रारंभ से ही होय्सल राजाओं के अधीन सामन्त थे तथा पीछे विजय नगर राज्य के अधीन बने रहे।

प्रस्तुत संग्रह में इस वंश के और राजाओं के लेख नहीं आ सके। ले० नं० ५६० (सन् १३६१) में कोङ्गाल्ववंशी किसी राजा की रानी सुगुण देवी द्वारा प्रतिमा स्थापना एवं दानादि कार्यों का उल्लेख है। इससे विदित होता कि इस वंशके नरेश चौदहवीं शताब्दी या उसके बाद तक जैन धर्म पालन करते रहे।

५. चङ्गाल्व वंशः—कोङ्गाल्वों के दक्षिण में चंगाल्व वंश का राज्य था। पहले वे चंगनाड् (मैसूर रियासत का वर्तमान हुणसूर तालुका) के अधिपति थे। पश्चात् इनका राज्य पश्चिम मैसूर और कुर्ग में फैला था। यद्यपि ये शैव सम्प्रदाय के थे पर प्रस्तुत संग्रह के कुछ लेख यह सिद्ध करते हैं कि ११ वीं शताब्दी के अन्तिम एवं १२वीं के प्रथम दशकों में वे जैन धर्मावलम्बी थे। ले० नं० १७५, १६५, १६६ एवं २२३ से ज्ञात होता है कि वीर राजेन्द्र चोल नन्नि चंगाल्व ने देशियगण, पुस्तक गच्छ के लिए कुछ वसदियाँ बनवायी थीं। लेख न० २४० और २४१ में कथन है कि उसी राजेन्द्र चंगाल्व ने सन् ११०० में

१—जैन शिलालेख संग्रह, प्रथम भाग, ले० नं० ५००

चन्द्र-तीर्थ की बसदि को, जिसे पहले राम ने बनवाया था और जिसको गंगोने दान में दिया था, फिर से बनवाया।

ले० नं० ३७७ में उल्लेख है कि कदम्बवंशी सोविदेव ने किसी चंगाल्व राजाको हरा दिया था और ४५२ में लिखा है कि होय्सल सेनापति ने चंगाल्व नृप को मार भगाया था। पर इन राजाओं का क्या नाम है, हमें मालुम नहीं। ले० नं० ६६१ में सूचना है कि सन् १५१० के लगभग इस वंश के एक नरेश के मंत्री पुत्र ने गोम्मटेश्वर की ऊपरी मञ्जिल का जीर्णोद्धार कराया था।

६. निडुगल वंशः—१३ वीं शताब्दी ईस्वी में इस वंश का राज्य उत्तर मैसूर प्रान्त के कुछ हिस्से पर था। ये अपने को चोल महाराज तथा ओरेयूर पुरवरधीश्वर कहते थे। इस वंश के दो लेख (४७८ और ५२१) हमारे संग्रह में हैं जिनसे मालुम होता है कि इस वंश के कुछ नरेश जिनधर्म भक्त थे। ले० नं० ४७८ में इस वंश की एक वंशावली दी गई है जो कि तीसरे वंशधर से प्रारंभ होती है, यथा—चोल राजाओं में हुआ मंगि, उससे बम्बि, उससे गोविन्द, उसका पुत्र हुआ इरुङ्गोल (प्रथम)। इरुङ्गोल का पुत्र हुआ भोगनृप जिससे वर्म्म (ब्रह्म) नृप हुआ। उस वर्म्म नृप की रानी बाचालदेवी से इरुंगोल द्वितीय हुआ। इस नरेश ने अपने आश्रित एक जैन व्यक्ति गंगेयन मारेय के अनुरोध पर पार्श्व जिनबसदि के लिए कुछ भूमियों का दान दिया। उक्त बसदि का निर्माण उक्त जैन ने कराया था। उस बसदि की पूजा आदि के लिए कुछ किसानों ने चन्दा एवं तैलादि दान की व्यवस्था की थी। ले० नं० ५२१ में उसको अनेक उपाधियाँ दी गई हैं तथा उक्त जिन बसदि का नाम ब्रह्म जिनालय दिया गया है जो कि सम्भव है उसके पिता के नाम पर रखा गया था। उक्त बसदि के लिए सन् १२७८ ई० में मल्लि सेट्टि ने सुपारी के २००० पेड़ों के २ हिस्से दान में दिये थे। इरुंगोल द्वितीय के सम्बन्ध में इतिहासज्ञों की मान्यता है कि वह जैन धर्मावलम्बी था[1]।

१—राबर्ट सेवेल, हिस्टोरिकल इन्स्क्रिप्शनस आफ सदर्न इण्डिया, पृष्ठ ३६६

इरंगोल प्रथम के सम्बंध में श्रवण बेल्गोल से प्राप्त दो लेखों (३४८, ३७८[२]) से ज्ञात होता है वह भी जैन था। उसके गुरु नयकीर्ति सिद्धान्त देव थे तथा वह होय्सल विष्णुवर्धन द्वारा पराजित हुआ था।

७. चेर वंश—चेर वंश की एक शाखा अदिगैमान् का एक लेख (४३४) हमारे संग्रह में है, जिससे उस वंश का थोड़ा परिचय मिलता है। उक्त लेख में एलिनि उर्फ वर्धनिका नामक एक अदिगैमान् सरदार का उल्लेख है। दूसरा सरदार राजराज था। उसका पुत्र विट्टुगादलगिय पेरुमाल अर्थात् व्याघ्रकेतु श्रवणोज्ज्वल था, जिसे लेख में तक्कानाथ कहा गया है। अन्यत्र उल्लेखों से मालूम होता है कि वह सन् ११६८–१२०० ई० में जीवित था। उक्त लेख के अनुसार व्याघ्रकेतु श्रवणोज्ज्वल ने अपने पूर्वज वर्धनिका द्वारा नूरटीर मण्डल के अर्हत्गिरि पर प्रतिष्ठापित यक्ष-यक्षिणी की प्रतिमाओं का जीर्णोद्धार कराया तथा एक दासी दान में दिया और एक नाली भी बनवायी थी। लेख से ज्ञात होता है कि इस शाखा के तीनों पुरुष जैन धर्म में आस्था रखते थे।

८. शिलाहार वंश—शिलाहार अपने को जीमूतवाहन का वंशज मानते हैं। प्रस्तुत संग्रह में पश्चात्कालीन शिलाहारों के केवल तीन लेख संगृहीत हैं, जो कि कोल्हापुर और उसके आसपास प्रदेश में राज्य करते थे। ले० नं० ३२० और ३३४ में इस वंश की वंशावली दी गई है जिसमें जतिग से इस वंश का प्रारम्भ माना गया है। जतिग को नरेन्द्र, क्षितीश कहा गया है। जतिग के चार बेटे थे—गोंढल, गूवल, कीर्तिराज और चन्द्रादित्य। इसमें गोंढल का पुत्र मारसिंह हुआ जिसके पाँच पुत्र थे:—गूवल, गंगदेव, बल्लाल, भोजदेव, गण्डरादित्य। उक्त दोनों लेख गण्डरादित्य के पुत्र विजयादित्य के राज्य के हैं जो कि भूमिदान संबंधी हैं। इन लेखों में उसके जो विरुद दिये गये हैं उनसे ज्ञात होता है कि वह अपने समय का बड़ा प्रतापी मण्डलेश्वर था। बल्लालदेव और

२—जैन शिलालेख संग्रह, प्रथम भाग, ले० नं० १३८, ४२

गण्डरादित्य के सम्बन्ध में ले० नं० २५० में उल्लेख है कि उसने जैन मुनियों के लिए एक भवन दान में दिया था। उसकी महामण्डलेश्वर उपाधि थी। भोजदेव के सम्बन्ध में अन्यत्र उल्लेख से मालुम होता है कि उसके दरबार में रहकर सोमदेव ने शब्दार्णव चन्द्रिका बनायी थी।

६. रट्ट वंश—इस वंश के अनेक लेख इस संग्रह में दिखाई देते हैं। इस वंश के राजे जैन धर्म के संरक्षक राष्ट्रकूट एवं चालुक्य नरेशों के सामन्त थे। हुल्त्स महोदय की मान्यता है कि इस वंश का व्यवहारी नाम रट्ट था जब कि राष्ट्रकूट अलंकारिक एवं शाही रूप था। जो भी हो, रट्ट लोग राष्ट्रकूट कृष्ण तृतीय के समय से प्रभाव में आये थे। सौंदत्ति से प्राप्त एक लेख (१३०) से मालुम होता है कि रट्टों में प्रथम जिसने प्रमुख अधिकारी होने का पद पाया था वह आ मेरड का पुत्र पृथ्वीराम। उसे यह पद राष्ट्रकूट कृष्ण तृतीय की अधीनता में मिला था। उससे पहले वह मैलाप तीर्थ के कारेयगण के इन्द्रकीर्ति स्वामी का शिष्य था। ले० नं० १६० में पृथ्वीराम के पुत्र, प्रपौत्र एवं उनकी पत्नियों के नाम दिए गए हैं। संभव है ये सब सामन्त या महासामन्त थे। इसके बाद इस वंश की परम्परा का क्रम कुछ भंग हो गया है।

वंशावली का द्वितीय अंश २०५ और २३७ वें लेख में वर्णित है, जिसमें नन्न से सेन द्वितीय तक वंश परम्परा दी गई है। इन लेखों में तथा पीछे के लेखों में कार्तवीर्य को लत्तलुपुरवराधीश्वर तथा महामण्डलेश्वर आदि कहा गया है। ले० नं० ३६६, ४४६, ४४६, ४५३, ४५४ और ४७० इसी वंश से संबंधित है जिनमें सेन द्वितीय से ४-५ पीढ़ी तक अर्थात् कार्तवीर्य चतुर्थ, मल्लिकार्जुन और लक्ष्मीदेव द्वितीय तक की वंशावली दी गई है। ज्ञात होता है कि इस वंश का अभ्युदय ई० सन् ६७८ के लगभग से १२२६ ई० तक रहा। इस वंश के प्रथम पुरुष पृथ्वीराम ने राष्ट्रकूट वंश की अधीनता में वृद्धि की पर उसके उत्तराधिकारी शान्तिवर्मा से लेकर सेन द्वितीय तक कल्याणी के चालुक्यों की

अधीनता में रहे। सेन द्वितीय पीछे स्वतन्त्र हो जाता है और संभव है कि उसके बाद के सभी वंशधर स्वतन्त्र थे।[1]

वंश के आदि पुरुष पृथ्वीराम के सम्बन्ध में ले० नं० १३० में कहा गया है वह एक जैन मुनि का विनीत छात्र था। उपर्युक्त लेखों से मालुम होता है कि कार्तवीर्य और मल्लिकार्जुन ने अपने दानों द्वारा जैन धर्म को अच्छी तरह संरक्षित किया था।

१०. यादव वंशः—यह वंश अपनी उत्पत्ति विष्णु से मानता है (३१७) पर इसके प्रारम्भिक इतिहास के विषय में हमें कुछ नहीं मालुम। इस संग्रह के जैन लेखों से ज्ञात होता है कि वे राष्ट्रकूटों के तथा पीछे कल्याणी के चालुक्यों के सामन्त थे। ईस्वी १२ वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में यह शक्ति कुछ स्वतन्त्र होती दिखती है। प्रारम्भिक यादवों को सेउण देश के यादव भी कहते हैं। पीछे इन्होंने देवगिरि में अपने राज्य को स्थापित किया था।

प्रस्तुत संग्रह में इस वंश के राजा सेउणचन्द्र तृतीय से लेकर रामदेव या रामचन्द्र तक के शिला लेख संग्रहीत हैं। ले० नं० ३१७ से ज्ञात होता है कि राजा सेउणचन्द्र तृतीय ने चन्द्रप्रभ भगवान् के मन्दिर के खर्च के लिए अंजनेरी में तीन दुकानें दान में दी थीं पर उसकी राजनीतिक स्थिति का पता नहीं चलता। ४२१ वें लेख में उल्लेख है कि होय्सल नृप वीरवल्लाल द्वितीय ने, सन् ११९८ के लगभग सेऊणदेश के किसी राजा को जिसके पास अगणित हाथी घोड़े तथा वीर योद्धा थे, युद्ध में अकेले ही हराया। इतिहास को देखने से पता चलता है कि उस समय वहाँ भिल्लम पञ्चम का बेटा जैत्रपाल (जैतुगि) प्रथम शासन कर रहा था। उसके शौर्यसम्पन्न विशेषणों से ज्ञात होता है कि उस समय तक यादवों का प्रभाव एवं स्थिति अच्छी हो गई थी। जैत्रपाल प्रथम का बेटा सिंहण हुआ जिसका राज्य सन् ११९१ ई० से १२४७ ई० तक था।

---

१. विशेष इतिहास के लिए देखो, दिनकर देसाई, महामण्डलेश्वराज अण्डर द चालुक्याज आफ कल्याणी, बम्बई, १९५१

इसके ३७ वें वर्ष को द्योतन करने वाला एक समाधिमरण स्मारक लेख (४९०) प्रस्तुत संग्रह में दिया गया है। इसी तरह सिंहण के पौत्र कन्हार देव या कन्हार देव के समय का वैसा ही एक लेख (५०२) इसी संग्रह में है। इस वंश से सम्बन्धित ले० नं० ५११ में वंशावली वाला भाग त्रुटित है, तो भी इससे इतना ज्ञात होता है कि कन्हार देव का सहोदर महदेव था तथा कन्हार-राय का पुत्र रामदेव (रामचन्द्र) था। उक्त लेख के अनुसार दण्डेश कृष्णराज ने अपने स्वामी महदेव के करकमलों द्वारा अपनी पत्नी के नाम पर निर्मापित लक्ष्मी जिनालय को कुछ दान दिलवाया था। रामचन्द्र या रामदेव के राज्य काल के ५ लेख (५१३, ५३५, ५३८, ५४०, ५४१) इस संग्रह में हैं जो कि दाताओं द्वारा दिये दान के स्मारक हैं। सन् १२९२-९५ के बीच के ले० नं० ५३८, ५४०, ५४१ में उक्त राजा की भुजबल प्रौढ़ प्रताप चक्रवर्ती आदि उपाधियाँ दी गयी हैं।

होय्सल वंश के समान ही इनका राज्य मुसलमानों ने नष्ट कर दिया।

११. संगीतपुर के सालुव मण्डलेश्वरः—१५ वीं ई० के उत्तरार्ध से लेकर १६ वीं के उत्तरार्ध तक संगीतपुर के शासक जैन धर्म के नेता के रूप में हमारे सामने आते हैं। तौलव देश (उत्तर कनारा जिला) में संगीतपुर, जिसे हाडुहल्लि भी कहते हैं, एक समृद्ध नगर था। उस नगर के शासक काश्यप गोत्र तथा सोमवंश के कहलाते थे। ले० नं० ६५४ में इस नगर का बड़ा सुन्दर वर्णन है। वहाँ का शासक महामण्डलेश्वर सालुवेन्द्र था जोकि चन्द्रप्रभ भगवान् का भक्त था। लेख में उक्त राजा के अनेक विशेषण दिये गये हैं जिससे विदित होता है कि वह राज्य और जैनधर्म दोनों को अच्छी तरह पालन कर रहा था। उसके मंत्री का नाम पद्म या पद्मण था जो कि शाही खान्दान का था। उसे सन् १४८८ में सालुवेन्द्र महाराज ने एक ग्राम भेंट दिया जिसे उसने जिनधर्म की उन्नति के लिए दान में दे दिया (६५४)। इसी मंत्री ने १० वर्ष बाद सन् १४९८ में पद्मावतीपुर में एक चैत्यालय बनवाकर पार्श्व जिन की स्थापना की तथा अनेक दान दिये (६५८)।

महामण्डलेश्वर सालुवेन्द्र के पिता का नाम संगिराय था तथा अनुज का नाम कुमार इन्दगरस वोडेयर था। इन्दगरस का दूसरा नाम इम्मडि सालुवेन्द्र था जो कि अपनी शूर वीरता के लिए प्रसिद्ध था (६५६)। वह जैनधर्म का भक्त था और उसने विदिरु में वर्धमान स्वामी की पूजा के निमित्त दान की व्यवस्था की थी।

आगे इस वंश के सालुव मल्लिराय, सालुव देवराय, सालुव कृष्णराय के नाम मिलते हैं जिन्होंने जैनधर्म को संरक्षण प्रदान किया था। सालुव कृष्णराय, सालुव देवराय की बहिन पद्माम्बा का पुत्र था। ले० नं० ६६७ से ज्ञात होता है कि ये तीनों शासक प्रसिद्ध जैन वादी विद्यानन्द मुनि के भक्त थे। सालुव मल्लिराय और देवराय के दरबारों में उक्त मुनि ने अनेकों प्रतिवादियों को परास्त किया था। ले० नं० ६७४ में तीनों राजाओं के पूर्वजों का परिचय तथा एक दूसरे के सम्बन्ध का परिचय दिया गया है। वहाँ उन्हें क्षेमपुर का शासक भी कहा गया है।

५. जैन सेनापति एवं मन्त्रिगण

इन लेखों पर दृष्टिपात करने से यह निश्चय रूप से मालुम होता है कि दक्षिण भारत में जैन धर्म ने अपना व्यावहारिक रूप अच्छी तरह पा लिया था। जैन सन्तों के उपदेश से न केवल व्रत नियमादि पालन कर अन्त में समाधि से देहोत्सर्ग करने वाले व्यक्ति ही प्रभावित थे बल्कि विशाल सेनाओं के नायक दण्डाधिपति एवं राज्यसंचालक मंत्रिगण भी प्रभावित हुए थे। अहिंसा का सन्देश केवल उनकी श्रद्धा का विषय न था, वह तो देश की प्रगति में बाधक होने की जगह साधक था। उसके बिना चाहे धार्मिक क्षेत्र हो या राजनीतिक, स्वतन्त्रता संभव न थी।

इन लेखों में अनेकों वीर सेनानियों की अमर कहानियाँ भरी पड़ी हैं। उनमें मुख्य कुछ का संक्षिप्त परिचय यहाँ प्रस्तुत किया जाता है।

१. श्रुतकीर्ति:—जैन धर्म के आश्रयदाता कदम्बों के सेनापति श्रुतकीर्ति और उसके वंशजों की भक्ति उल्लेखनीय है। ये लोग यापनीय संघ के आचार्यों के भक्त थे। पलाशिका (हल्सी) और देवगिरि से प्राप्त लेखों में इस वंश का चरित चित्रित है। ले० नं० ९६ से विदित होता है कि श्रुतकीर्ति सेनापति ने अपने कल्याण के लिए बदोवर क्षेत्र को अर्हन्तों के लिए दे दिया था जो कि उसने अपने स्वामी कदम्ब काकुत्स्यवर्मा से खेटक ग्राम में प्राप्त किया था। लेख नं० १०० में इसके गुणों की प्रशंसा है और इसे भोजवंश का या भोजक लिखा है। वह काकुत्स्यवर्मा का विशेष कृपापात्र था। उक्त लेख के अनुसार काकुत्स्य वर्मा के बेटे शान्तिवर्मा के पुत्र मृगेश ने श्रुतकीर्ति की पत्नी एवं दामकीर्ति की मां को खेट्याम धर्मार्थ दे दिया था। उसी लेख में लिखा है उस दामकीर्ति का ज्येष्ठ पुत्र जयकीर्ति था जिसके गुरु आचार्य बन्धुषेण थे। उसने अपने माता पिता के पुण्यार्थ खेटक ग्राम को यापनीय संघ के आचार्य कुमारदत्त को दे दिया था। ले० नं० १०१ में दामकीर्ति के छोटे भाई का नाम श्रीकीर्ति था जो कि अपने कुल के अनुरूप धर्मात्मा था। ले० नं० ९७ और ९९ में दामकीर्ति का उल्लेख है जिनसे ज्ञात होता है कि वह कदम्ब शान्तिवर्मा की धार्मिक प्रवृत्तियों का प्रेरक था। उन दिनों पलाशिका (हल्सी) यापनीय संघ का केन्द्र था और श्रुतकीर्ति के वंशज उक्त संघ के अनुयायी थे।

२. चामुण्डराय:—इसका प्रिय नाम 'राय' भी था। इतना शूरवीर, इतना दृढ़ भक्त एवं इतना स्वामिभक्त मंत्री कर्नाटक के इतिहास में दूसरा और कोई नहीं दिखाता। उसके समय के अनेकों लेखों और उसकी कन्नड भाषा में कृति चामुण्डराय पुराण से उसके जीवन का परिचय मिलता है। ले० नं० १६५ (प्रथम भाग, नं० १०६) से ज्ञात होता है कि वह ब्रह्मक्षत्र कुल में पैदा हुआ था। वहाँ उसे 'ब्रह्मक्षत्रकुलोदयाचलशिरोभूषामणि' कहा गया है। यह गंग नरेश राचमल्ल चतुर्थ का सेनापति था पर मालुम होता है कि वह उसके पिता मारसिंह तृतीय के समय भी सेनापति था। मारसिंह के विषय में लिखा जा चुका है कि वह उस वंश का बड़ा प्रतापी नरेश था। वह राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण तृतीय

का महासामन्त था। श्रवणवेल्गोला से प्राप्त ले० नं० १५२ (प्रथम भाग, ३८) और १६५ (प्रथम भाग, १०६) में इसकी अनेक विजयों का वर्णन किया गया है। ले० नं० १५५ (प्रथम भाग, ६१) में वर्णित अनेक विजयों का श्रेय राजा मारसिंह को दिया गया है पर उक्त लेख के कथन को ले० नं० १६५ और चामुण्डराय पुराण के सहारे पढ़ने से वास्तविकता समझ में आ जाती है। राचमल्ल को 'जगदेकवीर' उपाधि सूचित करती है कि ये सब विजयें उसके राज्य में सम्पन्न हो सकी थीं। मारसिंह और राचमल्ल ने ये सब युद्ध अपने अधिराट् राष्ट्रकूट कृष्ण तृतीय और इन्द्र चतुर्थ के लिए सेनापति चामुण्ड राय के द्वारा जीते थे।

उपर्युक्त लेखों में चामुण्डराय की शूरवीरता को सूचित करने वाली अनेक उपाधियाँ दी गई हैं। खेद है कि ले० नं० १६५ छः पद्यों के बाद अकस्मात् समाप्त हो जाता है जिससे हमें उसके सम्बन्ध की पूरी जानकारी नहीं हो पाती। उसके जीवन के अन्य पहलुओं को उसकी अमरकृति चामुण्डराय पुराण और उसके आचार्यों के ग्रन्थो से जाना जा सकता है।

उसकी अमर कीर्ति की प्रतीक श्रवणवेल्गोल में बाहुबलि की जगद्विख्यात एक विशाल मूर्ति (५७ फुट ऊँची) प्रतिष्ठित है। इस मूर्ति के निर्माण का हेतु ले० नं० ३९५ में वर्णित है जिसका कि अन्यत्र उल्लेख किया गया[1] है। चामुण्डराय के दो गुरु थे एक का नाम था अजितसेन और दूसरे का नाम नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती। श्रवण वेल्गोल के एक लेख (प्रथम भाग, १२२) से ज्ञात होता है कि इस सेनापति ने चिक्क वेट्ट पर एक वसदि बनवाई थी तथा ले० नं० १५७ (प्रथम भाग, ६७) से ज्ञात होता है कि उसके पुत्र जिनदेवण्ण ने भी जो कि अजितसेन मुनि का शिष्य था, एक वसदि बनवाई थी।

चामुण्डराय की जैन धर्म के प्रति की गई सेवाओं की छाप दक्षिण भारत में

देखो, 'जैनधर्म के केन्द्र' प्रकरण।

शताब्दियों तक रही। ले० नं० ३६३ (प्रथम भाग, १३७) में एक प्रसंग में लिखा है कि जिन शासन के स्थिर उद्धार करने में प्रथम कौन है ? तो उत्तर होगा राचमल्ल भूपति के वरमंत्री राय (चामुण्डराय) (पद्य २२)।

३. शान्तिनाथ—इसके सम्बन्ध में ले० नं० २०४ में लिखा है कि वह सहजकवि, चतुरकवि, निस्सहायकवि··· नुनमहाकवीन्द्र था। उसकी उपाधि सरस्वतीमुखमुखर थी। उसका यश अति विशद था और वह जिन शासन रूपी सत्सरोजिनी का कलहंस था। उसने अपने राजा लक्ष्मनृप से प्रार्थना कर वलि-नगर में लकड़ी के बने जैन मन्दिर को पाषाण का बनवाया। इस मन्दिर का नाम मल्लिकामोद शान्तिनाथ था।

१२ वीं शताब्दी में होय्सल वंश से सम्बन्धित हम अनेक जैन सेनापतियों को देखते हैं। इस वंश का प्रतापी नरेश विष्णुवर्धन था। उसकी अनेक विस्तृत विजयों का श्रेय उस नरेश के आठ जैन सेनापतियों को था। ये सेनापति थे—गंगराज, बोप्प, पुणिस, बलदेवण्ण, मरियाने, भरत, ऐच और विष्णु। इन सेनापतियों के कारण ही होय्सल राज्य दक्षिण भारत की प्रधान शक्तियों में गिना जाने लगा।

४. गंगराज—इन सेनापतियों में प्रधान था गंगराज। इसके सम्बन्ध में जैन शिलालेखसंग्रह प्रथम भाग की भूमिका में पर्याप्त लिखा गया है। इसके जीवन वृत्त को जानने के लिए इस संग्रह में दो दर्जन से अधिक लेख हैं। प्रस्तुत द्वितीय तृतीय भाग में इस सेनापति से सम्बन्धित केवल ले० नं० २६३, २६६, २६६, ३०१ और ४११ के मूल पाठ हैं। शेष २८५ (४३) २७८ (४४) २५४ (४६) २५५ (४७) २६० (६५) २८१ (४४६) २८३ (४८६) ३६६ (६०) के मूल पाठ प्रथम भाग में दिए गये हैं, कोष्ठक में उन लेखों की संख्या दी गई है। प्रथम भाग के ले० नं० ७५, ७६, ४४७ और ४७८ इन भागों के लेखों की संख्या से नहीं पहिचाने जा सके। लेख २६३, २६६ और २६६ में उसकी अनेक सामरिक विजयों का उल्लेख तथा जैन मुनियों और

मन्दिरों को अनेक प्रकार के दानों का उल्लेख है। इन लेखों में उसके दो जैन गुरुओं—मेघचन्द्र सिद्धान्त देव एवं शुभचन्द्र सिद्धान्त देव—का नाम मिलता है। ले० नं० ३०१ में गंगराज की बड़ी प्रशंसा की गई है। उसकी मृत्यु के स्मारक स्वरूप उसके पुत्र बोप्प सेनापति ने दोर समुद्र में एक जिनालय बनवाकर पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित की थी। उक्त लेख में लिखा है कि अनेक उपाधियों से विभूषित गंगराज ने अगणित ध्वस्त जैन मन्दिरों का पुनर्निर्माण कराया था। अपने अनवधि दानों से उसने गंगवाडि ९६००० को कोपण के समान चमकाया था। गंगराज के मत से ये ७ नरक थे—झूठ बोलना, युद्ध में भय दिखाना, परदारारत रहना, शरणार्थियों को शरण न देना, अधीनस्थों को अपरितृप्त रखना, जिनको पास में रखना चाहिए उन्हें छोड़ देना और स्वामी से द्रोह करना।

उक्त जिनालय का नाम गङ्गराज की एक विशिष्ट उपाधि पर से द्रोहघरट्ट जिनालय पड़ा था। इसी जिनालय की स्थापना को अपनी सुख समृद्धि के वर्धन में हेतु मानकर होय्सल विष्णुवर्धन ने इसे ग्रामादि दान दिये थे (३०१)।

५. बोप्प—गंगराज का पुत्र दण्डेश बोप्प देव भी बड़ा ही शूरवीर एवं धर्मिष्ठ था। उसने उपर्युक्त द्रोहघरट्ट जिनालय के सिवाय दो और मन्दिर बनवाये थे, कम्बदहल्लि से शान्तीश्वर बसदि तथा सन् ११३८में त्रैलोक्यरञ्जन बसदि जिसका दूसरा नाम बोप्पण चैत्यालय था (३०३)। इसे ले० नं० ३०३ में बुधबन्धु, सतां बन्धुः कहा गया है। इसी तरह ले० ३०१ और ४११ में उसके अनेक विशेषणों के साथ उसकी वीरता की प्रशंसा की गई है। ले० नं० ३०४ में उल्लेख है कि सन् ११३४ में उसने शत्रु पर आक्रमण किया और उनकी प्रबल सेना को खदेड़कर अपने भुजबल से कोङ्गों को परास्त किया था।

६. पुणिसः—गंगराज के बहादुर साथियो में पुणिस भी था। उसके पूर्वज अमात्य होते आये थे। उसका पितामह पुणिसम्म चमूप था जो कि सकल शास्त्र-वाचक चक्रवर्ति था। उसके ज्येष्ठ पुत्र चामण का पुत्र पुणिस था। यह होय्सल नरेश विष्णुवर्धन का सान्धिविग्रहिक था। ले० नं० २६४ में उसकी सामरिक शूर

वीरता के कार्यों का वर्णन है। उसने अनेकों देश जीतकर होय्सल विष्णुवर्धन को दिये। पुणिस, गंगराज के समान ही विशाल हृदय का था। उसने धर्म और मानवता की समान दृष्टि से सेवा की। ले० नं० २६४ में लिखा है कि युद्ध के कारण जो व्यापारी बिछड़ गये थे, जिन किसानों के पास बीज बोने को नहीं था, जो कृषक सरदार हार जाने से अधिकार वंचित हो नौकर हो गए थे, उन्हें तथा उन सबको जिनका जो नष्ट हो गया था, वह सब पुणिस ने दिया और उनके पालन पोषण में मदद की। उक्त लेख में यह भी उल्लेख है कि उसने एरेयंगाड़ि के अरकोट्टार स्थान में अपने द्वारा बनवाई गई विष्णु बसदि से संलग्न बसदियों के लिए भूदान दिया तथा निर्मल होकर गंगों की तरह गंगवाडि की बसदियों को शोभा से सज्जित किया।

७. बलदेवण्णः—विष्णुवर्धन का चौथा सेनापति बलदेवण्ण था। ले० नं० २६६ में इसके सम्बन्ध में थोड़ा परिचय मिलता है। वह राजा अरसादित्य और आचाम्बिके का तृतीय पुत्र था। उसके दो बड़े भाइयों का नाम पम्मराय और हरिदेव था। लेख में उसके 'नीतिशास्त्रज्ञ, गुणी, सकलसचिवनाथ एवं जिनशासनांबुनिधि सेवक' आदि विशेषण दिये गए हैं।

८-९. मरियाने और भरतः—होय्सल विष्णुवर्धन के सेनानायकों में दो भाई-दण्डनायक मरियाने और भरत या भरतेश्वर भी थे। इनके वंश का परिचय ले० नं० ३०७, ३०८ और ४११ में दिया गया है जिससे ज्ञात होता है कि इसके वंशज होय्सल राजवंश से सम्बन्ध रखते थे। इस कारण इन दोनों भाइयों का पद सर्वाधिकारी, भाण्डिकाण्डार्य तथा प्राणाधिकार्य था। विष्णुवर्धन ने मरियाने दण्डनायक को अपना पट्टदाने (राज्य गजेन्द्र) बनाकर ही उसे सेनापति बनाया था। ये दोनों भाई जैसे शूर वीर थे वैसे ही धर्मिष्ठ थे। लेख में इन्हें 'निरवद्य-स्याद्वादतत्त्वरत्नकुण्डल, नित्याभिषेकनिरत, जिनपूजामहोत्साहनितप्रमोद, दुर्भिक्षदानविनोद' आदि कहा गया है। ले० नं० ३०७ में भरत के अनेक गुणों की प्रशंसा की गई है। वहाँ लिखा है कि उसका धन जिनमन्दिरों के लिए था, दया सभी प्राणियों के लिए थी, उसका अच्छा मन जिनराज की पूजा

में था, औदार्य सज्जन वर्ग के लिए तथा दान सन्मुनीन्द्रों के लिए था। श्रवण-वेल्गोल से प्राप्त ले० नं० ३५४[1] और ३५५[2] से विदित होता है कि उसने श्रवणवेल्गोल में ८० नई वसदियाँ बनवायीं और गंगवाडि की २०० पुरानी वसदियों का जीर्णोद्धार कराया था। इन दोनों भाइयों के गुरु थे देशीगण, पुस्तक गच्छ के आचार्य माघनन्दि के शिष्य गण्डविमुक्त व्रती। ले० नं० ४११ से ज्ञात होता है कि ये दोनों भाई विष्णुवर्धन के बेटे नारसिंह के समय में भी विद्यमान थे। इन दोनों ने ५०० होन्नु देकर उक्त नरेश से सन्दगेरी आदि तीन गाँवों का प्रभुत्व प्राप्त किया था।

१०. ऐचः—गंगराज का भतीजा एवं उसके बड़े भाई का पुत्र ऐच भी विष्णुवर्धन के सेनापतियों में था। उसकी शूरवीरता आदि के सम्बन्ध में विशेष तो नहीं मालुम पर ले० नं० ३०४ (प्रथम भाग १४४) में लिखा है कि उसने कोपण, वेल्गुल आदि स्थानों में अनेक जिन मन्दिर बनवाये और सन् ११३५ में संन्यासविधि से प्राणोत्सर्ग किया। गंगराज के पुत्र बोप्प ने अपने चचेरे भाई की स्मृति में निषद्या बनवाई थी।

११. विष्णु दण्डाधिप—ले० नं० ३०५ से ज्ञात होता है कि विष्णुवर्धन होय्सल का एक और सेनापति था जिसका नाम विष्णु दण्डाधिप या इम्मडि दण्डनायक बिट्टियण्ण था। इसने आधे महीने में ही दक्षिण प्रान्त की विजय कर ली थी। विष्णुवर्धन होय्सल का यह दाहिना हाथ था। यह बचपन से ही उक्त नरेश का प्यारा था। लेख में लिखा है कि किशोरावस्था प्राप्त होने पर नरेश ने इसका बड़े उत्सव के साथ स्वयं ही उपनयन संस्कार कराया, सात आठ वर्ष की आयु के बाद जब वह समस्त शास्त्र विज्ञान में पारंगत हुआ तब उसको अपने प्रधान मंत्री की सर्व लक्षण सम्पन्न पुत्री ब्याह दी और १०–११ वर्ष की उम्र में महाप्रचण्ड दण्डनाथ तथा सर्वाधिकारी का पद दिया।

---

१. प्रथम भाग, ३६८.

२. वही, ११५,

यह सेनापति बड़ा ही धर्मिष्ठ एवं दानी था। इसने कई सार्वजनिक कार्य कराये थे तथा राजधानी दोरसमुद्र में एक जिनालय बनवाया था। इसके गुरु का नाम श्रीपाल त्रैविद्यदेव था जिन्हें उक्त जिनालय के प्रबन्ध और ऋषियों के आहार दान के हेतु उसने एक ग्राम और भूमियां दान में दी थीं।

१२. मादिराज—विष्णु वर्धन का एक जैन मंत्री महाप्रधान मादिराज था। ले० नं० ३१६ में उसके धार्मिक गुणोंकी बड़ी प्रशंसा की गई है। वह श्रीकरण का अधिपति था और अपनी वक्तृता से सभा भवन को प्रभावित किये था। वह कोष का लेखा रखता था। उसके भी गुरु श्रीपाल त्रैविद्यदेव थे। विष्णुवर्धन के उत्तराधिकारी नरसिंह के भी चार सेनापति जैन धर्मावलम्बी थे। वे थे देवराज, हुल्ल, शान्तियण्ण और ईश्वर चमूप।

१३. देवराज—ले० नं० ३२४ में देवराज का उल्लेख है। इसका गोत्र-कौशिक था। लेख में इसे 'श्रीजिनधर्मनिर्मलाम्बरदिनकर' एवं 'श्रीहोय्सल महीशराज्यभूभृन्निलय मणिप्रदीपकलश' कहा गया है। राजा नरसिंह ने उसकी धर्मबुद्धि और स्वामिभक्ति से प्रसन्न होकर उसे सूरनहल्लि गाँव दिया जहाँ उसने जिन चैत्यालय बनवाया जिसके लिए होय्सलदेव ने अष्टविधार्चन और आहार दान के निमित्त १० होन्नु दान में दिये और गाँव का नाम पार्श्वपुर रख दिया। उक्त ले० में उसके गुरु मुनिचन्द्र का नाम दिया है। उन गुरु की पट्टावली भी उक्त ले० में दी गई है।

१४. हुल्ल—नरसिंह होय्सल का द्वितीय सेनापति हुल्ल या हुल्लप था। उस युग में जैन धर्म के उद्धारकों में चामुण्डराय और गंगराज के बाद हुल्लप का ही नाम आता है। इसके सम्बन्ध में जैन शिलालेख संग्रह प्रथम भाग की भूमिका में पर्याप्त लिखा गया है। इस संग्रह में ये ले० नं० ३४८, (१३८) ३६२ (४०) ३६३ (१३७) ३८१ (४८१) ३९६ (९०) इस सेनापति से सम्बन्धित हैं। कोष्ठक में प्रथम भाग के लेखों की संख्या दी गई है। इस सेना-

पति ने होय्सल विष्णुवर्धन, नरसिंह और वल्लाल द्वितीय के राज्य में होय्सल वंश की सेवा की थी।

१५. शान्तियण्ण—ले० नं० ३४७ में उक्त नरेश के एक और जैन सेनापति शान्तियण्ण का नाम मिलता है। वह पारिसण्ण और वम्मलदेवी का पुत्र था। पारिसण्ण मरियाने दण्डनायक का दामाद था। लेख में उसे महाप्रधान, पट्टिस भण्डारि (भालों का अध्यक्ष) कहा गया है। उसने युद्ध में शत्रुओं को परास्त कर अन्त में अपने प्राण दे दिये। उस पर नरसिंह ने उसके पुत्र शान्तियण्ण को करुगुण्ड का स्वामी तथा सेना का दण्डनायक बना दिया। उक्त स्थान में शान्तियण्ण ने अपने पिता की स्मृति में एक बसदि बनवायी और उसकी सुरक्षा के लिए दान दिया। उसके गुरु मल्लिषेण पण्डित थे।

१६. ईश्वर चमूपः—ले० नं० ३५२में उक्त नरेश के राज्य में एक जैन सेनापति का और उल्लेख है। वह है महाप्रधान, सर्वाधिकारी, दण्डनायक एरेयङ्ग का पादोपजीवी ईश्वर चमूप। ये दोनों श्वसुर दामाद थे। ईश्वर चमूपति ने जिनालयों की मरम्मत करवायी और उसकी पत्नी माचियक्क ने मध्दवोलल नामक पवित्र तीर्थ में एक जिन मन्दिर एवं एक तालाव बनवाया। उसके गुरु का नाम गण्डविमुक्त मुनिप था।

नरसिंह के उत्तराधिकारी वल्लाल द्वितीय के समय भी होय्सल राज्य का भाग्य निर्माण करने वाले कुछ जैन सेनापति थे।

१७. रेचरसः—ले० नं० ४६५में उल्लेख हैकि वल्लालदेवकी रत्नत्रय और धर्म में दृढ़ता सुनकर कलचूर्य कुल के सचिवोत्तम रेचरस ने वल्लालदेव के चरणों में आश्रय पाकर अरसियकेरे में सहस्रकूट जिन की प्रतिमा स्थापित की और मन्दिर की व्यवस्था के लिए राजा वल्लाल से हन्दस्हालु ग्राम प्राप्त कर अपने वंश के गुरु सागरनन्दि सिद्धान्त देव को सौंप दिया। उक्त जिनालय का नाम एल्कोटि जिनालय था। इस रेचरस के सम्बन्ध में ले० नं० ४०८ में लिखा है कि वह २६ वर्ष पहले सन् ११८२ में कलचूरिवंश के नरेश विज्जल का दण्डाधिनाथ था। लेख में इसकी अनेक विध प्रशंसा एवं वंश का परिचय दिया गया है।

उस लेख में लिखा है कि रेचण को कलचुरि नरेशों से बहुत से देश मिले थे उनमें नागर खण्ड था। वहाँ मागुडि नामक स्थान में, शान्तिनाथ जिनालय के लिए उसने दानादि दिये थे। श्रवणबेल्गोल से प्राप्त एक लेख नं० ४२६ (प्रथम भाग ४७१) से ज्ञात होता है कि उसने सन् १२०० के लगभग शान्तिनाथ भगवान् की प्रतिष्ठा करायी और उसदि को कोल्हापुर के सागरनन्दि को सौंप दिया। लेख में उसे 'बहुधैकबान्धव' कहा गया है।

१८. बूचिराजः—होय्सल बल्लाल द्वितीय का दूसरा सेनापति बूचिराज था। ले० नं० ३७६ में उसे मन्त्रीश्वर एवं सांधिविग्रहिक कहा गया है। उसमें चतुर्विध पाण्डित्य था तथा वह संस्कृत और कन्नड दोनों भाषाओं में कविता कर सकता था। इसके अतिरिक्त उसकी धर्मिष्ठता की अनेक विध प्रशंसा की गई है। उसने सन् ११७३ में राजा बल्लाल के पट्टबन्धोत्सव के समय सीगेनाड के मारिकलि स्थान में त्रिकूट जिनालय बनवाया और मन्दिर की पूजा, जीर्णोद्धार एवं आहार दान आदि के लिए अपने गुरु बालचन्द्र सिद्धान्त देव को मारिकलि ग्राम भेंट में दिया।

१९. चन्द्रमौलिः—उक्त बल्लाल नरेश के राज्य में जैनधर्म के प्रति उदारता दिखलाने वाला एक शैव मंत्री चंद्रमौलि था। ले० नं० ४०६ (प्रथम भाग ४६४) में वह भारत शास्त्र, आगम, तर्कव्याकरण, उपनिषद्, नाटक, काव्य आदि में विद्वन्मान्य था तथा बल्लालनृप के दाहिने हाथ का दण्डस्वरूप था। यद्यपि वह स्वयं कट्टर शैव था पर उसकी पत्नी आचलदेवी परम जैन धर्मावलम्बिनी थी। उस देवी ने श्रवणबेल्गोल तीर्थपर बड़ी भक्ति के साथ पार्श्वनाथ का मन्दिर निर्माण कराया और मंत्री चंद्रमौलि ने राजा बल्लाल से स्वयं प्रार्थना कर उक्त जिनालय की पूजादि के लिए बम्मेयनहल्लि नामक गाँव दान में दिलाया।

२०. नागदेवः—बल्लाल द्वितीय के मंत्रियों में एक जैन मंत्री नागदेव भी था। वह बोम्मदेव सचिव का पुत्र था। ले० नं० ४२८ (प्रथम भाग १३०) में लिखा है कि वह जैन मन्दिरों का प्रतिपालक था तथा राजा ने उसे पट्टन-

स्वामी बनाया था। उसके गुरु का नाम नयकीर्ति सिद्धान्तदेव था। उसने सन् ११९५ में श्रवणबेल्गोल तीर्थ पर पार्श्वदेव के आगे नृत्यरंगशाला एवं शिला-कुट्टिम बनाकर अपने दिवंगत गुरु की स्मृति में एक निषिधि बनवायी थी। जिनधर्म के लिए नागदेव की स्थायी कृति थी श्रवणबेल्गोल में 'श्रीनिलय' नगर-जिनालय का निर्माण तथा उसके लिए भूमिदान। उसके प्रतिपालन के लिए उसने खण्डलि और मूलभद्र के वंशज श्रवणबेल्गोलवासी वणिजों को नियुक्त किया था।

२१. महादेव दण्डनाथः—जैन मंत्रियों में उस मंत्री का नाम भी उल्लेखनीय है। वह वल्लाल द्वितीय के महामण्डलेश्वर एक्कलरस का महाप्रधान था। उसके गुरु का नाम सकलचन्द्र भट्टारक था। लेख नं० ४३१ में लिखा है कि उसने सन् ११९८ में उद्धरे नामक स्थान में एक अनुपम जिनालय बनवाया और उसका नाम एरग जिनालय रखा और उक्त जिनालय की पूजा, जीर्णोद्धार के हेतु स्वयं बहुत प्रकार के दान दिये तथा एक्कलरस आदि से भी विविधदान दिलाये।

२२. कम्मट माचय्यः—सन् १२०० के लगभग के कुम्बेयनहल्लि ग्राम से प्राप्त एक ले० नं० ४३७ (प्रथम भाग ४९५) में एक और जैन मंत्री का उल्लेख है। वह है महाप्रधान, सर्वाधिकारी, तन्त्राधिष्ठायक, कम्मट माचय्य। उसने उक्त सन् में अपने श्वसुर के साथ कुम्बेयनहल्लि नामक ग्राम में परिवादि-मल्ल जिनालय के लिए दान दिया था। उक्त लेख में यह भी लिखा है कि महाप्रधान, सर्वाधिकारी हरियण्ण ने कुम्बेयनहल्लि के देव की प्रतिष्ठा की थी।

२३. अमृतः—ले० नं० ४५२ से विदित होता है कि वल्लाल द्वितीय के अमृत नाम का एक और दण्डनायक था जो कि महाप्रधान, सर्वाधिकारी, महापसायस (आभूषणाध्यक्ष) एवं भेरुदन मोत्तदिष्टायक (उपाधिधारियों का अध्यक्ष) था। लेख में उसे कविकुलज और चतुर्थवर्ण (शूद्र) का कहा गया है। उसे धार्मिक, शुभमति, पुण्याधिक, मंत्रिचूडामणि, सौम्यरम्याकृति कहा गया है। उसने कक्कुलगेरे में सन् १२०३ में एक्कोटि नामक जिनालय बनवाया और सभी

नायकों, नागरिकों और किसानों के सहित शान्तिनाथ भगवान् की अष्टविधपूजन और मुनियों को आहारदान देने के लिए भूमि प्रदान की। उसने अपने जन्म स्थान लोक्कुण्डी में अपने भाइयों के साथ एक मंदिर, एक बड़ा तालाब एक सत्र स्थापित किया, एक अग्रहार और एक प्याऊ बैठायी। वह अजैनों के प्रति भी बड़ा उदार था। उसने अपने जन्मस्थान में अमृतेश्वर का एक मन्दिर बनवाया।

२४. ईचणः—सन् १२०५ के एक ले० नं० ४५१ में हम ईचण का नाम पाते हैं। इसने होय्सल बल्लाल द्वितीय के राज्यकाल में बेलगवल्लिनाड में एक ऐसा जिनालय बनवाया जैसा कि उस प्रदेश में न था और इस तरह उस स्थान को शोभन बना दिया।

२५. माधवः—ले० नं० ५४० में माधव दण्डनायक का उल्लेख मिलता है। इसे वीरमहदेवण्ण के कुल का बतलाया गया है। उसके गुरु माधवचन्द्र भट्टारक थे। उसने सन्त कौटुम्बिक कर्मों को छोड़कर, जिनमन्दिर बँधवाकर समाधिमरण पूर्वक स्वर्ग को प्रयाण किया। उक्त लेख में दूसरे दण्डनायक नाचिगौड का भी उल्लेख है। उसके गुरु भी माधवचन्द्र भट्टारक थे। उसने भी समाधिविधि से स्वर्ग प्राप्त किया।

२६. कुचिराजः—ले० नं० ५११ देवगिरि के यादव नरेश महादेव के एक जैन मंत्री कुचिराज का उल्लेख है। वह महसेन मुनि के शिष्य पद्मसेन का शिष्य था। लेख में उक्त मंत्री के वंश का परिचय दिया गया है। उसने अपनी पत्नी लक्ष्मीदेवी के स्वर्गस्थ होने पर उसके नाम पर एक जिनालय बनाकर सेनगण के पोगरि गच्छ को दे दिया तथा अपने नरेश से उक्त जिनालय के प्रबन्ध आदि के लिए एक ग्राम दिलाया और स्थानीय गौड लोगों से मिलकर स्वयं दान दिया और दिलाया।

२७. इरुगप्पः—विजयनगर साम्राज्य के उन्नायकों को भी जैनमंत्रियों और सेनापतियों ने अपनी सेवा से उपकृत किया था। उनमें इरुगप्पका नाम विशेष उल्लेखनीय है। इसके सम्बन्ध में प्रथम भाग की भूमिका में पर्याप्त लिखा गया है। इस संग्रह

में इससे सम्बन्धित तीन ले० नं० ५८१, ५८५ तथा ५८७ और द्रष्टव्य है। इन लेखों से विदित होता है कि वह महामंत्री और सेनापति दोनों था। ले० नं० ५८५ उसके पिता चैच (चेचप्प) दण्डेश और उसका परिचय है तथा उसके गुरु सिंहनन्दि की पट्टावली दी गई है। उक्त लेख में उसके द्वारा कुन्थुनाथ जिनालय की स्थापना का उल्लेख है। अन्यत्र उन लेखों से मालुम होता है कि इस मंत्रिवर ने नानार्थनाममाला की रचना की थी। काञ्जीवरम् के समीप तिरुप्प रुत्तिक्कुण्रु से प्राप्त दो लेखों (५८१ और ५८७) में उसके दान एवं मण्डप निर्माण का उल्लेख है।

२८. गोप—देवराय प्रथम का एक जैन सेनापति गोप था (६०६)। ले० नं० ६१० में इसके वंश का परिचय तथा उसे नागरखण्ड का शासक लिखा है। उसके दो जैन गुरु थे पण्डिताचार्य और श्रुत मुनिप, इनमें से एक उसको अनीति के मार्ग से हटाता था तो दूसरा अच्छे मार्ग पर लगाता था। लेख में लिखा है कि गोप ने समाधिविधि से शरीर त्याग किया और मुक्ति प्राप्त की।

इस तरह और भी कितने जैन धर्म भक्त सेनापतियों और मंत्रियों के चरित्र इन लेखों में छिपे पड़े हैं।

६. जनवर्ग एवं जैनधर्म

दक्षिण में जैन धर्म का जब से आगमन हुआ था तब से जैनाचार्यों ने जितना अपने धर्म के प्रसार के लिए प्रयत्न किया उतना ही देशहित के लिए भी। इस कार्य में उन्होंने बुद्धिमत्ता पूर्वक ऐसी नीति अपनायी कि जो जनता की प्रत्येक श्रेणी के लिए उपादेय एवं कल्याण कर थी। उन्होंने कई राज्यवंशों के उदय होने में सहायक बनकर राजाओं का उदार राजकीय संरक्षण प्राप्त किया था। सामन्तों और सेनापतियों को अपने धर्म से प्रभावित कर प्रान्तीय केन्द्रों में जैन धर्म की नींव दृढ़ कर ली थी। इसी तरह जन वर्ग को भी जैनधर्म की परिधि में लाकर जैनधर्म की आधार शिला मजबूत कर दी थी। मध्यमवर्गीय

वाणिज्य संघ-वीर वणिज, मुम्मुरिदण्डनायक, एवं उभय देशीय—तथा प्रकीर्णक वैश्य समाज की प्रचुर धन राशि ने अनेक विशाल जैन मन्दिरों, मठों एवं मूर्तियों के निर्माण में सहायता दी, जहां से जैनधर्म की जयगाथायें चारों ओर प्रध्वनित हो सकीं। जैन मुनियों ने सर्व साधारण के हितार्थ शास्त्र, आहार, औषधि और अभय दानों की मांग की जिससे जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

उत्तर भारत में यद्यपि जैनों को राज्याश्रय बहुत कम मिला है फिर भी जैनधर्म को जागृत करने में जैनाचार्य प्रारम्भ से सचेष्ट थे यह बात मथुरा से प्राप्त अनेकों लेखों से तथा उत्तर एवं पश्चिम भारत से प्राप्त लेखों से भलीभांति विदित होती है। पर दक्षिण भारत में ८वीं ९वीं शताब्दी से जैन धर्म का प्रचार कार्य द्रुतगति से चला था ऐसा प्रस्तुत संग्रह के अनेकों लेखों से ज्ञात होता है।

९ वीं शताब्दी के बाद ऐसे अनेक लेख हैं जिनमें जनवर्ग द्वारा जैनधर्म की सहायता के उदाहरण भरे पड़े हैं। पर इसके पहले भी जनवर्ग का सहयोग था, इसके २–४ उदाहरण लेखों से प्राप्त होते हैं। ले० नं० १०७ से विदित होता है कि दोण गामुण्ड और एल गामुण्ड ने एक जिनालय निर्मापित किया था और पूजा के लिये कुछ खेत आदि लगा दिये थे। ले० नं० ११५ और १२० में भी ऐसे उदाहरण मिलते हैं।

ई० सन् ९०३ के एक ले० नं० १३७ में वैश्यजाति के चन्दराय के पुत्र चीकार्य का उल्लेख है जिसने मन्दिर बनवाकर भूमिदान दिया था। ले०नं० १९३ से विदित होता है कि एक निरवद्य नामक गृहस्थ ने मेलस चट्टान पर निरवद्य जिनालय खड़ा किया और उसके संरक्षण के लिए, राजा की कृपा से प्राप्त एक गांव लगा दिया तथा एडेमले हजार प्रान्त के कुछ किसानों ने अपने प्रत्येक खेत की फसल से कुछ धान्य दान रूप में उक्त जिनालय को हमेशा के लिए दे दिया।

दक्षिण भारत में जैन धर्म की उच्च स्थिति का वास्तविक रूप हमें वणिक् वर्ग की उक्त धर्म के प्रति उत्कंठा, आस्था एवं भक्ति में दिखता है। इस तरह हम देखते हैं कि वैश्यवर्ग के एक मुखिया पट्टनस्वामी नोक्कय्यसेट्टि ने सन् १०६२

(१६७) में हुम्मच नामक स्थान में एक जिनालय बनवाया और १०० गद्याण में राजा से एक गांव खरीद उक्त मन्दिर की सुरक्षा के लिये लगा दिया। उक्त ले० में तथा लेख नं० २१२ में नोकय्य द्वारा जैन धर्म की सेवाओं का अच्छी तरह वर्णन है।

वणिक् वर्ग का महत्त्व इस बात से भी मालुम होता है कि वे जैन मंदिरों के संरक्षक भी थे। श्रवणबेल्गोल का नगर जिनालय सन् ११६५ में मंत्री नाग देव ने बनवाकर खण्डलि और मूलभद्र के वंशज वीर वणिजों (एक व्यापारी संघ) के प्रतिपालन में दे दिया था (४२८)। यह जिनालय एक सौ वर्षों से अधिक इन्हीं व्यापारियों के प्रतिपालन में बराबर रहा यह बात हमें ले० नं० ५२७, ५३३ से मालुम होती है।

ये सेठ लोग केवल व्यापारी ही न थे, उनमें से बहुत से अच्छे विद्वान होते थे। कुछ ऐसे विद्वान् सेठों का उल्लेख ले० नं० २१८ में है। उक्त लेख का माचिसेट्टि तर्क व्याकरण में प्रवीण व्याख्या करने में चतुर, धर्म ग्रन्थों के मर्म को जानने वाला तथा धर्म कार्यों में व्यय करने वाला था। उसी तरह उसका छोटा भाई कालिसेट्टि था।

कुछ शिलालेखों में ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहाँ कि जैन लोग ब्राह्मणों को भी दान देते थे। ले० नं० २२१ में ऐसे ही एक विणेय वम्मि सेट्टि हैं जिन्होंने इसूर नामक स्थान में एक जिनालय बनवाकर उसे दान दिया और अग्रहार के हजारों ब्राह्मणों के लिए एक सत्र खोल दिया।

दान के ऐसे कार्यों में राज्यकी ओर से भी प्रोत्साहन मिलता था। ले० नं० (सन् १०८५) में लिखा है कि एक दानी सेठ नोकय्य को त्रिभुवन मह गंग पेर्म्माडि देव ने तट्टकेरे स्थान में आकर उस नगर का सम्पूर्ण शासन उसे सौंप दिया। वहाँ उक्त सेठ ने जैन मन्दिर, तालाब और सत्र बनवाये। उसने अन्य स्थानों में भी दो मन्दिर बनवाये थे। राजा ने उक्त सेठ के इन कार्यों से प्रसन्न होकर उसे राज्य सम्मान से सम्मानित किया और ८ गाँवों का मुखिया बना दिया। इससे उक्त सेठ का उत्साह और बढ़ा और उसने ४ मन्दिर औ

बनवाये। राजा ने इस कार्य के लिए अपनी आय का कुछ हिस्सा उसे दे दिया।

दान के ऐसे कार्यों में राजघराने के व्यापारी और दूसरे पदाधिकारी भी उत्साहपूर्वक भाग लेते थे। ले० नं० २५१ से ज्ञात होता है कि सन् ११११ में शिमोगा के एक जिनालय के लिए ब्रह्म गाहुण्ड तथा नाडु प्रभु ने ६ मकान १ तेल की चक्की और कुछ दान दिया था। इसी तरह होय्सल नरेश के राज सेठ पोय्सलसेट्टि और नेमिसेट्टि ने भी अनेक दान दिये थे (२६८)। ले० नं० ३८४ में एक बाट अधिकारी द्वारा दान का उल्लेख है।

मध्यकालीन दक्षिण भारत में जैन गौंडों की अपेक्षा वीर बणिजों की धार्मिकता बड़े महत्व की थी। ये लोग अपने संगठन के कारण सब के विश्वासपात्र होते थे और जनता के लिए दोनों के संपर्क की यह हमें ले० नं० ४२८ (प्र० मु० ११०) से विदित होती है। अपने व्यापार प्रसंग में वे जहां जाते वहां दान देते थे। ले० नं० ४०८ से विदित होता है कि चिक्कनागडि के एक मन्दिर के लिए सन् ११८२ में अनेक देशों में व्यापार करने वाले बनञ्जु और मुन्नूरिदण्ड व्यापारियों ने अपने माल पर की चुंगी दान में दे दी थी।

इस युग में जैन धर्म का उपासक केवल वणिक् वर्ग ही न था बल्कि कृषक वर्ग भी भव्य श्रावक था। ले० नं० ४२६ में लिखा है कि शान्तिनाथ वसदि के दान की रक्षा कोरडुकेरे के किसानों और गाँव के ६० कुटुम्बों ने की थी। इसी तरह ले०नं० ४३८ में उल्लेख है कि वसदि के दानादि की प्रबंधक १८ जातियाँ थीं। ले० नं० ३३८, ३८४ और ५२५ में गौड किसानों द्वारा दानादि का उल्लेख है। ले० नं० ४७८ में गाँव के किसानों द्वारा जिन पूजा के लिए सुपारी, पान एवं तेल के दान का उल्लेख है।

इस साधारण में जैन धर्म के प्रति प्रेम एवं भक्ति के परिचायक अनेक लेख प्रस्तुत संग्रह में हैं। ले० नं० २०१ (सन् १०६३) से ज्ञात होता है कि छेनी और बसूला को पकड़ने वालों में प्रधान अर्थात् पाषाण शिल्पियों में प्रधान विद्वान् पोय्सलाचारि ने एक वसदि बनवायी थी। ले० नं० ३०१ में उल्लेख है कि

तेलीदास गौण्ड ने भगवान के लिए पुरोहित शान्तिदेव को भूमिदान दिया। इसी तरह ले० नं० ७२४ में एक जैन श्रावक तेली का उल्लेख है। ले०नं० ३३४ में गोलोज नामक एक सुनार को जैन श्रावक बतलाया गया है। ले० नं० १४४ में चामेकाम्बा नामक गणिका को श्रावकी के रूप में लिखा है।

भूमियों को खरीदना तथा उन्हें सब प्रकार के दान से मुक्त कराके जैन संस्थाओं को दान रूप में दे देना, उस युग की विशेषता थी। श्रवणबेल्गोल से प्राप्त ले० नं० ५१२ (प्रथम भाग ९६) में उल्लेख है कि किसी शम्भुदेव ने चन्द्रप्रभ मुनि से कर मुक्त जमीन खरीदकर गोम्मटदेव और चौवीस तीर्थंकरों की दुग्ध पूजा के लिए भेंट में दे दी। इस तरह ले० नं० ५२८ (प्र० भाग १२९) से ज्ञात होता है कि बेल्गोल के समस्त जौहरियों ने नगर जिनालय के आदिदेव की पूजा के लिए सब करों से मुक्त कराकर जमीनें दान में दीं।

दान पूजन के अतिरिक्त जनता के जैन धर्म पर श्रद्धा के और दूसरे उदाहरण मिलते हैं। पुरुष वर्ग तथा स्त्री वर्ग दोनों अपने धार्मिक जीवन को उचित रीति से व्यतीत कर जीवन के अन्तिम क्षणों को जैनधर्म विहित समाधि विधि से समाप्त करते थे। इस विषय को प्रकट करने वाले अनेकों लेख इस संग्रह में हैं उनकी स्मृति में स्मारकपाषाण पर वे लेख उत्कीर्ण पाये गये हैं। ऐसे निमित्तों पर भूमि आदि के दानों का उल्लेख भी इन लेखों में रहता है।

९७. जैनधर्म प्रतिपालक महिलाएँ

जैन धर्म पर असीम एवं दृढ़ श्रद्धा और भक्ति रखने वाली दक्षिण भारत की अनेक जैन महिलाओं का इतिहास इन लेखों में सुरक्षित पड़ा है। ये महिलाएँ सामान्य वर्ग के सिवाय बड़े बड़े राजघरानों, सामन्त परिवारों, महामंत्रियों और सेनापतियों की गृहलक्ष्मियाँ थीं।

ये महिलाएँ जिनालय बनवाती थीं और उनके इस पुण्य कार्य में उनके आदि सहायता करते थे। ले० नं० १२१ से ज्ञात होता है कि निरुगुण्ड

परिवार की एक महिला कुन्दाच्चि ने पुण्य वृद्धि के लिए लोक तिलक नाम का एक जिनालय बनवाया था और उसके लिए उसके पति ने दान दिया था। कुन्दाच्चि पल्लव नरेश की नातिन तथा सगर कुल के राजा मरुवर्मा की पुत्री थी।

इन महिलाओं द्वारा अनेक प्रकार के प्रभावनात्मक कार्यों का उल्लेख भी मिलता है। सन् १०७७ में कदम्ब वंश के राजा कीर्तिदेव की पट्टमहिषी माललदेवी ने कुप्पट्टूर में पार्श्वदेव चैत्यालय का पद्मनन्दि सिद्धान्त देव से सुसंस्कार कराकर तथा यम, नियम, ध्यान, धारणा, शील, गुण सम्पन्न ब्राह्मणों को बुलाकर उनकी पूजाकर उक्त चैत्यालय का नाम ब्रह्म जिनालय रखा। उक्त रानी ने न केवल उन्हीं से दान दिलवाया बल्कि कोटीश्वर मूल स्थान के पुरोहितों से और कुप्पट्टूर के पड़ोस के १८ मन्दिरों के पुरोहितों से उक्त चैत्यालय के लिए दान दिलवाया तथा रानी ने राजा कीर्ति देव से भी एक गांव दान में दिलवाया (२०६)।

ऐसे प्रभावनात्मक कार्यों को करने में शान्तरकुल से सम्बन्धित चट्टल देवी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। वह जैन नृप रक्कसगंग की बेटी तथा पल्लवराज काडुवेट्टि की पत्नी थी। लेखों से मालुम होता है कि उसके जीवन काल में उसके पति पुत्रादि मर चुके थे। उसने अपनी मृत छोटी बहिन के पुत्रों को, जो कि शान्तरकुल के राजकुमार थे, अपना स्नेह भाजन बनाया था। उन शान्तर कुमारों के साथ उसने पोम्बुच्चपुर (हुम्मच) में अनेक जिनालय बनवाये, उनमें से एक पंचकूट बसदि था जिसका दूसरा प्रसिद्ध नाम 'उर्वीतिलक जिनालय' था। यह जिनालय उसने उन दिवंगत आत्माओं की स्मृति में बनवाया था। चट्टल देवी के अनेक गुणों और बहुविध दानों की प्रशंसा ले० नं० २१३, २१४, २१५ और २१६ में की गई है। ले० नं० २४८ में उल्लेख है कि सन् ११०३ में उक्त चट्टल देवी ने, जिसे लेख में 'जिन समय कामधेनु, जिनसमयनिदान-दीपवर्ति' कहा गया है, अपने तथाकथित पुत्रों के साथ पञ्चवसदि के लिए एक

गाँव दान में दिया तथा अपनी बहिन वीरव्वरसि की स्मृति में एक बसदि की नींव का पत्थर जमवाया।

ले० नं० ३२६ में शान्तर वंश से सम्बन्धित पम्पादेवी नामक एक महिला का उल्लेख है। उसने एक ही महीने के भीतर उर्वीतिलक जिनालय के समीप शासन देवता का मन्दिर बनवाकर तैयार कराया था। उसकी पुत्री का नाम वाचल देवी था जो दान देने में बहुत उदार थी। उक्त पम्पा देवी, उसके भाई श्रीवल्लभ एवं वाचल देवी ने पञ्च बसदि के उत्तरीय पट्टसाले का निर्माण कराया था।

गंग वंश की महिलाएँ भी जिन धर्म के लिए उदार दान देने में प्रसिद्ध थीं। उदाहरण के लिए सन् १११२ के लगभग गङ्क महादेवी ने, जो कि महामण्डलेश्वर भुजबल गंग पेर्म्माडि देव की पट्टरानी थीं, अपने छोटे भाई पट्टिगदेव के लिए गङ्गवाडि का मुकुट धारण किया। वह समस्त रानियों और राजाओं में अधिक प्रतिष्ठित थी। भुजबल गंग की दूसरी रानी का नाम वाचल देवी था। उसने बन्निकेरे नामक स्थान में एक सुन्दर जिनालय बनवाया, उसके लिए उक्त नरेश ने गङ्क महादेवी, उनके पुत्रों तथा वाचल देवी ने समस्त मंत्रियों एवं नाड़ प्रमुखों की उपस्थिति में सब करों एवं चुङ्गियों से मुक्त कराकर अनेक प्रकार के दान दिये–(२५३)। ले० नं० २६७ में गङ्कदेवी की प्रशंसा है।

होय्सल वंश की राज महिलाएँ भी जैन धर्म की सेवा में किसी से कम न थीं। इन महिलाओं में शान्तलदेवी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। यह होय्सल वंश के प्रतापी नरेश विष्णुवर्धन की रानी थी। श्रवण बेल्गोल से प्राप्त एक ले० न० २८३ (प्रथम भाग ५६) में और कई दूसरे लेखों में उसके सौन्दर्य, बुद्धि, धार्मिकता एवं भक्ति आदि गुणों की बड़ी प्रशंसा की गई है। उसका पिता कट्टर शैव सम्प्रदायी था पर उसकी माँ कट्टर जैन थी। शान्तलदेवी गीत, वाद्य, नृत्य में प्रवीण तथा अपनी सुन्दरता के लिए विख्यात थी (२५७. प्रथम भाग ६२)। उसके गुरु का नाम प्रभाचन्द्र मुनीन्द्र था। उसने सन् ११२३ में शान्ति जिनेन्द्र प्रतिमा बनवाई और गन्धवारण बसदि का निर्माण कराकर, अभिषेकादि कर्म

के लिए एक तालाब बनवाया और अपने पति विष्णुवर्धन की आज्ञा से प्रभाचन्द्र मुनीन्द्र को एक गांव दान में दिया। उसे लेख में 'सम्यक्त्व चूड़ामणि एवं जिन-समयसमुदितप्राकार' कहा गया है। जैन व्रतों के प्रति दृढ़ श्रद्धालु उस देवी ने सन् ११३१ में शिव गंग नामक स्थान में सल्लेखना विधि से देहत्याग किया। ले० नं० २८६ (प्रथम भाग ५३) में लिखा है कि उसके माता पिता ने शान्तल देवी के पश्चात् शरीर त्यागा था। उसकी माँ के सम्बन्ध में उक्त लेख से ज्ञात होता है कि उसने श्रवणबेल्गोल में आकर कठोर संन्यसन विधि को धारण कर एक मास तक अनशन करके देहत्याग किया था।

शान्तलदेवी का अनुकरण करने वाली उसी घराने में हरियब्बरसि नामक राजकुमारी थी। वह विष्णु वर्धन की पुत्री और कुमार बल्लाल देव (नरसिंह प्रथम) की बहिनों में सबसे बड़ी थी। उसने सन् ११२६ में (२६३) हन्तियूर नामक स्थान में नाना रत्नों से जटित शिखरों से समन्वित एक विशाल जैन मन्दिर बनवाया था, तथा मन्दिरों की मरम्मत, पूजा प्रबन्ध, ऋषि और वृद्ध स्त्रियों को आहार देने के लिए गुत्ति स्थान के चिन्न नामक व्यक्ति एवं वंम्म नामक मछुए से खास कीमत देकर जमीन खरीद ली और अपने पिता से सब करों से मुक्त कराकर अपने गुरु गण्डविमुक्त सिद्धान्तदेव को भेंट में दे दी।

राजघरानों की ये महिलायें जैन धर्म की भक्ति में ऐसी ओतप्रोत रहती थीं कि अपने जीवन के अन्तक्षणों को सुधारने के लिए जैन धर्म विहित कठोर संन्यास विधि से देह त्याग करने में भी न हिचकती थीं। ले० नं० १५० की चक्कियब्बे नामक ऐसी ही वीराङ्गना थी। वह राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण तृतीय के शासन काल में अपने पति सत्तरस नागार्जुन के स्वर्गवास होने पर नागर खण्ड की शासिका नियुक्त की गई। वह जैन शासन और प्रजाशासन में निपुण थी। एक बार वह अनिवार्य रोग से ग्रस्त हो गई। उसने अपनी पुत्री पर शासन का भार सौंप संन्यास विधि से देह त्याग दिया। ले० नं० १५० में उल्लेख है कि राजा पडियर दोरपय्य की ज्येष्ठ रानी एवं बुतुग (गंग नरेश?) की बड़ी बहिन

पाम्बव्वे ने, जो अभयनन्दि पण्डितदेव की शिष्या नागव्वेकन्ति की शिष्या थी, केशलोंच करने के बाद तप के पूरे ३० वर्ष पूर्ण किए और पांच अणुव्रतों (?) को धारण कर दिवंगत हुई। लेख में उसके व्रत एवं तपस्या की प्रशंसा है।

कोङ्गाल्व वंश की जैनधर्म के प्रति भक्ति सुविदित है। उक्त वंश के राजा राजेन्द्र कोङ्गाल्व की मां पोन्नव्वरसि ने सन् १०५० में एक वसदि बनवायी थी, और उसमें अपने गुरु गुणसेन पण्डितदेव की मूर्ति स्थापित की थी तथा सन् १०५८ में उसने उक्त वसदि को भूमिदान दिया था (१८८, १८९)। ले० नं० ५६० में कोङ्गाल्व वंश की एक और महिला नुगुणिदेवी का नाम दिया गया है जिसने अपनी माता के पुण्यार्थ एक प्रतिमा की स्थापना की और भूमिदान दिया।

जैन सेनापतियों की पत्नियों का भी जैनधर्म की सेवा में बड़ा हाथ था। इनमें सबसे उल्लेखनीय नाम है सेनापति गंगराज की पत्नी लक्कले या लक्ष्मीमती का। वह लक्ष्मीमती दण्डनायकिति कहलाती थी। उसे लेख नं०२५८ (प्रथम भाग, ६३, में गंग सेनापति के 'कार्ये नीतिवधू' और 'रणे जयवधू' कहा गया है। उसने सन् १११८ में श्रवणबेल्गोल में एक जिनालय बनवाया था। ले० नं० २६८ (प्रथम भाग ५६) से ज्ञात होता है कि सेनापति गंगराज ने अपने राजा विष्णुवर्धन से एक गांव पारितोषिक रूप में पाकर अपनी माता पोचल देवी एवं अपनी भार्या लक्ष्मी देवी द्वारा निर्मापित जैन मन्दिरों के रक्षार्थ अर्पण किया था। लक्ष्मीमति ने भी आहार, अभय, औषधि और शास्त्र इन चारों दानों को देकर 'सौभाग्यखानि' पद पाया था (२५५, प्रथम भाग, ४७)। ले० नं० २७६ (प्रथम भाग, ४८) में लक्ष्मीमति के रूप, गुण, शील आदि की प्रशंसा की गई है। इस धर्मपरायण महिला ने सन् ११२१ में संन्यास विधि पूर्वक शरीर त्यागा था। सेनापति गङ्गराज ने अपनी साध्वी पत्नी की स्मृति में एक निषद्या बनवा दी थी।

गङ्गराज के बड़े भाई का नाम बम्मदेव चमूप था। इसकी पत्नी जक्कणब्बे थी जो कि दण्डनायकीति कहलाती थी। वह सेनापति बोप्प की माता थी तथा शुभचन्द्रदेव की शिष्या थी। प्रथम भाग के ले० नं० ४४६ और ४८६ से ज्ञात

होता है कि उसने मोक्षतिलक नामक व्रत किया था और पाषाण पर नयणदेव की मूर्ति खुदवायी थी। उसी वर्ष उसने श्रवणबेलगोल में मूर्ति की प्रतिष्ठा करायी एवं वहाँ एक तालाब खुदवाया था। ले० नं० २८५ (प्रथम भाग, ४३) में इस महिला की बड़ी प्रशंसा है।

ले० नं० २८८ से एक और जैनधर्म भक्त महिला का नाम ज्ञात होता है। वह है कालियक्कब्बे, जो कि चालुक्य नरेश त्रिभुवनमल्ल के सामन्त पाण्ड्य भूपाल के सेनापति सूर्य की पत्नी थी। इसने सन् १२२८ में सान्दनूर में एक सुन्दर जिनालय बनवाया और पूजा के हेतु तथा पुजारी की आजीविकार्थ मन्दिर के पुरोहित को कुछ भूमि दान में दे दी।

ले० नं० ३१३ में हमें दानशील तीन महिलाओं के नाम मिलते हैं। गंग नरेश मारसिंह की छोटी बहिन सामियक्करसि ने उद्धरे नामक स्थान में अनेक जैन मुनियों को दान दिलाया और पद्मावसदि जिनालय को बनाया था, तथा बसदि के लिए सुवर्णविलि नामक ग्राम दान में दिया था। उसी लेख में कनकियब्बरसि नामक एक महिला का उल्लेख है। उस महिला ने जहाँ जिन मन्दिर नहीं थे वहाँ जिन मन्दिर बनवाये और जहां जैन यतियों को आमदनी के क्षेत्र नहीं थे वहां उसने दान दिये। तीसरी महिला शान्तियक्क ने, जो कि वोप्प दण्डेश की मन्त्रीजी एवं केतिसेट्टि की पत्नी थी, उद्धरे में एक बसदि बनवायी।

ले० नं० ३३६ में जैन धर्म परायणा दो बहिनों का नाम आता है। वे हैं चक्कब्बे और पद्मियक्क। चक्कब्बे के विषय में लिखा है कि वह होय्सल नरेश नरसिंह के पुराने सेनापति चाविमय्य की पत्नी थी। उसने हेरगू में एक जिनालय बनवाकर पार्श्वनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित करायी तथा पूजनादि प्रबन्ध के लिए नरसिंह से भूमि का दान भी ले लिया था। इसी तरह ले०नं० ३५२ में ईश्वर चमूप की पत्नी मालियक्क द्वारा जिन मन्दिर निर्माण एवं भूमिदान का उल्लेख है। ले० नं० मालियक्क को अन्तनून गुणरत्नमण्डन एवं चातुर्वर्णसमुदयैकशरण कहा गया है।

जैन धर्म पर अचल श्रद्धा रखने वाली एक विशिष्ट महिला आचल देवी का उल्लेख करना यहाँ आवश्यक है। वह शैव धर्म को मानने वाले सेनापति चन्द्र-मौलि की पत्नी थी। वह अपने चार प्रकार के दान के लिए विख्यात थी। उसके इस कार्यों में उसके पति ने कभी बाधा नहीं दी बल्कि धार्मिक उदारता के कारण उसने सहायता ही की है। आचल देवी ने श्रवणबेल्गोल में एक जिनालय बनवाया और उसके पति ने अपने नरेश होय्सल बल्लाल से बम्मेयन हल्लि नामक गांव दान में दिलाया (ले० नं० ४०३, प्रथमभाग १२४)। ले० नं० ४०४ (प्रथम भाग १०७) से ज्ञात होता है कि वीर बल्लाल ने उक्त महिला की प्रार्थना पर वेक्क नामक ग्राम भी गोम्मटेश्वर की पूजा के हेतु दिया था।

मंत्री एचण की पत्नी सोमल देवी भी जैन महिलाओं में उल्लेखनीय है। ले० नं० ४५१, ४५५ और ३५६ में उसकी प्रशंसा है। उसने वेलवत्ते नाड् में एक जैन वसदि का निर्माण कराया और उसके पूजन के हेतु दान भी दिया था।

यह नहीं समझना चाहिए कि राजघराने, सामन्तों एवं सेनापतियों की पत्नियों में ही जिन धर्म के प्रति विशेष अनुराग था. बल्कि वैसा ही अनुराग नागरिकों की पत्नियों में भी देखने को मिलता है। ले० नं० ३५३ में लिखा है कि हेगडि जक्कय्य और उसकी पत्नी जक्कब्बे ने दीडगुरु में एक चैत्यालय बनवाया और पार्श्वनाथ भगवान् की स्थापना करके देवपूजा और ऋषियों के आहार के लिए भूमिदान दिया।

ले० नं० ३८३ में जैनधर्म पर दृढ़ श्रद्धा रखनेवाली हर्य्यले महासती का उल्लेख है। उक्त लेख में लिखा है कि उक्त सती ने मृत्यु के समय अपने पुत्र भूवय नायक को बुलाकर कहा कि स्वप्न में भी मेरा ख्याल न करना, केवल धर्म का विचार करना। यदि मुझे और तुम्हें पुण्योपार्जन करना है तो जिन मन्दिर बनवाओ ...आदि। इसके बाद जिनेन्द्र के चरणों में पंच नमस्कार मंत्र को जपते उसने समाधि से देह त्याग दिया। ले० नं० ३८४ से मालुम होता है कि

इसी तरह चन्द्रायण देव की गृहस्थ शिष्या हरिहर देवी भी समाधिमरण से दिवंगत हुई थी। ११वीं शताब्दी के मध्य के नल्लूर से प्राप्त एक लेख (१८३) में चक्कियव्वे नामक श्राविका भी संन्यसन विधि से स्वर्गगत हुई थी।

१२वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और १३वीं के पूर्वार्ध के ऐसे अनेकों लेख इस संग्रह में हैं जिनमें समाधिभावना से देहोत्सर्ग करनेवाली अनेकों महिलाओं का उल्लेख है। ले० नं० ४२३ में शान्तियक्क या शान्तले, ले० नं० ४३६ में मालव्वे तथा ले० नं० ४२७ में जक्कव्वे का नाम, यहाँ उदाहरण के रूप में समझना चाहिये।

८. धार्मिक उदारता एवं सहिष्णुता

इन लेखों में सहिष्णुता के अनेक उदाहरण मिलते हैं। जैनाचार्यों और जैन नेताओं, नरेशों, सामन्तों और सेठों में भारतीय संस्कृति के अनुरूप यह विशेष गुण था और इस भावना का उन्होंने निष्पक्षभाव से प्रदर्शन भी किया।

इन लेखों से जैनाचार्यों की विद्वत्ता एवं इतिहासप्रियता के साथ साथ उनकी विस्तीर्ण हृदयता का परिचय मिलता है। उन्होंने शिलालेखों की रचना ही अपने स्थानों और धर्म और सम्प्रदाय के लेखों के उपयोग के लिए नहीं की प्रत्युत अन्य धर्म और सम्प्रदाय के उपयोग के लिए भी की। उदाहरण स्वरूप दिगम्बराचार्य रामकीर्ति ने चित्तौड़गढ़ से प्राप्त प्रशस्ति (३३२) वहाँ के तोकलजी के मन्दिर के लिए लिखी थी। बृहद्गच्छ के जयमंगल सूरि ने सुन्ध पहाड़ी से प्राप्त एक लेख (५०७) लिखा जो कि वहां चामुण्डा देवी के मन्दिर से प्राप्त हुआ है। इसी तरह यशोदेव दिगम्बर ने ग्वालियर के कच्छवाहों की प्रशस्ति तथा रत्नप्रभसूरि ने गुहिलोत वंश के धावसा एवं चिर्वा से प्राप्त लेख लिखे। पीछे के ये लेख इस संग्रह में नहीं है। यहाँ यह न समझना चाहिये कि वे लेख उन स्थानों में जैनों से छीन कर ले जाये गये हैं, प्रत्युत इसके विपरीत, वे लेख विशेषतः उन स्थानों के लिए ही जैनाचार्यों ने लिखे थे, क्योंकि उन लेखों के अन्त में जैनाचार्यों के नाम, गुरु परम्परा, गण, गच्छ के सिवाय हमें ऐसा कुछ नहीं मिलता जो जैनों से सम्बन्धित हो। यहां

तक कि मङ्गलाचरण के पद्य भी अजैन देवी देवताओं के मंगलाचरण से प्रारम्भ होते हैं। हाँ, कुछेक में ॐ सर्वज्ञाय नमः, पद्मनाथाय नमः आदि से उनका प्रारम्भ हुआ है। ये लेख निश्चय रूप से जैनाचार्यों की विशाल हृदयता को सूचित करते हैं।

जैनाचार्यों की इस नीति का अनुसरण जैन नेताओं ने भी किया। ले० नं० १८१ (सन् १०४८) से विदित होता है कि एक जैन महामण्डलेश्वर चामुण्डराय ने वनवसेनाड़ में जिननिवास, विष्णुनिवास, ईश्वरनिवास, और जैन मुनियों के लिए निवास वनवाये थे। इसके समान ही और दूसरे सामन्त थे जो जैन और ब्राह्मणों में भेद नहीं मानते थे। ले० नं० २४६ से विदित होता है कि नोलम्बवाड़ी के शासक वम्मरस ने सन् ११०६ में एक जैन मन्दिर तथा सर्पेश्वर देव के लिए चुंगी से प्राप्त आय को तथा कई प्रकार के और दानों को दिया था। सामन्तों की ऐसी रुचि को सूचित करने वाले और भी लेख हैं। ले० नं० ३५६ से मालुम होता है कि सामन्त गोव, महेश्वर, बौद्ध, वैष्णव एवं अर्हन् इन चार समयों का प्रतिपालक था।

ब्राह्मण और जैनों के बीच असाधारण हार्दिक सम्बन्ध था। ले० नं० ४४८ से ज्ञात होता है कि सन् १२०४ में नागर खण्ड के पाँच अग्रहारों के ब्राह्मणों ने स्थानीय अधिकारियों, सेठों, नागरिकों और किसानों के साथ मिलकर वन्दिलिके के शान्तिनाथ की पूजा के लिए भूमिदान किया।

धार्मिक उदारता के विषय में अदलकुल के सामन्तों का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इस वंश के सामन्त विष्णुवर्धन ने सन् ११४० में अपने ही क्षेत्र में एक शिवमन्दिर तथा अदल जिनालय वनवाया था (३१५)। इसी वंश के एक ले० नं ३३३ का मंगलाचरण सर्वधर्म समन्वय की भावना से ओतप्रोत है (शिवाय धात्रे सुगताय विष्णवे जिनाय तस्मै सकलात्मने नमः)। इस लेख में उदारचेता सामन्त वाचि की विस्तार पूर्वक प्रशंसा की गई है। उक्त सामन्त ने कैदाल नामक स्थान में न केवल जैन मन्दिर ही वनवाया था वल्कि गंगेश्वर, नारायण, चलवरिवरेश्वर तथा रामेश्वर के मन्दिर भी वनवाये थे। उसने अपनी

पत्नी भीमते के नाम पर भीम विनालय तथा भीम समुद्र नामक विशाल तालाब बनवाकर पार्श्वदेव के नाम पर कर दिया था। उक्त लेख में बाचिराज को चतुः समय-धर्मोद्धार-धौरेय कहा गया है।

हमें अन्य जैन लेखों से मालुम होता है कि १३ वीं शताब्दी के मध्य तक धार्मिक उदारता की भावना का अच्छा प्रचार था पर तेरहवीं के अन्तिम पाद के बाद १०० वर्षों तक दक्षिण भारत के ऊपर मुस्लिम आक्रमणों के कारण उनसे रक्षा के महत्त्वपूर्ण प्रश्न के आगे धार्मिकता का प्रश्न फीका पड़ गया।

किसी तरह मुस्लिम आतङ्कों का जोर कम करने के लिए विजय नगर साम्राज्य की स्थापना हुई। इस वंश के राजाओं में धार्मिक निष्पक्षता का एक बड़ा महत्त्वपूर्ण गुण था। सन् १३६३ के एक लेख (५६१) से विदित होता है कि बुक्कराय प्रथम के शासन काल में जैन मन्दिर की सीमाओं के विषय में वत्र हेद्दर नाड के लोगों और मन्दिर के आचार्यों में झगड़ा उठ खड़ा हुआ। राज्य की ओर से उस मामले की जाँच पड़ताल हुई। राज्य के प्रधान मंत्री गोपण्ण ने वृद्धजनों की एक सभा में फैसलाकर मन्दिर की ठीक सीमा बाँधकर शासन पत्र भी लिख दिया।

इसके पाँच वर्ष बाद सन् १३६८ में बुक्कराय के सामने जैनों और नकों (श्रीवैष्णवों) के बीच धार्मिक विवाद फिर खड़ा हुआ। ले० नं० ५६५ (प्रथम भाग, १३६) और ले० नं० ५६६ में इन घटनाओं का चित्रण है। इन लेखों में लिखा है कि जैनों ने अपने ऊपर वैष्णवों द्वारा हुए अन्याय की शिकायत लिखित रूप में बुक्कराय से की तब बुक्कराय ने स्वयं इस बात की जाँच की और जैनों के हाथ को वैष्णवों और उनके आचार्य के हाथ में रखकर कहा कि जैन दर्शन एवं वैष्णव दर्शन में कोई भेद नहीं है। जैन धर्म वाले भी पंच महावाद्य बजा सकते हैं। जैन धर्म की हानिवृद्धिको वैष्णवों को अपनी हानिवृद्धि समझना चाहिये। वैष्णवों को इस विषय के शासन पत्र समस्त बस्तियों में लगाना चाहिये। जब तक सूर्य और चन्द्र हैं तब तक वैष्णव जैन धर्म की रक्षा करेंगे। जो इस नियम को तोड़ेगा वह राजा, संघ एवं समुदाय का द्रोही

होगा। ले० नं० ५६६ के अन्त में लिखा है कि जैनों और वैष्णवों ने मिलकर वसुवि सेट्टिको संघ नायक की उपाधि दी।

उपर्युक्त तीन लेखों से ज्ञात होता है कि विजयनगर नवोदित हिन्दू समाज के अधिनायकों में देश की सुरक्षा और शान्ति के साथ धार्मिक निष्पक्षता का बड़ा ध्यान था। इस बात के प्रमाण अन्य लेखों में भी मिलते हैं जो कि इस संग्रह में नहीं है।

धर्म समभाव की इस भावना का प्रभाव हम कतिपय शिलालेखों के प्रारंभिक मंगल पद्यों में भी पाते हैं। ले० नं० ६४६ पार्श्वनाथ जिनेश्वर के नमस्कार से प्रारम्भ होता है। तत्पश्चात् जिनशासन की प्रशंसा व पञ्चपरमेष्ठियों के नमस्कार के बाद नमस्तुंगशिरः आदि पदों से शम्भु की स्तुति है। उसके बाद वराह और शम्भु की स्तुति की गई है। ले० नं० ६८८ में भी जिनशासन की स्तुति तथा शम्भु की स्तुति साथ साथ की गई है।

जैन और शैवों के परस्पर मेल मिलाप को प्रदर्शन करने वाले एक महत्वपूर्ण लेख की ओर भी हम ध्यान दें। ले० नं० ७१० के प्रारम्भ में जिनशासन और शम्भु की स्तुति के बाद एक घटना का उल्लेख है। विजयनगर के आरवीडु वंश के नरेश वेंकटाद्रि द्वितीय के राज्य में एक वीर शिव हुच्चप्प देव ने हलेवीड की विजय पार्श्व वसदि के खम्भे पर लिंग मुद्रा लगा दी थी जिसे विजयप्प नामक जैन ने साफ कर दी। तब पद्मण्ण सेट्टि आदि जैनों ने यह समझा कि इससे दूसरे धर्म वालों की भावना को क्षति पहुँचेगी, वीर शैवों के मुखियों से निवेदन किया। इस पर दोनों सम्प्रदाय के लोग इकट्ठे हुए और उचित जांच के बाद उन्होंने आज्ञा निकाली की कि विभूति और विल्वपत्र प्रदान करने के बाद जैन लोग आचन्द्रसूर्य अपनो सब धर्म विधि कर सकते हैं। इसके बाद इस शासन पत्र पर राज्य की स्वीकृति ली गई और वह वीर शैवों की ओर से जैनों को समर्पण किया गया। लेख के अन्त में वीर शैव सम्प्रदाय ने अपने उदार भाव दिखलाये हैं कि जो व्यक्ति जैन धर्म का विरोध करेगा वह महामहत्तु के चरणों से निकाल दिया जायगा, वह शिव, जंगम तथा काशी, रामेश्वर के लिंग का द्रोही समझा जायगा।

अन्त में महामहत्तु की स्वीकृति के बाद वर्धतां जिनशासनम् लिखा है।

९. जैनधर्म पर संकट

१२ वीं शताब्दी के बाद दक्षिण भारत में जैन धर्म के पतन के एवं विशृंखलित होने के चार प्रधान कारण थे।

प्रथम तो वह राज्याश्रय से वंचित हो गया था, गंग, राष्ट्रकूट, होय्सल जैसे साम्राज्य नष्ट हो चुके थे।

द्वितीय, पश्चात्कालीन जैन नेता गण ब्राह्मण धर्म के नवोदित रूप वैष्णव और वीर शैव सम्प्रदाय से जैन धर्म की रक्षा करने में उदासीन हो रहे थे। जैनाचार्यों में ऐसे कोई प्रभावक आचार्य न थे जो कि धार्मिक क्षेत्र में प्रतिद्वन्द्वियों को परास्त करते।

तृतीय, जैन मन्दिरों को आश्रय देने वाले व्यापारी संघ, वीर वणिज आदि वीर शैव धर्म के प्रभाव में आकर जैन धर्म को छोड़ चुके थे। शेष सामान्य जन वर्ग में ऐसी शक्ति न थी कि वे संगठित हो विधर्मियों का प्रतिरोध कर सकते।

चतुर्थ, वीर शैव धर्म के आचार्यों ने जैन धर्म के केन्द्रों पर हमला करना प्रारम्भ किया और स्थानीय सामन्तों को अपने धर्म में परिवर्तित कर उनसे ही जैनों का तिरस्कार कराया।

उपर्युक्त बातें जैन लेखों पर दृष्टिपात करने से भलीभाँति सिद्ध होती हैं। इस संग्रह के लेख नं० ४३५ और ४३६ से वीर शैव धर्म के एक आचार्य एकान्तद रामय्य के सम्बन्ध में ज्ञात होता है कि उसने कलचूरि नरेश बिज्जल को अपने प्रभाव में लाकर जैनों पर भयंकर उत्पात किए थे। उसने अब्लूर में जैन-मूर्ति को फेंककर वेदी को ध्वस्त कर दिया और शिवलिंग की स्थापना की। इस पर जैनों ने कलचूरि नरेश बिज्जल से शिकायत की पर वह तो उक्त आचार्य के प्रभाव में था। इसने उनका उपहास किया और एकान्तद रामय्य को प्रोत्साहन देते हुए जय पत्र प्रदान किया (४३५.)। उसी लेख से ज्ञात होता है कि चालुक्य वंश का अन्तिम नरेश सोमेश्वर चतुर्थ भी उस मत का अनुयायी हो गया था।

विजय नगर राज्य के ले० नं० ५६१,५६५,५६६ और ७१० से विदित होता है कि दूसरे सम्प्रदाय के लोग जैनों पर ज्यादती करते थे पर तत्कालीन राजाओं की उदार एवं निष्पक्ष नीति के कारण उनकी सुरक्षा बनी रही। ले० नं० ७१० से ज्ञात होता है कि जैनों को अपमानजनक शर्तें मानने को भी बाध्य होना पड़ा, पर उन्होंने अपने पड़ोसियों की भावना की रक्षा के लिए वह शर्त भी मान ली। उक्त लेख में लिखा है जैन लोग पहले विभूति और विल्व पत्र बांटकर अपनी सब धर्म विधि कर सकते हैं। जैनियों ने जब यह शर्त मान ली तो उसका प्रभाव दूसरे धर्म वालों पर तत्काल हुआ और उन्होंने भी प्रतिज्ञा की कि जैन मन्दिरों आदि को कोई क्षति पहुँचावेगा तो वह उनके धर्म से बाहर कर दिया जायगा। जैनियों में उनकी अहिंसा नीति का ही प्रभाव था कि वे परमत सहिष्णु थे और इससे वे आजतक भारत में रह सके।

१०. जैन धर्म के केन्द्र

प्रस्तुत लेख संग्रह को ध्यान से पढ़ने से मालुम होता है कि भारत में उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम सभी ओर अनेक प्रभावक जैन केन्द्र थे। इन केन्द्रों का इतिहास देखने पर विदित होता है कि जैनाचार्यों ने जैन धर्म को राजाओं और सामन्तों के दरबारों तक ही सीमित न रखा था बल्कि साधारण जनता के बीच भी उसे जनप्रिय बनाने के प्रयत्न किये थे। इसीलिए राजाओं और सामन्तों के सतत परिवर्तित होते रहने पर एवं उनके प्रभुत्व का लोप होने पर भी जैन धर्म की नींव भारतवर्ष में अक्षुण्ण बनी रही।

(अ) उत्तर भारत के जैन केन्द्रों में मथुरा एक समय प्रमुख स्थान था। इस सम्बन्ध में हम पर्याप्त लिख चुके हैं। इसके अतिरिक्त, उदयगिरि-खण्डगिरि (उड़ीसा) पभोसा, राजगृह, रामनगर (अहिच्छत्र), उदयगिरि (सांची), देवगढ़, दूबकुण्ड, ग्वालियर, बवागंज, बड़नगर, खजुराहो, और महोवा के नाम उल्लेखनीय हैं।

उदयगिरि-खण्डगिरि—उड़ीसा प्रान्त में भुवनेश्वर के पास की उक्त

दो पहाड़ियां जैन तीर्थों के इतिहास की दृष्टि से बड़े महत्व की हैं। यहाँ से भारतीय लेखों में महत्वपूर्ण एक लेख (२) हाथी गुम्फा से प्राप्त हुआ है जो जैन सम्राट् खारवेल के इतिहास पर प्रकाश डालता है। उक्त लेख में लिखा है कि यहाँ आदिनाथ भगवान् की एक प्रतिमा थी जिसे मगध का राजा नन्द उठा ले गया था। इसका अर्थ यह हुआ कि नन्दकाल से ही यह स्थान एक जैन केन्द्र था। इस संग्रह में दो और लेख (३ और २४५) इस स्थान के दिये गये हैं। अन्तिम लेख सूचित करता है कि ११वीं शताब्दी में भी यह जैन तीर्थ था। इसका प्राचीन नाम कुमारी पर्वत था। यहाँ से और भी अनेक लेख मिले हैं। जिनकी प्रतिलिपि स्व० देणीमाधव बरुआ ने ओल्ड ब्राह्मी इन्क्रिप्सन्स् नामक ग्रन्थ में दी है।

प्रभोसाः—इलाहाबाद के पास कौशाम्बी जैन और बौद्धों का एक प्राचीन तीर्थस्थान है। कौशाम्बी के पास ही प्रभास पर्वत नाम की एक पहाड़ी है जो प्राचीन काल से ही जैन तीर्थ रही है। इस स्थान के तीन लेख (६, ७ और ७५६) इस संग्रह में दिये गये हैं। प्रथम दो लेख वहाँ की प्राचीन दो गुफाओं से प्राप्त हुए हैं। इन लेखों की लिपि शुंगकालीन है। उनसे मालुम होता है कि अहिच्छत्र के आषाढ़सेन ने जो कि वहसतिमित्र (मगध नरेश) का भाई था, काश्यपीय अर्हतों के उपयोग के लिए ये गुफाएँ बनवायीं। काश्यप, भग० महावीर का गोत्र था। संभव है ये गुफाएं भग० महावीर के अनुयायी भिक्षुओं के लिए बनवायी गई थीं। तीसरा लेख १६ वीं शताब्दी का है। ये तीनों लेख इस बात को सिद्ध करते हैं कि यह स्थान प्राचीन काल से अब तक बराबर जैनों का मान्य तीर्थ है।

राजगृहः—यह स्थान जैन, बौद्ध और हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ है। इस स्थान के तीन जैन लेख (८७,८३६ और ७४३) इस संग्रह में दिये गये हैं। ले० नं० ८७ पाँचवें पर्वत वैभार की तलहटी में एक गुफा से प्राप्त हुआ है जिसे सोन भण्डार कहते हैं। यह लेख बड़े महत्त्व का है और इस प्रकार पढ़ा गया है:—

१. निर्वाण लाभाय तपस्वियोग्ये शुभे गुहेऽर्हत्प्रतिमा प्रतिष्ठे

२. आचार्यरत्नं मुनि वैरदेवः विमुक्तयेऽकारयद्दीर्घतेजाः ॥

जिसका भाव है कि किसी मुनि वैरदेव ने निर्वाण प्राप्ति के हेतु दो गुफाएं बनवायीं ,

जन० कनिंघम ने आर्क्यो० स० रिपो० के प्रथम भाग में इसकी प्रतिलिपि छापी थी और टी० ब्लॉख महोदय ने इसे पढ़कर एपि० इण्डिका के ८ वें भाग में प्रकाशित कराया। ब्लॉख महोदय इसे लिपि विद्या की दृष्टि से तीसरी या चौथी शताब्दी का कहते हैं। इस लेख के आ० वैरदेव कौन थे यह ठीक तरह से नहीं कहा जा सकता। कुछ विद्वान् इसे श्वेताम्बर पट्टावलियों के वज्रस्वामी मानते हैं जिनका समय सन् ५७ ई० है[1]। हमारा अनुमान है कि ये वैरदेव ले० नं० ६० (सन् ३६० के लगभग) के वीरदेव होना चाहिये जो कि मूलसंघ के आचार्य थे और जिनके सम्बंध में लेख में 'श्रीमद् वीरदेवशासनाम्बरावभासनसहस्रकर' अर्थात् भग० महावीर के शासन रूपी आकाश को प्रकाशित करने वाला सूर्य, विशेषण दिया गया है। लेख की लिपिका समय ३ री ४ थी शताब्दी, हमें वैरदेव से वीरदेव का साम्य स्थापन करने को बाध्य करता था। यदि यह अनुमान ठीक है तो मानना होगा वीरदेव का प्रभाव उत्तर भारत में राजगृह की ओर और दक्षिण भारत में कन्नड प्रान्त में बराबर था।

इस स्थान के दो अन्य लेख १८ वीं शताब्दी के हैं जिनसे सिद्ध होता है कि यह स्थान जैनों का अविच्छिन्न रूप से तीर्थ रहा है।

राम नगरः—(अहिच्छत्र) से प्राप्त अनेकों लेखों में से केवल दो लेख (५३,८४३) इस संग्रह में दिये गये हैं। ले० नं० ८४३ के कोत्तरि शब्द से ज्ञात होता है कि यहाँ अनेकों जैन मन्दिरों के ढेर थे। अब भी वहाँ कोत्तरि को

१—जर० बिहार० रि० सो०, भाग ४६, अंक ४, पृष्ठ ४००–४१२; उमाकान्त प्रेमचंद शाह—राजगिर की जैन गुफा सोन भण्डार के मुनि वैरदेव।

अपभ्रंश रूप में कतारि खेरा नामक छोटी पहाड़ी है। यह स्थान एक समय दिग० सम्प्रदाय का केन्द्र था[1]।

उदयगिरिः—(साँची) यहाँ की एक अकृत्रिम गुफा से एक लेख (६१) मिला है जो इस स्थान को जैन केन्द्र होने की सूचना देता है।

देवगढ़ से प्राप्त ले० नं० १२८ से ज्ञात होता है कि गुर्जर प्रतिहार नरेश मिहिर भोज के समय इसका एक नाम लुअच्छगिरि था वहाँ शान्तिनाथ भगवान् का एक मन्दिर था। दो अन्य लेखों (६१७, ६१८) से जो कि १५ वीं शताब्दी के हैं, विदित होता है कि यहाँ मूलसंघान्तर्गत नन्दिसंघ मदसारद गच्छ, बलात्कार गण का अच्छा प्रभाव था।

११ वीं शताब्दी में दुबकुण्ड, काष्ठासंघ के लाटवागट गण का प्रमुख स्थान था। यह स्थान ग्वालियर से ७६ मील दक्षिण पश्चिम दिशा में है। इस क्षेत्र के आसपास कच्छवाहों (कच्छप घाट वंश) का राज्य था। सन् १०८८ ई० में महाराजाधिराज विक्रमसिंह कच्छवाहा ने यहाँ के एक जैन मन्दिर को दान दिया था। उस मन्दिर की स्थापना एक जैन व्यापारी साधु लाहड़ ने की थी जो वायसवाल वंश का था। उसे विक्रमसिंह ने श्रेष्ठि की पदवी दी थी। यहाँ काष्ठासंघ लाटवागट गण के प्रमुख गुरु देवसेन की पादुकाओं की स्थापना सन् १०९५ ई० में की गयी थी (२२८, २३५)।

ग्वालियर से प्राप्त दो लेखों (६३३, ६४०) से विदित होता है कि १५ वीं शताब्दी में तोमर वंशी राजाओं के काल में यह स्थान काष्ठासंघ (काष्ठासंघ का दूसरा नाम) माथुरान्वय, पुष्करगण के भट्टारकों का प्रमुख केन्द्र था। इन लेखों में उक्त संघ के कतिपय भट्टारकों के नाम दिये गये हैं।

बयागंज (मालवा) से प्राप्त १२ वीं शताब्दी से १५ वीं तक के तीन लेखों से विदित होता है कि यह प्रमुख जैन केन्द्रों में एक था। सन् ११६६ में

१—यहाँ से प्राप्त अनेकों लेख, अनेकान्त, वर्ष १० किरण ३–४ में प्रकाशित हुए में।

यहाँ एक प्रभावक जैन मुनि रामचन्द्र थे, जो राज्यमान्य मुनि (भूपतिवृन्दवन्दित-पदः) थे। ये सर्वसंघतिलक देवनन्दि मुनि के शिष्य थे जो कि राज्यमान्य लोकनन्दि मुनि के शिष्य थे (३७०, ३७१)। १५ वीं शताब्दी में यह स्थान ग्वालियर के भट्टारकों के अधीन था (६४३)।

खजुराहो के जैन और हिन्दू मन्दिर भारतीय शिल्पकला के विशिष्ट नमूने हैं। यहाँ से प्राप्त अनेक लेखों में से केवल १२ मूर्तिलेख इस संग्रह में है इनमें कुछ लेखों से विदित होता है कि यह स्थान ग्रहपति वंश (गहोई वैश्यों) का प्रमुख केन्द्र था। यहाँ के सन् ९५५ के एक लेख से मालुम होता है कि यहाँ जिननाथ का एक प्रसिद्ध मन्दिर था जिसे चन्देल नरेश धंग के राज्य में पाहिल्ल नामक सेठ ने अनेक वाटिकायें वगीचे दान में दिए थे (१४७)।

इसी तरह महोवा भी चन्देल नरेशों के समय में एक जैन केन्द्र था। इस संग्रह में इस स्थान से प्राप्त सं० ११९६ से सं० १२२१ अर्थात् ५२ वर्ष के ८ मूर्ति लेखों से विदित होता है कि यहाँ जैन लोग निर्विघ्न रीति से सोत्साह प्रतिष्ठा आदि कराते थे। ले० नं० ३३७, ३४२ पर चन्देल नरेश मदन वर्म्म का नाम और ले० नं० ३६५ में परमर्दि का नाम एवं राज्य संवत्सर दिया हुआ है।

(आ) इस संग्रह में पश्चिम भारत के संगृहीत लेखों को देखने से विदित होता है कि इस क्षेत्र में श्वेताम्बर सम्प्रदाय के अनेक जैन केन्द्र थे जैसे आबू, सिरोही, अजमेर, अनहिलवाड़, खम्भात, दोहद, दिलमाल, नडलाई, नडोले, जैसलमेर, पालनपुर, वयाना आदि। गिरनार से प्राप्त २–३ लेख दिग० सम्प्रदाय के हैं, शेष बहुसंख्य लेख श्वेताम्बर सम्प्रदाय के हैं। शत्रुञ्जय से ११८ संग्रहीत लेखों में दिगम्बर सम्प्रदाय का केवल एक लेख (७०२) है जिसमें मूलसंघ, सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण कुन्दकुन्द अन्वय के भट्टारकों की पट्टावली दी हुई है। यहां सं० १६८६ में अहमदाबाद के संघपति हुंवड़ जातीय श्री रत्नसी के वंशजों ने, जब कि शाहजहाँ का राज्य प्रवर्तमान था, श्री शान्तिनाथ की प्रतिमा स्थापित की थी।

(इ) दक्षिण प्रान्त के प्रमुख जैन तीर्थों और केन्द्रों में श्रवणबेल्गोल, पोदनपुर, पलासिका, पुलिगेरे, कोपण, हनसोगे, हुम्मच, बल्लिगान्वे, कुप्पटूर, हलेबीड़, मलेयूर, तुलुवू, मुगलूर, अंगड़ी, बन्दलिके, आवलि, उद्रि, कारकल, गेरसोप्पे आदि प्रसिद्ध थे।

श्रवण बेल्गोल—यहाँ के सम्बन्ध में विशेष कुछ नहीं कहना है क्योंकि उसके माहात्म्य को प्रकट करने के लिए जैन शिला लेख के ५०० शिलालेख प्रथम भाग के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। इस स्थान की परम्परा का सम्बन्ध अनेक विद्वानों के मत से श्रुतकेवली भद्रबाहु और सम्राट् चन्द्रगुप्त से है। कुछ विद्वानों के मत से उज्जयिनी के द्वितीय भद्रबाहु और उनके शिष्य गुप्तिगुप्त से है। जो भी हो पर जै० शि० सं० प्रथम भाग के प्रथम लेख का साधारणतः अर्थ करने से यहां की परम्परा का सम्बन्ध भद्रबाहु द्वितीय से ही मालुम होता है।[१]

'जैन परम्परानो इतिहास' के लेखक विद्वान् मुनि श्री दर्शन विजय जी आदि (त्रिपुटी महाराज) ने आर्य सिंहगिरि के उत्तराधिकारी आर्य वज्रस्वामी और भद्रबाहु द्वितीय के जीवन चरित में अनेक प्रकार का साम्य दिखलाया है और संभावना प्रकट की है कि यदि दोनों आचार्यों को एक मान लिया जाय तो श्वेताम्बर दिगम्बर इतिहास संबंधी अनेक गुथियां सरल रीति से उलझ जा सकती हैं। इन वज्रस्वामी का जन्म वीर संवत् ४९६ में, दीक्षा काल वीर सं० ५०४ में युगप्रधान पद ५४८ में और सं० ५८४ में स्वर्गगमन हुआ था। वे लिखते हैं:—दिगम्बर ग्रन्थों में इस अरसे में द्वितीय भद्रबाहु होने का उल्लेख है जिनके दूसरे नाम वज्रयशा (तिलोयपण्णत्ति) महायशा (महापुराण), यशोबाहु (उत्तर पुराण, हरिवंश पुराण), जयबाहु (श्रुतावतार), वज्रर्षि (हरिवंश पुराण स० १ श्लोक ३३), महायशा (आवश्यक निर्युक्ति) मिलते हैं। श्रवणबेल्गोल के चन्द्रगिरि स्थित एक लेख में उल्लेख है कि श्रुतकेवली भद्रबाहु की परम्परा में महानिमित्तज्ञ भद्रबाहु ने उज्जयिनी में रहते हुए १२ वर्षीय दुष्काल को आते देख

दक्षिण कर्नाटक की ओर विहार किया और ७०० शिष्यों के साथ इस पहाड़ी पर आये। उन्होंने यहाँ अपने समाधिमरण की आराधना के लिए केवल एक शिष्य को साथ रख शेष को विसर्जित कर दिया इत्यादि (पृष्ठ २८४–२९२)।

आगे मुनिश्री लिखते हैं कि आर्य वज्रस्वामी ने वि० सं० १७४ में अपने शिष्य संघ के साथ बारह वर्ष के दुष्काल में दक्षिण जाकर एक पहाड़ी के ऊपर अनशन किया और समाधि पूर्वक स्वर्गगमन किया। इस भूमि की इन्द्र ने रथ के द्वारा तीन प्रदक्षिणा की इससे इस पहाड़ का नाम 'रथावर्तगिरि' पड़ा।

इस रथावर्तगिरि का असली नाम क्या था और वर्तमान में उसका नाम क्या है, इस बात का कहीं स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता। किन्तु हमें लगता है कि आज जो इन्द्रगिरि (विन्ध्यगिरि) के रूप में पहाड़ी बोली जाती है वही वास्तव में रथावर्त गिरि है, और उसके ऊपर जो विशालकाय मूर्ति है वह आर्य द्वितीय भद्रबाहु स्वामी याने वज्रस्वामी की मूर्ति है।

आ० वज्रस्वामी ने अनशन के लिए प्रथम एक पहाड़ी पसन्द किया था अपने एक बालमुनि को भी छोड़ने के लिए उन मुनि को वहीं रख उस पहाड़ी का त्याग कर सामने की दूसरी पहाड़ी पर अनशन किया और बालमुनि ने पहली पहाड़ी पर अनशन किया।

इसके पश्चात् उनके प्रशिष्य आचार्य चन्द्रसूरि यहीं पधारे थे और उनके उपदेश से उसी पहाड़ी की विशाल शिला पर आ० वज्रस्वामी की विशाल काय प्रतिमा बनी। ये दोनों पहाड़ियाँ आज इन्द्रगिरि और चन्द्रगिरि नाम से प्रसिद्ध हैं, इत्यादि।

(देखो, जैन परम्परानो इतिहास, भा० १, लेखक त्रिपुटी महाराज, प्रकाशक–श्री चारित्र स्मारक ग्रन्थ माला, अहमदाबाद, १९५२, पृष्ठ ३३७-३३९)

जो भी हो पर 'अनेकग्रामशतसंख्यं मुदित जन धन कनक सस्य गोमहिषाजावि कुल समाकीर्ण जनपदं प्राप्तवान्" उल्लेख जिस स्थान के लिए किया गया है वह पुन्नाट देश के उत्तरी भाग के सिवाय और कोई दूसरी जगह नहीं है।

पोदनपुर—तीर्थ के सम्बन्ध में हमें ले० नं० ३६५[1] (सन् ११८०) से विदित होता है कि भरत चक्रवर्ती ने पोदनपुर के समीप ५२५ धनुष प्रमाण बाहुबलि की मूर्ति प्रतिष्ठित करायी थी। कुछ काल बीतने पर मूर्ति के आसपास की भूमि कुक्कुट सर्पों से व्याप्त और बीहड़ वन से आच्छादित होकर दुर्गम्य हो गयी थी। राचमल्ल नृप के मंत्री चामुण्ड राय को बाहुबलि के दर्शन की अभिलाषा हुई पर यात्रा के हेतु जब वे तैयार हुए तब उनके गुरु ने उनसे कहा कि वह स्थान बहुत दूर और अगम्य है। इस पर चामुण्ड राय ने वैसी मूर्ति की प्रतिष्ठा कराने का विचार किया और उन्होंने वैसा कर डाला।

कहा जाता है कि यह पोदनपुर निजाम हैदराबाद प्रान्त के निजामाबाद जिले का 'बोधन' नामक गाँव है जो कि १० शताब्दी के पूर्वार्ध में राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र चतुर्थ की राजधानी था और वहां वैष्णवों का बोलबाला था तथा वहाँ एक विशाल वैष्णव मन्दिर भी बनवाया गया था। यहाँ अब भी जैन एवं ब्राह्मण पुरातत्त्व की सामग्री मिलती[2] है।

पलासिका:—हलसी या हलसिगे (जिला बेलगांव) से प्राप्त ६ लेखों से ज्ञात होता है कि पांचवीं शताब्दी ईस्वी में कदम्बों के राज्यकाल में पलासिका एक प्रमुख जैन केन्द्र था। यहां यापनीय, निर्ग्रन्थ एवं कूर्चक ये तीनों सम्प्रदाय समान भाव से आदृत थे। ले० नं० ६६ में लिखा है कि कदम्ब नरेश काकुस्थवर्मा ने अपने जैन सेनापति श्रुतकीर्ति को धार्मिक कार्य के लिए एक क्षेत्र दान में दिया था। ले० नं० ६६ के अनुसार कदम्ब मृगेशवर्मा ने अपने पिता की स्मृति में

---

१. जैन शि० ले० संग्रह, नं० ८५.

२. सालेतोरे, मेडीवल, जैनिज्म, पृष्ठ १८६.

यहाँ एक जैन मन्दिर बनाकर यापनीय, निर्ग्रन्थ और कूर्चकों को दान में दिया था। इसी तरह ले० नं० १०० उल्लेख करता है कि अष्टाह्निका पर्व मनाने के लिए कदम्ब नरेश रविवर्मा और अन्य लोगों ने पुरुखेटक गांव यापनीय संघ को दिया था। ले० नं० १०१-१०२ के अनुसार यहाँ कदम्ब रविवर्मा और उसके छोटे भाई भानुवर्मा द्वारा जिन भगवान् की पूजा के लिए दान दिये गये थे। ले० नं० १०३ से विदित होता है कि कदम्ब नरेश हरिवर्मा ने पलासिका में सिंह सेनापति के पुत्र मृगेश द्वारा निर्मापित जैन मन्दिर में अष्टान्हिका पूजा के लिए और सर्व संघ के भोजन के लिए कूर्चकों के वारिषेणाचार्य संघ के चन्द्रक्षान्त को प्रमुख बनाकर दान दिया था। इसी तरह ले० नं० १०४ के अनुसार अरिष्टि नामक श्रमण संघ के लिए सेन्द्रक राजा भानुवर्मा की प्रार्थना पर हरिवर्मा ने दान दिया था। इस तरह कदम्ब राजाओं की ४–५ पीढ़ी तथा पलासिका यापनीय, निर्ग्रन्थ और कूर्चक सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र रहा है।

पुलिगेरे (लक्ष्मेश्वर):—इस स्थान के सातवीं से दशवीं शताब्दि ईस्वी के संगृहीत पाँच लेखों से मालुम होता है यह एक जैन तीर्थ था। यहाँ शंखवसदि नामक विशाल जैन मन्दिर था जिसकी छत ३६ खम्भों पर थमी थी। इस वसदि के नाम से इस स्थान का नाम शंखतीर्थ पड़ा था। ले० नं० १०६ से विदित होता है कि सेन्द्रक राजा दुर्गशक्ति ने शंखजिनेन्द्र की नित्य पूजा के लिये कुछ भूमि दान में दी थी। ले० नं० १११ के अनुसार चालुक्य विनयादित्य सत्याश्रय ने इस मन्दिर को अपने राज्य के ५ वें या ७ वें वर्ष में माघ पूर्णिमा के दिन दान दिया था। ले० नं० ११३ में उल्लेख है कि चालुक्य वंशी विजयादित्य सत्याश्रय ने अपने राज्य के ३४ वें वर्ष में इस मन्दिर के लिए दान दिया था और ले० नं० ११४ से ज्ञात होता है कि सन् ७३४ ई० में विक्रमादित्य ने शंखतीर्थ वसदि का जीर्णोद्धार कराया था। यहाँ शंख वसदि के अतिरिक्त एक और जिनालय था, जिसका नाम धवल जिनालय था। ले० नं० १४६ [illegible] तीर्थ के इतिहास की दृष्टि से बड़े महत्त्व का है। उक्त लेख के अनुसार सन् [illegible] में इस तीर्थ का विशाल रूप हो गया था। यहाँ गंगराजा मारसिंह गङ्ग-

कन्दर्प ने एक जिनालय बनवाया जो कि शंख बसदि तीर्थ बसदि मण्डल के लिए मण्डन स्वरूप था। उसका नाम उक्त राजा के नाम पर गङ्गकन्दर्प भूपाल जिनेन्द्र मन्दिर रखा गया और उसके लिए दान देते समय सीमा के रूप में अनेक जैन एवं अजैन बसदियों का उल्लेख है।

कोपणः—यह स्थान श्रवण बेल्गोल के बाद बड़े महत्त्व का जैन तीर्थ रहा है। शिलालेखों के पर्यवेक्षण से प्रतीत होता है कि यह ७ वीं से लेकर १६ वीं शताब्दी तक जैनों का महातीर्थ रहा है। प्रस्तुत संग्रह में कोपण के सम्बन्ध के ११ वीं शताब्दी के पहले के लेख संग्रहीत नहीं पर उसके बाद के जो भी लेख हैं उनमें उसकी प्रसिद्धि का ही उल्लेख है। ले० नं० १६८ से विदित होता है कि सन् १००० के लगभग कोपण तीर्थ के कुछ यात्री श्रवण बेल्गोल आये थे। ले० नं० २६६ में लिखा है कि जैनों के महत्त्वों तीर्थों में प्रमुख तीर्थ कोपण था। ले० नं० २५५ में उल्लेख है कि जैन सेनापति गंगराज ने अपनी अनवधिक दानशीलता से गङ्गवाडि ६६००० को कोपण के समान बना दिया था। यही बात ले० नं० ३०१ और ४११ से पुष्ट होती है। ले० नं० ३०४ के अनुसार गंगराज के ज्येष्ठ भ्राता बम्मदेव के पुत्र ऐच दण्डनायक ने कोपण बेल्गोल आदि स्थानों में अनेक जिन मन्दिर निर्माण कराये थे। उसी लेख में कोपण को 'कोपण आदि तीर्थदलु' अर्थात् एक प्रमुख या आदि तीर्थ के रूप में माना गया है। सन् ११५६ (३५४) में सेनापति हुल्ल ने कोपण महातीर्थ में २४ जैन साधुओं के संघ के लिए अन्नदान दिया था। ले० नं० ४५१ में उल्लेख है कि ऐचण ने बेलगवत्तिनाड में एक ऐसा जिनालय बनवाया था जैसा उस प्रदेश में और कहीं नहीं था और इस तरह उसने बेलगवत्तिनाड को कोपण के समान बना दिया।

१६ वीं शताब्दी में भी कोपण का महत्त्व कुछ कम न हुआ था। इस शताब्दी के महान् विद्वान् वादि विद्यानन्द के विषय में ले० नं० ६६७ में उल्लेख है कि इन्होंने कोपण तथा अन्य दूसरे तीर्थों में महोत्सव करके विद्यानन्द नाम से प्रसिद्धि प्राप्त की।

लु० राइस महोदय कोपण को निज़ाम हैदराबाद के दक्षिण-पश्चिम में स्थित वर्तमान कोप्पल को माना है। इस विषय में अब सन्देह नहीं है।

चिक्क हनसोगे:—जैन तीर्थों में चिक्क हनसोगे का नाम भी प्रमुख था। इस संग्रह के लेखों से प्रतीत होता है कि उक्त स्थान ११ वीं शताब्दी के पहले से भी जैन धर्म का केन्द्र था। ले० नं० २४० से ज्ञात होता है कि वहां एक समय ६४ बसदियां थीं जो कि अब सब ध्वस्त हालत में हैं पर उन्हें देखने से मालुम होता है कि वे चालुक्य शिल्प की शैली में सुन्दर ढंग से निर्मित हुई थीं। ले० नं० २२३ (लगभग सन् १०८० ई०) से विदित होता है कि दामनन्दि भट्टारक के अधिकार क्षेत्र में पनसोगे के चङ्गाल्व तीर्थ को सारी बसदियाँ थीं,अब्बेय बसदि तथा तोरेनाड् की बसदि भी उनके प्रधान शिष्यगण के अधिकार में थी। ले० नं० १९६, २४० और २४१ से उन बसदियों का एक विचित्र इतिहास मालुम होता है कि इन बसदियों के आदि प्रतिष्ठापक मूलसंघ, देशीगण, होत्तगे गच्छ के रामस्वामी थे जो कि दशरथ के पुत्र, लक्ष्मण के भाई सीता के पति और इक्ष्वाकु कुल में उत्पन्न हुए थे। पीछे इन्हीं बसदियों को दान देने वाले क्रमशः शक, नल, विक्रमादित्य, गंग और चङ्गाल्व थे। सन् १०६० के लगभग यहां चंगाल्व नरेश राजेन्द्र चोल नन्नि चंगाल्व ने कुछ बसदियों का निर्माण कराया था।

हनसोगे के जैन गुरुओं का बड़ा प्रभाव था। इनकी एक शाखा हनसोगे बलि नाम से प्रसिद्ध थी। सन् १३०३ में हनसोगे के बाहुबलि मलधारि देव के शिष्य पद्मनन्दि भट्टारक ने होन्नेयन हल्लि में गंध कुटी निर्माण करायी थी तथा १५ गद्याण का दान भी दिया था (५५१)। पन्द्रहवीं शताब्दी के लगभग कारकल के शासकों को जैन धर्म के प्रभाव में लाने वाले इसी स्थान के गुरु थे। हनसोगे के ललितकीर्ति मुनीन्द्र के उपदेश से शक सं० १३५३ फाल्गुन शुक्ल १२ के दिन सोमवंश के भैरवेन्द्र के पुत्र पाण्ड्य राय ने कारकल में बाहुबलि की मा बनाकर प्रतिष्ठित करायी थी (६२४)।

हुम्मचः—शान्तर कुल के संस्थापक जिनदत्तराय के समय (९ वीं शता०) से यह बराबर महत्व पूर्ण जैन तीर्थ रहा है। इस संग्रह के लगभग २२ लेखों से यह बात भली भाँति सिद्ध होती है। यहां की प्राचीन बसदि का नाम पालियक्क बसदि था जो कि सन् ८७८ के लगभग निर्मापित हुई थी। ले० नं० १४५ से से ज्ञात होता है कि तोलापुरुष शान्तर की पत्नी पालियक्क ने अपनी माता की मृत्यु पर उसे पाषाण बसदि के रूप में खड़ा किया था और इसके लिए बहुत से दान दिऐ थे। सन् ८९७ के ले० नं० १३२ में उल्लेख है कि तोलापुरुष विक्रमादित्य ने मौनिसिद्धान्त भट्टारक के लिए एक पाषाण बसदि बनवायी। सन् १०६२ के दो ले० नं० १९७ और १९८ क्रमशः सूले बसदि और पार्श्वनाथ बसदि से प्राप्त हुए हैं। प्रथम लेख में पट्टणस्वामि नोक्कय्य सेट्टि के दानों का उल्लेख है और दूसरे में वीर शान्तर की पत्नी चागलदेवी के दान कार्यों की प्रशंसा है। सन् १०६५ के एक लेख (२०३) में उल्लेख है कि त्रैलोक्यमल्ल शान्तर ने अपने गुरु कनकनन्दि देव को यहां दान दिया था। सन् १०७७ के ५ लेख उसी तीर्थ से प्राप्त हुए हैं जिनमें से ले० नं० २१२ में तैलह शान्तर के दानों और पट्टणस्वामि नोकय्य सेट्टि की प्रशंसा है। ले० नं० २१३ बहुत ही विशाल लेख है जो कि पञ्चकूट बसदि के प्राङ्गण में एक बड़े पाषाण पर उत्कीर्ण है। पञ्चकूट बसदि प्रसिद्ध उर्वीतिलक जिनालय का ही नाम है। इस लेख के अनुसार चट्टलदेवी ने अपने पति एवं पुत्रादि की याद में तालाब कुआं, बसदि, मन्दिर, नाली, पवित्र स्नानागार, सत्र, कुंज आदि प्रसिद्ध धर्म एवं पुण्य के कार्यों को सम्पन्न कराया था। चट्टलदेवी शान्तरकुल और गंगवंश से सम्बन्धित कांची की रानी थी। लेख में शान्तर वंश और गंग वंश की वंशावली तथा द्रविड़ संघ, अरुङ्गलान्वय नन्दिगण की पट्टावली भी दी हुई है। इस लेख के अनुसार पंचकूट जिनालय का स्थापना काल शक सं० ९९९ था। ले० नं० २१४ में पंचकूटबसदि के निर्माण कार्य का विशेष इतिहास दिया गया है और मन्दिर के प्रतिष्ठाचार्य श्रेयांस देव की (ले० नं० २१३ के समान ही) परम्परा दी गई है। ले० नं० २१५ में नन्नि शान्तर, राजा ओडुग और चट्टलदेवी आदि

नियों की तथा हेमसेन (कनकसेन) दयापाल, पुष्पसेन, वादिराज, अजितसेन आदि आचार्यों की प्रशंसा की गई है। ले० नं० २२६ में शान्तर राजाओं के दान का उल्लेख है। ले० नं० ३२६ में उल्लेख है कि सन् ११४७ में विक्रम शान्तर की बड़ी बहिन पम्पादेवी ने उर्वीतिलक जिनालय के समान ही शासन देवता की मूर्ति निर्माण करायी थी, तथा उसने उसके भाई और पुत्री ने पञ्च-बसदि के उत्तरीय पट्टसाले को बनवाया था। ले० नं० २३८, ४६७, ४६४, ४६७, ५००, ५०३, ५४२, तथा ५६७ समाधिमरण के स्मारक लेख हैं। ले० नं० ६६७ बहुत विशाल है और विजयनगर साम्राज्य के प्रसिद्ध विद्वान् वादि विद्यानन्द तथा तत्कालीन राजाओं पर उनके प्रभाव का सुन्दर वर्णन करता है।

बल्लिगाम्वे :—के भी जैन तीर्थ होने के अनेक लेख प्रमाण हैं। यहाँ सन् १०४८ में जवाहुति शान्तिनाथ से सम्बद्ध बलगारगण के मेघनन्दि भट्टारक के शिष्य केशवनन्दि अष्टोपवासि भट्टारक की बसदि थी। इस बसदि के लिए उक्त सन् में महामण्डलेश्वर चामुण्डराय ने कुछ भूमि का दान दिया था (.१८१)। यहाँ सन् १०६८ में जैन सेनापति शान्तिनाथ ने काष्ठ से बनी हुई प्राचीन मल्लिकामोद शान्तिनाथ तीर्थंकर की बसदि को पाषाण की बनवाया था तथा इस मन्दिर के निमित्त वहाँ माधवनन्दि भट्टारक को कुछ जमीन दान में दी थी (२०४)। इस लेख में तथा इससे पहले के ले० नं० १८१ में उल्लेख है कि यहाँ सभी धर्मों के—जिन, विष्णु, ईश्वर आदि के मन्दिर थे। ले० नं० २०४ की अन्तिम पंक्तियों से यह भी विदित होता है जगदेकमल्ल (जयसिंह तृतीय जगदेकमल्ल) तथा चालुक्य गंग पेर्म्मानडि विक्रमादित्य ने उक्त बसदि को पहले कुछ जमीनें दान में दी थीं। ले० नं० २१७ (सन् १०७७) से मालुम होता है कि यहाँ के चालुक्य गंग पेर्म्मानडि जिनालय को विक्रमादित्य चतुर्थ ने सेन गण के आचार्य रामसेन को एक गाँव दान में दिया था। सन् ११८६ ई० करीब का एक लेख (४२०) समाधि मरण का स्मारक है। ले० नं० ४५३ और ४५[illegible] सन् १२०५ ई०) में एक जैन बसदि के लिए एक जैन राजा (सम्भव है रट्ट के राजा)—द्वारा दान का उल्लेख है। इन दोनों लेखों में रट्टवंश के पिछले

राजाओं की वंशावली दी गई है। इस सबसे यही मालुम होता है कि बल्लिगाम्वे ११-१२ वीं शताब्दी के प्रमुख जैन केन्द्रों में एक था।

कुप्पट्टूः—के सम्बन्ध में संगृहीत कतिपय लेखों से ज्ञात होता है कि यह स्थान ११ वीं से १५ वीं शताब्दी तक एक महत्त्वपूर्ण जैन केन्द्र था। ले० नं० २०६ से विदित होता है कि कदम्ब राजी मलाल देवी ने सन् १०७७ में पार्श्व-देव चैत्यालय की स्थापना की थी और पद्मनन्दि भट्टारक ने उसकी प्रतिष्ठा करा के उसका नाम वहां के ब्राह्मणों के नाम पर 'ब्रह्म जिनालय' रखा था। यहीं देशी गण के आचार्य देवचन्द्र के शिष्य श्रुत मुनि थे जिन्होंने एक मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया था, और सन् १३६७ में समाधिगत हुए थे (५६३)। ले० नं० ५५५ से विदित होता है कि सन् १४०२ में कुप्पट्टूर एक प्रसिद्ध स्थान था। विजय नगर के सम्राट् हरिहर के समय वहां एक जैन मन्दिर था, जिसमें कदम्बों का एक शासन पत्र मिला था। सन् १४०८ के ले० नं० ६०५ से विदित होता है कि कुप्पट्टूर नागर खण्ड का तिलक स्वरूप था वहां अनेक जैन रहते थे, तथा अनेक जैन चैत्यालय थे। वहां का शासक जैन धर्मावलम्बी गोपमहाप्रभु था।

अङ्गडिः—यह होय्सल वंश का उत्पत्ति स्थान था। इसका दूसरा नाम सोसेवूर था। १० वीं शताब्दी के मध्य से इसके जैन केन्द्र होने के अनेक प्रमाण मिलते हैं। ले० नं० १६६ से ज्ञात होता है कि यहां द्रविड़ संघ के प्रसिद्ध मुनि विमलचन्द्र पण्डित देव थे जिन्होंने सन् ९६० में लगभग संन्यास विधि से मरण किया था और उनकी शिष्याओं ने इस उपलक्ष्य में स्मारक खड़ा किया था। इसी तरह ले० नं० १७८ वज्रपाणि मुनि के समाधिमरण का स्मारक है। ये वज्रपाणि होय्सल नरेश नृपकाम राच मल्ल के गुरु थे। ले० नं० १६४, २०० २४२ भी समाधिमरण के स्मारक हैं। ले० नं० १८५ से मालुम होता है कि ये वज्रपाणि मुनि सूरस्थ गण के थे। उनकी शिष्या जाकियब्बे ने कुछ जमीनें वहां खरीदकर जिनालय के लिए छोड़ दी थीं। इस लेख के समय विनयादित्य होय्सल का राज्य प्रवर्तमान था। ले० नं० २०१ में पाषाणशिल्पियों के प्रधान, मणिक होय्सलाचारि द्वारा निर्मित एक वसदि का उल्लेख है। यह वसदि मुल्लूर के गुणसेन

पण्डितदेव को सौंप दी गई थी। इसी तरह ले० नं० ३६७ (सन् ११६४) में उल्लेख है कि यहाँ एक वसदि पट्टणसामि नागसेट्टि के पुत्र ने बनवायी थी जिसके लिए सन् ११६४ में वीर विजय नरसिंह देव ने दान दिया था। सन् ११-७२ के एक लेख (३७८) में एक होन्नंगिय वसदि के लिए किसी कम्बरस नामक व्यक्ति द्वारा दान का उल्लेख है।

वन्दालिके:—इस स्थान की तीर्थ रूप में प्राचीनता यहाँ से प्राप्त सन् ६१८ (ठीक ६११) के एक लेख (१४०) से विदित होती है जहाँ इसे वन्दनिके तीर्थ रूप में लिखा है। उक्त सन् में नागर खण्ड सत्तर की शासिका नक्कियब्बे ने सल्लेखना पूर्वक देहत्याग किया था। सन् १०७५ के एक लेख (२०७) में भी इसका तीर्थ के रूप में उल्लेख है। वहाँ शान्तिनाथ वसदि के लिए चालुक्य नृप सोमेश्वर ने कुछ भूमि दान में दी थी। ले० नं० ४०८ से ज्ञात होता है कि कदम्ब वंश की एक शाखा की अधीनता में इस स्थान की कीर्ति एवं यहां के शान्तिनाथ जिनालय की प्रसिद्धि जगह जगह फैल रही थी। इसी लेख के अनुसार एक वार यहां के जिनालय को देखने होय्सल सेनापति रेचण आया था। उसने इस मन्दिर के दर्शन से प्रसन्न होकर पूजा के खर्च के लिए एक गाँव दान में दिया था। इसी शान्तिनाथ जिनालय में सन् १२०० के लगभग सोमलदेवी नामक महिला ने समाधि मरण किया था (४३३)। ले० नं० ४३८ के अनुसार उक्त वसदि के लिए तीन गाँव दान में दिये गये थे। ले० नं० ४४८ में वन्दालिके (वान्वत्र नगर) की समृद्धि एवं सौन्दर्य का अच्छा वर्णन है। यहाँ एक सेट्टि ने शान्तिनाथ देव के लिए एक मण्डप खड़ा किया था। ललितकीर्ति सिद्धान्त के शिष्य शुभचन्द्र पण्डित ने इस तीर्थ का प्रबन्ध (पारुपत्य) अपने हाथ लेकर उसे समुन्नत किया था एवं नागर खण्ड सत्तर के सभी प्रमुख व्यक्तियों ने, प्रजा ने, और किसानों ने अनेक दान दिये थे और होय्सल सेनापति मल्ल ने उक्त क्षेत्र की रक्षा की थी। उक्त जिनालय के प्रबन्धक शुभचन्द्र देव ने सन् १२१३ में सन्यासपूर्वक देहत्याग किया था (४६)।

उद्धरे (उद्रि):—इस तीर्थ के १२ वीं से १४ वीं शताब्दी के ही लेख इस संग्रह में हैं जिनसे मालुम होता है कि यहाँ प्रसिद्ध तीन वसदियाँ थीं—पञ्च वसदि, कनक जिनालय एवं एरग जिनालय। सन् ११२६ में यहाँ का शासक गंगनरेश मारसिंह का पुत्र महामण्डलेश्वर एक्कलरस था उसके सेनापति सिंगण का विरुद जैनचूडामणि था (२६१)। यह एक्कलरस नाना देशों के विद्वानों और कवियों के लिए कर्ण के समान दानी था। वह वहाँ की सारी प्रवृत्तियों का संचालक था। उसकी फुआ सुग्गियब्बरसि ने यहाँ पञ्चवसदि में रहने वाले साधुओं के लिए दान दिया था (३१३)। एक दूसरी महिला कनकब्बरसि ने वहाँ बहुत से दान दिये (३१३)। इसका अनुकरण कर दूसरी महिलाओं ने भी दान दिये थे। राजा एक्कल ने कनक जिनालय को भूमि दान दिया था। (३१३)। सन् ११६८ के एक लेख (४३१) में उल्लेख है कि होय्सल सेनापति महादेव दण्डनाथ ने वहाँ एरग जिनालय नाम का एक विशाल जिनालय बनवाया था। उसने उक्त मन्दिर के लिए अनेक दान भी दिये थे। इसी लेख में लिखा है कि उद्धरे बनवासी देश के शासकों के रक्षण और कोष भवन के रूप में अद्वितीय स्थान था। सन् १३८० के एक लेख (५७६) से विदित होता है कि इस स्थान में विजयनगर नरेश हरिहर राय द्वितीय के समय में वैचप नामक एक जैन वीर रहता था। उसने अपने देश को अतातायियों से बचाने के लिए उनसे युद्ध किया और उन्हें परास्त करने में अपने जीवन की बलि दे दी। ले० नं० ५६६ में वैचप के पुत्र सिरियण्ण की जिनधर्म भक्ति का और उद्धरे की महिमा का वर्णन है। सन् १४०० में सिरियण्ण ने समाधि विधि से देह त्याग किया था। चौदहवीं शताब्दी में उद्धरे अति समुन्नत एवं प्रख्यात स्थान था, यहाँ तक कि इस स्थान के आचार्य ने अपने वंश का नाम उद्धरे वंश रख लिया था। यहाँ के आचार्यों मुनिभद्र देव ने हिसुगल वसदि बनवायी थी तथा मुलगुन्द के जिनेन्द्र मन्दिर का विस्तार कराया था। ले० नं० ५८८ उनके समाधिमरण का स्मारक है।

हलेवीडः—जैन धर्म का एक महत्वपूर्ण केन्द्र होय्सलों की राजधानी हलेबीड

था। जिसका कि दूसरा नाम उक्त वंश के लेखों में दोरसमुद्र या द्वारावती मिलता है। प्रस्तुत संग्रह में इस स्थान का पुराना लेख सन् ११११७ के लगभग का (२६३) है जो कि विष्णुवर्धन नृप के समय का है। इसमें जैन मंत्री गंगराज के कार्यों की बड़ी प्रशंसा है। सन् ११३३ के ले० नं० ३०१ में विष्णुवर्धन की दिग्विजय का, तथा साथ में सेनापति गंगराज द्वारा अगणित जैन मन्दिरों के जीर्णोद्धार कार्यों का उल्लेख है। गंगराज के पुत्र बोप्प ने दोर समुद्र में पार्श्वनाथ वसदि का निर्माण कराया था और अपने पिता की स्मृति में पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित की थी। राजा विष्णुवर्धन को दैवयोग से इसी अवसर पर युद्ध विजय, पुत्रोत्पत्ति और सुख समृद्धि मिली थी। उसने इस मांगलिक स्थापन को ही उक्त बातों में निमित्त मान बड़ी प्रसन्नता से देवता का नाम विजयपार्श्व एवं पुत्र का नाम विजय नारसिंह देव रखा और जावगल नामक गाँव तथा अन्य प्रकार के दान दिये। उक्त लेख से यह भी मालुम होता है कि मन्दिर के पुरोहित नयकीर्ति सिद्धान्तदेव को तेली दास गौंड ने भूमिदान दिया तथा उसने और राम गौण्ड ने उत्तरायण संक्रमण में बहुत से दान दिए। सन् ११६६ के एक लेख (४२६) में यहाँ की शान्तिनाथ वसदि के लिए कुछ किसानों द्वारा गाँव एवं तालाबों के दान का तथा वसदि के आचार्य, स्थानीय किसान वर्ग, एवं गाँव के ६० कुटुम्बों द्वारा दान की रक्षा का उल्लेख है। ले० नं० ४६६ के अन्तर्गत दो लेखों का संकलन हुआ है। पहले लेख में होय्सल नरसिंह तृतीय द्वारा जीर्णोद्धार कार्य का तथा दूसरे में उक्त राजा द्वारा अपने उपनयन संस्कार के समय दान का उल्लेख है। सन् १२७४ के एक लेख (५१४) में बालचन्द्र पण्डित देव के चमत्कार पूर्ण समाधि मरण का वर्णन है। उनके स्मारक रूप में भव्य लोगों ने उनकी तथा पंच परमेश्वर की प्रतिमायें बनाकर प्रतिष्ठित की थीं। इसी तरह ले० नं० ५२४ (सन् १२७६) में उक्त बालचन्द्र पण्डितदेव के श्रुतगुरु अभयचन्द्र महासैद्धान्तिक के समाधिमरण का उल्लेख है। ये अभयचन्द्र अनेक शास्त्रों के प्रकाण्ड पण्डित थे। इसी तरह इस लेख के २० वर्ष बाद बालचन्द्र पण्डित देव के प्रधान शिष्य रामचन्द्र मलधारि देव के समाधिमरण

का अनोखा वर्णन है (५४८)। ले० नं० ५४६ में एक अद्भुत सूचना है। उसमें उल्लेख है कि वहाँ से ईशान दिशा की ओर १५ बिलस्त के अन्तर पर शान्तिनाथ देव जिनकी ऊँचाई ६ बिलस्त है, जमीन के अन्दर गड़े हैं, कोई भव्य पुरुष उनको बाहर निकालकर उनकी प्रतिष्ठा कर पुण्य लाभ ले। सन् १६३८ के महत्वपूर्ण एक लेख (७१०) में जैन और शैवों की एकता तथा परधर्म सहिष्णुता का वर्णन है।

मलेयूरः—चामराजनगर तालुके में जैन धर्म का एक मजबूत गढ़ मलेयूर था। यहाँ के कनकाचल पर्वत पर अनेक बसदियाँ थीं। सन् ११८१ में यहाँ की पार्श्वनाथ बसदि के लिए अच्युत वीरेन्द्र शिक्यप वैद्य की पत्नी चिक्कतायी ने पूजा प्रबन्ध के लिए, मुनियों के नित्यदान के लिए और हमेशा शास्त्रदान के लिए किन्नरीपुर ग्राम को दान में दिया था (४०१)। यहाँ के १४ वीं से लेकर १६ वीं शताब्दी तक के १० लेखों से विदित होता है कि यहाँ अनेक बसदियाँ थीं।

आवलि नाडः—सोराब तालुके के अनेकों जैन केन्द्रों में प्रसिद्ध केन्द्र आवलिनाड् (हिरिय आवलि) था। मध्य युग में इस स्थान के अनेकों सामन्तों ने, उनकी पत्नियों ने तथा नगरवासियों ने अपने उत्साहपूर्ण धर्मसेवन से इस स्थान को अमर बना दिया था। जैनधर्म की दृष्टि से उस स्थान का महत्त्व यद्यपि १२ वीं शताब्दी में भी था (२८६, ३२२) पर विशेषकर यहाँ १४ वीं शताब्दी के मध्य से लेकर पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रथम दर्शकों के अनेक लेखों से, जो कि इस संग्रह में दिये गये हैं, विदित होता है कि यहाँ जैन धर्म की धारा अच्छी तरह प्रवाहित थी। इन लेखों में अधिक संख्या समाधिमरण के स्मारक लेखों की है। इन लेखों से ज्ञात होता है कि यहाँ के सामन्त आवलि प्रभु या आवलि महाप्रभु कहलाते थे और अपने जीवन के अन्तिम क्षणों को सुधारने में कितने जागरूक रहते थे।

तवनिधिः—सोराब तालुके का यह स्थान भी एक जैन तीर्थ था। यहाँ से अनेकों जैन लेख मिले हैं पर यहाँ केवल ६ ही लेख संगृहीत हैं जो कि सब समाधिमरण के स्मारक हैं जिनसे ज्ञात होता है कि ऐसे स्थानों में समाधिविधि सम्पन्न कराने वाले आचार्य होते थे जहाँ कि श्रावक जन अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में आकर संन्यासविधि से जीवन त्याग करते थे।

मुल्लुरुः—यह स्थान कुर्ग तालुके में है। यहाँ के ११ वीं से १४ वीं शताब्दी तक के ८ लेख संग्रहीत हैं जिनसे विदित होता है कि यहाँ शान्तीश्वर वसदि, पार्श्वनाथ वसदि एवं चन्द्रनाथ वसदि नाम के तीन जिनालय थे। ले० नं० १७७, १८८, १९१, २०२, २०६ से विदित होता है कि यह स्थान कोङ्गाल्व नरेशों की श्रद्धा एवं विनय का क्षेत्र था। यहां राजेन्द्र चोल कोंगाल्व के समय में एक प्रसिद्ध आचार्य गुणसेन पण्डित थे, जिनके भक्त, उक्त परिवार के सभी लोग थे। उक्त सभी लेख दान या समाधि के स्मारक हैं। ले० नं० ५९० (सन् १३९१) से सिद्ध होता है कि यहाँ चौदहवीं शताब्दी के अन्तिम दशकों तक कोङ्गाल्व राज्य का अस्तित्व था, और वे लोग जैन धर्म के बराबर भक्त थे। इस लेख में चन्द्रनाथ वसदि की पुनः स्थापना का उल्लेख है।

मुगळूर (मुगुलि):—हसन तालुके का यह स्थान होय्सल राज्य में एक समय जैन धर्म का केन्द्र था। प्रस्तुत संग्रह में यहां के चार लेख संग्रहीत हैं जिन से ज्ञात होता हैं कि यहाँ १२ वीं शताब्दी में द्रविड़ संघान्तर्गत नन्दिसंघ अरुङ्गलान्वय की गद्दी थी। उस गद्दी के अधिकारी श्रीपाल त्रैविद्य के शिष्य वासुपूज्य देव थे। ले० नं० ३२७ से मालुम होता होता है कि यहाँ होय्सल विष्णुवर्धन के राज्य में एल्कोटि जिनालय नामक एक प्रसिद्ध मन्दिर था। यहीं महाप्रभु पेर्म्मानडि के पुत्र गोविन्द ने बड़ी वसदि बनवायी थी। उस मन्दिर के भट्टारक वासुपूज्य देव को उक्त जिनालय के लिए नारसिंह होय्सल देव ने कुछ भूमि का दान दिया था।

कारकलः—तुलु देश में यह महत्त्वपूर्ण जैन केन्द्र है। इस स्थान का इति-

हाल हुम्मच के शान्तर वंश के साथ जुड़ा हुआ है। विनदत्तराय ने ६ वीं शताब्दी में शान्तर राज्य की नींव हुम्मच की राजधानी बनाकर डाली थी और उसी शताब्दी में वह उसे कलस नामक स्थान में ले गया था। ले० नं० ५२२ से विदित होता है कि सन् १२७७ में उक्त राजाओं की राजधानी कलस ही थी। कुछ लेखों से ज्ञात होता है कि चौदहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में शान्तर नरेश अपनी राजधानी कलस से कारकल ले आये थे। इसी शताब्दी में यहाँ के राजाओं पर लिंगायत मत का प्रभाव भी पड़ने लगा था। परन्तु १५ वीं १६ वीं शताब्दी के लेखों से मालुम होता है कि वे जैन धर्म के भी प्रतिपालक थे। सन् १४३२ के एक लेख (६२४) से मालुम होता है कि शक सं० १३५३ के फाल्गुन शुक्ल १२ बुधवार को भैरवेन्द्र के पुत्र वीर पाण्डेयशी या पाण्ड्यराय ने यहाँ बाहुबलि की प्रतिमा बनाकर प्रतिष्ठित करायी थी। यह कार्य उन्होंने देशीगण की पनसोगे शाखा में ललितकीर्ति मुनीन्द्र के उपदेश से किया था। ले० नं० ६२७ में वीर पाण्ड्य की मनो कामना पूर्ण करने के लिए ब्रह्मदेव (जिसकी मूर्ति वहीं थी) से याचना की गई है। ले० नं० ६६४ से मालुम होता है कि सन् १५३० में कारकल की गद्दी पर वीर भैररस वोरेयड थे। उसकी बहिन कालल देवी ने कल्लबस्ति के पार्श्वनाथ के लिए अनेक प्रकार के दान दिये थे। ले० नं० ६८० से ज्ञात होता है कि सन् १५८६ में ललित कीर्ति मुनीन्द्र के उपदेश से भैरव द्वितीय ने चतुर्मुख बसदि बनवायी, जिसके दूसरे नाम त्रिभुवनतिलक जिनालय या सर्वतोभद्र भी थे। इस लेख में भैरव द्वितीय द्वारा अन्य अनेकों मूर्तियों की स्थापना का उल्लेख है।

वेणूर:—कारकल तालुके में इस छोटे से गाँव में गोम्मटस्वामी की एक विशाल मूर्ति मिली है जिसकी स्थापना सन् १६०४ में तिम्मराज ने की थी, जो कि प्रसिद्ध चामुण्डराय के वंशज थे। इस मूर्ति की स्थापना श्रवणबेलगोल के भट्टारक चारुकीर्ति पण्डितदेव की सलाह से की गई थी (६८६, ६६०)।

गेरसोप्पेः—१५-१६ वीं शताब्दी के जैन केन्द्रों में गेरसोप्पे का नाम प्रमुख था। अब तक यहाँ की स्थिति को प्रकट करने वाले अनेकों लेख प्रकाशित हो चुके हैं। प्रस्तुत संग्रह के कतिपय लेखों से उसकी महत्ता पहचानी जा सकती है। गेरसोप्पे के राजवंश का वैवाहिक सम्बन्ध संगीतपुर और कारकल के राजाओं से था। गेरसोप्पे का नाम बढ़ाने का श्रेय वहाँ के राजाओं और जैन नागरिकों को विशेष था। ले० नं० ६७४ में इस नगर का सुन्दर वर्णन है जिससे मालुम होता है कि यहाँ अनेक भव्य जिनालय थे, योगियों के निवास तथा विद्वानों की मण्डली थी। इस लेख से विदित होता है कि सन् १५६० में यहाँ अनन्तनाथ और नेमीश्वर नामक दो विशाल चैत्यालय थे। उक्त लेख में यहाँ के वणिक् वर्ग के धार्मिक कार्यों का उल्लेख है। यहाँ के उदारचेता कतिपय सेट्टियों के दान कार्य का उल्लेख हमें श्रवणबेल्गोल से प्राप्त कुछ लेखों में भी मिलता है। ले० नं० ६६६[1] से विदित होता है कि सन् १४१२ में गेरसोप्पे के गुम्मटण्ण सेट्टि ने यहाँ आकर पाँच वसदियों का जीर्णोद्धार कराया था। इसी तरह ले० नं० ६७१[2] से ज्ञात होता है कि सन् १४१६ के लगभग गेरसोप्पे की श्रीमती अब्बे और समस्त गोष्ठी ने चार गद्याण का दान दिया था। ले० नं० ६७०[3] (सन् १५३६) में चार बातों का उल्लेख है जिनमें गेरसोप्पे के सेट्टियों से लेन देन सम्बन्धी कुछ आपसी समझौतों के उपलक्ष्य में आहार के लिए दान देने की प्रतिज्ञाएँ करायी गई हैं।

मैसूर राज्य से पन्द्रहवीं शताब्दी के अनेक जैन लेखों से ज्ञात होता है कि यहाँ और भी अनेक जैन केन्द्र थे जैसे सरगूरु (६१८) मोरसुनाड् (६२१), निडगल्लु पर्वत (४७८, ६३७) यिडुवणि (६४६) वोगेयकेरे (६५५) आदि।

---

१. प्रथम भाग, १३१
२. प्रथम भाग, १३५
३. ,, ९९–१०२

कर्नाटक प्रान्त के अन्य कई जैन केन्द्रों का नाम इन शिला लेखों से विदित होता है जैसे नन्दिपर्वत (११४), तडताल (२३२), चामराज नगर (२६४), कैदाल (३३३), एलम्बल्लि (३४६), नित्तूर (४३६–४४१, ४६६), हिरिय-महालिगे (४३८) कुन्तलापुर (४४६), सोरब (४५७), जोगमत्तिगे (५२१), कलस (५२२), होन्नेयनहट्टि (५५१), हरवे (६५२) आदि।

(ई) तामिलदेश के अनेक जैन केन्द्रों में से केवल तीन स्थानों के लेख प्रस्तुत संग्रह में संगृहीत हो सके हैं।

वल्लीमलैः—यह स्थान उत्तरी अर्काट जिले के वन्दिवास तालुका में है। यह ६–१० वीं शताब्दी में जैन धर्म का केन्द्र था। यहां गंगराजा शिवमार के प्रपौत्र, श्रीपुरुष के पौत्र तथा रणविक्रम के पुत्र राचमल्ल सत्यवाक्य ने इस स्थान को अपने अधिकार में करके एक मन्दिर बनवाया था (१३३)। यहां किसी वाणवंशी राजा के गुरु देवसेन की प्रतिमा स्थापित की गई थी। ये देवसेन भट्टारक भवणन्दि के शिष्य थे (१३६)। इस प्रतिमा की स्थापना एक जैन मुनि श्री अञ्जनन्दि भट्टार ने की थी (१३५)। यहां से प्राप्त एक दूसरी प्रतिमा के लेख से मालुम होता है कि ये अञ्जनन्दि भट्टारक बालचन्द्र के शिष्य थे और इन्होंने गोवर्धन भट्टारक की प्रतिमा की स्थापना की थी (१३४)।

पञ्चपाण्डवमलैः—इस स्थान से प्राप्त दो लेखों में से एक (११५) से ज्ञात होता है कि पल्लव राज नन्दि पोत्तरसर (नन्दि) के ५० वें राज्य संवत्सर में पोन्नियक्कियार नामक यक्षी और नागनन्दि गुरु की एक पाषाण पर मूर्ति खुद-वायी गई थी। ले० नं० १६७ से विदित होता है कि अपनी रानी की प्रार्थना पर वीर चोल ने तिरुप्पानमलै देवता के लिए एक गांव की आमदनी बाँध दी पर लेख पलिच्चन्दम् शब्द से मालुम होता है कि यहाँ एक प्रसिद्ध जैन वसदि थी। ये दोनों लेख ९ वीं, १० वीं शताब्दी के हैं।

तिरुमलै—उत्तरी अर्काट जिले में यह स्थान ११ वीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही जैन केन्द्र रहा है। इस नाम का अर्थ पवित्र पर्वत होता है। यहाँ सन्

१००५ ई० में चोलराजा राज प्रथम के २१ वें वर्ष में एक जैन मुनि गुणवीर ने अपने काव्यादि कला में विशारद गुरु गणिशेखर के नाम पर एक नहर या मोरी बनवायी थी (१७१)। दूसरे लेख नं० १७४ से ज्ञात होता है कि राजेन्द्र चोल प्रथम के १२ वें राज संवत्सर में मल्लियूर के एक व्यापारी की पत्नी ने तिरुमलै में एक जैन मन्दिर की पूजा और दीपक के लिए दान दिया था इस मन्दिर को राजराज चोल की पुत्री कुन्दवै ने बनवाया था इसलिए इसका नाम कुन्दवै जिनालय था। ले० नं० ४३४ से विदित होता है कि इस पर्वत को अर्हंसुगिरि (अर्हत् का पर्वत) कहते थे जिसका तामिल नाम एणगुणविरै तिरुमलै (अर्हत् का पवित्र पर्वत) कहा गया है। यहाँ चेर वंशके राजा अतिगैमान् ने केरल नरेश द्वारा संस्थापित यक्ष यक्षिणी की प्रतिमाओं का जीर्णोद्धार कराकर प्रतिष्ठापित किया था और एक घण्टा दान में दे यहाँ मोरी बनवायी थी। ले० नं० ५५७ में उल्लेख है कि राजनारायण शम्भुवराज के १२ वें वर्ष में पोन्नूर निवासी मएयै पौन्नाण्डे की पुत्री नल्लाताल ने एक जैन प्रतिमा की प्रतिष्ठापना की थी। इसी तरह ८३१ वें लेख में उल्लेख है कि परवादिमल्ल के शिष्य अरिष्टनेमि आचार्य ने एक यक्षी की प्रतिमा बनवाकर स्थापित की थी।

(उ) आन्ध्र देश में जैन धर्म का आगमन संभवतः कलिंग देश से हुआ था वह भी ईशा की दो शताब्दी पूर्व जैन सम्राट् खारवेल के समय में। पर शिलालेखों से जैनधर्म के केन्द्रों के प्रमाण ७ वीं शताब्दी से ही मिलते हैं। इस शताब्दी में यहां जैन धर्म को प्रश्रय कतिपय पूर्वी चौलुक्य नरेशों ने दिया था। प्रस्तुत संग्रह में केवल दो केन्द्रों के लेख ही आ सके हैं।

ले० नं० १४३ से ज्ञात होता है कि नेल्लोर जिले के ओंगले तालुका में मल्लिय पूण्डि ग्राम में कटकाभरण नाम का एक प्रसिद्ध जैन मन्दिर था इसे कृष्णराज के पौत्र दुर्गराज ने बनवाया था। यह स्थान यापनीय संघ नन्दि गच्छ

१. संभव है वह राजा राज राज चोल तृतीय का समकालीन था।

का प्रमुख केन्द्र था मन्दिर के अधिष्ठाता धीरदेव मुनि थे जो कि जिननन्दि के शिष्य थे। उक्त जिनालय के लिए मल्लियपूण्डि ग्राम दान में दिया गया।

इसी तरह अत्तिलिनाड् में कलुचुम्बरु नामक स्थान में एक सर्वलोकाश्रय जिनालय था। ले० नं० १४४ से ज्ञात होता है कि सन् ९४५ से ९७० के लगभग पूर्वी चालुक्य अम्म द्वितीय (विजयादित्य षष्ठ) ने उक्त जैन मन्दिर की भोजन शाला की मरम्मत के लिए दान दिया था। यह दान पट्टवर्धिक वंश की श्राविका चामेकाम्बा की ओर से उसके गुरु अर्हनन्दि को दिलाया गया था। ये मुनि बलिहारिगण अड्डकलि गच्छ के थे।

गुलाबचन्द्र चौधरी

———

सहायक ग्रन्थ निर्देश

१. पं० नाथू राम प्रेमी, जैन साहित्य और इतिहास, प्रथम, द्वितीय संस्करण, बम्बई.

२. डा० हीरालाल जैन, जैन शिलालेख संग्रह, प्रथम भाग, बम्बई १९२८

३. डा० अनन्त सदाशिव अल्तेकर, राष्ट्रकूटाज् एण्ड देयर टाइम्स, पूना, १९३४.

४. डा० भास्कर आनन्द सालेतोरे, मेडीवल जैनिज्म, बम्बई, १९३४.

५. डा० दिनेशचन्द्र सरकार, सक्सेसर आफ सातवाहनाज्, कलकत्ता, १९३९.

६. डा० वे० मा० बरुआ, ओल्ड ब्राह्मी इन्स्क्रिप्सन्स्, कलकत्ता, १९२९.

७. डा०मजूमदार और पुसलकर, एज आफ इम्पीरियल यूनिटी, बम्बई १९५१.

८. „ „ क्लासिकल एज, बम्बई, १९५४

९. डा० गुलाबचन्द्र चौधरी, पोलिटिकल हिस्ट्री आफ् नार्दर्न इण्डिया फ्राम जैन सोर्सेज (७–१२ वीं शताब्दी), बनारस (अप्रकाशित)

१०. रावर्ट सेवेल और कृष्णस्वामी आयंगर, हिस्टोरिकल इन्स्क्रिप्सन्स आफ सदर्न इण्डिया मद्रास, १९३२.

११. एम० आर० शर्मा, जैनिज्म एण्ड कर्नाटक कल्चर, धारवाड, १०४०

१२. प्रो० नीलकण्ठ शास्त्री, हिस्ट्री आफ साउथ इण्डिया, आक्सफोर्ड १९५४

१३. विलियम कोल्हो, होय्सल वंश, बम्बई, १९५०

१४. दिनकर देसाई, मण्डलेश्वराज् अण्डर दि चालुक्याज् आफ कल्याणी, बम्बई, १९५१

१५. वेंकट रमनय्य, ईस्टर्न चालुक्याज आफ वेंगी,

१६. मुनि दर्शन विजय जी, पट्टावली समुच्चय,प्रथम भाग,वीरमगाम, १९३३

१७. त्रिपुटी महाराज, जैन परम्परानो इतिहास, अहमदाबाद, १९५२

१८. प्रेमी अभिनन्दन ग्रन्थ, टीकमगढ़ १९४६

१९. जैन सिद्धान्त भास्कर, आरा, भाग १—२१

२०. अनेकान्त, देहली, १—१०

२१. इण्डियन एण्टीक्वेरी

प्रस्तावना का शुद्धिपत्र

[इसमें केवल उन्हीं अशुद्धियों का निर्देश किया गया है जो कुछ महत्त्व की है। इसके सिवाय जो अशुद्धियां बिन्दियों, मात्राओं और अक्षरों के टूट जाने से तथा यत्र तत्र विरामादि चिन्हों के आ जाने से हुई हैं उन्हें पाठक स्वयं सुधार लेने की कृपा करें।]

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७	६	उक्त तथा अन्य	उक्त तथा अन्य सामग्री
१४	२३	स्थावरावली	स्थविरावली
१५	२६	कावच्छलिय	का वच्छलिय
२१	२३	की संभावना कि	की संभावना है कि
२३	१२	कूर्चक तथा सम्प्रदायों	कूर्चक सम्प्रदायों
२६	११	इन संघ	इस संघ
२८	१	वहीं नाग	वही नाम
३०	१६–२०	रूप (बलात्कार)	रूप बलात्कार
४५	२५	एन्टीम्वेरी	एण्टीक्वेरी
४७	२६	भाग, पृष्ठ	भाग १, पृष्ठ
६३	६	लेख नहीं हैं	लेख नहीं मिलते
७०	६	प्रनिविधि	प्रतिनिधि
७०	१८	यह नया पाठ	एक नया पाठ
७४	१६	३५७–५५८	३५७–३५८
८१	१६	संरक्षक	संरक्षक थे
६१	२१	उल्लेख या	उल्लेख है
९६	२२	बड़ा उम्र	बड़ा उम्र
२१३	२३	उच्छृङ्ख	उच्छृंखल
१०४	६	स्वीकार किया था।	स्वीकार किये था।

जैन-शिलालेख-संग्रह

तृतीय भाग

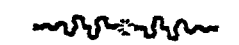

३०३

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत ।
[कालनिर्देश रहित]
[जै० शि० सं०, प्र. भा.]

३०४

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़ ।
[कालनिर्देश रहित]
[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

३०५

बेलूर—कन्नड़ ।
[शक १०५६ = ११३७ ई०]
[प्राङ्गणमें, सौम्यनायकी मन्दिरकी छतके पत्थरपर]
(ऊपरका भाग नष्ट)

.....प्रभाव ॥

मंगरवोलाल...अरसियर विरुद्द चगुले वगुल्दवन राज्यमाने...।
वेङ्किरिगला-वर्ण्ण-भागदोल् नावे नरसिंगन वधू-निकरमं पडेदु...द् ।
अङ्गरनलिकि विडे सिङ्गलिकनं तुलिदु गङ्गेयरसन मगुलदुत्तर-धरित्री ।

रंगद नृपालरनसुङ्गोले**नेरेगङ्ग-नृप-नन्दन**नवार्यतर-सौर्य्यम् ॥
अन्तुत्तर-दिग्विजयमुत्तरोत्तरमागि सले ।
अतिदीर्घ्घ-घ्राण-हस्तं निशित-दशन-दंष्ट्राङ्कुरं पत्त-रत्ता-।
यत-पत्तं तार्क्ष्यनन्तोवगिसि तुळिये तन्नाने **पाण्ड्या**वनीभृत्-।
पृतना-विध्वंसनोपार्जित-जय-वधुवं विष्णु तुच्छाजि-लज्जा-।
स्मितनान्तं **चोल-गौड़ा**सुर-समर-जय-श्री-समालिङ्गिताङ्गम् ॥
अन्तु **पाण्डय**नं वेङ्कोण्डु **नोलम्बवाडि**यं कैकोण्डु ।
सेण्डिन तेरदिं निज-दोर्-दण्डदिनुर्च्वीटिसि पोलेय**लुच्चाङ्कि**यना-।
खण्डल-विभवं क्षणदिं । कोण्डं श्री-कञ्चिगोण्ड-विक्रम-गङ्गं ॥
तदनन्तरं **तेलुङ्ग-देश**क्केति ।
गज-घटे वेर्र**सिन्द्र**···। भुजित-यशो-धनमुमुल्ल कुल-धनमुमना-।
विजिगीषु कवर्दु कोण्डं । विजय-स्तम्भंगळे सेयलेण्-देसे**ळोलळ**म् ॥
तदनन्तरं राष्ट्र-कण्टकनप्प **मसण**न निर्म्मूल-प्रळयक्के सलिसि
वनवसेपन्निर-च्छासिरमुमं कडितक्के वरिसे ।
तिरिकल्लादुवु **विष्णु**-भूभुज-भुज-श्रीगावगंपे म्पिनोल् ।
नेरेदा-**सह्य**-नगेन्द्र-**नील**·····गळ् !
पेरतेना-भुज-लक्ष्मिगी-नेगल्द-**पानुङ्गल्** मुहूर्त्तार्द्धदिं ।
किरिदानुम्मिडिवट्टेनल् मिळिर्दु कैसार्त्तप्पुदावद्भुतम् ॥
·····विजनपर·····**नाथ किसुकल्ल** कोळनाळोकन मात्रदो
कोण्डु **जयकेसियं** वेंकोण्डु **पलसिगे-पन्निर्-च्छासिर् मु**मं·····नूरु
निक्कु····डु ।

मगु-मगुळदु पोक्क दुर्ग्गम-। नागळद्गल्दा-वार्द्धि-वेरगमड्डं तिगटं ।
तगु-तगुल्दु कोण्डनोवदे । जग-विरुदरनरसि **विष्णुवर्द्धन-देवम्** ॥
पेसर्गोण्डावाव-देशङ्गलनेणिसुवदावाव-दुर्ग्गङ्गळं वण्-।
णिसि पेलुत्तिप्पुडावाववनिपतिगळं लेक्किसुत्तिप्पुदेम्बोन्द् ।

ऐसेकं कैगम्मे नाल्कुं-कडल तडि-वरं दिग्जय-कीडेयोळ् साधिसिदं भू-लोकमं क्षत्रिय-कुल-तिलकं वीर-**विष्णु**-क्षितीशम् ॥

आ-महा-क्षत्रियं समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं **द्वारावतीपुरवरा**धीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि मण्डलीकचूडामणि श्रीमदच्युतपदाराधनलब्धविष्णु-प्रभावं दिक्पालकपराक्रमाक्रमगदुपराक्रमैकस्वभावं शत्रुक्षत्रियकलत्रगर्भस्रावसन्यादक-गभीरविजयशङ्खनादं **वासन्तिकादेवि**लब्धवरप्रसादं समस्तुवगृहीताहितमहीकान्त-कामनीवनमुखनिरीक्षणकृतदुर्धरनिरीक्षणं सकलजनसत्यनित्याशीर्वादसामर्थ्यसम्पादित-कल्याणपुरारोग्याभिवृद्धियुक्तं दुर्द्धरसमरकेलिसंसक्त दोर्व्वलावलेपं दुश्शीलाश्वपति-गज-पति-प्रमुख-राज-लोक-निर्दयनिर्दलनोपार्ज्जितारब्ध-गजादि-नानाविध-धन-निचयचिर-राज्य-लक्ष्मी-विलासं सरस्वतीनिवासम् । **चोल**-कुल-प्रलय-मरुवं । **चेरम**-न्तम्बेरम-राज-कण्ठीरवम् । **पाण्डय**-कुल-पयोधि-बडवानलम् । **पल्लव**-यशो-वल्ली-पल्लव-दावानलम् । **नरसिंहवर्म्म**-भिद्-वरम् । निश्चल-प्रताप-दीप-पतित-**कलपा**-दि-नृपाल-शलभम् । **वङ्काङ्ककलिङ्ग-सिंहल** नृपाल-कुरङ्ग-कुल-पलायन-कारण-कठोर-विक्रय-धनु-र्दण्ड-टङ्कारम् । सकल-रिपु-नृप-कुल-दलन-चलित-कयालङ्कारम् । निजाज्ञा-चण्ड-डिण्डिमाडम्बरालंकृत **काञ्चीपुर** स्वगृहचेटीनियोगयोक्तिरिपुनृपान्तः पुरकरतलकोडीकृत **दक्षिणमधुरापुरम्** निजसेनानाथनिर्दलित-**जिननाथ-पुरम्** । जगद्-दारिद्र्य-विद्रावण-प्रवीण-कारुण्य-कटाक्ष-निरीक्षणम् । प्रत्यक्ष-पद्मेक्षणम् । चतुस्समुद्र-मुद्रित-वसुमती-मनोहर-लक्ष्मी-वल्लभम् । भव्य-लोक-दुर्ल्लभं, नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितम् श्रीमतु कञ्चि-गोण्ड-विक्रम-गङ्ग-वीर-**विष्णुवर्द्धन**-देवर **गङ्गवाडि**-तोम्मत्तर-सासिरुं **नोणम्बवाडि**-मूवत्तिर्-च्छासिरुमं बनवसे-पन्निर्-च्छासिरुमं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपालन-पूर्व्वक-नेक-च्छत्र-च्छायेयिं रक्षिसि सुखसंकथाविनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरला-क्षत्र-कुल-कुलाचल-चक्रवर्त्तिय पादमूल-प्रभूतनुं तत्कारुण्यामृतप्रवाहपरिवर्द्धितनुमागि ।

ई पेम्मरं वेत्तेत्तलुम्बेर्व्वरिदु वेलदु शाखानुशाखालि नीलुडेण् देसेगं तलुतोप्पे सर्व्व-र्तुक-सकल-फलैश्वर्य्यदिं लोकमं रक्षिसुतिर्क्का-पूर्ण-चेतोरथ-युत-कमळा-कल्पवल्ली-विलासावसथं **श्रीविष्णु-दण्डाधिप**-दिविज-कुजातं विपश्चिद्विनुतम् ॥ सम-

सन्दत्तुण्ण-पुण्योदयमुदय-नगारुढ़-भानु-प्रभा-विभ्रमदिन्दं निच्च-निच्चं पोसपिसे कमलानन्दमं विश्व-नेत्रोपमनेन्दु तेजदिन्दं वेलेगुगुमेलेयं विष्णु **विष्णु**-क्षितीश-क्रम-पङ्केजात-भृङ्गं चपल-रिपु-चमू-नाथ-मत्तेभ-सिङ्गम् ॥ अभिरामाकारदिन्दप्रतिम-भुज-ब्रह्मोपदिन्दप्रमेय प्रभु-मन्त्रोस्ता (त्सा) ह-शक्ति-त्रितयदिनमर्दुत्साहदिं विष्णु-भू-वल्लभ-सताङ्गक्कवाळम्बनवेने नेगल्दत्तुण्ण-पुण्याढ्यनेक प्रभुवा···विष्णु-दण्डाधिपनखिल-बुध-प्राण-रक्षा-प्रवीणम् ॥ परिपूर्णेन्दु-प्रभा-विभ्रमदोलमर्दु गङ्गा-पगा-स्फार-रुग्-विस्तरमं तत्कक्षि दुग्धार्णव-नव-रुचियं ताल्दि नीलदप्पु-दादम् । धरेयी-दिक्-चक्रदिं मन्दर-शिखरदिनत्तल् वियन्मण्डपाग्रं । वरेगं श्री **विष्णु**-दण्डाधिप- विपुल-यशः- कल्प-वल्ली- विलासं ॥ स्फुरित समस्तभुवनभाग्योदयोत्पन्नं नयविनयवीरदितरणादिगुणसम्पन्नं श्रीमदर्हत्परमेश्वरपदपयोजद्वयचरणं विपश्चिज्जनैक-शरणं **काश्यपगोत्र**शतपत्रवनमित्रं चमूप-चूडारत्नं **चिण्णम**-प्रिय-पुत्रं श्रीमत्ता-र्किकचक्रवर्ति- **वादीभसिंहा**-परनामधेय - **श्रीपाल-त्रैविद्य-देव**-पादाराधनालब्ध-सरस्वतीप्रभावसर्व्वस्वं चातुर्य्य चतुराननं समस्तशास्त्रविद्यावडाननं सकलशुभलक्षणोपलक्षिताङ्गय-सौभाग्य-भाग्याभिरामं रूपनिर्ज्जितकुसुमचापं विरोधि-वीर-भट-भय-ङ्करं । पर-दुराप दुर्द्धर-प्रताप पञ्चाङ्ग-मन्त्र-प्रपञ्चाञ्चित-साचिव्य स्वयम्बुद्ध चतु-रुपायविशुद्ध नाना-नयोपाय-प्रावीण्य प्रत्यन्न-योगन्धरायण । **विष्णुवर्द्धन-देव**-प्राज्य-राज्य-भर- सन्धारण-परायण । स्वामि-भक्ति-युक्त-वैनतेय । स्वामि-हिताज्ञनेय श्रीमत्कञ्चि-गोएड-विक्रम-गंग-**विष्णुवर्द्धनदेव**- प्रसादासादित-द्विगुण-प्रतिपत्ति-प्रति-ष्ठित-महा-प्रचण्ड- दण्डनाथ-पदवी-पद-राजितललाट-पट्ट । निज-विजय-भुजा-दण्ड-निर्ल्लोठित-रथ-तुरग-करि-वटा-घटित-समर-संघट्ट । **मासार्द्ध-सिद्ध-दक्षिण-दिग्जय** दुर्द्धरावस्कन्द-केली-निर्म्मूलित--पारावार--तीर-वीर-राजसमाज- सर्व्वस्वापहरण-समायात-मातङ्ग-वटा-समर्पण-सम्मादित- स्वामि-सर्व्वाङ्गपुलक । दण्डनाथ-मण्डली- मण्डन-माणिक्य-तिलक निज-प्रताप-निर्द्दग्ध-**रायरायपुर**- शिखी-शिखा-कलाप- सन्तापित **चेर-चोल-पाण्डय-पल्लव**- नृपान्तरङ्ग । **कोङ्ग**-वङ्ग-मस्तक-मस्तिष्क- कुसुमोप-राजिताङ्घि-रङ्ग । **सह्याचल**-तिलकायमान-दक्षिण-दिग्जयोत्तम्भित-पति-जय-स्तंभ । सदा-समालिङ्गित-लक्ष्मी-कुच-कुम्भ । समस्तराज-कार्य्य-भर-सहिष्णुता-स्वभावसार

संग्रामधीर। यदु-कुल-ओहर निट्टेलुव मुरिवं मनदिं मुन्निरिव। **विष्णुवर्द्धन-देव** दक्षिण-भुजा-दण्डं मनदोलु मच्चरिपर गण्डं। नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितम् श्रीमन्महाप्रधान **निम्मडि-दण्डनायक-विदियण्णं** सर्व्वाधिकारियुं समस्त-जनोपकारियुमागि नुत्तमिरे। विरुदन्मीरियरार्नोनिरे जगदोलगा-कोङ्कितोल् कण्मंतान्करितं नीनेन्दु तन्नं नृपति वेमसे पत्नार्द्धदोल् युद्धदोल् वेङ्कु-गिरियं वेङ्कुण्ड तत्पट्टणमनुरिहि तद्धात्रियं सूरेगोण्डच्चरि कय्यं गोण्डु तण्डं मद-गज-घटेयं **विष्णु-दण्डाधिनाथं**॥ मगवांतं कोङ्कु गोळ्वं गड गज-घटेयं तर्प्पनीतं गडं पोन्-नगेयेम्बुदण्डकं तरिसे पर-नृपरं कादि वेङ्कोण्डु कोङ्कम्। कानुल्कोच्चलळ् साधिसि गज-घटेयं तन्न बाहा-ब्ज कैमिगे तण्डाळदंगति प्रीतिय-नोदविनिदं विष्णुदण्डाधिनाथं॥ विरोधिशार्तन्म-न्मिडेंडेयोळ् गदडङ्गिप्पिनं **चोल**-लाळादिगळारं-गोण्डु दुर्माश्रयदोले सकलत्रं भयं-गोण्डु गोलुण्डे-गोलुत्तिर्प्पिन्न-मन्मोनिधि-निकट-र्म्महपालरं विष्णु-विक्रान्त-गुणं कैगप्पे वेङ्कोण्डटनकर सर्व्वस्वं गोण्डन्॥ वरिदुदु **रायरायपुरवा**-पुर-वह्नि-शिखा-कलापवा-। परिदुवे कांक्ष-मित्तलेनुतं नडे नोडुव **चोल-चेर-पाण्-डयर** दर्पयोल् धिगिल्लेने चमूप-शिखा-मणि-वीर-विष्णु-करतर-दोर्प्रताप-शिखी नील्दु पोडल्दुपदग्ध्वं पर्व्विरल्॥ अनुपम मय्यो...ता-। ने नेगलतेयनान्त नल्लनेरडुं-कुलमुं। जननी-जनकर पोरदाल्-। दन पेम्पुं पेलल्कं नेगल्विनातं॥ आतनन्वय-क्रममेन्तेदोडे। भगवदादि-ब्रह्म-निर्म्मित-मप्प युगावतारदोलु कश्यप-प्रजापतियिं पवित्रमाद **काश्यप**-गोत्रदोलु कृत-कृत्यरुं सिद्ध-साध्यनमप्प महान्मरनेकरिं बलिकवर पोगल्तेगं नेगलतेगं ताने नेलेयागि।

पदमन्युत्तुंग-गोत्राचल-शिखरदोलोप्पुत्तिरल् तन्न नित्या-
भ्युदयं भू-मण्डलोल्लाहमनोदविसे नानन्द-स-स्मेर-लक्ष्मी-
वदनाब्ज-श्रीयोलोप्पम्बडेये निज-विलासं जगद्बन्धनादत्त।
उदयादित्य-प्रभावं प्रकटित-भुवनाभोग-तेजो-विलासम्॥
आतन कुल-वधु भुवन-ख्याते जगत्प्रते भाग्य-सौभाग्य-गुणो-
पेते मनोभव-विभव-स-मेतेपेनल् **शान्तियक्क**नोर्व्वले नोन्तल्॥

आ-दम्पति-गल भाग्यदि । नादं सत्पुत्रनात्म-गोत्र-पवित्रम् ।
मेदिनिगे ताने सुर-तरु-। वादं श्री-**चिण्ण-राज-दण्डाधीशम्** ॥
परम ब्राह्मय-प्रभावं मनुज-परिवृढाकारमं ताल्दि-तेम्बन् ।
तिरे धरोदात्त-सत्वोन्नति योलमर्दु नाना-गुणानर्घ्य-रत्नो ॥
त्करमं रत्नाकरं तानेने तलेदेरेयङ्गावनीनाथ-धात्री -।
भरमं तालिदर्द्दनेक-प्रभुवेने भुवनं **चिण्ण**-दण्डाधिनाथं ॥
आ-विभुविन मनोवल्लभे ।
कुलद पोगल्ते शीलद नेगल्ते मनोभव-राज्य-लक्ष्मियं ॥
निलिसिद गाडिलोकदोंलगावगवी-मिगिलन्ददिन्दवग्-।
गलिसिद रूढ़ि तन्नोलमर्दोप्पिरे **चिण्ण**-चमूप-कान्ते **चन्**-॥
दले नेरे ताल्दिदल् धरेगगुण्डलेयप्प गुण-प्रभावमम् ।
फणि-पतिगं वचो-विषयमल्लवु भाविसे चण्डियक्कनोल-॥
गुणमवु निष्कलंक-निज-रूपदो-लोप्पिरेयुं पोगलतेपोल् ।
तणिपदे धात्रि **लक्ष्मी रति भारति रेवति सत्य भामे रुग्-मिणि** भुवन-प्रणूते धरणीसुते पेम्बुदु लोकमाकेयम् ।
अवर्गे मगं महा-बल-पराक्रमनन्वय-भूषणं मनो ॥
भव-निभनन्य-सैन्य-विपिन-प्रलयानलनर्त्थि-कल्प-पार् ।
त्थि-वनेने रूढ़ि-**चेत्तुदयणं** नेगल्दं भुवन-प्रणूत-**चा**- ॥
दव-नृप-राज्य-वारिनिधि-वर्द्धन-पार्व्वण-शार्व्वरीकर [म्] ।

आ-पुण्य-भाजननिं बलियं पलवु स्त्री-रत्नंगलं पडेदु मत्तमोर्व्वं महाबल-पराक्रमनुं पुण्य-निधियुमप्प मगनं पडेयलु जिन-महा-महिमेगलं माडि वयसुतिर्प्पा-पुण्यवतिगे ।

पुट्टिदनर्प्पुं क्रूर्प्पुं नेट्टने तन्नोडने पुट्टे रिपुगलगेभयं ।
पुट्टे निज-पतिगे चक्रं । पुट्टिदुदेने **विष्णु** सु-भट चूडारत्नम् ॥
अन्तु पुट्टि ।

कुवलयमेय्दे तन्नुदयदिं परितोषमनेय्दे विश्व-वान्-।
घन-जन-लोल-लोचन-चकोर-चयं निज-देह-कान्तियिं ।
तवदनुरागमं तलेये **काश्यप**-गोत्र-पवित्रनेलगे वा-।
डिवडेल- दिङ्गलन्तनुदिनं वलेदं पिरिदुं-विभूतियिम् ॥

अन्तु समस्त-गुणङ्गकुमोदवलेयिं वलेवुदुमन्वयागत-प्रधानसन्ततियुं तनगे धर्म्म-सन्ततियुमेम्ब बहुमानदिं श्रीमत्कञ्चिगोण्ड विक्रम-गंग-**विष्णुवर्द्धन**-देवं पुत्र-समान-मागे कैकोण्डु नडपि महोत्सवदिनुपनपनोत्सवमं ताने माडे सप्ताष्ट-संवत्सरान्तरदोल् समस्त-शास्त्र-शास्त्र-प्रवीणनागे सकल-शुभ-लक्षणोपेतेयुमभिजातेयुमप्प निज-प्रधान दण्डनाय-पुत्रियं कन्या-रत्नमं तन्दा-**विष्णुवर्द्धनदेवं** ताने कनक-कलशवनेत्ति कै-नीरेरदु कन्या-दान-फल-परितुष्टनागे विवाहकल्याणमनत्यूण-मनोरथमं तलेदु दशै-कादश-वर्ष-प्रायदोले कुशाग्रीय-बुद्धि-समर्थनुं चतुरुपधा-विशुद्धनुमादुदं कोण्डु कोण्डाडि **विष्णुवर्द्धनदेवं** तन्न श्रीहस्तदिं द्विगुण-प्रतिपत्ति-पूर्व्वकं 'महा-प्रचण्ड दण्डनाय'-पट्टमं कट्टि समस्ताधिकारनुमं कुडे 'सर्व्वाधिकारियुं' सकळ-जनोपकारियु-मागि ।

अनुपममप्प दिग्विजयदिं जयनोल् पडियागि बल्लिनिं ।
तनगपराजितत्वमलवित्तिरे तेजदलुर्क्केयिं कान् ॥
वनमनुरागदिन्दमित-तेजनेनल् क्रम-विक्रमाङ्कलिम् ।
नेनेयि [नु] वं पुरातनमहाम्बर**निम्मडि-दण्डनायकम्** ॥

आतनाल्द-यौव्वननागि समस्त-नियोग-युक्त-सा.....र्दमनुभविसुत्तुं महा तीर्थ-स्थानङ्गलोळनून-धर्म्ममं माडिसि श्रीमद्-यादव-राज्य-राजधानी-दोरसमुद्रदोल् ई-**विष्णुवर्द्धन-जिनालयवं** मा.....महा-पुरुषन गुरु-कुलमेन्तेन्दडे श्रीवर्द्ध-मान-स्वामिगळ तीर्थदोलु केवलिगलु रिद्धि-प्राप्तरुं श्रुत-केवलिगलुं पलरुं सिद्ध-क्षेत्रगळ तत्.....र्य्यमं सहस्र-गुणं माडि **समन्तभद्र-स्वामिगलु**

---

१. राजभक्ति, निस्पृहता, संयम (Contineous) और धैर्य ।

सन्दरवरिं वलिक तदीय-श्रीमद्-द्रमिल-संघाग्रेसररुप्प **पात्रकेसरि-स्वामिगलिं वक्र-ग्रीवाभि**.....रिन्दनन्तरम् ।

यस्य दि.....न् कीर्त्तिस्त्रैलोक्यमप्यगात् ।

येव स भात्येको **वज्रनन्दी गणाग्रणी** ॥

अवरिं वलिक **सुमति-भट्टारक**रवरिं वलिक...**समय-दीपक**.....रं उन्मीलित-दोष-क.....रजनीचर-वज्रमुद्बोधित-भव्य कमलमार्त्तण्ड्जिन**मकलङ्क** प्रमाण-तपन स्फु.....॥ अवरिं वलिक **चक्रवर्त्ति-भट्टारक**रवरिं वलिक **कर्म्म-प्रकृति**.....वरिं वलिक पल्लवन गुरुगलु **विमलचन्द्राचार्य्य**रवरिं वलिक **परिवादिमल्ल**-देवरवरिं वलि **कनकसेन** श्री-**वादिराज-देव**रवरिं वलिक गंग कुल-कमल-मार्त्तण्डनप्प **वृतुग-पेर्म्माडिय** गुरुगलु श्री-**विजय-भट्टारक**रवरिं वलिक चक्रवर्त्ति-**जयसिंह**-देवन गुरुगलागि ।

गत-सर्व्वज्ञाभिमानं सुगतनयगताप-प्र...दं **कणादं** ।

कृत-नीति-भ्रान्ति-नश्यन्-निज-नय-नयनालोकनं सन्द **लोका-यत** निर्न्नी-मर्य्य-मात्रंगल नुदिगलोलवेर्म्बिनं मीरि लोकोन्-नतमाप्तार्हन्मताम्भोनिधि...विभवं **वादिराजेन्द्र**-भावं ॥

अवरिं वलिक यादवान्वय-चूडामणियप्पेरेयङ्ग-देवङ्गे गुरुगलुं जगद्गुरुगलु-मेनिसि ।

चरणानुस्मरणा.....य-निकरक्लिष्टार्थ-संसिद्धियं ।

तर् वाचं ग्रहणं कुमार्ग-युत-वादि-व्रातमं तूलें दुर्-।

द्धर-चारित्रद दुर्जयोर्जित-वच-श्रीयोलपु तम्मोल् मनो-हरमागल् तलदर्म्ममन्त**जितसेन स्वामिगल्** कीर्त्तियं ॥ अवर सधर्म्मरु ।

कन्तुवनान्तु मेय् देगेयदोडिसि दुर्म्मद-कर्म्म-वैरि-वि-।

क्रान्तमनेय्दे भङ्गिसि लसत्परमागम-वित्तदिन्दिदा- ।

नीन्तन-**तीर्त्थ-नाथरेने** रूढियनान्त **कुमारसेन-सै-द्धान्तिक** रादमुज्जल...जिन-धर्म्म-यशो-विलासमम् ॥

अवरिं वलिक **श्रीमदजितसेन-स्वामि**गलग्र-पुत्ररुं जगत्पवित्ररुमागि ।

सले सन्द योग्यतेयनग्गलिसिद दुर्द्धर-तपो-विभूतिय पेम्पिम् ।
कलियुग-गणधरेन्दुदु नेलनेल्लं **मल्लिषेण-मलधारिगलं** ॥
अवरिं बलिक **मकलंक**-सिंहासनमनलंकरिसि तार्किकचक्रवर्त्तिगलु **वादीभसिंह** रुमेम्ब पेसरेसेये ।
अवसर्पिण्यर्द्धदिन् [दि] त्तुलुगडे जिन-सीमूत-संघात-मी भू-
भुवनन् तेङ्कादुवन्नं सुरिद सकल-विद्या-नादि-पूरदिन्तो ।
वि विपश्चित्तापसन्तापमनुडुगिसुतिर्द्दप्पुदादं मुनीन्द्र- ।
प्रवर-**श्रीपालयोगीश्वर** नेनिय ज्ञात्-सार्थ्यकृत्-पुण्य-तीर्थं ॥
आवन विषयनो पट्-तर्क्कावित्त-बहु-भंगि-संगतं **श्रीपाल-** ।
त्रैविद्य-गद्य-पद्य-वाचो-वित्यासं निसर्ग-विजय-विलासन् ॥
अन्तु ज्ञात्गुरुगलेनिसिद **श्रीपाल-त्रैविद्य-देवर** कालं कर्च्चि **श्रीमद्-म्मडि-दण्डनायक विट्टियण्णनो**-क्तदिय खण्ड-स्फुटित-वीर्णोद्धारक्कं देवता-ङ्गमिल्लिर्प रि(ऋ)त्विग्जनुदायदाहारदानक्कं **शक-वर्ष १०५६** नेय**नल-संवत्सरदुत्तरायण-संक्रान्ति** यन्दु **श्रीविष्णुवर्द्धन-पोय्सल देवर** श्री हस्तदिं धारेयेरेयिसि परमेश्वरदत्ति माडि विट्टिसिद ग्राम **मय्से-नाड वीजे-वोललदर** सीमान्तर (आगेकी ६ पंक्तियोंमें सीमाओंका वर्णन है) **दोरसमुद्रद** पट्टण-स्वामि वोण्डादि-सेट्टिय मग **नाडवलसेट्टिय** कय्दु हिरि-यक्करेयोलगण तावरेयकेरेयोलगाद नेलनं मारुगोण्डी-क्तहिगे कोट्ट श्री हिरियकेरेय केलगण तावरेयकेरेय कडगण-कोडिय विष्णुभट्टन तोट...त्तण गलेय...लु चतुरस्र १५ गलेय मूनिमं मारुगोण्डी-क्तदिगेविट्ट ॥ **द्वादशसोमपुर**वाद **होलेयव्वेगेरेय** हन्नेरडुवृत्तियोलगोण्डु वृत्तियं **गोग्गण-पण्डितर** म...से **गुलियण्णन** कय्दु मारुगोण्डी-क्तदिगे विट्ट ॥ (वे ही परिचित श्लोक)

(प्रथम भाग नष्ट हो गया है)

[राजा एरेयंगके पुत्रने अपनी रानियोंका परित्याग करके, राज्य छोड़कर, और चेङ्गिरिके निकटके देशमें मरते वक्त देह त्याग करते हुए नरसिंहकी रानियोंके ऊपर अधिकार जमा लिया था, अङ्गरक्षको नष्ट कर दिया था

और गंगाकी ओर मुड़कर उत्तरदेशके राजाओंका सत्यानाश किया। उत्तर के आक्रमणमें सफलता प्राप्त कर उसके हाथीने **पाण्डय** राजाकी सेनाको कुचल दिया था, भयङ्कर महान् युद्धोंमें चोल और गौलोंको हराया। कच्ची-गौण्ड-विक्रम-गंगने पाण्डयका पीछा करके नोलम्बवाडिको अधिकृत करके उच्चंगिपर दखल कर लिया। इसके बाद तेलुङ्ग (तैलंग) देशकी तरफ़ बढ़ा, और इन्द्र...को सारी सम्पत्ति सहित कैद कर लिया। इसके बाद भसणको, जो सारे राष्ट्रका कण्टक था, समूल नष्ट किया और बनवसे बारह हज़ारको अपने कडित (हिसाबकी किताब) में लिख लिया। त्रणार्धमें राजाविष्णुने (एरे-गंगके पुत्रने) प्रसिद्ध पानुङ्गल् ले लिया, किसुकलपर राज्य करने वाले..... नाथको अपनी नजरसे ही मार डाला। जयकेसीका पीछा करके पलसिगे १२००० का तथा.....५०० पर अधिकार जमा लिया।

इस महाक्षत्रिय विष्णुवर्द्धन देवके अनेक पद और उपाधियोंमें से कुछेक ये हैं:—चोलकुलप्रलय-भैरव, चेरस्तम्बेरमराजकण्ठीरव, पाण्डय कुलपयोधिवडवा-नल, पल्लवयशोवल्लीपल्लवदावानल, नरसिंहवर्म्म-सिंह-सरभ, निश्चलप्रतापद्वीप-पतित-कलपालादि-नृपाल-शलभ। कच्चीपर अधिकार करनेवाला (कच्चि-गोण्ड), विक्रम-गंग वीर-विष्णुवर्द्धनदेव जिस समय इस तरह गंगवाडि ९६०००, नोणम्ब-वाडि ३२००० तथा बनवसे १२००० पर सुख व शान्तिसे राज्य कर रहा था :—

उसके पादमूलसे प्रभूत (उत्पन्न) तथा उसके कारुण्यरूपी अमृतप्रवाहसे परिवर्द्धित **विष्णु-दण्डाधिप** था। (उसकी प्रशंसा) विष्णु-दण्डाधिपका नाम **इम्मडि-दण्डनायक बिट्टियण्ण** था। इस दण्डनायकने आधे महीने (१५ दिन) में ही दक्षिण विजय कर ली थी। विष्णुवर्द्धन-देवका यह दाहिना हाथ था। बहुत-सी उपाधियों और पदोंसे युक्त यह महाप्रधान, इम्मडि-दण्डनायक बिट्टियण 'सर्व्वाधिकारी' और सर्वजनोपकारी होता हुआ शान्तिसे समय व्यतीत कर रहा था:—

इसके बाद पद्यमें विष्णु-दण्डाधिनाथके उन्हीं पराक्रमोंका वर्णन आता है जिनका वर्णन पहिले गद्यमें हो चुका है।

विष्णु-दण्डाधिपकी मूल-कुल-परम्परा इस प्रकार थी:—सबसे पूर्वमें (आदि ब्रह्माके युगमें) काश्यप प्रजापति थे, जिनसे बहुत-से महान् पुरुष उत्पन्न हुए; उनके बाद एक **उदयादित्य** हुए, जिनकी पत्नीका नाम शान्तियक्के था। उनका पुत्र **विष्णु-राज-दण्डाधीश** था। उसकी पत्नी चन्दले थी, उनका पुत्र **उदयण** था। उदयणका छोटा भाई **विष्णु** हुआ, जो नये चन्द्रमाकी तरह आकार और यशमें बढ़ता ही गया।

इसके किशोरावस्था प्राप्त होने पर स्वयं काञ्चिगोण्ड विक्रमराय विष्णुवर्द्धन देवने, उसको अपने पुत्रके समान मानकर, बड़े उत्सवसे स्वयं ही उसका उपनयन संस्कार किया। सात या आठ वर्षकी उमरके बाद जब वह समस्त शास्त्र-विज्ञानमें पारंगत हो गया तब उसको अपने प्रधान मन्त्रीकी पुत्री ब्याह दी। और १० या ११ वर्षकी उम्रमें बुद्धिमें कुशाग्रकी तरह तीक्ष्ण होने और चार उपाधियों (राजभक्ति, निस्पृहता, संयम और धैर्य) में पूर्ण होने पर विष्णुवर्द्धनदेवने दुगुने विश्वासके साथ उसे 'महा-प्रचण्ड-दण्डनाथ' का पद दिया। और उसे सर्वाधिकार दे देनेसे वह सर्वाधिकारी तथा समस्त जनोंका उपकार करने की सामर्थ्य वाला हो गया।

पूर्ण यौवन प्राप्त होने पर समस्त सार्वजनिक कामोंके करनेसे अनुभवकी वृद्धि होनेपर महापवित्र स्थानोंमें दान देनेके बाद, उसने यादव राजकी राजधानी दोरसमुद्रमें यह विष्णुवर्द्धन जिनालय बनवाया।

इस महापुरुषके गुरुकी गुरु-परम्परा इस प्रकार थी:—वर्द्धमान स्वामीके बाद केवली और श्रुतिकेवलियोंके हो जानेके बाद, जिन शासनके प्रभावको सहस्र-गुणा बढ़ानेवाले समस्त भद्र स्वामी हुए। उनके बाद, उसी द्रमिल-संघके अग्रणी पात्रकेसरी-स्वामी हुए। तत्पश्चात् क्रमसे वज्रसूरि-वज्रनन्दी गणाग्रणी, सुमतिभट्टारक, जिनसमयदीपक अकलङ्क-चन्द्रकीर्ति-भट्टारक-कर्मप्रकृति-पल्लवाधिपगुरु विमलचन्द्राचार्य-परिवादिमल्लदेव, कनकसेन-वादिराजदेव—श्रीविजयभट्टारक (वृत्तविलासादिके गुरु-जयसिंहदेवके गुरु वादिराजेन्द्र—जो दर्शन शास्त्रके प्रकाण्ड विद्वान् थे)—यादवान्वय-चूड़ामणि अरेयङ्ग-देवके गुरु अजितसेन-स्वामी (उनकी

प्रशंसा), इनके एक सतीर्थ्य कुमारसेन-सैद्धान्तिक हुए, जो अपने समयके तीर्थनाथ कहे जाते थे—उनके बाद अजितसेन स्वामीके ज्येष्ठ पुत्र मल्लिषेण-मलधारि हुए, जो कलियुगके गणधर माने जाते थे। तत्पश्चात् वादीभसिंह अकलङ्ककी गद्दी सँभालने वाले मुनीन्द्रप्रवर श्रीपाल-योगीश्वर हुए, जिन्होंने सम्यग् ज्ञानका प्रचार कर अज्ञानके हटानेमें बड़ा काम किया। उन्होंने अनेक तर्कशास्त्रके ग्रन्थ बनाये थे।

इन जगद्गुरु श्रीपाल-त्रैविद्य-देवके पैरोंका प्रक्षालन करके,—इम्मडि-दण्ड-नायक विट्टियण्णने 'वसदि' की मरम्मत, भगवानकी पूजाके प्रबन्ध, तथा ऋषियोंके आहारदानके लिये, (उक्त मितिको) विष्णुवर्द्धन-पोय्सलदेवके हाथोंसे मरसे-नाडमें बांजवोललक्का गाँव प्राप्त किया और उसे परमेश्वरको दानमें दे दिया। इसी तरह दोरसमुद्र-पट्टण-स्वामी (नगरसेठ) बोण्डाडि-सेट्टि के पुत्र नाडवल-सेट्टिसे खरीदी गयी (उक्त) दूसरी भूमि भी उक्त मंदिरको दानमें दे डाली। द्वादश सोमपुरके १२ हिस्सोंमेंसे एक जो होलेयक्केरे था—वह भी दानमें दे दिया। (वे ही अन्तिम श्लोक)।]

[EC,V,Bbur tl ., No. I7]

३०५ क

अर्थूणाका शिलालेख

अर्थूणा (उच्छ्रणक)-संस्कृत।

[विक्रम सं० ११६६, वैशाख सुदि ३]

१—ड० ॥ ॐ नमो वीतरागाय।

स जयतु जिनभानुर्भव्यराजीवराजी-
जनितवरविकाशो दत्तलोकप्रकाशः।
परसमयतमोभिर्न स्थितं यत्पुरस्तात्
क्षणमपि चपलासद्वादिखद्योतकैश्च ॥ ॥ छ॥

२—आसीच्छ्रीपरमारवंशजनितः श्रीमण्डलीकाभिधः
कन्हस्य ध्वजिनीपतेर्निधनकृच्छ्रीसिंधराजस्य च ।
जज्ञे कीर्तिलतालवालक इतश्रामुंडराजो नृपो
योऽन्तिप्रभुसाधनानि बहुशो हंति स्म

३—देशे स्थलौ ॥ २ ॥ श्रीविजयराजनामा तस्य सुतो जयति मति (जगति) विततयशाः । सुभगो जितारिवर्गो गुणरत्नपयोनिधिः शूरः ॥ ३ ॥ देशेऽस्य पत्तनवरं तलपाटकाख्यं पण्याङ्गनाजनजिता—

४—मरसुंदरीकम् । अस्ति प्रशस्तसुरमन्दिरवैजयन्तीविस्तारुद्धदिननाथकर-प्रचारं ॥ ४ ॥
तस्मिन्नागरवंशशेखरमणिर्निःशेषशास्त्राम्बुधि-
र्जैनेन्द्रागमवासनारसतुषाविद्धास्थिमज्जाभवत् ।
श्रीमानंबरसंज्ञकः कलिबहिर्भूतो भिषग्रा (ग्रा) मणी-
र्गीर्हस्थे (स्थ्ये)पि निकुंचितात्प्रसरो देशव्रतालंकृतः ॥ ५ ॥ यस्याव [श्य] क [क] र्म्मनिष्ठितमतेः श्रेष्ठा वनांते भवन्नंतेवासिवदाहितांज-लिपुटा ।

६—श्रोसः (पः) कृतोपासनाः । यस्यानन्यसमानदर्शनगुणैरन्तश्चमत्कारिता शुश्रूषां विदधे स्तुतेव सततं देवी च **चक्रेश्वरी** ॥ ६ ॥ **पापाक**स्तस्य सूनुः समजनि जनितानेकभव्यप्रमोदः प्रादुर्भूः—

७—तप्रभूतप्रविमलधिषणः पारदृश्वा श्रुतानां [।] सर्वायुर्वेदवेदी विदितसकल-शुक्रान्तलोकानुकम्पो निर्नीताशेषदोषप्रकृतिरपगदस्तत्प्रतीकारसारः ॥ ७ ॥
तस्य पुत्रास्त्रयोऽभूवन्भूरिशा-
स्त्रविशारदाः । **आलोकः साहसा**ख्यश्च **तल्लुका**ख्यः परोनुजः ॥८॥ यस्त-त्राद्यः सहजविशदप्रज्ञया भासमानः स्वांतादर्शस्फुरितसकलैतिह्यतत्त्वार्थसारः ।
संवेगादिस्फुटतरगुणव्य-

९—क्तसम्यक्प्रभावः तैस्तैर्दानप्रभृतिभिरपि स्वोपयोगी कृतश्रीः ॥ ९ ॥ आधा [रो] यः स्वकुलसमितेः साधुवर्गस्य चाभूद्भ्रे शीलं सकलजनताह्लादिरूपं च काये । पात्रीभूतः कृतियतिधृतीनां

१०—श्रुतानां श्रियां च सानन्दानां धुरमुदवहद्भोगिनां योगिनां च ॥ १० ॥ यो **माथुरान्वय** नभस्तलतिग्मभानोव्याख्यानरंजितसमस्तसभाजनस्य । श्री-**च्छत्रसेन**सुगुरोश्चरणारविंदसे—

११—वापरो भवदनन्यमनाः सदैव ॥ ११॥

तस्य प्रशस्तामलशीलवत्यां **हेला**भिधायां वरधर्मपत्न्यां । त्रयो बभूवुस्तनया नयाढ्या विवेकवंतो भुवि रत्नभूताः ॥ १२ ॥ अभवदमल—

१२—बोधः **पाहुक**स्तत्र पूर्वः कृतगुरुजनभक्तिः सत्कुशाग्रीयबुद्धिः । जिनवचसि यदीयप्रश्नजाले विशाले गणभृदपि विमुह्येत् कैव वार्ता परस्य ॥ १३ ॥

करणचरणरूपानेक—

१३—शास्त्रप्रवीणः परिहृतविषयार्थां दानतीर्थप्र [वृत्तः] । ग (श) मनियमित-चित्तो जातवैराग्यभावः कलिकलिलविमुक्तोपासकीयप्र (व्र) ताढ्यः ॥ १४ ॥ कनिष्ठस्तस्याभूद्भुवनविदितो **भूषण** इति श्रियः पात्रं—

१४—कांतेः कुलगृहमुमायाश्च वसतिः । सरस्वत्याः क्रीडागिरिरमलबुद्धेरतिवनं क्षमा-वल्याः कंदः प्रविततकृपायाश्च निलयः ॥ १५ ॥ स्मरः (रो) सौ रूपेण प्रबलसु [भ] गत्वेन गणभृत् कुबेरः संप–(॥)

१५—त्या समधिकविवेकेन धिषणः । महोन्नत्या मेरुर्जलनिधिरगाधेन मनसा विद-ग्धत्वेनोच्चैर्य इह वरविद्याधर इव ॥१६॥ जैनेन्द्रशासनसरोवरराजहंसो मौनी-न्द्रपादकमलद्वय—

१६—चंचरीकः । निःशेषशास्त्रनिवहोदक नाथनक्रः । सीमंतिनीनयनकैरवचारु-चन्द्रः ॥१७॥ विदग्धजनवल्लभः सरससारशृंगारवानुदारश्चरितश्च यः सुभग-सौम्यमूर्तिः सुधीः । प्रसाद–

१७—नपरा नमद्वरविलासिनीकुन्तलव्यपत्तपदपंकजद्वितयरेणुरत्युन्नतः ॥ १८ ॥
प्रथमबलग्राये मेवे गतेपि दिवं पुनः। कुलरथमरो येनैकेनाप्यसंभ्रममु-
द्वृतः। गुरुतरविप-

१८—द्गर्त्तग्राक्रमहादुदनादिव (तारि च) स्थिरमतिमहास्थाम्ना नीतो विभूति-
गिरेः शिरः॥१८॥ द्वे भार्ये **भूषणस्य** स्तः **लक्ष्मी सीलीती** विश्रुते।
पतिव्रतत्वसंयुक्ते चारित्रगुणभूषिते ॥२०॥ स सी-

१९—लिकायामुदपादि पुत्रान् सन्तानयोग्यान् गुरुदेवभक्तः। आलोकसाधारण-
शांतिमुख्यान् स्वबन्धुचित्ताब्विकाशमानून् ॥२१॥ आयुस्तमर्हीद्रमार-
निहितलोकाम्बुवन्नश्वरं

२०—संचिंत्य द्विपकर्णचंचलतरां लक्ष्म्याश्च दृष्ट्वा स्थितिं। ज्ञात्वा शास्त्रनिश्चयात्
स्थिरतरे नूनं यशः श्रेयसी तेनाकारि जिनगृहं...भूमेरिदं भूषणम् ॥ २२ ॥
भूषणस्य क-

२१—निष्ठो यो **लल्लाक** इति विश्रुतः। देवपूजापरो नित्यं भ्रातुरादेशकृत्
सदा ॥ २३ ॥

ज्येष्ठो **वाहुक**नामा यः सीडकायामजीजनत्
शुभलक्षणसंयुक्तं पुत्रमम्बटसंज्ञकम् ॥ २४ ॥

२२—**वर्षसहस्रे याते षट्षष्ट्युत्तरशतेन संयुक्ते** विक्रममानोः काले
स्यलिविक्रयमति सति विक्रयराजे ॥ २५ ॥ **विक्रम संवत् ११६६**
वैशाख सुदि ३ सोमे वृषभनाथस्य प्रतिष्ठा ॥

२३—श्री वृषभनाथधाम्नः प्रतिष्ठितं **भूषणेन** विम्बमिदं। **उच्छ्रृणकनगरे**स्मि-
न्निह जगतौ वृषभनाथस्य ॥ २६ ॥ युगलं ॥०॥ तुर्यवृत्तात्समारभ्य वृत्ता-
न्येतानि
षोडश। आद्यवृत्तेन युक्तानि कृतवान् **कटुको** बुधः ॥ २५ ॥ माइल्लो-
वंशेऽभूत्तदः श्रीसावडो द्विजः। तत्सूनोर्भाटुकस्येयं निःशेषाय परा
कृति ॥ २५ ॥ वालमान्वयकायस्थराजपालस्य

२५—नृनुना। संधिविग्रहसंस्थेन लिखिता **वासवेन** वै ॥ २९ ॥ यावद्रावण-रामयोः सुचरितं भूमौ जनैर्गीयते [।] यावद्विष्णुपदीजलं प्रवहति व्योम्य-लि यावच्छशी। अर्ह-

२६—द्वक्त्रविनिर्गतं श्रवणकैः याव [च्छ्रु]तं श्रूयते तावत्कीर्तिरियं चिराय जयता-त्संस्तूयमाना जनैः ॥ ३० ॥ उत्कीर्णा विज्ञानिक**सूमाकेन** ॥ ० ॥ मंगलं महाश्रीः ॥ ० ॥

शिलालेखका परिचय[1]

[डूंगरपुरके अन्तर्गत अर्थूणा (उच्छ्रूणक) नामका एक स्थान है, जो एक समय विशाल नगर था; और परमारवंशी राजाओंकी राजधानी रह चुका है। एक समय यह स्थान एक छोटे-से गाँवके रूपमें आबाद है और इसके पास ही सैकड़ों मन्दिरों तथा मकानों आदिके खण्डहर भग्नावशेषके रूपमें पाये जाते हैं। यह शिलालेख यहींसे मिला है जो आजकल अजमेरके म्यूजि-यममें मौजूद है।

उक्त शिलालेख वैशाख सुदि ३ विक्रम सं० ११६६ का लिखा हुआ है और उस वक्त लिखा गया है जबकि परमारवंशी मंडलीक (मदनदेव) नामके राजाका पौत्र और चामुण्डराजका पुत्र 'विजयराज' स्थलि देशमें राज्य करता था। उच्छ्रूणक नगर में, उस समय 'भूषण' नामके एक नागरवंशी जैनने श्री वृषभदेवका मनोहर जिनभवन बनवाकर उसमें वृषभनाथ भगवान्‌की प्रतिमाको स्थापित किया था, उसीके सम्बन्धका यह शिलालेख है। इसमें भूषणके कुटुम्बका परिचय देनेके सिवाय, माथुरान्वयी श्री छत्रसेन नामके एक आचार्य

---

१. पं० जुगल किशोर मुख्तार ; अर्थूणाका शिलालेख, जैनहितैषी, भाग १३, अंक ८, पृ० ३३२ से उद्धृत।

का भी उल्लेख किया है, जो अपने व्याख्यानोंद्वारा सकल समाजनोंको सन्तुष्ट किया करते थे और भृगका पिता 'आलोक' जिनका परमभक्त था। माथुरसंघी इन आचार्यका, अभी तक, कोई पता नहीं था। माथुरान्वयसे सम्बन्ध रखने वाली काष्ठासंघकी उपलब्ध गुर्वावलीमें भी कुसेन गुरुका कोई उल्लेख नहीं है[1]। इस शिलालेखसे माथुरसंघके एक आचार्यका नया नाम मालूम हुआ है।

३०६

अजमेर-प्राकृत

[सं० ११९५ = ११३८ ई०]

संवत् ११९५ आषाढसुदि ३ आचार्य **गदानन्दी**कृते पण्डित**गुणचन्द्रेण** शान्तिनाथ प्रतिमा कारिता।

अर्थ स्पष्ट है।

[J. A.S.B., VII, p. 52, no. 6]

३०७

सिन्दिगेरे-संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०६० = ११३८ ई०]

[सिन्दिगेरे में, ब्रह्मेश्वर वसदिके दालानके स्तम्भ पर]

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रयकुलतिलक चालुक्याभरण श्रीमत्-**त्रिभुवनमल्ल-देवर** विजय-

---

१. देखो जैनसिद्धान्त भास्कर, किरण ४, पृ० १०३

राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क्क-तारं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि सनधिगत-पञ्च-महाशब्द महा-मण्डलेश्वरं **द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि** सम्यक्त्व-चूड़ामणि मलेपरोळु गण्डाद्यनेक-नामावली-समलंकृतरप्प श्रीमत् **त्रिभुवनमल्ल तळकाडु-कोत्तु-नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोळम्बवाडि-घनवसेहानुङ्गलु-हलसिगे**-गोण्ड भुजबल **वीरगङ्ग होय्सळ देवरु** श्रीमद्-राजधानि-**दोरसमुद्रद** वीडिनलु सुख-संकथ-विनोददिं पृथ्वी-राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीविगळु श्रीमन्महाप्रधानं **हिरिय-मरियाने-दण्डनायंकर** मगं **दाकरस-दण्डनायकर** पुत्ररु द्रोह-घरट्ट-**गङ्गपटय-दण्डनायकर वाचरस-दण्डनायकर सोवरस-दण्डनायकर**ळियन्दिरुमप्प श्रीमन्महा-प्रधानं हिरिय-भण्डारि-**मरियाने-दण्डनायकरुं** श्रीमन्महाप्रधानं **दण्डनायकं भरतरुप्पगलु शक वर्ष १०६० नेय पिङ्गळ-संवत्सरद पुष्य-सु १० आदिवारदुत्तरायण संक्रान्तियलु तुलापुरुष महादानदलु** तम्म नेलेपूरु **सिन्दङ्गेरेय** वसदिगे श्री-**विष्णुवर्द्धन होय्सल-देवर** कय्यलु धारा-पूर्व्वकं हडेदु विट्ट **सवगोन-हल्लि**-सीमा-सम्बन्धमेन्तेन्दडे (आगेकी २० पंक्तियोंमें सीमाओंकी चर्चा है तथा हमेशा का अन्तिम श्लोक)

(दक्षिण मुख)

जय-जया-शरणं रण-क्षिति-हत-क्षत्रं हत-क्षत्र- निर्- ।
दय-निर्दारित-देह-लोहित-पयश्-शातासि शातासि-दुर्- ।
जयं-धारा-चक्रितारि-रक्षण-भुजा-दण्डं भुजा-दण्ड-को- ।
टि-युवद्-वीर-वधू-प्रमोदि **भरत**-श्रीमच्चमूवल्लभं ॥
नय-युक्त-क्रम-विक्रमं क्रम-नमद्-भू-मण्डलं मण्डल- ।
प्रिय-वृत्तं प्रिय-वृत्त-संगत-गुण-ग्रामं गुण-ग्रामणी- ।
नयनानन्दकरं करार्प्पित-धनु-र्ज्या-राव-दूरीकृता- ।
रि-यशो-राजि जितोद्धताजि **भरत**-श्रीमच्चमूवल्लभम् ॥
अवनी-नूत-यशं यशो-धवलिताशा-मण्डलं मण्डला- ।
ग्र-विलूनारि-बलं बल-प्रभु-नमच्चञ्चच्छिखा-शेखरी- ।

भवदात्माङ्घ्रि-नखोत्करं कर-गतारि-श्री-विलासं विला- ।
सवती-मानित-मीनकेतु **भरत**-श्रीमच्चमू-वल्लभम् ॥
स्मर-लीलं स्मर-लील-लोल-ललित-भ्रू-भ्रू-धनुर्व्विभ्रमो- ।
त्कर-लीलायत-दृष्टि दृष्ट-विलसत्-पुष्पेषु पुष्पेषु-जर्- ।
र्ज्जरितोन्मत्त-विलासिनी-जन-मनो-मानं मनो-मान-खे- ।
द-रतोत्कण्ठ-वधू-कदम्ब **भरत**-श्रीमच्चमू-वल्लभम् ॥
चित-मन्त्रं चित-मन्त्र-नूत-महिम-स्तोमं हिम-स्तोम-शु- ।
भ्रतमात्मीय-यशं यशो-लहरिका-मज्जगत्-तर्प्पि तर्- ।
प्पित-लोक-स्तुत-कीर्त्ति कीर्त्तित-भुज-स्तम्भं भुज-स्तम्भ-सं- ।
भृत-विक्रान्त-वधू-करेणु **भरत**-श्री मच्चमू-वल्लभम् ॥
चित-विद्विष्ट-चमू-चमूप-विलसन्मन्त्रं लसन्मन्त्र-सा- ।
धित-दुर्वृत्त महो-महोर्जित-महीं-चक्रं महीं-चक्र-सं- ।
स्तुत-दोर्म्मण्डल मण्डलाग्र-दलितानम्रारि नम्रारि-कीर्- ।
त्तित-दिग्-वर्त्तित-जैत्र-लक्ष्मि **भरत**-श्रीमच्चमूवल्लभम् ॥
प्रतिपक्ष-क्षिति-केतु केतु-जनित-द्विड्-भीति भीति-द्रुता- ।
श्रित-रक्षां-निळयं लयानल-लुठत्-तापाग्नि-कोपाग्नि-शो- ।
षित-युद्धोद्धत-जीवनं वन-शिखि-प्रोद्यत्प्रतापं प्रता- ।
प-तत-श्री-परिलब्ध-लक्ष्मि **भरत**-श्रीमच्चमूवल्लभम् ॥
करवाळाहत-विद्विषं द्विषदसृक्-पूर-प्लुतेभं प्लुते- ।
भं रथालम्बित-खड्ग खळिग-निहतश्वौघं हताश्वौघ-जर्- ।
जरितान्त्रौघ-विकर्षि-फेरव-रव-व्याकृम्भितं जृम्भितो- ।
द्धुर-दोर्दण्ड-भवज्जिताजि **भरत**-श्रीमच्चमू-वल्लभम् ॥
ललनानीकमनो-मनोभव भव-स्फाराळिकाख्यानळो- ।
ज्वळ-तेजो-निज-बाहु बाहु-निहत-द्विड् (द्वि) द्विट्-च्चिरो-देवकीर्- ।
त्ति-लता-वेल्लित-वार्द्धि वार्द्धि-वलय-क्षोणि-तळ-स्तुत्य निर्-
न लसद्-वक्षोळिक्के लक्ष्मि **भरत**-श्रीमच्चमू-वल्लभम् ॥

(पश्चिम मुख)

जिनपति देव्वाळङ्य.....**विष्णु-नृपाळम्** तनयनी-वगद्- ।
वन-नुत-मन्दि **दाकरस**नव्वं यशोधिके **दुर्ग्गणव्वे** स.....।
.....ति-वान्धवर्मेरिगनग्रजनेन्दडे वण्गिस दु...के वल्- ।
लने पेरनुर्व्वियोळ् **भरत**नुद्ध-गुणगळोळाद पेर्म्मेयं ॥
सिरि पोस-मुत्तिनेक्कसरदन्तिरे निन्न विशाळ-वक्षदोळ् ।
सरसति वक्षदोळ् तिळिक्कन्तिरे वीरर वीर-लक्ष्मि तोळ्- ।
वेर-गिनोळोप्पे रक्के-वणियन्तिरे निर्म्मळमप्प कीर्त्तियम् ।
भरत-चमूप ताळ्दु शशि-सूर्य्य-कुलाद्रि-चयङ्गळु ल्लिनम् ॥
अनतारि-श्री-समाकर्षणवभिवन-दारिद्र्य-तीव्र-ग्रहोच्चा- ।
ट्टनवल्युग्र-द्विपन्मारणवुळ-मयार्त्तावनीपाळक-स्तं- ।
भनवुर्व्वी-वश्यवास्मावनि-परिवृढ-शान्त्यर्थ-मन्त्रं जगन्मण्- ।
डन-कीर्त्ति-श्रीश विद्वन्निधि **भरत**-चमूनाथ नीनोन्दे मन्त्रम् ॥
हरि भरदिन्दे कित्तेळद तारद कल्लेडेयल्लदाग्रहम् ।
वेरसु दुर्घोत्करम् तिरियदुव्विगे मय्यमवेम्ब निन्देयोळ् ।
पोरेयद मेरुवेन्दपुदु धारिणी विप्र-कुल-प्रदीपनन् ।
भरत-चमूपनं मदन-रूपननप्रतिम-प्रतापनम् ॥
हृदयं कारुण्य-पीयूषद पुदिदोदवाळोकनं चारु-दाक्षि- ।
ण्यद केळी-गोहवात्याम्बुजवरिवळ-कळानार्म-सन्दर्भविष्ट- ।
प्रदबुधद्-भ्रू-लतास्पदवमर-तरित्-पूतवाचारवायेम् - ।
दुदेनेन्दन्य-सामान्यने **भरत**-चमूपं मनोजात-रूपम् ॥
भुज-दर्प्पं शौर्य-गर्भं वितरणवधिक-प्रीति-गर्ब्भं सु-नेत्रं- ।
भुजमुं दाक्षिण्य-गर्ब्भं वदन-शशि कळा-गर्ब्भवाचार-सारम् ।
त्रि-जगत्-संस्तोत्र-गर्ब्भं निरुपम-विलसन्मूर्त्ति शृङ्गार-गर्ब्भम् ।
निजमेन्दन्य-सामान्यने **भरत** -चमूपं मनोजात-रूपम् ॥
मत्ते कृत-युगमे वन्दन्द् । उत्तम-पुरुषने पडेवडेनगे दलीतम् ।

विट्टेन्दु कादपं त्रिदि । वित्तरदिं **भरत**-राज-दण्डाधिपनम् ॥

संकण्ण ॥

घनमेल्लं जिन-मन्दिरक्के दयेयेल्लं प्राणि-वर्गक्के सन्- ।
मनमेल्लं जिनराज-पूजेगे समन्त् औदार्य्यमेल्लं विशि- ।
ष्ट-निकायक्केसवन्न-दान-गुणमेल्लं सन्मुनीन्द्राळिगेम्- ।
विनेगं सच्चरितं चमूप-**भरतं** माळ्पं महोत्साहमम् ॥

प्रभविसुगे विभवमीश्वर- । निभ-मूर्त्ति विरोधि-विक्रम-क्षय-केतन ।
शुभ-कृद्-गुण निनगे चमू- । प्रभु **भरत** सहस्र-वत्सरं पुगु-विनेगम् ॥

अति-सुभग-सुन्दराकृति । सततं निनगोप्पि **भरत** नीं निजदिन्दम् ।
जित-मदननागे निन... ।...य माडिदुदिळा-तळं भूतलदोळ् ॥

(उत्तरी मुख)

श्री-मूल-संगद देशिय-गणद पोस्तक-गच्छद कोण्डकुन्दान्वयदाचार्य्यरु श्री-कुळचन्द्र-सिद्धान्त-देवरु ॥ अवर शिष्यरु ॥

एळ-मावि वनमव्वदिं तिळि-गोळम्माणिक्यदिं मण्डना- ।
वळि ताराधिपनिं नभं शुभदमागिप्पन्तिरिर्द्दन्तु निर्- ।
म्मलमीगळ् **कुळचन्द्र-देव**-चरणाम्भोजात-सेवा-विनिश्- ।
चल-सैद्धान्तिक-**माघनन्दि** मुनियिं श्री-कोण्डकुन्दान्वयम् ॥

श्री-**माघनन्दि-देवर** । कोमळ-पद-कमळ-युगळमं स्मरयिपड् ।
आ-मानवरं पोर्द्ददु । भीमोरग-विष-रुजा-महोग्रह-दोषम् ॥

अवर शिष्यरु ॥

दण्डित-दण्ड-त्रयरा- । खण्डल-पति-विनुत-सत्-तपस्सम्पदनुत् ।
खण्डित-मदनेनलेसेदं । **गण्डविमुक्त-व्रतीश**-राद्धान्तेशम् ॥

(यह लेख यहीं तक पाया जाता है ।)

[जिस समय महाराजाधिराज, परमेश्वर, परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुल-तिलक, चालुक्याभरण, श्रीमत्त्रिभुवन मल्लदेवका विजय-राज्य उत्तरोत्तर प्रवर्द्धमान था:—

तत्पादपद्मोपजीवी (हमेशा की उपाधियों सहित) तलकाडु-कोङ्गु-नङ्गलि-गङ्गवाडि, नोळम्बवाडि-बनवसे-हानुङ्गल और हलसिगेको अधिकृत करनेवाले, वीरगङ्ग होय्सळ-देव अपनी राजधानी दोरसमुद्रमें विराजमान थे:—

तत्पादपद्मोपजीवि,—महाप्रधान प्राचीन मरियाने-दण्डनायकके पुत्र डाक-रस-दण्डनायकके पुत्र तथा गङ्गपय्य-दण्डनायक, वाचरस-दण्डनायक और सोवरस-दण्डनायकके दामाद,—महाप्रधान, प्राचीन भण्डारी, मरियाणे-दण्डनायक, और महाप्रधान दण्डनायक भरतमय्यको (उक्त मितिको), विष्णुवर्द्धन-होय्सळ-देवके हाथोंसे सक्कोनहल्लिमें उनके निवासस्थान सिन्दङ्गेरेकी 'वसदि' के लिये कुछ ज़मीन (वर्णित) मिली।

(यहाँ भरतकी प्रशंसामें बहुत ही साहित्यिक-कला-पूर्ण श्लोक हैं।)

मूलसंघ देशिय-गण, पुस्तक-गच्छ और कुन्दकुन्दान्वयके आचार्य कुलचन्द्र-सिद्धान्त-देव; उनके शिष्य (प्रशंसा सहित) माधवनन्दि मुनि; उनके शिष्य, गण्ड-विमुक्त-व्रतीश थे।]

नोट:—लेखमें आया हुआ 'संकण्ण' नाम संभवतः भरत-दण्डनायककी प्रशंसा-के श्लोकोंके कर्त्ताका नाम जान पड़ता है।

[EC, VI, chik-magalur U., no. 161]

३०८

सिन्दिगेरे—संस्कृत तथा कन्नड़।

[काल-निर्देश रहित, पर संभवतः लगभग ११०३ ई०]

[सिन्दिगेरेमें, वस्तिमें ब्रह्मेश्वर मन्दिरके एक पाषाण पर]

श्रीमत्-परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक **सत्याश्रय-कुल**-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-**त्रिभुवनमल्ल-देवर** राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमा-चन्द्रार्क्क-तारं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मो-

पत्नीवि। स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महाशब्द महा-मण्डलेश्वरं द्वारावती-पुरवराधीश्वरं **यादवकुलाम्बर**-द्युमणि सम्यक्त्व-चूडामणि मलेपरोळु गण्डाद्यनेक-नामावली-समलङ्कृतरप्प श्रीमत्-**त्रिभुवनमल्ल विनयादित्यं पोप्सळं कोङ्कण-दाळ्वखेडद वयळ्-नाड तळेकाड साविमले**यिनोळगाद भूमियेल्लमं दुष्ट-निग्रहशिष्ट-प्रतिपाळनेयिं।

वलिदडे मलेद्दडे मलेपर। तलेयोळु वाळिद्दुवनुदितमय-रस-वसदिम्।
वलिपद मलेपद मलपर। तलेयोळु कम्पिद्दुवनोडने **विनयादित्यम्**॥
आ-मण्डलेश्वरन मनो-नयन-वल्लभे।
परिजनकं पुर-जनकं। परमार्थं ताने पुण्य-देवतेयेनलेम्।
धरेयोळु नेगल्दलो **केळे**यव्वरसि जनाराध्ये भुवन-वनिता रत्नम्॥

अन्तवरिर्व्वरं सुख-संकथा-विनोददिं **सोसेवूर** नेलेवीडिनोळु राज्यं गेय्युत्तिर्दो-**केळे**मल-देवियरं **मरियाळे**-दण्डनायकनं तन्न तम्मनेन्दु रक्षिसि **विनयादित्य-पोप्सळ-देव**रं तानुमिद्दुं मरियाने-दण्डनायकङ्के **देकवे-दण्डनायकितियं** कन्या-दानं माडि **आसन्दि-नाड सिन्दगेरेयं** प्रभुत्व-सहितं नेलेयागि **शक-वर्ष ९६९ नेय सर्व्वजित्-संवत्सरद फाल्गुन-शुद्ध-तदिगे सोमवारदन्दु** कन्या-दानमुं भूमि-दानमुमं धारा-पूर्व्वकं कोट्टु स्वधर्म्मदिं रक्षिसुत्तमिरे।

धरणिगे नेगदी-पोप्सळ। नरपतिगं कमन-कम्बु-कन्धरे केलेयव्व्-।
रसिगमुदयिसि नेगर्द। धरित्रियोळु वीर-गङ्ग **नेरेगङ्ग**-नृपम्॥
अनुपम-कीर्त्ति मूरनेय मारुति नाल्कनेयुग्र-वलिनियय्-।
दनेय-समुद्रमारनेय-पू-गणेयेळनेयुव्वरेशनेण्-।
दनेय-कुलाद्रियोम्बननेयुद्गत-दान-समेत-हस्ति पत्।
दनेय-निधि प्रभावनेने पोल्वव्वररेरेपङ्क-देवनम्॥
आ-विभुगं नेगर्द्दे**चल**-। **देविगमुदयिसिदरदरेने वल्लालदमावल्लभ-विष्णु**धरि-। त्री-वल्लभ-सु-भट-नुतिम**द्दुदयादित्यर**॥

एनितित्तडमेनितिरिदड-। मनिताप्पुम् कूप्पुमप्पुवेपेरर्गंदु केम्।
मने नोड दिटके **वल्ला**-। **ल**न्नृपालने चागि **वल्लु-देव**ने विर ॥

अन्तु सुख-संकथा-विनोददिं श्रीमद्राजधानि **वेलुहूर** वीडिनोलु राज्यं गेय्युत्तमिर्द्दु **मरियाने-दण्डनायकन** द्वितीय-लक्ष्मी-समानेयरप्प **चामवे-दण्डनायकितिगं** पुट्टिद **पद्मल-देवि-चावल-देवि वोप्पादेवि**यरिन्ती- मूवरुं शास्त्र-गीत-नृत्यदल्लु प्रौढ़ेयरुं मूरु-राय-कटक-पात्र-जस-दलेयरेनसि वलेयला-मूवरुं-कन्यकेयरनोन्दे हसेयलु **वल्लाल-देव**ं विवाहं माडि **शक-वर्ष १०२५ नेय स्वभानु-संवत्सरद कार्त्तिक-शुद्ध १० बृहस्पतिवारदन्दु** मोले-वाल-रिणक्के **मरियाने-दण्डनायकङ्गे सिन्दगेरेय**-नेरेदनेय-पर्यायदल्लु प्रभुत्व-सहितं नेलेयागि पुनर्धारा पूर्व्वकं कोट्टु सलुत्तमिरे।

श्री-कान्ता-नेत्र-नीलोत्पल-वदन-सरोजात-स--स्मेर-लीला-
लोकं लोकत्रयोज्जृम्भित-विशद-यशश्चन्द्रिकादोष्प्रताप-
व्याकीर्णं त्यक्तयुक्तक्रमकलितकुभृच्चक्रखेदप्रमोद-।
श्रीकं श्री-**विष्णु** भूपं वेळगुगे जगमं राज-मार्त्तण्ड-देव ॥
इनितं कोपावलेप-भुकुटि निटिलदोळ् पुट्टे तेर्प्पुत्तिवं तोप्-
पेने मार्प्पायुं दिशाधीशरनिदिर दिशाधीशरोळ् तागिकुं तिप्
पेनेलाशा-दन्ति-यूथङ्गळधिदिर दिशा दन्ति-यूथङ्गळोळ् पुण्-।
मेने तालङ्गुडुगुं व्योममुमनेलेयुमं **विष्णु** जिष्णु-प्रभाव ॥
पेसर्गोण्डावाव-देशङ्गळनेणिसुवुदावाव-देशङ्गळं व-।
ण्णिसि पेळ्दुत्तिर्प्पुदावाववनि-पतिगळं लेक्किसुत्तिर्प्पुदेम्बोन्द् ।
एसकं कैगण्मे नाळकुं-कडल तडि-वरं दिग्जय-क्रीडेपोळ्सा- ।
धिसिदं भू-लोकमं क्षत्रिय-कुल-तिलकं वीर-**विष्णु**-क्षितीशं ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महामण्डलेश्वरं **द्वारावती-पुर**वरेश्वरं य कुलोदयाचल-द्युमणि। मण्डलिक-चूडामणि। श्रीमदच्युत-पादाराधनालब्ध-प्रभावम्। सकल-दिक्पालक-पराक्रमाक्रमण-पटु-पराक्रमैक-स्वभावम्। शत्रु-क्षत्रिय-कलत्र-गर्भ-स्राव-सम्पादक-गभीर-विजय-शङ्ख-नादम्। वासन्तिका-देवी-लब्ध-वर-प्रसा-

दम् । प्रतिदिन-निरत-निरुपम-हिरण्यगर्भ-तुलापुरुषादि-क्रतु-सहस्र-समर्पित-पितृ-देव-गुरु-द्विज-समावन् । निष्प्रतिपक्ष-भुज-बल-प्रभाव-निर्व्वितादिराव । विष्णु-ईश्वर-विजय-नारायणाद्यसंख्यात-देव-कुल-कुलाचल-कुल-यादवबलधि - विष्णुसमुद्र-मुद्रित-महीलोक-नवीकरण-चातुर्य्य-चतुराननम् । चतुर्गण-मण्डित-पण्डित-गोष्ठी-षडाननम् । समर-मुख-गृहीताहित-महीकान्त-शुद्धान्त-कान्ता-मुख-निरीक्षण-क्षण-कृत-सूर्य-निरीक्षणम् । नृसिंह-ध्यान-निश्चलीभूत-निर्म्मल-चरित्रन् । पुराङ्गना-पुत्रम् । सकलजन-सत्य-नित्याशीर्व्वाद-सम्पादित-निरन्तरामिवृद्धि-प्रयुक्तन् । दुर्द्धरसमरकेलि-संसक्तन् । दोर्व्वलापलेप-दुश्शीलाश्वपति-गजपति-प्रमुख-राज - लोक-निर्द्दय – निर्द्दलनोपार्ज्जित-ताश्व-गजादि-नाना-रत्न-निचय-रुचिर-राज्यलक्ष्मी-विलासन् । सरस्वती-निवासन् । **चोल-कुल**-प्रलय भैरवं । **केरल**-लक्ष्मेश्वरम-राज-कण्ठीरवन् । **पाण्ड्य-कुल**-पयोधि-बडवानलम् । **पल्लव**-यशो-वल्ली-पल्लव-दावानलं । **नरसिंह-वर्म्म**-सिंह-शरम् । निश्चल-प्रताप-दीप-पतित-**कलपालादि-नृपाल**-कुरंग-कुल-पलायन-कारण (म्) कठोर-विजय-धनुर्द्दण्ड-टङ्कारन् । रिपु-नृप-कुल-दलन-जनित-विजयालंकार-निनाद्य-चण्ड-डिण्डिमाडम्बरा-लंकृत-**काञ्ची-पुरम्** । स्व-गृह-चेटिका-नियोग-नियुक्त-रिपु-नृपान्तःपुरम् । कर-तल-क्रोधीकृत-दक्षिण-**मधुरापुरम्** । स्वकीय-सेनानाथ-निर्द्दलित-**जननाथपुरम्** । जगद्-दारिद्र्य-विद्रावण-प्रवीण-कटाक्ष-निरीक्षणन् । प्रत्यक्ष-पद्मेक्षणन् । समुद्र-मेखलालङ्कृत-वसुमती-वल्लभन् । भय-लोभ-दुर्ल्लभन् । नामादि-प्रशस्ति-सहितन् । श्रीमत्-कञ्चि-गोण्ड-विक्रम-गङ्गविष्णु-**वर्द्धन-देवन्** **गङ्गवाडि-तोम्मत्त(त्ता)रु-सासिर नोळम्बवाडि-मूवत्तिर्च्चासिर** मुं **बनवसे**-र्च्चासिरमुं । दुष्ट-निग्रह-विशिष्ट-प्रतिपालन-पूर्व्वकमाल्तु सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं **पन्नि**-रेय्दुत्तिरे तत्पादपद्मोपजीविगळु । समस्त-राज्य-भर-निरूपित-महामात्य-पदवी-प्रख्यातरुम् । अभिनवतरुम् । श्रीमदर्हत्-परमेश्वर-पद-पयोज-षट्चरणरुम् । रत्नत्रयालंकृत-शम-दम-नय-विनय-शौर-वितरणादि-गुणाभरणरुम् । कञ्चि-गोण्ड-विक्रम-गंग-विष्णुवर्द्धन-देवान्वयागत-महा-प्रचण्ड-दण्डनाथ-पदवी-पट्ट-रञ्जित-निटिलार्द्धेन्दु-मण्डलरुम् । निरवद्य-स्याद्वाद-लक्ष्मी-रत्न-कुण्डलरुम् । नित्याभिषेक-निरत-निरुपम-जिन-पूजा-महोत्साह-जनित-प्रमोदरुम् । चतुर्व्विधदानविनोदरुम् । श्रीमदकलङ्क-दर्शन-

लक्ष्मी-नयनोपमानरुम् । परस्पर-स्नेह-मोहाधीनरुमप्प श्रीमन्महा-प्रधानम् **मरि-यानें-दण्डनायक**-नुं श्रीमदादि-**भरतेश्वर**नेनिप **भरतेश्वर दण्डनायक**नुम् तम्मोळ-भेद-भावदिं-गुण-गुणि-स्वरूपरागि ।

भीमार्ज्जुन-लव-कुचरिव- । री-माळकेयेनल्के तम्मुतिर्व्वरुमेसदर् ।
श्रीमन्मरियानेयमुद्दाम-गुणं **भरत**-राज-दण्डाधिपरु ॥
एरगि बुध-मधुकरङ्गळु । पेरपिङ्गदे तन्ननेन्दुमोलगिपिनेगं
मरियाने दान-गुणवेडे- । वरियदिरलु पतिगे पट्टदानेयेन्दे निप ॥
मरुवक्कमनोडिसलुं । नेरे राज्य-श्री-विळासमं मेरेयलुवी- ।
मरियाने नेरगुमेन्दर- । करिनोळु पति मेच्चे पट्टदानेयुमाद ॥
उन्नत वंशनुत्सवकरोत्तम-भद्र-गुणान्वितं जगत् ।
सन्नुत-दान-युक्त-विभवं मरियाने रिपु-प्रभेदनोत्- ।
पन्न-जायाभिरामनेनगीतने नच्चिन पट्टदानेयेन्द् ।
एम् नेरे नच्चि माडिदनो विष्णु-नृपं ध्वजिनी-पतित्वमम् ॥
एरगुव दिग्विजर मकुटद । तुरुगिद माणिक्यद तण्-विसिलुगळ पोलपिम् ।
मिरुगुव जिन-पद-नख-रुचि । मरियानेगे माल्के सकल-महिमास्पदमम् ॥
आतन सति मुन्नेगर्दा- । सीतेगरुन्धतिगे रतिगे वाणिगे भूभृज्-
जातेगे दोरेयेनलल्लदे । भूतळदोळु **जक्कणब्बे** गुळिदर्द्दारेये ॥
अनुपमवप्प तन्न पति-भक्तिय निर्म्मल-धर्म-युक्तियोळ् - ।
पिनोळमर्दिर्द्द रूपिन विळासद । विभ्रमदोळपु वंश-वर् - ।
द्धन-कररप्प तत्सुतरिनोप्पुविनं मरियाने-दण्डना- ।
थन वधु-**जक्कियक्कने** यशोवतिपादलीला-तळाग्रदोल् ॥
तोळतोळगि वेलगि कीर्त्ति [य] । वळयदिनळवट्ट **विष्णु**-भूपन राज्य- ।
स्थलके मिसुपेसेव हेमद । कलशं केवलमे **भरत**-दण्डाधीशम् ॥
सिरि पोस-मुत्तिनेक्कसरद्दन्तिरे निन्न विशाल-वक्षदोळ् ।
सरसति वक्त्रदोळ् तिलकद्दन्तिरे वीरर वीर-लक्ष्मि तोळ् - ।
वेरगिनोळोप्पे रक्के-वणियन्तिरे निर्म्मळवप्प कीर्त्तियम् ।

भरत-चमूप ताळ्दु शशि-सूर्य्य-कुलाद्रि-चयङ्गळुल्लिनम् ॥
वारिधि-वृत-भू-लोकदो- । ळारवलीविरिव-गुणदोलमम भरतङ्ग ।
आरु मर्ग तोणे यल्लद । धीरर्कलि-युगदोळोगेदे दण्डाधीशर् ॥
लोगर मातवन्तिरलि माण् भरतं मुनिदेत्ते मत्ते कोळ्- ।
पोगद वैरि-दुर्ग्ग मुरिदेळ्द वैरि-पुरङ्गळोळोडि पाळ्- ।
आगद-वैरि-देशमति-भीतियिनुळ्ळुदनित्तु तेत्तु वाळ् ।
आगद-वैरि-वीर-रणमिल्ल दली-दोरे तत्पराक्रमम् ॥
मनेयोळ् चाणिक्यनिन्दम् मिगिलेनिप महा-मन्त्रि नाना-नयज्ञम् ।
मोनेयोळ् सौपर्न्ननिन्दगळमेनिप महा-वीरनभ्यस्त-शास्त्रम्
मनेगम्मरान्तु निन्दोडिद मोनेगमिदेम् दत्तनेन्दर्क्कर्रिन्दाळ् ।
दाने तन्नं बण्णिसल्केन् नेगर्दनो **भरतं** खळ्ग-कार्य्यातिधुर्य्य ॥
भरतेश्वर-चन्द्रेश्वर- । चरितमे निज-चरितमेने चमूपति भरते- ।
श्वरनेसेवनन्विताखिल- । पुरुषार्थ भव्य-सेव्य-जङ्गम-तीर्थ ॥
निरपायं निष्कळंकं निहत-रिपु-कुलं निर्भ्भराशा-चय-श्री- ।
परिरम्भारम्भ-शुम्भत्-सुखमयमतितीव्र-प्रताप-प्रकाश- ।
स्फुरितं पद्माकराब्ज-ग्रहण-कळित--नित्योदयं लोकदोळ्दु-
स्थिरमक्के दोर्-यशश्श्री-रत-भरत भवद्भाग्यचण्डाशुबिम्ब ॥
कान्तं श्री-भव्य-चूडामणि **भरत**-चमूनाथनात्यन्तिक-श्री- ।
कान्तं त्रैलोक्य-नाथं परम-जिनने देव्वं समभ्यस्त-सत्-सि- ।
द्धान्त-श्री **माघणन्दि**-व्रतिवरे गुरुगळ् तन्दे **माराय** रेन्दन्द् ।
एन्तुं तां घन्येयेन्दी-**हरियले**येने भू-मण्डळं बिच्चलिक्कुम् ॥

इन्तु तन्न भाग्याभिवृद्धियुं समस्त-जनमुं परसे चतुरुपधा-विशुद्धनुम् जगत्-सेव्य-सूचिव्य-स्वयम्बुद्धनुं महा-युद्ध-व्यसन-विरोधि वीर-भटोद्भट-भुज-बळवलेपन-विळो-पनेनुं अभिनव-**जयकुमार**नुं विनेय-जनाधारनुं श्री-जैन-शासनोद्भासनोत्पन्न-सौधर्म्मेन्द्रनुं परम-परोपकार-गुण-खेचरेन्द्रनुम् । श्रीमत्कब्बि-गोण्ड वीर-**विष्णुवर्द्धन-देव**नणुगिन-र्क्करिन दण्डनायकनु जगद्दशीकरण-परिणत-सौभाग्य-कुसुमशायकनुमेनिसि **भरत**ण-

दण्डनायकनु-मग्रजं-**मरियाने-दण्डनायक**नुमन्वयागत-महा-प्रधान-पदवियन.....
रिसिं।

अरियं व्यावर्ण्णिसळान्। अरिवार्य्यंण्मेम्ब सद्गुण-त्रितयदोळम्।
नेरेदरु जसमने जगदोळु। मरेदरु **मरियाने-भरत**-राज-चमूपर्।
मरियानेय पडेदं जग-। उरुवनुजनकनेम्बुदन्ते भरत-राजने पडेदम्।
पेरडेम् मूरु-लोकमुव्। उरुवण्णननेम्बुदवरनी-भुवन-जनम्॥

इन्तु पोगळ्तेगं नेगळ्तेगं नेलेयादा-महानुभावरुत्पत्तियिं पवित्रीभूतमुमाद **भारद्वाज-गोत्र**दोळु।

आ-क्रमळगर्भ्म-वंशदो-। ळ् एकीकृत-भुवन-मान्य-सौजन्यं तां।
दाकरसनति-प्रौढ़-वि-। वेक-रसं ख्यातनातनन्वय-तिलकम्॥
स्वीकृत-सद्-गुण-निकरम्। लोक-प्रभु-गंग-राज्य-**पोप्सल**-राज्यक्क्।
एक प्रभुवेने नेगळ्दं। **डाकरसं** दण्डनाथ-वसुधा-रत्नम्॥

आतन मनो-वल्लभे **येचियक्क**।

आ दम्पतिगळ्गात्मज। रादर् **ब्राकण**-चमूप-**मरियाने**गळी-।
मेदिनी तम्मनिवर्च्चन्-। द्रादित्यरमोघमप्परेने कृत-कृत्यर्॥
पेसरिन्दं मरियानेयेम्ब-जसवं...दियुं बल्पिनिन्द्।
एसेवेण्डुं देसेयानेगळ्गमधिकं तानेम्बिनं तन्नोळे र्-।
व्वेसनुं दानमुमोप्पे होप्सळ-नृपं गो.....सा-।
धिसिदं श्री-मरियाने पार्त्थिवर सङ्गरावणी-रङ्गमम्॥
आ-मरियानेय वधुगळु। भूमिय लक्ष्मिय वोलमर्दति-पेम्पिन्-।
तामेसेव ग.....। .....गुणवतियर्॥

अन्तु मद-गजद मद-रेखेगळन्ते **मरियाने**-दण्डनायकनोळोप्पम्बडेदा-वेडङ्गियरिवर्
.....युमेनिसिद **दण्डनायकिति-देकव्वेगे**।

सुतरादमाचण्णनु-। मतर्क्य-विक्रान्त-शालि-**दाकरस**नु...
.....। .....ह्रुरु॥

श्रीमन्माचण-दण्डनायकने कल्पोर्व्वीनमुर्व्वीतळ.....

.....

[जिन शासनकी प्रशंसा। सत्याश्रम-कुल-तिलक, चालुक्याधीश श्रीमत् त्रिभुवन मल्लका राज्य प्रवर्द्धमान था:—तब यादव कुलाम्बरद्युमणि त्रिभुवनमल्ल विनयादित्य पोय्सल कोंकण, आल्वखेद, बयल्-नाड्, तलेकाड् और सावियलेसे घिरे हुए भूमि-प्रदेशपर राज्य कर रहे थे। उनकी पत्नी केलेयम्बरसि थी। (दोनोंकी प्रशंसा)।

जिस समय ये दोनों राजा-रानी सोसेवूरमें निवास कर रहे थे, केलेयल देवीने विनयादित्य-पोय्सलकी उपस्थितिमें मरियाने-दण्डनायकको **देकवे-दण्डनायकित्ति**-की सगाई कर दी। (शक वर्ष ९६९में)।

उसके बाद पोय्सल राजाओंकी, अन्य शिलालेखोंके समान ही, विष्णुवर्द्धन तककी उत्पत्ति दी है, अर्थात् एरेयङ्ग और उनके तीन लड़के बल्लाल, विष्णु और उदयादित्य।

विष्णुवर्द्धनके दो प्रधान मन्त्री थे : मरियाने दण्डनायक और भरतेश्वर दण्ड-नायक। (इन दोनों की और इनके कुटुम्बकी प्रशंसा)। मरियानेकी एक स्त्री लक्कनवे थी। दूसरी पत्नी देकव्वे-दण्डनायकितिसे दो पुत्र उत्पन्न हुए, माचण और दाकरस। माचणकी प्रशंसा।]

[EC, VI, chik magalur U., no. 160]

३०९

श्रवणबेलगोला—कन्नड़।

[कालनिर्देश रहित]

[जै० शि० सं०, प्र. भा.]

३१०–३११

श्रवणवेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १०६१ (?)= ११३९ ई०]

३१२

बादामी—कन्नड़।

[शक १०६१ (?)= ११३९ ई०]

नमः श्री-वासुदेवाय भोगिने योगमूर्त्तये ।
हरेश्वराय सत्याय नित्याय परमात्मने ॥

स्वस्ति समस्त भुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परममट्टारक [सत्या] श्रय-कुळ-तिळक चाळुक्याभरण [श्री] मतु-प्रतापचक्रवर्त्ति **जयदेकमल्लदेव** [र] विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमा-[चं]द्रार्कतारं वरं सलुत्तमिरे [॥] [त] त्पादप[द्मो]पजीवि [।] श्रीवल्लभनमळं भू [दे]वाङ्घ्रिसरोजभृङ्गनङ्गजकल्पं कोविद-शुक्ल-सहकारं देवं श्री**कालिदास**दण्डाधी[श]म् ॥ समधिगतपं[च]महाशब्द महासा[म]-न्ता[धि]पति महाप्रचण्डदण्डनायक समस्ताधिकारि मनेवेर्गंडे काविम[र]स.....ने (१) गल्द (१) **कालिदास**चमूनाथनाद.....सुजनैकनिळयं श्री-ना.....धीशं ॥ मत्तन्ते काळिमरसङ्कुत्तम[1].....**महादेव**-चमूपोत्तमनुदग्रमहिमं मत्तेभवलं विनीतनाततसौ(शौ)र्य्यं ॥ इन्तेनिसिद **महादेव**-दण्डनायकनुं **पालदेव**दण्डनायकनुं चालुक्य-जगदेक मल्लवरिष्ठ एरडे(ड)नेय **सिद्धार्त्थि-संवत्सरद कार्त्तिक सु(शु)द्ध त्रयोदसि (शि) सोमवारदन्दु** श्रीमद्योगिजनहृदयानन्दनेनिप परमानन्ददेवरु माडिसि(द) योगेश्वरदेवर्गो वादाबिय सिद्धापदोळगे हत्तु (त्तु) गद्याण पोन्नु वरिसवरिसक्के कुडुहदेन्दाचन्द्रार्क्कस्थायियागे (गि) पेग्गडे-**रामदेव**-रसन विन्नपदिं बिट्टरु ॥ [क्रम] दिन्दिविद [नेय्दे कावु पुरुषङ्गायुं [जय] श्रीयु [मक्के] यिदं कायदे [काय्द पापिगे कुरुक्षेत्रं] गळोळ् वार

---

१. सम्भवतः यहाँ पाठ 'उत्तमसुपुत्र मोगेदं' है ।

[णासियोळे र-कोटि मुनीन्द्रर कविले] यं वेळ्वरं कोन्दुदेन्दयशं नाग्गुं] मि(दें)
[दुसारिद्दपुदी शैलाक्षरं चात्रियोळु ॥]

यह लेख बताता है कि किस तरह, बगदेकमल्लके राज्यके द्वितीय वर्ष सिद्धार्थि संवत्सरमें उसके दो अधीनस्थ दण्डनायक **महादेव** और **पालदेव**ने रामदेव नामके किसी सरदारकी प्रार्थना करने पर मन्दिरको वार्षिक दानके रूपमें १० गद्याण 'सिद्धाय' नामके करकी आयसे दिये।

चालुक्य वंशावलीमें दो बगदेकमल्ल आते हैं : एक तो **जयसिंह द्वितीय** जिसका काल, सर डब्ल्यू इलियट (Sir W. Elliot) के मतके अनुसार, **शक ९४० से ९६२ (?) है,**—और दूसरा **सोमेश्वर तृतीय का ज्येष्ठ पुत्र एवं उत्तराधिकारी,** जिसकी सिर्फ उपाधि, नाम नहीं, शिलालेखों में आता है और जिसका समय, उसीके अनुसार **शक १०६० से १०७२** है।

इस प्रकार दोनोंके राज्यके प्रारम्भका अन्तराल १२० (१०६०–९४०) वर्ष आता है। यह काल २ युगके बराबर होता है। इसके संवत्सरका नाम तथा राज्यका वर्ष अभी भी लेखको सन्देहापन्न बनाये रखते हैं। लेकिन इलियटके मैनुस्क्रिप्ट कलेक्शन (Elliot Ms. Collection) से जे. एफ. फ्लीटको इस बातका पता चला कि जयसिंह द्वितीयने 'श्रीमत्प्रतापचक्रवर्त्ति' यह पदवी कभी धारण नहीं की थी, और उधर यह पदवी सोमेश्वर द्वितीयके उत्तराधिकारीकी उपाधियों में हमेशा आती है। अतएव यह लेख द्वितीय बगदेकमल्लके समयका है, और इसकी तिथि **शक १०६१** (११३९–४० ई०) है, जो कि **'सिद्धार्थ' संवत्सर** था।]

३१३

बुद्धि—संस्कृत तथा कन्नड़।

वर्ष कालयुक्त [११३९ ई० (लू. राइस)।]

[बुद्धिमें, वन-शङ्करी मन्दिरके पूर्वकी ओरके पाषाणपर]

श्रीमत्करनगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
चीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

भद्रं **समन्तभद्रस्य पूज्यपादस्य** सन्मतेः ।
अकलङ्कगुरोर्भूयात् शासनायाघनाशिने ॥
धुरदोळ् **चाळुक्य-चक्रेश्वरन**धिक-बळं **तैलपं** सत्य-रत्ना- ।
करना-**सत्याश्रयं** विक्रम-भुज-बलदिं **विक्रमादित्य** भूपम् ।
वर-तेजं **अय्यगं** भूतळ-नुत-**जयसिंह** मनोजात-रूपम् ।
धरेपोळ् **त्रैलोक्यमल्लं** निरुपमनेसेदं **सोम**नुर्व्वीं-ललामम् ॥
त्रिभुवन-जन-नुतनेसेदम् ।
त्रिभुवनमल्लं विरोधि-बळ-हृत-सेल्लम् ।
विभवद **भूलोकमल्लं** ।
विभु सले **जगदेकमल्ल** नाळदं धरेयन् ॥
कुन्तळ-विषयक्कधिपति ।
कुन्तळ-चक्रेशनल्लि **वनवसे नागेळ्** ।
कन्तु-श्री-निळयं सले ।
भ्रान्तेम् **जिङ्डुलिगेयल्लियुद्दरे**येसेगुम् ॥
बेळे दिर्द्दा-गन्ध-शाळी-वन-परिवृतदिम् तेङ्कु-पङ्केज-षण्डङ्-
गळि (नो)प्पं पेत्तु तोर्प्पा-बकुल-तिळकाद चम्पकाशोक-जम्बू- ।
कुळदिं जम्बीर-पूगद्रुम-कुरवकदिं नागवल्ली-तटाकङ्- ।
गळिनादं हर्म्यदिन्दुद्दरे बुध-जन-सम्प्रीतियं माडुतिक्कुम् ॥
धरणीशं **गङ्ग-वंशं** जन-नुतनिरिवा-**चट्टिगं** वैरि-भूपा- ।
ळरुमं वेङ्कोण्ड-गण्डं सोगयिसे हरि-वा-**कञ्चि**गंघाळियिट्टम् ।
मरेयं तान्...नाडोळगण हणवं कोण्डना-**मारसिंगम्** ।
वर-तेजं कीर्त्ति-राजं रण-मुख-रसिकं **मारसिंगं नृपेन्द्रम्** ॥
गङ्ग-कुळ-कमळ-दिनकरन् ।
अङ्गज-सन्निभननून-दान-विनोदम् ।
भङ्गिसिदं वैरिगळम् ।
तुङ्ग-यशं नेगळ्दनोप्पेयेकल-भूपम् ।

वृत्त ॥ परमार्त्थ वीर-तीर्त्थ पर-हित-चरितार्त्थ सदा-भावितार्त्थम् ।
तरुणी-सम्मोहनार्त्थ मनसिज-वनितारूप-संशुद्धितार्त्थम् ।
वर-शिष्टानीकर्त्थ सले कुडे पडेगुं लोक-संरक्षणार्त्थम् ।
पुरुषार्त्थ स्वार्थमेन्देक्कल-नरपति मू-लोककन्ति...तिक्कुं ॥
वसवद्विद्विष्ट-मूगालरनवर्व[ि]दि कादि वेङ्कोण्ड-मण्डन् ।
दळवेल्लं कोडे गण्डं विरुद-मटरु वेन्निस्तु पोपल्लि गण्डम् ।
कळनं पेल्दहे गण्डं रिपु-मदहरणं गङ्क-मार्त्तण्ड-देवन् ।
तळदं मू-कान्तेयं येक्कल-नृप-तिलकं चारु-दोर-दण्डदिन्दम् ॥
क्रूरारातीम-कुम्भ-स्थळ-विदलन-कण्ठीरवं विश्व-विद्या ।
धरं श्री-भारती-मण्डन-कुच-मणि-हारं मनोचात-रूपा- ।
कारं गम्भीर-नीराकारनमल-गुणं सत्य-भाषा-विभूषम् ।
तारा-शुभ्राभ्र-गङ्गा-शशि-विशद-यशङ्केकलङ्कोप्पुतक्कुम् ॥
अङ्ग-कळिङ्ग-वङ्ग-कुरु-जाङ्गळ-कौशळ-मध्यदेश-भद्र- ।
रङ्ग-तुरुष्क-गौड-मगधान्ध्रमवन्ति वराट-चोळ दे- ।
शङ्गळ पण्डितर् कविगनुत्तम-याचकगेन्दे कोट्टु कर्- ।
ण्णङ्गे समानमागे सलेवेक्कलनित्तपनोप्पे वित्तमम् ॥
अमर्दिन वरि-वोनलिन्दम् । कमनीयं कल्प-वल्लि पुट्टु व तेरदिम् ।
प्रमदा-रत्नं वनियिसल् अमळाङ्गने **सुग्गियव्वरसि** धारिणियोल्- ॥
परमेष्टि-स्वामि देव्वं गुरु तनगेसवं-**माघणन्दि-व्रतीन्द्रम्** ।
वर-मव्यर् वन्धु-वर्गं निरुपम- मरेयं एरिदा-**मारसिङ्गम्** ।
नरपाळनग्गना-**सुग्गियव्वरसि** यताशर्गे कोट्टन-दानम् ।
धरेगोप्पम्बेत्तुदा-पञ्चवसदि वसवं वीरुगुं माडिदन्दम् ॥
वीर-जिनेन्द्र-नाद-सरसी [रु] ह-राजित-राजहंसेयम् ।
चारु-चरित्रेयं गुण-पवित्रेयनूज्जित-दान-शीलेयम् ।
भारति-कर्ण्णपूरे मुनि-नाद-पयो [रु] ह-भृङ्गेयं गुणा- ।
धारद **सुग्गियव्वरसियं** धरे वण्णिसुतिक्कुं मागळुम् ॥

सवणन-बिळिलोळे विट्टळ् । भुवन-स्तुते मत्तगेप्पे सले पन्नेरडम् ।
भव-हर-पञ्चवसदिगा- । प्रवरान्विते **सुग्गियव्वरसि** धारिणियोल् ॥
कतिपय-कालान्तरितं । हितवेनिपा-पूर्व्वं-वृत्ति तळेयलु पडेगुम् ।
सततं जिन-पूजोत्सव- । रतेयप्पा-**कनकियव्वरसियिं** धरेयोळ् ॥
जिन-पूजेगे जिन-महिमेगे । जिन-राजन मज्जनक्के जिन-भवनक्कम् ।
जिन-मुनिगेसवी-दानमन् । अनवरतं माडुतिक्कुं **कनकियव्वरसि** ॥
जिन-गृहमिल्लदल्लि जिन-मन्दिरमं जिन-गेहमागियुम् ।
जिन-मुनिगळ्गे दान-निचयं दोरेकोळ्द् थाविनल्लिया- ।
मुनि-जनगित्तु कीर्त्ति-लते पल्लविसुत्तिरे लोकदल्लियन्त् ।
अनुपममागला- **कनकियव्वरसि**योप्पुतिक्कुं धात्रियोळ् ॥
सुर-कुजमनिळिसि **शक्रन** । सुरभियनिन्नेबुदेन्दु चिन्तामणियम् ।
परिहरिसि कुडले वल्लळे । परमार्त्थं **चट्टियव्वरसि** धारिणियोळ् ॥
चनकनु **मारसिङ्ग**-नृपनग्रजनेकल भूप वल्लभम् ।
दिनकर-तेजनोप्पे **दशवर्म्म** नृपङ्गेरेयङ्गनग्र-नन्- ।
दननुजात **केशव**-नृपाळ चतुर्विध-दानदिन्द मान्- ।
तनदोळे **चट्टियव्वरसि**यं बुध-मण्डलि मेच्चि वण्णिसुम् ॥
परमाराध्यं जिनेन्द्रं गुरु ऋषि-निवहं **बोप्प-दण्डेश** मावम् ।
निरुतं **बोप्पव्वेय**न्ता-जनति जनकना-**कोटि-सेट्टि** प्रमोदम्- ।
वेरशिर्द्दा-**शान्तियक्क** करवेसदिरला-पत्नि सम्यक्त्व-रत्ना- ।
करनप्पी-**केति-सेट्टु**द्दरेय वसदियं माडिदं पुण्य-पुञ्जम् ॥
विमळ-यशो-वितानन कळङ्कनुपार्जित-जैन-धर्म्मना- ।
गमिक-जन प्रपूर्ण्ण-विकचाब्ज- सरोवर-राजहंसनेन्द् ।
अमम धरित्रि वण्णिपुदु भव्य-शिखामणि भव्य-बन्धुवम् ।
सुमति-निवासनं नेगळ्द केतननुत्तम-दान-सत्वनम् ॥
परम-**श्री-मूलसंघं** सोगयिसुतिरे श्री-**कोण्डकुन्दान्वयम्**...।
इरे श्री-**क्राणूर्गणं** गच्छमेसदिरे सन्दा-**तिन्त्रिणीकाख्यमोर्धं** ।

वेरसा-श्री-रामणन्दि-व्रति-पतियेसेदं पद्मणन्दि-व्रतीन्द्रम् ।
वर-शिष्यङ्गग्र-शिष्यं नेगळ्दनु मुनिचन्द्राख्य-सिद्धान्त-देवम् ॥
अन्तवर शिष्यनेसेगुं । भ्रान्तेम् श्री-भानुकीर्ति-सिद्धान्तेशम् ।
क (श) त्रु-मद-दर्प-दळनम् । सन्तत-बुध-कळर-मुदनेगळ्दं धरेयोळ् ॥
कनक-जिनालयवेसेदिरल् । अनुपमनेकल-नृपाळ सवणन-विलिलोळ् ।
क्षन-नुतमेने मानुकीर्त्ति- । मुनिगोप्पिरं विट्ट मत्तरं पन्नेरडम् ॥
नेगळे चाळुक्य-चक्रि-वर्प जगदेक-महीश शासिरम् ।
मिगिलरुवत्तु-कालयुत-माव···दा दशमी बृहत्पती ।
सोगयिसे वार पन्नेरडु-मत्तरना कोडगेय्महादमम् ।
तगरदे भानुकीर्त्ति-मुनीगेकल विट्ट शशाङ्कनुळ्ळनम् ॥
कोटि-पर्य कविलेयनेळ्- । कोटि-त्रयोवनर वेद-विदर पन्निर् ।
कोटियने कोटि-तीर्थदे । कोटि-महा-दिनदोळ्ळिदनिन्तिदनळ्दिम् ॥
(मेशाका अन्तिम श्लोक) श्री-चन्द्रणिकेय तीर्थद प्रतिबद्ध···॥

[जिन-शासनकी प्रशंसा। पृथ्वीका शासन करनेवाले क्रमशः ये राजा हुए:—]

१ चालुक्य-चक्रेश्वर तैलप; २ सत्याश्रय; ३ विक्रमादित्य; ४ अय्यण; ५ जयसिंह; ६ त्रैलोक्यमल्ल; ७ सोम; ८ त्रिभुवनमल्ल; ९ भूलोकमल्ल; १० जगदेकमल्ल।

कुन्तल-देशमें, बनवासे-नाड्में, बिङ्गुलिगेमें उद्धरेके वृत्तों और ऋषीचोंका वर्णन।

गंग-वंशके राजा मारसिंगका वर्णन। राजा एकलकी प्रशंसा। अङ्गादि नानादेशोंके विद्वान् और कवियोंके लिए वह कर्णके समान दानी था।

सुगियब्बरसिकी प्रशंसा। उसके गुरु मावनन्दि-व्रतीन्द्र थे, राजा मारसिंग उसका बड़ा भाई था। सुगियब्बरसिने यतीशोंको आहारदान तथा बढ़िया पञ्च-वसदि दी थी। वसदि के लिए सवणबिलिमें भूमिदान किया था।

कनकियब्बरसिने इस पूँजीमें और भी वृद्धि की। वहाँ जिन-मन्दिर नहीं थे

वहाँ जिन-मन्दिर बनवाये, और जहाँ जिन-मुनियोंको आमदनीका क्षेत्र नहीं था वहां उसने दान दिये।

चट्टियब्बरसि कामधेनु और चिन्तामणिके समान थी। उसके पिता राजा मारसिंग थे, ज्येष्ठ भाई राजा एक्कल, पति राजा दशवर्म्मा था, जिसका एरेयङ्ग ज्येष्ठ पुत्र था, और उसका छोटा भाई राजा केशव था।

शान्तियक्केके परमदेव जिनेन्द्र थे, गुरु ऋषि-गण थे, बोप्प-डण्डेश उसका चाचा, बोप्पले उसकी मां, कोटि-सेट्टि उसके पिता थे,—उसके पति केति-सेट्टिने उद्द (द्ध) रेकी बसदिका निर्माण कराया।

मूलसंघ, कोण्डकुन्दान्वय, काणूर-गण और तिन्त्रिणीक-गच्छमें रामणन्दि-व्रति-पति—पद्मणंदि—मुनिचन्द्र सिद्धान्त-देव—भानुकीर्त्ति-सिद्धान्तेश क्रमशः शिष्य-परम्परामें हुए। अन्तिम मुनिको राजा एक्कलने कनक-जिनालयके साथ-साथ चालुक्य-चक्री जगदेव राजाके राज्यमें (उक्त मितिको) भूमिदान दिया]

[Ec, VIII, Sorab Tl. No. 233]

३१४

रायबाग;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[१]

["रायबाग गाँवमें नरसिंगशेट्टिके जैन मन्दिरके पाषाणखण्ड पर।"]

यह एक चालुक्य शिलालेख है। इसमें **दासिमरसु** सेनानायकके दानका वर्णन है। यह दान **सिद्धार्थी संवत्सर** के आषाढ़ महीनेकी कृष्णपक्षकी त्रयोदशी, सोमवारको, जबकि सूर्य दक्षिणायन हो रहा था, किया गया था। यही संवत्सर **जगदेकमल्लदेव** राजाके राज्यका दूसरा वर्ष था। यह दान **हुविनबाग** के नरसिंगशेट्टिके जैन मन्दिरके लिये किया गया था। सर डब्ल्यू. ईलियटकी सूची में दो चालुक्य राजाओंकी 'जगदेकमल्ल' उपाधि है,—एक तो **जयसिंह द्वितीय** की, जिसका क़रीब-क़रीब काल **शक ९४०** से **शक ९६२** तक दिया हुआ है,

और दूसरे का नाम तो नहीं दिया हुआ है, परन्तु इतना मालूम है कि वह सोमेश्वर तृतीयका उत्तराधिकारी था। शक वर्ष ९४२, उसी तरह शक वर्ष १०६२ सिद्धार्थी संवत्सर था, और तदनुसार वर्त्तमान लेखका काल सन्देहास्पद है, लेकिन सम्भवतः **शक १०६२** (११४०-१ ई०) यथार्थकाल है।

[JB, X, P. 183-184, N. o. 10. a.]

३१५

मौंट शिवगङ्गा;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[विना काल-निर्देशका [लगभग ११४० ई० (लू. राइस)।]

[गङ्गाधरेश्वर मन्दिरके मण्डपके खम्भे पर]

एतन्मित्र-कुळाम्भोज-भास्करस्य यशस् स्थिरम्।
विष्णोरडळ-वंश-श्री **नायक**स्यैव शासनम् ॥
ललितेन्दु-द्युतियं तेरल्मि भवनं माडिट्टरो संकरा-।
चळमं मेङ् कडिदिट्टरो शिव-गृहं माडिट्टरो पुण्य-सङ्-।
कुळमं येळिमेनल्के कृत्तु **शिवगङ्के शाद्रि**योळ् माडिदम्।
कुळ-नामं गडिमेन्दु देव-गृहमं **सामन्त-कञ्जासनम्** ॥
अदळ-कुळ-रत्न-भूषणन्। अदळ-कुलाम्भोज-**भानु**वदळेश्वरमेन्दु।
उदुभव-चरितं माडिद-। नुदुग-यशं **विट्टि-देव**नी-शिवगृहमम् ॥
पूवलि पूजे निवेद्यं। दोविगे जळ गन्ध धूपवक्कते पात्रम्।
पाशुळमेनिप्पुवनारैद्। आवगमवं कपके वर्प्प धनमं कोट्टम् ॥
अन्तुमल्लदेयुं निज-जनकन पेसरिं ब्रह्मेश्वर-देवालयं वूरं ब्रह्मसमुद्रमं नेगल्द···
मत्तम्।

अदळ-जिनालयङ्गळदळेश्वर-देवगृहङ्गळित्तिवेन्द्।
अदळसमुद्रमेन्देसेव विष्णुसमुद्रमिवेन्दु धर्मदिम्।

पुदिदवनन्दु माडिसिद कट्टिसिदं केपेयं निजान्वयक्क्।
उदुभवमागलेन्दद्ल-वंश-शिखामणि [वि] ष्णुवर्द्धनम् ॥
अल्लि बळिक तम्मवगे परोक्ष-विनयमागे बोचसमुद्रमेम्ब केपेयं कट्टिसि
शिव-महिमेयेडेगे केशव- । भवनोद्धरणक्के...ऐ-कोडिगेधर्म्म- ।
प्रवरर्गे बेडितनितर्- । त्थमनिवनीव विट्टि-देवनदर देवम् ॥
स्वस्ति श्री विष्णु-सामन्तं स्थिरं जीवि

[इस लेखमें बताया गया है कि विट्टि-देव, अपरनाम विष्णुवर्द्धन, शिवगङ्गशाद्रि (Mount Shivaganga) में शिव-मन्दिर बनवाया था। विट्टि-देव अदळ-कुळका था। उसने, इसके सिवाय, अदळ-जिनालय, अदलेश्वर-देवगृह भी बनवाये थे।]

[EC. Ix, Nelamangala U., No. 84]

३१६

मुगुलूर—कन्नड़।

[विना काल-निर्देशका, ११४० ई० (लू. राइस).]

[वस्तिके अन्दर पड़ी हुई मूर्त्ति के पीठस्थलपर]

श्रीपाल-त्रैविद्य-देवर गुड्डगळु मेळसिन मारि-सेट्टियरिं नेगर्त्तिय गोवन-सेट्टियरु सोगे-नाड मुगुळियलु बसदियं माडिसिदरु...माडिसि श्री-पार्श्व-देवर प्रतिष्ठेयं माडिसि आ-बसदियुमं आ-देवर भूमियुमं तम्म गुरुगळिगे धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्टरु ॥

[श्रीपाल- त्रैविद्य-देवके गृहस्थ- शिष्य मारि-सेट्टि और गोवन-सेट्टिने सोगे-नाडमें मुगुळिमें एक 'बसदि' बनवायी और उसमें पार्श्व-देवकी स्थापनाकर, बसदि और उसकी जगह (जमीन) देवताके लिये अपने गुरूको अर्पित करदी।]

[E, C, V. Hassan U. 129.]

३१७

—अञ्जनेरी (नासिक के पास);—संस्कृत

—[शक १०६३=११४२ ई०]

यादववंश शिलालेख

(१) ओं पंच परमेष्ठिभ्यो नमः । स्वस्ति श्री शक संवत् १०६३ दुंदुभिसंवत्सरांतर्गत श्रावण शुद्धि पंचदश्यां सोमे अनु-

(२) राधानक्षत्रे सिद्धयोगे अस्यां संवत्सरमासनक्षत्रतिथिपूर्व्यायां तिथौ समधिगताशेषपंचमहाशब्दद्वारावतीपुरवरे-

(३) श्वर विष्णुवंशोद्भवयादवकुलकमलकलिकाविकासनाकरयादवनारायण सामंतोपितामह सामंतडमग इत्यादिनमस्त-

(४) निजराजावलीविराजितमहासामंत श्रीसेउणदेवविजयराज्ये तत्पाद-प्रसादावाप्तमहामहत्तमः प्रधानसंस्थापितवैरिवर्गः

(५) संग्रामशौंड [:] शूरवैरिवदाविनर्हनकर्कशः अनवरतदानार्द्रीकृतदक्षिणकरप्रत्येष्ठः निशितनिस्त्रिंश (निस्त्रिंश) विदारितारा-

(६) तिकरिकुंभस्थलगलितमुक्ताफलनंदितरणांगण (रणांगण) मनस्विनीमानोन्मूलनकंदर्पः दर्पोद्धुरैरं (र) हितः सौ (शौ) र्योदार्यादाक्षि-

(७) प्यधर्म्मगुणस्योत्साह मंत्रशीलसंपन्न [:] प्रजापालनानंदशत्रुपराजयानंतोषितकीर्तिस्तावितदिक्तलयः[1] अनेकराजनीतिशा-

---

[1] इस वाक्य का ठीक अर्थ नहीं निकलता । यदि 'पराजयानं' के बाद 'श्रु' लुप्त हुआ मान लें, तो 'शत्रुपराजयानंदतोषित' ऐसा पाठ होगा और जिसका ठीक अर्थ भी निकलेगा ।

(८) स्त्रोक्तविवेकवर्द्धितबुद्धिकौशलसहस्रविज्ञानप्रभुत्वमंत्रोत्साहशक्तिसामर्थ्यरूपला-
वण्यविचित्रवक्तव्यताभोगोपभोगराष्ट्रकौश-
(९) लाद्यनेकविषयगुणगणालंकृतशरीरः व्यर्थीकृतप्रतिपन्थिमनोरथः संग्रामविजय-
लक्ष्म्यालानस्तंभ. रत्नाय (क) र इव अनंतगां-
(१०) भीर्ययुक्तः हिमादि (द्रि) रिव अपरिमितमहिमान्वितः षाड्गुण्यसंपन्नाविपर्य-
यतन्निष्टः[1] देवद्विजगुरुवराचाय (र्य) साधुपूजाभिरतः दीनान—(ना)—
(११) थोद्धरणक्षमः रविरिव प्रतिदिवसोपचीयमानोदयः परिहास-प्राकारः ईद्रि
(ईदृग्) गुणविशिष्टश्रीपाणुमउडरी सर्व्वव्यापारे कुर्व्व-
(१२) ति सतीत्येतस्मिन्काले प्रवर्त्तमाने श्री सेडणाख्येन महानृपेण प्रधानयुक्तेन
विचार्य भक्त्या देवाय चंद्रद्युतये प्रदत्तं हट्टद्व-
(१३) यं भारविवर्जितं च श्री साधुवत्सराजेन स्वकुलतिकभूतेन देवद्विजगुरु
वराचार्य पूजाभिरतेन श्री लाहडसाधुना सह दशर-
(१४) थ साधुना स्वकीयं हट्टदानं कृतं तथा-गृहदानं च कृतं। चन्द्रप (प्र)-
भाय देवाय कंदर्पदहनाय च। विशुद्धदेहरूपाय सर्व्वसत्त्वहिताय च॥ त-
(१५) था नगरे वर्षं प्रति द्रम्मपंचकं कृतं आयुः पुत्रा धनं सौख्यं (रव्यं) सौभाग्यं
राज्यमक्षयं। आमिश्रे (श्रै) ष्ठयं यशः स्वर्गं भूमिदो लभते फलं॥ बहु-
(१६) भिर्वसुधा भुक्ता सगरादिश्च[2]। यस्य यस्य यदाभूमिः (मेः) तस्य तस्य तदा
फलम्। दाता चैवानुमंता च स्वर्गस्योपरि तिष्ठति। हर्ता हारइ (यि)—
(१७) ता भूमिः (मेः) पच्यते रौरवे ध्रुवं॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेच्च
वसुंधरां। षष्टि (ष्ठि) वर्षसहस्राणि विष्ठा (ष्ठा) यां जायते कृमिः॥
श्रीकोलश्वरपंडितान
(१८) सुतेन दुष्टगणकराजकंठीरवेण साधुगणकचरणारविंद (विंद) मकरंदलुब्धषट्पदेन
श्रीदिवाकरपंडितेन हट्टशासनं सै (शै) लपट्टे लिखित-

---

१ इस वाक्य का कुछ भी अर्थ नहीं निकलता।

२ यह व्याकरणकी दृष्टिसे गलत है; ठीक प्रचलित रचना यह है 'राजभिः सगरादिभिः।'

(१६) मिति·····मंगलं महाश्री.

सारांश

दुन्दुभि संवत्सर शक १०६३ के श्वेष्ट मासके शुक्ल पक्षकी पञ्चमी तिथि, सोमवारको राजा **सेउणचन्द्र** (तृतीय) ने नगर (संभवतः अञ्जनेरी) में तीन दुकानें आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभ भगवानके मन्दिरके खर्चके लिए दीं; तथा **वत्सराज** नामके एक धनिक व्यापारीने दो और व्यापारियों, जिनके नाम **लाहड** और **दशरथ** थे, के साथ-साथ उसी कामके लिए एक दुकान और भवन दिया, जिस नगरमें यह मन्दिर है उसके अधिकारी ऑफीसर 'महामहत्तम[१]' का नाम 'गोणमडरी' था जो सुननेमें भद्दा मालूम पड़ता है।

अभी तक प्राप्त सामग्रीसे निम्नलिखित यादव वंशावली का निर्णय किया जा सकता है:—

१. दृढ़प्रहार, cir. शक ७४०
|
२. सेउण चन्द्र
|
३. द्वादिवप्प
|
४. मिल्लम ६. श्रीराव
|
५. वद्दिग। झञ्झा सिलहार, शक ८३८ की पुत्रीसे विवाहित।
७. तेहुक। गोगिराव की जो कि चालुक्यसामन्त था, पुत्री से विवाहित।
८. मिल्लम (द्वितीय) जो आहवमल्लकी बहिनके द्वारा जयसिंह चालुक्य की पुत्री से विवाहा गया था।

१ जिलेके अधिकारीको जिसे आजकल 'कलैक्टर' कहते हैं, 'महामहत्तम' कहा जाता था।

६. सेउणचन्द्र (द्वितीय.) शक ६६१.

... ...

... ...

... ...

(१३१) सेउणचन्द्र (तृतीय) शक १०६३.

[IA, XII, P. 126-128]

३१८

कसलगेरी—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

—[शक १०६४=११४२ ई०]—

[कसलगेरी (देवलापुर परगना) में, कल्लेश्वर मन्दिरके सामनेके पाषाण पर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्बधतां प्रतिविधानहेतवे ।
अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फोटनाय घटने पटीयसे ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं **द्वारावतीपुर**वराधीश्वरं यादव-कुलाम्बरधुमणि सम्यक्त्वचूड़ामणि मलेपरोळु गण्ड कोत्तु-नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोळम्बवाडि-तलेकाडु उच्चङ्गि-बनवसे-हानुङ्गलु-गोण्ड भुजबळ **वीर-गङ्ग-होय्सळ-विष्णु वर्द्धन-देवर** विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क्कतारं सल्लुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ।

स्वस्ति स्वस्तिळकै शुभैश्शुभतमैः पुण्याहवैः कीर्त्तयां ।
स्थाप्यन्ते जित-पार्श्व जिनपादपङ्कजतळे श्री-ह्री-धृतिर्द्धार्यताम् ।
त्वं दत्तं देयात्तु देव-देवभुवने मुक्तयङ्गनावल्लभो ·

सामन्तं जय-चीय-वर्द्धनकरं सोमं स्थिरं जीयातु ॥
उदेयं गेय्क्कूतं (।) शुचिन्द भुवनक्कुत्साहनं माक्कुविन्-
दु तन्नननिगाचन्द्राक्कंतारं यशस्तरं केम्मिगे तन्-
देगे तन्न बाहुबलदिं दोर्दण्डदर्प्पिष्टरं तर्दिदं सौ-
ळने सेळ्द अदर्प्पिदं वेङ्कोण्डनी-सामन्त सोमं वराचक्रवु ॥
प्रळेय-प्रलोम-वाताहतदे क्कडि मर्य्यादेयं दाम्दि घात्री-
तळक्कन्तदौर्ज्जनळग्रेपायोपवेशं कय्मिगे चोळ-
क्कमल्लक्कल्लोळनम्मु पिरिदे घळं वन्दु विट्टम् ।
हृदुवनकेरेयोळु वीर-पेर्म्माडि-देवम् ॥
नदगान्देमदान्ध वारिचयदिन्देन्तन्दुदार्नीडना ।
त्रिदलाचार्च्चन्दुदाचार्त्तन्-
दुदेनल्दु वीरगङ्गनेने भीमाब्धी-हृदु-न्यान-नदी-तीरमन् ।
अन्दे साल्दनोवत्तरलिदेच्चनाक्षरियं करियक्कणन् ॥
बोदविद-मदद्विन्दिरदेल्तरे बीडनदर्ं कुन्मत्थळमन् ।
त्रिरेवेच्चु कोन्दनेन्दडे करियक्कणनेम्बुदातनं जगमेल्लम् ॥

अन्तु वीर-गङ्ग-पेर्म्माडि हृदुवनकेरेय कदुलेय तडि विडदु चातुर्दन्तवन्तं वेरसु चोळन नेले नडेयुतं बन्दिर काडिने बीडं कविये पाय् हुदं कण्डु अक्कणं करियनेच्चडे कलुकणिनाडाद्यं करियक्कणनेन्दु वीरपट्टमं कट्टि सुखदिन्दिरे ।

करियक्क-साक्तन । सिरिय-मगं नागनातनक्षतजूलं
नुरवेनुक्कल्पदृक्षद । दोरेयेनिसिद सुग्ग-गौण्डनदिरद गण्ड ॥
एने नेरद्द सुग-गङ्गडन । तेनेयं सावन्त-सोमनाहवनीमन् ।
विनयाद्रिक्रमळद्दं । दिननायस्तपनवलनविचित्रितगात्रन् ॥
मिक्कवरातिनायकरनाहवदोळ् तरिदिक्कि कीर्त्तियन् ।
नेरेये दिगन्तरं मेरेदुदारते सिंहनादविन्द् ।
कोदविद-भीम-सूदु कनो धनञ्जय-राननो दुन्दुनारणो ।

नळ-नहुषादि सोमदेवनेने सोवण धन्यनो पन्नगे-त्रैनतेयनो ॥
मारन सतिगं सीतेगे । रेवतिगनु (रु) न्धतिगे अत्तिमब्बेगे सदृशं पेळु ।
सारगुणं सोमन सतिगुदारगुणं निन्बन्नेयरारु **मारय्वेणी**-धारिणियलु ॥
आतन सतियं पोलिपडी- । भूतळदोळु रूपु अजवनितेगे रतिगन्त्
आ-सति पासटियेनि- । प जिनतु-पाद-भक्ते **माचले**-नारि ॥

आ-मारय्वे सोमनोडने लीलेयिं...उळ्र कुल-ललेनेयेनिसि जळचर-निचय-निचित-कुन्द-कुट्ट-मळ-वदन-वन-देवतेये वन-लक्ष्मिये कल्प-तरुवेनिसि बहु-पुत्रियरं पडेदु जिन-जननियेने जिनधर्म्मैक्काधारी-भूतेयुं आहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दीन-विनोदेयुं जिनगन्धोदकपवित्रीकृतोत्तमाङ्गेयुं जिनसमयसमुद्धरणेयुं पार्श्व-देव-पादाराधकेयुमप्प ।

जिनपति दैव पोरेदाल्दने **होय्सळविष्णु**भूप सज्-
जननुते मारे **माचले** गुणान्वितेयर्तनगग्रपुत्ररेन्द् ।
अनुपम-**चट्ट-देव कलि-देव**ने सन्द्-
अनुपम-कीर्त्तियं नेरेंये ताल्दिद-भव्यने सोवणनी-धरित्रियलु ॥

स्वास्ति समस्तगुणसम्पन्ननुं विबुधप्रसन्ननुं आहाराभयभैषज्यशास्त्रदानविनोदनुं जिनगन्धोदकपवित्रीकृतोत्तमाङ्गनुं जिनसमयसमुद्धरणनुं तोडल्दर डोक्कियुं तोडरे बल्-गण्डनुं नुडिदु मत्तेन्ननुं परनारी-पुत्रनुं पार्श्व-देव-पादाराधकनुमप्प कलुकणि-नाडाल्व **सामन्त-सोवेय-नायकं भानुकीर्त्ति-सिद्धान्त-देवर** गुड्डं कलुकणि-नाड् आल्वं **हेब्बिडिरूर्व्वाडियलु** उत्तुंगचैत्यालयवं माडि श्री **पार्श्वदेवरं** प्रतिष्ठे माडि **श्रीमूलसंघ-सूरस्ट (स्थ)-गणद ब्रह्मदेवर** कालं कर्च्चि धारापूर्व्वकं माडि कोट्ट देवर अङ्ग-भोगक्कमाहारदानक्कं वसदिय जीर्णोद्धारक्कं विट्ट दत्ति **शक-वर्ष १०६४** नेय दुन्दुभि-संवत्सरद पौष्य-मासदुत्तरायण-संक्रम[illegible]मी-बृह (स्पति) वारदन्दु वसदिगे वायव्यद देसेयलु **अरुहनहळि**ळ्ळय सीमान्तर [illegible]ळे (अन्तिम ८ पंक्तियोंमें सीमाकी चर्चा है, और इसके बाद अन्तिम पद्य)

[उसी पाषाणके बायीं ओर–]

स्वस्ति **कल्कणि-नाड एक्कोटि-जिनालय** वेन्दु समे...रू कूडि कोट्ट हेसर ॥ स्वस्ति स्वारि-**माचोज** कलुकणिनाड आचार्य्य कलियुग-विश्वकर्म्म

[जिनशासनकी प्रशंसा ।

जिस समय (अपनी इनेशाकी उपाधियों सहित), भुवबल वीर-गङ्ग-होय्सळ-विष्णुवर्द्धन-देवका विजयी राज्य अपनी वृद्धि पर था:–तत्पादपद्मोपजीवी **सामन्त-सोम** था (उसकी प्रशंसा) ।

जिससमय वीर-गङ्ग पेर्म्माडि चोळ राज्य पर आक्रमण करनेके लिये हुदुवनकेरीमें कदुले नदीके किनारे-किनारे जा रहे थे, एक जंगली हाथी भागता हुआ आकर सेना पर टूट पड़ा । अक्कणने उस हाथीको अपने बाणोंसे मार दिया, जिसपर कलुकणि-नाड्के शासकने उसे 'करिय्-अक्कण' की उपाधि दी ।

करिय्-अक्कणका सबसे बड़ा पुत्र **नाग** था, उसका ज्येष्ठ पुत्र **सुग्ग-गाऊण्ड** था, उसका पुत्र सामन्त-सोम था । उसकी मारय्वे और माचले नामकी पत्नियाँ थीं । मारय्वे की बहुत-सी पुत्री हुई, पर माचले के पुत्र हुए, जिनमें ज्येष्ठ चट्टदेव और कलि-देव थे ।

कलुकणि-नाड्के शासक, सामन्त-सोवेद-नायक ने (अपनी बहुत-सी उपाधियों सहित), जो कि धार्मिक जैन और भानुकीर्त्ति-सिद्धान्तदेवके गृहस्थ-शिष्य थे, हेब्बिदिल्ब्बीडिमें एक ऊँचा चैत्यालय बनवाया और उसमें पार्श्व-जिनकी स्थापना करके पूजा-सेवाके खर्चके लिये, मन्दिर की मरम्मत तथा आहारदानके लिये, श्री मूलसंघ तथा सूरस्थ (स्थ) गणके ब्रह्मदेवके पादों को प्रक्षालनपूर्वक '**अरुहन-हल्लि**' नामक गांव दानमें दिया ।

जिनालयका नाम 'कल्क (कलुक)णि का एक्कोटि जिनालय' रक्खा था । शिल्पि का नाम **माचोज** था । यह कलुकणि-नाड् का आचार्य, कलियुग का विश्वकर्म्मा था ।]

[E C, IV, Nagamargala U., no, 94 and 95]

३१६

वोगादि—संस्कृत तथा कन्नड़ भग्न ।

[काल लुप्त, पर प्रायः ११४५ ई०]

[वोगादि (होसकेरी परगना) में, ध्वस्त वस्तिके पासमें पड़े हुए एक पाषाण पर]

... ...गम्भीर... ... ... ।
... ...जिन-शासनम् ॥

... ...श्रीमन्महाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारक **सत्याश्रयकुल**-तिलक **चालुक्याभरण**... ... ...राज्य... ...नव् आ-चन्द्रार्क्कतारं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ।

श्रीकान्तानेत्रनीलोत्पलवदनसरोजात-स... ... ... ।
...लोकत्रयो... ... ...चन्द्रिका-दोः—प्रताप- ।
...त्यक्त-युक्त-क्रम-कलित-...च्-चक्र-खेद-प्रमोद- ।
श्रीकं श्री**विष्णुभूपं**... ... ...मार्त्तण्ड- रूपम् ॥
... ...। त्ते मगुल्दा-सेतुविं हिमं- वरेगं ।
क्रम-केळियिं तोळ्-वलं । समद-क्षत्रि... ...नृपालम् ॥

स्वस्ति समधिगत... ...महा-मण्डलेश्वरं...पुर-वरेश्वरं **यादवकुळाम्बरमणि** मण्डलिक-चूड़ामणि... ... ...शार्द्दूलं पाण्यवळनलधिवडवा (वा) नलं **नरसिंग**... ... ...वंशवन-दावानलं ... ... कुळ-विळय...वेङ्गिरि-गिरीन्द्र-वज्र-दण्ड ... ... वळ-वहळ-तमः—पटल-मार्त्तण्ड सप्त-क्रो...न... ... ... कोप-पावक ... ... निरवद्य हृद्य-विद्या-विनोदन... ... ...सन्तोष... ... ... सासिरमुं गङ्गवाडि-मू... ... ... दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपालन... ... रक्षिसि राज्यं गेय्युत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजीवि महा-प्रधान ... ...षाड्गुण्य-नैपुण्य-स्वयम्बुद्ध **विष्णुवर्द्धन** दे ... ... रत्नाकर-सुधाकर... ... ...महापरमेश्वर-पाद... ... ...देवर... ...

जनैक-शरण ··श्रीमद्**अजितसेनभट्टारक**-पादाराधना-लब्ध··· ··· ··· ···विलास
नय-विनयादिविशिष्ट-गुण-गण··· ··· ··· ··· ··· ··· प्रतिदिन-जिन पूजा-जनित-
प्रमोद चतुर्व्विधदानविनोदं सरस्वती··· ··· ··· ··· ···प्रान्त नियम-··· ··· ···
अप्य श्रीमदकलङ्कान्वयवज्र प्राकारं नामादि समस्तप्रशस्ति-सहितं श्रीमन्महाप्रभु···
··· ···देव··· ··· ··· ··· ··· भ्युदय-युत ··· ··· ····· दानादि··· ···
नयनदिन् आ-**माधवं** विश्व ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···
··· ··· ··· स्तुत्यनादं ··· ··· ··· ··· पुरुष ··· ··· सत्व ··· ···· **माडि-**
राजम् ॥ परिपूर्णंद ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· श्रीक-रणद-**माधवन** कीर्ति
लोक-त्रयव ··· ··· ··· ··· ई-भोगवतियो ··· ··· ··· ··· महा-भोगं माडि-
राज-विभु··· ··· ··· ··· सिदम् ।

श्रीकरणद ··· ··· ··· ··· ··· ··· यमं । श्रीकरवेनलजितसेनमुनिपदविनत,
··· ··· निस ··· ··· नेय । श्रीकरणद माडि-राज ··· ··· स ··· ··· ॥
अन्ता-महानुभावनन्वय-क्रमद पोगल्तेयुं चलदलाद नेगर्त्तेयुं आल्पो ··· ···
धन ··· ··· ··· कुळ-पूजितनाद महानुभावनारल्व वियुं अल्लदो ··· ··· ···
नमयनण्डलेवं भुवन-भूषण ··· ··· मत्तं ··· ··· यनङ्गळ ब्रह्मनेनिसि गङ्ग-मण्डल
··· ··· ··· मनाद जन-नाथ ··· देवं ··· बुध ··· ··· सभे ··· ··· चोळ-
नृपाळ ··· ··· ··· जलधि नृप ··· ··· ··· ··· महा-प्रधान-मनः—प्रिये ॥
··· मन-भुज्य-विजय ··· ··· ··· साम्राज्य ··· ··· ··· ··· जग-विनूते वनिता-
रत्नम् ॥ भुवन ··· **चोणमय्यन** तनूज ··· ··· ··· मनोभव-रू ··· ··· ···
भाग्य-शक्तियेने ··· ··· सन्दोड म ··· ··· ··· ··· ··· नारायणं मनु-मार्गा-
ग्रणी वोणमय्यनिवर ··· ··· ··· ··· धन्यळे··· ··· इनरिर्व्वर्ग्ग न ··· ···
··· ··· ··· निमद-क्रमनन्तक-नारायणनु भुवननुतं ··· ··· ··· ··· ··· ···
··· महत्त्वमनोल्दु राज्यलक्ष्मी ··· ··· ··· अद्भुत-शौर्य्यदोळ् जयश्री-करण ···
··· नृप ··· ··· ··· ··· राज्यदल्लि निर्व्वाजमागि ··· गळ-न्तु कळादिकार ···
माधवनु मादेव वोणनेने नेगल्द माधव सम्यग्-दृग्-त्रौध-चरितगळिं श्रेयो-धरणीशन-
वोल् नताग्रणियादनी-गुरु-वन ··· ··· **अजितसेन**-मुनीश्वरन् इन्द्र-वन्दित-परम-

जिने ··· ··· ··· अवनीश-शिक्षामणि **विष्णुवर्द्धन** पोरेदनशेषभव्यरे निज ···
··· ··· ··· ··· ··· यनो माडिराजनवनी-तळगेळ् ॥ ··· ··· ··· ··· ···
आतन वल्लभे ॥

वृ० ॥ हावबिलास ··· ··· ··· समन्वित ··· समेतेयागियुं ।
रेवति तां प्रभाव ··· ··· ··· ··· यागि धर्म्म-स- ।
दावने ··· योळ् विदग्धेयेनिसिद्द ··· ··· बुगे वि- ।
स्तावनि ··· **उभयव्वेय** कीर्तिय ··· ··· ··· ··· ॥

··· ··· ··· ··· सौभाग्य-भाग्यवति ··· ··· द् उमे भारति रति ··· येने सन्दु
मूत्रकं पाटियं ··· ··· ··· ··· ··· ··· कणव्वेयनलु सज्जन-वन्द्येयेनिसिदुमेयक्क-
ने तळप ··· ··· ··· ··· कुलद चलद गुणदुन्नतिया पुरुषार्थ ··· ··· ··· ···
··· ··· ··· ··· वेळेदवेनलु सच्चरितं श्रीकरण माडिराजनुर्व्वी- ··· ··· ···
वनिजं नेगल्दम् ॥

ई-कलि-कालद मनुजर् अ- । नेकरुमं कणनिन··· ··· ··· ···।
बुधानीक वण्णिसे, गल्दं । श्रीकरणद माडि-राजनूर्जित-तेजम् ॥

आतनन्वयगुरुकुळक्रम ।

अवदुतदटति झटिति स्फुटपटुवाचाट धूर्जटेरपि जिह्वा ।
वादिनि **समन्तभद्रे** स्थितवति तव सदसि भूप कास्थाऽन्येषाम् ॥१॥

तारा येन विनिर्जिता घटकुटीगूढ़ावतारा समं
बौद्धैर्य्यो धृतपीडपीडितकुदृग् देवार्त्त-सेवाञ्जलिः ।
प्रायश्चित्तमिवाङ्घ्रिवारिजरजःस्नानं च यस्याचरद्
दोषाणां सुगतस्य कस्य विषयो **देवाकलङ्कः** कृती ॥२॥

योऽसौ घातिमलद्विषद्बलशिलास्तम्भावली-खण्डन-
ध्यानासिः पटुरर्हतो भगवतस्सोऽस्यप्रसादीकृतः ।
छात्रस्यापि स **सिंहनन्दिमुनिना** नो चेत्कथं वा शिला-
स्तम्भो राज्य-रमागमाध्वपरिघस्तेनासि खण्डो घनः ॥३॥

गृहीतपक्षादितरः परस्यात् तद्वादिनस्ते परवादिनस्स्युः ।
तेषां हि मल्लः **परवादिमल्ल**स्तन्नाम मन्नाम वदन्ति सन्तः ॥४॥
…द-जय-कङ्कः कीर्त्तने **धर्म्म कीर्त्ति**-
र्व्वचसि सुरगुरुः… … … …।
इति समयगुरूणामेकतश्चङ्कतानां
प्रतिनिधिरिव **देवो** राजते **वादिराजः** ॥५॥
काणादः कोणमेकं भजति,… … … …गतस्**सौगतो**ऽयम्
मूल्यं,**मीमांसका**द्याः किमिह… … … … …।
येनायं न्यायमुद्राप्रतिभटवचसः प्रौढिपर्यायरूढो
वादं दुस्तर्क्ककाङ्क्षग्रथिमपरिवृधा… … … …णेदम् ॥६॥
श्रीमच्चालुक्यचक्रेश्वरजयकटके वाग्वधू चन्नभूमौ
निष्काण्डं डिण्डिमः पर्य्यटति पटु-रयो**वादिराज**स्य विष्णोः ।
बह्वाद्यद्वादिदर्पो बहिहि गमकतागर्व्वभूमा बहाहि
व्याहारेर्ष्यो बहीहि स्यु (स्फु) रदमृदुमधुरश्यामकाव्यावलेपः ॥७॥
नाहङ्कारवशीकृतेन मनसा न द्वेषिणा केवलं
नैरात्म्यं प्रतिपद्य नश्यति जने कारुण्यबुद्ध्या मया ।
राज्ञः श्री**हिमशीतल**स्य सदसि प्रायो विदग्धात्मनो
बौद्धौघान् सकलान् विजित्य सुगतः पादेन विस्फोटितः ॥८॥
पाताले व्यालराजो वसति सुविदितं यस्य जिह्वासहस्रं
निर्गन्ता स्वर्गतोऽसौ न भवति धिषणो वज्रभृद्यस्य शिष्यः ।
जीवेतां तावदेतौ निलयवलवशाद् वादिनः केऽत्र नान्ये
गर्वं निर्मुच्य सर्व्वे वयिनमिनसभं **वादिराजं** नमन्ति ॥९॥
वाग्देवीं सुचिरप्रयोगसुदृढप्रेमाणमप्यादराद्
आदत्ते मम पार्श्वतोऽयमधुना श्री **वादिराजो मुनिः** ।
भो भो पश्यत पश्यतेप यमिनां किं धर्म्म इत्युच्चकै-
र्ब्रह्मण्यपरः **पुरातन मुने**र्व्याकृत्तयः पान्तु वः ॥१०॥

..... देवो

विदितसकलशास्त्रो निर्जिताशेषवादी ।
विमलतरयशोभिर्द्योतदिक् चक्रवालो
विगतसकलसङ्गस्त्यक्तरागादिदोषः ॥११॥

एकास्यो ..... गुणपरिणताननो भारतीनश्च सर्व्वकळाधरो .....
..... क्षितितलं तन्मूलमालम्ब ....

गुरून् गुणगुरून् परान् परमयोगनिष्ठापरान्
तृणीकृतजगत्त्रयस्फुरितदेवनिन्दाकरान् ।
स्थिरान् नयविशारदान् सकलशास्त्रसूत्राकरान्
नमामि ... दिवाकरान् **अजितसेन-योगीश्वरान्** ॥१२॥

जगद्वरिमघस्मरस्मरमदान्धगन्धद्विप-
द्विधाकरणकेसरी चरणभूष्यभूभृच्चिरवः (च्छिखः) ।
द्विषड्गुणवपुस्तपश्चरणचण्डधामोदयो
दयेत मम **मल्लिषेण-मलधारिदेवो** गुरुः ॥१३॥

नैर्म्मल्याय मलाविलाङ्गमखिलत्रैलोक्यराज्यश्रिये
नैष्किञ्चिन्यमतुच्छतापहृतये न्यञ्चद्भुताशं तपः ।
यस्यासौ गुणरत्नरोहणगिरिः श्री**मल्लिषेणो गुरु**-
र्वन्द्यो येन विचित्रचारुचरितैर्द्धात्री पवित्रीकृता ॥१४॥

उद्दण्डप्रतिवादिकुञ्जर ..... वचनप्रौढ़ि .....
..... मयामलनखक्रूर ..... ।
..... विकल्पविभ्रमघटा .....
स्याद्वादाचलमस्तकस्थितिरसौ **श्रीपाल** कण्ठीरवः ॥१५॥

..... गायन्ति ..... शास्ति कथं **श्रीपालदेवो**ऽसौ त्रैविद्य-विद्योदयः ।
श्रीमत्**समन्तभद्रस्वामि**गल् **अकलङ्कदेव**रिं बलिक श्रीमत्तपो ..... सरि-
व्रति-नाथरु । अवरिं बळिक
वृ ॥ आ-**वक्रग्रीव-र्य्य**-व्रति-परिवृढ ..... व्रतीन्द्रं ।

देवेन्द्रस्तुत्यनादं वलिक कनकसेनान्वयर्व्वादिराजर् ।
श्रीवाणीविलसन-श्रीविजयमुनि ····· ····· अजितपालनाथर्
देवर् श्रीवादिरावं वलिक-अजितसेन-द्वितीयाकलङ्कर् ॥१६॥
अवरिं वलिक श्रीमत्कुमारस्वामिगलिं मल्लिषेण-भट्टारकरिं तामेसे ····
आवन विषयमो षट्तर्कीविलसद्बहुनङ्गिसङ्गतं श्रीपाळ-
त्रैविद्यगद्यपद्यवचोविन्यासं निसर्गविजयविलासम् ॥
सरसकविकाव्यनकराकरहिमकरनानन्ततार्किकद्विरदन-के-
सरी ····· ····· रित शाद्दिकसरोवनमार्त्तण्डम् ॥१७॥
चडमति ··· ··· ····· ····· ····· निष्टुरखड्गमुष्टियिं ····· वत्तोविमवं विष्णु-
पद्मनाभन
····· ····· ····· ····· ····· समन्तभद्रश्रीमत्-
सन्तानदल्लि नेगर्दुद- । नन्तर श्री-द्रमिळ-संघमी-वसुमतियोळ् ।
····· ····· ····· ····· ····· ·····
····· ····· विनूतोऽपि त्रिदशकमलामन्दनोऽभूत् क्षणेन ।
पूतं दृष्ट्वा पुनरनुदिनं प्रार्च्चयत्पर्च्चनाद्यैः
····· ····· ····· ····· ····· ····· ····· ····· ॥
····· शक-वर्ष सासिरदक्कत्तेळनेय रक्ताक्षि-संवत्सर पौष्यदमावस्ये ··· वार-
उत्तरायण-व्यतीपात-मङ्गळं कूडिदन्दु तुङ्गभद्रातीरद ··· ··· र-देवर ··· ···
हेग्गडे मा···य माडिसिद श्रीकरण जिनालयके श्रीमद्दोय्सल-देवर
भोगव ··· धारा-पूर्व्वक माडि कोट्ट ··· लं सासिरदक्कत्तेळनेयरक्ताक्षि संवत्सर-
दोळे नृप-तुङ्ग होय्सळ-नृपनोसेदिद श्रीकरण-जिनालयक्के भो ··· ··· आ-
वुरिंद सीमा-सम्बन्धवेन्तेन्देडे (आगे की आठ पंक्तियोंमें सीमाओं की चर्चा है)
वर्दतां जैनशासनम् ॥ (हमेशाकी भाँति अन्तिम श्लोक) ··· ···

[जिन शासन की प्रशंसा ।

जिस समय महाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारक, सत्याश्रयकुल

तिलक, चालुक्याभरण, ... का विजयी राज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था:—
विष्णु-भूप की प्रशंसा ।

जिस समय (अपनी उपाधियों और पदों सहित).....राज्य की रक्षा कर रहे थे:—तत्पादपद्मोपजीवी,—महाप्रधान, विष्णुवर्द्धन-देवके राज्यरूपी समुद्रका चन्द्रमा, **अजितसेन** भट्टारकके पैरोंका आराधक, **माधव** या **माडिराज** मुनीम (**accountant**) था, जो वोणमय्य और.....का पुत्र था । माडि-राज की पत्नीका नाम उमयब्बे या उमयक्के था ।

निम्नलिखित उसके 'गुरु-कुल' का क्रम था:—

१. समन्तभद्र

२. देवाकलङ्क-पण्डित (२ सान्तर श्लोकोंमें महिमाका वर्णन)

३. सिंहनन्दि-मुनि

४. परवादि-मल्ल

५. देव वादिराज (५ श्लोकोंमें इनकी महिमाका वर्णन है ।)

६. अजितसेन-योगीश्वर

७. गुरु मल्लिषेण मलधारि-देव (२ निरन्तर श्लोकोंमें वर्णन)

८. श्रीपाल-त्रैविद्य (२ सान्तर श्लोकोंमें महिमाका वर्णन)

गुरु-परम्पराके आचार्यों की नामावली ।

विभुपद्मनाभकी प्रशंसा ।

श्री करण-जिनालयको जिसको.....हेग्गडे मादय्यने तुङ्गभद्रा नदीके किनारे लेखोक्त तिथिमें बनवाया था, होय्सल-देवने धारापूर्व्वक भोगवती (नदी) का दान दिया ।]

[Ec, 1V, Nagamangala Tl. No., 100]

३२०

कोल्हापुर—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०६५ = ११४३ ई०]

१ श्रीमत्परम-गंभीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम् [।]
दीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥१॥

२ स्वस्ति श्रीर्व्वयश्चाभ्युदयश्च ॥ वयस्यमलनानार्त्थ-प्रतिपत्ति प्रदर्शकं [।]
अर्हत-

३ [:] पुरुदेवस्य शासनं मोह-शासनं ॥ स्वस्ति [।] श्री शीलहारमहा-
क्षत्रियान्वये वित्र-

४ स्तापेय-रिपु-प्रतिष्ठलंतिगो नाम नरेन्द्रोऽभूत् । तस्य सूनवो गोङ्कलो
गूवलः

५ कीर्त्तिराश्चन्द्रादित्यश्चेति चत्वारः । तत्र गोङ्कल-भूतलतेम्मारसिहो
नाम नन्दनः तस्य तनुजाः गूवलो

६ गङ्कदेवः वल्लालदेवः भोजदेवः गण्डरादित्यदे [व] श्चेति
पञ्च । तेषु धार्मिक-धर्म्मस्य वैरि-का-

७ न्ता-दैवज्ञ-दीक्षा-गुरोः सकल-दर्शन-चक्षुषः श्रीमद्-गण्डरादित्यदेवस्य
प्रिय-तनयः ।

८ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वरः । नगर-पुर वराधीश्वरः ।
श्री-शिला-

९ हार-नरेन्द्रः निज-विलास-विजित-देवेन्द्रः वीभूतवाहनान्वयप्रसूतः ।
शौर्य्य-विख्यातः ।

१० सुवर्ण-गरुड-ध्वजः युवतिजन-मकरध्वजः निर्द्दलित-रिपुमण्डलीकदर्पः ।
मरुवङ्क-वंशः ।

११ अय्यन-सिंगः सकळ-गुण-तुङ्गः । रिपु-मण्डळौ (ळि) कभैरवः । विद्विष्ट-गज-
कण्ठीरवः ।
१२ इङ्डुवरादित्यः । कलियुग-विक्रमादित्यः । रूपनारायणः । नीति-विजित-चा-
१३ रायण- । गिरि-दुर्ग-लङ्घनः । विहित-विरोधि-बंधनः । शनिवारसिद्धिः ।
धर्म्मैकबुद्धिः । महा-
१४ लक्ष्मीदेवी-लब्ध-वरप्रसादः । सहज-कस्तूरिकामोदः । एवमादि-
१५ नामावली-विराजमान-श्रीमद्-**विजयादित्यदेवः** । **वलूवाड**-स्थिर-
शिविरे सुख-संकथा-विनोदेन राज्यं कु-
१६ र्व्वाणः । **शक-वर्षेषु पञ्चषष्ट्य त्तर-सहस्र-प्रमितेष्वतीतेषु प्रवर्त्त-**
मान-दुं-
१७ **दुमि-संवत्सर-माघ-मास-पौर्णमास्यां सोमवारे । सोमग्रहण-**
पर्व्व-निमि-
१८ त्त **माजिरगेखोल्लानुगत-हाविन-हेरिलगे-ग्रामे** । सामन्त-कामदेवस्य हड-
१९ वलेन श्री-मूलसङ्घ-देशीयगण-पुस्तक-गच्छाधिपतेः **क्षुल्लकपुर-श्री** रूप-
नारायण-वि-
२० नालयाचार्य श्रीमन्**माघनन्दि**सिद्धान्तदेवस्य प्रिय-च्छा [त्] त्रेण ।
सकलगुणरत्न-पात्रेण ।
२१ जिन-पदपद्म-भृङ्गेन । विप्रकुल-समुत्तुङ्ग-रङ्गेण । स्वीकृत सद्भावेन ।
वासुदेवेन
२२ कारितायाः वसतेः श्री-पार्श्वनाथदेवस्याष्टविधार्च्चनार्थं । तच्चैत्यालय-
खण्ड-
२३ स्फुटित-जीर्णोद्धरार्थं । तत्रत्य-यतीनामाहारदानार्थं च । तत्रैव ग्रामे
२४ **कुण्डि**-दण्डेन निवर्त्तन-चतुर्थ-भाग-प्रमितं क्षेत्रं । द्वादश-हस्तसम्मितं
गृह-निवेशनं
२५ च । तन्**माघनन्दि**सिद्धान्तदेव-शिष्यानां **माणिक्यनन्दिपण्डित-**
देवानां । पादौ प्रक्षाल्य धारा-पू-

२६ र्व्वकं सर्व्वनमस्यं सर्व्व-बाधा-परिहारमाचन्द्रार्क्कतारं सशासनं दत्तवान् ॥
२७ तदागामिभिरत्मद्वंश्यैरन्यैश्च । राजभिरात्मसुख-पुण्य-यशस्सन्तति-वृद्धिभिः।
स्व-
२८ दत्ति-निर्व्विशेषं प्रतिपादनीयमिति ॥ शान्तरसक्के ताने नेलेयाद
२९ जिन-प्रभु तन्न दैवमश्रान्त-गुणक्के ताने नेलेयाद तपोनिधि **माधनन्दि** सैद्धान्तिक-
३० योगी **तन्न** गुरु । तन्नाधिपं विभु कामदेव-सामंतनिदुत्तमत्वमिदु पुण्यमि-
दुन्नति **वासुदेवेन** ॥

भावार्थ

[यह शिलालेख कोल्हापुर शहरके शुक्रवार दरवाजेके पासके जैनमन्दिरके सामनेके एक पत्थर पर उत्कीर्ण है ।

शिलालेखमें शीलदार कुलके **महामण्डलेश्वर** विजयादित्य देवके एक भूमिदानका उल्लेख है । पहलेके दो श्लोकोंमें जैनधर्मके यश की गाथा गाई गई है । तत्पश्चात् ३–१५ तक की पंक्तियोंमें दाताकी निम्नलिखित वंशावली और उसका वर्णन है—**शीलदार** क्षत्रिय वंशमें **जतिग** नामका एक युवराज था, जिसके चार लड़के, गोङ्कल गूवल, कीर्त्तिराव, और चन्द्रादित्य थे । राजपुत्र गोङ्कलका लड़का **मारिसिंह** था । उसके पुत्र **गूवलगङ्गदेव, वल्लालदेव, भोजदेव,** तथा **गण्डरादित्य-देव** थे । और **गण्डरादित्यदेव**का पुत्र **महामण्डलेश्वर विजयादित्यदेव** था । उनके ये पद थे—'नगरपुरवराधीश्वर, श्री शिलाहारनरेन्द्र, निजविलास-विचितदेवेन्द्र, नीमूतवाहनान्वयप्रसूत, शौर्य्यविख्यात, सुवर्णगरुड़ध्वज, युवतिजन-मकरध्वज, निर्दलित-रिपुमण्डलीक-दर्प्प, गरुडङ्क-सर्प्प अप्पनसिंग, सकलगुणतुङ्ग, रिपुमण्डलिक-भैरव, विद्विष्टगज कण्ठीरव, इडुवरादित्य, कलियुग-विक्रमादित्य, रूपनारायण, नीतिविनितचारायण, गिरिदुर्गमल्ल

धन, विहितविरोधिबंधन, शनिवारसिद्धि, धर्म्मैकबुद्धि, महालक्ष्मीदेवी-लब्ध-वरप्रसाद, तथा सहजकस्तूरिकामोद।'

पंक्ति १५–२६ में **विजयादित्यने**, अपने **वळवाड**के निवासस्थान पर आरामसे राज्य करते हुए, सोमवारके दिन चन्द्रग्रहण के अवसरपर, दुन्दुभिवर्षकी माघ महीने की पूर्णिमा तिथि सोमवारको भूमिदान किया। यह दुन्दुभिवर्ष शक वर्ष १०६५ के बीत जाने पर ही लगा था। जमीन **कुण्डी** नामक देशी माप से चौथाई **निवर्तन** थी। उसी सालमें १२ हाथका एक मकान भी अर्पण किया था। जमीन और मकान दोनों **आजिरगखोल्ल** नामके जिलेके **हाविन-हेरिलगे** गाँवके थे। यह एक मन्दिरको दान किया गया था जिसे माघनन्दि सिद्धान्तदेवके शिष्य तथा कामदेव-सामन्तके अधीनस्थ वासुदेवने बनवाया था। यह दान मन्दिर के जीर्णोद्धार तथा वहीं रहनेवाले मुनियोंके लिये आहारदानके प्रबन्धके लिये था। माघनन्दि सिद्धान्तदेव **क्षुल्लकपुर** (कोल्हापुर ही का दूसरा नाम) के रूपनारायण जैनमन्दिरके पुजारी (या पुरोहित) थे, मूलसंघ, देशीयगणके पुस्तकगच्छ के प्रधान थे। उनके एक दूसरे शिष्य **माणिक्यनन्दि पण्डित-देव** थे। इस दानके करते समय इन्हीं पण्डितदेवके पादोंका प्रक्षालन किया गया था। इस दानको सब करों और बाधाओंसे सदैवके लिये मुक्त किया गया था। २७–२८ की पंक्तियोंमें भविष्यमें होनेवाले राजाओंसे प्रार्थना की गयी है कि वे इस दानकी हमेशा रक्षा या सन्मान करते रहें, क्योंकि यह उन्हीं एक का किया है। और यह शिलालेख अन्तमें पुरानी कर्णाटकलिपिमें यह कहते हुए समाप्त होता है :—

शान्तरस प्रधान जिन देव ही मेरे देव हैं, अश्रान्त गुणवाला तपोनिधि, योगी माघनन्दि सैद्धान्तिक ही मेरे गुरू हैं और कामदेव सामन्त ही मेरे राजा या मालिक हैं।']

[EI, IV. No. 27, T and A.]

३२१

मत्तावार—कन्नड़ ।

—[शक १०६५=११४३१०]

[मत्तावार (चिकमगलूर परगना) में, पार्श्वनाथ मन्दिर के एक पाषाण पर]

स्वस्ति शक-वरुषद सामि ६५ सन्द रुधिरोद्गारि (य)-संवत्सर ··· ··· ··· ··· दिरेशनिवारदन्दु ··· ··· य दुध जकवे गन्ति हेग्गेरेय मत्तिकापुरदिन्द पुरवेय्दलु । नुरव्रत ··· ··· ··· देवेन्द्र वुधम् ॥

श्रावकर तोयेतर दु- । धावळि-परमोपकारि मति-चतुर कळा- ।
कोविदर बन्धु जन-मा- । निदान-पयरप्प सु-कवि-देवेन्द्र-दुधम् ॥

गौजड-वेग्गडेय गुरुगळ् देवेन्द्र-पण्डितरिगे अवर मदमाळिगे देक्कव्वेय निसिदिय कल्लं मत्तवारद गामुण्ड वूचि-वेग्गडे नारणवेग्गडेय्यं पडिकर-माडुव मावलय्य नु निलिसिदरु

[(उक्त मितिको) गौजके वेग्गडेके गुरु देवेन्द्र-पण्डित की पत्नी देक्कव्वे का स्मारक-पाषाण मत्तावारके गामुण्डोंने खड़ा किया था ।]

[Ec, VI, Chik magalur tl, no 162]

३२२

हिरे-आवली—संस्कृत—तथा कन्नड़

[सोरब परगना, हिरे-आवली-गाँव]

[ध्वस्त जैन वस्तिके पास २५ वें पाषाणपर]

स्वस्ति समस्तसुरासुरमस्तकमकुटांशुजालच्छघौतपद प्रस्तुतविन धर्म्म ··· ··· मर्त्तमित्यैनखिलमव्यवन्न ··· श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
चीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वरं परमभट्टारकं सत्याश्रयकुळतिळकं चाळुक्याभरणं श्रीमज्जगदेकमल्लदेव ··· निर्म्मळकीर्त्ति ··· चोच्चंड ··· ··· मंडितवीरश्रीयं निळे सळे नेगर्द्द रजेय ··· नुर्व्विगे ··· समुद्रदि ··· ··· ··· विपुळकष्टमनेंतिरुतिर्प्प ··· वनेक चळुक्य-पेर्म्मचमूप ··· ॥

श्रीजगदेकमल्ल महीनाथन लक्ष्मिगे रम्य हर्म्यवि-
भ्राजितमष्ट··· ळगं-मिवदळे निप्पमैमेयं
साजदेताळि द् तत्पतिगे वार्द्धिवरं नेळनं निमिर्चिरा-
राजित पट्टसाहणियोळोळ् दोरे बम्मणदण्डनाथनोळ् ॥ ··· दळं सैरिपु-यकेरगदो
ळ् पं मीरे ताप्रभावदंदे किडलीय-युगंदे यप्पुदें नाडेरदंदिनं तन्नुडि नन्नियागि नडेदोडं
स्वामिसंपत्तिगास्पदवाद् अनेक विक्रमविलास योगदंडाधिप ॥

६॥ चित्तदलुमल्लदेतन्न ।
सत्यद गुणविल्ल घनदे नीरेरिकरं ।
नित्तरिसि मूरुलोकम्- ।
नुत्तरिसितु निन्न कीर्त्तिलतेयुं कृतियुं ॥

कंद ॥ अय्दं जिनपदगणेगं ।
मेय्देगेयदे मनद धृतिय कामिनियरोळं- ।
तेय्दि ··· ··· बेससे ··· सुलु ।
मय्दुनमल्लरस क ··· नाहवरामं ॥
शंकरदेवतनूजनु ।
किंकरनेनिसिर्द्द स-णदान्वयदोडेयं ।
शंकिसदे धर्म्मदोळवं ।
शंकाधिगुणंगळं ··· यरेयिसिदं ॥

स्वस्ति समस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महाप्रधानं योगेश्वरदण्डनायकं वनवासे पन्निर्च्छासिरमनाळुतमिरे जिड्वळिगे एप्पत्तर अधिकारि पेर्म्माडि मय्दुन मल्लिदेवं । श्रीमच्चाळुक्य विक्रमवर्षद दुंदुभि संवसरद पुष्यसुद्ध सोमवारदंदुत्त-

रायणसंक्रांतिय पर्व्वनिमित्त दंडनायकगे विन्नपंगेय्दु श्रीमदवलिय **पार्श्वदेवर्गे** कारुगुलियवयल साल माविनल्लि विट्ट केय्यि ··· दुण्डिय गलेयलु कम्म 5—1

स्वस्ति समस्तजिनपादांभोजवरप्रसादरुमप्प **मुद्दगाकुंडनुं** (others named) अक्कसालेचगरणियोल् ··· प्रतिष्ठेयं मडि समस्तप्रजेगळिद्दुं । स्वस्ति यमनियम-स्वाध्यायध्यानधारणमौनानुष्ठान जपगुणसंपन्नरप्प । श्रीमूलसंघद **सेनगणद पोगरि गच्छद वीरसेनपंडितदेवर** सहधर्म्मिगळप्प **माणिक्यसेन पण्डितदेवर** कालं कर्च्चि धारापूर्व्वकं माडि सर्व्वनमश्यमागि कोट्टरु । ई धर्म्मव प्रतिपालिसिदर् अनन्तपुण्यमनेय्दुवरु इदनळिदवरु अधोगति इळिवरु ॥

(हमेशाका अन्तिम श्लोक)

[काल सन् ११४२-४३ ई० । दुन्दुभि वर्ष, पुण्य शुद्ध सोमवारकी उत्तरायण संक्रान्ति । यह लेख पश्चिमी चालुक्य राजा जगदेकमल्ल द्वितीय के राज्यका उल्लेख करता है और उसके वनवसे-१२००० के प्रदेशपर शासन करने वाले योगेश्वर दण्डनायक सेनाध्यक्षकी तारीफ़ करता है । पेर्गडे मय्दुन मल्लिदेव सेनाध्यक्षकी अनुमतिसे बिड्वलिगे-७०के राज्य पर शासन कर रहा था और इसने आवलीके भगवान् पार्श्वनाथको एक भूमिका दान दिया था ।

एक और दान, संभवतः एक जैन मन्दिरको मुद्द गावुण्ड तथा और दूसरे लोगोंके द्वारा किया गया था (इसकी विगत लुप्त है) । ये लोग जैनधर्मके पक्के भक्त थे । यह दान वीरसेन पण्डित देवके सहधर्मी माणिक्यसेन पण्डितदेवके पाद-प्रक्षालन पूर्वक किया गया था । वीरसेन पण्डितदेव मूलसंघ, सेनगण और पोगरि गच्छके थे ।]

[EC, VIII, sorat tl. no 125]

३२३

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १०६८=११४५ ई०]

[देखो, जैन शिलालेख संग्रह, प्रथम भाग]

३२४

यल्लादहल्लि = संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[वर्ष क्रोधन = ११५४ ई० (लू० राइस)]

[यल्लादहल्लि (नेल्लीकेरी प्रदेश) में, गाँवके दक्षिण-पूर्वमें, ध्वस्त बस्तिके पासके पाषाण पर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
यस्य सद्धर्ममाहात्म्यात् सौख्यं जग्मुर्मुनीश्वराः ।
तस्य श्रीपार्श्वनाथस्य शासनं वर्द्धतां चिरम् ॥
जयति विगत-संख्याराति-भूपाल-भूमि-
ध्वज-गज-तुरगादीन् संविजित्याग्रहीद्यः ।
सकळ-समय-धर्म्माचार-शौर्य्योरु-विद्वद्-
गुण-मणि-खनि भूभृत् **पोय्सळ**-क्ष्मापतिस्सः ॥
श्रीकान्तानेत्रनीलोत्पलवदनसरोजात-स-स्मेर-लीला-
लोकं लोकत्रयोज्जृम्भितविशदयशश्चन्द्रिकादोःप्रताप-
व्याकीर्णं त्यक्त-युक्त-क्रम-कळित-कुभृच्चक्रखेद-प्रमोद-
श्रीकं श्री**विष्णुभूपं** वेळगुगे जगमं राजमार्त्तण्डरूपम् ॥
जळधि-व्यावेष्टितोर्व्वीपतियेनिसि सुखं बालो चन्द्रार्क्कतारं ।
तळकाडं कोण्ड-गण्डं **निगुलर्** पदेयंकूडे वेङ्कोण्ड-गण्डम् ।
तळवारल् तळ्त भूपालर हेडतलेयं थोप्पेनल् होय्द गण्डम् ।
बलवद्राज्यङ्गलं तन्नलगिन मोनेयोळ् पाय्दु कटकोण्डगण्डम् ॥
तलेमलेयादियागे निम्मिर्द्दॆग्गडद्दमनावगम्महा-
बळ-पद-घातदिन्दरेदु सण्णिसुतुं नडेतन्दु तन्दु तन्न दोर-
बळदलि **कोङ्क वेङ्गिरिय** मीसेगळं संसिद्धन्ते विष्णु-दोर्-

व्वलदले कित्तनोत्तिरिसि कळङ्गिन तेगिन तेङ्गिन नन्दनङ्गळं ॥

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वर **द्वारावतीपुर**वराधीश्वर। **यादवकुलाम्बरद्य** मणि। मण्डलीक-चूडामणि। श्रीमद्अच्युत-पादाराधना-लब्ध-विष्णु-प्रभावम्। दिक्पालक-पराक्रमाक्रमाक्रमण-पटु-पराक्रमुक-स्वभावम्। शत्रु-क्षत्रिय कलत्र-गर्भस्राव-सम्पादक-गभीर-शङ्ख-नाद। वासन्तिका-देवी-लब्ध-वर-प्रसाद। हिरण्यगर्भ-तुलापुरुषादि-महा-क्रतु-सहस्र-सन्तर्पित-पितृ-देव-गुरु-सम ••• निरुपम-क्षत्र-गुण-निर्मित-विराद-विष्णु-**वीर-विजयनारायण-पुराधीश्वर**ख्यात-देव-कुळ-कुळ.चळ-कुळ (कुळ)-यादवच्छधि-विष्णुसमुद्र विलास-मुद्रित-मही-लोकन् अविकरण चातुर्व्य-चतुरानन। चतुर्व्वेदपाडित्य-मण्डितगोष्ठिपडानन समरमुखगृहीताहितमहीकान्त-कामिनीजन-मुखनिरीक्षणक्षणकृतदुर्व्यनिरीक्षण नृसिंहध्याननिश्चलीभूत-निर्म्मळचरित्र। पराङ्गनापुत्र। सकळजनसत्यनित्याशीर्व्वाद-सामर्थ्य सम्पादितकल्पायुरारोग्याभिवृद्धि-युक्त दुर्द्धरसमरकेळीसंसक्त दोर्व्वळावळे दुश्शीलाश्वपतिगजपति प्रमुखराज-लोक-निर्द्दयनिर्द्दळनोपाडिताश्वगवादिनानाविधरत्ननिचय-रुचिरलक्ष्मीविलासम्। सरस्वतीनिवासम्। **चोळकुल**प्रलय-भैरवम्। चेरम-स्तम्बेरम-राजकण्ठीरव। **पाण्ड्य-कुल**रयोधि वडवानल। पल्लवयशोवल्लीपल्लवदावानल। **नरसिंहवर्म्मसिंह** सरम निश्चल-प्रतापाधिपतित-**कळपाळा**दि-नृपाल-सलभम्। निज-सेना-नाथ-निर्द्दलित **जननाथपुर** जगद्-दारिद्र्य-विदारण-प्रवीण-कारुण्य-कटाक्ष-निरीक्षण प्रत्यक्ष-पद्मे क्षण-चतुस्समुद्र-मुद्रित-वसुमती-मनोहर-लक्ष्मी-वल्लभ। भयलोमदुर्लभ। नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितम् श्रीमत्-**कञ्चि-गोएड विक्रमगङ्ग वीर-विष्णु-वर्द्धन-देवरु गङ्गवाडि**-तोम्बत्तरु-शरीरनुं। **नोळम्बवाडि**-मूवत्तिर्-च्छीसिरमुं। **वनवसे**-पन्नि-च्छीसिरमुं। **हलसिगे**-पन्निच्छीसिरमुवेरडरु-नूर्वरं दुष्टनिग्रह-शिष्ट-प्रतिपालन-पूर्व्वकवेक-क्षत्र-च्छायेयिन्दाळ्दनामहानुभावनिं वळिय।

कन् ॥ तन्देयल् अच्छोदित-तेर्ट-। दिन् दवे नेगल्दादिरासिव-पडविगे समनेम्ब्।
ओन्दु-विमव-प्रमावते-। विन्दं **नरसिंह**नरसु-गेय्युत्तिर्द्दम् ॥
वृ० ॥ दिमदिं सेतु-वरं तोलल्दु नेलनं निष्कण्टकं माडुव-।
ळि ळ महोग्राब्धियोळान्तिदिर्द्दिदिं **चक्रालयनं** कोन्डुवा-

समदेभावळियं हय-प्रततियं चेम्पोङ्गळं नूतनरत्-
नमुमं कोण्डु नृसिंहं-भूपनेळे यं दोस्-स्तम्भदोळ् ताल्दिदम् ॥

व ॥ अन्तु समस्त-मण्डलिक-सामन्त-सेनानाथ-परिवन-परिवृतनागि **दोरसमुद्र**
नेलेवीडिनोळ् समुत्तुंग सिंहासनासीननागि सुखसङ्कथाविनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि । स्वस्ति समस्तराज्यभरनिरूपितमहामात्यपदवीप्रख्यातं शक्तित्रयसमन्वितं श्री-वीर-**विष्णुवर्द्धन-देव**-प्रताङ्क-लक्ष्मी-रक्षणाङ्क- (र)
रक्षक सत्य-शौच-स्वामि-हितादि-सद्-गुण-शिक्षकं चतुर्व्वेदमहादाननिरतं श्रीमद्-भिनवभरत श्री वीर **विष्णुवर्द्धनदेव**भुज्यविजयमण्डितमानवाकारचक्रम् । स्वामि-समादेश-साधितसकलदिक्चक्र । कौशिक कुलाम्बरदिवाकरम् । सत्य-तत्वरत्नाकर । नामादिसमस्त प्रशस्तिसहितम् श्रीमन्महाप्रधानम् ।

वृ० ॥ कुडे नृपमेरे होय्सळ-महीभुवनकर्क्करदुर्क्केयिन्दे तां ।
पडेदनशेषराज्यकरभारधुरन्धरनेन्दु तन्न-जेग्-
गडेतनमं निरन्तरवेनल् प्रभु-शक्तियनान्त पेम्मं नूर्-
म्मडि मिगिलादुदे-बोगळ् वेनुन्नतियं विभु-**देव-राजनम्** ॥

अन्तु पति-हितनुं सकळ-नियतनुवेनिसिद देव-रावन गुरुकुलुवेन्तेन्दोडे ।

श्लो० ॥ जयत्यमरनागेन्द्रपूजिताङ्घ्रि युगं प्रभोः ।
वर्द्धमानजिनेन्द्रस्य शासनं कर्म्मनाशनम् ॥

अन्तु श्रीवर्द्धमान-स्वामिगळ दिव्य-तीर्थदोळु केवलिगळुं श्रुतकेवलिगळुं बुद्धि-प्राप्तरुं अप्प परम-मुनिगळु सिद्ध साध्यरुमागे तत्तीर्थसामर्थ्यमं सहस्रगुणं माडि **समन्तभद्र-स्वामि**गळु **अकलङ्कदेव**रुं । **गृद्धपिच्छाचार्य्य**रुं (।व्) आदि-यागे पलम्बरुं श्रुत-वरुं सन्द वलिक्के श्रीमूलसङ्घद श्री कोण्डकुन्दान्वयद देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद विशिष्टदोळगे **सागरनन्दि-सिद्धांत-देव**रभिनव-गणधररे-निसिदरवर शिष्यरप्प **नन्दि-मुनि**-पुङ्गवरवर शिष्यरु तर्क्क-व्याकरण-सिद्धान्ताम्बुरुह-वन-दिनकरुमेनिसिद श्रीमन्-**नरेन्द्रकीर्त्ति-त्रैविद्यदेव**रवर सधर्मर् षट्त्रिंशद्गुण-मणिमण्डनमण्डितरु पञ्चविधाचार-निरतरुमप्प श्रीमन्मुनिचंद्र-**भट्टारक**र श्री-पाद-विन्दाराधक ।

वृ ॥ मूलं मूलगुणस्तथोत्तरगुणः काण्डं श्रुतं स्कन्धकन्
शाखा शान्तिरथाङ्कुरः प्रथमतो धर्म्मो दया मञ्जरी ।
बाता यस्य स कल्प-भूमिवनितो भव्येष्वभीष्टं फलम्
शिष्यश्श्रीमुनिचन्द्रदेवयमिनः सम्वर्द्धतां देवगः ॥

आ-विशिष्ट-कल्प-द्रुमन वंशावतारवेन्तेन्दोडे श्री-कौशिकमुनीश्वरनिन्दनेकरं
(व्) अनुपमरेसेदवरोळगे ।
कन् ॥ अनवधिगुणमणिभवनं विनपदयुगळोदयचलार्क्कं विद्वज्-
जन-वनद-राज-हंसं । जनसंस्तुतनेनिसि देवराजं नेगल्दम् ॥
आ-विमल-यशन कुल-वधु । भूविनुतचरित्रे सकलगुणवति विकचेन्-
दीवर-लोचने पुण्य- । स्त्री-वन्दिते कामिकव्वे नेगल्दलु जगदोळ् ॥
आ-दम्पतिय तनूजं । भूदेव-कुलाम्बरेन्दु निर्म्मल-कीर्त्ति-
श्रीदयितं निरवद्य-गु- । णोदयनुदियिसिदनेसेयलुदयादित्यम् ॥
एने नेगल्दुदयादित्यन् । वनिते पतिव्रतगुणावलम्बन-योषिन्-
जनविनुते सकलागम- । जनितेयेनलु किरुगणब्बे नेगल्दलु जगदोळ् ॥
वृ ॥ एने नेगल्दिर्द्द दम्पतिगळ-उद्भवमुद्भविपन्ते पुण्य-मा-
जनरोगेडर्त्तनूमवरुदात्ततेयिं रतुन-त्रयङ्गळ्-
वनधि-परीत-भूतळदोळन्देसेवन्तिरे जैन-धर्म्म-वर्-
द्धनमेने भूवरिन्दमे यशोलते पूर्व्वे दिगन्तराळमं ॥
पेसर्-वेट्टा-भूवरोळ् पेम्मेंगे मोदले निसिर्द्दल्युदात्तप्रभाव-
प्रसवं श्रीदेवराजं विम्ळगुणगणाळम्बनं सोमनाथम् ।
कुसुमास्त्राकार-सार-प्रकटित-विभव-श्रीधरं तानेनल् वर्त्त् ।
तिसिदर्नीहारहारोज्ज्वळवर-यशदिं तीवे दिक्-चक्रवाळम् ॥
कन् ॥ अवरोळगेनिसुं निज-कुल- । नव- नळिनी-द्युमणि निखिल-भव्यजनैका-
नन्द-पूर्ण्ण-चन्द्रनुदयत् । प्रविभासित-कीर्त्ति देवराजं नेगल्दम् ॥
वृ ॥ जनसंस्तुत्यरोळीतनत्यधिकनीतं विश्रुताचारनी-

तनतर्क्यास्पदनीतनुद्घ-यशनीतं सत्कलाधारनेन्द् ।
एनितानुं तेर्रदिन्दे वण्णसलिला-लोकं करं पेम्यु वेत्-
तनुदात्त-स्थितियिं सुहृज्जनविपद्-विद्रावणं देवणम् ॥
जडजभवनफळे येनिसुव । गिड्डु कलु मरनदपरे निपरं पडेदघमं ।
बिडिसलु वेडिये पडेदम् । **कडुचरितेय** देवराजनं घरेगेसेयल् ।
आ-भव्य-चूडामणिय मनोरमे ।
कन् ॥ अनुपम-महिमाळम्बिनिं । जिनपदसरसिरुहभृंगकुन्तले योषिज्-
जनविनुते पूर्ण्ण कळरा- । स्तनि **कामल-देवि** नेगल्दळी-नसुमतियोळ् ॥
वृ ॥ तळिरं केन्दळव् इन्दुवं वदनवुद्भृङ्गाळियं कुन्तळा-
वळी चेम्बोङ्गोडनं पोदल्द-मोले मुक्तानीकमं दन्तवुत्-
पळमं लोचनवीक्षु-चाप-लतेयं भ्रूविभ्रमं पोल्वियं ।
तळेयल् कामल-देवि मन्मथधनुर्ज्यालेखेयन्तोप्पिदल् ॥
अन्तु सकुटुम्ब-समेतं श्रीजिनधर्म्मनिर्म्मलाम्बरहिमकरनुं श्री-होय्सलमहीशरा[illegible]-
भूभृन्निलयमणिप्रदीपकलशनुं मागुत्तिर्द्दे श्री-होय्सलं देवराजन धर्म्मबुद्धिगं स्वामि-
भक्तिगं मेच्चि **सूरनहल्लियं** कोट्टोडल्लि ।
वृ ॥ एनिसुं शुभ्राभ्र-जालं वळसिद रजतादीन्द्रमीयिद्दुवेन्देम्-
विनेगं नाना-सुधा-दीधिति वळवळिमुत्तुङ्गकूटं त्रिकूटं ।
जिनगेहं शोभिसल् माडिसि निज-जनकं गित्त नाल्दोळनिष्टान्-
गनेगित्तं मत्तवोन्दं विबुध-जन-सुरोर्व्वीजनी-**देव-राजम्** ॥
अन्तमरेन्द्र-भवनमेनिप पार्श्व-जिन-भवनमराज-राष्ट्र-यशो-धन-वृद्धयर्थवागि माडिसि
श्री-**होय्सळ-देवं** कुत्तुं श्री-पार्श्वदेवरष्टविधार्च्चनेगं (व्) आहारदानक्कं क्रोधन-
संवत्सरद उत्तरायण-संक्रमणदन्दिष्ट-देवता-सन्निधानदला-सूरनहल्लिय मोदल नाल्वत्तु
होन्नोळगे हत्तु होन्न मोदलं श्री**पार्श्वपुर**मं माडि देव-राजङ्गे धारा-पूर्व्वकं माडिया-
चन्द्रार्क्कतारं सलुवन्तागि कोट्टदा-भव्य-चिन्तामणि श्रीमन्-**मुनिचन्द्र-देवर** श्री-
पादवं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्ट भूमिय सीमेयेन्तेन्दोडे देवरकेरेय पडुवण-
कोडियिं नट्ट कलुगळिं दोडगट्टद पडुवण-कोडियिं मूड माविनकेरेय दारिचिन्द

केतन-श्वट्टिं तेङ्क नाविनकेरेयिं पडुवग-सीमेयिं पडुव तरंगेलेय मोरेडिय हेरड़े गेतनगट्टद वडगण कोडिय कब्बिनकेरेय मूडण कोडियिन्दवा-वयल मूडनिन्दं मूडलु ॥ (हमेशाकी तरह अन्तिम वाक्यावयव और श्लोक) भद्रमस्तु जिन-शासनस्य ॥

[जिन शासन और पार्श्वनाथके सिद्धान्तोंकी प्रशंसा। राजा पोय्सल और राजा विष्णुकी प्रशंसा।

जिस समय (अनेक पदोंसे युक्त) कञ्चिको अधिकारमें करनेवाले, विक्रम-गङ्ग, वीर-विष्णुवर्द्धन-देव गङ्गवाडि ९६०००, बोलम्बवाडि ३२०००, बनवासे १२०००, तथा हलसिगे १२००० पर राज्य कर रहे थे :—

उसके बाद, अपने पिता की छायासे जैसे अङ्कित होगये हों, **नरसिंह** राजा थे। (उसकी प्रशंसा) उनके दोरसमुद्रमें राज्य करते समय, उनके पादपद्मोपजीवी राजप्रधान **देवराज** हुए। उनके गुरुकी परम्परा निम्नभांति थी: —

वर्धमान जिनेन्द्रके बाद केवली, और 'श्रुतकेवली' हुए। उसके बाद उसी परम्परा में— मूलसंघ, कोण्डकुन्दान्वय, देशियगण तथा पुस्तकगच्छमें, समन्तभद्रस्वामी, अकलङ्क-देव, गृद्धपिच्छाचार्य तथा और भी बहुत-से श्रुतधर हुए। इनमें एक समरनन्दि-सिद्धान्तदेव हुए जो नये वादधर समझे जाते थे। उनके शिष्य अर्हनन्दि-मुनि थे। उनके शिष्य नरेन्द्र-कीर्त्ति त्रैविद्यदेव थे जो न्याय, व्याकरण और दर्शन में पारङ्गत थे। उन्हींके साथी मुनिचन्द्र-भट्टारक थे।

उनके चरणों का पूजक शिष्य **देव** था। उसकी परम्परा इस प्रकार रही:— कौशिक-मुनिसे सन्तान चली, जिसमें **देवराज** था। देवराज का पुत्र उदयादित्य, उसके, तीन पुत्र हुए—देवराज, सोमनाथ और श्रीधर। इनमें से कटुचरिते का देवराज प्रधान था।

उसको देवराज-होय्सलने सूरनहल्लि दान में दी। और उसने वहां एक जिन-मन्दिर बनवाया। होय्सल देवने अष्टविधार्च्चन और आहारदानके निमित्त

सूरतहल्लि की ४० होन में से १० होन इसके लिए निकाल दिये और इसका नाम **पार्श्वपुर** रख दिया। और देवराजने मुनिचन्द्र-देवके पादप्रक्षालन पूर्वक भूमिदान दिया।]

[EC, IV, Nagmangala Tl., No. 76]

३२५

महोवा;—संस्कृत।

[सं० १२०३=११४६ ई०]

इस लेखमें सं० १२०३ होनेके अतिरिक्त शिल्पी (इसको खोदनेवाले) लाखनका नाम और दिया हुआ है।

[A. Cnnninghom, Reposts, XXI, p. 73, a

३२६

हुम्मच;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १०६६—११४७ ई०]

[हुम्मचमें, तोरण-वागिलके उत्तर की ओर के खम्भे पर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज, परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळक चाळुक्याभरण श्रीमत्-**जगदेकमल्ल-देवर** विजय-राज्यमुत्त-रोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमा-चन्द्रार्क-तारं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि। (पंक्ति ८ में 'समधिगत पञ्च' से लेकर पंक्ति २० में 'महा-मण्डलेश्वरं' तक शि० लो० नं० २१४ की ११ वीं पंक्ति से २५ तक की पंक्तियों से मिलता है।)

कुन्दद् तेवप्-प्रसरम् ।
कन्दिसे पर-नृप-यशो-लता-कन्दळमन् ।
वन्दिगे वेळ्पुदनित्तन् ।
कन्दद् जसमेत्तेये **वीर-देव-नृपाळम्** ॥
आतन हृदयाढीङ्गदोळ् ।
आतत तनु-लतिकेयोन्दे सन्दिसे मिक्कल् ।
मातेनो सिरियुमं गिरि- ।
जातेयुमं सतियरोळगे **वीरल-देवि** ॥
अवर्गे तनूभवर् क्रमदिनादरपश्चिम-दिग्-वधूटियोळ् ।
नवि नेरेयल् पोदल्व वेळगुं बहु-रागनुन्नत-तेजनुन् ।
भुवन-दगुत्तवङ्गळे निपी-गुणदन्तिरे **तैल-भूपनुम्** ।
भुवन-विनुत-**गोग्गि-नृप**नोडगनग्गद **वम्म-देव**नुम् ॥
निज-भुज-बळदिन्दरि-भू- ।
भुजरं कोन्दोत्तिकोण्डु देशमनन्ता- ।
विदिगीप्रु-**तैल**-भूपम् ।
भुजबल-सान्तरनेनिप्प पेसरं पडेदम् ॥
आतन तम्मं तोळोळि- ।
ळा-वळ्मं तळेदु ताल्दिदं सत्य-वचम् ।
ख्यातं **गोग्गि**-नृपाळम् ।
भूतळवरियल्के **नन्नि-सान्तर**-वेसर ॥
विक्रम-शान्तर-वेसरम् ।
शक्रङ्गेणेयेनिसि पडेदनुद्दण्ड-मही- ।
चक्रम नेपगिसि दिङ्-मुख- ।
चक्रोज्वळ-कीर्त्ति-कान्त**नोडग**-भूपम् ॥
पर-नरप-शिरः-कञ्जो- ।
त्कर-करि कमळा-पयोधर-द्वय-हारम् ।

स्मर-मूर्त्ति सकल-दिग्-मुख- ।
परिचुम्बित-कीर्त्ति **वम्म-देव-कुमारम्** ॥

अवर तायि ॥

जनकं रङ्ग-राङ्ग-भूमिपति काञ्ची-नाथनात्म-प्रियम् ।
विनुतर् श्री-विजयर् नु-शिक्षकरेनल् विद्विष्ट-भूपाळ-सं- ।
हनदि क्रान्त-यशो-विळास भुज-खड्गोल्लासि तां **गोग्गि** नन- ।
दनना-**चट्टल-देवि**गेन्दोडे यशश्श्रीगिन्तु मुं नोन्तरार् ॥
कुन्तळ-देशक्के ळोर्प्पुव ।
सान्तळिगेय नडुवेनिप्प **पोम्बुर्च्च**मिला- ।
कान्तेय पेर-नोसलेनिसे निर ।
न्तरमेसेवोन्दु-तिळक**मुर्व्वी-तिळक**म् ॥

इन्तेनिसिदुर्व्वी-तिळक-जिन-भवनयं माडिसिद महा-सतिय प्रिय-पुत्र-नुम्म
विक्रम-शान्तरङ्के ॥

पुट्टिदनिनङ्के तेजम् ।
दिट्टि मोगक्कमर्दु चन्द्रमङ्केळ् तरदिम् ।
पुट्टु वबोलखिळ-वैरि-व- ।
रट्टं शरदिन्दु-कीर्त्ति **तैल-नृपाळम्** ॥
नळने विनोदि धर्म्मनने धार्म्मिकनब्धिये रत्नदागरम् ।
कुळिसमे शस्त्रमर्ज्जुनने धन्वि सुरेन्द्रने भोगि मन्दरं- ।
चळमे गिरीन्द्रमप्रतिम-राये-भळय्यने चक्रि **तैल**-मण् ।
डलिकने दानियेन्दु मुद्दिगिक्किदेनार्प्पवरेत्तिकोल्लिरे ॥
त्रिभुवनमल्ल-चक्रि कुडे **तैल** नृपं पडेदं नृपोत्तमम् ।
त्रिभुवनमल्ल-सान्तर-निजोचित-नाममनुर्व्वि वण्णिसल् ।
विभु **जगदेकदानि**-वेसरं तळेदं निखिळार्त्थिगादुदोन्द् ।
अभिनवमप्य जङ्गम-सुर-द्रुममेम्बिनमित्तुधात्रियोळ् ॥
आतन वक्षस्थळदोळ् ।

नू (उत्तर मुख) तन-मणि-हारवेनिसे तनु-रुचि सौभा- ।
ग्यातत-गुणमं तळेदळ् ।
कौतुक-तनु-लतिकेयिन्दे **चट्टल-देवि** ॥
सम्पन्नोत्सव-भावमं तळेदु लीला-यौवन-श्रीयनान्त् ।
इम्पिन्दा-मियुनं मनोरथमनान्तिर्प्पन्नेगं पुट्टिदर् ।
पम्पा-देवियमुग्रवंश-तिळकं **श्रीवल्लभो**र्व्वीशनुम् ।
पेम्पिं पुट्टुवोल् सुधाण्र्णवदोळा-श्रियं सुर-द्रुमानुमुम् ॥
पर-भूपाल-समुद्रदोळ् निज-कर-प्रोत्खात-निस्त्रिंश-मन्- ।
दरमं सन्धिसि विक्रमद्-भुज-फणीन्द्रावेष्टित-प्रान्तमम् ।
भरदिन्दं कडेदुग्र-वंश-तिलकं श्री-कान्तेयं तन्नपेर्- ।
उरदोळ् ताळ्दे बुधालियेम् पोगळदो श्रीवल्लभाख्यानमम् ॥
विक्रम-गर्व्वमं तळेदु तागिद वैरि-नृपाळ-जाळ-दोश्- ।
चक्रदोळिर्द्द विक्रम-वधूटियनिळकुळिगोण्डु वल्लिनिम् ।
विक्रम-वज्र-वेदि-भुज-मण्डपदोळ् तळेदोल्दु ताळि्दम् ।
विक्रम-शालिगळ् पोगळे **विक्रम-शान्तरनेम्ब** नाममम् ॥
शौर्यं यस्य सदर्प्प-वैरि-वनिता-वैधव्य-दीक्षा-गुरुः ।
प्रायो दानमनूनमर्त्थि-जनता-दारिद्र्य-विद्रावणम् ।
कीर्त्तिर्द्दिग्वनिता-विलोल-कबरी-कुन्द-प्रतिद्वन्द्विनी ।
सोऽयं सद्गुणरत्नरोहणगिरिः श्रीवल्लभोर्व्वीश्वरः ॥
अभय-विशुद्ध-नायक-निबद्ध-निज-क्रम-चूडेयं शिरश्- ।
शु (सु)भग-विभूषेयेन्दु तळेदिर्द्दरिगित्तु समस्त-धात्रियन् ।
विभुसले कोट्टु कट्टिदिरोळान्तहितर्ग्गेहि-नाक-लोकमम् ।
त्रिभुवन-दानियेम्ब पेसरं तळेदं बुध-माळे बण्णिसल् ॥
कस्तुरिय बोट्टे मेणिदु ।
पुत्तळिगेयो नीळ-मणिय तोळ्-नम्बदोळेम् ।
तेत्तिसिदुदेनिसि घरेयम् ।

पोत्तुदु भुज-वज्र-कोटि-सिरिवल्लहना ॥
इन्तु बगेगोळिपुदोन्दु-व—।
सन्तद **सान्तळिगे-सायिरं** सन्तविरल्।
शान्तर-तिळकं **विक्रम-**।
शारन्तरनेकातपत्रमं तळेदिर्दम् ॥
आ-भूपतियग्रजेगे।
त्रैभुवन-व्याप्त-कीर्त्ति-गङ्गा-जळदिम्।
भू-भुवन-कळि-कळङ्कद।
वैभवमं-कर्चि कळवुदेनच्चरिये ॥
धरेयेल्लं चित्र-चैत्यालय-नव-रचना-चूळकं दिक्करीन्द्रो-।
त्कर-कर्ण्ण-श्रेणिमेल्लं जिन-सव-निनदत्-तूर्य्यकोत्ताळ-ताळं।
स्फुरितोद्यद्-व्योममेल्लं परम-जिनपतीज्या-ध्वज तानेनल्।
वर-**पम्पा देवि**येत्तं वेळगुवळरुहच्छासन-श्रिय पेम्पम्।
विनुत-महापुराण जिन-नाथ-कथोक्तिये कर्ण्ण-भूषणम्।
जिन-मुनिगळ्गे माडुव चतुर्व्विध-दानमे हस्त-कङ्कणम्।
जिनपति-भक्ति-सूक्ति-नुति-मालेये बन्धुर-कन्य-मण् (पश्चिम मुख) उनम्।
तनगेने **तैल**-भूप-सुते मेच्चुवळे तनु-भार-भूषेयम् ॥
उर्व्वी-तिळकमनिळिपि वि-।
गुर्व्विसिदवोलोन्दे-तिङ्गळोळ् माडिसिदळे नल्क्।
ओर्व्वळे शासन-देवते।
सर्व्वोर्व्वि-वन्द्येयेनिसि **पम्पा-देवि** ॥
आ-नूतना**त्तिमब्बेय**।
भू-नुत-शीळवने तळेदु सौभाग्य-वपुश्-।
श्री-निधि भोग्य-श्लाघ्य-।
श्री-निधि पुट्टिदळ्दात्ते **वाचल-देवि** ॥
स्तन-कळशाग्रदोळ् पोळेदु मुत्तिन हारमनोन्दि कर्ण्णदोळ्।

वन-कुळियावतंसमनमक्कैयनाळ्दु विनीळ-केशदोळ् ।
विनुतवेनिप्प केदगेय कुळियनिचरुन्नतांगुणळ् ।
दिनदुत्त-पूजेयोळ् तोडव नोमवे **वाचल-देविगावगम्** ॥

ई-चरित्र-पवित्रदे ताय शीलद पुट्टुवेन्तेन्दोडे ।
रुचि-पूर्व्वाह्न-विधार्च्चने ।
रुचि-पूर्व्व-महाभिषेकमुं रुचि-पूर्व्व- ।
प्रचुर-चतुर्-व्यक्तियुमिवे ।
रुचि पम्पा-देविगक्कि-सन्ध्या-जयदेळ् ॥

इन्ती मूवरं श्रीमद्-[द] **रविळ-संघद नन्दि-गणद कण्डकळान्वयद वादीभसिंहरेनिप्पजितसेन-पण्डित-देवर** गुड्डु गळ्नुडियिनुर्व्वी-तिळकमेनिसिद पञ्च-वसदिय बडगण पट्टाळेयं माडिसिदरवर गुरुगळन्वयदाचार्य्यावळि-येन्तेन्दोडे ॥ श्री-वर्द्धमान-स्वामिगळ् तीर्थं प्रवर्त्तिसे सप्तर्द्धिसम्पन्नरप्प **गौतम-गणधरदेवने** तम्मानिगळप्प मुनिगळ् पलवरं सले अवरिं वळिय चतुर्-ज्ञान-बुद्धि-प्रातरेनिप्प **कोण्डकुन्दाचार्य्यरं** श्रुतकेवलिगळेनिप्प **भद्रबाहु-स्वामिगळुं** मोदलागे इळ्वराचार्य्यर्गोदिम्बळियं **समन्तभद्र-स्वामिगळुदयसिदवरलन्तरं** सङ्ग-राज्यमं माडिद **सिंहनन्द्याचार्य्यर्** अवरिं दिन-मत-कुवळय-शराङ्करेनिप्पकलङ्कदेव-रवरिं **राय-राचमल्लन** गुरुगळप्प **वादिराज-देवरेनिसिद कनकसेन-देव-**रमवर शिष्यरोडेय-देवरं रूपसिद्धियं माडिद **दयापाळ-देवरं** वर्त्तिसिदिम्बळियं षट्-तर्क-सम्मुखरं स्याद्वाद-विद्यापतिगळुं कवादेकमल्ल- वादिगळ्मेनिसिद **श्री-वादिराज-देवरु** ॥

चयिलुदे दिनदम्बुदत- ।
चयमं श्री-वादिराज-सूरिगे समेयोळ् ।
-जयसिंह-चक्रवर्त्तिगे ।
जय-पत्रं वरंदु कुडुतमिप्पुदे विनदम् ॥

इन्तप्प **वादिराज-देव**रिम् । **कमळभद्र-देव**रवरिं । शब्द-चतुर्म्मुखरं तार्किक-कचक्रवर्त्तिगळु **वादीभ-सिंह**रुमेनिसिद **जितसेन-पण्डित-देव**रवर सधर्म्मर् **कुमारसेन-देव**रनन्तर वैद्य-गज-केसरियेनिसिद **श्रेयान्स-देव**रवरिम् ॥

यः पूज्यः पृथिवी-तले यमनिशं सन्तस्तुवन्त्यादरात्
येनानङ्ग-धनुर्जितं मुनि-जना यस्मै नमस्कुर्व्वते ।
यस्मादागम-निर्ण्णयस्तनुभृतां यस्यास्ति जीवे दया
यस्मिन् श्री-**मलधारिणि**व्रति-पतौ धर्मोऽस्ति तस्मै नमः ॥
यस्य वागमृतं लोके मिथ्यैकान्त-विषापहम् ।
तस्मै **श्रीपाल-देव**ाय नमस्त्रैविद्य-चक्रिणे ॥

अवर सधर्म्मर् ॥

इच्छा-विघाता भयतो विधातां
नारायणो मौन-परायणोऽसौ ।
महेश्वरो दूर-विनश्वरोऽस्मिन्
कोऽनन्त**वीर्य्यं** प्रतिवक्ति वादी ॥

श्रीमत्पम्पा-देवियरं **श्रीवल्लभ-देव**नुं राज्यं गेय्युत्तमिरलु **स (श) क-वर्ष १०६६ प्रभव-संवत्सरद वैशाख-शुद्ध-पञ्चमी**-बृहस्पतिवारदन्दु बडगण पट्टशालेय प्रतिष्ठेय माडि श्रीवल्लभ-देवं **वासुपूज्य-सिद्धान्त-देव**र कालं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकं कोट्ट वृत्ति आवुदेन्देडो ओडिलव्वयलु-मूतगद्देयुमं सर्व्व-नमस्यं माडि कोट्टर् ॥ (वे ही अन्तिम वाक्यावयव और श्लोक) (दक्षिण-मुख) **श्री-दुर्म्मति-संवत्सरद पुष्य-शुद्ध-छट्टि-सोमवारदन्दु** श्री-**वीर-सान्तर-देव**र्गे.....इंकिदरु **देवरस-दण्णायक** वरद रूवारि **मादेय** होयिद श्री-जिनशरणु ॥

[जिन शासनकी प्रशंसा ।

जब, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित), जगदेकमल्ल-देव का विजयी राज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था :—

तत्पादपद्मोपजीवी, (शि० ले० नं० २१३ में वो नन्नि-शान्तर के लिये विशेषण प्रयुक्त हुए हैं उन्हीं सहित) राजा **वीर-देव** था। उसकी रानी **वीरल-देवी** थी। उनके राजा तैल, राजा गोग्गि, ओड्डुग और बम्मदेव, ये चार पुत्र उत्पन्न हुए थे। तैल का नाम भुवनल-शान्तर पड़ा; गोग्गि का नन्नि-शान्तर, और राजा ओड्डुग का विक्रम-शान्तर। रूपमें कामदेव के समान कुमार बम्म-देव था। इन सबकी मां चट्टल-देवी (वीरल-देवी) थी, जिसके पिता राजा रक्कस-गंग, पिता काञ्ची-अधिपति, गुरु श्रीविजय, पुत्र गोग्गि थे।

कुन्तल-देशमें सुन्दर शान्तलिगे में पृथ्वीदेवी के माथे के समान पोम्बुर्च्च था। उर्व्वी-तिलक जिन मन्दिर को बनानेवाली महासती के प्रिय-पुत्र विक्रम-शान्तर के राजा तैल उत्पन्न हुआ था। तैलको चक्रवर्त्ती त्रिभुवनमल्लने 'त्रिभुवन-मल्ल-शान्तर' का नाम दिया; 'जगदेकदानी' का भी पद उसको मिला। इसकी रानी चट्टल-देवी थी। इन दोनों के संयोगसे पम्पा-देवी और राजा श्रीवल्लभका जन्म हुआ था। श्रीवल्लभका दूसरा नाम विक्रम-शान्तर था और यह शान्तलिगे हजारका राजा था।

इस राजा की बड़ी बहिन पम्पा-देवी बहुत ही जिनभक्त थी। इसने एक ही महीने में उर्व्वी-तिलक (बसदि) के साथ-साथ शासन-देवता बनवायी थी।

पम्पादेवीसे, नयी अत्तिमब्बे[1] के समान, उदार बाचल-देवीका जन्म हुआ था। उसकी प्रशंसा—

ये तीनों (पम्पा-देवी, श्रीवल्लभदेव तथा बाचल-देवी) वादीभसिंह नामसे

---

१. यह चालुक्य चक्रवर्त्ती तैलके सेनापति मल्लपकी पुत्री नागा-देवकी पत्नी, तथा पट्टुवल तैलकी माता थी। वह भक्त जैन थी, इसने पोन्नाके 'शान्ति पुराण' की १००० प्रतियां अपने खर्चसे लिखवायी थीं, और सोने तथा रत्नोंकी १५०० जिन प्रतिमायें बनवायी थीं।

प्रसिद्ध, द्रविळसंघ, नन्दिगण, और अरुङ्गलान्वयके अजितसेन-पण्डित-देवके गृहस्थ-शिष्य और शिष्या थीं। उन्होंने पञ्च-वसदिके उत्तरीय पट्टशालेको बनवाया था।

इसके बाद अपने गुरुओं की परम्पराके आचार्यों के नाम दिये हैं, वे प्रायः सब वे ही हैं जो पहले के शिलालेख नं० २१३ और २१४ में आ चुके हैं। विशेष इतना है कि अजितसेन-पण्डित-देवके दो सधर्मा थे—कुमारसेन-देव और श्रेयान्स-देव। इनके बाद बहुत बड़े विद्वान्, मलधारि, तथा श्रीपाल-देव त्रैविद्य-चक्री हुए। उनके सधर्मा अनन्तवीर्य थे।

जब पम्पा-देवी और श्रीवल्लभ-देव राज्य कर रहे थे, (उक्त मिति को), उत्तरीय पट्टशाले की स्थापना करने के बाद, वासुपूज्य-सिद्धान्त-देवके पाद-प्रक्षालनपूर्वक निम्न दान दिया;—(यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा है)।

वे ही अन्तिम श्लोक।

इसके बाद ६ पंक्तियाँ हैं (जो बहुत घिसी हुई हैं), जिनमें दुर्म्मति वर्ष में (११४१ ई०) वीर-शान्तर-देवके सम्बन्ध में कुछ उल्लेख है।

देवरस-दण्णायक ने इसे लिखा। शिल्पी मादेय ने इसे उत्कीर्ण किया।)

[Ec, VIII. Nogars U. No.37]

३२७

मुगुलूर—संस्कृत—तथा कन्नड़-भग्न

[वर्ष प्रभव = ११४७ ई० ? (लू० राइस)]

[वस्तिके प्रवेशद्वारके पासके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥
श्रीमदेल्कोटि-जिनालयमिदु॥
जयति सकळविद्यादेवतारत्नपीठं

हृदयमनुप्रलेपं यस्य दीप्तैः सदेवः ।
जयति तदनु शास्त्रं तस्य यत् सर्व्व-मिथ्या-
समय-तिमिर-घाति ज्योतिरेकं नराणाम् ॥
श्रीकान्तानेत्रनीलोत्पलवदनसरोजातसस्मेरलीला- ।
लोकं लोकत्रयोज्जृम्भितविशदयशश्चन्द्रिकादोः प्रताप- ।
व्याकीर्ण-त्यक्त-युक्त-क्रम-कलित-कुभृच्चक्र-खेद-प्रमोद- ।
श्रीकं श्रीविष्णुभूपं वेळगुगे जगमं राज-मार्त्तण्ड-रूपम् ॥
जित-पञ्चेषुत्वदिन्दीश्वरनेनिसियुमुद्यत्सुधाकान्तनत्यू- ।
र्ज्जित-तेजो-लक्ष्मियिं तीव्रकरनेनिसियुं दृश्यरूपं कळा-सं- ।
भृत-भास्वद्-वृत्तदिन्दं विधुवेनिसियुमात्मीय-नित्योदयोत्सा-
रित-दोषाशेषनिन्तावनोळमसदृशं धीरविष्णु-क्षितीशम् ॥
अरिसेनाचक्रचक्रं पोरळे रिपुकुभृत्-पुङ्गव-भ्रान्ति तल्तोप्- ।
पिरे तन्नुग्रासियिन्दुच्चळिसि धरेगुरुळ् तप्प विद्विट्-सिरङ्गळ् ।
तरदिं कुम्भङ्गळं पोल्तेसेये नव-घटी-यन्त्रदिं विष्णु युद्धा-
जिर-वापी-वैरि-रक्ताम्बुवने निज-यशो-वह्निगेतुत्त्वविप्पम् ॥
मगु-मगुर्दु पोक्कु दुर्गम- । नगळगळ् दा-वार्धि-वरेगवदुं तिगटं ।
तगु-तगुळ् दु कोन्दनोवदे । वग-विरुदरनटसि **विष्णुवर्द्धन-देवं** ॥
हिमदिं सेतुवरं मत्- । ते मगुळ् दा-सेतुविं हिमं-वरेगं वि- ।
क्रम-केळियिं तोळर्त्तवं । स-मद-क्षत्रियरनिरिसि **विष्णु**नृपाळम् ॥

वस्ति समधिगत-पञ्चमहाशब्द- महामण्डलेश्वरं **द्वारावतीपुर**वराधीश्वरं यदुकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्व-चूडामणि । मलेयचक्रवर्त्ति । वर्म्मन-मूर्त्ति श्रीमत्काञ्चीपुर विक्रम-गंग **विष्णुवर्द्धन-होय्सळ-देवं गङ्गवाडि-तोम्भत्तरु-सासिरमुमनाळ्वरद्ययेयिं प्रतिपालिसि सुखं राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि । धरामरकुलतिलकं । जिनेन्द्रपूजाविधान-पात्रदान-प्रवर्द्धित-प्रमोद-पुळकम् । श्रीमद्**जितसेन-भट्टारक**-पदाम्भोज-चञ्चरीकं । परमतत्त्वप्रागल्भ्यप्रबळ-विवेकं श्रीमन्महाप्रभु-**पेर्म्माडि**यन्वय-प्रभावं एन्तेन्दडे ॥

नियत-स्याद्वादविद्याविभवभवनमागिर्प्प निर्द्धूत-दोष- ।
त्रयमप्युद्यत्तपोलद्दिमगे सले नेलेपागिर्प्प रूढाकलङ्का- ।
न्वयदोळ् भव्याळिगेल्लं मोदलेनिसि करं पेम्पुवेत्तत्तु पेर्म्मा- ।
डिय वंशं लोकवं कीर्त्तियोळु वेळगितत्तुज्ज्वळाचार-सारं ॥
अक्कर ॥ नय-विनयमननुकरिसुवननु- ।
नयदिं तेजोधिकनेने नेगर्द्द पेर्म्माडिय पेर्म्मगने **भी**- ।
मय्यनातन चित्त-प्रिये **देवलब्बे** पति-भ- ।
क्तियोळा-सीतेगमरुन्धतिगमेणेयेनिपळ् ॥
अवर्गे मगं समस्त-गुण-रत्न-सुधाम्बुधि **मसणि-सेट्टि** भू-
भुवन-विनूतनातननुजं नेगर्दं प्रभु **मारि-सेट्टि** बान्- ।
धव-जन-सर्व्व-भव्य-जन-कल्प-महीरुहना-महात्मनी- ।
तवद-विभूतियं पडेदुदर्हतेयं धरेयोळ् निरन्तरम् ॥
दोरसमुद्रद नडुविदु । मेरु-महीधरमेनल्के माडिसिदं श्री- ।
मारमनुत्तुङ्ग-जिना- । गारमनिंदु विश्वकर्म्म-निर्म्मितमेनिसल् ॥
आ-विभुविनणुग-दम्मं । **गोविन्दं** मन्दरावनीधर-धैर्य्यम् ।
श्री-वनिता-वल्लभना- । गोविन्दनवोल् महीमनःप्रियनादम् ॥
वसुधेगे कौस्तुभमेनली- । वसदियनी-**मुगुळि**यल्लि सद्भक्तियिनेत्- ।
तिसिदनेने मत्ते गोविन्द-सेट्टियं पोगलादप्पंरे बुध-निधियं ॥
भू-विदितने भीमय्य म-हा-विभवे पुत्रि **नागियक्क**नुमिवरी- ।
गोविन्दन जिन-गृहकति- । पावन-चरित्र् निरन्तरं पडि सलिपट् ॥

अवरग्र-तनूजमय-नय-शीलनप्रतिम-धर्म्म-सहा (नि) यक्कनरातिपूज्य-दुर्ज्जयनखिलेष्ट-शिष्ट-जन-रक्षण-दक्षनु·····सरं नेगळ्द महा-प्रभु वेडदे पुण्डा-**चिट्टि-सेट्टि**य गुण··· ···मं पोग [ळ] ला-चतुरास्यनु··· ··· ··· ···युतं मायोपायक्के पेसवतिधन्यं स्वस्ति य··· ··· ··सनेनल् **नाकि-सेट्टि**य··· ··· ··· ···सरा पेम्पुमं निर्मिच्चि गोत्र-पवित्रनाद गोविन्द··· ··· ··· ···**समन्तभद्र**स्वामिगळ ···· ··· ··· ··· वाचार्य्यरिं **कनकसेन-वादिराज**-देवरिं **धनपाळ** भट्टारकरिं

श्री··· ···**कसेन**-भट्टारकरिं **मलधारि**-स्वामि··· ··· ···त्रैविद्य-देवरिं श्री-**वासुपूज्य**-सिद्धान्त-देवरिं··· ···देवरिं वन्द द्रमिळ··· ··· ···विलयमो षट्-तर्कांब्धि-बहु-भङ्गी-संगत-**श्रीपाळ**-त्रैविद्य-गद्य-पद्य - वाचो-विन्यास - निसर्ग्ग-विजय-विलासन् ॥

सच्चरित्र-रवि·····विद्या-संशुद्ध-बुद्धये ।
विद्वज्जन-प्रपूज्याय **वासुपूज्याय** ते नमः ॥

इन्तु नेगल्तेवेत्त तन्न गुरु-कुलद पेम्पं नेगळि गोविन्द-सेट्टि माडिसिदनिन्ती-जिनालयम् ॥

मनु-चरितर् समस्त-भुवन-सावनीय-जिनेन्द्र-धर्म्म-वा-।
रिनिधि-सरोजिनी-प्रमद-राग-विवर्द्धन्य-राजहंसरु ।
णनुमनुदन्ननुं गुण-युतर्गुणवन्नन-मारिसात रा- ।
मनिम्मडियागियुं **भरतराज**-चमूपनुमेन्बुदी-जगम् ॥
भारतदोळ् कार्नानु- । दारतेयोळ् धर्म्म-नन्दनं सत्त्वदोळा- ।
चारदोळ् सिन्धु-नन्दन । ··· दडे **भरत-राज-दण्डाधीशन्** ॥

ई-**गोविन्द-जिनालय**क्के **प्रभव**-संवत्सरदुत्तरायण-संक्रान्ति व्यतीपातदन्दु··· रदलि... आगि श्री-**नारसिंह-होय्सळ देवं श्रीपाळ त्रैविद्य-देवर** शिष्य-रप्प **वासुपूज्य-सिद्धान्त-देवर** कालं कर्च्चि धारापूर्व्वकं श्रीमदग्रहारं **मुगुळि**-यलि बिट्ट वृत्तिय सीमा-सन्धि हिरियकेरेय केळगे गद्दे (आगेकी चार पंक्तियों में दान का विशेष वर्णन है) आ-वेदलेयोळगागि देवर सोडरिंगे गाण्दलर-वाने ण्येयूरेळगाव वण्डमारे वडदं गोण्डु विशद वण-सिद्धायतिक्षेत्रवल्लि··· ऐदु-पणर्व महावनं कोडुवरिन्तिनितुवं मूर्त्तिर्ब्बर्म्मह्मा जनंगळ्, धारापूर्व्वकं माडि कोट्टरु (आगेकी चार पंक्तियों में कुछ परिचित वाक्यावयव तथा श्लोक हैं) ई-धर्म्म-वनळिदतेळे [ते] य नरकं पुगुवं केरेय म··· ··· डिनेयं ता-कहिसिद केरेयल्लि [कण्डुग गद्दे]यं देवरिंगे बिट्टु ॥ अशेष-महाजनङ्गळ् मत्तद-केरेयल्लि कण्डुग गद्दे यं बिट्टव । वळदलु म-रूळ मट्टं ··· ··· ··· ···

[जिन-शासन की प्रशंसा । यह एलकोटि-जिनालय है । राजा विष्णुकी प्रशंसा,

जिसने हिमालयसे लगाकर सेतु तक और सेतुसे लगाकर हिमालय तक तमाम शत्रु राजाओं को नष्ट कर दिया।

जिस समय द्वारावतीपुरवराधीश्वर, मलेय-चक्रवर्ती विष्णुवर्द्धन होय्सल देव शान्ति से अपने राज्य का शासन कर रहे थे:—

उनके चरण-कमलसे आजीविका करनेवाला, (अन्य-अन्य विशेषणों के साथ) अजितसेन भट्टारक का शिष्य महाप्रभु पेर्म्माडि हुआ। उसकी सन्तति निम्न-लिखित थी:—

(अनेक प्रशंसाओं के बाद) पेर्म्माडि का ज्येष्ठ पुत्र भीमय्य था, उसकी पत्नी का नाम देवलव्वे था। उनके पुत्र मसणि-सेट्टि और मारि-सेट्टि थे। दोरसमुद्र के मध्यमें मारमने एक बहुत ऊँचा जिनालय बनवाया। उसका पुत्र गोविन्द था। उसने मुगुली में एक वसदि बनवायी, जिसके लिए भीमय्य और उसकी पुत्री नागियकने पूजा का सामान दिया। उसके दो पुत्र थे,—विट्टि-सेट्टि और नाकि-सेट्टि।

उसके गुरु वासुपूज्य की परम्परा समन्तभद्र स्वामी से लेकर कनकसेन, वादि-राज, धनपाल,·····कसेन, कलधारि,·····वासुपूज्य,·····और श्रीपाल से होकर आई थी। उनके पैरों का प्रक्षालन करके मुगुलि अग्रहार में **नारसिंह-होय्सल देव** ने गोविन्द जिनालय के लिये उक्त भूमिका दान दिया।]

[Ec, V, Hassn U., no 130.]

३२८

वस्ति;—कन्नड़-भग्न।

[वर्ष प्रभव या पार्थिव (?)]

[वस्ति (चिनकुरळी प्रदेश) में, जिन्नेदेवर वस्तिके सामने के मानस्तम्भ पर]

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल तळकाडु-गोण्ड कोङ्गु-नङ्गलि-गङ्गनाडि-·····डि-बनवासि-हानुङ्गलु-गोण्ड भुज-बल वीर-गङ्ग प्रताप-चक्रवर्त्ति··· श्री-

महाप्रधानी-दोरसमुद्रदल्लु सुखसङ्कथाविनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे ॥ श्रीमन्महाप्रधानं हेर्मडे शिव-राज ··· नम्मिर्द्दे सोमय्यनु श्रीमत्तु-माणिकद् ····· विनालयक्के पार्थिवसंवत्सरद आषाढ़-शुद्ध-पाडिनि-आदिवार ··· ··· अतिथियिय-राहार-दानक माणिक्यदोळ्ल माडि··· ··· ···चतुल्लीमेयलि गेदे गाचु कम्ब नाळु गाळ नूळु ····· तोरेन्नम होले-मग विनिद्दुनं धारा-पूर्वक-माडि कोट्टदत्ति

क्षहिगे विट्टी-वर्म··· । ··· करं सलिसुतिर्द्दवर्गं पुन्दं ।

····· अळिवर्गं । पडुवं ब्राह्मण कोन्द गति सनिसुगुन् ॥

श्रीमत्तु माणिक्यदोळ्ल मूलस्य चन्द्रकोजन सुपुत्रं परवादि-मल्लोजं····· शासनमं ··· ··· बाळिसुवुदु ॥ वीतराग नमोऽस्तु मङ्गलमहा श्री

[जिसमय, (अपने वैदिक पदों सहित), प्रताप-चक्रवर्ती (? नरसिंह-देव) अपने राज्यका सुख और सुदिनचाले शासन करते हुए राजधानी दोरसमुद्र में विद्यमान थे:—महाप्रधान हेर्मडे शिवराज ··· ··· सोमय्य ने माणिक्य-दोळ्लु विनालयको दान दिया।

चण्डकोजके, जो माणिक्यदोळ्लुका मुख्य आदमी था, के पुत्र परवादि मल्लोज इस शासनकी रक्षा करेगा। वीतराग को नमस्कार।]

[Ec, IV Krishnarajapet TI, no 36]

३२६

खजुराहो-संस्कृत

(विक्रम सं० १२०५, माघ वदी ५)

ॐ ॥ ग्रहपत्नये श्रेष्ठिपाणिधरस्तस्य सुत श्रेष्ठि ति-(त्रि) विक्रम तया आल्हण। लक्ष्मीधरं ॥ संवत् १२०५। माघ वदि ५ ॥

[यह लेख भी २ इञ्च लम्बी १ ही पंक्ति में है। इसके अक्षरोंका आकार करीब ½ इञ्चका है इसमें श्रेष्ठी (सेठ) पाणिधरके पुत्रोंका नाम दिया है। उनके नाम हैं—त्रिविक्रम, आल्हण और लक्ष्मीधर।]

El, I, no XIX no7 (P,153)

३३०

खजुराहो-संस्कृत

जैन मन्दिरोंकी प्रतिमाओं परसे **तीन** शिलालेख

[विना काल निर्देश का]

१ [अ] हपत्यन्वये श्रेष्ठि श्री**पाणिधर** [॥]

[यह अधूरा शिलालेख एक ही पंक्तिमें है, जो कि ५½ इञ्च लम्बी है। लगभग ½ इञ्च अक्षरोंका आकार है। ग्रहपति—अन्वय। जैसे इस शिलालेखमें है वैसे ही वह आगेके दो शिलालेखोंमें भी आया है।

[EI,I. P. 152.]

३३१

खजुराहो—संस्कृत

[संवत् १२०५=११४८ ई०]

[इस शिलालेख के लेखक का पता नहीं है। इतना ही मालूम है कि यह संवत् १२०५ का है।]

[A. Cunningham, Reports, XXI, P. 68, o, a.]

३३२

चित्तौड़ (राजपूताना);-संस्कृत-भग्न।

[सं० १२०७ = ११५० ई०]

पं० १. ओं ॥ नमः सर्व्व [ज्ञा] य ॥ नमो···[न] प्राच्चिदर्ण्व (र्ण्व) संकल्प-चन्मने। शर्व्वाय परमज्योति [र्द्व] त्संकल्पचन्मने ॥ चयतात्स मृडः श्रीनान् मृडा···[1]

२. दनाम्बु (म्बु) जे। यस्य कण्ठच्छवी रेजे से (शे) वालस्येव वल्लरी। यदीय-शिखरस्थितोल्लसदनल्पदिव्यध्वजं समण्डपमहो नृणामपि वि[दू]-

३. रतः पश्यतां अनेकभवसंचितं चयमियर्त्ति पापं द्रुतं स पातु पदपंकजानतहरिः **समिद्धेश्वरः** ॥ यत्रोल्लसत्यद्भुतकारिवाचः स्फुर [न्ति चि]-

४. त्ते विदुषां सदा तत्। **सारस्वतं ज्योति**रनन्तमन्तर्विस्फूर्ज्जतां मे चतनाव्य-वृत्ति। चयन्त्यदभ्र (भ्र) पीयूषबिन्दुनिष्यन्दिनोनज्ञाः। कवीनां [सम]

५. कीर्त्ती (र्त्ती) नां वाग्वल्लभा महोदयाः ॥ न वैरस्य स्थितिः श्रीमान् न चलानां समाश्रयः। रत्नराशिरपूर्व्वोस्ति चौलुक्यानामिहान्वयः ॥ तत्रो-

६. दपद्यत श्रीमान्भट्ट चस्तेचनां निधिः। **मूलराजा** (ज) महीनाथो मुक्ता-मणिरिवोल्व (ल्ब) णः ॥ वितन्वति भृशं यत्र क्षेम (मं) सर्व्वत्र सर्व्वथा। प्रजा राजन्वती नून (नं) द-

७. क्षेत्रौ चिरकालतः। तत्सान्वये महति भूपतिषु क्रमेण यातेषु भूरिषु सुपर्व्व-पतेर्न्निवासं। प्रोर्ज्जित्य वीभ्रवशसा ककुभां मुखानि श्री**सिद्धरा**-

८. जनृपतिः प्रथितो व (ब) भूव ॥ चयश्रिया समाश्लिष्टं यं विलोक्य समंततः। भ्रांत्वा दर्गति यत्कीर्त्तिव (र्व) ग्ना [हे] मरमंदिरम् ॥ तस्मिन्नमत्सामन्ता-

९. चां (च्यं) संप्राप्ते नियतेश्चसात्[2] **कुमारपालदेवो**भूत्प्रतापाक्रांतशात्रवः ॥ स्वतेजसा प्रसह्येन न परं येन शात्रवः। पदं भूभृच्छिरस्तुच्चैः कारि-

---

१. छूटे हुए अक्षर 'नीव' हैं।

२. 'तेर्व्वशात्' पढ़ो।

१०. तो वं (बं) धुरप्यलं ॥ आज्ञा यस्य महीनाथैश्चतुरम्बु (म्बु) धिमध्यगैः। श्रियते मूर्द्धभिर्न्नम्रे (म्रै) र्देवशेषेव सन्ततम् ॥ महीभृन्निकु (कुं) जेषु **शाकंभरो-**

११. शः प्रियापुच्चलोके न शाकंभरीशः। अपि प्रास्तशत्रुर्भयात्कंप्रभूतः स्थितौ यस्य मत्तेभवाजिप्रभूतः ॥ **सपादलक्ष**मामर्द्य नम्रांकृ-

१२. तभयानकः। [स्व] य [म] यान्महीनाथो ग्रामे **शालिपुरा**भिधे ॥ सन्निवेश्य सि (शि) विरं पृथु तत्र त्रासितासहनभूपतिचक्रम्। **चित्रकू-**

१३. **टगिरिपु** [ष्क] लशोभां द्रष्टुमार नृपतिः कुतुकेन ॥ यदुच्चसुरसद्माग्रेपरिष्यात्प्रपतन्सदा। रथं नयत्यलं मंदं मंदं भंगभयाद्रविः ॥ य-

१४. त्सौधशिखरारूढ़कामिनीमुखसन्निधौ। वर्त्तमानो निशानाथो लक्ष्यते लक्ष्मलेखया ॥ प्रफुल्त (ल्ल) राजीवमनोहराननां विवृत्तपाठीनविलोललोच-

१५. —।[1] ‿—त्त [भृङ्गावलिरोमराजयो रथांगवक्षोरुहमंडलश्रियः ॥ परिभ्रम्त्सारसहंसनिस्वनाः सविभ्रमा हारिमृणालबा (वा) हुकाः। वृ (वृ)-हन्नितंबा (वा) मलवारि—

१६. —‿—[2] मुदे सतां यत्र सदा सरोङ्गनाः ॥ स (सु) रभिकुसुमगंधाकृष्टमत्तालिमालाविहितमधुरावो यत्र चाधित्यकायां। स्खलिततरणिभानुः सल्ल—

१७. — —‿— —‿ ‿ मयिपति शश्वत्कामिनः कामिनीभिः ॥ शुभे यद्वने शाखिशाखांतराले प्रियाः क्रीडया सन्निलीना निकामं। घने [प]—

१८. ‿ — —‿— —‿—[णां] [न] नूगंधसक्तालयः सूव (च) यन्ति ॥ प्राप कदापि न या हृदये शं सानुनयं समया हृदयेशं। यद्वनमेत्य सु [सं १]—

---

१. यहांके त्रुटित अक्षर संभवतः 'नाः । प्रम' हैं।

२. यहांके त्रुटित अक्षर संभवतः 'राज्ञयो' हैं।

१९. ⏑ ⏑ — — ⏑ ⏑ — ⏑ ⏑ —[र] तरागं ॥ एवमादिगुणे
दुर्गे स्वर्गे वा भुवि [सं] स्थिते । राजा विष्णुः परप्रीत्या संचरन्निवलील—
२०. या ॥ ति.....[ता ?] श्चर्यसंकुलम् । ददर्शागाधगंभीरस्वच्छं स्वमिव
मानसम् ॥ निर्म्मलं सलिलं यत्र पि—
२१. हितं प [द्मि]— ⏑ — ।.....जे नीलाब्ज (ब्ज) राग [भू] श्रियम् ॥
विमुच्य व्योम पातालरसा यत्र त्रिमार्गगा । लोका—
२२. न् पु [नाति]... .....⏑ — ⏑ — ॥ [त] स्योत्तरतटेऽ द्राक्षीन्न-
म्रामरसमर्चितं । श्रीसमिद्धेश्वरं देवं प्रसिद्धं—
२३. जगती ⏑ — ॥.....⏑ — ⏑ ते । त्रैसंध्य [तू] र्यनादेन
कलि (लिं) निर्भेत्सयन्निव ॥ य [त्त ?] वत्याधिपत्येस्थान्पुरा भ—
२४. ट्टारिकोत्त [मा ।] ..[वी] नृपाभ्य [र्च्या ?]...⏑ — ⏑ — ॥
तस्याः शिष्याभवत्साध्वी सुव्रतवात भूषिता । गौरदेवीति वि [ख्या]...
[ता ?] कृतोद्यमा ॥ सु [मनो ?]—
२५. संसेव्या [मा ?]...त्रविनाशिनी । दुर्गा हि.....⏑ — ⏑ [ता] ॥
यत्तपः पावनं वीक्ष्य पवित्रीकृतमज्जनं । सस्मरुः पूर्व्वयमि...⏑ — ⏑ — ॥
शिवं प्रपूज्य त [त्प]—
२६. ...[म] गमत्प्रभुः । प्रणम्य [ताङ्घ्रौ ?] भक्त्या सि (शि) रसा
⏑ — ⏑ — ॥...[तस्यां] तः पूजार्थं हरपादयोः । कुमारपाल-
देवोदाद्ग्रामं श्री⏑ — ⏑ — ॥.....स्यां—
२७. टा दक्षिणपूर्व्वोत्तरपश्चिमतः सरःपाली भूणादित्य...राज...दीपार्थं द्वाण-
कमेकं सज्जनोप्यदात् दंडनाथ.....मेतद्दानम—
२८. श्री ज [य] कीर्ति शिष्येण दिगंव (ब) रगणेशिना । प्रशस्तिरीदृशी
चक्रे...श्र रामकीर्तिना ॥ संवत् १२०७ सूत्रधा.....[1]

१. इस पंक्तिके नीचे भी कुछ अक्षर खोदे गये थे; लेकिन प्रतिलिपिमें वे बिलकुल पढ़ने योग्य नहीं हैं।

[(२८ वीं पंक्ति में) लेखका काल सं० १२०७ दिया हुआ है, जो, विक्रम संवत् मान लेनेसे, ११४९-५० या ११५०-५१ ई० ठहरता है; और इसका उद्देश्य चालुक्य राजा कुमारपालकी चित्रकूट पर्वत, आधुनिक 'चित्तौड़गढ़', की यात्रा, तथा वहाँ उसके द्वारा उस समय पर्वत पर 'समिद्धेश्वर [शिव]' देवके मन्दिरके लिये किये गये कुछ दानोंका उल्लेख करना है।

"ॐ नमः सर्व्वज्ञाय" इन शब्दों के बाद, लेखमें पाँच श्लोक हैं। इनमेंसे शर्व, मृड, और समिद्धेश्वरके नामसे शिव परमात्माकी स्तुति करते हैं, जबकि अन्य दो सरस्वतीकी सहायताकी कामना, तथा कवियोंकी रचनाओंकी यशोगाथा गाते हैं। [पं० ५ में] लेखक चालुक्योंके वंशकी प्रशंसा करता है। उस अन्वय [वंश] में मूलराज राजा उत्पन्न हुआ था [पं० ६], और उसके तथा उसके बादके अन्य राजाओंके स्वर्गारोहणके बाद राजा सिद्धराज आये [पं० ७], जिनके उत्तराधिकारी कुमारपाल देव हुए [पं० ९]। जब इस राजाने शाकम्भरी (वर्त्तमान साँभर] के राजाको हरा दिया [पं० १०] और सपादलक्ष देशको मर्दन कर दिया [पं० ११], वह शालिपुर नामके स्थानमें गया (पं० १२), और वहाँ अपनी छावनी (Camp) डालकर वह चित्रकूट [चित्तौड़गढ़] पर्वतकी सुन्दरताको देखने आया; वहांके मन्दिरों, राज-प्रासादों, झीलों या तालाबों, ढाल और जंगलोंका वर्णन १३-१९ की पंक्तियोंमें है। कुमारपालने वहाँ जो कुछ देखा उससे उसका चित्त प्रसन्न हुआ, और उत्तर दिशाकी तरफ ढालपर बने हुए 'समिद्धेश्वर' देवके मन्दिरमें आकर [पं० २२] उसने शिव ईश्वर और उसकी पत्नीकी पूजाकी, और मन्दिरके लिये एक गाँव दानमें दिया जिसका नाम सुरक्षित न रह सका [पं० २६)। पं० २७ में अन्य दान [एक 'घाणक' या कोल्हू दिये जलानेके लिये, आदि] बनाये गये हैं; और पंक्ति २८ बताती है कि जयकीर्त्तिके शिष्य रामकीर्तिने जो दिगम्बर सम्प्रदाय के मुख्य थे, यह 'प्रशस्ति' लिखी है, और लेखके उपर्युक्त कालका निर्देश करती है।]

[EI, II, no xxxiii, Tl-421-424]

३३३

कैदाल;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १०७२–११५० ई०]

[कैदाळ (गूलूरु परगना) में, प्रसद्ध गङ्गाधर मन्दिर में पाषाणों पर]

(पहला पाषाण) ।

जयन्ति यत्पादनखेऽपि भारती-विमूतयस्तीर्थकृतोऽपि···।
शिवाय धात्रे सुगताय विष्णवे जिनाय तस्मै सकलात्मने नमः ॥
दिनकृत्-तेजक्के तेजं समतेसवदुद्वृत्त-कण्टीरवङ्गल् ।
एनसुं साहसयशर्पन्तमर-कुजके नाथनलं नोळम्बन्ता- ।
वन-वाहायेप-मीनार्जुन-नृग-नल-मृगालगेळ् पाटिवेन्दी- ।
वनमेल्लं कीर्तिसल् धात्रिगं पतियेसेद **नारसिंघ-जितीशम्** ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वर **द्वारावती-पुर-वराधीश्व** यदु-कुलान्वय-कुमुदि सम्यक्त्व-चूडामणि श्रीमत्-त्रिभुवन-मल्ल **तळकाडु कोङ्गु-वङ्गलि गङ्गवाडि-नोळम्बवाडि-बनवसे - हानुङ्गल्-हलसिगे - वेळवाल-बुचङ्गि**-गण्ड सुबट्ट-वीर-गङ्ग विष्णुवर्द्धन-श्री-**नारसिंघ-देवरु** दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपाळनं माडि **दोरसमुद्र** नेलवीडिनोळु सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं युच्चमिरे तत्पाद-पद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगत-पञ्च महा-शब्द महा-सामन्तं वीर-लक्ष्मी-कान्तं नान्दल-नाल्वर गण्ड **मान्यखेड-पुरवराधीश्वरं** चतुर्मुख दिग-गोन्दळं बडिवं तोडदर् डोङ्कि**पदळरादित्यं मरुगरे-नाडाळ्वं** सामन्त **ळ्ळि-चाचिगे** ।

जिन-पति कूटं वेळ्द सुख-सम्पदनं हरनोल्तु कीर्तियम् ।
कुलक-सरोद्रवं वर-चिरायुवमिन्दिनलि ईगळ्युतम् ।
मनमोसेदोप्पुतिर्मं शिरियं वर-दुर्व चयमिवृद्धियम् ।
मनसिज-रूप-वाचि निनगीगे शशाङ्क-कुलाद्रियुल्लिनम् ॥

सिंगद सौर्य्यवङ्गजन रूपु मुरारिय शक्तियागडुम् ।
पिङ्गदे कर्ण्णनीव-गुणविन्द्रन लीले भुजङ्ग-राजनोळ् ।
सङ्गळिसिर्द पेर्मे सुरशैलद बिण्पुवोषल्दु निन्दवी- ।
गङ्गन पुत्रनोळ् सुभट-वाचियोळ्जित-सव्यसाचियोळ् ॥
धरेपोळ् चागद पेम्पिनिं रवि-सुतं संग्रामदोळ् रामनिं ।
पिरियं सौचदोळज्जना-तनयनोळ् सादृश्यवे····· ।
निरुतं निर्मळ-धर्म्म-सूनुवेळे योळ् तानाद नाल्वत्त-ना- ।
ल्वर-गण्डङ्गिदिराम्य गण्डरोळरे विश्वम्भरा-भागदोळ् ॥
अदळ-कुळ-कमळ-हंसन- ।
नदळान्वय-राज्य-भवन-मणि-तोरणन- ।
प्पदळर रामं बात्रिय ।
विदिताम्नायमनलम्पिनिम् प्रकटिसुवे ॥
श्री-रमणी-प्रियं जगदोळ्जिंनत-तेजनपार-पौरुषम् ।
वीर-रस-प्रियं जसके नल्लनुदारनदेन्तु नोळ्पडम् ।
धारिणियल्लि ताने सुभटाग्रणि एम्बिनमोप्पिगोण्डदम् ।
वारिज-नाभनन्तदळ-वंश-कुळाम्बर-भानु बासयम् ॥
बासणिसि जगमणोळ्पम् । भासुरतरमेनिप कीर्ति-दुकुलदिनांत ।
सासिर्म्मडि भीमङ्गेने । बासेयनन्तेसेदनाबनुर्व्वी-तलदोळ् ॥
आतङ्गे तनयनादं । भूतलदोळ् राम भीमनिन्दर्जुननिम् ।
मातेनो सुभटनधिक-वि- । नूतं तां नेगर्दनेळगे गडुद-गङ्ग ।
ओवदिदिरान्त वैरियन् ।
आवगवान्तिरिदु गेल्दु जयदुन्नतियिम् ।
रावणनिं मिगिलेनिपम् ।
केवळमे जसदिनेसेद गडुद-गङ्ग ॥
अन्तेनिसि नेगर्द गङ्गन ।
सन्तति कलि-युग-धनञ्जयं कुल-तिलकम् ।

चिन्तामणि तानेनिपम् ।
भ्रान्तिल्लदे बेळ्र बनके **नायक-वसव** ॥
तत्-तनेयनान्त वैरिय ।
नेत्तरना-भूत-कोटिगेषदुत्सवदिम् ।
गुत्तनुमनिळिसिदं जयद् ।
उत्तरदिं सुत्ति हरिव **गङ्ग**ं धरेयोळ् ॥
मत्त-गज-वैरि निपं । वित्तरदिन्दान्त शत्रुगं रूपिनोळा- ।
चित्त नेळिपं गुण ।
दुत्तरदिं सुत्ति परिव गङ्गं जगदोळ् ॥
अवन मगनधिक-बलनी- ।
भुवनक्काश्चर्यवागे तन्नेय सौय्यंम् ।
नव-लंश्वर **वसवेयन्** । अवितथ-वाक्यक्के ताने मोदलेनिसिर्द ॥
असदलवेनिसिद कीर्त्ति- । प्रसरतेयं तळे दु खेचरङ्गेणेयादम् ।
वसु···पोगळल्के **नायक**- । **वसवं** त्रैलोक्य-वीर मपेयुगे काव ॥
कुलवे सेयलु बलवेसेयलु । चलवेसेयल् तेजवेसेयलुर्व्वी-तळदोळ् ।
कलि-वसवङ्गनुनयदिं । **चलवपिवं** तनेयनादनुत्सवदिन्दम् ॥
अट्टे कुणिदाडे रणदोळ् । निट्टुर-गति तोडर्दरङ्कुशं रण-धीरम् ।
क···ळहितरिगे भयं । बुदल् चलवधिवनिषिवनान्तरि-बलवम् ॥
सामन्तं चलवधिवङ्गा-मद-करि-गमन तनेयनादं मुदम् ।
भीम-भुज···अदळर । रामं श्री-गङ्गनमळ-लक्ष्मी-सङ्गम् ॥
भीमङ्गेणे भुज-बळदिं । रामङ्गेणे शौर्यदेळगेपिं रूपिनोळा- ।
कामङ्गेणेयेनलोप्पि···। ई-महियोळ् **गङ्ग**नमळ-लक्ष्मी-सङ्गं ॥
आतन पराक्रममदेन्तेन्दोडे ।
अदटर्प्पुण्डरि-नायकर्प्पुलबरन्दोन्दागि··· ।
मदर्दि निन्दोडवन्दिरं जवनवोळ् सामन्त-काळानलम् ।
मिदुळं नेत्तर घारे सूसे मरुळाद्र्य्यय्य जीयेम्बिनम् ।

कदनोद्योगदे गङ्गन···गेल्दनान्तारारि-सन्दोहमम् ॥
येडरिदरातियेम्बवन वंशमनुग्र-कुठारदिन्दवम् ।
कडिदु विरोधि-पर्व्वतमनागडे तन्न भुजा···वज्रदिम् ।
किडिसि जयाङ्गना-रमणनूर्जित-गङ्गनिळा-तळाग्रदोळ् ।
तोडर्दर-डोक्कियार्जिसिंदनुन्नतिसं शशि-सूर्यरुक्षिनम् ॥
एरेदङ्गा-सुर-धेनुवं भिगुवनान्तर्गाजियोळ् रोपदिम् ।
नरनिन्दं घन-शौर्य्यनङ्गभवनं रोडाडिपं रूपिनिम् ।
पिरिपाळ् शक्र-विळासदि···भळर···नोडे नाल्वत्त नाल्- ।
वर गण्डं कलि-गङ्गनार्ग्गवधिक सामन्त-कण्ठीरवम् ॥
आतन सति **वेनवाम्बिके** । सीतेगरुन्धतिगे रतिगे··· ।
ख्यातिगे गुणदुन्नतिगं । मातेम् तां पिरिपवल्ते धात्री-तळदोळ्
कन्तु-शर-श (स) दृश-रूपिं । चिन्तामणि विबुध-जनकव्···जनयं
भ्रान्तिल्लदेम्·····।···अमर्दुं नेगल्दं वेनकाम्बिकेयम् ।

आ—दम्पतिगळ्गे ।

हरिगं गोमिनि-कान्तेगं मनसिजं रुद्रङ्गे रुद्राणिगम् ।
परमोत्साहदे पण्मुखं जनि [यि] पन्ती-धीर-गङ्ग··· ।
···लक्ष्मीपतियप्प श्री-वेनविका- **मादेविगं** पुट्टिदम् ।
हर-पादाम्बुज-वृं (भृं) ग-**वाचय**····· ॥
अदळ-कुळमेम्ब कुलदोळग् । उदयसिदं दिनपनन्ते तेजोनिलयन्
कदन-घनञ्जयनहितर । मद-हरणं शूर-वचि तोडर्दर डोङ्के ॥
तोडर्दं विरोधिगन्तकनु वेडदवङ्के कल्प-भूरुहम् ।
तडेयदे बन्दु कण्ड शरणार्तिगे वज्रद कोटेयेम्बुदी- ।
पोडवि निरन्तरं जसके नल्लननम्बुजनाभनन्ननम् ।
तोडर्दर डोङ्केयं सुभट-वाचियनूर्जित-सव्यसाचियम् ।
अदळ-कुलाम्बर-धुमणि दायिगरन्···ले गेल्द लीलेयिन्द् ।
ओदविद मान्यखेड-पुरदीशनुदारनपार-पौरुषम् ।

कदन-धनञ्जय·····साहस-गङ्गनुर्व्विनयोळ् ।
मदनन रूपिनिन्देसेद वाचिये धन्यनदेन्तु नोळ्पडम् ॥
तोडर्दर गण्ड वैरिगळ गण्ड मदान्धर गण्ड वीरदिन्द् ।
एडर्वर गण्ड मेच्चदर गण्ड पिसुण्बर गण्डनेन्दुदम् ।
तोडेयद गण्डनाहवके सोलद गण्डनदेन्तु नोल्पडम् ।
तोडर्दर दोङ्के बाचि निनगार द्वारे गण्डरिवा-तळाग्रदोळ् ॥
वुरदोळ् श्री-वधु कौस्तुभम्बोलेसेवळ् वाग्-वाणि·····यिम् ।
परमानन्ददे वक्त्रदोळ् तिलकमं पाल्तिर्य्यळन्तोल्दु तोळ् ॥
वेरगिं वीरर वीर-लाक्ष्म नयदिं कूर्तिक्कुं नाल्वत्त-नाळ् ।
वर गण्डं कळि-बाचियोळ् सुबगनोळ् सामन्त-सङ्क्रन्दनोळ् ।
हरियं मार्कोळुगुं भयङ्गोळुविनं दिग्-दन्ति-दन्तङ्गळम् ।
पिरिदाश्चर्य्यदे कित्तुं तोर्क्कुवदिं दिक्पाळ-सन्दोहमम् ।
करेदिन्तिन्तिनिवेङ्ग तन्न वळिं नोळ्पाग नाल्वत्त-नाळ् ।
वर-गण्डं कळि बाचि-देवनधिकं सामन्त-सङ्क्रन्दनम् ॥
धरेयं वीद्द दिनेश-सूनु-सदृशं त्यागक्के शौर्य्यक्के तान् ।
अरविन्दोदरनल्ते पाट निज-रूपि···पुष्पायुधम् ।
दोरे तामादरेनल्के शौचदळं ताळिर्द्द नल्वत्त-नाळ् ।
वर गण्डं कलि-बाचि-देवनेसेदं सामन्त-सङ्क्रन्दनम् ॥
भरदिन्दान्त विरोधियं रण-मुख-व्यापारदोळ् तन्न दुर् ।
द्धर-बाहा-बळदिं पडल्बदिसेयुं भूताळियुं काळियुम् ।
नोरे-नेत्तर-ण्णोणनेम्बिवं नोणोयुतन्तेर्द्दोडे नाळ्वत्त-नाळ् ।
वर गण्डं कळि-बाचि-देव गेलुगुं सामन्त-सङ्क्रन्दनम् ॥
सुर-भूजावळि पण्तुदेन्दे नयदिं धात्री-तळक्केम्बिनम् ।
निरुतं दान-विनोदि कीर्त्ति-निळयं वैरीभ-पञ्चाननम् ।
स्मर-रूपं करेदीवनार्ग्गवधिकं तानाद नाल्वत्त-नाळ् ।
वर-गण्डं कल्ल्-चेचि-देवनधिकं सामन्त-सङ्क्रन्दनम् ॥

सामन्तं सुर-धेनुवित्तु तणिपळ् विश्वम्भरा-भागमम् ।
सामन्तं रिपु-सैन्यमं तरियला-प्रत्यक्ष-वीरार्ज्जुनम् ।
सामन्तं शरणेन्दवङ्गे दयेपिं गम्भीर-रत्नाकरम् ।
सामन्तं कलि-वाचियाग्गंवधिकं वैरीभ-पञ्चाननम् ॥
मरुगरे-नाडाळ्वं गुण- । देरेयं सामन्त-वाचियदळ्र रामम् ।
मरुगरे-नाडोळगे हे- । ररिकेय **कय्दाळ**दल्लि धर्म्मोन्नतियम् ॥
आ—कय्दाळद् विळासार्पदवदेन्तेन्दोडे ।
तुरुगिद मामरदिं वेळेद् । एरगिद सौगन्धि-शालियिं पू-गोळदिं ।
केरेयिं देवाळयदिं । नेरे सोगय्सि तोक्खुं लीलेयिं कय्दालम् ॥
विविधालङ्कृत-देव-सौध-तळदिं वेश्याङ्गना-वाटदिम् ।
कवि-राज-प्रवरर्क्कळिं सुळिव नाना-गेय-चातुर्य्यदिम् ।
नव-देशीय-विळासदि सुवगिनिं कय्दाळमोप्पिप्पुदा- ।
दिविजेन्द्रोन्नत-लोकमं नगुवन्तोल् तन्नुद्घ-सौन्दर्य्यदिम् ॥
धनदनुमनिळिप परदरि ।
मनुगळनिळिप मुनिगळिं वगेवागळ् ।
मनसिजननिलिप विटरिम् ।
वनितेयरिं नाडे सोगयिकुं **कय्दाळम्** ॥

(दूसरा पाषाण) ।

अन्तनेक-विळासक्कावासमुं सकल-लक्ष्मी-निवासमुमेनिसि सोगायिसुव कय्दाळदोळ् ।

कन्द ॥ उद्धरिसि जैन-भवनमन् । उद्धरिसि सि(शि)वालयङ्गळं मुददिन्दन्त् ।
उद्धरिसि विष्णु-गेहमन् । उद्धरिसिदनल्ते वाचि जसदुन्नतियम् ॥
सोगयिप कामधेनु जिन-शासन-लक्ष्मिगे कल्प भूरुहम् ।
मृगधर-भूषणागम-तपस्विगे सिध-रस-प्रवाहमेम् ।
नेगेदुदु बुद्ध-कोटिगेने चिन्तिसदीव महांशु-रत्नवा- ।

नगधरनागमशरिगमेन्दोडे बाचियिदेम् कृतार्त्थनो ॥
घरेगेसेव नाल्कु-समेपद । सिरि कल्यावनिरुहं बुध-ज्ञनकेम् ।
दोरेवेत्त पेण्पिनिन्दं । पिरियं धर्म्मावतार गङ्गन पुत्रम् ॥
श्री-लीलायतनक्के ताने नेलेयाय्तेम्बोन्दु संसेव्यदिम् ।
नीलग्रीव-पदाब्ज-भृङ्गनधिकं श्री-**बाचि-देवं** यश- ।
लोलं वीर-गुणाम्बुराशि मुददि कय्दाळदोळ चेल्विनिम् ।
कैलासक्केणेयागि माडिसिदनी **गङ्गेश्वरावासमम्** ॥
श्री-**नारायण-गृहमं** । श्री-नारी-रमणनदळ-वंश-कुलाम्बर- ।
भानुवेनिसिर्द्द बाचिय- । नूनं माडिसिदनलुते तोडर्दर डोङ्कि ॥
चलवरिवेश्वरमं गुण- । जलधि जय-श्रीगधिपं बुध-जनकं तां ।
बलियेनिप **बाचि-देवं** । कुल-नगमं मिगुव पेम्पिनिं माडिसिदम् ॥
श्री-महिमं गुण-निळयं । भीम-पराक्रमनु **बाचि-देवं** मुददिम् ।
रामेश्वर-सदनमना- । हेमाद्रिगे मिगिलिदेम्बिनं माडळ्सिदम् ॥
भारतदोळादुदीग सुरशैळविदेम्ब मनोनुरागदिम् ।
घरे पोगळ्वन्तु सन्दळ-वंश-शिखामणि **बाचि-देव** ताम् ।
वर-**जिन-मन्दिर**ङ्गळने माडिसि लोकदोळोल्दु कीर्तिगा- ।
म(भा)रतनो गुत्तनो शिवियो खेचरनो बलि चारुदत्तनो ॥
रामन बाणदिन्दे लघुवादुदु नोर्प्पड मत्त-वानरर् ।
प्रेमदे पर्व्वत-प्रततियिदमे कट्टिद सिन्धु तन्ननी- ।
भीम-पराक्रम मुडदे कट्टिसिदोळ्पन पेम्पिनिन्दे ताम् ।
भीम समुद्रवेळिपु [दु] वार्धिय गुण्पिन पण्पिनेल्गेयम् ॥
उदधिय गुण्पगस्त्य-मुनि-पुङ्गवनिन्दमे निन्दुदागियुम् ।
मदनहर-प्रताप रघु-रामन रामन बाण-घातदिन्द् ॥
उरिदुददेवुदेन्दु सुभटाग्रणि बाय पेण्पिनन्ददिन्द् ।
अदळसमुद्रवेळिपुदु तन्न महत्वदिनम्बुराशिय ॥
दिर्व्वूरं वेप्राळिगे । सर्व्वज्ञ-पदारविन्दनदळर रामम् ।

दोर्-बळ-विभासि वाचम् । सर्व्वाबाधं परिहारवेनिसिये कोट्ट ॥

इन्तु चतुस्-समय-धर्म्मोद्धार-धौरेयं श्रीमन्-महा-सामन्त-गूलि-**वाचि-देवन**नेक-देवालय-वसदि-विष्णु-गृहङ्गळं माडिसियुं महा-तटाकङ्गळं कट्टिसियुं **स [श] क-वर्ष १०७२ डेनेय प्रमोद-संवत्सरद फाल्गुन-मासदमास्ये-यादिवार-सूर्यग्रहण-व्यतीपातदन्दु** तम्मप्प **सामन्त-गंगैयंगे** परोक्ष-विनेयवागि श्री**गङ्गेश्वर-देव**...यन पेसरलु देगुल माडिसि देवर प्रतिष्ठे माडिया-गङ्गेश्वर-देवरङ्ग-भोगक्कमष्ट-विधार्च्चने-तपोधनराहार-दानक्कं देगुलद खण्ड-स्फुट-जीर्णोद्धारक्कं **हिरिय-केरेय** केळगे बिट्ट गद्दे सलगे ३ मानियलु बिट्ट गद्दे सलगे ३ वेद्दले सलगे १ मन्नवायङ्के दिर्व्वूरं परोक्ष-विनेयवागि स-ब्राह्मणरिगे सर्व्वाबाधा-परिहारवागि धारा-पूर्व्वकं माडि भूमि-दानवं कोट्टं मत्तं श्री-केशव-देव-रङ्ग-भोगकमष्ट-विधार्च्चनेगं ब्राह्मणराहार-दानकं देगुलद खण्ड-स्फुट-जीर्णोद्धारकं दिर्व्वूर केरेय केळगे किट्ट गद्दे सलगे १० आगद्दैय बळिय तोण्ट वेद्दलेयुद्दं सलु-वुद्दु मत्तं तम्म मुत्तय्यं सामन्तं चलवरिवङ्के परोक्ष-विनेयवागि कित्तगळियलु चलवरेश्वरमेन्दाय(त)न पेसरलु देगुलवं माडिसि आ-चलवरेश्वर-देवरङ्ग-भोगक्कं अष्टविधार्च्चनेगं तपोधनराहार-दानक्कं देगुलद खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारक्कमा-कित्तगळिय केरय केळगे बिट्ट गद्दे सलगे ३ वेद्दले सलगे १ मत्तं तन्न मगळ **कुमारि चेन्नवे-नायकितिगे** परोक्ष-विनेयवागि श्री-**रामेश्वर देवर** देवालयमं माडिसि आ-देवरङ्ग-भोगक्कमष्ट-विधार्च्चनेगं तपोधनराहार दानक्कं देगुलद खण्ड-स्फुट-जीर्णोद्धारक्कं हिरिय-केरेय केळगेयुम् गद्दे सलगे ३ मानियलु गद्दे सलगे ३ वेद्दले सलगे १ मत्तं **रामेश्वर-देवर** नन्दा-दिविगेगे सर्व्व-बाधा-परिहारवागि बिट्ट येत्तु-गाण १ मत्तं सामन्त-**वाचि-देवन** मनस्-सरोवरालंकार राजहंसिनि ॥

कन्द ॥ भूमिगे सरि पेम्पिन्दं । कामाङ्गनेगधिकवेसेव शौचोन्नतियिम् ।
भीमले एन्दतिमुददिन्द् । ई-महि वण्णिपुदु **वाचि-देवन** सतियं ॥
जिन-पतिदेय्य तन्दे कलि योद्दे रे-नाकनोल्पनान्त तज्-।
जननि विनूते चिम्बले महासति गूळिय-**वाचि-देव** सज्-।

चन-नुत वीर तन्न पतियन्दोडे पोल्वबरार् धरित्रियोळ् ।
वनितेय·····भीमलेयोळ्दित-पुण्य-गुणाभिरामेयोळ् ॥
रतिगं गोमिनिगं पा-। र्वतिगं मिगिलु सुवर्गिनिं सम्बदिं तान् ।
अतिशय-रूपोन्नतियिं । क्षितियोळे ले वाचियरसि भीमले-नारि ॥

इन्तु नेगर्द्द महा-सौभाग्य-शील-सौन्दर्य्य-सम्पन्नेयप्पं परिवार-सुरभि **भीमवे**-नाय-क्षितियर्गे परोक्ष-विनेयवागि श्रीमन्महा-सामन्त-**वाचि-देवं भीम-जिनालय**मेन्दु वसदियं माडिसियुं **भीमसमुद्र**मेन्दु कल्ले-गेरेयं कट्टिसियुमा-केरेय केळगे भीम-जिनालयद श्री-**चन्न-पार्श्व-देव**रङ्ग-भोगक्कमष्ट-विधानार्च्चनेगं ऋषियराहार-दानक्कं वसदिय खण्ड-स्फुट-जीर्णोद्धारक्कं कोट्टु बिट्ट गद्दे सलगे ८ मत्तमा-भीमसमुद्रद होल-दल्लु वेद्दले सलगे २ मत्तं सम्यक्त्व-चूडामणियेनिसिद **सेनवोव-मारमय्य्** सामन्त-गूलि-**वाचिदेव**न कैय्यलु भूमियं पडेदु **मुदुगेरे**-गळद बागिनोळ् **मारसमुद्र**मेन्दु कल्ले-गेरेयं कट्टिसि आ-केरेय भीम-जिनालयद श्री चन्न-पार्श्व-देवरङ्ग-भोगक्कमष्ट-विधार्च्चनेगं ऋषियराहार-दानक्कं वसदिय खण्ड स्फुट-जीर्णोद्धारक्कं कोट्टु बिट्टिन्तिं-मारसमुद्रमादियागि समस्त देवालय-विष्णु-गृह-वसदिगे बिट्ट-भूमियं कुरुक्षेत्र **वाणरा(रणा)सि-प्रयागे**-अर्घ्यतीर्थमेन्दु प्रतिपालिसुवुदु ॥

मत्त ॥ परमानन्ददे **वाचि-देव**नभयं दिर्व्वूलै-गण्डुगम् ।
दोरेवेत्तगद गद्दे-वेद्दलयनन्ता-तोष्ट-सद्-गेहमं ।
स्थिर-तेजं कुडलिन्तुदात्त-पडेदं चातुर्य्य-चन्द्रेश्वरम् ।
वर-विद्या-निधि **वाचि-राज**विबुधं चन्द्रार्करुळ्ळनेगम् ॥
सुरगिग्गिमुळ्ळनं चलदिमुळ्ळन तारनगेन्द्रबुळ्ळनम् ।
सुरनदिमुळ्ळनं शिरियुमुळ्ळनवगद सूर्यरुळ्ळनम् ।
सुर-सभेमुळ्ळनं वरदे भारतियु·····तारमुळ्ळनम् ।
धरे शशिमुळ्ळनं निळुके गूलिय-वाचिय धर्म्म-शासनम् ॥

(यही अन्तिम श्लोक)।

इस समय, द्वारावतीपुरवराधीश्वर, यदुकुलाम्बरद्युमणि, तलकाडु कोङ्गु नङ्गलि गङ्गवाडि नोलम्बवाडि बनवसे हानुङ्गल् हलसिने वेल्वोळ और उच्चंगि

पर कब्जा करने वाले भुजबल-वीर-गङ्ग विणुवर्द्धन नारसिंघ-देव, शान्ति से राज्य करते हुए, दोरसमुद्र के निवासस्थल पर थे:—

तत्पादपद्मोपजीवी मान्यरवेडपुरवराधीश्वर, अदल लोगोंके लिये सूर्य, मरुगरे-नाड्का अधिपति सामन्त गूळि-वाचि था। उसकी प्रशंसायें, गङ्ग-पुत्रके रूप में उसका वर्णन। उसका पुत्र गुड्डद गङ्ग था। उसके कुलमें नायक वसव हुआ। उसका पुत्र गङ्ग था, जिसने गुत्तको हराया था। उसका पुत्र वसवेय था। उसका पुत्र चलवरिव था। उसका पुत्र गङ्ग था, जिसकी स्त्री वेनवाम्बिके थी, और उनका पुत्र मान्यरवेड-पुरका अधीश वाचय या वाचि था उसकी विस्तार-पूर्वक प्रशंसा।

मरुगरे-नाड्का अधीश, अदल-राम, सामन्त-वाचि मरुगरे-नाड् के कयूदाल (कैदाल) में अतीव उच्च धर्मका पालन कर रहा था। कयूदाळकी शोभा का वर्णन। वहाँ उसने जिन मन्दिर, शिव मन्दिर और विष्णु मन्दिर सभी को सहारा दिया। और वहाँ उसने यह गङ्गेश्वर मन्दिर, एक नारायण मन्दिर, एक चलवरिवेश्वर मन्दिर, एक रामेश्वर मन्दिर, और जिन मन्दिर बनवाये। तथा उसने भीमसमुद्र और अडळ समुद्र नाम के तालाब बनवाये। तथा दिर्व्वर ब्राह्मणोंको दिया।

इस प्रकार चार मतोंके धर्मको बढ़ाते हुए, सामन्त गूळि-वाचि-देवने, बहुत-से मन्दिर, वसदि, और विष्णु-मन्दिर, तथा बड़े-बड़े तालाब बनवा कर,—(उक्त मितिको), सूर्य-ग्रहणके समय, अपने पिता सामन्त गङ्गैयकी मृत्युके स्मारकमें, उनके नामसे एक मन्दिर बनवाकर उसमें गङ्गेश्वर-देवको स्थापना की, और मन्दिरकी मरम्मत, पूजा-विधि, तथा मुनियोंके आहारके लिये (उक्त) हिरिय-केरेकी ज़मीन दी।

इस तरह केशव-देव, चलवरिवेश्वर-देव, रामेश्वर-देवके लिये भी भूमियाँ प्रदान कीं। तथा अपनी पत्नी **भीमले**के नामपर,—जिसका देव जिनपति थां, पिता याद्धरे-नाक और माता चिम्बले थीं,—भीम जिनालय नामकी वसदि बन-

वायी, भीम समुद्र नामका पवित्र (Virgin) तालाब बनवाया और उस तालाबकी सारी जमीन चन्न-पारित्य देवके लिये प्रदान कर दी।

तथा सेनबोव मारमय्यने, सामन्त गूळि-वाचि-देवसे भूमि प्राप्त करके, मार-समुद्र नामका पवित्र तालाब बनवाकर भीम जिनालयके पार्श्व-देवके नाम कर दिया।

इन विभिन्न दानोंको जाणा(राण)श्री, प्रयाग इत्यादि पवित्र तीर्थोंके समान समझा जाय। ये सब दान विद्या-निधि मा (वा) चि-रवके अधीन किये गये थे। शासन हमेशा कायम रहे, इसकी कामना।]

[Ec, XII. Tumkur Tl., No. 9.]

३३४

वामणी;—संस्कृत और कन्नड़।

[शक १०७३—११५० ई०]

१. स्वस्ति ॥ चतुरमळ-नानार्थ-प्रतिपत्ति-प्रदर्शकम्। अर्हतः पुर [,] दे [व]-
२. स्य शासनं मोद-शासनम् ॥ श्री-शीलहार-वंशे जतिगो नाम [क्षि]-
३. तीशस्समजातस्तत्पुत्रौ गोङ्कल गूवलौ। तत्र गोङ्कलस्य प [नु]-
४. र्मारसिंहदेवस्तदपत्यं गण्डरादित्यदेव तस्य नन्दनः। समधिग-
५. तपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वरः। नगर-पुर-
६. वराधीश्वरः। श्री शीलहार-वंश-स (न) न्द्रः। जीमूतवाहनान्वय-
७. प्रसूतः। सुवर्ण-गरुड़-ध्वजः। मरुवक्र-सर्पः। अपनसिंघ-
८. नः। रिपु-मण्डलिक-भैरवः। विद्विष्ट- [ग] ज-कण्ठीरवः। इडुवरादित्यः।
९. कलियुग-विक्रमादित्यः। रूप-नारायणः। गिरि-दुर्ग-लंघनः। श-
१०. निवार-सिद्धिः। श्री-महालक्ष्मी-लब्ध-वरप्रसाद इत्यादि-नामावलि-विराजमानः।
११. श्रीमद्-विजयादित्यदेवः। वळवाड-स्थिर-शिविर सुख-संकथा-वि-
१२. नोदेन विजय-राज्यं कुर्वन्। शक-वर्षेषु त्रिसप्तत्युत्तरसह-

१३. स्व-प्रमितेष्वतीतेषु अङ्कतोऽपि १०७३ प्रवर्त्तमान-प्रमोद-संव-[त्स]-
१४. र भाद्रपद-पूर्णमासी-शुक्रवारे सोमग्रहण-पर्व्व-निमित्तं-
१५. णवु [क] गेगोल्लानुगत-मडलूर-ग्रामे सणगमय्य-चं [ध]-
१६. व्वयोः पुत्रेण । पुन्नकव्वायाः पत्या जेन्तगावुण्ड-हेम्म-
१७. गावुण्डयोः पित्रा चोधोरे-कामगावुण्डेन कारितायाः ।
१८. श्री पार्श्वनाथवसतेर्देवानामष्टवि [ध] ार्च्चन-निमित्तं । वसतेः ख-
१९. ण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारार्त्थं । तत्रस्थित-यतीनामहा-
२०. र-दानार्त्थं च तस्मिन्नेवग्रामे कुण्डिदेश-दण्डेन निव-
२१. र्त्तन-चतुर्थ-भाग-प्रमित-क्षेत्रम् । तेनैव दण्डेन त्रिं-
२२. शत्स्तम्भ-प्रमाण पुष्पवाटीं । द्वादशहस्तप्रमाण-
२३. गृह-निवेशनं च स राजा निज-मातुल-लक्ष्मण-सामन्त-विज्ञा-
२४. पनेन तस्यैव गोत्रदानार्त्थं श्रा-मूलसंघ-देशीयग-
२५. ण-पुस्तकगच्छ-चुल्लकपुर-श्रा-रूपनारायण-चैत्याल[य]-
२६. स्याचार्य्यः ॥ श्रा-माघनन्दिसिद्धान्तदेवो विश्व-मही-
२७. स्तुतः । कुलचन्द्रमुनेः शिष्यः कुन्दकुन्दान्वयां—
२८. शुमान् ॥ आप च ॥ रोदो-मण्डलमङ्ग कि स्व-त्रपुषा
२९. व्याप्नोति शक्रद्विपः किं क्षाराम्बुधिरावृणोति भुवनं गङ्गाम्बु
३०. किं वेष्टते । स्थानाऽय प्रिय-सुस्थरः समरुचत् किं सान्द्र-चन्द्रात-
३१. पो यत्कीर्त्येत्थमनूद्वतक्कणमसौ श्रा-माघनन्दी जयत् ॥त-
३२. न्मुनीन्द्रस्यान्तेवासिनामहंनन्दि सिद्धान्तदेवानां यादौ
३३. प्रक्षाल्य धारा-पूर्व्वकं सर्व्व-नमस्यं सर्व्व-बाधा-परिहारमाच-
३४. न्द्रार्क्कतारं स-शा [स] नं दत्तवान् ।@॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो
हरेत वसु-
३५. न्धरां । षष्टि वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥ न विषं विषमि-
३६. त्याहुर्वर्द्धस्वं विषमुच्यते । विषमेकाकिनं हन्ति देनस्वं पु-

३७. त्र-पौत्रकम् । अपि च ॥ सवत्सां कपिलां शस्त्र्या हत्वास्या
३८. मांस-शोणिते । गङ्गायां सोऽत्ति यो गृण्हात्यमुं धर्म्मोद्धरां
३९. नरः ॥ तत्पातकफलेनासौ यावच्चन्द्रदिवाकरं । तावद्घोरतरं दुःख-
४०. मश्नुते नरकावनौ ॥ अन्यच्च ॥@॥ मातुस्साद्र्द-कपालेन सोऽत्ति मा-
४१. तम-वेश्वङ्गु [।] श्व-मांसं भिक्षया लब्धं गये (१) यो धर्म्ममूहरः ॥@॥
४२. भद्रमस्तु जिनशासनाय ॥ सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे । अन्य-
४३. वादि-मदहस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटते पटीयसे ॥@॥ अक्कसाले वं-
४४. म्योजन पुत्र । अभिनन्ददेवर गुड्ड गोव्योजन खड्गरगे ॥@@@॥

सारांश

[यह शिलालेख एक पत्थर पर उत्कीर्ण है। यह पत्थर **वामणी** गांवके जैनमन्दिरके दरवाजे पर अवस्थित है। वामणी गाँव **कामल** शहरसे दक्षिण-पश्चिम ५ मील पर है। कामल कोल्हापुर रियासतका एक मुख्य शहर है।

इस शिलालेखमें **शीलहार** वंशके **महामण्डलेश्वर विजयदित्यदेव** के एक दूसरे दानका उल्लेख है। २-१० की पंक्तियोंमें दाताकी वही वंशावली और वर्णन है जो नं० ३२० के कोल्हापुरके शिलालेखमें है, सिर्फ इसमें दूरके अपने ६ सम्बन्धियों (कीर्तिराज, चन्द्रादित्य, गूवल द्वितीय, गङ्गदेव, वल्लालदेव और भोजदेव) तथा नौ अपने कम महत्त्वके विरुदों (पदों) को छोड़ दिया है। पंक्ति ११-३४ में उल्लेख है कि अपने निवासस्थान **वळवाड** में रहकर ही शासन करनेवाले **विजयादित्य देव** ने अपने मामा सामन्त लक्ष्मणके कहनेसे तथा अपने गोत्रदानके लिये, **जब कि प्रमोद वर्ष चालू था, अर्थात् १०७३ शक वर्षके व्यतीत होने पर, भाद्रपद महीनेकी पूर्णिमा तिथिके शुक्रवारको चन्द्रग्रहणके निमित्तसे—एक भूमिका दान किया।** यह भूमि कुण्डिके नापसे नापमें चौथाई निवर्तन थी। साथमें तीस स्तम्भ (खम्भे) प्रमाण पुष्पवाटिका, १२ हाथका एक मकान भी थे। यह सब भूमि वगैरः···णवु [क] गेगोल्ल जिलेके **मडलूर** गाँवकी थी। इस दानका प्रयोजन यह था कि

इससे **चौधरे कामगाकुण्ड**के बनवाये हुए उसी गांवके मन्दिर की पार्श्वनाथ भगवानकी अष्टविध पूजन होती रहे, जो कुछ मन्दिरके मकानका बिगाड़ हो वह सुधरता रहे तथा वहां रहनेवाले मुनिजनोंके लिये उससे उनके उपहारका प्रबन्ध होता रहे। यह दान शिलालेख नं० ३२० में वर्णित श्री माधनन्दि सिद्धान्तदेव के ही एक और शिष्य श्री अर्हनन्दि सिद्धान्तदेवके पैरोंका प्रक्षालन करके किया गया था। इस शिलालेखमें, नं० ३२० के कोल्हापुर वाले शिलालेखमें न मिलनेवाली एक नई बात श्री माधनन्दिसिद्धांतदेव के विषयमें यह है कि उन्हें यहाँ **कुल चन्द्रमुनिका शिष्य** तथा **'कुन्दकुन्दके अन्वय का एक सूर्य'** बतलाया है। अन्तमें पंक्ति ४३-४४ में पुरानी कन्नड़में यह बताया है कि इस लेखको सुनार बम्योजके पुत्र तथा अभिनन्दनदेवके शिष्य **गोळोज**ने खोदा था।]

[EI, III, No. 28, T. R. A.]

३३५

कोन्नूर;-संस्कृत।

—[बिना काल-निर्देशका, पर १२ वीं शताब्दिका मध्य (कीलहार्न)।]—

५९. मिथ्याभाव-भवातिदर्प्प-पर-तद्दुश्शासनोच्छेदकम् प्राज्ञाज्ञा-वशवर्त्तमा-
६०. न-जनता-सत्सौख्यसम्पादकम् [।] नानारूप-विशिष्ट-वस्तु-परम-स्याद्वाद-लक्ष्मी-पदम् जेजीयाज्जिन-राजशासनमिदं स्वाचार-सार-प्रदम् ॥ [४४]
६१. सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-तारकपतिस्तर्काम्बुजाहर्प्पतिः शब्दो-द्यानवनामृतैक-सरणि-र्य्योगीन्द्र-चूडामणिः [।] त्रैविद्यापर-सार्थ-
६२. नाम-विभवः प्रोद्भूत-चेतोभवः[1] जीयादन्यमता-वनीभृदशनिः श्री-मेघचन्द्रो मुनिः ॥ [४५] इदे हंसी-वृंद-मीम्टल्बगेदपुदु
६३. चकोरी-चयम् चञ्चुविन्दं कर्दुकल्सादर्प्पुदीशं जडेयो-ळिरिसलेन्दिर्द्दपं सेज्जेयो-ल्पदेदप्पं कृष्णनेम्बन्तेसेदु बिस-लतत्-कन्दली-कं-

१. 'भवो' पढ़ो।

६४. द्-कान्तम् पुदित्तौ **मेघचन्द्र**-त्र (त्र) तितिळक-चगद्वर्त्ति-कीर्त्ति प्रकाशम् ॥
[४६] वैदग्ध्य-श्री-वधूटे-पतिरखिळ-गुणालंकृतिर्म्मेघचं-

६५. द्र-त्रै**विद्य**स्याभवातो मदन-महिभृतो भेदने वज्रपातः [।] सैद्धांताव्यू-
(व्यू) ह-चूडामणिरनुपळ (म)-चिन्तामणि-

६६. र्म्मू (र्म्मू) वनानाम् योऽभूत् सौजन्य-रुन्द्र-श्रियमवति महौ **वीरनन्दी**
मुनींद्रः ॥ [४७] यश्शब्दज्ञ-नमस्यलो-दिनमणिः काव्यज्ञ-चूडाम-

६७. णिर्य्यस्तर्क्कर्स्थिति-कौमुदी-हिमकरस्तूर्य्यत्रयाब्जाकरः [।] यत्सिद्धान्त-विचार-
सार-विभगो रत्न-त्रयी-भूषणः स्ये-

६८. यादुद्धत-वादि-भूभृदशनिः श्री-**वीरनन्दि**-मुनिः ॥ [४८] यन्मूर्त्तिर्ज्जगतां
वनस्य नयने कर्प्पूरपूरायते यद्वृत्तिर्व्विदुषां त-

६९. तेश्चरगयोर्म्मणिक्यभृगायते [।] यत्कीर्त्तिः कक्षुभां श्रियः कचमरे नल्लील-
तांतायते जेत्तीयाद् भुवि **वीरनन्दि**-मुनिपस्ते-

७०. द्धांत-चक्राधिपः ॥ [४९] * श्री-**कोण्डकुन्द्रान्वयान्वरे**-द्युमणि विद्वज्जन-
शिरोमणि समस्तानवद्य-विद्याविलासिनी-विलास-मूर्त्ति श्री-**वीरनन्दि**-सै [द्धा]-

७१. न्तिक-चक्रवर्त्तिळु श्रीमन्-महास्थानं **कोळनूर** महाप्रभु-हुलियमरसनुं मूरु-
पुर-पञ्च-मठ-स्थानङ्गळु ताम्र-शासन [मं]

७२. नोडि वरेयिसिमेनल्का शासनदोळेन्तिद्दुदन्ती शिलाशासनमं वरेयि [स्]
दर्व [॥] मङ्गळ महा-श्री श्री श्री नमो[1] ..... [॥]

[इस लेखमें (जो मूल लेख की पं० ५६-७२ तकमें है), जैनधर्म तथा मेघचन्द्र-त्रैविद्य और उनके पुत्र वीरनन्दी इन दो मुनियोंकी प्रशंसाके बाद, बताया गया है कि कोळनूरके 'महाप्रभु' हुलियमरस तथा और लोगोंकी प्रार्थनापर वीरनन्दीने एक ताम्र-शासनको फिरसे यहाँपर शिला-शासनके रूपमें लिखवाया। इस ताम्र-शासनको इन लोगोंने स्वयं उनके पास देखा था।

१. यहाँपर कुछ अक्षर (कमसे-कम छः) घिस गये हैं।

श्रवण-बेल्गोलके एक शिलालेखसे हम जानते हैं कि माधवचन्द्र-त्रैविद्यका स्वर्गारोहण बृहस्पतिवार, २ दिसम्बर १११५ ई० को हुआ था; और श्री पाठकके[1] द्वारा प्रकाशित एक सूचनाके अनुसार, वीरनन्दीने अपने 'आचारसार' ग्रंथकी समाप्ति उस तिथिको की है जिसे एफ़ कीलहॉर्नने यूरोपियन कलैण्डर के अनुसार सोमवार, २५ मई ११५३ ई० नियत की है। उपर्युक्त लेखके कथनानुसार इस लेखके पूर्वभाग (पंक्ति १-५६) की जब नकल की गई थी और जब यह शिलालेख उत्कीर्ण किया गया था वह काल, उक्त दोनों मुनियोंके काल निर्णयके प्रकाश में, करीब-करीब **१२ वीं शताब्दिका मध्य** ठहरता है।

[EI, VI, no 4 (II part; line 59-72).] T L Tr.

३३६

लण्डन (हॉर्निमन म्यूज़ियम) संस्कृत।

सं० १२०८ = ११५२ ई०

[जिन मिस्टर हॉर्निमन (Mr. Horniman) के म्यूज़ियम में यह मूर्ति-लेख मिला है उसकी मूर्ति उन्होंने म्यूज़ियम के क्यूरेटर (Curator) मि० क्विक (Mr. Quick) के कथनानुसार, सन् १८६५ में लण्डन में ख़रीदी थी।—Rh. D.]

मूर्ति जैनोंके बयालीसवें तीर्थङ्कर नेमिनाथ की है। चरण-पाषाणपर बहुत ही सुरक्षित तीन पंक्तियोंका एक लेख है। लेख नागरी अक्षरों और व्याकरण की अशुद्धियों से भरी हुई संस्कृत में है। **लेख और अनुवाद** निम्न है:—

---

१. देखो Ind. Art. Vol. XIV. p. 14. श्री पाठकने जो तिथि दी है वह यह है 'शक १०७६, श्रीमुख संवत्सर, सोमवार, द्वितीय ज्येष्ठ सुदी प्रतिपद।'

लेख

१. ॐ संवत् १२०८ वैशाख वदि ५ गुरौ ॥ मण्डिल पुरात् ग्रहपत्यन्वे (न्वये) श्रेष्ठि-माहुल तस्य सुत श्रेष्ठि-श्री-महीपति भ्रातु साल्हे महीपति-सुत पापे कूके साल्हू देदू [आल्हू ?]

२. विवीके सवपते सर्व्वे नित्यं

३. प्रणमति (मंति) स [ह] ॥।

अनुवाद :—ॐ ? संवत् १२०८, वैशाख वदी ५, गुरुवारको। मण्डिलपुर (बुन्देलखण्डका एक नगर) से, ग्रहपति वंशके श्रेष्ठी माहुल; उसके पुत्र श्रेष्ठी महीपति; उसके भाई साल्ह; और महीपतिके पुत्र पापे, कूके, साल्हू, देदू, [आल्हू ?], विवीके और सवपते—ये सब मिलकर नित्य (रोज़) इस प्रतिमाकी वन्दना करते हैं।

[JRAS, 1893, p. 101-102] T. L. Tr.

३३७

महोवा;—संस्कृत।

[सं० १२११ = ११५४ ई०]

श्रीमान् मदनवर्म्मदेव राज्ये,
सं० १२११, आषाढ़ सुदि ३, सनौ,
देवश्री नेमिनाथ—रूपाकार लाखण।

इस शिलालेखमें २ पंक्तियाँ हैं, जिसमेंकी नीचेकी केवल एक पंक्ति ही ऊपरके लेखमें आयी है। मूर्तिके चरण तल पर शंखका चिह्न है, जिससे जाना जाता है कि यह श्री नेमिनाथकी मूर्ति है।

[A. Cunningham, Reports, XXI, P. 73, T.]

६३८

होलल्केरे;—संस्कृत ।

वर्ष श्रीमुख [११५४ ई० (ल्ल राइस) ।]

[होळल्केरेमें, सेट्टर नागप्पसे प्राप्त एक ताम्र पत्र पर]

श्रीमत्-पञ्च-कल्याण-वैभवाय नमः ॥

श्रीमत्परम-गम्भीर-इत्यादि ॥

स्वस्ति श्री यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-मौनानुष्ठान-जप-तप-समाधि-शील-गुण-सम्पन्नरुमप्प ओ.....कडियाण-परिग्रहादित्यरुं मध्याह्न-कल्प-वृक्षरुमप्प **पारिश्व (पार्श्व) सेन-भट्टारक-स्वामि**यवरु । **होळलकेरेय** श्री-शांतिनाथ-देवर जीर्णालयमं...द्धारमं माडिसिदरु ॥ श्री-मूल-संघद् **वोदण्ण-गौड**-मुन्तादवरु माडिसिद धर्म्मंवु विघ्नवागिरलु आ-गौडर सत्-पुत्रराद सोमण्ण-गौड शान्तण्ण-गौड आदण्ण-गौड-मुन्तादवरु । **प्रताप-नायक**रिंगे नूरु-गद्याणवनिक्कि वेडिकोण्डु **हिरिय-केरेय** हिन्दण-तोटमुं गद्देयुमं वेद्दलमं नम्मवर मनेय-काणिकेयुमं सर्व्व बाधा-परिहारवागि श्री-अमृत-पडिगे गुरुगळ आहार-दानक्के **शक-वर्ष १०७६ नेय श्रीमुख संवत्सरद माघ-शुद्ध-१०- शुक्रवार** विट्ट दत्ति ॥ यिदक्के देवता-महोत्सवद विवर ।.. **भाव-नाम-संवत्सरद वैशाख-शुद्ध-तदिगे-सोम-वार** विमान-शुधि (द्धि) वास्तु-विधि नान्दी-मङ्गल ध्वजारोहण भेरी-ताड़न अङ्कुरार्प्पण वृहच्छान्तिक मन्त्र-न्यास अङ्ग-न्यास केवल-ज्ञानद महा-होम । महा-स्नपनाभिषेकके अग्रोदक-प्रभावने-यन्नु कलश-प्रभावनेयन्नु माडिसि पुण्योपार्ज्जने-यन्नु माडिसिकोण्डरु । वर्ष प्रति अक्षय-तदि [गे] यल्लि नडेयुव महोत्सव-प्रभा-वनेगे...अष्टाह्निक-पर्व्वगळिगे श्रवण-पौर्णमी-वुत्सवक्के भाद्रपद-शुद्ध-चतुर्द्दशि-अनन्त-तोहि-कलश-प्रभावने महा-आराधने-मुन्तादक्के । कार्त्तिक-मासदल्लि कृत्ति-कोत्सवक्के माघ-ब चतुर्द्दशियल्लु जिनरात्रे-महोत्सवक्के । चतुस्-सीमे-विवर । तोट्टक्के मूडलु हिरे-केरे । तेङ्कलु हेद्दारि । पडुवलु नेट्ट-कल्लु । वडगलु हुट्टरे । गद्देगळ चतुस्-सीमेगे नाल्कु-दिक्किगु नाल्कु-मुक्कोडे सह नाल्कु-नेट्ट कल्लु । वेद्दलु-भूमिगु

इदे-गुरितु। सुजनरु यी-धर्म्मव नडेसिकोण्डु वरुवुदु। (वे ही अन्तिम श्लोक) शासनक्के मद्रं भूयाद् वर्द्धतां जिन शासनम् ॥

[पाँच कल्याण-वैभव जिसके होते हैं उसके लिये नमस्कार।]

जिन शासनकी प्रशंसा।

स्वस्ति। साधुके गुणोंसे युक्त पारिश्वसेन-भट्टारक-स्वामीने होळलकेरेके शान्तिनाथ-देवके ध्वस्त मन्दिरको फिरसे सुधरवाया था। श्री मूलसंघके बोद्दण्ण-गौड और दूसरे लोगोंके द्वारा दिया गया दान जो रुक गया था उसके लिये उस गौडके पुत्रों (जिनके नाम दिये हैं) और अन्य लोगोंने १०० गद्याण सहित प्रताप-नायकको भेंट में देते हुए प्रार्थना-पत्र दिया, तब पारिश्वसेन-भट्टारक-स्वामीने हिरिय-केरेके पीछेकी जमीन और लोगोंके घरोंसे मिली हुई भेंटें, सर्वकरोंसे मुक्त करके, देवकी पूजा और गुरुओंके आहार-प्रबन्धके लिये (उक्त दिन) दानमें दे दीं। इसके बाद देवता-महोत्सवकी एक सूची और भूमिकी सीमाएँ आती हैं। वे ही अन्तिम श्लोक।]

[EC, XI, Holalere tl., no. 1]

३३६

हेरगू—संस्कृत तथा कन्नड़।

—[शक १०७७-११५५ ई०]—

[हेरगू (आलूर परगना), जैन-बस्तिके सामनेके पाषाणपर]

श्रीमत्यवित्रमकलंकमनन्तकल्पं
स्वायम्भुवं सकलमंगलमादि-तीर्थम्।
नित्योत्सवं मणिमयं नियतं जनानाम्
त्रैलोक्य-भूषणमहं शरणं प्रपद्ये ॥

श्री-वीतराग ॥

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महामण्डलेश्वरं **द्वारावती**-पुरवराधीश्वरं **यादव** वंशोद्भव कोङ्कु-नङ्गलि-गंगवाडि-नोणम्बवाडि- बनवसे-हानुंगल्लु- हलसिगे-गोण्ड भुज-बलवीर-गंग जगदेकमल्ल **होय्सळ-वीर-नारसिंह-देवरु** श्रीमद्राजधानी- **दोरसमुद्रद** नेलवीडिनलु दुष्ट-निग्रह शिष्ट-प्रतिपालनव माडि सुख-संकथा-विनोददिं पृथ्वीराज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्माराधकं पर-बळ-साधक-नामादि-समस्त-प्रशस्ति सहितं श्रीमन्महाप्रधानं हिरिय-हडवळं **चाविमय्यन** नेगर्त्तेयेन्तेन्दड़े ।

इननं तेजदोळ् इन्द्रनं विभवदोळ् **चाणक्य**नं नीतियोळ् ।
मनुवं चारु-चरित्रदोळ् जळधियं गाम्भीर्य्यदोळ् धैर्य्यदोळ् ।
कनकाद्रीन्द्रमनेय्दे पोल्वनदिं त्रैलोक्यमं मेच्चिद-
र्ज्जुननं श्री-पडवल्ल-चामनेनलिन्नेवण्णिपं वण्णिपं ॥
वर-वनिता-जनङ्गळ मनं कुसुमास्त्र-शरक्के सन्दुधो-
त्कर-कर-पङ्कजं बहु-सुवर्ण्ण-चयक्कधिनाथ-मन्दिरम् ।
स्थिरतर-राज्य-लक्ष्मिगेडेयादवु रूप-विलासदेळ्गेयिम् ।
निरुपम-दानदिं पति-हितोन्नतियिं पडवळ्ळ चामन ॥
अनुपममप्प बन्धु-निवहं निज-पक्षमनर्घ-रत्न-म- ।
डन-तति पञ्च-वर्ण्णमखिळोग्र-भुजासिये चञ्चु दुष्ट-दु-
ज्जन-रिपु-भूभुजर्भुजगरागे नेगर्त्तेयनांत **विट्टि-दे-** ।
वन गरुडं समन्तेसेदनी-धरेपोळ् पडवल्ल-चामणम् ॥
इन्तु पोगर्त्तेगं नेगर्त्तेगं नेलेयाद हिरिय- । हडवल्ळ-चाविमय् ।
यन सर्व्वांग-लक्ष्मी हिरिय-हडवळिति **जक्कव्वे**यर नेगर्त्तेय् एन्तेन्दडे ।
निरुतं पूजिप देव्यमोप्पुव जिनं सिद्धान्त-चक्रेश्वरम् ।
गुरु मत्ता-**नयकीर्त्ति-देव**-यति ताय् आचन्वे वम्मय्यनुं ।
.....प्रेमद तन्दे मिक्क सुभदिं लोकैक-रक्षा-क्षमम् ।
पुरुषं श्री-पडवल्ल-चामनेनलिं **जक्कव्वे**यिं धन्यरार् ॥
रतियन्नळु रूपिं भा- । रतियन्नळु वाग्विलासदिं सौष्ठवदिं ।
क्षितियन्नळु पेर्म्मेगरुन्- । घतियुन्नळ **जक्कियव्वे** कान्ता-रत्नम् ।

कोमळवागि ताने शुभ-लक्षण-युक्तमेनिप्प मूर्त्तियिम् ।
व्योममनेय्दे पर्व्वि दिगु-दन्ति-वरं निमिर्दिर्द कीर्त्तियिम् ।
श्री-मुखदिन्दमुद्रविव सत्यद मेलु-नुडियिन्दे गोत्र-वि- ।
न्तामणि जक्कियब्बे सले रञ्जिसिदळ् साचि-देवियन्दविम् ॥
चन्देरेये वन्दि-जनमा- । नन्ददिना-कृणदे कल्प-कुचदारवेयी- ।
वन्ददिनीळ्द वेळ्पुद- । नेन्दुं जक्कब्बे-देवि जगती-तळदोळ् ॥
तक्कळ मिक्क सौन्दर्य वृत्त-कुचंगळ.....नो - ।
टक्कलरम्बिवेम्ब नगे-गङ्गळ रोक्कमेनिप्प होन्न-द- ।
प्पक्के विशेषमप्पवर-कान्तिय चक्कल-नारियोन्दु मा- ।
वक्के गुणक्के वाग्विभवदुन्नतिगार् दोरे पेण्डिरर्क्कियोळ् ॥
दिन-राजाङ्घ्रियनोप्पुवर्च्चनेगळिं सद्भक्तियिन्दर्च्चिपळ ।
विनयं गुन्दद्दे-लोक-पूज्यरेनिसिर्प्पाचार्यरं प्रीतिय-
प्प नवाभ्यामृतवृत्तदिं तणिपुवळ् श्री-जैन-गेहङ्गळम् ।
मनदुत्साहदे माळ्पाळी-वरणियोळ् जक्कब्बेयिन्तप्परार् ॥
तळदोळयोकेयोप्पुव तळिर्म्मुत-पङ्कचदोळ् सरोदवा-
दुळि-गुरुळोळियोळ् मधुप-संकुलमेळ्नुडिगळ्गे मिक्क-कों-
डिल-मेरि यानदोळ् गद-समुच्चयमुद्ध-यशोवरक्के पो- ।
ङ्गळगेनिप्पिवेन्दोरेये चक्कले-नारिय रूपिनेळ्गेयोळ् ॥
रव अक्कन् (अवरक्कन्) ।
दिन-राजननतिमुदविन्द् ।
अनेकवेनिपर्च्चनङ्गळिन्दर्च्चिसि सद् ।
धनरोळु मिगिलेने नेगळ्दा- ।
विनयद कणि पद्मिनिक्कनेने मेच्चदरार् ॥
अवर गुरुगळु ।
सकळ-व्याकरणार्त्थ-शास्त्र-चयदोळ् काव्यङ्गळोळ् मिक्कना-
ल्किदोळ् वस्तु-कवित्वदोळ् नेगल्द सिद्धान्तङ्गळोळ् पारमा- ।

र्त्थिकदोळ्**किकदोळ् समस्त-कळेयोळ् पाङ्गिन नडेय्-
धिकनादं **नयकीर्त्ति-देव**-यतिपं सिद्धान्त-चक्रेश्वरम् ॥
हेरगोळ्तेन्देल्लं । निरुतं विन्नविसे केळ्दु वसदियनत्या- ।
दरदिन्दे माडि जक्कले । धरेयं धर्म्मक्के कोट्टु वसमं पडेदळ् ॥

अदेन्तेन्दडे **शक-वर्ष १०७७ नेय युव-संवत्सरद पुष्यदमावास्ये** आदिवारवुत्तरायण-संक्रान्तियन्दु श्रीमन्महाप्रधानं हिरिय-हडवळं चाविमय्यन सर्व्वाङ्ग-लक्ष्मी हिरिय-हडवळति श्री-मूल-संग (घ) द देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद कोण्ड कुन्दान्वयदाचार्य्यरु श्री-**नय-कीर्त्ति**-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगळ गुड्डि **जक्कव्वेयर** महोत्साहदिं तावु हेरगिनल्लु प्रतिष्ठेयं माडिसिद श्री-चेन्न-पार्श्वनाथ-स्वामिगळ श्री-पाद-पद्माष्ट-विधार्च्चनक्कं उत्तुंग-चैत्यालयद खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारणक्कं रिषिय-राहार-दानक्कवेन्दु श्रीमतु हेरगिन प्रभुगळू-रोडेय-सोमनाथिमय्य चाविमय्य सिङ्गगाब्जुण्डनोळगाद समस्त-प्रभुगळ समस्त-प्रधानर सन्निधानदल्लु श्रीमन्महामण्डलेश्वर-**नारसिंह-देवर्गे** विन्नहं गेय्दु हिरिय-केरेय कीलेरियल्लि कल्ल-तुम्बिन समीपदल्लु विडिसिद गद्दे सलगेयय्दु वेद्दलेयल्लि स्थलवोन्दु ।

[जिस समय (अपने सर्वपदों सहित) होय्सल वीर-नारसिंह-देव अपने वास-स्थल शाही नगर दोरसमुद्रमें रहते थे और शान्ति एवं बुद्धिमत्तासे अपने राज्यका शासन कर रहे थे :—

उनके पादपद्मका उपजीवी पुराने सेनापति चाविमय्य थे, जिनकी प्रशंसामें कहा गया है कि वे विट्टिदेवके गरुड़ थे। उनकी पत्नीका नाम जक्कव्वे था। उसकी बड़ी बहिन (उसकी प्रशंसा) पद्मियक्क थी। दोनोंके गुरु सिद्धान्त-चक्रेश्वर नयकीर्त्ति-देव-यतिप थे।

हेरगू की अच्छा स्थान होनेकी सबसे प्रशंसा सुनकर, जक्कलेने इच्छापूर्वक एक मन्दिर वहाँ बनवाया, और इसे भूमिदान भी दिया। इससे उसकी बहुत प्रसिद्धि हुई।

(निर्दिष्ट मितिको) महाप्रधान, पुराने सेनापति चाविमय्यकी पत्नी, श्रीमूल-संघ, देशिय-गण, पुस्तक गच्छ और कोण्डकुन्दान्वयके आचार्य नयकीर्त्ति-सिद्ध

चक्रवर्त्ती की शिष्या (श्राविक), जक्कव्वेने, बहुत हर्षके साथ भगवान् चेन्न-पार्श्वनाथकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा करवाके,—अष्टविध पूजनको चालू रखने, उसके ऊँचे मन्दिरकी मरम्मत आदिके लिये, और ऋषियोंको आहार-दान देनेके लिये, हेरगूके सरदारोंकी उपस्थितिमें, महामण्डलेश्वर नारसिंह-देवसे प्रार्थना करके, (निर्दिष्ट) भूमिका दान दिया।]

[EC, V, Hassan Tl., No. 57.]

३४०

खजुराहो—संस्कृत।

[सं० १२१२=११५५ ई०]

[इस शिलालेखके भी लेखका पता नहीं है। श्री वीरनाथ (महावीर स्वामी) की प्रतिमाके चरण-पाषाणमें यह लेख अङ्कित है। शिल्पीका नाम कुमार सिंह (या सिनहा) लिखा हुआ है।]

[A. Cunningham, Reports, XXI, P. 68, P. A.]

३४१

महोवा:—संस्कृत।

सं० १२१३=११५६ ई०]

"संवत् १२१३, माघ सुदि ५ गुरुन् (गुरौ)।"

इस प्रतिमा पर चकोरका चिह्न है, इससे यह प्रतिमा सुमतिनाथकी है। लेख एक ही लम्बी पंक्तिका है। सबसे पहले उक्त कालका उल्लेख है। इसमें किसी राजाका नाम नहीं दिया हुआ है, और इसके अन्तमें शिल्पी रूकार (रूपकार) लोखनका नाम आता है।

[A. Cunningham, Reports, XXI, P. 73, A.]

३४२

महोबा:—संस्कृत ।

[सं० १२१५=११५८ ई०]

श्रीमन्मदनवर्म्मदेव विजय राज्ये । संवत् १२१५ पौष सुदि १० ।

"श्रीमान् मदनवर्म्मके विजय राज्य सं० १२१५ पौष सुदि १० के दिन ।"

[JASB, XLVIII, P. 288, A.]

३४३

खजुराहो—संस्कृत ।

[विक्रम सं० १२१५, माघ सुदी ५]

ॐ ॥ संवत् १२१५ माघ सुदि ५ **श्रीमन्मदनवर्म्मदेव**प्रवर्द्धमानविजय-राज्ये ॥ ग्रहपतिवंसे (शे) श्रेष्टिदेदूतत्पुत्र **पाहिल्लः** । पाहिल्लांगरुह**साधु साल्हे** [ते] नेदं (यं) प्रतिमा कारितेति ॥ ॥ तत्पुत्राः महागण । महीचन्द्र । सि [रि] चंद्र । जितचंद्र । उदयचंद्रप्रभृति । संभवनाथं प्रणंमति[२] नित्यं ॥ मंग [लं] महाश्री [:] ॥ रूपकाररामदेवः [:] ॥

[यह शिलालेख एक जैन प्रतिमा (संभवनाथ स्वामीकी) के चरण-पाषाण पर एक ही पंक्तिमें अङ्कित है । इसके लेखके समय **मदनवर्मदेव**का राज्य था । लेखाङ्कित प्रतिमाकी स्थापना साधु **साल्हे**ने कराई थी । इसका कुल गृहपति था । यह **पाहिल्ल**का पुत्र था, पाहिल्ल श्रेष्ठी **देदू**का पुत्र था । साल्हेके पुत्रों-का नाम, महागण, महीचन्द्र, सिरि (श्री) चन्द्र, जितचन्द्र, उदयचन्द्र इत्यादि था । ये हमेशा संभवनाथ तीर्थंकरकी वन्दना करते थे । प्रतिमा बनानेवालेका नाम रामदेव था । पाहिल्लका नाम हमें पहले शिलालेखमें भी मिल चुका है ।]

[F. Kielhares, EI, I, No XIX, No. 8 (P. 153).

---

१. यह अक्षर, या इससे पहलेके और भी अक्षर, यदि वे हों तो, टूट गये । २ शुद्ध पद 'प्रणमंति' है ।

३४४

खजुराहो—संस्कृत।

[सं० १२१५=११५८ ई०]

[इसके भी लेखका पता नहीं है। यह लेख **मदनवर्मा** के राज्यकालका है।]

[A. C. Reports, XXI. P. 68, Q, A.]

३४५

गिरनार—संस्कृत।

[सं० १२१५= ११५८ ई०]

यह लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका है।

Ant. Kathiawad and Kachh (ASWI, II) p. 169,tr.]

३४६

गिरनार—संस्कृत।

[सं० १२१५=११५८ ई०]

[**नेमिनाथ मन्दिरके दक्षिणकी तरफ पश्चिम दिशाकी दीवाल पर**]

संवत् १२१५ वर्षे चैत्र शुदि ८ रवावद्येह श्रीमदुज्जयंततीर्थे चतुर्तीसमस्त-देवकुलिकासत्कछाचाकुत्वा लिसंविरणसंद्यविठ सालवाहण प्रतिपत्या सु० **जसहडठ० सावद (दे) वेन** परिपूर्णा कृता ॥ तथा ठ. **भरथसुत** ठ. **पंडि [त] सालि-वाहणेन** नागवरिसिरायापरितः कारित [भाग] चत्वारि त्रिंवीकृत कुंडकमांतर अधिष्ठात्री श्रीअंबिकादेवीप्रतिमा देवकुलिका च निष्पादिता ॥

अनुवादः—सं० १२१५ के वर्षमें, चैत सुदी ८, रविवारके शुभ दिन। इस दिन यहाँ श्रीमत् उज्जयन्त तीर्थ पर संघवी ठाकुर सालिवाहनकी सम्मतिसे राज

(मिस्त्री) जसहड और सावदेवने समस्त जैन देवताओंकी प्रतिमा बनाकर पूर्ण की; तथा भरथके पुत्र पण्डित सालिवाहनने 'नागज (झ) रि सिरा' (Elephant Fount) के चारों ओर एक दिवाल खेंच दी, जिसमें चार बिम्ब पधराये गये।

कुण्ड बन जानके बाद, उसकी अधिष्ठात्री देवी श्री अम्बिकादेवीकी मूर्त्ति (प्रतिमा) और अन्य देवोंकी मूर्त्तियाँ उसके ऊपर बनाई गईं।

[ASI, XVI, P. 356, no. 16]

३४७

करुगुण्ड-संस्कृत और कन्नड़।

—[शक १०८० = ११५८-ई०]—

[करुगुण्डमें, जैन-बस्तिके दाहिनी ओर एक पाषाण पर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥
श्रीमद्-द्रविळ-संघेऽस्मिन् नन्दिसंघेऽस्त्यरुङ्गळः।
अन्वयो भाति निश्शेष-शास्त्र-वारासि-पारगैः॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्दः महा-मण्डलेश्वर द्वारावतीपुरवराधीश्वर यादव-कुलाम्बर-द्युमणि सम्यक्त्व-चूड़ामणि मलपरोळ्-गण्डाद्यनेक-नामादि-प्रशस्ति-सहितनप्प श्रीमन्-महा-मण्डलेश्वरं नृप-काम-होय्सळनातन तनेय॥

बलिद्दडे मलेदडे मलेपर।
तलेयोळ् वाळिदुवनुदित-मद-रस-वसदिं।
बलियद मलेपद मलेपर।
तलेयोळ् कै यिडुवनोडने विनयादित्य॥
आतङ्कं केळेयब्बरसिग पुट्टिदम्॥
आनतरागद्विपु-नूपर्।
आनन-सरसीरुह-नाळमं खण्डिसलेन्द्।

आनिळुकुमदानिळुकुम- ।
दानिळुकुमदेरग-नृपन भुजदसि-हंस ॥

आतन सति **एचल-देविगे** तत्पुत्ररु **वल्लाल-देव विट्टि-देव-नुदयादित्य-देव** ॥ अवरोळगे ॥

तुळु-नाडं मले-नाडं ।
तळकाड कोण्डु मतेयुं तणियदे भू- ।
तळमं **कञ्चि**-वरं कोण्ड् ।
अळवडिसिद **विष्णु**-भूभुजं केवळमे ॥

आतङ्गं **लक्ष्मा-देविगं** पुट्टिद ॥

तरळ-विलोचनाञ्चळके केम्पिनितुं वरे वक्क्रुं वागळन्त् ।
अरि-नरपाळ-सङ्कुळद पन्कले कैगे तुरङ्ग-राजि मन्- ।
दुरके गवाळि शालेगे घन निज-कोश-गृहान्तरक्के तद्- ।
घरे कडितक्कवुण्डेगेगवोळे गवी-**नरसिंह-देवन** ॥

स्वस्ति समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमन्महामण्लेश्वरं त्रिभुवनमल्ल तळेकाडु-गङ्ग-वाडि-नोणम्बवाडि-बनवसे-हानुङ्गलुगोण्ड भुजबल वीर-गङ्ग प्रताप-नरसिंह-होय्सळ-देवरु श्रीमद्राजधानि-**दोरसमुद्र**द नेलेवीडिनलु सुख-सङ्कथा-विनोददिं पृथ्वीराज्यं गेय्युत्तमिरे ॥ तत्पादपद्मोपजीवि स्वस्ति समस्त-राज्य-भर-निरूपित-माहात्म्य-पदवी-विराजमान-मानोन्नत-प्रभु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-शील-गुण-संपन्नरप्प श्रीमन्-महा-प्रधान ॥

काश्यप-गोत्रजनम्बुरु- ।
हास्यनलन्दापुर-प्रभु प्रकट-यशो- ।
भास्यखिळ-कळेगळोळुचद्- ।
रास्थं **दण्डाधिनाथ-भद्रादित्यम्** ॥
श्रीमतनय-तनूज ॥

एरेदहिदन्य-वधुगं ।
नेरेदान्त-विरोधि बनद कण्णं मनमम्

परिकिसे सोलवेनल्लिंक ।
धरेपोळ दोरेयारो **तैल-दण्डाधिप**नोळु ॥
आतन तनेय ॥
आ-चाव गुणङ्गळोळम् ।
भाविसुवडे नोड जगदोळु उप्परवट्टम् ।
केवळमे सन्धि-विग्रहि ।
चावुण्ड गुण-करण्डनमृतद पिण्ड ॥
आतन अग्र-तनूज ॥
वनधि-व्यावेष्टितोर्वीतळ-विनुत-यशं भद्र-राजात्मजातं ।
जनकं चावुण्डरायं सकल-गुण-गणालंकृतं नागिराजा- ।
ङ्कन मर्म्मळ् रक्कसार्ज्यात्मजे जननि सरोजाक्षि यक्षाम्बिका ।
सज्जन-रत्नं तानेनळ् **माधव**नुभयकुलख्यातनत्यन्त-पूतं ॥
खिन्नं समस्त-गुण-सम्- ।
पन्नं शिष्टेष्ट-ततिगे कै तीविरे चेम्- ।
वोन्नं कुडुवेडेगिन-सुत- ।
नन्नं पर-हितदोळा-वियच्चरनन्नम् ॥
वर-वनितेयग्गें रिपुग- ।
ळगेरेदर्त्थि-जनक्के **तैल-दण्डाधीशम्** ।
[1]**हरि**-तनेयं [2]**हरि**-तनेयं ।
[3]**हरि**-तनेयं धरेयोळे न्दुं पोगळदरोलरे ॥
रवेचरनुदारदिन्दं ।
वाचस्पति बुद्धियिन्दे विभवोदयदिम् ।
प्राची-दिशा-पति हेगडे- ।
देचमनेनुतिप्पुदेन्दुमी-भूचक्रम् ॥

---

१. मन्मथ, २. अर्जुन, ३. कर्ण ।

पुट्टिद भूमियोळिन्तोळ्प ।
इट्टळमेनिसल्के नेगळ्द् पार्श्वं मुददिम् ।
निट्टूरलु माडिसिदं ।
पुट्टिसे चेल्वं समन्तु चैत्यालयमम् ॥
आतननुचं **रकसिमय्य** ॥
अवरोळगं **जिन-देव**ने ।
सु-विदित-सकळार्थ-शास्त्र-नोविद्दनिन्ती- ।
भुवन-प्रख्यातं वाग्- ।
युवति-वदनाम्बुजात-मधुपं नेगळ्दन् ॥
आतन सति **हुनेयब्बे**गम् ॥
पर-हितरल्लद पुरुषार ।
चरितमनिळिकेय्दु दुघरनावगवाण्मिम् ।
पोरवेडगे **चौण्ड-रायम्** ।
पर-हितमं कोण-गोण्डनाध्यर कय्योळु ॥
चाउण्ड-रायननुचम् ।
तामरस-निभास्यनुतुपळार्चं मदवत्- ।
सामव-गमनं नेगळ्दम् ।
वामननवनी-विनूत शशि-विशद-यशम् ॥
आ-चाउण्डमय्यन कुल-र्जनते ॥
आतन सति मुन्नेगळ्दा- ।
सीतेगरन्धतिगे रतिगे वाणिगे भूभृज् ।
लातेगे दोरेयेनलल्लदे ।
भूतळदोळु **देकणब्बे**गुळिदर्दोरेये ॥
आ-दिर्व्वर्गं तनूज ।
श्री-सुतनं विळासदोदविं मकराकरमं गभीरदिं ।
भासुर-तेजदिं दिनपनं चतुरत्वदिनम्बुजगर्भनम् ।

केसरियं पराक्रमदिनर्ज्जुननं सार-विद्येयिन्दे प- ।
ट्टिसद-**पारिस्सण्ण**नभिमान-धानं नगुवं निरन्तरम् ॥

आतन सति ॥

पति-भक्तियोळ-मळिन-चिन- ।
पनि-भक्तियोळत्तिमब्बेयेन्दी-भुवनं स- ।
ततं **धम्मल-देवि**यन् ।
अति-मुददिं पोगळुतिर्प्पुकिरुळुं पगलुं ॥
जनकं श्री**मरियाने**-मन्त्रि-तिळकं **जक्कब्बे** ताय् विश्व-भू-
जन-चिन्तामणि **दण्डनाथ-भरतं** धैर्य्यान्वितं शौर्य्य-शा- ।
ळि-नयज्ञं किरियय्यनङ्गज-निभं श्री-**पार्श्वनाथं** निजे-
शनेनळ् **विम्मल-देवि** धन्येये दश-विश्वम्भरा-भागदोळ् ॥
तोरेदुदु कामधेनु फळवादुदु कल्पु-महीजमेम्बिनम् ।
करदु दुघाळिगित्तु हर-हास-निभोज्वळ-कीर्त्तियं सवि- ।
स्तरिपेडेगीगळन्यर पेसर्द्दिदिं मरियानेयम्बुदो ।
भरतणनेम्बुदो खचरनेम्बुदो भानुतनूजनेम्बुदो ॥
भू-विनुतेयेनिप **वम्मल**- ।
देविगवा-नेगळ्द् पारिसण्णङ्गं वि- ।
द्याविदनुदयिसिदनि- ।
ळा-विनुतं **शान्त**नुदित-लक्ष्मी-कान्त ॥

आतन गुरु-कुल श्री-वर्द्धमान-स्वामिगळ तीर्त्थ-प्रवर्त्तनं-दोळु गौतम-स्वामि-गण-धराचार्य्यर धर्म-सन्तानदोळु श्रुतकेवळिगळु **भद्रबाहु-स्वामि**गळिन्द**कळङ्क-देव**रिं **वक्रग्रीवाचार्य्य**रिं **सिंहनन्द्याचार्य्य**रिं **कनकसेन-वादिराज-देव**रिं श्री-**वर्द्धमान-जगदेकमल्ल-वादिराज-देव**रु ॥

आदित्यन केलदोळु चन्- ।
द्रोदयमेसेयदवोळी-धरा-मण्डलदोळु ।
वादिगळेवेम्ब टुण्टुक- ।

वादिगळेसेदपरे वादिराजन सभेयोळु ॥
अवर शिष्यरु **अजितसेन-पण्डित-देवरु** ॥ अवर शिष्यरु ॥
सले सन्द योग्यतेयिनग्-।
गलिसिद दुर्द्धर-तपो-विभूतिय पेम्पिम्।
कलि-युग-गणधररेम्बुदु ।
नेलनेल्लं **मल्लिषेण-मलधारिगळन्** ॥
अवरु शिष्यरु अकलङ्क-सिंहासनारूढरुं तार्किक-चक्रवर्त्तिगळु ॥
आवन विषयमो पट्-त-।
क्कीविळ-बहु-भङ्गि-सङ्गतं **श्रीपाळ**-।
त्रैविद्य - गद्य-पद्य-न-।
चो-विल्यासं निसर्ग-विजय-विळासन् ॥
अवरु शिष्यरु **वासुपूज्य-सिद्धान्त-देवरु** ॥ अवर गुड्डं श्रीमन्महा-प्रधानं ट्टिसि-भण्डारि-**पारिसय्य**नाहुमल्लन केळेगदलु आन्तु मार्व्वलमं तविसि श्री-गारसिंह-होय्सळ-देवनवसरक्के तलेगोट्टिल्लि **निरुगुण्ड-नाड करिगुण्डयं** प्रमुख-हितं धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्टनल्लि पारिसण्णङ्गे पगेद-विनयवागि आतन पुत्रं **शान्तियण-दण्डनायकं** वसदियं माडिसि आ-वसदिगे। विट्ट तळवृत्ति अरुह-गट्टुमुं विट्टरु आ-केरेय केळगण एरेय केय्युमं केरेयिं मूडलेरडु मत्तरु केङ्काडुमं केरेय-कैयोळगण हू-दोट्टमुं देवर तोडरिङ्गोन्दु गाणमुं आ-वूर तिप्पे-सुङ्कमुं कळ-वत्तमुं **मल्ल-गौण्ड**नोळगाद समस्त-प्रजेगळुविड्दु विट्टरु **शक-वर्ष १०८० नेय बहुधान्य-संवत्सरद उत्तरायण-संक्रमण व्यतीपातदन्दु** खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारण-देवता-पूजेगं ऋषिय्राहार-दानक्कं **श्रीपाल-त्रैविद्य-देवर** शिष्यरु **वासुपूज्य**-सिद्धान्त-देवरवर शिष्यरप्प **मल्लिषेण-पण्डितर्गे** धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्टरु । (हमेशाके अन्तिम श्लोक) ।
पुट्टिदोळु गो-ब्राह्मणमुत्-।
कट्टमागिरे वरेदु मेच्चिपुदरिं कापिन्।
दिट्टिदं मूरुं रायर।

कटकद विरुदर्ग लेखकोपाध्याय ॥

ई-शासनमं **माळोज**न मग रूवारि-**मल्लोज** खण्डरिसिद ॥

[नारसिंह-देवतककी संक्षिप्त वंशावली। जिस समय नारसिंह-होय्सल-देव राज्य करते हुए राजधानी दोरसमुद्र में विद्यमान थे:—

तत्पादपद्मोपजीवी दण्डनाथ-भद्रादित्य था। यह राज्यकी धुरीको वहन करने वाला काश्यपगोत्री महाप्रधान (मंत्री) था। उसका ज्येष्ठ पुत्र तैल-दण्डाधिप हुआ। उसका पुत्र चावुण्ड सन्धि-वैग्रहिक मंत्री था। उसका ज्येष्ठ पुत्र माधव था। चिन्नकी प्रशंसा। तैल-दण्डाधीशकी प्रशंसा।

पार्श्वने नित्तूरमें एक चैत्यालय बनाया। उसका अनुज रक्सिमय्य था। चावुण्डरायका अनुज वामन था। चावुण्डरायकी पत्नी देकणब्बे थी। इन दोनोंका पुत्र पारिसण्ण था। उसकी पत्नी ब्रम्मल-देवी थी। इन दोनोंसे शान्त नामका पुत्र उत्पन्न हुआ था।

उसके गुरुओंकी परम्परा,—वर्धमानस्वामी के तीर्थमें गौतमस्वामी गणधराचार्यकी धर्मसन्तानमें, भद्रबाहु, श्रुतकेवली, अकलङ्क देव, वक्रग्रीवाचार्य, सिंहनन्द्याचार्य, कनकसेन वादिराज-देव हुए। वादिराज की प्रशंसा। उनके शिष्य अजितसेन-पण्डित-देव हुए। इनके शिष्य मल्लिषेण-मलधारि हुए, जिन्हें उनकी योग्यता और तपश्चरण के कारण कलियुगी-गणधर कहा जाता था। उनके शिष्य तार्किकप्रवर अकलङ्कसम श्रीमाल-त्रैविध हुए, जो गद्य-पद्य दोनोंमें निपुण थे। उनके शिष्य वासुपूज्य-सिद्धान्त-देव थे।

इनके गृहस्थ-शिष्य महाप्रधान पारिसण्णको निरुगुण्डनाडमें करिकुण्ड मिला था। ये उसके मालिक थे। पारिसण्णकी मृत्युके उपलक्ष्यमें उसके पुत्र शान्तियण दण्डनायकने एक 'वसदि' बनवायी; और उस वसदिके लिये (उक्त) भूमिका दान किया और दीपके लिये एक तेलकी चक्की भी दानमें दी। मल्लगौण्ड और समस्त प्रजाने उस गाँवके घाटकी आमदनी तथा 'कळवत्त' (धानसे अनाज निकालते समय अनाजका हिस्सा) भी दिया। (उक्त मितिको) उन्हीं तीन

प्रसिद्ध कारणोंसे उन्होंने श्रीपाल-त्रैविद्य-देवके शिष्य वासुपूज्य-सिद्धान्त-देवके शिष्य मल्लिषेण-पण्डितको ये दान दिये।

यह शासन शिल्पी मल्लोज ने लिखा था।]

[EC, V, Arsikere Tl., No. 141.]

३४८

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १०८१ = ११५९ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० मा०]

३४९

हरेकेरी;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १०८१ = ११५९ ई०]

[हरेकेरीमें, वस्तिके पाषाण पर]

श्रीमत्सवित्रमकलङ्कमनन्तकल्पम्।
स्वायम्भुवं सकल-मङ्गलमादि-तीर्थम्।
नित्योत्सवं मणिमयं निलयं विनानाम्।
त्रैलोक्यभूषणमहं शरणं प्रपद्ये॥
श्रीमत्सरत्न-गम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
चीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाराजाधिराजं परमेश्वरं परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुल-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवन विजयराज्यमुत्तरो-त्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमा-चन्द्रार्क्क-तारम्बरं सलुत्तमिरं॥ तत्पाद-पद्मोपजीविं॥ स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं पट्टि-पोम्बुच्चपुर-वराधीश्वर शान्तर-कुल-कमलिनी-दिनाधिनायकन् वेङ्ग-मधुराधिनायक शान्तरादित्यं सकल

जग-स्तुत्यं चलदङ्कुरामं गण्डर-भीम समर-द्रचण्ड नेर्व्वर गण्ड-नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमतु **राय-तैलपदेव** ।

उदधि-परीत-भूमि-रमणी-रमणीय-मुखारविन्ददन्- ।
दद्दे सोगयिप्प सान्तळिगे-सासिरमं सुख-संकथा-विनो- ।
दर्दिनतिदुष्ट-निग्रह-विशिष्ट-कुल-प्रतिपाळनार्थवाळ्द ।
ओदविद् पुण्य-पुञ्जरसदर् नृप-**तैलह-राय**-भूभुजर् ॥
समद-रिपु-नृपति-दुर्द्दम- ।
तममं वेङ्कोण्डु **शान्तरादित्य**-नृपम् ।
क्षमेयं पाळिसि लोको- ।
त्तमनादं स्थैर्य्य-मेरु-शैलं **तैलम्** ॥
अदटिनळुर्क्के मय्मेय निमिर्क्के यशोधन देर्क्के राज- ।
शद कडुदेळ्पु दान-गुणदोळ्पु गुणङ्गळ तळ्पु राज्य-सम्- ।
पदद पोदळ्के तेजद तेरळ्के विरोधिय वाळ्के तन्नदेम्- ।
बुदनेने पेम्मेंयं तळेदनो नृपरोल् नृप-**तैल-शान्तरम्** ॥
तल्लले **नञ्जि-शान्तर**-।
वल्लभननुजाते सीतेयंगेलेवन्दळ् ।
वल्लभ-भक्तियोळं जिन- ।
वल्लभ-भक्तियोळगेन्दिदोल्पिं तेळ्पम् ॥
अन्तेनि**पक्कला-देवी**- ।
कान्तेगवा-**तैल-शान्तर**-क्षितिपतिगम् ।
सन्तोषं पुट्टुत्तवोळ् ।
कन्तु-निभर् पुट्टिदर् क्कुमारर् म्मूवर् ॥
मूवरे लोकदोळ् कदन-कर्क्कश-बाहुगळेन्तु नोर्प्पंडम् ।
मूवरे धात्रियोळ् भुवन-भुम्भुक-दानिगळुर्व्वराग्रदोळ् ।
मूवरे राज-नीति-निळयर् धरेयोळ् सुचरित्र-पात्रम् ।
मूवरे **काम**-भूमिपति-**सिंह-नृपाम्मण**-भूमिपालकर् ॥

कलिये सिंहाग्रजातं विमळ-कुळजने पार्श्वनाथान्वयदै- ।
क-ललामं तीव्र-तेजोनिधिये भुवनदोळ् **शान्तरादित्य-देवम्** ।
ललना-सन्दोह-सम्मोहन-करने दिटं ताने दल् कामनेन्दन्- ।
देले काळेय-क्षितीश-प्रकरदळविये कामनुद्दाम-धामम् ॥
आ-नृप-सति पाण्ड्य-कुलाम्- ।
भोनिधि-वर्द्धन-सुधांशु-लेखे चरित्र- ।
श्री-निधि वुध-निधि ताने द- ।
या-निधि विजयवति पुण्यवति वसुमतियोळ् ।
जिन-चरणाम्बुजं तळत्तळिर्प्प सरोज-वनं मनं चगज्- ।
जन-कृत-पुण्य-मूर्त्ति निज-निर्म्मळ-मूर्त्ति दया-रसैक-पा- ।
वन-धन-पात्रवुन्मीलित-नेत्रवेनल् सवनारो भव्य-मण्- ।
डने येनिसिर्द्द शीलवति **विज्जळ-देवि**गिळा-तळाग्रदोळ् ॥
आ-विजयावती-देविगन् ।
आ-विभु-काम-क्षितीश्वरङ्गं वंशा- ।
भीवर्द्धनरोगेदर् **जग-** ।
देवं श्री-सिङ्गि-देवनेम्ब तनूजर् ॥
इव्वेरे दोर्व्वळ-पुवळरिव्वेरे दान-विनोदिगळ् समन्त् ।
इव्वेरे शस्त्र-शास्त्र-कुशलर् न्नेगळ्द्दर्व्व [रे] सत्-कुळर् द्दिटक्क् ।
इ [र्व्व] रे सच्चरित्र-युतरिर्व्वरे भू-भुवन-सुतर् ज्जगक्क् ।
इव्वेरे चेल्वरेय्दे जगदेवनुद्भगद **सिङ्गि-देव**नुम् ॥
अदिरद वीररिल्लळह गुण्डद मन्नेयरिल्ल कूगडङ्- ।
गद नरनायरिल्ल नी नलिसेन्नद राज-कुमररिल्ल चा- ।
गद वळवन्तरिल्ला किडेदोड्डिसि पोगद दुर्ग्ग-वर्गविल्ल् ।
ओदविद शौर्य्य-शक्तिगे दिटं जगदोळ् **जगदेव**-भूपन ॥
उन्नति मेरविङ्गे मणि-माळिकेयादुदु सर्व्व-शास्त्र-सं ।
पन्नते भारती-वचनवादुदु दान-गुणं समस्त-वि- ।

द्वन्निकरक्के कैपिडियोलादुदु तन्न जसं जगक्के कैयू- ।
गन्नडियादुदेन्देसेदनो जगदोळ् जगदेव-भूभुजम् ॥
समदारात्यङ्गना-मङ्गळ-कटक-हटित्-कर्ण्ण-पर्ण्णापहं वि- ।
क्रमवी-काळेय-दोषापह···मळ-चरित्रं···विशिष्टे- ।
ष्ट-मनस्-तापापहं तन्नतुळ-वितरणोद्यागवेन्दन्दे लोको- ।
त्तमनादं **सिङ्गि-देवं** जग-विरुदरळेवं समग्र-प्रभावम् ॥
अवरोडने पुट्टिदळु भू- ।
भुवनं वित्तरिसु वत्तिमब्बेयो पेळेम्- ।
वबोलेसद**ळळिया दे**- ।
वि विशुद्धाचारदिं विनिर्म्मळ-गुणदिम् ॥
रवर-पुरदोळ् नेरे सेनुव-।
पुरदोळ् माडिसिंदळेसेव जिन-भवनमनन्त् ।
एरडमळिया-देवियबो- ।
लरसियरार् प्पुण्यवति [य] री-वसुमतियोळ् ॥
सले शोभाकरवागे सेतुविनोळत्युत्साहदिं भव्य-मण्- ।
डळि वाप्पेम्बिन वोन्दे कण्ठदोळे सम्यग्दर्शन-ज्ञान-निर्-
म्मल-चारित्र-गुण-प्रयुक्ते जिन-राजागारमं भक्तियिम् ।
अळिया-देवि समन्तु माडिसिदळुर्व्वी-स्तुत्यमं नित्यमम् ॥
चतुरे चतुर्व्विध-दानो- ।
न्नतियोळ् जिन-राज-भवनमं माडिसि भू- ।
नुत-कीर्त्ति **होन्नेयरसन** ।
सति **अळिया-देवि** नेगळ्दळवनी-तळदोळ् ॥
भुज-बल-भीम भीम-सम-विक्रम कोङ्कण-रट्टपाल वि- ।
श्व-जन-विनूत निर्म्मल-कदम्ब-कुळोज्ज्वळ गङ्ग-तुङ्ग-वं-
श-नृप-**होन्न पोन्न**-महिपाळन मर्म्म जिनेन्द्र-पाद-पङ्- ।
कज-मद-भृङ्ग निन्नोरेगे वप्पुवनावनिळा-तळाग्रदोळ् ॥

यी-दोरेय होन्न-नृपतिगव् ।
आ-दुरित-विदूरे अळिय-देविगवोगेदम् ।
मेदिनि दण्डितळ्ळिळ्नु- ।
पोदवि जयकेशि-देवनेन्व कुमारम् ॥
नेगळ्द-श्री-जयकेशि-देवनसी-सन्दोह-संभोग-कां- ।
क्षेगे मेय्दन्दे पेत्त-तायळिय-देवी-कान्ते मोहार्त्यदिन् ।
दे गुणाम्भोनिधिगा-मगङ्के विपुल-श्रेयो-निमित्तं जगम् ।
पोगळ्ल् सेतुविनोळु विनिर्म्मिसिदळ्द-श्री-विनागारमम् ॥

स्वस्ति समस्त···प्रख्यात-नीतेयुं विज्जल-देव तनूजादेयुमप्प अळिया-देविय शक-वर्ष १०८१ नेय प्रमाथि-संवत्सरद पुष्य-शुद्ध-चतुर्दशी-शुक्र-वारदन्दु । उत्तरायण-संक्रान्तिय-पुण्य-दिनदोळ्··· ···गुळिळळिया-देवियरं होन्नेयरसरं तम्म धर्म्मक्के बिट्ट भूमिगळुदेन्दडे (यहाँ दानकी विशेष चर्चा आती है) मूल-संवद कादूर-गावद तिन्त्रिणि-गच्छद वन्दणिकेय तीर्त्य-दाचार्य्यर् भानुकीर्ति-सिद्धान्त-देवर कालं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकं माडि चारु-पूजा-निमित्तं कोट्टर (हमेशाका अन्तिम श्लोक) ।

[जिन शासनकी प्रशंसा] ।

जिस समय (स्वाभाविक चालुक्य पदों सहित) त्रिभुवन मल्लदेवका विजयी राज्य प्रवर्द्धमान था :—

तत्पादपद्मोपजीवी, पट्टि-पोन्दुच्चपुरवराधीश्वर, दक्षिण-मथुराका अविनाशक राज-तैलह (प)-देव सान्तलिगे हजार पर शासन कर रहा था । राजा तैल-शान्तरकी प्रशंसा । उसकी पत्नी अक्कव्वा-देवी थी, जो नन्नि शान्तरकी छोटी बहिन थी । और उसके तीन पुत्र थे,—काम, सिंह, और अम्मण । सबसे बड़े कामकी प्रशंसा । उसकी पत्नी विज्जल देवी थी । इनके पुत्र जगदेव और विज्जि-देव थे । उनकी प्रशंसायें । उनकी बहिन अळिया-देवी थी । उन्होंने सेतुमें एक बढ़िया जिन मन्दिर बनवाया था । वह होन्नेयरसकी पत्नी थी । यह होन्नेयरस

(अपर नाम होन्न पोन्न) कदम्ब-कुलका प्रकाश, तथा गङ्ग-वंशमें उत्पन्न हुआ था। उस और अलिया-देवीसे जयकेशी-देव उत्पन्न हुये थे और उन्होंने सेतुमें जिन मन्दिर बनवाया था। तथा विज्जल देवीकी पुत्री अलिया-देवीने, (उक्त मितिको), होन्नेयरसके साथ, इस मन्दिरके लिये (उक्त) भूमियोंका दान दिया। यह दान दो "सिवने" का था। यह दान उन्होंने मूलसंघ, काणूर्-गण तथा तिन्त्रिणि-गच्छके भानुकीर्त्ति-सिद्धान्त-देवके, जो वन्दनिके तीर्थके आचार्य थे, पाद-प्रक्षालनपूर्वक किया गया था। हमेशाका अन्तिम श्लोक।]

[EC. VIII, Sagar Tl., No. 159-]

३५०

पालनपुर—संस्कृत तथा गुजराती।

[सं० १२१७ = ११६० ई०]

श्वेताम्बर सम्प्रदायका लेख।

[EI, II, No. V, No. 10 (P. 28), T. L, A.]

३५१

कवली;—संस्कृत तथा कन्नड़।

शक १०८२=११६० ई०

[कवळी (सक्रेपट्टण परगना) में पुराने गांवकी जगह पर एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द-महामण्डलेश्वरम् द्वारावतीपुरवराधीश्वरम्। शशाङ्कपुर-नि [वास]-वासन्तिका-देवी-लब्ध-
वर-प्रसादनुम्। निचासि-दण्ड-खण्डित-प्रचण्ड-दायादनुम्।
श्वेतातपत्र-शीतकिरण-विकसित-सकळ-जन-नयन-कुवळयनुं-।

निज-भुज-भुवंगराज-सन्धारित-वसुन्धरा-वलयनुम् ।
यदु-कुल-कमल-कमलिनी-कमनीय-तरुण-तरणियुम् ।

सम्यक्त्व-चूड़ामणियुं । कनक-धारा-वर्ष-परिपूरित-सकल-याचक-चातक-चक्रवाल-वत्सलनुं । शार्दूल-लाञ्छननुम् । हर-हसित-विशाद-कीर्त्ति-वर्त्तित-ब्रह्माण्डनुं । मलेपरोळ् गण्डनुं । मद-मुदित-मधुकर-निकुरम्ब-चुम्बित-कट-तट-विराजमान-सामज-समाजनुम् । मले-राज-राजनुम् । लक्ष्मीरमण-रमणीय-चरण-सरसिरुह-संचरण-चतुर-पट्चरणनुम् । निज-विजय-राज्य-राज-लक्ष्मी-मणिमयाभरणनुम् । सु-कवि-शुक्ति संकथाकर्ण्णनोद्दीर्ण्ण-पुलक-दन्तुरित-कपोळफलकनुम् । नीसि-नितम्बिनी-ललाट-तिळक-नुम् । सु-रुचिर-चरण-नखर-मणि-दर्पण-प्रतिफळित-विनत-रिपु-नृपोत्तमांगनुव् । अन्तु पोगळ्तेगं नेगळ्तेगं धर्म्म-भूमियागि ।

मदर्दि मेलेत्तिदा-माळवन पदकमं कोण्डवं **चक्रकूटम्** ।
वेदरल् वेड्डोण्डु **सोमेश्वरन** करिगळं कोण्डवं माण्डने पेळ्।
दुदनेम्बो गेय्दुदिल्लेन्द्दिगननुरे वेड्डोण्डु कोण्डं जय-श्री-।
सदनं तद्देशमं तत्-**तळवन-पुरमं** विष्णु-विष्णु-चित्तोशन् ॥
तळकाडोल् मुळिदाडि तुङ्ग-नगवप्प **उच्चंगियं** साद्दना-।
कुळ-चित्तं **वनवासे**यागे नडेदाप्पिं **वेळ्वलं** गोन्डु निरु-।
चलितं **पेर्ङ्गेरे**गेम् न-लोपदोसेदा-**हानुक्कलोदत्तु** होय् -।
सळ-भूपालन शौर्य्य-सिंहवनुद्धद्-भूपर् भयङ्गोळ्वनं ॥

अन्तेनिसिदाश्चर्य्य-शौर्य्यदिं कोङ्कु-नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोणम्बवाडि-वनवासे-हानुं-गल्लु-हलसिगे-वेळ्वलकोळगागि कञ्चिवादि-यागि हेर्ङ्गेरे-पर्य्यन्तवाद स·····तङ्गळं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपालनं माडि भुज-बल वीर-गङ्ग **त्रिभुवनमल्ल होय्सळ-विष्णुवर्द्धन-देव**·····राजधानि-**दोर-समुद्रदोळु** सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ।

सरसति निनगिनितु कळा-। परिणते नेगळ्द्दजितसेन-**भट्टारक**रिम्।
दोरेवेत्तु देवियादिर् -। पिरियतनं निनदल्लदुदवर महत्वम् ॥

सले सन्दा-योग्यतेय-अग्गलिसिद दुर्द्धर-तपो-विभूतिय पेन्विम् ।
कलि-युग-गणधररेम्बुदु । नेळनेळ्दं **मल्लिषेण-मलधारि**गळम् ॥
आवनविषयमो पट्ट-त-। र्क्कीविळ-बहु-भंगि-संगत**श्रीपाल**-।
त्रैविद्य-गद्य-पद्य-व-। चो-विन्यासं निसर्ग-विजय-विळासं ॥
आळापं वेड माण् मार्-मलेयदिरेले नीं वादि वन्दिर्द्दपं भू-।
पाळोवद्-मौळि-माला-विळसित [·····] पदाम्भोज-युगमम् ।
चोळ-क्षत्रादि-भूभृत्-सभेयोळु पलरं गेल्दु वेङ्कोण्डनी-**श्री-**
पाल-त्रैविद्य-देव पर-मत-कुधरानीक-दम्भोळि-दण्डम् ॥
जिन-धर्माम्बर-तिग्म- रोचि सु-चरित्रं भव्य-नी लेज-नन्-।
दन-मित्रं मद-मान-माय-विजितं **चन्द्रप्रभेन्द्रात्मजम्** ।
विनयाम्भोनिधि-वर्द्धनं जन-नुतं तानेन्दु संवर्ण्णिसळ् ।
मुनि-नाथं सळे **वासुपूज्य**नेसेदं सिद्धान्त-रत्नाकरम् ॥

श्री-**भूतबळि-पुष्पदन्त-भट्टारक**रिं । **समन्तभद्र-स्वामि**गळिन्दकलंक-देवरिम् । **वक्रग्रीवाचार्य्य**रिम् । **वज्रणन्दि-भट्टारक**रि **कनकसेन-वादि-राज-देव**रिं । श्री-**विजय-भट्टारक**रिं । **दयापाळ-भट्टारक**रिं । श्री-**वादिराज-देव**रिन्द् । **अजितसेन-भट्टारक**रिं । **मल्लिषेण-मलधारि-स्वामि**गळिं । **श्रीपाल-त्रैविद्य-देव**रिम् । श्री-**वासुपूज्य-सिद्धान्त-देव**रिम् । उत्तरोत्तरमागि वन्द श्रीमद्गविळ - संघदरुङ्गळान्वयद गुड्डरुप्प श्रीमतु-**नारसिंघ-होय्सळ-गावुण्ड**म् ॥

पदनरिदासे दप्पिसदे वेळ्पर वेळ्पुदनित्तु सद्गुणा- ।
स्पदनेनिसल्के निन्न पेसरेम् गळ होय्सळ-गौण्डनेम्बुदे ।
[··] शिवियेम्बुदे रवचर-नायकनेम्बुदे चारुदत्तनेम्-।
बुदे वलियेम्बुदे रवितनूभवनेम्बुदे गुत्तनेम्बुदे ॥
जिनपति-भक्तियान्त पति-भक्तिवुदारते शक्ति सज्जन-।
[··] कृत-युक्तियब्दे गुणवब्दे-गुणङ्गळनावगं पोग-।
ळ्दनवरतं निमिर्च्चुतिरे होय्सळ-गौण्डिन चित्त-वार्धिवर्-।

द्धन-कर-चन्द्र-लक्ष्मियेने वण्णिसलोप्पदे **केळ्ळेगौण्डियम्** ॥
कुल-धात्रीधर-धैर्य्यनब्धि-वर-गाम्भीर्य्य समस्तावनी- ।
वळय-व्यापित-चारु-कीर्त्ति वनिता-कामं गुण-स्तोमनुच्-
चळ-वाणी-स्तन-हारनर्य्यतिशयाधारं करं पेम्पनिन्त् ।
एळेयोळ् ताळ्दिद्दतो जगन्नुत-गुणं श्री-**कदम्ब-शेट्टि**-प्रभु ॥
आतन चित्त-प्रिये वि- । ख्यातियनार्न्ताद्रिसुतेगमम्बुधि-सुतेगम् ।
सीता-वधुगं रतिगव- । देतेरदिं **चट्टियक्क**नग्गळवेनिपळ् ॥
रतिगवरुन्धतिगं सर- । सतिगं रेवतिगमेसेव पार्व्वतिगं श्री-
सतिगं समनेनिसि महा- । सति चट्टियक्क तोळगि वेळगि-दळ्ळेयम् ॥

भावकनेन्दु सच्चरित्रनेन्दु समुन्नतनेन्दु सत्पुरुषनेन्दु समुज्ज्वळ-कीर्त्तियेन्दु सर्व्वावनि सन्ततं सले पोगळ्वुदु **नञ्जि-शेट्टि**यम् । **लोक-गावुण्ड**गं **माकवे-गावुण्डि**गं हुट्टिद मगळु **चट्टवे-गावुण्डि**य मगं **होय्सळ-गावुण्डं** तम्मल्वेगे परोक्षवा- दसदियं माडिसिदम् । होय्सळ-गावुण्डनुं ऊर समस्त-प्रजे-गावुण्डुगळुविद्दुं वस- दिगं देवालयक्कं भूमि समानवागि वसदिगे उत्तरायण-संक्रमण-व्यतीपातदन्दु **अहोबल-पण्डित** रिगे कालं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्ट गद्दे सलगे नाल्कु वेद्दले मत्तरु नाल्कु माने येरडु कळनोन्दु केरेय केळगण तोट्ट ओन्दु गाण ओन्दु ॥ **१०८२ नेय प्रमादि-संवत्सरद पौष्य-मास-उत्तरायण-संक्रान्ति-व्यतीपातदन्दु-नारसिह-होय्सल-देवर** कय्यलु धारा-पूर्व्वकं माडिसि-कोण्डु वसदिगे भूमियं विट्टरु ॥ (आगेकी चार पंक्तियोंमें हमेशाके अन्तिम श्लोक हैं) कव्वळिय भूमि-पुत्रकरप्प गौड्ड-गळ पेसरं पेळ्वे (कुछ नामोंके बाद) समस्त-प्रजे-येल्लविद्दुं वसदिगे धारा-पूर्व्वकम्माडिदरु । इन्तिवरुम्यानुमतदि वरेद **नेल्कुदरेय**-ऊरोडेय **कलि-देवु माणि-चोज** ॥

[जिन शासनकी प्रशंसाके बाद, विष्णुवर्द्धनके अनेक पद और उपाधियाँ । उसने मालवका केन्द्रीय नगर हस्तगत कर लिया; चक्रकूटको डराकर उसने सोमे- श्वरके हाथियोंका पीछाकर उन्हें पकड़ लिया । अदिगका पीछा करके उसके देश तथा राजधानी तळवनपुरको अधिकृत कर लिया । इस राजाने तळकाड्, उच्चंगि,

वनवासे, वेळ्वल, पेद्दोरे और हानुङ्गल सभी पर अधिकार जमाकर शत्रु-राजाओंमें भय उत्पन्न कर दिया।

जब, भुज-बल वीर-गङ्ग त्रिभुवन मल्ल होय्सल विष्णुवर्द्धन-देव राजधानी दोर-समुद्रमें बैठकर शान्ति और बुद्धिमत्तासे राज चला रहा था :—

तत्पादपद्मोपजीवी,—अजितसेन-भट्टारक, मल्लिषेण-मलधारी (कलियुगी गणधर), श्रीपाल-त्रैविद्य-देव और चन्द्रप्रभके पुत्र मुनिनाथ वासुपूज्य-सिद्धान्त-देव थे।

द्रमिल-संघके अरुङ्गलान्वयका एक गृहस्थ-शिष्य **नारसिंघ-होय्सळ-गावुण्ड** था। (उसकी प्रशंसा)। उसकी पत्नी केल्ले-गौण्डि थी। कदम्ब-सेट्टि-की प्रशंसा, जिसकी पत्नी चट्टियक्क थी। नन्नि-सेट्टिकी प्रशंसा।

लोक-गावुण्ड और माकवे-गावुण्डीकी पुत्री चट्टवे-गावुण्डीके पुत्र होय्सल-गावुण्ड-ने, अपनी माताकी स्मृतिमें, एक बसदि खड़ी की, और उस नगरके समस्त प्रजा तथा किसानोंके सामने, (उक्त) कुछ भूमि बराबर-बराबर बसदि और मन्दिरोंके बाँट दी। यह सब अहोबल-पण्डितके पाद-प्रक्षालनपूर्वक किया। और (उक्त मितिको) बसदिको वह सब भूमि दे दी जो उसे नारसिंह-होय्सल-देवसे मिली थी।

यह दोनों पार्टियोंकी सम्मतिसे नेल्कुदरेके प्रधान; कलिदेव-माणिक्यज-ने लिखा।]

[EC, VI, Kadur, Tl., No., 69.]

३५२

पण्डितरहल्लि;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[बिना काल-निर्देशका, पर लगभग ११६० ई० का]

[पण्डितरहल्लि (करडगेरे परगना) में, मन्दरगिरि-बस्तिके प्राङ्गणमें एक पाषाण पर]

श्रीमत्परमगंभीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

नमो वीतरागाय ।

श्रीयं श्री-वक्षदोळ् सुस्थिरमेनिसि जगं वण्णिसल् ताल्दि वीर- ।
श्रीयं दो-र्दण्डदोळ् सा (शा) स्वत (श्वत) मेने तळेदी-लोक-संस्तुत्य-वाणि- ।
श्रीयं वक्त्राब्जदोळ् वाग्-वरनेने मेरेदं यादवाम्नाय-राज्य- ।
श्रीयं स्वाङ्गीकृतं माडिद नृप-तिळकं **नारसिंह**-क्षितीशम् ॥

स्वस्ति समाधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं **द्वारावती-पुर**-वराधीश्वरं **यादव**-कुलाम्बर-धुमणि सम्यक्त्व-चूड़ामणि मलपरोळु-गण्डाद्यनेक-नामावली-समालंकृतरप्प श्रीमत्·····मल्ल तलकाडुकोङ्गु-नङ्गलि-बनवासे-उच्चङ्गि-हानुङ्गल् गोण्ड भुजबल वीर-गंग होय्सळ-**नारसिंह-देवर** श्रीमद्-राजधानि-**दोरसमुद्र**द नेले-वीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेयुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥

स्फुरदुरु-दीधिति-प्रकटितोग्र-भुज···विळासि-दुर्-।
धरतर-विक्रम-क्रमदोळादतिवर्त्तियेनल्के सन्दनी- ।
धरे पोगळल्के रूढिये···चमूपति-रत्नना-नृपे- ।
श्वरन नेगळ्ते-वेत्त मनेगं मोनेगं नेगळ्देक-मुख्यदिम् ॥
एरगदराति-राय·····परलोङ्केयप्पिनम् ।
किरिपि भुजासियं जसमनेण्-देसेयानेय···गोम्बिनोळ् ।
निरिसि समग्र-साहसमनी-धरेयोळ् मेरेयुत्तमिर्प्प हेर्- ।
अरिकेय **दण्डनाथनेरेयङ्ग**नेनल् नेगल्दं धरित्रियोळ् ॥

[स्] वस्ति श्रीमन्महा-प्रधानं सर्व्वाधिकारि सेनापति-दण्डनायक एरेयङ्गमय्यङ्गळ पाद पद्मोपजीवि ॥

स्थिरमेने गोत्र-मित्र-विबुधाश्रय···मं निमिर्च्चि बन्- ।
धुर-महिमोन्नतिक्केगेडेयागिकरं चेलुवागि भूभृद्-उद्- ।
धुर-लक्ष्मी-प्रधाननेसेदिर्द्दभिमान-मन्दरम् ।
अरिदेनिसिर्द्द**नोम्बर-चमूपति** मन्दरदिं निरन्तरम् ॥
मन्निपनेम्ब निम्न···नेगल्दिम्मडि-दण्डनाथनोल्द् ।
एन्नेय भाव नान् निनगे भावनेनेन्तुमवश्य-पोष्य···।

•••नदे सन्द विक्रमदळुक्कॅयगुर्व्विनोळाळ्दनीश्वरम् ।
तन्नदटिन्दवादं **एरेयङ्क**-चमूपन चित्त-वृत्तियम् ॥
मत्तमा-प्रधान-चूडारत्नन विषयाधिकारि••नेगल्तेय पोगल्तेयं पेळ्वडे ।
करेवु कामधेनुवेने धेनु पोलं सले पन्नि धान्यमम् ।
नेरदळर्द्दर्घमुमळनेयुं पिरिदादुददेन्तु नोळपडम् ।
तेरे विपरीतविल्ल नुडियोळ्तोदळिल्लेनल् ••••श्वरम् ।
मरुवलि-मण्णे-तेङ्कर-नेगळतेय-कल्वळियेम्ब नाळ्गळम् ॥
कन्दिरे मुं चिरन्तनर जीर्ण्ण-जिनालयं मोदल्-।
गोण्डु निरन्तरं मेरेये माडिसि रूढ़ियनीतनन्ते कम्-।
कोण्डवनावनीश्वरने धर्म-गुणोन्नतनार्तनिर्द्द भू-।
मण्डलमावगं स-फलमादुदेवं द्विज-वंश-मण्डनम् ॥
आ-महानुभावन सति ।
लावण्याम्भोधिय वे-। ला-वन-वन-लते-सुधाब्धि-संभव-लक्ष्मी-।
देवतेयेनिसुवल् ईश्वर-। देवन वधु **माचियक्क**नवळा-रत्नम् ॥
आ-पुण्यवतियन्वय-प्रभावमेन्तेन्दडे ॥
श्रीगे निवासवागि पेसर-वेत्तनेगळ्तेय **नाकि-सेट्टिगम्**
नागवेगं तन्भवनगुर्व्विन**सोहणि विट्टिगाङ्कना-**।
भोग-पुरन्दरङ्गे सति **चन्द्रवे** तत्सुते माचियक्कनेन्द् ।
आगळुमर्क्करिं विदुध-मण्डलि वण्णिसलोप्पि तोरिदळ् ॥
निरुपम-कीर्त्तियं तळेदु पेम्मेंगे ताय्-मनेयागि सत्-कळा-।
धर-मुखियाद चन्द्रदेगे पेर-म्मगळागि समस्त-लोकमम् ।
पोरेदनमोघनीश्वरनोळिर्देनुतुं तरुणी-विलासमम् ।
धरियिसि पुट्टिदळ् लकुमि-देविये **माचवे**येम्ब नामदिम् ॥
द्विगुणिसुतिप्पुदाद दर-हास-विळास-नवीन-चन्द्रिका- ।
प्रगुण-गुणङ्गळिं कुवळयक्के विळासमनेन्दोडुद्घ-ली- ।
लीगे नेलेयाद माचलेयनून-लसद्-वदनेन्दु•••रू- ।

ढिगे नेगळिदन्दु-मण्डलदोळिर्द्द कळङ्कमनीगलागुमे ॥ .
कळ्दसलोरे·····। जल्पर मातिरखि पोलरीश्वरनेम्बी-।
कळ्द-महीजमनप्पिद । कल्प-लता-ललिते···**माचिपक**·····॥
परमाप्तं जिननाप्तनिन्तु जनकं श्री-**विट्टिगाङ्कं** गुणो-।
द्धुर तन्नम्मिके **चन्दिकब्बे** येनिसिर्द्दी-**माचिय**कङ्के सद्-।
गुरुगळ् पोस्तक-गच्छ-देशिय-गण-श्रीकोण्ड कुन्दान्वयो-।
द्धरणर् **ग्गण्डविमुक्त-देव-मुनिवर** श्री-मूल-सङ्घोत्तमर् ॥

अन्तनून-गुण-रत्न-मण्डनेमुं चातुर-वर्ण्ण-समुदयैक-शरणेयुमेनिसि नेगल्द श्रीमत्-पेर्-गडिति **माचियक्क** श्री-**मय्दवोळल** दिव्य-तीर्थदोळ् सत्-धर्म्मापंक्तेयिम् ।
नोडलिदु शित-विमानदे । नाडेयु मिगिलेनिसि नेगळ्द जिन-मन्दिरमं ।
कूडे घरे पोगळे माचवे । माडिसिदलगण्य-पुण्य- युवती-रत्न ॥
न्तु माडिसि ॥
श्री-वधु-**माचवे** सले प-। त्नावतिगेरेयेम्ब केरेय कट्टिसि कोट्टळ् ।
भाविसे वसदिगे तन्न य-। शो-वधु दिग्-वधुगळोडने नलिदाडुविनम् ॥

मत्तमा-तीर्थद वसदिय देवरिगे मुन्न नडेव वृत्तिय सीमा-सम्बन्धमेन्तेन्दडे (यहाँ दानकी विशेष विगत आती है) मङ्गळ महा श्री । (वही अन्तिम श्लोक)·····

[जिन-शासनकी प्रशंसा ।

जब भुजबळ वीर-गङ्ग होय्सळ नारसिंह-देव, शान्ति और बुद्धिमत्तासे शासन करते हुए, राजधानी दोरसमुद्रमें विराजमान थे :—तत्पादपद्मोपजीवी,—(प्रशंसा सहित) दण्डनाथ—एरेयङ्ग था । दण्डनायक-एरेयङ्गमय्यका पादोपजीवी ईश्वर-चमूपति था । वे दोनों आपसमें श्वसुर और दामाद थे । (उनकी प्रशंसायें), और उसने जिनालयकी मरम्मत करवायी थी । उसकी (ईश्वर-चमूपतिकी) पत्नी माचियक्क थी, जो नाकि-सेट्टि और नागवेके पुत्र साहणि-बिट्टिगके चन्दवेकी ज्येष्ठ पुत्री थी; उसकी प्रशंसायें । जिनपति उसके इष्टदेव, पिता बिट्टिग, माँ चन्दिकब्बे थीं । माचियक्कके गुरु पुस्तक-गच्छ, देशिय-गण, कोण्डकुन्दान्वय तथा मूलसंघके गण्डविमुक्त-देव-मुनिप थे ।

माचियक्कने मध्दवोळल् पवित्र तीर्थमें एक जिन मन्दिर बनवाया था, और पद्मावती-गेरे नामक एक तालाब भी, जिसे उसने बसदिको प्रदान कर दिया। उस बसदिके देवकी जमीनकी सीमायें। देवकी पूजा-विधि, मुनियोंके आहार, तथा मन्दिरकी मरम्मतके लिए प्रदान की गई भूमिकी विगत दी है। वे ही अन्तिम श्लोक।]

[EC, XII, Tumkur Tl., No. 38]

३५३

दोडगूरु;—कन्नड़।

[बिना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग ११६० ई० का]

[दिडगूरु (होन्नालि परगना) में, हनुमन्त-देवके गाड़ी रखनेके मकानके पीछेकी दीवालसे सटी हुई जैन-मूर्तिके चरण पाषाणपर]

श्री-मूल-संघ काणूर्.....चार्य्य बाळचन्द्र-देवरिगे मेषपाषाण-गच्छ.....हेग्गडे-जक्कय्यनुं तन्न मद बळिगे जक्कव्वेयुं दिडुगूरोळु चैत्यालयमं माडिसि सुपार्श्व-देवर सु-प्रतिष्ठेय माडिया-देवरिगे युं ऋषियराहार-दानक्कं नेल्लु-वेड़व मत्तरोन्दु एल्लु नवणे मत्तरोन्दु अडके-दोण्ट कम्म १५ इनितु आ-चन्द्रार्क्कं सलुवन्तागि कोट्टं स्वस्ति।

[श्री-मूल-संघ, काणूर्-गण और १ मेषपाषाण-गच्छके आचार्य बालचन्द्र-देवके लिए,—हेग्गडि जक्कय्य तथा उसकी पत्नी जक्कव्वेने दिडगूरुमें एक चैत्यालय बनवाया, और उसमें सुपार्श्व भगवानकी स्थापना करके, देवके लिये तथा ऋषियों के आहारके लिये (उक्त) भूमिदान किये।]

[EC, VII, Honnali tl., no 5.]

३५४

श्रवणबेल्गोला—कन्नड़ ।

[विना काल निर्देशका]

[जै., शि., सं., प्र० भा.]

३५५

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[विना कालनिर्देशका]

[जै., शि.. सं., प्र० भा.]

३५६

हेग्गेरी—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १०८३=११६१ ई०]

[हेग्गेरेमें. वस्तिके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥
स्वस्ति-श्री-वर्द्धमानस्य वर्धमानस्य शासने ।
श्री-कोण्डकुन्द-नामा भू-[च्] चतुरङ्गुळ-चारण [:] ॥

योऽर्हन् सोऽव्यात् । स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळक चालुक्याभरण श्रीमद्-**भूवल्लभ-राय-पेर्म्माडि-देवर कल्याण**द नेलेवीडिनोळ् । **सप्तार्द्ध-लक्ष**-भूमियम् । दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रति-पाळनं गेय्दु सुख-सङ्कथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तिरे । तत्पाद-पद्मोपजीवि ।

अरि-पुरदोळ् घगद्-घगिलु घं-घगिलेम्बुदराति-भूमिपा- ।
ळर शिरदोळ् गरिल्गरि गरिल्गरिलेम्बुदु वैरि-भूतळे- ।

सर करुळोळ् चिमिल्लिमि चिमिल्चिमिलेम्बुदु कोप-वह्निदुर् ।
धरतरवेन्दोडल्कुरदे कादुवरार् मले-राज-राजनोळ् ॥

तत्पुत्र ॥

नो तीव्रो वडवानलो जळनिधेरद्यापि सद्भावतो-
भर्गाभीळ-ललाट-लोचन-वृहद्भानुर्यथा भ्रूयते ।
कामोऽनङ्ग इति त्रिलोचन-गळे स्वस्थं च हाळाहळम्
तानेवं हसति प्रताप-दहनस्ते **विष्णु-भूपाळक** ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं **द्वारावतीपुर**-वराधीश्वरं **यादव**-कुलाम्बर-द्यु-मणि सम्पक्त्व-चूडामणि मलपरोल् गण्ड तळकाडु-गोण्ड वीर-भुजबळ **विष्णु वर्द्धन-होय्सल**-राज्यवुत्तरोत्तराभिवृद्धि यिं प्रवर्द्धमानमा-चन्द्रार्क्क-तारं-बरं सलुत्तविरे । तत्-तनयनेन्तप्पनेन्दोडे ।

देवो देव-सदृक्ष-भोग-निलयस् सम्पूर्ण-लक्ष्म (क्ष्मी)-धवो
देव त्वद्दिद्वप-राज-राजित-महीं-कान्ता-प्रियोऽसौ वभौ ।
देवश्शत्रु-धा (ध) रापति-प्रकर-कुम्भि-व्रात-कण्ठीरवो
देव श्री-**नरसिंह-भूप** विजय.श्रीश प्रणूतो भव ॥

तत्पादाराधकम् । स्वस्त्यनवरत-विनतानेक-नाक-लोकपाळालीळ-मौलिजाळ-खचित-मणि-गण-मयूखोल्लेखारुणित-जिन-चरण-हेम-सरसिज-सौरभासक्त-चित्त-मत्त-मधुकर । सम्यक्त्व-रत्नाकर । जिनार्च्चना-समय-समुद्यत-काळागुरु-धूप-धूम-स्यामळित-व्योम-रङ्ग । शिष्टेष्ट-जन-वनज-वन-पतङ्ग । गङ्गा-तरङ्ग-जनित-फेन-कुन्देन्दु-हर-हास-सुर-गज-ताराचल-द्युति-विशद-विशाल-दिग्-विवर-वर्त्तित-कीर्त्ति-प्रेम । सङ्ग्राम-भीम । अप्रतिहत-प्रताप-प्रचुर-प्रभाव-प्रसरत्-प्रचण्ड-प्रबळ-प्रस्फुरोदग्र-निशितासि-दोर्-मण्डिताडम्बर । अहित-दिशापट्ट संगर-विजय-लक्ष्मी-स्वयम्बर । अधनानळ-दन्दह्यमान-बुध-कुधर-सन्तर्प्पण-सुवर्ण-वर्ष पयोधर । हर-वृषभ-कन्धर । शरणागत-कुभृत्-सन्तान-परिरक्षण-क्षमार्य्य-तरवारि-धारा-वारि-पारावार-यूर । रण-रङ्ग-धीर । समुद्दण्ड-सामन्त-वेदण्ड-तुण्ड-खण्डन-प्रचण्ड-मृगेश्वर । **हुळियेर-पुर**-वराधीश्वर । **शान्तल-देवी**-

गर्व्व-पयःपयोधि-सञ्जात-जङ्गम-कल्प-भुज । **सामन्त-चूड**-तनूज । अति-बल-विरोधि-सामन्त-बल-बहल-तमःपटल-पूर्व्व-कुभृन्-मस्तकोदय-बाल-रवि-बिम्ब । गर्व्वि-तारति-सामन्त-गर्व्व-पर्व्वत-निर्भेदन-तीव्रतर-शस्त्र । निज-प्रताप-तरणि-किरण-विच-र्टित-पर-बलान्धकार । वैरि-कुल-संहार । निज-भुज·····दण्ड-प्रचण्डादि.सामन्त-मद-शुण्डाल-मस्तक-विदारण-विनोद ललित मृगमदामोद । "मम कान्तं रक्ष रक्ष"-स्वर-त्रय-कम्पितान्त-विरोधि-सामन्त-सीमन्तिनी-सीमन्त-कुङ्कुम-रेणु-शोणित-पद-पद्म-श्री-केलि-विलास-हृदय-सद्म षोडश वाचक-जन-मनोभिलषित-फल-प्रदायक । सन्नद्ध सामन्त-हृदय-सायक । रण-रसिक-चपल-भु-भट-कटक-पेटिका-मौलि-माणिक्य । नीति-चाणिक्य । चतुर-सीमन्तिनी-सम्मोहन-लतान्तकोदण्ड । रिपु-कुल-कलत्र-नलिन-नेत्र-मार्त्तण्ड । नवरस-भरित-मृदु-मधुर-गद्य-पद्यालंकृत-महा-काव्य-रसावेश-सञ्जात-सर्व्वाङ्ग-हर्ष-पुलक । मलेय-मानिनी-निटिल-तट-घटित-मलयज-तिलक । चोळी-कशोळ-मृगमद-मकरिकापत्र । लाटी-वधूटी-कटि-सूत्र । आन्ध्री-सीमन्त-बन्धुर-वेन-हार । गूर्ज्जर-नितम्बिनी-रत्न-केयूर । गौड-प्रौढ़-कान्ता-मुख-कमळ-चुम्बन-मधुव्रत । अनवरत-स्तुत्य-उत्य-व्रत । कर्णाट-कामिनी-राशि-वदन-मणिमय-मुकुर । स-मद-रिपु-भयङ्कर । गेळङ्क-तळ-प्रहारि । तोडर्-दर मारि । दोड्डङ्क-बडिव । जग-वनण्डलेव । सितगर-गण्ड रिपु-शरभ-भेरुण्ड । सामन्त-वसणि । बुध-जन-चिन्ता-मणि । अय्यन-गन्ध-वारण । दुरित-निवारण । सकल-लक्ष्मी-कान्त । श्री-**विट्टिदेव-सामन्त** स्थिरं जीयात् ॥

चित्रलते ॥ नलिदुलिदट्टिकोण्डु कवितप्प विरोधि-बलक्के भीतियिम् ।
तेलवोलनेन्नदल्लदिदु पेर्व्वलवेन्नदे दोः-प्रतापदिम् ।
गिलिगिलि-गम्बवाडिसुवनाहवडोळ् कलि **विट्टि-देव** निन्- ।
नेलेगळवङ्के सङ्करदोळाम्पने गाम्पनवार्य-शौर्यनोळ् ॥
होडेव वर-सिडिल कालन ।
कुडुव-दाडेय हरन नोसल कण्ण पोडर्प्पम् ।
पडेवुदु समरदोळेडरिद ।
कडु-गलिगळ कङ्के **विट्टि-देवन** सवल ॥

शार्दूलविक्रीडित ॥

वाळं तूगदिरुळ्बुदं कवर्दुकोळ् मद्-वल्लभर् निन्न की- ।
ळाळोळिङ्गेणेयेल्लरेके मुनिवै नीं कारगं वेढ निन्- ।
नाळापक्के एर्देगेट्टर् एन्दु नुडिगुं तद्-वैरि-कान्ता-जनम् ।
हेळेनेम्बुदो **विट्टि-देव**नलघु (र्-द्) दोर्-विक्रम-क्रीडेयम् ॥

इन्तेनिसि नेगळ्द **विट्टि-देवा**न्वयवदेन्तेन्दोडे ॥

स्थिर-गम्भीर नोळम्बनग्र-महिषि-श्री-देवियं तद्-द्विषोत्- ।
करमन्तागडे बन्दु बन्दिविडियल् तद्-वैरि-सङ्घातमम् ।
भरदिन्देय्दे तळ-प्रहारदोळे कोन्दन्दित्तन-भूपना- ।
दरदिं **वीर-तळ-प्रहारि**-वेसरं धात्रा-तळं वर्णिसल् ॥

चालुक्याहवमल्ल-नृ- ।
पालन कटकदोळे कोन्दु दोड्डङ्कमुमम् ।
लीलेयोळे पडेदनदटम् ।
पालिसि **दोड्डङ्क-वडिव**नेम्बी-विरुदम् ॥

अन्तातन मगनप्पाहवमल्लगं **पोन्नव्वे**गं पुट्टिद **सामन्त-भीम**नेन्तेन्दोडे ॥

अतिमदराति-सिन्धुर-घटा-निघटोग्र-मृगेन्द्र विष्णु-भू- ।
पतिय मनक्के रागवोदवुत्तिरलातन विडिनल्लि ताम् ।
सितगर-गण्डनं परिदु कोन्ददिं पडेदं महीपनिम् ।
सितगर-गण्डनेम्ब विरुदं कलि भीमनिळा-वलाग्रदोळ् ॥

जनकं सामन्त-भीमं प्रथित-गुण-गणोद्भासि तां **चट्टियक्कम्** ।
जननि प्रख्यात-**मार्च** समर-जय-वधू-कान्त **सामन्त-चट्टङ्** ।
गनुजं **सामन्त-मल्लं** निरुपम-सु चरित्रान्वितं **गोवि-देवम्** ।
विनुत-श्री-जैन-मार्ग-स्थगित-गुण-कळाळापनुयत्-प्रतापम् ॥

मीरि कडाङ्गि होङ्गि मदवेरि चलं तले-दोरि विल्लनार्द्- ।
देरिसि नीवि जे-बोडेदु संगर-रङ्गदोळान्तु पच्चळम् ।
दोरदे निन्दरप्पोडिदनोन्दने वेळ् चवनुण्डलीर्ण्णदिम् ।

कारिदनेम्बवोलहितरं कोल् [ड] वं हुळियेर-चट्टमम् ॥
करवाळाघातदिन्दम् रिपु-करि-शीर-सन्दोह-सद्-रक्त-मुक्तोत्- ।
कर-वीर-व्रात-निष्पीडित-निविड-कबन्धङ्गलिं रक्त-धारा- ।
धर-हस्त-व्यक्त-भूतावळि-पिशित-रसोद्रिक्त-सन्तृप्तियिं रौ- ।
द्र-रसं पोष्मल्के कोन्दं रणदोळहितरं कूडे **सामन्त-चट्टम्** ॥
आतन तम्मम् ॥
येरेदवर्गित्त चागवदु कित्तेनलीश्वरनद्रि-मध्यदोळ् ।
गिरिजेयपाङ्ग-वीक्षणदोळङ्कुरिसि द्युनदी-प्रवाहदिम् ।
परिकरदिन्दे पल्लविसि दिग्-गज-दन्तवदर्प्पेनल्के भा- ।
सुरवेने **गोवि-देवन** यशो-लते पर्ब्बिदुदेव्दे लोकमम् ॥
घन-दर्प्पोद्धत-दृढ-भ्रुकुटि-कुटिल-रोषातुरावेश-शाल्लर् ।
ज्वलितोद्दण्ड-प्रतापानळ-बळ-शिखारूपरेम्बन्तदिन्दम् ।
मोनेयोळ् मारान्त-वैरि-प्रबळ-दळ-पयोजात-हेमन्तनाशाङ्- ।
वन-दन्ताळिङ्गितेन्दु-द्युति-विशद्-यशो-लक्ष्मणं **गोवि-देवम्** ॥
मत्तं सामन्त-चट्टन सतियेन्तप्पळेन्दोडे ॥
मरकत-वर्ण्णमं तरुण-वेणु-तनु-च्छवियिन्देवज्रमम् ।
सु-रुचिरवप्प मुत्तेनिप दन्त-चयङ्गळदोन्दु-कान्तियिन्- ।
दुरग-सदृक्षवप्प कचदिं हरिनीळवनोप्पिदन्दे होल् ।
तिरे सरि रत्नदोन्देणेगे वन्दळु **शान्तळे**-नारि रूपिनोळ् ॥
स्थिर-गम्भीर-उदात्त-सद्-गुण-सदाचारत्वमेम्बी-गुणोन् ।
नतियं ताळ्दि महेश्वरागम-विन-श्री-धर्म्म-सद्-वैष्णवा- ।
श्रित-बौद्धागमवेम्ब नाल्कु-समय-व्यापारमं मार्प्प-सं- ।
गत-चातुर्य्यंगे कान्ते-शान्तलेगे पेळारुं समं बप्परे ॥
म् ॥
पोरदाळ्दं **नरसिंह-देव-महिपं सामन्त-गोविन्द**निम् ।
हिरियं **चट्टम**नैयनात्म-जननि प्रख्याते **सातब्बे** मन् ।

दर-धैर्य्यं विभु **माचि-देव** हिरियर्य्यं मुत्तेयं **भीम**निम् ।
दोरेमारेन्देले निच्चलुं पोगळ्दुदी-श्री-**विष्णसामन्त**नम् ॥
रजताद्रि-प्रतिम-यशम् ।
निजवेनलेसदिर्द्द **विट्टि-देव**ङ्गिन्ती- ।
भुज-ब्ळ-**नृसिंह**-महिपम् ।
गज-व्रयकेन्दु **हेण्णगेरेयं** कोट्टम् ॥

इन्तु स्वस्ति श्री मूल-संघद देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद कोण्डकुन्दान्वयद श्री-**चान्द्रायण-देव**र गुड्डम् । श्रीमन्-**महा-सामन्त-गोवि-देवं** तन्न सति **महा-देवि-नायकितिगे** परोक्ष-विनेयवागि माडिसि **गुणचन्द्र**-सिद्धान्त-देवर शिष्य-रप्प श्री-**माणिकनन्दि-सिद्धान्त-देव**र कालं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्ट **हेग्गेरेय चेन्न-पार्श्व-देव**र **वसदिय** । अष्टविधार्च्चने-ऋषियराहार-दानक्केन्दु **शान्तल-देविय सु-पुत्रनप्प सामन्त-विट्टि-देवम्** तनगे श्रेयोऽर्थवागि **१०९३ चाळुक्य-विक्रम-संवत्सरद जेष्ट-शुद्ध-पञ्चमी-सोमवार सङ्क्रमणदन्दु** वसदिगे विट्टि सवणुगेरय सीमा-सम्मन्धवेन्तेदडे (यहाँ सीमाओं और दानको विगत दी हुई है) इन्ती-धर्म्मवं प्रतिपालिपगक्कुं जय-श्रीयुं शुभ-मङ्गळम् ॥ श्री श्री श्री (वही अन्तिम श्लोक) ।

उचित-पदालङ्कारम् ।
प्रचुर-रसं नेगळलिन्तु जिन-शासनमम् ।
रचियिसिदं हर-हास- ।
रुचिर-यशं **देवभद्र-मुनिपो**त्तंसम् ॥
मेरेव-बुधाळिगाश्रित-जनक्कनुरागदोळित्तु मत्तवा- ।
दरिसुव दानदिन्दे सुर-भूजवनेणिग्ळेन्दे वण्णिकुम् ।
परम-जिनेन्द्र-पाद-कम्ळार्च्चन-निर्भर-भक्ति-युक्तेयम् ।
हरिहर देवियं नेगळ्द् शासन-देवियनी-धरा-तळम् ॥

(वायीं ओर) स्वस्ति श्रीमन्-महा-सामन्त **वल्लय्य-नायक**नु हेग्गेरेय वस दिंग स्थळ-वृत्तियागि. हिरिय-केरेय केळगे विट्टि गद्दे स ६ वेद्दले मत्तरु १

[जिन शासनकी प्रशंसा । पृथ्वीसे चार अङ्गुल ऊपर आकाशमें चलनेवाले कोण्डकुन्द नामके [आचार्य] जिन शासनमें हुए, इस बातका उल्लेख ।

स्वस्ति । जिस समय, (अपने चालुक्य पदों सहित), भूवल्लभ-राय- मेर्म्माडि-देव अपने कल्याणके निवासस्थानमें थे और सप्तार्द्ध-लक्ष-भूमिपर शासन कर रहे थे :—

तत्पादपद्मोपजीवी,—उसका पुत्र (प्रशंसा सहित) विष्णु-भूपालक था । जिस समय, (अपने पदों सहित), विष्णुवर्द्धन-होय्सळका राज्य चारों और प्रवर्द्धमान था, उसका पुत्र (प्रशंसा सहित) **नरसिंह-भूप** था ।

तत्पादाराधक हुळियेर-पुरवराधीश्वर, शान्तल-देवीकी कुक्षिसे उत्पन्न, सामन्त-चट्टका पुत्र विट्टि-देव-सामन्त था । उसके पराक्रमकी प्रशंसा । उसकी उत्पत्तिका वर्णन :—स्थिरगम्भीर (वीर-दळ-प्रहारी तथा दोर्द्दुर्द्धर-विडिव ये दो उसके विरुद्ध थे)-आहवमल्ल-सामन्त-भीम; इसके चार लड़के हुए :—माच, सामन्त-चट्ट, सामन्तमल्ल, और गोवि-देव । सामन्त-चट्टकी पत्नी शान्तल देवी थी । इन्हीं दोनों का पुत्र विष्णु-सामन्त या विट्टि-देव था । इसी विट्टि-देवको राजा नरसिंहने हाथियोंके खर्चके लिए हेण्णगेरे दिया था ।

स्वस्ति । श्री-मूल-संघ देशिय-गण पुस्तक-गच्छ, तथा कोण्डकुन्दान्वयके गृहस्थ-शिष्य महा-सामन्त गोवि-देवने, अपनी पत्नी महादेवि-नायकितिकी मृत्युकी स्मृतिमें हेगेरेकी चन्न-पार्श्व वसदि बनवायी थी । अष्टविध पूजनके लिये, ऋषियों के आहारके लिये,—गुणचन्द्र-सिद्धान्त-देवके शिष्य माणिक्यनन्दि-सिद्धान्त-देवके पाद-प्रक्षालनपूर्वक,—शान्तलदेवीके पुत्र सामन्त विट्टि-देवने, अपनी समृद्धिके लिये, (उक्त मितिको), (उक्त) भूमि-दान किये; काली मिर्च, अखरोट और पानोंके गट्टों पर जो दाम आये वे भी दिये ।

तथा हेगडे चक्कणने अपनी सास महादेवी-नायकितिकी स्मृतिमें, वसदिके लिये (उक्त) भूमियाँ प्रदान कीं । शाप ।

उचित शब्दों और रस-बहुलताके लिये, यह जिन शासन (लेख) प्रसिद्ध देवभद्र-मुनिपके द्वारा रचा गया था ।

हरिहर-देवी[1] की प्रशंसा।

स्वस्ति। महा-सामन्त वल्लय्य-नायकने (उक्त) भूमि हेग्गेरेकी वसदिके लिये 'स्थल-वृत्ति' के रूपमें दी।]

[EC, XII, Chik-nayakan halli tl., no. 21]

३५७-३५८

नडोले (Nadole) (Raj Putana)—संस्कृत

[सं० १२१८=११६१ ई०]

लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका मालूम पड़ता है।

[EI, IX, no 9, A, T. L A.]

and [EI, IX, no 9, B, T. L. A.]

३५९

खजुराहो—संस्कृत।

[यह लेख **अजितनाथ भगवान के चरण-पाषाण पर** अङ्कित है।]

[A. Cunningham, Reports, XXI, L. 69, R a.]

३६०

महोबा;—संस्कृत।

[सं० १२२०=११६३ ई०]

"संवत् १२२०, ज्येष्ठ सुदि ८ रवौः साधु देव ग नतस्य पुत्र **रत्नपाल** प्रणमति नित्यम्॥"

---

१. विप्पूरके शिलालेख नं० ३८३, ३८४ देखो।

इस लेख पर हाथी का चिह्न है जिससे जाना जाता है कि यह प्रतिमा अतिनाथ की रही। इसमें दो पंक्तिया हैं, जिसमें **काल** और **पूजक का नाम** दिया हुआ है

[A. Cunningham, Reports, XXI, p. 74 a.]

३६१

महोवा;—संस्कृत ।

[विना काल-निर्देशका]

१. सांगम्य सभा तत्पुत्र साधु श्री **रत्नपाल**। तस्य भार्या **साधा**। पुत्र **कीर्त्तिपाल**

२. तथा **अजयपाल**। तथा **वस्तपाल**। तथा **त्रिभुवनपाल**। प्रणमति नित्यम् (म)-

जितनाथाय

[इस लेख में पूर्व लेख के पूजक **रत्नपाल** नाम, उसकी भार्या और चार पुत्रोंके नाम सहित, दिया हुआ है।]

[A. Cunningham, Reports, XXI, p. 74, t.]

३६२

श्रवणवेलगेला—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १०८५=११६३ ई० (कीलहौर्न)]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

३६३

श्रवणवेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[विना कालनिर्देशका]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

३६४

हेग्गेरे;—कन्नड़ ।

[शक १०८५=११६३ ई०]

[हेग्गेरेमें, उसी बस्तिमें दूसरे पाषाण पर]

योऽर्हन् सोऽव्यात् स्वस्ति **शक-वर्ष स १०८५ सुभानु-संवत्सरद आषाढ़-शुद्ध १० बुधवारदन्दु** स्वस्ति श्री मूल-संघद देशियगणद पुस्तक-गच्छद कोण्डकुन्दान्वयद श्री-**माणिक्यनन्दिसिद्धान्त-देवर** शिष्यरप्प **मेघचन्द्र-भट्टारक-देवरु** सन्यसनविधियिं समाधि-गेडेदु स्वर्गापवर्ग-प्राप्तरादरु

[जो अर्हंत् हों वह हमारी रक्षा करे। स्वस्ति। (उक्त मितिको), श्री-मूलसंघ देशिय-गण, पुस्तक-गच्छ और कोण्डकुन्दान्वयके माणिक्यनन्दि-सिद्धान्त-देवके शिष्य मेघचन्द्र-भट्टारक-देव ने, सन्यसनकी विधिपूर्वक स्वर्गप्राप्त कर पुनर्जन्मसे मुक्ति प्राप्त की।]

[E C, XII, Chik-Nayakanhalli tl., no 23.]

३६५

महोबा;—संस्कृत-भग्न ।

[सं० १२२१ = ११६४ ई०]

सं० १२२४ आषाढ़ सुदि २ खन् (खौ) ॥ (कालञ्जराधिपति श्रीमत् **परमार्द्दिदेव**पाद्-नाम प्रवर्द्धमान कल्याण नि (वि) जय राज्ये ।

यह लेख अधूरा है। परमार्द्दिदेवके राज्यकालाका है। इसमें एक लम्बी पंक्ति है।

[A. Cunningham, Reports, XXI, p. 74, a.]

---

१. लेखमें संवत् १२२४ है, परन्तु A. Guerinot में सं० १२२१ दिया हुआ है। किसकी भूल है सो छानबीन करनी चाहिये। हमारी समझ से A. Guerinot की ही भूल है, गल्तीसे '४' की जगह '१' छप गया है।

२६६

बेल-होङ्गल (जि० बेलगाँव):—कन्नड़ ।

तारण संवत्सर = शक (१०८६ = ११६४ ई०)

बेल-होङ्गलका मन्दिर जो दीवालोंसे घेर शहरकी उत्तर दिशामें अवस्थित है, इस समय लिङ्ग की वेदी बना हुआ है, लेकिन मूलतः वह एक जैन इमारत मालूम पड़ती है। इसमें इसी मन्दिरसे सम्बन्ध रखनेवाले दो शिलालेख हैं।

उनमेंसे प्रस्तुत लेख दूसरा है और पुरानी कन्नड़ लिपि और भाषामें है। इसमें कुल ५१ पंक्तियाँ हैं और प्रत्येक पंक्तिमें करीब ३६ अक्षर हैं। यह लेख एक पाषाणमयी साफ-सुथरी चट्टान पर लिखित है। यह चट्टान शहर के बाहर झाड़ियोंमें पड़ी हुई थी. इसको जे. एफ. फ्लीटने मन्दिरके सामने बायीं ओर रखवा दी थी। पाषाणके सिरे पर ये चिह्न हैं:—मध्यमें पद्मासनस्थ जिनेन्द्र प्रतिमा; इसके दाहिनी ओर एक खड्गासनस्थ प्रतिमा, इसके बिल्कुल सामने ऊपर चन्द्रमा है; तथा इसके बायीं ओर एक गाय और बछड़ा हैं, इनके ऊपर सूर्य है। पाषाणका लेख इतना मिटा हुआ है कि इसका प्रतिलेख (Transcription) नहीं दिया जा सकता है। यह स्पष्टतः एक रट्ट (राष्ट्रकूट) शिलालेख है, जैसा कि इसके कार्तवीर्य नामके एक राजाके उल्लेखसे मालूम पड़ता है। इसका काल ३६ वीं पंक्तिमें दिया हुआ है और वह **शक वर्ष १०८६ (ई० ११६४-६५), तारण संवत्सर** है। इस लेखमें वर्णित कार्तवीर्य जे. एफ. फ्लीटकी रट्टों की सूचीमें तीसरे नं० का है। आगे लेखमें एक जैन वसदिका जिक्र आता है, और संभवतः उसी भवनका उल्लेख करता है जिससे कि यह अभी सटा हुआ है और इसीको दान करनेका संकेत है।

[IA, IV, p. 116, no 2, a.]

३६७

अङ्कडि—कन्नड़ भग्न।

वर्ष तारण [= ११६४ ई० (ल्यू० राइस)।]

[अङ्कडि (गोणीबीडु परगना) में, पाँचवें पाषाणपर]

....श्री स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक **यादव**कुलाम्बर-द्युमणि सम्यक्त्व-चूड़ामणि मलेराज-राज मलेपरोळु गण्ड गण्ड-भेरुण्ड कदन-प्रचण्डनसहाय-शूर सनिवार-सिद्धि गिरि-दुर्ग-मल्ल चलदङ्कराम..... **वीर-विजय नारसिंह-देवनुम्॥ तारण-संवत्सरद चैत्र-सुद्ध**..... ...**अन्दु सोसेवूर** पट्टणसामि **नागि-शेट्टिय**.....**मय्यनुं**..... माडिद वसदि इदके काट्ट..... ...विट्ट दत्ति।

[(अपनी उपाधियों सहित) वीर-विजय-नरसिंह-देवने (उक्त मितिको) उस 'वसदि' के लिये जिसे सोसवूर के 'पट्टण-सामि' नाग सेट्टि [के पुत्र]..... मय्यने बनवायी थी, दान दिया।]

[EC, VI, Mudgere tl., no 15.]

३६८

गिरनार—संस्कृत।

—[शक १२२२-११६५ ई०]—

यह लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका मालूम पड़ता है।

[Revised Lists art. rem. Bombay (ASI, XVI) p. 359, no 27, t. and tr.]

३६९

गिरनार—संस्कृत।

[सं० १२२३ = ११६६ ई०]

नं० ३६८ के अन्तका लेख है। उसीका अन्तिम भाग है।

[op. cit. p. 369, no 30, t and tr.]

३७०

वघागञ्ज (मालवा);—संस्कृत।

[सं० १२२३ = ११६६ ई०]

मन्दिरके पूर्वकी ओर

यस्य स्वच्छतुषारकुन्दविशदा कीर्तिर्गुणानां निधिः
श्रीमान् भूपतिवृन्दवन्दितपदः श्रीरामचन्द्रो मुनिः।
विश्वद्यामृदखर्वशेखरशिखा सञ्चारिणी हारिणी
उर्व्यां शत्रुजितो विनस्य भवनव्याजेन विस्फूर्जति ॥१॥
रामचन्द्रमुनेः कीर्तिः सङ्कीर्णं भुवनं किल।
अनेकलोकसङ्घर्षाद् गता सवितुरन्तिकं ॥
संवत् १२२३ वर्षे भाद्रपदवदि १४ शुक्रवार।
लेख स्पष्ट है।

[JASB, XVIII, p. 950-952, no 1. t and tr.]

३७१

वघागञ्ज मालवा; संस्कृत।

[सं० १२२३ = ११६६ ई०]

मन्दिरके दक्षिणकी ओर।

ॐ नमो वीतरागाय ॥

आसीद्यः कलिकालकल्मषकरिध्वंसैककंठीरवो
वेनद्मापतिमौलिचुम्बितपदः यो **लोकनन्दो मुनिः**
शिष्यस्तस्य ससर्व्वसङ्घतिलकः **श्रीदेवनन्दोमुनिः**
धर्मज्ञानतपोनिधिर्यतिगुणग्रामः सुवाचां निधिः ॥१॥
वंशे तस्मिन् विपुलतपसां सम्मतः सत्त्वनिष्ठो
वृत्तिं पापां विमलमनसा त्यज्यविद्याविवेकः ।
रम्यं हर्म्यं सुरपतिचितः कारितं येन विद्या
शेषा कीर्त्तिर्भ्रमति भुवने **रामचन्द्रः** स एषः ॥

संवत् १२२३ वर्षे ।

स्पष्ट है ।

[JASB, XVIII,p. 951-952, no 2, t. and tr.]

३७२

कम्बदहल्लि—कन्नड़ ।

[शक १०८६=११६७ ई०]

[कम्बदहल्लि (विण्डिगनबले प्रदेश) में, जैन बस्तिके रङ्ग-मण्डपमें]
स्वस्ति श्रीयुतमूलसंघमदु तां शङ्खं गणं देसियम् ।
पोस्थञ् गच्छमदन्वयं वेळे समं तां कोण्डकुन्दान्वयम् ।
भू-स्तुत्यं **हनसोगे**-दिव्य-मुनिगं पादार्च्चनक्कं कळा-
भ्यस्तरगं निज-वंशजर्गमिदु तां श्री-**पार्श्व**-दान-स्थळम् ॥
धरे तन्नं वण्णिसल् बिण्डिगनविलेयोळ् आ-**नेम-दण्डेश**-दिक्-कुञ्-
जरनय्यं पेट्ट-ताय् **मुद्दरसि** विमळ-गङ्गान्वय-ख्यातेयागल् ।
दोरेवेर्त्तीं-**पार्श्व-देव**-प्रभु कलि-युग-भीमार्हं-गेहादि-जीर्णो-
द्धरणं गेय्दावगं सोभिसे सोधे-वेसनं गेय्सिदं पुण्य-पुञ्जं ॥
सले देव-क्षेत्रदोळ् **बिण्डिगनविले**योळिर्प्पत्तु-नाल्-कण्डुगं नीर्-
ण्णेलनन्तव्यत्तरं वेद्दलयनति-ग्रळं नेम-मन्त्रीश-पुत्रम् ।

कुलकं तां **पार्श्व-देवं** सले कलि-युग-भीमार्ह-सत्-पूजेगोल्दी-
ये लसद्वंशयङ्गे दिव्य-व्रति-समितिगे विद्यार्थिगुत्साहदित्तम् ॥
शक-वर्ष १०८६ नेनेय सर्व्वजितु-संवत्सरद माघ व० ५ शुक्रवार-
दन्दु पार्श्व-देव चतुर्विध-दानके विट्ट दत्ति ॥

[यही स्थान है जो पार्श्वने श्री मूलसंघ देशिय-गण, पोस्तक-गच्छ और कोण्डकुन्दान्वयके हनसोगेके दिव्य मुनिके चरणोंकी पूजाके लिये, विद्वानोंके लिये तथा निजवंशजोंके लिये दिया था।

पार्श्वदेव-प्रभुने,—जिनके पिता नेम-दण्डेश थे और माता मुद्दरसि थीं जो विमल गङ्ग वंशमें प्रख्यात थीं,—विष्णिगनविलेके जैन मन्दिरको सुधरवाया, और उसके लिये कुछ जमीन अपने वंशजोंके लिये, दिव्य व्रतियोंके लिये, और विद्यार्थियोंके उपयोगके लिये दी।]

[EC, IV, Nagmangala Tl. No. 20]

३७३

वन्दूर—संस्कृत और कन्नड़

[शक १०९०=११६८ ई०]

[वन्दूर (जावगल्लु परगने) में, जैन-वस्तिके स्थलपर एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
जयति सकळविद्यादेवतारत्नपीठं
हृदयमनुपलेपं यस्य दीर्घं स देवः ।
जयति तदनु शास्त्रं तस्य यत् सर्व-मिथ्या-
समुग्र-तिमिर-हारि ज्योतिरेकं नराणाम् ॥
श्री-कान्तर्य्यदु-कुळ-र
त्नाकरदोळ् कौस्तुभादिगळ-नोलु पलरुं ।

लोकोपकार-परिणत- ।
रेकीकृत-सकल-राज-गुणरप्पिनेगम् ।
सळनेम्बनागे यादव- ।
कुळदोळ् पुलि पाचे कण्डु मुनि पुलियं पोयु ।
सळ एने पोय्दुदरिं पोय्- ।
सळ-वेसरवनिन्दवागे तद्वंशजरोळ् ॥
विनयं प्रतापमेम्बी- ।
जननाथोचित-चरित्र-युगदिं जगमं ।
जन-नयनवेनिसि नेगळ्दं ।
विनयादित्यं समस्त-भुवन-स्तुत्यम् ॥
आतङ्कति-महिमं हिम- ।
सेतु-समाख्यात-कीर्त्ति सन्मूर्त्ति-मनो- ।
जातं मर्दित-रिपु-नृप- ।
जातं तनुजातनादनेरेयङ्ग-नृपम् ।
वल्लिदरवनीपतिगळो- ।
ळेल्लं धर्म्मार्थ-काम-सिद्धि-वोलवनी- ।
वल्लभरातन तनयर् ।
व्वल्लाळं विट्टि-देवनुदयादित्यम् ॥
मूवररसुगळोळं तां ।
भाविसे मध्यमनदागियुं नृप-गुण-सद्- ।
भावदिनुत्तमनादम् ।
भावि-भवद्-भूत-विष्णु **विष्णु** नृपालम् ॥
मलेयं साधिसि माण्डने तळवनं काञ्ची-पुरं कोयतूर् ।
म्मले-नाडा-तुळु-नाडु नीलगिरिया-कोळाल-कोङु-नं- ।
गलियुच्चंगि-विराट-राज-नगरं वल्लूरिवेल्लं जा- ।
वलदिं लीलेये साध्यवादुदेणेयार् **विष्णु**-क्ष्मापाळ-र्कळ् ॥

अन्तेनिसिद विष्णु-मही- ।
कान्तन तनयं नवानुरूपोपायम् ।
सन्तत-भुज-प्रतापा- ।
क्रान्त-सरं **नारसिंह**नाहव-सिंहम् ॥
आ-**नारसिंह**-नृपतिय ।
मानस-कळ-हंसे पट्ट-**माडेविगे**-या- ।
त्री-नुतेगेचल-देविगं ।
नाना-गुण-गणद कणिगे चिन्तामणियोल् ॥
सकळ-कळा-परिपूर्ण ।
सच्छीर्वा-नयन-सुख-दन-कळङ्क तान् ।
अ-कुण्ठिळनपूर्व-नय-मं- ।
क्करं **यल्लाळ-देवनुरयं** गेय्दम् ॥
विनय-श्री-निधियं विवेक-निधियं ब्रह्मण्यनं पूर्ण-पु- ।
ण्यनमुद्दाम-यशोर्थियं जित-जगत्-प्रत्यर्थियं सर्व-सत्-।
वन-संस्तुत्यनमुद्भवद्-वितरण-श्री-**विक्रमादित्य**नं ।
मनुजेश्वर् मलेराज-राजननदेम्**यल्लाळ**नं पोल्वरे ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं । **द्वारावतीपुर**वराधीश्वरम् । **यादवान्वय**-सुधा-वार्धि-वर्द्धन-माकर-सान्द्र-चन्द्रम् । विभवाधरीकृतामरेन्द्रम् । वासन्तिका-देवी-लब्ध-वर-प्रसादम् । विरचित-वीर-वितरण-विनोदम् । रिपु-राज-कदली-दण्ड-खण्डन-प्रचण्ड-मद-वेदण्ड । मल्लपरोळ्-गण्ड-मण्डळिक-गिरि-वज्र-दण्ड । गण्ड-भेरुण्ड । रण-रंग-धीर । जगदेक-वीरक्-नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितम् । तळकाडु-कोङ्गु-नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोळम्बवाडि - हुळिगेरे-हलसिगे - बनवसे—हानुङ्गल् गोण्ड भुज-बल वीर-गङ्ग-प्रताप **होय्सळ-यल्लाळ-देवं** दोरसमुद्रद नेलेवीडिनोळ् सुखे क्रिया-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे तदन्वय-गुरु-कुळ-क्रममदेन्तेने ।

श्रीमद्-द्रमिळ-सङ्घेऽस्मिन्नन्दिसंघेऽस्त्यरुङ्गळः ।
अन्वयो भाति योऽशेष-शास्त्र-वारासि-पारगः ॥

श्री-वर्द्धमानस्वामिगळ धर्म्मतीर्थ प्रवर्त्तिसुवल्लि गणधररेनिसिद-[1] **गौतम-स्वामि-**गळिन्दं। **भद्रबाहु-भट्टारक**रिन्दं **भूतबलि-पुष्पदन्त-स्वामि**गळिन्दम् **एक-सन्धि-सुमति-भट्टारक**रिन्दन्। **समन्तभद्रस्वामि**गळिन्दम्। **भट्टाकलंक-देव**रिन्दन्। **वक्रग्रीवाचार्य्य**रिन्दं। **वज्रणन्दि-भट्टारक**रिन्दम्। **सिंह-णन्द्याचार्य**रिन्दम्। **पर-वादिमल्ल-श्रीपाळ-देव**रिन्दम्। **कनकसेन-श्री-वादिराज**रिन्दम्। **श्री-विजय-देव**रिन्दम्। **श्री-वादिराज-देव**रिन्दम्। **अजितसेन-पण्डितदेव**रिन्दन्। **मल्लिषेण-मळधारि-स्वामि**गळिन्दनन्तरम्।

तमगाज्ञा-वशमादुदुन्नत-महीभृत्-कोटि तम्मिन्दे विण्ण।
अमर्द्दत्ती-धरेगेय्दे तम्म-मुखदोळ् षट्-तर्क्क-वाराशि-वि-।
भ्रममापोपन-मात्रमादुदेनलि मातेनगल्य-प्रभा-।
वमुमं कीळ्पांडसित्तु पेम्पिनेसकं **श्रीपाल-योगोन्द्ररं**॥

अवर शिष्यरु॥

श्रीपाळ-त्रैविद्य-विद्या-पति-पद-कमलाराधना-लब्ध-बुद्धिः।
सिद्धान्ताम्भोनिधान-प्रविसरदमृतास्वाद-पुष्ट-प्रमोदः।
दीक्षा-शिक्षा-सु-रक्षा-क्रम-कृति-निपुणः सन्ततं भव्य-सेव्यः।
सोऽयं दाक्षिण्य-मूर्त्तिर्ज्जगति विजयते **वासुपूज्य-व्रतीन्द्रः**॥

अवर गुड्डुगळ् रत्न-त्रय-समन्वितर् व···-देवनातन वधु **सावियक्कम्**॥

अवर्गे तनूभवं जित-मनोभव-रूप-नपार-पौरुषम्।
विविध-कळा-विळास-भवनं प्रभु **वेळ्ळय-दासि-सेट्टि** भू-।
भुवनमनेय्दे रक्षिसुव दानद-धर्म्मद पेम्पिनिं सुधा-।
र्ण्णवदेणेयप्प कीर्त्तियनुपाज्जिसिदं विदुषैक-बान्धवम्॥
पडेवं सद्-धर्म्म-मर्य्यादेयोळे परदु-गोय्दर्थ्यमं न्यायदिन्दम्।
पडेदर्त्थं देवता-पूजेगे वसदिगे शिष्टेष्ट-दानक्के निच्चम्।
कुडे मत्तं तन्न भाग्यं तव-निधियेने नीळ्दुण्मि कैगण्मे पेम्पम्।
पडेदं देसं वियन्मण्डप-कळित-यशः-कल्पवल्ली-विलासम्॥

आतन सति **वोकियक्कं** ॥ अवर सोदरळियन्दिर् **हेग्गडे मादिराजनुं संकर-सेट्टियरुं** ॥ आ-वेल्लिय-दासि-सेट्टि दोरसमुद्रदल् माडिसिद होय्सळ-जिनालयक्के बिट्ट **वन्दवुर**दल्लि माडिरावनुं सङ्कर-सेट्टियुं माडिसिद पार्श्व-देवर्गे वसदिय **पुष्पसेन-देव**र्म्माडिसिदरादेवरष्ट-विधार्च्चनेगं ऋषिगळाहारदानक्कं जीर्णोद्धार-क्कवागि **वासुपूज्य-सिद्धान्त-देवरं** अवर शिष्य **पुष्पसेन-देवरं माडि-राजनुं संकर-सेट्टियुं** समस्त-प्रजे-गाबुण्डुगळु सरागदिन्दा-चन्द्रार्क्कं नडेवन्तागि शक-वर्ष १०९० चोन्दनेय सर्व्वधारि-संक्रमणदुत्तरायण-संक्रमण-ग्रहण-व्यतीपातदन्दु धारा-पूर्व्वकं बिट्ट तळ-वृत्ति ॥ (आगे की ६ पंक्तियोंमें दानकी विशेष चर्चा है) तुच्छद हेग्गडेगळ् बिट्ट नन्दा-दीविगेगे कै-गाण वोन्दु इन्तु वासुपूज्य-सिद्धान्त-देवर्त्तम्म शिष्य **वृषभनाथ-पण्डित**र्गिनितुवं धारा-पूर्व्वकं कोट्टर् (वे ही अन्तिम वाक्या-वयव और श्लोक)

त्रैविद्य-देव-शिष्यम् ।
देवार्च्चन-दान-धर्म्म-निरतं सततम् ।
देवव्रत-परिशुद्धम् ।
भू-विदितं **पुष्पसेन मुनि**-जन-विनुतम् ॥

[सर्व प्रथम जिन शासनकी प्रशंसामें दो श्लोक हैं। पहलेकी ही तरह होय्सल राजाओंकी उन्नतिका वर्णन। विष्णुके विषयमें कहा गया है,—मलेको अधीन करके क्या वह चुप रहा? तळकन, काञ्चीपुर, कोयटूर, मलेनाड्, तुळु-नाड्, नीलगिरि, कोळाळ, कोङ्कु, नङ्गलि, उच्चंगि, विराट्-राजा का नगर, वल्लूर,—इन सबको अपने भुजबलसे, लीलामात्रमें जीत लिया।

जिस समय (अपनी सर्व उपाधियों सहित), होय्सल वल्लाल-देव दोरसमुद्रमें निवास कर रहे थे:—उसके 'गुरुकुल' की परम्परा निम्नभाँति थी:—

द्रमिलसंघान्तर्गत नन्दिसंघमें एक अरुङ्गळ-अन्वय है, उसमें बड़े-बड़े शास्त्र-पारग विद्वान् आचार्य हो गये हैं। वर्द्धमान स्वामीके तीर्थमें क्रमसे इन लोगोंके द्वारा धर्मतीर्थका विकास हुआ,—गणधर गौतम स्वामी, भद्रबाहु-भट्टारक, भूतबलि

और पुष्पदन्त-स्वामी, एकसन्धि सुमति-भट्टारक, समन्तभद्र स्वामी, भट्टाकलंक-देव, वक्रग्रीवाचार्य्य, वज्रनन्दि-भट्टारक, सिंहनंद्याचार्य, परवादि-मल्ल श्रीपाल-देव, कनकसेन श्री-वादिराज, श्री-विजय-देव, श्री-वादिराज-देव, अजितसेन-पण्डित-देव, और मल्लिषेण-मलधारि-स्वामि: तदनन्तर श्रीपाल-योगीन्द्र हुए (इनकी प्रशंसा)। इनके मुख्य शिष्य वासुपूज्य-व्रतीन्द्र हुए (इनकी प्रशंसा)।

इनके गृहस्थ-शिष्य, रत्नत्रयके समान, व···देव, उसकी पत्नी सावियक्क, और इनका पुत्र (प्रशंसा पूर्वक) वेल्लिमें दासि-सेट्टि थे। इसकी पत्नी बोकियक्क थी। इन दोनोंकी बहिनके लड़के हेग्गड़े मादिराज तथा संकर-सेट्टि थे।

बन्दवुरमें मादिराज और संक-सेट्टिने पार्श्व-देवके लिये एक मन्दिरका निर्माण कराया, और पुष्पसेन-देवने पार्श्व-देवकी मूर्त्ति बनवायी। उन देवकी अष्टविध पूजनके लिये, मुनियोंको आहार देनेके लिये, तथा मन्दिरकी मरम्मतके लिये,—वासुपूज्य सिद्धन्ति-देव, उनके शिष्य पुष्पसेन देव, मादिराज, संकर-सेट्टि, तथा सभी प्रजा और किसानोंने (उक्त मिति को) ग्रहणके समय, ३३ बिलस्तके एक डण्डेसे नापकर भूमि-दान किया (भूमिका वर्णन)। 'मुङ्क' (या चुङ्गी)के हेग्गडेने हमेशा जलनेके लिये एक हाथकी तेलकी चक्की दी।

इस तरह यह सब वासुपूज्य-सिद्धान्त-देवने अपने शिष्य वृषभनाथ-पण्डितको सौंप दिया। हमेशाकी तरह अन्तिम श्लोक। पुष्पसेन-मुनिकी प्रशंसा।]

[EC. V, Arsikere Tl., No. 1.]

३७४

बिजोली;—संस्कृत।

[सं० १२२६ = ११७० ई०]

लेख श्वेताम्बर सम्प्रदाय का मालूम होता है।

[JASB, LV, p. 27–32, Tr ; p. 40–46, t.]

३७५

मूडहल्लि;—संस्कृत तथा गुजराती।

[कालनिर्देश नहीं, पर सम्भवतः लगभग ११७० ई० (लु. राइस)]

[मूडहल्लि (हदिनारु प्रदेश) में, चन्न-केशवके मन्दिरकी दीवाल-स्तम्भके ऊपर]

··· ··· ··· अति पूजित-यति वर्द्धमान अपश्चिम-तीर्थनाथ भगवान्मना दिश··· ···पतत··· ··· ···

श्रीमद्द्रमिल-संघेऽस्मिन्नन्दिसंघेऽस्त्यरुङ्गलः।
अन्वयो भाति निश्शेष-शास्त्र-वाराशि-पारगैः॥

(दूसरी तरफ)··· ··· ··· अजितसेन-देव-मुनिपो ह्याचार्यतां प्राप्तवान्।

[इस लेखमें द्रमिलसंघान्तर्गत नन्दिसंघके अरङ्गल अन्वयकी तारीफ है। इस अन्वयमें प्रायः सभी आचार्य या मुनि 'निश्शेष-शास्त्र-वाराशि-पारग' थे।··· ··· अजितसेन-देव मुनिने आचार्य पदवी प्राप्त की।]

[EC, III, Nanjangud Tl., No. 133.]

३७६

हुल्लीगेरी—संस्कृत

[बिना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग ११७० ई० (?)]

[हुल्लीगेरीपुर (कुदरेगुण्डी वाङ्मुक) में, बसत मन्दिर के सामनेके स्तम्भ पर]

श्रीम··· ···सर्व्व ने··· ···र्ं सायया मनेय मण्डुवा··· ···नित्य पूजा···ण
आसीत् संयमिना पृथ्व्यां होनेनान्यन्महातपः।
तच्छंसिना शील-स्तम्भो जिनचन्द्रेण निर्मितः॥

[इस पृथ्वी पर पशु-यज्ञके सिवाय संयमीके द्वारा प्रत्येक महातप विद्यमान था; इसको सर्वविदित करानेके लिये जिनचन्द्रने यह पाषाण-स्तम्भ खड़ा किया था।]

[EC, III, Mandya., Tl., No. 34.]

३७७

तेवरतेप्प—संस्कृत तथा कन्नड़।

११७१ ई०

[तेवरतेप्पमें, वीरभद्र मन्दिरके सामनेके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥
सागर-वारि-वेष्टित-समस्त-धरा-रमणी-घन-स्तना- ।
भोग विदेम्बिनं विदित-विस्तृत-सारताराग्रहारदिम् ।
नागरखण्ड-पत्र-परिवेष्टन्दिम् जन-नेत्र-पुत्रिका- ।
रागमनित्तु माण् दुदे मनस्-सुख-दं **बनवासि-मण्डळम्** ॥
बळसिद नन्दनावळिगळिं शुक-सङ्कुळदिं पिकाळियिम् ।
वळेदेरगिद्दं शालि-वनदिं भ्रमरालियिनित्तु-वाटियिम् ।
तिळगोळदिं लता-भवनदिं कमळाकरदिं कुमुद्वती- ।
कुळदिनिदेम् मनङ्गोळिपुदो सततं **बनवासि-मण्डळम्** ॥
अदनाळ्वनखिळ-रिपु-नृप- ।
मद-मर्द्दननर्त्थिगर्त्थमं पदेदीवम् ।
पद-नत-रक्षा-दक्षम् ।
विदित-यशं **सोविदेव**-भूतळनाथ ॥
आ-क्रादम्ब-कुळ-तिळकन विक्रम-प्रक्रमवेन्तेन्दडे ॥

(क) अदटर्म्मेय्यिक्के वीरर्व्विहदनुळिदु कुम्बिक्के विद्विष्ट-भूपर् ।
म्मदवं बिदिक्के शेषाक्षतमनोसेवरोलिक्के सर्व्वस्वमं व- ।
ल्लिदरुं तन्दिक्के मारान्तवनिप-सतियर् कृष्ण-नीरिक्के पूण्डि-
क्किदना-**चङ्गाळ्व**-धात्रीपतिगे निगळवं **सोविदेव**-क्षितीशं ॥
(क) ॥ मदवदरातियं तविसलग्गळ-गण्ण **कदम्ब-रुद्र**नेम्- ।

दुदे पेसरन्न-मण्डलिक-**गण्डर दावणि**येम्बुदे दिट्टक् ।
अदिरदराति- **मण्डलिक-भैरव**नेम्बुदे **सोवि-देव**नेम्- ।
दुदे **निगळंकमल्ल**-नृपनेम्बुदे **सत्य-पताक**नेम्बुदे ॥
क ॥ पर-नृप-वन्धकने गण्-।
टर दावणि कलिये मण्डलिक-भैरवनेम् ।
स्थिर-सत्य-वाक्यने हुसि- ।
वर शूलं **सोवि-देव**ननुपम-भावम् ॥
नागरखण्डं वनवेग्ग् ।
आगिक्कुं भूपण-लालन्तदरोळगम्- ।
वागि चलं **तेवरतेप्पम्** ।
नाग-लता-पूगा-वनदिनसद्धवेसेगुम् ॥
आ-तेवरतेप्पदधिपति ।
मूलरति **सोवि-देव**-पद-युगळ-सरो- ।
जात-मद-मधुक- वि- ।
ख्यात-यशं **वोप्प-गौण्ड**नाहव-शौण्ड ॥
वृत्त ॥ अमरेन्द्रं मन्त्रदोळ् शौचदोळमरनदीचं प्रजा-पाळन-प्र- ।
क्रमदोळ् धर्म्मात्मनं सप्रभुतेयोळमळान्जेक्षणं निश्चयं ता-
ने महो-लोकाग्रदोळ् गावण-कुळ-तिलकं वोप्प-गावुण्डनेन्देन्- ।
दु मनस्-सम्प्रीतियि वण्णिपुदखिळ-धरा-चक्रवानन्ददिन्दं ॥
आ-तेवरतेप्पदधिप- ।
ख्यातिय नानेननेननमिवर्ण्णिसुवेम् ।
मूतळमे ताने वर्ण्णिपुद् ।
ईतने गुणियेन्दु **वोप्प-गौड**ननिशम् ॥
आ-विभुविन सति **लक्ष्मी**- ।
देविगे सौभाग्य-भाग्य-लक्षण-गुण-सद्- ।
भावाकृतियिन्दं मेल् ।

भू-विदितं **चाविकब्बे-गवुंडि** नितान्त ॥

वृत्त ॥ सण्डद वम्मि-सेट्टि-गुणि-भव्य-शिखामणि-कल्लि-सेट्टिगळ् ।
मण्डळ-वन्द्यरन्नरोडवुत्तिदळेम्बिनितल्ल **बोप्प-गा-** ।
वुण्डन पेर्म्मे-वेत्त सति सर्व्व-गुणान्विते **चाविकब्बे-गा-** ।
वुण्डियेनल्के वण्णिसदरार् भुवनान्तरदोळ् निरन्तरम् ।
आ-महा-प्रभुवेनिप्प तेवरतेप्पद **बोप्प-गावुण्डगं चाविकब्बे-गावुण्डिगम्** ॥

क ॥ उदय-गिरियं दिनाधिपन् ।
उदधियिनमृतांशु-मण्डलं शुक्तिकेयिन्द् ।
ओदविद मौक्तकवोगेवन्त् ।
उदयिसिदं **लोक-गौण्ड**नेम्ब महात्म ॥

वृत्त ॥ आतन माते मातु घरेगातन पूङ्के ये मिक्क पूङ्के सन्द्- ।
आतन वण्टे वण्टु नेगळ्दातन बुद्धिये शुद्ध-बुद्धि मिक्क्- ।
आतन साहसं **नेरेये** साहसवेन्दभिवर्ण्णिकुं धरि- ।
त्रीतळवागळुं तेवरतेप्पद नाळ्-प्रभु लोक-गौण्डन ॥

वृत्त ॥ एत्तिसिदं जिनेन्द्र-गृहमं घरे वण्णिसलेय्दे तन्न मेय्- ।
वट्टिसिदं प्रजा-प्रकरवं रिपु-वर्ग्गद वाय व्रागिलोळ् ।
तेत्तिसिदं पलर् ब्वेदरे कूरलगं निज-कीर्त्ति-वल्लियम् ।
पत्तिसिदं दिगन्तवनिदेम् कृतकृत्यनो लोकनुर्व्वियोळ् ॥

क ॥ केरे बावि देवता-गृहव् ।
अरवन्तिगे सत्रवेम्बिवं पडि सलिपम् ।
नेरेये पर-हितविदेन्दिद् ।
अरिकेय नाळ्-गौडनेनिप लोक-गावुण्डम् ॥

व ॥ आ-महा-प्रभुविन सतिय शील-गुणवेन्तेन्दडे ॥

क ॥ **तोत्तूर गोय्द-गवुडन** ।
हेत्त-मगळ् **काळिकब्बे-गावुण्डि** जगम् ।
बिट्टरिसे सकळ-शील-गु- ।

णोत्तमे नेगळ्द्दत्तिमन्वेयं गेलेवन्दळ् ॥
आ-**काळिकब्बे**-गावुदि क- ।
ळा-कुशले विनेन्द्र-धर्म्म-निर्म्मळे सततम् ।
लोक-गावुण्डन कुल-वधु ।
लोक-प्रख्याते सीतेयन्तेसेदिप्पळ् ॥

स्वस्ति श्रीमत्-कळतुर्य्य-चक्रवर्त्ति राय-मुरारि भुज-बळ-मल्ल **सोपि-देव**-वरिषद नाल्केनेय **विकृत-संवत्सरद पौष्य-शुद्ध-पुण्णमो-सोमवार** उत्तरायण-संक्रमण-पुण्य-दिनदोळु **तेवरतेप्पद लोक-गावुण्डं** तन्न माडिसिद रत्नत्रय-देवर अष्ट-विधार्च्चनक्कं वन्द होद ऋषियराहार-दानक्कं श्रीमतु-महा-मण्डलाचार्य्यरप्प **भानु-कीर्त्ति-सैद्धान्तिक-देव**र्गे कालं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्ट गद्दे (यहाँ पर दानकी विशेष चर्चा और वे ही अन्तिम वाक्यावयव आते हैं) आ-महा-प्रभु-विन ष्यिरिय-गुरुगळप्प **मुनिचन्द्र-देव**र तपः—प्रभावमेन्तेन्दडे ॥

वृत्त ॥ मन्तणमेम् समस्त-परमागमदोळ् पद-शास्त्रदोळ् प्रमा- ।
णान्तरदोळ् समस्त-गणितङ्गळोळोर्व्वने तज्ञनागि चै- ।
रन्तन-मार्गदिं नडदु विश्व-नुतं **मुनिचन्द्र-देव**-सै- ।
द्धान्तिक-चक्रवर्त्ति जसमं देसेयन्तु-वरं निमिर्च्चिदम् ॥

आ-दिव्य-मुनीन्द्र प्रिय-शिष्यरप्प मन्त्रवादि-**भानुकीर्त्ति-सैद्धान्तिक**र गुण-प्रभावमेन्तेन्दडे ॥

पेसर्वेत्तुग्र-समग्र-देवतेयरुं तं तम्म पीठाग्रदिम् ।
पेसर्गेळाल् विरतोडिपोगि नडुगुत्तिप्पंर् क्करं यक्ष-रा- ।
क्षस-गान्धर्व्व-पिशाच-भूत-फणि वेताळादि-तीव्र-ग्रहम् ।
वेसनेनेम्बुवु **भानुकीर्त्ति**-मुनिपाशा-शक्ति सामान्यमेम् ॥
-ऽरगोग्र-ग्रह-शाकिनी-विहग-भूत-प्रेत-रण्डङ्ग-भेन् ।
तर-पैशाच-निशाचराद्भुत-गणं भू-चक्रदोळ् तोरलु- ।
द्धारिसित्तमन्तदे यन्त्र ओदिदुदे मन्त्रं कोट्ट वेर् तन्त्रव- ।

च्चरि **सैद्धान्तिक-भानुकीर्त्ति-मुनि**नाथोग्राज्ञे सामान्यमे ॥
श्रीमन्मूल-गदादि-सङ्घ-तिलके श्री-कुण्डकुन्दान्वये ।
काणूर्-न्नाम-गणोत्स-गत्स-शुभगे भू-तिन्त्रिणीकाह्वये ।
शिष्यः श्री-**मुनिचन्द्र-देव-यमिनः** सिद्धान्त-पारङ्गमो ।
जीयाद् **बन्दणिका-पुरेश**वरतया श्री-**भानुकीर्तिर्म्मुनिः** ॥

[जिन शासनकी प्रशंसा। बनवासि-मण्डलमें नागरखण्डका स्थान वही था जोकि स्त्रीके शरीरमें स्तन्यका होता है। बनवासि-मण्डलका वर्णन। इसके शासक सोवि-देव थे, जो कि कादम्ब-कुलके तिलक थे। उसके पराक्रमकी प्रशंसा,—चङ्गाळ्व राजाको हराकर जञ्जीरोंसे जकड़ दिया था। इससे उसका नाम कदम्ब-रुद्र, गण्डर-दावणि, मण्डलिक-भैरव, निगलंक-मल्ल, तथा सत्यपताक पड़ गया था।

नागरखण्डकी ही तरह, तेवरतप्पे भी बनवसेका तिलक (भूषण) था, और उसमें नागकी लतायें तथा पूग (सुपारी) के बगीचे थे। सोवि-देव राजाके चरण-कमलोंका भ्रमर, तेवरतेप्पका अधिपति बोप्प-गौण्ड था; उसकी प्रशंसायें। उसकी पत्नी चाविकब्बे-गवुडि थी, जिसके भाई बम्मि-सेट्टि तथा कल्लि-सेट्टि थे। बोप्प-गावुण्ड और चाविकब्बे-गवुण्डिके लोक-गवुण्ड उत्पन्न हुआ था, जो तेवरतेप्पका नाळ्-प्रभु था। उसने एक जिनेन्द्र-मन्दिर बनवाया था, एक तालाब, एक कुँआ, और मन्दिरके लिय एक चहबच्चा (Water shed) तथा एक सत्र भी खोला था। उसकी पत्नी जो तोर्-र गोव्द-गवुड तथा काळिकब्बे-गवुण्डिकी पुत्रि थी—ने प्रसिद्ध अत्तिमब्बेकी ही भाँति दुनियामें प्रशंसा प्राप्त की थी; उसकी प्रशंसायें।

कळत्सूर्य्य-चक्रवर्त्ति राय-मुरारि भुजबळ-मल्ल सोवि-देवके चौथे सालमें (उक्त-मितिको),—तेवरतप्प लोक-गावुण्डने महा-मण्डलाचार्य्य भानुकीर्त्ति-सैद्धान्तिक-देवके चरणोंका प्रक्षालन कर (उक्त) भूमि दान दिया। हमेशाके अन्तिम श्लोक।

गुरु मुनिचन्द्र-देव और उनके शिष्य भानुकीर्त्ति-सैद्धान्तिक की प्रशंसा।
।स-मुनि यन्त्र, मन्त्र और तन्त्र में बहुत हुशियार थे।

मूलसंघ, कुण्डकुन्दान्वय-काणूर्-गण तथा तिन्त्रीणि-गाता (गच्छ) के मुनिचन्द्र-देव-यमीके शिष्य भानुकीत्ति-मुनि—जो बन्दणिका-पुरके अधिपति थे—जयवन्त हों।]

[EC, VIII, Serab. Tl., No. 345.]

३७८

अङ्कडि—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न।

[शक १०९९ = ११७२ ई०]

[अङ्कडि (गोणीबीडु परगना) में, बसदिके पासके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥
श्री-नन्दि-ना.....होवंगिय वसदियरं आचङ्गे.....होसत्र-कम्बरस मा.....न्तङ्गनिर्डिसिद शक...१०९४ नन्दन-संवत्सर (यहाँ खत्म हो जाता है।)

[जिन शासन की प्रशंसा। होसत्रके कम्बरसने (उक्त मितिको) होन्नङ्गीकी वसदिके लिये दान दिया।]

[EC, VI, Mudgere tl., no 12.]

३७९

मर्कुली—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न।

[शक १०९५ = ११७३ ई०]

(मर्कुली [ग्राम परगना] में, किलेके अन्दरकी बस्तिके पाषाणपर)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥
श्रीमद्द्रमिलसंघेऽस्मिन् नन्दिसंघेऽस्यरुङ्गलः।

अन्वयो भाति निश्शेष-शास्त्र-वाराशि-पारगैः ॥
श्री-कान्तर् **य्यदुकुल**-र- । त्नाकरदोळ् कौस्तुभादिगळन्तोल् पलरुं ।
लोकोपकार-परिणत- । रेकीकृत-सकळ-राज-गुणरप्पिनेगं ॥
मळनेम्बनागे **यादव** - । **कुळ**दोळ् पुलि पाये कण्डु मुनि पुलियं **पोय्** ।
सळयेने पोय्युदरिं पोय्- । सळ-वेसरवनिन्दमागे तद्वंशजरोळ् ॥
विनयं प्रतापमेम्बी । जननाथोचित-चरित्र-युगदिं जगदोळ् ।
जन-नयनमेनिसि नेगल्दं । **विनयादित्यं** समस्त-भुवन-स्तुत्यं ॥
आतंगति महिमं हिम- । सेतु-समाख्यात-कीर्त्ति सन्मूर्त्ति-मनो- ।
जातं मर्द्दित-रिपु-नृप- । जातं तनुजातनाद**नेरेयङ्ग**-नृपम् ॥
एरेगिद जनक्के पोम्-मुगि- । ळेरगिदवोळु लोकवड्डमेने पोम्मळेयं ।
करेवनुरदेरगदहितगेरगिद वर-सिडिळेनिप्पनेरेयङ्ग-नृपं ॥
बल्लिदरवनीपतिगळो- । ळेल्लं धर्म्मार्थकामसिद्धिवोलवनी- ।
वल्लभरातन तनयर् । **वल्लाळं विट्टि-देवनुदयादित्यम्** ॥
मूवररसुगळोळं तं । भाविसे मध्यमनदागियुं नृप-गुण-सद्- ।
भावदिनुत्तमनाद । भावि-भवद्-भूत-जिष्णु-**विष्णु** नृपाळम् ॥
मलेय साधुसि माण्डने **तळवनं काञ्चीपुरं कोयतूर्** ।
म्मळेनाडा-तूळ् नाडु नीलगिरिया-**कोळालमा-कोङ्गु नं**- ।
गलियुच्चंगि विराट-राज-नगरं **वल्लूरि** वेल्लं स्व-दोर्- ।
ब्बलदिं लीलेये साध्यमादुवेणेयार् **विष्णु**-क्ष्मापाळनोळ् ॥
पड्डवण तेङ्कण मूडण । गडिगळ् तन्नाळ्व-नेलके मूरु-समुद्रं ।
बडगळ् **पेद्दोरे** तां गडि । गडियिल्ला- **विष्णु** किडसिदाहितर्गेन्तुम् ॥
मण्डलमं निजमं द्विज- । मण्डलिगं देवतालयक्कं कोट्टम् ।
खण्डेय वट्टलेयिं पर- । मण्डलमं वीर-**विष्णुवर्द्धन**नाळ्दम् ॥
अन्तेनिसिद विष्णु मही- । कान्तन तनयं नयानुरूपोपायम् ।
सन्तत-भुज-प्रतापा- । क्रान्त-पदं **नारसिंह**नाहव-सिंहम् ॥
रिपु-सर्प्पद्-दर्प्प-दावानळ-वहळ-शिखा-जाळ-काळाम्बुवाहं ।

रिपु-भूपाळ-प्रदीप-प्रकर-पटुतर-स्फार-फूत्कार-समीरन् ।
रिपु-नागानीक-तार्क्ष्यं रिपु-नृप-नळिनी-षण्ड-वेतण्ड-रूपं ।
रिपु-भूभृद्-भूरि-वज्रं रिपु-नृप-मद-मातंग-सिंहं नृसिंहन् ॥
स्थिरने भूभृद्धीश्वरं स-घनने लक्ष्मी-सुतं मूर्त्ति-ना- ।
दुरने विष्णु-तनूभवं सुमटने वां **नारसिंहं** गडन् ।
स्थिर-तेजस्विये विश्व-विक्रम-गुणं नैसर्गिकं नोळ्पडी- ।
नरसिंहङ्गेणे·····गुणाद्यारोप-भूपाळकर् ॥
आ-विभुविन पट्ट-महा- । देवी पतिव्रते चरित्रदिन्दं सीता- ।
देविगे मिगिलादेचल- । **देवी** समस्तार्थ-कल्पवल्लियेनिप्पळ् ॥
अन्तेसेदेचल-देविंय- । नन्तयशो-गर्व्म-गर्व्म-दुर्वाम्बुधियिं ।
कान्ताङ्गनत्रि-पुत्रन । कान्तिहरं ध्वान्तहारि कुवलय-मित्रम् ॥
सकळ-कळा-परिपूर्ण । सकलोर्व्वी-नयन-सुरद्रुदनकळंक मत्- ।
तकुळिनपूर्व्व-नव-शी । तकरं **वल्लाळ-देवनुद्** गेय्दं ॥
विनयं विक्रान्ति पुण्योदयमिवरोळगे लोकैक-सन्वान-सम्पत् ।
वनितैकायत्त-राज्यं सुदृढ़मेनिपुदी-स्थैर्य्य-सत्-कीर्त्ति-सम्पत् ।
त्ति-निमित्तं पेट्टु मुं मुप्पुरि-वेडेदु मयावत्त···दि वल्ला- ।
ळन राज्यं राम-राज्यं सकळ-जन-मनः-प्राज्यमत्यन्त-पूज्यम् ॥
विनय-श्री-निधियं विवेक-निधियं ब्रह्मण्यनं पूर्ण्ण-पु- ।
ण्यनुदाम-यशोर्त्तियं चित्त-जगत्-प्रत्यर्त्तियं सर्व्व-सत्- ।
जन-संस्तुत्यननुद्भवद्वितरण-श्री-**विक्रमादित्य**नन् ।
मनुजेशर् यदु-राव-राजननदेम्**वल्लाळ**नं पोल्वरे ॥
इदु सर्व्व-प्राप्तं गोळ्- । पुडु भास्वद्राज-मण्डलङ्गळ निर्मो- ।
ल्द···म्दिनमी- । -यदुपति **वल्लाळ**-वाहु-राहु विचित्रन् ॥
द्विरिमङ्गळ् मद-विह्वळंगळ् अचळं कल् कूर्म्मनिन्तोर्म्मेयुं ।
भोगमीयं भुजगाधिपं विष-धरं सारल्कयोग्यङ्गळेन्- ।
दु गुणोदग्र-समग्र-लक्षण-लसद्दोर्दण्डदोळ् सन्तोसं ।

मिगे भू-कामिनियिर्द्दपळ्·····**वल्लाळ**-भूपालना ॥
आ-वल्लाणन राज्य-। श्री·····।
श्री-**वूचि-राज**नेसदनि-ळा-बुधर्ग्गनिमित्त-बान्धव·····॥
·····कुळित-श्रीपाद-परम···विनुत-**श्रीपाल-त्रैविद्य**-सेवा-सम्पादित-सकल-शास्त्रालोकं·····गुणवति···देवनय्यनेसेवा-सुग्गव्वे ताय्·····दक्कुलाङ्गने···चलदिं···गुण-सम्पन्नर् स्तुतरु राय·····मल्लियणदेवनुं·····वरदं···॥···शास्त्रद·····आश्रिताशेष-विघ्नमं परिहरि···प्रभीष्टव···अर्तीत-नयं कोन्दु कय्योळा···गणि प्रधानते वृषान्वितेया···समुद्भव स्थिरतर शक्तिये···सुतं·····
सर्व्वजनसम्मदप्रद-। नुर्व्वीश्वर-मन्त्रि-मण्डलालङ्कारम्।
सर्व्वोपका·····च-। तुर्व्विध-पाण्डित्य-मण्डितं **वूचरसं** ॥
वाचकन्-वाचस्पति···।···चार्य्यं श्राव्य-काव्य-रस·····अर्था-।
लोचन-चक्षु परार्थद।·····प्रिय-हितार्थं-वाचं **वूचम्** ॥
कन्नडदोळ् संस्कृतदोळ्। चन्नमेने·····मे-।
णिन्निनितुमिं पेररेने।·····उभयकवितेयिं **वूचण**नोळ्॥
सिद्धान्तार्थमशेषं। शुद्धान्त···यादवं चतुरुपधा-।
शुद्धं तत्त्वार्थसंग्रह-।···ग्रह-कृतार्थनो **वूचरसं**॥
पडेदर्त्थं जिन-पूजेगं···अभिपवक्काहार-दानक्के शी-।
लोडेयग्गोश्रितग्गर्त्थिगळ्गे विबुधर्ग्गिष्टर्ग्गे शिष्टर्ग्गे···।
···गे जिनालयक्के सततं सम्पूर्णमागिर्प्पुडेन्-।
दोडे मन्त्रीश्वर-वूचि-राजने बळं धन्यं पेरर् द्धन्यरे॥
आङ्गिरस-गोत्र···।···निळयं विनूत-जननं परिशुद्-।
धाङ्गिरस-बुद्धि कलि-का-।लाङ्गिरस जाति···डं **वूचरसं** ॥
आ-पुरुष-रत्नमे···।···नृप-**वल्लाळ**-मन्त्रि-वूचङ्गे नृप-।
श्री-पूर्ण-पुण्ये **शान्तले**। रूपातिशयानुरूप-मति सतियादळ्॥
र्पात-भक्तियिन्दे दान-गुणदुन्-। नतियिं जिनपूजनाभिषवणोत्सवदिं।
स्थिति-सुतेयं···मन्वेय। नतिशयदिं शान्तियक्कनुळिदवरळ्वे॥

·····नयमं । विनेय-ततिगिन्तु पूर्ण्ण-यशमं पेट्टल्प्य ।
जन-विनुते शान्तियक्कं । जिन-गुण-सम्पत्ति नोम्मियुद्यापने···॥
···आराध्यननून-दान-गुणदिं विक्रान्तियिं सर्व्व-सज्-।
जन-मान्यर् मरियानेयुं **भरत**नुं दण्डाधिपर् तन्देविर् ।
त्तनगि·····जन-प्रस्तुत्यनन्तत्रि····· ।
···पुण्यात्मन धर्म्म-पत्निगेणेयार् स्सान्तव्वेगी-कान्तेयर् ॥
आ-**शान्तल-देवि**गमति ।···गुरु मन्त्रि-वूचणङ्गं **रा**- ।
···**राज** पुट्टिद- । नानि यवोळुमेगवा-रुद्रङ्गम् ॥
रवियं तेवदिन् इन्द्र-मूरुह···दत्तियर्····· ।
भवदिं··· ·····शाक्यङ्गळर् ।
पुवु···न पेङ्गळिं निमियदिं धर्म्मङ्गळं कूडे मा- ।
·····॥
·····किरियं । तोयधि-गम्भीरनाहितोत्तम-दान-१
श्रेया·····वि । नेयोपायं·····॥
·····विस- । लरि···पर-वधु परार्त्थमेन्ददळिपल् ।
केरेयं वेडिद वन्दिगे । मरेदुं····· ॥

·····स्वस्ति समाधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं **द्वारावतीपुर**वराधीश्वरं **यादवकुळाम्बरद्युमणि** सम्यक्त्व चूडामणि मलेपरोळ् गण्ड तळकाडु-कोङ्गु-नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोणम्बवाडि-वनवसे-हानुङ्गल्-गोण्ड·····नसहाय-शूर निश्शङ्क-प्रताप-होय्सळ-**चक्काळदेव**रु श्रीमद्राजधानी-**दोरसमुद्र**दल्लि **शक-वर्ष १०६५ नेय विजय-संवत्सरद श्रावण शुद्ध ११ आदिवारदन्दु** तम्म पट्ट-बन्धोत्सवदोळ् महा-दानङ्गळं माडुत्तमिप्प समयदोळ् श्रीमत्सन्धिविग्रही···**मय्य**ङ्गळ् **सोग्गे**नाडोळगण **मरिकलि** योळ् तावु माडिसिद **त्रिकूट-जिनालय**क्काबूरं देवं जैगमाहार-दानक्कं जीर्णोद्धारक्कमा-चन्द्रार्क्कतारं-वरं नडवन्तागि पादपूजेयं तेत्तु सर्व्व-नमस्यवागि दत्तियं धारा पूर्व्वकं माडिदु श्रीमद्-द्रमिळ-संघद**रु**ङ्गळान्वयद **श्रीपाळ-त्रैविद्य-देव**र शिष्यरप्प श्रीमद्**भासु**पूज्य-**सिद्धान्त-देव**र कालं कर्चि

धारेयेरेदु कोट्टरन्तु देव-दा·····(६ अस्पष्ट पंक्तियोंके बाद वे ही अन्तिम श्लोक आते हैं) भद्रमस्तु जिन-शासनाय। मङ्गळमहा श्री श्री श्री श्री **विजय-संवत्सरद** कार्त्तिक शु० ८ ···वारदन्दु केम्मटद माचय्यनुं·· अधिकारिगळगिलेय··) सोमेयनुं बाळचन्द्र-देवर गुड्ड **हेग्गडे-चन्नय्य**नु मरिकलिय त्रिकूटजिनालयक्का-वूर·····आगन्तुक-मदुवे-वण्णिगे-मग्ग-गाण-वोळवारु-होरवारोळगागि समस्त-सुङ्कवमा-चन्द्रार्क्क तारं-वरं नडवन्तागि धारेयेरेदु कोट्टर् (वे ही अन्तिम वाक्यावयव)।

[जिन शासनकी प्रशंसाके बाद द्रमिल-संघके अन्तर्गत नन्दिसंघके अरुङ्गलान्वयकी भी प्रशंसा।

यदुकुलके राजाओंमेंसे एक 'सल' नामका राजा था। इसका मुनि के 'पोयसल' कहनेसे चीतेको मारनेसे 'पोय्सळ' नाम पड़ा। उसीके वंशमें (प्रशंसाओंको छोड़कर) विनयादित्य हुआ, जिसका पुत्र एरेयङ्ग हुआ। उसके तीन पुत्र—वल्लाल, विट्टिदेव (विष्णुवर्द्धन) और उदयादित्य हुए। इनमेंसे बीचका विष्णु प्रधान हो गया। मलेयको लेकर क्या वह चुप बैठा? तळवन, काञ्चीपुर, कोयतूर, मले-नाड्, तुलु-नाड्, नीलगिरि, कोळाल, कोङ्गु, नङ्गलि, उच्चंगि, विराट-राजका नगर वल्लूर,—इन सबको, जैसे लीलामात्रमें ही, अपने भुजबलसे अधीनस्थ कर लिया। पूर्व, दक्षिण और पश्चिममें उसके राज्यकी सीमा समुद्र था, उत्तरमें पेद्दोरेको उसने अपनी सीमा बनाया। उसने अपना निजी देश ब्राह्मणों और देवोंको दे दिया, और स्वयं अपनी तलवारके बलसे जीते हुए विदेशी देशों पर राज्य करने लगा। उसका पुत्र नारसिंह था, जिसकी पत्नीका नाम एचल-देवी था। उन दोनोंका पुत्र वल्लाल-देव हुआ, जिसका राज्य रामके राज्यकी तरह समृद्ध था।

उसके राज्यमें **बूचि-राज** (प्रशंसा सहित) बड़े प्रधानकी तरह [illegible]। ये दोनों ही भाषा—कन्नड़ और संस्कृतके जानकार तथा दोनों ही कविताकी [illegible] करते थे। उसकी पत्नी शान्तल थी, जिसके पिता (और चाचा)

भरियाणे और भरत थे। शान्तलदेवी और मन्त्री बूचनसे रा·····राव उत्पन्न हुआ था।

तब (अपनी उपाधियों सहित) होय्सळ-वल्लाल-देव (उक्त मितिको) राजधानी दोरसमुद्रमें था और अपने राज्याभिषेकके उत्सवमें बहुत दान (भेंटें) बाँट रहा था, सन्धिविग्रही मन्त्री बूचिमय्यने, सिगेनाड्में मरिकलोमें त्रिकूट-जिनालय बनवाकर उस गाँवको, देवताकी पूजाके प्रबन्धके लिये, आहार दान देने तथा मन्दिरकी मरम्मतके लिये द्रमिल-संघके अरुङ्गळान्वयके श्रीपाल-त्रैविद्य-देवके शिष्य वादिपूज्य-सिद्धान्त-देवके चरणोंका प्रक्षालन करके उनकी भेंट कर दिया। (वे ही अन्तिम श्लोक।)

तथा हेग्गडे-चल्लय्यने मन्दिरके लिये उस गाँवमें शादी, मृत्यु, करघे और कोल्हुओंके ऊपर लगे हुए कर, बाज़ारमें आयात माल पर तथा स्थानीय बिक्री पर लगी हुई चुङ्गीका पैसा भी दिया।]

[E C, V, Hassan tl., no 119.]

३८०

मुगुलूर;—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न

[वर्ष उद्गारी ?]

[मुगुळूर (चैकहल्लि परगने) में, वस्तीके सामनेके पाषाणपर]

जयति सकल-विद्या-देवता-रत्न-पीठं
हृदयमनुपलेपं यस्य दीर्घं स देवः।
तदनु जयति शास्त्रं तस्य यत् सर्व्व-मिथ्या-
समय-तिमिर-व्राति ज्योतिरेकं नराणम् ॥
श्रीमद्द्रमिळ-संघेऽस्मिन्नन्दिसंघेऽत्यरुङ्गळः।
अन्वयो भाति निश्शेष-शास्त्र-वाराशि-पारगैः ॥
श्रीमत्त्रैविद्यविद्यापतिपदकमलाराधनालब्धबुद्धिः

सिद्धान्ताम्भोनिधान-प्रविसरदमृतास्वादपुष्ट प्रमोदः ।
दीक्षा-शिक्षा-सुरक्षाक्रमकृतिनिपुणस्सन्ततं भव्य-सेव्यः
सोऽयं दाक्षिण्य-मूर्त्तिर्ज्जगति विजयते **वासुपूज्य-व्रतीन्द्रः** ॥
श्रीमत्-**वज्रणंदि-देवर** शिष्यरु मुगुळिय **पारुश्व-देवरु रुधिरोद्गारि-संवत्सरद** भाद्रपद-व १३ ब्र ॥... ... ...

लेख स्पष्ट है ।

[EC. V, Harsam Tl., No. 128.]

३८१

बेक्क;—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक १०९५ = ११७३ ई०]

[जै. शि. सं०, प्र. भा.]

३८२

दोहद;—संस्कृत-भग्न

[श्वेताम्बर सम्प्रदायका लेख]

[IA, X, p. 158, t.]

३८३

करडालु;—कन्नड ।

[काल निर्देश रहित, पर ११७४ ई० ? (लू. राइस) ।]

[करडालुमें, ध्वस्त बस्तिमें एक खम्भेपर]

अनुपम-पुण्य-भाजने जिनेन्द्र-पदाब्ज-विलीन-चित्ते पा-
वन-सु-चरित्रे **हर्य्यले-महासति** तन्नवसान-कालदोळ् ।

मनुज-मनोदनं करेदु **वृषभ-नायक** केम्मगेन्न नीम् ।
कनस्निोळ्नडं नेनेयदिर्नेने लात्वतमप्प धर्म्ममम् ॥
धर्म्मनलागळुं मुदवे माल्पुदु माडिदोडप्पुदावुदा- ।
धर्म्मदिनेम्बेयप्पोडे सुरेन्द्र-नरेन्द्र-फणीन्द्र-राज्यमम्- ।
तोर्न्मोदलप्पुदागि कडेयोळ् वर-मुक्तियनीवुदन्तरिम् ।
धर्म्म दनागु सत्य-निधि वृषभ-नायक वेडिकोण्डे नाम् ॥
एनगनुमोदन-पुष्पम् ।
निनगं निस्तीममप्प पुण्यं सार्गुन् ।
मनमोसेदु माडिसोन्दम् ।
जिन-गृहमं **वृषि-देव** धर्म-शुरीणा ॥
एन्देन्दळेन्न देवर- ।
नेप्पङ्गं नीने पूजिसि चिक्कयनम् ।
कुन्दि करिगन्द दन्ता- ।
नन्दवे रत्निपुदुपेच्चे गेय्दडे दोषम् ॥
तदनन्तरमभिषेकं ।
मुडदिं जिन-पतिगे माडि गन्धोदकमम् ।
सदमळ-चरित्रे कोण्डळ् ।
वेदरिपेनव-वलमनेम्बो-मनदुत्सवदिम् ॥
तोरेदु जिनेन्द्र-चन्द्र-पद-सन्निधियोळ् पद-पङ्कजङ्गळम् ।
मरेयदे मोरेनुच्चरिसुतुं नेरे दुश्चित मोह-पाशमम् ।
परिदु जगत्रयं पोगळे **हृद्यले** नारि समन्तु तैप्पु कण्- ।
दरेदवोलेन् समाधि-विधियिन्दिरदेय्दिदळिन्द्र-लोकमम् ॥
करवं केळ्दमरावर्ता-पुरद-देवी-सङ्कुळं क्रन्दु नू- ।
पुरमन्मुत्तिन हारमं कटकमं केयूरमं वज्रदुङ्- ।
गुरमं माणिक्यदोलेयं तुडिसि वेगं दैवि नीनेरु रा- ।
ग-रसं· · · · मिगली-विमानमनेनुत्तं तन्दवर् स्वार्चिदर ॥

ऐरि विमानमं वरे सुराङ्गनेयर् नळि-तो.[ळ]··· ··· ···।
त्तोरविनं महोत्सवदे सेसयनिंक्के सुरानक-स्वनम्।
मीरे घनाघन-ध्वनियनेत्तिद सत्तिगे चन्द्र-विम्बमम्।
वीरे विलासदिं विडिदु चामरमिक्कि समन्तु पोक्कळा-।
नीरे महानुभावे सति **हर्य्यल-देवि** सुरेन्द्र-लोकमम्॥

[(प्रशंसा सहित) महासती हर्य्यलेने अपनी मृत्युके समय, अपने पुत्र बूवय-नायकको बुलाकर कहा,—स्वप्न में भी मेरा ख़याल न करना, लेकिन धर्म्मका ही विचार करना। हमेशा धर्म्म करो, क्योंकि ऐसा करने से तुम्हें इनाम (जिनके नाम दिये हैं) मिलेगा। हे बूवि-देव! यदि मुझे और तुझे दोनोंको पुण्योपार्जन करना है, तो जिन मन्दिर बनवाओ। मेरे देवके मित्रोंका (?) हमेशा आदर करना और अपने लघु चाचाका हमेशा खयाल रखना। इसके बाद, जिनपतिपर लेप करके, उसने चन्दनका जल लिया इस निश्चयसे कि वह अपने तमाम पापोंको धो दे।

तब, जिनेन्द्रके चरणोंकी उपस्थितिमें, बिना भूले पाँच शब्दों (पञ्च नमस्कार मंत्र) को बहुत जोरसे उच्चारण करते हुए, जिन इच्छाओंके जालसे वह घिरी हुई थी, उसे तोड़ते हुए, स्त्री हर्य्यलेने, समाधिके आश्रयसे इन्द्रलोकमें प्रवेश किया।]

[EC, XII, Tiptur Tl, No. 93.]

३८४

करडालु;—कन्नड़।

वर्ष जय [= ११७४ ई० ? (लू. राइस)।]

[करडालुमें, ध्वस्त बस्तिमें एक खम्भेपर]

··· ··· श्री-**चान्द्रायण-देवर**··· ··· **ह-(हरि)हर-देवि**॥
स (श) तपत्र-व्रजदिं सरोवर-कुलं मेरु प्र-कूट-प्रभोन्-।

नतियिन्द्रिजेयिं मदेम-वटेयिं सैन्याळि सन्-मार्ग··· ··· ।
··· ··· काव्य-निबन्धमेन्तेसगुमेन्ती-लोक्दोळ् लोकसं- ।
स्तुत चन्दायण-देवरिन्देसेगुवी-श्री-कौण्डकुन्दान्वयम् ॥
एरेव दुर्घाळिगाश्रित-वनक्कनुरागदोळित्त मुत्तवा- ।
दरिसुव दानदिन्दे सुर-भूरुमनेळिपळेन्दे वण्णिकुन् ।
परम-जिनेन्द्र-पाद-कमळार्च्चन-निभर-भक्ति-युक्तेयम् ।
हरिहर-देवियं नेगळ्द शासन-देवियनी-धरा-तळम् ॥
वर-जय-(सं) वत्सरं विनुत-जेष्ठ-युतं सित-पक्षमष्टमी- ।
परिगतमिन्दुवारदोळनिन्दित-पञ्च-पदङ्गळं दुखोत्- ।
कर-निळयङ्गळं नेरेये तन्नोळे··· ···सुतुं समाधियिम् ।
हरिहर-देवि-विश्व-विबुध-स्तुतेयेय्दिदळिन्द्र-लोकमम् ॥
निरुपमेयं चरित्र-युतेयं वनिता-वन-रत्नेयं मनो- ।
हर-जिन-मार्ग-वारिनिधि-चन्द्रिकेयं सुकृतैक-पुञ्जेयम् ।
पर-हित-चित्तेयं वगेयदन्तक्कनेम्ब दुरात्मनोय्दनी- ।
हरिहर-देवियं विबुध-वन्दितेयं भुवनाभिरामेयम् ॥

जिनेश्वर नमो वीतरागाय शान्तये नमोऽस्तु ॥

[कौण्डकुन्दान्वयके चन्द्रायण-देवकी प्रशंसा,—जिनकी गृहस्थ-शिष्या हरिहर-देवी थी । उसकी भक्तिकी प्रशंसा । (उक्त सालमें), पञ्च-नमस्कार मन्त्रका उच्चारण करते हुए, समाधिके द्वारा, उसने इन्द्रलोक प्राप्त किया । जिनेश्वर, वीतराग और शान्तके लिये नमस्कार हो ।]

[EC, XII, Tiptur, Tl, No, 94.]

३८५

हेरगू;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

वर्ष जय [११७४ ई० ? (ल० शईस)]

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वरं **द्वारावतीपुर**वराधीश्वरनुं कोङ्कु-नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोणम्बवाडि-बनवसे-हानुङ्गलु-गोण्ड भुजबल वीरगङ्गनसहायशूर निश्शङ्क-प्रताप होय्सळ-**श्रीवल्लाळ-देवरु** दोरसमुद्रद राजधानीयल्लि सुख-सङ्कथा-विनोददिं पृथ्वी-राज्यं गेय्युत्तमिरे **जय**संवत्सरद पुष्यदमावासे-मंगळवार-व्यतीपात-उत्तराषाढ़ा-नक्षत्रदन्दु **हेरगि**न वसदिगे मोदलु गद्याण १ क्कं बळि-सहित्तागि गद्याणविप्पत्त-नाल्कक्कं भूमियं धारापूर्व्वकं माडि विट्ट स्थल हिरिय-केरेय किण्ड्यलल्लु विट्टिग-गट्टवोन्दु ऊरिन्द हडुवण होलदल्लि बेट्टले नाल्वत्तेरडु गेण गळेय्लु कम्म ३२½ विट्ट दत्ति ॥

गतलीलं लाळनाळम्बित-बहळ-भयोग्र-ज्वरं गूर्ज्जरं सन्- ।
धृतशूलं गौळनङ्गीकृत-कृशतर-सम्पल्लवं पल्लवं चू- ।
र्णित-चूळं चोळनादं कदन-वदनदोळ् भेरियं पोय्सेवीरा- ।
हित-भूभृज्जाळ-काळानळनतुलबलं **वीर-वल्लाल-देवम्** ।
मनमोल्दुद्यद्यशश्श्रीपति नेले मोदलागल् सल्वन्तेरळ्-पोन्- ।
ननपारौदार्य-पर्य्युन्नतनुमुदधियुं मेरुवा-चन्द्रनुं निल्- ।
विनवत्युत्साहदिन्दं पेरगिन जिनगेहक्के विट्टं पुरन्ध्रो- ।
जन-लीलानङ्ग-रूपं मथन-जय-भुजं **वीर-वल्लाल-देवम्** ।
अतिशोभाकरमप्प विष्णुविन वक्षस्थानदोळ् लक्ष्मियुन्- ।
नति वेत्तिर्प्पवोलिक्कें कीर्त्ति-युतनोळ् श्री-चामनोळ् कूडि सं- ।
गत-सत्वर्व्वहु-पुत्ररं पडेवुतं **जक्कव्वे** चन्द्रार्क्करुं ।
क्षितियुं मेरु-नगेन्द्रमुळ्ळनेगमिं भद्रं शुभं मङ्गळम् ॥
इवनीयन्ददिनेय्दे पालिसिदवर्गिष्टार्त्थ-संसिद्धि सं- ।

भविकुं कोण्डळिदङ्के गङ्के गये केदारं कुरुक्षेत्रमेम्ब्।
इवरोळ् पेसदे पार्वरं गोरवरं गो-वृन्दमं पेण्डिरम्।
तवे कोन्दिकिद पापमेय्दुगुमवं बीळ्गुं निगोदङ्गलोळ ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम्।
षष्टि-वर्ष-सहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥

[इस लेखमें बताया गया है कि जब (अपनी उपाधियों सहित) होय्सल वल्लाल-देव शाही नगर दोरसमुद्रमें था, और शान्ति से राज्य कर रहा था— (उक्त मितिको) हेरगूकी बसदिके लिये (उपर्युक्त) भूमि-दान किया। (उसकी प्रशंसा, जिनमेंसे एक यह भी है) जब वह प्रयाण करता था, तो लाड़, गुर्ज्जर, गौल (ड़), पल्लव, और चोल राजाओंको भयका सञ्चार हो जाता था।]

[EC, V, Hassan, Tl., No. 58.]

३८६

बिजोली—संस्कृत

[सं० १२३१ = ११७५ ई०]

लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका मालूम होता है।

[JRAS, 1906, p. 700-701.]

३८७

क्यातनहल्लि—कन्नड़।

मन्मथवर्म [११७५ ई० (लू० राइस)]

[क्यातनहल्लि (क्यातनहल्लि तालुके) में, कोदण्डराम मन्दिके पत्थर पर]

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति श्रीमन्महामण्लेश्वर तळकाडु-गङ्गवाडि-नोणम्बवाडि-बनवासि-हानुङ्गलु-

गोण्ड भुज-बल वीर-गङ्ग असहायशूर निःशङ्कप्रताप **होय्सळ-वीर-वल्लालदेव** श्रीमद्-राजधानी **दोरसमुद्र**द नेलवाडिनलु सुक (ख)-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्दुत्तिर्ई(रे) **मन्मथ-संवत्सरद मार्गसिर-सु १ आदिवारदन्दु श्रीयादव-नारायण**-चतुर्व्वेदि-मङ्गलदलु श्रीकरणद कलियणन कोडगेयोळु अय्वत्तु-कोळग गद्देयं साहिर-कोळग बेद्दलेयं श्रीकरणद हेमाडे···ळयण्णन कय्यलु **वल्लाळ-दे**···गे क्रयद होन्न कोट्ट सर्व्व-बाधा-परिहारवागि **कोडेहाळ-वसदिगे** चन्द्रार्क्क-तारम्बर सल्वन्तागि धारापूर्व्वकं माडि येरेयण विट्ट दत्ति ।

[जिस समय होय्सळ **वीर-वल्लाल-देव** राजधानी दोरसमुद्रमें रहते हुए शासन कर रहे थे, उस समय कोडेहाल-वसदिके लिये कुछ जमीन **यादव-नारायण** अग्रहारमें खरीदी गयी थी और वह बिना किरायेके दी गयी थी ।]

[EC, III, Srirangapatan Tl., No. 146]

३८८

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १०९९ = ११७६ ई० (कीलहौर्न)]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

३८९

एलेवाल;—कन्नड़-भग्न

[शक १०२९ = १२३७ ई०]

[**एलेवालमें, बरम-देव मन्दिरके पासके पाषाणपर**]

··· ··· ··· ··· सेतु ॥ ··· ··· ··· ··· सोकदिन्दं वळसिद्दु ··· ··· ···
··· ··· ··· **नागवल्लि-कुळ**दिं जम्बीरदिन्दं ··· ··· ··· एडं जनियिसे नन्दन-
नदिन्दन् ··· ··· ··· ··· ···प्पनी-वनप ··· ··· ··· ··· **नागर-खण्ड**द

... ... वरिसि चन्दादित्यरुळ्ळनेगं चिर-लग्नं दरे-पट्ट ... ... लि
रिगियोळु स्वोद्यमेनलु कदम्ब ... ...विपति **सोयि-देव**-भूपति-तिळकं
न-सुत-**कदम्ब-वंश** स ... ... तिक्कु विरुदरु विरुदं बिट्टु नेयिक्कुतिक्कु
दनक्किन्न ... ... ल्लं विदे पुल्लं कर्चि नीरं पुगुतरलु पेण्गागि
पुचेदगुं ... ... यि-देव-प्रतापन् ॥

अदर वेर कित्तु सुमयेत्तमरं वेदर् ... ... ।
... ... नेम्बुद- ।
ल्लदे रण-रङ्ग-शूरकन साहस-भीमन सोयि ... ... ।
... ... नं सले विश्व-चात्रियोळ् ॥
वनवसे-नाडधिकारं । वन-सुत- ... ... ।
... ... लन्तानान् । वनदर्द्द-पहेद **विक्रमादित्य**-नृपन् ॥
वीरारातिग ... ... ।
... ... सले शील्दु शुद्धि नोगेगुं दोर्-दण्ड-चण्डासियिम् ।
मेरेन्दा ... ... ।
धीरोदात्तन वण्णिसुं दुष-वन श्री-**विक्रमादित्य** ... ... ॥
... ... निट्टदे **हय्वे कोङ्कणम्** ।
बेडगिन **गङ्गवाडि तुळुनाडे** ... ... ।
... ...बेसनेन्नद मूमुदरारु कय्यम् ।
कुडदवनीशर् ... ... त्रियोळ् ॥

स्वस्ति समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमन्-महा-म ... ... से पन्निर्द्दा-
सिरमनाळुत्तं सुख-सङ्कथा-विनोददि राज्यं ... ... ॥
... ... ।
... ... ।
... ... एलेवल्लि कौङ्कु नारङ्ग-फलम् ।
रागदेळ ... ... ।

... ... सत्-पङ्केज-षण्डङ्गलि कुवलयदिं नाग-पुन्नागदिन्दम् ।
व्व ... ... ।
तिळक-श्री-चम्पकामोददिनेसगु सदा **नागवल्लि**-विलासम् ।
... ... भाव्य-लक्ष्मी-निवासम् ॥
गावणिग-कुलदे पुट्टिद ।
भाविते **केरेय** ... ... ।
... ... य पोगळे पुट्टिद ।
केवळमे **देकि-सेट्टि** बुध-सुत-भूत ॥
सङ्ग-ग ... ... ।
... ... सेट्टि कृतार्थम् ।
विङ्कदेळम्बळिळयोळम् ।
भोङ्केने जिन-गृहमम् माडि कीर्त्तिय ... ... ॥
... ... ति गुरुवी-**भानुकीर्त्ति-व्रतीन्द्रम्** ।
... ... ति गुरुवी-**भानुकीर्त्ति-व्रतीन्द्रम्** ।
जननि प्रख्यातेयादो ... ... दम् ।
तनगन्ता-पलि **गङ्गाम्बिके** जन-नुत-नी-शङ्क-गावुण्ड मावं ।
जन-वन्द्यं दे ... ... लक्ष्मी-विळासम् ॥
केरेयम-सेट्टिय सुतरेम् ।
किरु-कुळरे **केतमल्ल** ... ... ।
... ... कल्प महीजम् ।
नेरेयेसेगं **देकि-सेट्टि** यनुवर धरेयोळ् ।
... ... पाद-सरोज-भृङ्गनम् ।
सु-कवि-जन-स्तुतं विबुध-कल्प-महीजनं वण्णिकुं स ... ... ।
... ... शा-करि-दन्तव मुट्टे पर्व्वुगुम् ।
विकसित-भव्य-पङ्कज-दिवाकरनेन् ... ... ॥
... ... न-पद-पङ्कज-भृङ्गम् ।

विन-महिमोत्तुंग विश्व-लक्ष्मी-सङ्गम् ।
विन-महिम ··· ··· ·· ··· ।
··· ··· ··· ··· **देकि-सेट्टि** कीर्त्ति-विळासम् ॥
विन-समय-वार्धि-हिमकर ।
विन-मत-ल ··· ··· ··· ··· ।
··· ··· नम-निदानं तनगेने ।
वन-सुत-नी-**देकि-सेट्टि** धारिणिगेसेदम् ॥
अवर गुरु ··· ··· दंडे ॥

कुन्तळ-गौड़-माळव-वाहुति-दोहळि पोट्टियाण या ।
··· ··· ··· ··· विदर्भणदिन्दे वन्दु सै- ।
दान्तिक-**पद्मणन्दि**-सुतनी-मुनिचन्द्रनोळेय्दे··· ।
··· ··· यिन्तु हरेदत्तु समस्त-धरा-तळाग्रदोळ ॥
अतितीव्रानल-काळकूट ··· ··· विनतुङ्गिडुद् ।
घतनं माणदे ··· नाडिसुव कन्दर्प्प वरल्कम्मने ।
··· ··· ··· ··· वयलुगे ··· ··· ··· ··· वी- ।
र-तप-श्री-**मुनिचन्द्र-देव**-मुनियङ्गक्कुं पेरङ्गक्कौमे ॥
आरैवडे मेच्चङ्कम् ।
वारह ··· ··· ··· गणित-स्थिति तत्- ।
सारतर-सूक्ष्म-तत्त्व-वि- ।
चारं **मुनिचन्द्र**-यतिगे हस्तामळकम् ॥
अवर ··· ··· तेन्दडे ॥

श्रीमन्-**मूल**-पदादि-सङ्घ-तिळके श्री-**कोण्डकुन्दान्वये** ।
अनूर् नाम-**गणो** ··· ··· ··· **तिन्त्रिणीकाह्वये** ।
शिष्यः श्री-**मुनिचन्द्र-देव**-यमिनः सैद्धान्त-पारङ्गमो ।
जीयाद् ··· ··· ··· श्री-**भानुकीर्त्तिर्म्मुनिः** ॥

उरगोग्र-ग्रह-शाकिनी-विहग-भूत-प्रेत ··· ग-भी- ।
कर-भेता ··· ··· ··· गणं भू-चक्रदोळ् तोरलु- ।
द्धरिसित्तन्तदे यन्त्र ओदिदुदे मन्त्रं कोट्ट वेर् त्तन्त्रव- ।
च्चरि सैद्धा ··· ··· ··· ··· नि नाथोग्राज्ञे सामान्यमे ॥

स्वस्ति श्रीमत्-**स (श) क-नृप-कालातीत-संवत्सर-सतंग** ··· ···**भत्तनेय १०९९ नेय** श्रीमत्-कळचुर्य्य-भुज-बळ-चक्रवर्त्ति राय ··· ··· नेय हेमळम्बि-संवत्सरद ज्येष्ठ-शुद्ध-दशमियादिवारदन्दु ··· ··· ण-सङ्क्रान्ति-व्यती ··· ··· ··· यिंयोळु श्रीमद्-**एळम्बल्लिय देकि-सेट्टि** तन्न माडिसिद शान्तिनाथ ··· ··· उदिय खण्ड-स्फुटित ··· ··· यर-जीयराहार-दानकं चातुर्व्वर्ण्य-श्रवण-संघक्केन्दु श्रीमन्-**मूल-संघद काणूर्-गण** ··· ··· गच्छद **कोण्डकुन्दान्वयद नुत्त-वंशद** क्षीर-जळ-माळातिश्य (शय)-त्रयोत्कृष्टानादि-संसिद्ध ··· ··· पुराधिनाथ-श्री-शान्तिनाथ-वटिकास्थानद मण्डळाचार्य्यरप्प श्री-**भानुकीर्त्ति-सि** ··· ··· कोलं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकं माडि गोळिकेरेय बयललु (यहाँ पर दानकी विगत दी है) अन्ता-स्थानमं तम्म शिष्यरप्प मंत्रवादि-मकरध्वज श्रुत ··· ··· रिगे कोट्टरु ॥
(हमेशाके अन्तिम श्लोक और वाक्यावयव)।

[(शिलालेखका अधिकांश मिटा हुआ है)।

नागवल्लि-कुल और नागरखण्डका वर्णन। कदम्ब राजा सोयि देवकी प्रशंसा। वनवसे-नाड्का शासन विक्रमादित्यको मिला था, जिसे हत्वे, कोंकण, प्रसिद्ध गङ्गवाडि, और तुळु ··· ··· के राजा आकर भेंट देते थे।

जिस समय, अपने समस्त पदों सहित, महा-म [ण्डलेश्वर] ··· वनवसे १२००० पर शासन कर रहे थे :—नागवल्लिके आकर्षणोंका वर्णन। गावणिग कुलमें उत्पन्न हुआ केरेय [म-सेट्टि] था, जिसका पुत्र देकि-सेट्टि था। [गु]ण्डने देकि-सेट्टिके साथ मिलकर एलम्बळिळमें एक जिनमन्दिर बनवाया। उसके सङ्ग-गावुण्डके) भानुकीर्त्ति-व्रतीन्द्र गुरु थे, माँ प्रसिद्ध ··· ···, पत्नी गङ्गाम्बिके

और उसका श्वसुर विश्व-विख्यात ····· था। केरेयम-सेट्टिके केतमल्ल और देकि-सेट्टि पुत्रोंमेंसे देकि-सेट्टिकी जैनधर्मके महान् संपुष्टिदाताके रूपमें प्रशंसा।

मूलसंघ, कोण्डकुन्दान्वय, काणूर्-गण, तथा तिन्त्रिणिक-गच्छके मुनिचन्द्र-देवके शिष्य भानुकीर्त्ति-मुनिकी प्रशंसा (जैसा कि क्रमाङ्क ३७७ वें शिला-लेखमें है।

(उक्त मितिको), एलम्बळिळ देकि-सेट्टिने, अपने द्वारा बनायी हुई शान्ति-नाथ-बसदिकी मरम्मतके लिये, वीयत् तथा श्रवणोंकी चारों जातियोंके भोजन-मत्व (या आहार-दान) के लिये, शान्तिनाथ-वटिका-स्थान-मण्डळाचार्य्य भानुकीर्त्ति-सिद्धान्त-देवके पाद-प्रक्षालन-पूर्व्वक,—(उक्त) भूमिका दान दिया। और वह 'स्थान' उसने अपने शिष्य मन्त्रवादी मकरध्वजको अर्पण कर दिया।

हमेशाके अन्तिम श्लोक।]

[EC, VIII, Sorab, Tl., No. 384.]

३६०

हेरगू;—संस्कृत तथा कन्नड़।

वर्ष दुर्मुखी [११७७ ई० (खू० राइस)]

स्वस्ति श्रीमतु-दुर्म्मुखि-संवत्सरद चैत्र-शुद्ध-दसमी-सोमवार-दन्दु हेरगिन चेन्न-पारिश्व-देवर नन्दा-दीपिगेगे श्रीमतु तुङ्गद हेरगडे हेरगिन वाचरस-गट्टियरस-वम्म-देव-बल्लय्यङ्गळु तुङ्गद बिट्टरु एत्तु-गाण ओन्दक्कं आ-तेल्लिगर मने-देरे ओन्दुवं ऊरोडेय-नारसिगण्ग मार-गावुण्ड सेनबोव-सोमय्यनोळगाद समस्त-प्रजे-गळिर्द्दु बिट्ट धर्म्म॥

(उक्त मितिको) तुङ्गीके अध्यक्ष (नाम दिया है) ने हेरगूके भगवान चेन्न-पारिश्व (पार्श्व) के हमेशा जलनेवाले दीपके लिये तुङ्गीके दाम छोड़ दिये। और चौकीदार (Headman) सेनबोव (जिन दोनोंके नाम दिये हैं)

और समस्त प्रजा एक बैलके बोझेका कर तथा एक तेलीके घरका कर देती थी (१)।]

[EC, V, Hassan, Tl., No. 59.]

३९१

अजमेर;—प्राकृत।

[सं० १२३४ = ११७७ ई०]

संवत् १२३४ जेठ सुद १३ बुधदिने साधुवुल्हा पुत्रवान हालू पार्श्व (र्व) नाम बेवपाल प्रणमतिमिहा।

अर्थ स्पष्ट है।

[JASB, VII, p. 52, No. 3, t.]

३९२

खजुराहो;—संस्कृत।

[सं० १२३४ = ११७७ ई०]

[यह लेख किसी जैन प्रतिमाके अधः पाषाणपर उत्कीर्ण है और खजुराहोमें पाये जानेवाले जैन-शिला-लेखोंमें सबसे पीछेके (उत्तरवर्ती) कालका है।]

[A. Cunningham, Reports, XXI, p. 69, 5, a.]

३९३

श्रवणबेलगोला;- संस्कृत तथा कन्नड़।

[वर्ष हेवणन्दि = ११७७ ई० ? (लू० राइस)]

[जै. शि. सं., प्र. भा.]

३४६

हट्टण—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक ११०० = ११७८ ई०]

[हट्टण (नेल्लीकेरी परगना) में, वीरभद्र मन्दिरके पास एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
श्रीपति-चन्नदिन्देसेव यादव-वंशदोळाद दक्षिणोर्-
व्वीपतियप्पनोर्व्व सळनेम्ब नृपं सळेयिन्दे कोपन- ।
द्वीपियनोन्दनोर्व्व मुनि पोय्सळ येन्दडे पोच्चु गेल्दु दिग्-
व्यापि-यशं नेगळ्दे-ब्डेदं गड पोय्सळनेम्ब नामदिं ॥
स्वस्ति श्रीचन्नगेहं विधृत-निरुपमोदात्त-तेजो-महौर्व्वम् ।
विस्तारान्तः-कृतोर्व्वी-तळनवनत-भूभृत्-कुल-त्राण-दक्षम् ।
वस्तु-व्रातोद्भव-स्थानक्रमनलयशश्चन्द्रसम्भूतिधामं-
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भोनिधि-निभमेसेगुं पोय्सळोर्व्वीश-वंशम् ॥
अदरोळ् कौस्तुभदोन्दनर्घ्य-गुणमं देवेम्दुदाम-स-
त्पदगुर्व्वं हिमरश्मियुज्ज्वलकलासन्मित्रियं पारिजा-
तदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्तं ताळ्दि तानल्ते पु-
ट्टिदनुद्वृत्त-तामो-विभेदि विनयादित्यावनीपालकम् ॥
कन् ॥ विनयं दुष्करं रञ्जिसे । घन-तेजं वैरि-बलमनञ्जिसे नेगळ्दं ।
विनयादित्य-नृपालकन् । अनुगत-नामार्थनमल-कीर्त्ति-समर्थं ॥
दुर्ग-निधि विनयादित्यन । वधु केळेयम्बरसिदेम्बोळात्मात्यविभा-
विद्युरित-विधु परिवन-का- । मधेनु नेगळ्दळ् सुशीलगुणगणधामं ॥
आ-दम्पतिगे तनूभवनादं तनगेंगदरि-नृपाळरनं मो-
द बोळॅरेगिपोनाहव- । मेदिनियोळे नेगलुन्नेर्दयनेळेनोरयङ्गम् ॥
वृ ॥ आतं चालुक्य-चक्रेशन बलद भुजा-दण्डमुद्दण्ड-भूप-

ब्रात-प्रोत्तुङ्ग-भूभृद्विदळनकुलिशं वन्दि-सस्यौघ-मेघम् ।
स्वेताम्भोजात-देव-द्विरद-सुर-नदी-दुग्ध-वारासि-चन्द्र-
द्योत-प्रस्पर्द्धि-भा-भासुर-विशद-यशं राज-मान्धातृ-भूपम् ॥

कन ॥ आ-चारु-मूर्त्तिगसम-शा- । रोचित-नामङ्के भुवन-जयिगेरेयङ्गळ ।
एचल देविये सरसिज- । लोचने करविनेयळाळतनुगे रतिवोल् ॥
एने नेगळदा-यिर्व्वर्ग्ग । तनुजर्ज्जनियिसिदरल्ते **वल्लालं वि-**
ष्णु-नृपालकनुदयादि- । **त्य**नेम्ब मूवरुमुदारराहव-धीरर् ॥

वृ ॥ अवरोळ् मध्यमनागियुं धरणीयं पूर्व्वापराम्भोधियेय्-
दुविनं कूडे निमिर्च्चुवोन्दु निज-निःप्रत्यूह-विक्रान्तदुद्-
भवदिन्दुत्तमनादनुत्तम-गुण-भ्राजिष्णु लक्ष्मी-वधू-
धवनुद्वृत्त-विरोधि-दैत्य-मथनं **तद्विष्णु** भूपालकम् ॥
बनवासी-पुरमा-विराटनगरं वल्लारि वल्लूर्व्वलि-
प्पनिरुङ्गोळनकेरे कारुकनकोळ्ळं कुम्मटं-चिच्चिलुर्-
ब्बिनदा-पेर्म्मन राचवूर्म्मुदुगनूरेन्दिन्तसङ्ख्यात-दुर्-
ग्ग-निकायं नेरे भग्नमादुदु वळं भ्रूभङ्गदिं विष्णुव ॥
इनितिं दुर्गम-वैरि-दुर्ग्ग-चयमं कोण्डं निजाक्षेपदिन्द् ।
इनिवल्भूपरनालियोळ् तविसिदन्तन्तुग्र-बाणाळियिन्द् ।
इनिवग्गानतगित्तनुद्ध-पदमं कारुण्यदिं विष्णुवेन्द् ।
अनितं लेक्किसि नोर्पडञ्जभवनुं विभ्रान्तनप्पं बलम् ॥

कन् ॥ विट्टग्रहार-निवहं । कट्टिसिदर्-गेरेय वळगमेत्तिसिद मुगिल्-
मुट्टुव देगुलमनितं । निट्टिसुवडे··· **बिट्टि-देवन** पेम्पम् ॥
लक्ष्मी-देवि लसन्मृग- । लक्ष्मानने विष्णुगाग्र-वधुवेने नेगल्दळ ॥

वृ ॥ अवनि-मनोजनन्ते सुदती-जन-चित्तमन् इल्क्कोळल्के साल्व-
अवयव-शोभेयिन्दतनुवेम्बभिधानमनानदङ्गना-
निवहमनेच्चु मुच्चनणमानदे वीररनेच्चु युद्धदोळ ।
तविसुवनादनात्मभवनप्रतिमं **नरसिंह**-भूभुजम् ॥

विभवेन्द्रं खल-वह्नि दण्डध्वरनत्युद्वृत्त-दैत्याधिपं ।
शुभ-रत्नागर-नायकं नतजगत्प्राणं बुध-श्रीदनै-
स्य-भवं तानेने लोक-पाळतेयनेकायत्तमं माडि निन्द् ।
अभिरूपं सुतनादनल्ते **नरसिंह**-क्षोणिपालोत्तमं ॥
अरि-दैत्याधिप-वक्षमं खर-नखानीकङ्गळिं होळु वल्-
गरुळं तोड्सिद नारसिंहनेनलक्कुं वैरि-वीरावनी-
श्वर-वक्षस्थळमं स्व-खडग-नखर-व्याघातदिं पोल्दु वल्-
गरुळं तोडुव **नरसिंह**-नृपनं संग्राम-रङ्गाग्रदोळ् ॥

कन् ॥ समनिसे रागं तम्मोळ् । दमयन्ति नळङ्गे सीते रघुजङ्गेन्तन् ।
अमर्देंचल-देविं नृसिं- । हं-महीरमणङ्गे लक्ष्मिवोल् वधुवादळ् ॥
अवर्गें सुतनादनभिनन- । धवळं गिरि-दुर्ग्ग-मल्लनिभ-पति-दशदिग्-
धवलित-कीर्त्ति-वधूटी- । धवनरिवलविजयपाण्ड्यनुच्चंगिय-दुर् ।
गमनुरवणीयिं कोण्डन- । समतेजोमूर्त्ति **वीर-वल्लाळ**-नृपम् ॥

वृ० ॥ केळ वसन्त-चाळ-सहकारद तण्-नेळल् आश्रिताळिगा-
भीळ-लयाहि-निष्ठुर-फणौघद मेय्-नेळलुद्धतारिगुन्-
मीळित-पुण्डरीकद नेळल् जयलक्ष्मिगेनिप्प **वीर-वल्** ।
लाळन तोळ-चाळ्ळ नेळल्लादुदु धात्रिगे वज्र-पञ्जरम् ॥
मनु-चारित्रं चरित्रं मनसिज-ललिताकारमाकारमन्जा-
क्षन मन्त्रं मन्त्रमिन्द्रात्मजनदट्ट अदट् अन्तीशनार्प्पार्प्युं भास्वन्-
तन तेजं तेजमम्भोजजनरिवरिविन्द्र-प्रभावं प्रभावम् ।
तनगात्मायत्त मिन्ती-जगदोळेनिसिदं **वीर-वल्लाल-देवम्** ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरम् । द्वारावतीपुरवराधीश्वर । तळुव-कुलाचलाधिवड़वानल । दायाद-दावानल । **पाण्ड्य**-कुल-कमळ-वन-वेदण्ड । गण्ड-भैरुण्ड । मण्डलिक-वेण्टेकार । **चोळ**-कटक-सूरेंकार । सकळ-वन्दि-वृन्द-सन्तर्प्पण-समग्र-वितरण - विनोद । **शशकपुर**-कृत-निवास-वासन्तिका-देवी-लब्धवर-प्रसाद । **यादव**कुलाम्बरद्युमणि । मण्डळिक-मकुट-चूडामणि । कदन-प्रचण्ड । मलपरोळ-

गण्ड-नामादि-प्रशस्ति-सहित कोङ्गु-नङ्गलि-तळेकाडु-नोळम्बवाडि-बनवासे-हानुङ्गल्-गोण्ड भुजबळ वीर-गङ्गासहाय-शूर शनिवारसिद्धि गिरिदुर्ग्ग-मल्ल निश्शंकप्रताप होय्सल-वीर-**वल्लाल**-देवर् दक्षिणमहीमण्डळमं सद्धर्म्मदल्लि पालिसुत्तं **दोरसमुद्र**-नेलेवीडिनोळ् सुख-सङ्कथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तुमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ।

वृ० ॥ मुन्तिदिरान्तनन्त-रिपु-सैनिकरं सिडिलन्ते सिङ्कदन्त् ।
अन्तकनन्ते सङ्करदोळ् ओवदे जीरगेयोक्किलिक्कि सा-
मन्त-ललामनी-नेगळ्द-तेङ्कण-रायनेनल्केनिप्प पेम्-
पं तळेदं प्रताप-निळयं धरेयोळ् **नरसिंग-नायकम्** ॥

तदाश्रयवर्त्तियप्प **सोवि-सेट्टि**यन्वयमेन्तेन्दोडे ।

कन् ॥ बसदि केरे देगुलं मळि- । गे सुरासुर-युद्ध-कथेयिवं **मुद्दुवोळलोळ्** ।
पोसतागे मेरेविनं निर्म्मिसि पडेदं जसद नेरेबनेळेगेरेगाङ्कम् ॥

वृ० ॥ सङ्गत-पुण्यनप्रतिमनप्प एरेगाङ्कन वंशजं प्रधा-
नं गुणि **बम्मि-सेट्टि**यबनात्ममनोहरे **माचिय**क्कना-
तङ्गमबळामुद्भविसिदं कुल-वर्द्धन **गन्धि-सेट्टि** तन्व्-
ङ्गियबङ्गे शीलवति मासति **माकवे** कान्ते लब्धिमवोल् ॥

कन् ॥ विगत-कुमत गतमल गं- । धिग-सेट्टिगममल-शीलवति माकवेगं ।
प्रगुणगुणगणनिधानं । मगनादं **सोम**मुरु-चरित्रारामम् ॥
परनारीपुत्रं वण- । टर-भावं केळतिसयनचळितनयनूर्-
ब्बर दण्डे सेट्टि **सोमं** । सरणागत-वज्र-पञ्जरं गुणधामम् ॥
अपरिमित-दानि निज-सम- । य-पताकं देसियङ्कार्रनसहन- ।
द्वीप-केसरि वदवर वे- । लि पत्तनस्वामि **सोवि-सेट्टि** जितात्मम् ॥
नव-तत्त्वविदं वितरण- । रविसुतनभिमान-मेरु शशि-विशद-यशो-
धवळित-दिशाळि निजकुल- । कुव्वळय-विधु **सोवि-सेट्टि** सज्जन-मित्रम् ॥
परम-जिन-पद-कमल-मधु- । करि दान-विनोदे गोत्र-चिन्तामणि बन्-
धुरिम-गुणि **सोवि-सेट्टि**गे । **भरु-देवि** सुशील-पुण्यवती सतियादळ् ॥

० ॥ गुणधामं मरुदेवि कान्ते तनुजातर्गाङ्गगं **नारसिं**- ।

गणनुं सिंगणनुं विशुद्धगुणरिर्व्व्वर्व्वृच्चणङ्गळ् जगत्- ।
प्रणुतर् निर्म्मळ-धर्म्मदोळ्पु जिनमार्ग्ग-श्रृंगळंकार-दर्-
र्व्वणमाप्तेन्दडे **सोवि-सेट्टि**यवोळावोम्पुण्य-पञ्जोदयम् ॥

कन् ॥ वनधि-निम-तटाक-त्रय- । मनमरगिरि-तुङ्ग-पार्श्व-जिन-गृहमं सव्-
वन-भृत-निच-नामद-पत्- । तनदोळ् माडिसि कृतार्त्थनादं **सोमम्** ॥
स्वस्ति परम-जिन-शासन-शस्त-श्री-मूलसङ्घ-देशियगण- ।
प्रस्तुत-पुस्तकगच्छ-स- । स्तरतर-कीर्त्ति-कुन्दकुन्दान्वयदोळ् ॥
विदित-**गुणचन्द्र-सिद्धान्-** । त-**देव**-श्रुतरत्न-वादि-तिमिरार्क्कर् वित्-
तुदा-**नयकीर्त्ति-सिद्धान्-** । त-**देव**रखिळावनीश-नत-पद-कमळर् ॥

वृ० ॥ ससिविन्दम्बरमन्वदिं तिळि-गोळं नेत्रङ्गळिन्दाननं-
पोस-मावि वनमिन्द्रनिं त्रिदिवमा-शेषं मणि-व्रातदिन्द् ।
ऐसेवन्ती-**नयकीर्त्ति-देव**-मुनियिं राद्धान्त-चक्रेशनिन्द् ।
ऐसेगुं श्रीजिनधर्ममेन्दोरे वळिक्के-वर्ण्णियोम् वर्ण्णियोम् ॥

कन् ॥ वन-नुत-**नयकीर्त्ति**-मुनी- । शन शिष्य नेगल्द **दामनन्दि-त्रैवि-** ।
द्यनखिळ-पर-वादि-कुभृद्- । घनवज्रं विरुद-वादि-मदन-महेशम् ॥
अ-मदं पितामहं वीत-मलं मदनारि मूकना-विपताक्षम् ।
दमितान्य-वादियेने सन्- । द मान-निधि-**दामनन्दि**-मुनि-सन्निधियोळ् ॥
तदनुजनखिळ-कळा-को- । विदनात्माधीननमळ-रत्न-त्रितया-
स्पदनपगत-तन्द्रं दो- । प-दूरनध्यात्मि **बाळचन्द्र-मुनीन्द्रम्** ॥
नत-भुवननीश-चूडान्- । चिताङ्घ्रि चन्द्रप्रभाङ्घ्रि-सेवा-निरतन् ।
नुत-वर्त्तमान-बोधा- । मृतरुचियेने **बालचन्द्र-देव** नेगल्दम् ॥

गद्य ॥ स्वति प्रताप-होय्सळ-पट्टण-स्वामि-**सोमि(वि)-सेट्टि** तां माडिसिद श्री-जिन-पार्श्व-देवरष्टविधार्च्चनेगं खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारक्कं जिन-मुनिगळ्-आहार-हानक्कं [illegible] नॉल्देसेय वेद्दलेयुमं वडगण नगरसमुद्रमुमं पट्टणदिं मूडण होय्सळसमुद्रद मोदलेरियोळ् ओर्-खण्डुग नीर्व्वरेयुमं तेङ्कण सेट्टियकेरेय मोदलेरियोळ् ओर्-खण्डुम गद्देयुमनूर-मेण्टि सूडु सकळ-धान्य गोळग मूरुं **चळमावेयं** प्रमुं-गावुण्डुगळ

सामन्त-नरसिंग-नायकननुमतदि शकवर्षद सासिरद-नूरैनेय हेमळम्बि-संवत्सरद पौष्य-शुद्ध-तृतीयार्क्कदिन-व्यतीपातोत्तरायण-संक्रान्तियन्दु **वीर-वल्लाल-होय्सळ-देव**-राज्याभ्युदयार्त्थन् निज-गुरुगळ् अप्पाध्यात्मि-**बाळचन्द्र-देव**र कालं तोळेद धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्ट सीमेयेन्तेन्दोडे पूर्व्वमुं आग्नेयमुं होय्सळसमुद्रद गद्दे-वरं बसदियिं तेङ्क मूवत्त मूंण हन्नेरडु गद्दे-वरं नैऋत्यदोळ् वळ्ळेयकेरेयं कीडि पडुवलाकेरेयं गद्दे-वरं वायव्योत्तरङ्गळ् नगरसमुद्रद निर्गोंडुं वडगण कोडियुं ईशान्यदोळ् नतगरकेरे-वरं सीमे ॥

महाप्रधान **माधव-दण्डनायक**र वेसदिं वहित्रद **नारन-वेर्गडे** नन्दा-दीविजेगमष्टविधार्च्चनेगं ओन्दु गाणमुमं हेरिंन मुङ्कद दशवन्दमुमं विट्टं (हमेशा की तरह अन्तिम वाक्यावयव और श्लोक) भद्रमस्तु । श्री

[इस लेखमें सर्वप्रथम जिन-शासनकी प्रशंसा है। इसके अनन्तर सळका 'पोय्सळ' नाम कैसे पड़ा, इसके उल्लेखपूर्वक उसकी आगेकी वंशपरम्परामें विनयादित्य, एरेयङ्ग, विष्णुवर्द्धन हुए। विष्णुवर्द्धनने अपनी भ्रकुटिमात्रसे बनवासीपुर, विराटनगर, बल्लारि, वल्लूर, प्रबल इरुङ्गोळका किला, करुककी चट्टान, कुम्मट, चिञ्चिलू, पेर्म्मका बाचवूर, मुदुगनूर, ये और अगणित दूसरे किले ले लिये। उसने बहुत-से विरोधी राजाओंको पराजित किया। उसने बहुतसे अग्रहार दानमें दिये, सर्व्वजनोपयोगी तालाब खुदवाये, और बहुतसे गगनचुम्बी मन्दिर बनवाये। विष्णुवर्द्धनकी पट्टरानीका नाम लक्ष्मीदेवी था, उनका **नारसिंह** नामका लड़का हुआ। उस लड़केकी पत्नी **एचल-देवी** है, जिससे **वीर-वल्लाळ** नामका पुत्र उत्पन्न हुआ। उसने दूसरी विजयोंके साथ-साथ उच्चङ्गिके विजयपाण्ड्यके किलेको भी जीत लिया।

जिस समय, (अपने पदों सहित), होय्सल-वीर-वल्लालदेव इस पृथ्वीपर राज्य कर रहे थे, उस समय उनका पादपद्मोपजीवी दक्षिणका राजा **नरसिंग-नायक** था।

उसका आश्रित **सोवि-सेट्टि** था, जिसकी सन्तान-परम्परा इस तरह थी:—

पुत्र था **एरेगङ्ग**। इसने एक तालाब, एक 'बसदि', एक मन्दिर, एक

अण्डागार, तथा मृदुवोळ्ळ्में दैत्य और दानवोंके चित्र बनवाये थे। उसका पुत्र **अम्मि-सेट्टि** हुआ। उसकी पत्नीका नाम माचियक्क था। उनका पुत्र **गन्धि-सेट्टि** हुआ, उसकी पत्नीका नाम माकव्व था। उनका पुत्र **सोम** हुआ। पट्टण-स्वामी सोविसेट्टिकी एक भार्या मरु-देवी थी, जिसके तीन (चार ?) लड़के थे—गङ्गग, नारसिंग, सिंगण, और वूचण। सोवि-सेट्टिने समुद्रके समान तीन तालाब, एक पार्श्व-जिनमन्दिर अपने ही नामको धारण करनेवाले नगरमें बनवाये।

मूलसंघ, देशिय-गण, पुस्तक-गच्छ और कुन्दकुन्दान्वयमें गुणचन्द्र-सिद्धान्त-देवके पुत्र नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-देव हुए। उनके शिष्य दामनन्दि-त्रैविद्य हुए, जिनके छोटे भाई चन्द्रप्रभ-पादपूजक बालचन्द्र-मुनीन्द्र थे।

इस प्रताप-होय्सल-पट्टण-स्वामी सोमि (वि)-सेट्टिने पार्श्व-जिनकी अष्टविध पूजन, मन्दिरकी मरम्मत, तथा जिन-मुनियोंके आहारदानके लिये चउगावेके प्रभु और किसानों तथा सामन्त-नरसिंग-नायककी स्वीकृतिसे कुछ भूमिका दान किया। इस हेतुसे वीर-वल्लाळ-होय्सल-देवके राज्यकी वृद्धि होती रहे, कुछ दूसरी भूमि अपने गुरु बालचन्द्रदेवको उनके पादप्रक्षालनपूर्वक समर्पित की।

माधव-दण्डनायककी आज्ञासे घाट-अधिकारी नारण-वेग्गडेने हमेशा एक दीपके जलते रहनेके लिये तथा अष्टविधपूजनके लिये एक तेलका मिल (चक्की) और घाटपर उतरनेवाले सामान के ऊपर लगनेवाली चुङ्गीका $\frac{1}{10}$ वाँ हिस्सा दिया।]

[EC, IV, Nagamangala Tl. No. 70]

३९५-४०९

श्रवणबेल्गोला;—कन्नड़।

[कालनिर्देश रहित]

[जै. शि. सं., प्र. मा.]

४०१

मलेयूर;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक ११०२ = ११८१ ई०]

[पार्श्वनाथ-बस्ति के प्राङ्गणमें छप्पर-मण्टपके पाषाणपर]

श्रीविद्यानन्द-स्वामिनः। चिक्क-तायिगळु।
श्रीमद्च्युत-राजेन्द्राद् दीयमान-सुतो वरः।
श्रीमद्च्युत-वीरेन्द्र-शिक्यपाख्यो नृपाग्रणीः॥

तस्य भिषग्वरः।

कमलज-कुल-जातो जैनधर्म्माब्ज-भानु-
र्व्विदित-सकल-शास्त्रस्सद्-बुध-स्तोम-सेव्यः।
मुनिजनपदभक्तो बन्धु-सत्कार-दक्षो-
धरणिय-वर-वैद्यो भाति पृथ्वीतलेऽस्मिन्॥

तस्य कुलवनिता।

त्रिवर्गसंसाधनसावधाना साध्वी शुभाकारयुता सुशीला।
जिनेन्द्रपादाम्बुजभक्तियुक्ता श्रीचिक्कतायीति महाप्रसिद्धा॥
प्लवाब्देऽप्याश्विने शुक्ल-दशम्यां गुरुवासरे।
कनकाचल-पार्श्वेश-पूजार्थ-पञ्च-पर्व्वसु॥
मुनीनां नित्य-दानार्थं शास्त्रदानाय सन्ततं।
चिक्क-तायीति विख्याता दत्तश्री-किन्नरीपुरा॥

तयोः पुत्रः।

विद्यासारस्सदाकारस्सुमना बन्धु-पोषकः।
हृदयः पूज्यो भिषग्-राजस्तत्त्वशीलो विराजते॥

(हमेशाकी तरह अन्तिम श्लोक)

ई-शासनद शकवर्ष ११०३ ने प्लव-सं॥

[विद्यानन्द-स्वामी, चिक्कतायी के द्वारा।

अच्युत-राजेन्द्रसे अच्युत-वीरेन्द्र-शिक्यप-नामका एक पुत्र उत्पन्न हुआ था। वैद्यके रूपमें उसकी प्रशंसा। उसकी स्त्री चिक्कतायीने, पाँच वर्षोंमें कनकाचलमें स्थित पार्श्वेशकी पूजाके प्रबन्धके लिये, मुनियोंके नित्यदानके लिये, और हमेशाके शास्त्रदान (उपदेश)के लिये, किन्नरीपुरका दान दिया। उनके पुत्रकी वैद्यके रूपमें प्रशंसा।]

[EC, IV, Chamarajnagar, Tl., No. 158]

४०२

तेरदल;—कन्नड़।

[शक ११०४=११८१ ई०]

स्वस्ति समस्त-भुवन-विख्यात-पञ्च-शत-वीर-शासन-लब्धानेक-गुणगणालङ्कृत-सत्य-शौच-आचार-चारु-चरित्र-नय-विनय-विज्ञान-वीरवणञ्जु-धर्म्म-प्रतिपालन-विशुद्ध-गुह्य-च्यव-विराजितानेकसाहसलक्ष्मीसमालिङ्गितवक्षःस्थळ भुवनपराक्रमोन्नतरुं मखपट्टि-गुरूत्पत्ति-बलदेव-वासुदेव-खण्डळि-मूलभद्र-वंशोद्भवरुं **पद्मावती-देवी**-लब्ध-वर-प्रसादरुमप्प श्रीमद्-अय्यावळेयन्नूर्व्व [र] स्वामिगळ् कुन्तळ-विषयदोळ ग्राम-नगर-खेड-कर्व्वड-मडम्ब-द्रोणामुख-पत्तणंगळिंदमनेक-माटकूट-प्रासाद-देवायतनंगळिंदमोप्पुवग्रहार पट्टणङ्गळिंदमतिशयवप्प श्रीमत्-कुण्डि-मूरुसासिरदोळगे हन्नेरडक्कं मोदल-वाडं वणञ्जु-वट्टणं नडवेयमने **तेरिदाळदळ् शकवर्षं** ११०४ नेय **प्लव-संवत्सरद** आश्वयुज बहुळ ३ आदिवारदळ् द्वात्रिंशत्-वेळाबुरुमुष्टादश-पट्टणमुं वासष्टि-योग-पीठमुमरुवत्तनाल्कु-घटिक-स्थानमुं नानादेशाभ्यन्तरद गवरे-[ऊ]-[ऐ]मरं सेट्टियरं-सेट्टि-गुत्तरुं महानाडागि नेरदा स्थळदळ् श्रीमन्मण्डळिकं **गोङ्क-देवरसं** माडिसिद **नेमि**-तीर्त्थेश्वरन चैत्यालयमं कण्डु वर्ल-गोण्डु पोडेवट्टु हर्ष-चित्तरागि देवरष्टविधार्च्चनेगे [आ] चन्द्रार्क्कं तारं वरं नडेवन्तागि कोट्ट शासन-

मर्य्यादियेन्तेन्दोडे चतुस्समुद्रपर्य्यन्तं वरं नडवन्तागि १२० नूरिप्पत्तेत्तुकत्ते-कोण-भण्डि-मैत्र-दोणि-दुर्ग्गि-गाळ-पथमत्रेयळ् नडेवडं सुङ्क-परिहारवागि कोट्टर् मत्तं शासन-परिहारिगरेन्नदे वोक्कल लोन्दु पणवं बिट्टर् ॥ यिन्ती केयि-मने-तोट-मुख्य-समस्त आय-दायवेल्लमं सर्व्वबाधापरिहारवागि धारा-पूर्व्वकं माडि बिट्टर् ॥ स्वस्ति श्रीमत्-**कोण्डकुन्दाचार्य्या**न्वयद श्री-**मूल-संघद देशीय-गणद पोस्तक-गच्छद** श्री-**कोल्लापुरद निम्ब-देव**-सावन्त मडिसिद **श्री-रूपनारायण-देवर** वसदिय प्रति-बद्धमप्प **तेरिदाळद** गोङ्क-जिनेन्द्र-मन्दिरक्के **कोल्लापुर**दगस्त्येश्वरद कणगिलेश्वरद **महालक्ष्मी-देवि**य गोकागेय महालिङ्ग-देवर यिन्ती घटिक-स्थानदाचार्य्यरु मुख्य-एळ्-कोटि-पुव-संख्यात-गणगळ् महामण्डळियागि **तेरिदाळद** मूल-स्थानद **कलिदेव-स्वामि**गे प्रतिबद्धं माडि आ **नेमिनाथ-स्वामि**य प्रतिष्ठाकालदला **गोङ्क-जिनालय**दाचार्य्यरप्प **प्रभाचन्द्र-पण्डित-देव**रिगिदेम्म जोग-वट्टिगेय स्थानमेन्दु जोगवट्टिगेय निक्किदर् ॥ वसदिय मेले शूद्रकन सिंहद चक्रद चिह्नमेम्बिवं तिमुळद घण्टेयं परेय नागदेनिप्पवनेळु-कोटि- तापसग्गे महा-विरोधि-यवनीश्वर वैरियेनुत्तविक्किदर्म्मिसुगुव जोग-वट्टिगेयना मुनि- संकेय कोटि-तापसर् ॥

[IA, XIV, p. 14–26, (line 56–68)] t. and. tr.

४०३

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक ११०४ = ११८१ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

४०४

श्रवणबेल्गोला—कन्नड़ ।

[बिना काल निर्देशका]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

४०५

श्रवणबेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड़।

[विना काल निर्देशका]

[जै० शि० सं०, प्र० मा०]

४०६-४०७

श्रवणबेल्गोला—कन्नड़-भग्न।

[विना काल निर्देशका]

[जै० शि० सं०, प्र० मा०]

४०८

चिक्क-मागडि;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक [१, १०४ = ११८२ ई०]

[चिक्कमागडिमें, वसवप्प नन्दिरके प्राङ्गणमें एक स्तम्भ पर

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
वीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥
श्रीराविप्पुदु वर्म्मदिं निपत्त-वर्म्मे शान्तियिं शान्ति-वि-
स्तारं कुल्पु ... ...।
... पक्कर् विनुत-वर्म्मे शान्ति सत्-कुल्पुवेम्ब्-।
ई-रत्नत्रय-देवरक्षितनेनल् दीर्घायुमं श्रीयुमन्॥
प्रकटं व्याप्त ... ... खरूपं नित्य-भावं विकर्-।
त्रिक्रमावेष्टित-भावत-त्रितयवा-यद्-द्रव्य-सम्पन्न-व-।
र्त्तिक्रमोप्पिर्द्दुदु नोडे नाल्वेयुत्तमो-मध्योर्द्ध्व-लोक ...।
... लोक्कक्केदिर्प्पुदन्तुमय-कर्म्मोद्योग-निर्म्मोग-तल्-।

लीलं द्वीप-समुद्र-वर्ग-वळयीभूत-प्रभूत-स्थळी- ।
माळाळ ··· ··· भू-रमणं जगद्वितनी-महत्त्वक्केनल्केम् ।
णडुवोप्पं वेत्तुदो तां लवण-जलधि रत्नम्मणल् लक्ष्मि नीर्- ।
वेण्णोडरिप्पा-कल्प-वृक्ष-प्रसव ····· देवेळ्वेनोळ्पम् ॥

कं ॥ वार्-वळय-निकरवेम्बा- ।
नीर्वेलिय नडुवे नेरदु जम्बू-चिह्नम् ।
सार्विनवीप्सित-फळमम् ।
पार्विनवेळेगिम्बिदाय्तु **जम्बू-द्वीपम्** ॥
इदु जम्बू-द्वीप ··· निदु सुरोर्व्वीरुहौदार्य्यदिन्दिन्त् ।
इदु राजद्वैर्य्यदिन्दिन्तिदु जनित-जिन-स्थान-भोग्योपयोगा- ।
भ्युदय-श्री-लीलेयिं राचरसन तेरदिन्दुन्नतत्वक्के पक्का- ।
दुदेवेनुत्तं चन्द्र-सूर्य्या ··· ··· राराजिसिक्कुम् ॥
दोरेवेत्ता-**मेरु**विन् तेङ्कण-देशेयोळदेनोळ्पुवेत्तिद्दुर्दु श्री- ।
भरत क्षेत्रं करं तुम्बिगळ् मधुर-मन्द्र-स्वरोद्गीतदिं मे- ।
ल्ले-रलिंगळ्ळाडुवेल्लेल्लेलेम ··· ··· पुष्यङ्गळि हृण्ण-गोञ्चल्- ।
वेरगिन्दं चूतवल्ली-विततिगळेसेदा-लास्य-सारस्यदिन्दम् ॥
कं ॥ श्रीमज्जनदिं सुमनो- । धामतेयिं भ्रमर-शोभेयिं कर्णाट- ।
सीमेयना-भरत-श्री- । ··· तोर्प्पु··· नाडे **कुन्तळ-देशम्** ॥

वचन ॥ मत्तमल्लि जनद कोण्टेयुं गुणद व्यवहारमुं विनदद व्यवसायमुं रसद तोरे-गणिनेसेव केळी-वनङ्गळुं विरयिगळ् कामनयिक्के···रेयं गोण्डिर्प्प ळीळेयिं नेरेद-कमळिनिगळुं वसन्तकेळिगे समेद पोण्डोणिगळ-गोण्डळमुं धर्म्मक्के नेर्म्ममुं भोगक्कागरमुमाद घटिका-स्थानमुं रत्न-समृद्धिगे सोल्तु स··· ··· मगळ् गोण्डुदेनिप परिखेयिं राजमण्डलसमानमेनिप कामिनीवर मुख-कमळ-निकरमुं ग्राम-नगर-खेड-खर्व्वण-मडम्ब-द्रोणामुख-पुर-पत्तन-राजधानिगळ वन ··· ··· ··· मेक्कि ळ्वर्वा मेरेदु नव-विधमागि तोर्प्प **कुन्तळ**-देसक्के ॥

क ॥ क्रमदिं विक्रमदिं दा-। न-मनोहर-वृत्तिविं **चालुक्य**-नृपाळे-।
चमरात्म-कीर्त्तिया-मृ-। रमणिगे मुत्तुगळ तोडवेनल् प्रियरादर् ॥
चालुक्य-भूभुजर्द्दिवि-। केळियोळिरे पेरगे नेरेवे काम्पुवोलिर्द्दर् ।
मू-वरुगे **रट्टरवरं**। तोडुत्तं **तैलनाल्दिदं** नेरे धरेयन् ॥
अवरो-तैलङ्के **सत्याश्रय**ने मगनवङ्गालचं **विक्रमन्** तान् ।
अवनिन्द **न्तय्यण** तां क्रियिने **जयसिंहाङ्कनुं** तम्मनन्ता-।
हवमल्ल तल्लुतं तत्-तनयनेसव **सोमेश्वर** तन्महीशं-।
गे सळं **पेर्म्मडि-देवं** मगनवन मगं ताने **भूलोकमल्लम्** ॥
समनिसिवङ्के **जगदे-**।
कमल्लनेनिसिर्द्द पुत्र-रूपदे तेवो-।
रमगीयतेयवननुचम् ।
रमणं मेरेदं जगक्के **नूर्म्मडि-तैलम्** ॥
बळिकं नलविं सार्द्दल् । **चालक्य**-राज्य-नामे **विज्जळो**र्व्वीपतियं ।
कळचूरि-तिळकननेम् पेळ्। गळ चित्तं होसतनरुतिर्पुदु होसते ॥

वृ ॥ दाडेगळुप्पिवङ्के रण्दोळ् तले मूडुवेरिदानेयोळ् ।
कोडुगळुप्पु मत्तेरडवङ्कुसदन्न ··· ··· ग ।
··· ··· डोळवन्तवन्य-नृप-रक्त-विसिक्तनवेन्दराति··· ।
दोडदे निल्वनाक्कनेनुतिर्पुदु विज्जलनं जगज्जनम् ॥
असि लते कूडे गण्डु मगुळ्दत्तहितावनिपाळ-मूर्मि-पेण् ।
मसगिदुदक्षदान्तवरोळा-सुर-कान्तेयर्गान्त-वेल्दु-।
व्यवसेनिसित्तु कादिदेडे नेत्तर-चौगिने केसोरन्तेयम् ।
पलरिसितेन्दु बन्दु शरणेम्बुदु **विज्जलनं** द्विषज्जनम् ॥
ब्बेदन्ता-विज्जळङ्केनदटेत्तेदुदो पेळ् **सिंहला**धीश्वरं वे-।
चळिगं **नेपाळकं** घट्टिळनदपदाळ् **केरळं गुज्जरं** कं-।
मळिगं मत्ता-तुरुष्कं कुदुरे वेसदवं लालनादन्तुळाव्वं ।

हेळेयं **पाण्ड्यं कळिङ्गं** करि-परिचरनागाळ्वेसेङ्केय्ये निच्चं ॥
जगमं सम्प्रीतियिं **विज्जल**-नृपतिय तम्मं भुजा-गर्व्वदिं **मै**- ।
ळुगि-देवं पाळिसुत्तं मेरेद वळिक्कवा-**बिज्जळो**र्व्वीश-पौत्रम् ।
त्रिगुणीभूत-प्रतापं तळेदनेळेय ··· **कन्दार**-क्षोणिपं तन्- ।
जगती-नाथानुतातं वळिक्रमवनियं ताळ्दिदं **सोवि-देवम्** ॥
क्रमदिं **कर्ण्णाट**मं **कुन्तळ**मनोलविनिं तीळिद तळक्यिं रम्यां- ।
गमनिम्बिम्बिम्बिपोळ्पं पडेदु पृथुल-**लाट**क्के **काञ्ची**प्रदेश- ।
क्के मनम्वेत्तेय्दे रागं बुदिद-ंकर-सरोजातमं नीडिया-**रा**- ।
यमुरारि-क्षोणिपं मेदिनियनिनिसु वन्देक-भोग्यक्के दन्दम् ॥
आतन तम्मनर्ज्जित-गुणं विभु-**मैलुगि-देव**नाळ्दुदम् ।
भू-तळमं वळिक्रमवनिं किरियातनेनिप्पनादोडम् ।
ख्यातियिनार्गंवल्ते हिरियातनेनल् धरे **शङ्कमो**र्व्वीप- ।
ब्रात-नुतं धरा-वळयमं परिरक्षिसुतिर्द्दनोळ्मेयिम् ॥

कं ॥ शङ्कन कीर्त्ति-प्रभेयिन्- ।
दं कामिनि भूमि गौर-रुचियिन्देसेदेम् ।
शङ्किनियादळो गीता- ।
लङ्कृत-नाना-विनोद-विळसित-गतियिम् ॥

वृ ॥ सवनार् **निश्शङ्कमल्ल**-क्षितिपतिगे तच्चक्रियिंन्दं वळिक्का- ।
हवमल्लं राय-नारायणनधिक-गुणं शङ्क-भूपानुजं भू- ।
भुवनाराध्यं धरा-मण्डलमनतुळ-दोर्द्दण्डदिन् ताळ्दिदं नोळ- ।
पवर्गेक-च्छत्रमं मेच्चिसरि मेरेविनेगं प्राज्य-साम्राज्यदिन्दं ॥
क्रमदिन्दा-**विज्जळो**र्व्वीपतिगे पडेदु सप्तांग-सम्पत्तियं म- ।
त्तमदं तच्चक्रियिन्दित्तलुमोदविद राजावळी-लीलेगं तन्- ।
दुमिदे सप्ताङ्गमं काणिसिदनेने जगं मन्त्रदिं तन्त्रदिं वि-- ।
क्रमदिं श्रीयिं सदाचारदिनोसेदेसेदं **रेचि-दण्डाधिनाथम्** ॥
कळचूर्य्य-क्षितिपाळ-राज्य-लते पर्व्वल् तन्न दोष-शाखेयं ।

विळसन्मन्दर-सानुगं विबुध-सेव्यं विस्तृत-च्छायन- ।
स्खळितौदार्य्य-विळास-भासि सुमनस्-संपूर्णनुद्यद्यशः- ।
फळदिं **रेचण-दण्डनाथ**नेसेदं लोकैक-कल्प-द्रुमम् ॥
जिननं तन्न मनमं मनः-प्रकृतियं सद्-विद्येया-विद्येयम् ।
तनुवन्ता-तनुवं विळासवदनुघल्-लक्ष्मिया-लक्ष्मियम् ।
विनुतौदार्य्यवदं जगं जगमनिम्बी-कीर्त्तियालिङ्गिसल् ।
जन-वन्द्यं विभु-रेचिराजनेसेदं चारित्र-रत्नाकरम् ॥
कवि-तति वल्मेगोलगिसे कामिनियर् सोव्रगिङ्के सोले वेळ्- !
पवर्गलुदार-वृत्तिगोलविं नर-शासनवागे राज्यमुद्- ।
भवदिनोडर्च्चि जैन-समयाम्बुधि कीर्त्ति-सुधांशुविं पोदळ्- ।
के वडेये रेचिराजनेसेदं जसदिं वसुधैक-बान्धवम् ॥
नडेद-नेलं रणोर्व्वरेयोळन्तनितुं तनगञ-पुञरिम् ।
पडेद-नेलन्तेम्बनसिसप्प-रूपाळनिक्कदुन्ने किळ्- ।
तडे कडु-दोसवेम्बनसहं मिगे बेङ्गडे पट्टे ताने वेड्- ।
गुडुवगोलेम्ब्रनेनदटनो कलि-**रेचण-दण्डनायकम्** ॥
अनुपम-दान-शौर्य्य-रण-शौर्य्यमने-बोगळ्दप्पेनाम् द्विषज्- ।
जनपरोळोन्दुवच्चरसियर्गे सयम्बरवागे सगदोळ् ।
जनियिसितिन्द्र-भूरुहके तोरणदिन्तविलेम्बुदेय्दे मे- ।
दिनि वसुधैक-बान्धव-चमूपति रेचणनेम् कृतार्त्थनो ॥
पेडे-वणि शेषनोळ् सरसिजोदरनम्बुधियोळ् मृगाङ्कचन्द् ।
उडुपनोळद्रिजार्द्धवभवाङ्गदोळा-मद-लुब्ध-भृङ्गविर- ।
प्पेडे दिगि-मङ्गळोळ् कुरुपु दोर्प्पिनेगं जगमं मुसुक्किदिङ्- ।
गडलेने कीर्त्ति रेचनेसेदं जसदिं वसुधैक-बान्धवम् ॥
श्रीवच्छं सिरियिं समृद्धनेसेवा-नागाम्बिका-सूनु-भो- ।
गावासं वसुधैक-बान्धवनुदारं स्तुत्य-गौरी-सुख- ।
श्री-विष्टं वृषभध्वज-प्रियतमं नारायणात्मोद्भवम् ।

भा बेत्तिरे चेल्वनेन्देनिसिदं श्री-**रेचि-दण्डाधिपम्** ॥
तरदि देशङ्गळं श्री-**कळचूरि-कुळ**-चक्रेशरिं पेत्तुदी-**ना**- ।
गर-खण्डकृत्यवट्टा-नृपरोळ् पडेदिम्बिन्दवाळ्दर्प्पना- **रे**- ।
चरसं तानेन्दोडे-वण्णिपुदो निसदवी-देशदिन्दोळ्मेयं वि- ।
त्तरदिं पङ्केज-रूपं **बनवसे**यादरोळ् श्रीय-वोलिप्पुदेम्बेम् ॥
कुसुम-रजं रसावळि तळिर् सोव डाडुव कीर-जालवेम्ब् ।
एसकदे चल्लुवेरिद-नेलं नेले-वेर्च्चिद पूगोळम्बिसुर् ।
प्पेसगद-नुण्-बिसल् सुळिव कम्मेलरीक्षिसे हच्चनोप्पुवा- ।
गसवेसेयल्के नाडेसवुदेन्तु बसन्तद सृष्टियेम्बिनम् ॥

कं ॥ आ-नागर-खण्डमना- ।
ल्पा-नृप-विनुत-**कदम्ब**रन्ता-नृप-स- ।
न्तानाम्बुजदोळे सकल-क- ।
ळा-निळयं ब्रह्म भूभुजं जनियिसिदं ॥
आ-विभुविङ्गं **चट्टल**- ।
देविगवुदायिसिदनखिळ-नीति-क्रम-सं- ।
भावित-राजाचार- ।
श्री-वधुगेसेयल्के शौर्य्यदोप्पं **बोप्पम्** ॥
मेदिनिगे **बोप्प-देव**नित् ।
आदुदु हगे हुगद बाळ बाळ्वेलियवङ्ग् ।
आदळ् वल्लभे विनुत- ।
श्री-देवियवर्ग्गे पुट्टिदं **सोम-नृपम्** ॥

वृ ॥ नुडिगललन्दे मुद्दु-नुडि **सत्य-पताक**नेनिप्पुदोप्पिद- ।
ट्टिदि **निगळंक-मल्ल**नेने राजिपुदोजे **कडम्ब-रुद्र**नेम्ब- ।
ओडेतनवं नेगळ्चदुदु **गण्डर-डावणि**येम्ब्-नाममम् ।
पडेदुदु **सोम** भमिपन शौर्य्य-गुणावलियेम् कृतार्थनो ॥
निनगन्ता-काममीगळ् केळेयनेनिपुदं तोर्प्पुवोलेम्मनेच्चें- ।

च्चु नितान्तं निज पादक्केरगिपनेनुतं कान्तेयर्ब्बोले काळ्गा- ।
नन-**काश्मीर**-द्रवं पट्टिद निगळद् चाङ्गाळ्वनङ्गके सेवा- ।
वनितारागम्बोळागळ् मेरेवुदनुदिनं **सोम**-भूमीश-पादम् ॥
धुनिदोडे-**सोम**-भूपनमागर्प्पेडेया-वनवासेयन्तदन्त् ।
अनितुमदीगळातन भुजासि-लता-वृत्तवाम्बु पोक्कुसिल् ।
किनोळिरे पोल्लदेन्दचितरोडि समुद्रद चेळेगण्डु ताव् ।
अनुमिसि वेळेगोण्डु सुखमिर्प्परिदेनर्दाट्टङ्गे नोन्तनो ॥
विख्दर् ब्भीतोर्व्विपाळर् म्मदन-परवशीभूतेयर् विद्येयुळ्ळर् ।
श्शरणेन्दर् स्सेवकर् ब्वेळ्पवर्गोल्दीवनी-**सोम**-भूमी- ।
श्वरनेन्दुं रागदिं सङ्गतमनभयमं वेटवं तुष्टियं सय्त्- ।
इरवं सम्प्रीतियं वेळ्पुदनेने जनवौदार्य्यदि वर्य्यनादम् ॥
तोळ तोडर्प्पु मच्चिपेर्डे-वत्तुगे चुम्बिसुविम्बु **सोम**-भू- ।
पळनोळेक-भोग्यवेनिसल् तनगागिरला-स्थळङ्गळम् ।
पाळिप कापु वीर-सिरि लक्ष्मि सरस्वतियेन्दे सैरिपळ् ।
मेळिसलीवळे पेररनेन्देने **लक्ष्मल-देवि**योप्पुवळ् ॥
एनिपा-दम्पतियोल्मेरगागळिसलोप्पं प्राज्य-साम्राज्य-का- ।
मिनि माडल् विगियप्पनेय्तरे परोर्व्वीपाळरिं कप्पविन्त् ।
इनिसुं माडदिरल्के दुष्ट-तति तप्पं पुट्टिदं **वोप्प**नेम्ब्- ॥
इनेगं वोप्प-नृपाळनप्रतिम-पुण्यं राजिसित्तुर्व्वियोळ् ॥
कं ॥ ई-वोर्प्प देवकिगाद्- । आ-वोप्पं तप्पदप्पनरिदेम् कीर्त्ति- ।
श्री-वाय्-देरेदोडे काणल्क् ।
ई-वन्दुदे भुवन-निकरवेने पेसर्वडेदम् ॥
। नगेयल्तेयेमे यिक्कतिर्द्द-हदिनेण्ट्-अक्षोहिणी-सेनेगन्द् ।
नुर्रि सत्त हिरण्यकाक्षकनेनिप्पङ्गन्ददेम् विट्ट-कङ्ग् ।
अविदन्ता-मयदिन्दे वेन्द मदनङ्गन्दा-महामागरण्- ।
मुगेयेन्दी विभु-**वोप्प-देव**नलेवं सत्त्वाधिकान्यौघमम् ॥

कदन-क्रीडेयोळुळ्ळ मिन्न दयेयेकिन्तोम्मेंयुं तोरदी- ।
मदन-क्रीडेयोळुत्तुदं मरेदडं नीर्-वोक्कडं नाण पुत्त्- ।
उदलोन्दिर्द्दडवित्तोडं तलेयने सम्प्रीतियं तोरेयेन्द् ।
ओदविं मेळिरे कान्तेयर् म्मेरेवनी-श्री-**बोप्प**-भूपाळकम् ॥

क ॥ सिरियिन्दोप्पुव **बान्धव**- ।
पुरवातन राजधानियन्ता-पुरदोळ ।
सुर-खचरोरग-मणि-मकु- ।
ट-रचित-पद-कान्ति **शान्तिनाथं** मेरेवम् ॥

वृ ॥ पाळभिषेकवन्तेनितदादडवाल्लियदश्यमप्प पू- ।
माले पदक्के जानुवरविक्रिदोडं निर्मिर्वुण्ण-तोयदिम् ।
लीलेयि मज्जनक्केरेये वामदे शीतळत्वागि वर्प्पवेम् ।
सालवे **शान्तिनाथ**न महा-महिमत्वमनोल्दु वर्णिसल् ॥

कं ॥ एनिपास्थानाचार्य्यम् ।
मुनि विनुतं **भानुकीर्त्ति-सिद्धान्ति** जगज्- ।
जन-वन्द्यं निज-गुरु-कुळ- ।
वनज-विकाशमनोउच्चुर्यं तपदिन्दम् ॥
अलर्दुददेन्तेनला-गुरु- ।
कुळवा-गौतमनेनिप्प गणधरनिन्दित्- ।
तलनेक-**मूलसंघा**- ।
विळ-यति-पतियाद **कोण्डकुन्दान्वय**दोळ् ॥
श्री-**रावणन्दि-सिद्धा**- ।
न्ता**राव**-सरोवरक्के तोडबेनिपं वाक्- ।
श्री-रम्य-**पद्मणन्दि**-त- ।
पो-रमे पिडिदिर्द्द पद्ममेने तच्छिष्यम् ॥
तन्मुनि-नाथन शिष्यं ।
मन्मथ-सह वल्लदङ्गना-रति सुखमम् ।

सन्मुनि-सद्गुरु-कुवळय- ।
भृन्मति पोसतेनिसि नेगळ्द्ना-**मुनिचन्द्रम्** ॥
वृ ॥ लोकमनावर्ग वेळगिदं जसदिं **मुनिचन्द्र-देव**न- ।
प्राकृत-जैन-योग-निळयं प्रकटीकृत-[त]त्व-निर्ण्णयम् ।
स्वीकृत-शब्द-शास्त्रनुररीकृत-तर्क-कळा-कळापनू-
रीकृत-काव्य-नाटकनघःकृत-मीनपताक-विक्रमम् ॥
-कं ॥ तच्छिष्यं प्रकटीकृत-कीर-
त्ति-च्छत्रं **भानुकीर्त्ति काणूर-गण-भू-** ।
मि-च्छत्र **तिन्त्रिणीक-सु-** ।
गच्छं श्री-**नुत्त-वंश**नेसेदं जगदोळ् ॥
वृ ॥ शान्त-रसीत्य-मूर्त्ति दिगिभ-व्रज-मस्तक-वर्ति-कीर्त्ति सैद्- ।
धान्तिक-चक्रवर्त्ति जिन-पाद-निधान-मु-दीप-वर्त्ति चै- ।
न्तन-जैन-योगिसम-वर्त्तियेनल् **मुनि-भानुकीर्त्ति** पेम्-
पं तळेदं स्व-मन्त्रि-गति-धूर्त्त-जनक्षतिवर्त्तियेम्बिनम् ॥
नियतं तन्मुनिनाथ-शिष्यनेसेदं सन्मार्ग-सम्पत्तियिम् ।
नयकीर्त्ति-व्रति-नायकं विबुध-वाञ्छा-दायकं जैन-त- ।
त्व-यथार्थागम-कायकं कृत-यशस्-संस्तायकं ध्वंसिता- ।
भय-निस्यन्दित-पुष्पसायकनुदग्रौढार्य-सन्दायकम् ॥
-कन्द ॥ अन्तेसेदाचार्य्यावळिय्- ।
इं तिळिदागमङ्गळं जिन-समयोच्- ।
चिन्तामणि **सं(शं)कर-सा-** ।
मन्तं शान्तियने माडि शङ्करनेनिपम् ॥
विदित-पराक्रमनेनिपा- ।
-क्ष्मा-नृप-तिळक **बोप्प-देव**न राज्या- ।
भ्युदयक्के ताने मोदलेनि- ।
सिदना-सामन्त-**शङ्करं** नयदिन्दम् ॥

सामन्त-शङ्करनिन्दुद्- ।
दामते-वडेदिर्द्द **नण्डु-वंशद** सिरि मुन्- ।
ए-माल्केयेम्ब्रोडन्वय- ।
रामेगे तोडवादनमळ-सङ्गं **सिङ्गम्** ॥
सिङ्गल कान्तेयल्ते सिरियातन केसर-माळेयम्ब चेल्- ।
विङ्गेडेगोण्डु माळनवर्गादनवङ्गेणेयागे **माणियक्क**- ।
अं गुण-युक्ति-कान्तेयनर्गिम्बिने पुट्टिदनेक्कनेक्के-**गौ**- ।
डङ्गनुचातना-**केरेयमं** मेरेदं स्तुति-जीवनोदयम् ॥
कं ॥ अनुदिनमवरिच्छा-जनि- ।
त-फलं वळये तन्न कालगळनाश्र- ।
यिस नितान्तं केरेयमना- ।
दनदं **रेसव्वे** नल्लळादळु नलविम् ॥
वृ ॥ अर्वारर्व्वर्गावुदात्तनप्पनेनिसिर्द्दा-**वोप्पगावुण्डनु**-
द्भवमुं तानु-दुदात्त-वृत्तियुमन्नौदार्य्यमुं पेर्म्मेयो- ।
प्पुदाांगरे पुट्टि कीर्त्ति-पडेदं तन्निच्चेवोळ **चाकि-गौ**- ।
डि विनूताङ्गन-वाद्धियोळ् पडेये सत्-पुण्याङ्कनं **सङ्कनम्** ॥
वर-वनिता-वशङ्करनराति-नृपाळ-भयङ्करं जिने- ।
श्वर-यति-किङ्करं स्वपति-चित्त-मदंकरनिष्टवर्ग्ग-शं- ।
करनखिळार्त्थ-शास्त्र-सु-दृढ़ंकरनात्म-सुखंकरं मनो- ।
हरनेने शंकरं पडेदनोप्पे चरित्रदोळं ··· ··· त्तियम् ॥
दिनमेल्लं दान-केळि-समयमे तनगेन्देम्बिनं नीतियेल्लम् ।
तनेगेन्दागिर्द्दवेन्देम्बिनवरि-कुळवेल्लं स्व-खड्गाहतं-शा- ।
किनियर्गेन्दादुदेन्देम्बिन वोडमेयदल्लं जगत्-पोषणक्केम्- ।
विनवा-सामन्त-सुखं नेगळ्दनेळेगवातङ्कवागल्के तन्निम् ॥
पथिकङ्गिष्टाङ्गे शिष्टंगधननेनिपवङ्गात्ति-यादङ्गे नित्या ।
तिथिगाळ्गन्यङ्गे मान्यङ्गववनिवेळेय ··· ··· ङ-गौट्टङ्गे भार- ।

अधितट्टेन्तेम्बवन्नेनेनुतेनुदिसिदङ्गार्ग्गवोल्दित्तु दौरव्य-।
व्यथेयं माणिप्पनेम् मान्तनद् कणियो सामन्तरोळ् संकराङ्कम् ॥
पति-मन्त्र-प्रौढि-सेवक-तति निरहङ्कारं मान्यरोळ्पम् ।
क्षिति-सन् मर्य्यादेगं बन्धुगळनुदिन-सन्-मानधं धार्म्मिकर् सन्-
मतियं कान्ताजनं नेय्दळियनखिळ-वन्दि-यवं धा- ।
··· ··· वण्णिकुं पुण्यद् तवगे दिट्ट नोडे सामन्त-शङ्कम् ॥

कं ॥ करेयेनिप नुरम्भिगेलेगळ ।
मरेयेनिसिद् फळ्प-वृक्ष-फळ-ततिनेनेये ।
करेव ··· ··· ··· दारते ।
मेरेयुदु सामन्त-शङ्करनोळनवरतम् ॥

ग ॥ विनेय-रसज्ञलि तणिपि यानकरं मनेगोय्दु सन्ततं ।
कनकद् वाटनित्तु मिगे सोक्किसि नेल्वर ··· ··· ··· ।
/ ··· ··· आ मारुगोण्डवर नालेगेयं प्रभु-शंकरं यशो- ।
धननेनिसिद्दनल्लदोट्टे मारुवरे रसना-निकायमम् ॥

कं ॥ एनिसिद शङ्कर-साम- ।
न्तन कान्तेय ··· ··· यिन्दुणे सत्या- ।
वनि जक्कणब्बेयुं का- ।
मन सिरि कं-देरळेय्दिने सोगेयिसिदर् ॥
शान्तेय सुनु शङ्कर-जनूद्भवनुद्ध-कदम्ब-रुद्र सा- ।
मन्त ··· ··· समय प्रणुतं वसुधैक-बान्धवम् ।
अन्तेसेदात-मन्त्रि विभु-गोप्पनोळर्च्चिदमोळ्मेगोप्पमम् ।
शान्तते दानवप्पु चरितं सिरि कोमळ-रूपवोप्पिरल् ॥
·· ··· न देवतेयेन्द् ।
एने नेगळ्द-जक्कणब्बे-तनुविं मनदिं ।
मनसिजनुं विननुं तन् ।

इनियङ्गुभय-भव-सुखवदेने करवेसेदळ् ॥
जिन-समय-भक्तियि स- ।
••• ••• सुपुत्ररिर्व्वरिनेणे शा- ।
सन-देविगे वल्लभन- ।
त्यनुवशनी-**जक्कणव्वे**-गिदुवे विशेषम् ॥
आ-**जक्कणव्वेय**ग्-त- ।
नूलं मेरेदं जगक्के सुजन-मनोजम् ।
पूजि ••• ••• ••• ।
••• ••• सकळ-गुण-निकर-धामं **सोमम्** ॥

वृत्त ॥ तनु पुण्योदय-शोभितं निमिर्दतोळौदार्य-रम्यं मुखम् ।
जन-सम्मोहन-सत्य-वृत्त वलगन् दाक्षिण्य-दीर्घा ••• ।
••• ••• ति रूपके यथा रूपं तथा शीलवेन्द् ।
एने सामन्त-ललाम-सोमनेसेदं सौन्दर्य्य-चातुर्य्यदिम् ॥
करदिन्दं तेगेयल् सशक्ति नी ••• ••• वन्दा ••• ••• ।
र-पुत्रं-नुत-**जक्कणव्वेय** मगं कण्ठीरवारोहण- ।
क्केरेवं **सोम**-सहोदरं शिशुतेयोळ् **मुद्दय्य** मुद्दय्यना- ।
दरदिं कळ्प-कुजतमं पडेवनेन्दा-चूतमं वर्द्धिपम् ॥

कं ॥ अन्तेनिसल् **शङ्कर**-सा- ।
मन्तं सकळत्र-पुत्र-बान्धव-मित्रा- ।
नन्तःवयनेसेदं निश्- ।
चिन्तं धर्म्मार्थ्य-काम-वर्ग्ग-सुमार्ग्गम् ॥
अनुपमिताश्चर्य्य **शा**- ।
न्तिनाथनेन्दा-स्थळानुबन्धदिनिम्बिम् ।
जिन-गृहमं **मागुडि**योळ् ।
विनुतं सामन्य(त)-शङ्करम्माडिसिदम् ॥

वृ ॥ प्रतिविम्बं पद-नातमं कळेतुदा-रङ्गके कम्मके हृद्- ।
गतमं माळ्पुदु शालभञ्जिकेगळं चित्रिप्पुदा-भित्ति-सन्- ।
ततियं चङ्गम-चित्रदिन्देने चनं सामन्य-शङ्कं चगन्- ।
नुतमं माडिसिदं चिनेन्द्र-गृहमं **मागुण्डियोळ् रागदिम्** ॥
आ-भुवनैक-मण्डन-जिनालयमं नलेविन्दे नोडि **सू-**
र्य्यामरणाह्वयं वलिपुरि-त्रिपुरान्तक-सूरि-संस्तुतम् ।
शोभितुतिद्दुंदी-वसदि तीर्थंकरर् सूशिव-सत् पदस्थरेन्द् ।
[आ-भुवनैक-मण्डन-जिनालयमं नलेविन्दे नोडि सू- ।
र्य्यामरणाह्वयं वलिपुरि-त्रिपुरान्तक-सूरि-संस्तुतम् ।
शोभितुतिद्दुंदी-वसदि तीर्थंकरर् सूशिव-सत्पदस्थरेन्द् । ?]
आ-भव-भावदिम्मुनिवरं स्थळ-वृत्तियनित्तनुत्तमम् ॥

कं ॥ स्थिरवागिरित्तनडकेय । मरनव्नूरुळ्ळ-तोप्पवा-पूडोप्पम् ।
वेरसु सुमूमिय मत्तर । व्वरे गद्देयदोन्दु-गाणवेन्दिन्तिनितम् ॥

वृ ॥ अन्ता-धर्म्म-निकायमं सुळितुतं न्यायार्जित-द्रव्यदिन्द् ।
अन्तीवुत्तखिळाशेयं सदुपमोगानीकमं भोगिसुत्त् ।
अन्ता-**शङ्कम-देव-चक्रि** नडेदं **वल्लाळ**-भूपाळनम् ।
सन्तं तन्न पदाब्ज-सेवेगे-दरलू शौर्य्यार्ण्णवं धूर्ज्जिसलू ।

कं ॥ नडेदातन लक्ष्मिय् कय्- ।
पिडिदोडगोण्डखिळ-दण्डनाथ-समेतम् ।
नडेतन्दु **ताणगुन्दद** ।
नडे-वोडिनोळ् इर्द्दनर्त्थियिं पल्ल-देवसम् ॥
इरे **रेचण-दण्डाधी-** ।
श्वरं चिनेश्वर-पदाम्बुजन्दने एन्दोप्प्- ।
इरे वन्दं **मागुडिगा-** ।
दरदिं श्री-चोप्प-भूप **शङ्कर**-सहितम् ॥

वन्दु विनेश्वर-पदमं ।
वन्दिसि जिन-मुनि-पदाम्बुजक्के रगि जिनो-
न्मदिरमं नोडि दृढा- ।
नन्दं वसुधैक-बान्धवं वण्णिसिदम् ॥
अन्तु पोगळ्दु त्रि-भोगा- ।
भ्यन्तरवागिर्द्द **तळवेयं** सर्व-नम- ।
स्यं तेजो-साम्य-समे- ।
तं तज्जिन-पूजेगेन्दु परिकल्पिसिदं ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाराजाधिराज **कालाञ्जनपुर**-वराधीश्वरं प्रताप-लङ्केश्वरं शौर्य्य-पञ्चाननं गीता-चतुराननं शुभतरादित्यं विज्ञ-भूभुजापत्यं गज-सामन्त जय-कामिनी-कान्तं सुवर्ण्ण-वृषभ-ध्वजं कळचूर्य्य-राज्य-लक्ष्मी-प्रतिष्ठितायत-भुजं **रायनारायणं** भरतागमाम्भोधि-पारायणं गिरिदुर्ग्ग-मल्लं श्रीमद्**दाहवमल्लं** **मोदेगनूर** नेलेवीडिनलु सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि श्रीमन्महा-प्रधानं वाहत्तर-नियोगाधिपति महा-प्रचण्ड-दण्डनायकं **रेचि-देवरस**ना-**मागुण्डिय** रत्नत्रय-देवर वसदियाचार्य्यर् **भानुकीर्त्ति-सिद्धान्त-देवरं** वरिसि मुन्नं समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महामण्डलेश्वरं **वनवासिपुर**-वराधीश्वरं पद्मावती-देवी-लब्ध-वर-प्रसादं मृगमदा-मोदं मार्क्कोल-भैरवं कादम्ब-कण्ठी ··· ··· कामिनी-लोलं हुसिवर शूलं निगळंक-मल्लनसु-हृत्-सेल्ल गण्डर-दावणि सुभट-शिरोमणि इत्य-खिल-नामावळी-समालंकृतनप्प **बाप्प-देव** ··· ··· **बळिय वाडं तळवेयं** त्रि-भोगाभ्यन्तर-विशुद्धियिं सर्व्व-बाधा-परिहारं सर्व्व-नमस्यवागि परिकल्पिसिदुदं **शक-वर्ष-नूर-नाल्कनेय** ··· ··· ··· ··· **सुद्ध-पञ्चमी-बुधवारदन्दा**-रत्नत्रय देवरभिषेकाद्यङ्ग-भोग-रङ्ग-भोगक्कं ऋषियराहार-दानक्कं विद्यार्थिगळ ··· ··· ··· ··· वसदि पेस ··· ··· ··· खण्ड-स्पु(स्फु)टित-जीर्णोद्धारक्कवेन्दु आ-श्रीमन्मूल-**संघद क्राणूर्-गणद तिन्त्रिक-गच्छद नुन्न-वंशद** श्रीमद्-**भानुकीर्त्ति-सिद्धान्त** ··· ··· ··· कोट्टु ··· ··· ··· महा-प्रधानं कृत-जयाकर्षण-विधानं धनु-

विद्या-घनञ्जयनाकर्ण्णित-रण-रभस-भीत-भू··· ··· ··· द-विद्याधरं काव्य-कळा-धर-नेनिप नुरारि-केशव-देवङ्गे धर्म्म-प्रतिपाळनमं समर्पिसिदनातन प्रभावमेन्तेन्दोडे ॥

वृ ॥ गिरीशन दृष्टि ··· ··· ··· ··· मनुमत ।
शर-यष्टि-पार्थननुदन्वित-वन्धुर-वेग-सृष्टियोन्द् ।
इरे गरिवेत्त तन्न शरलिं गरि मूडि दिक्कके पारि-दुस्- ।
स्तर-रिपु कादि ग ··· न ··· ··· मुरारि-केशव ॥

···।··· आ-वसदियलोम्मे नाना-देशद व्यवहारिगळ् तन्द-मण्डद कय्यक्के नाल्कुं स्थळद वणञ्जु-मुम्मुरि-दण्डमुं ··· ··· ··· ··· त्त ··· ··· ··· कन मृदु-हृदयरागि या-स्थळवं पोक्कु मारिद मण्डद पोङ्गे वीस मळवेगे हाग वसळक्के वेळे इन्तिनितुमं ··· ··· ··· ··· धर्म्ममं प्रति ··· दनेक-जन्मार्जित-पाप-नाशेयं परि-हरिसि नाना-सुकृतमननुभविसुवन् प्रतिपालिसिदं किडिसदवरेळेनेय-नरकमं पोक्कु···
··· ··· वर् ॥ (हमेशाके अन्तिम श्लोक)।

(प्रथम भाग का अधिकांश बहुत बिगड़ गया है)।

[जिन शासनकी प्रशंसा। धर्म्म, शान्ति और कुन्थु, ये तीन 'रत्नत्रय देवता'के नामसे उल्लिखित हुये हैं। अधो, मध्य और ऊर्ध्व लोकका वर्णन। जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र और कुन्तल देशका क्रमशः वर्णन। कुन्तल-देशका ग्राम, नगर, खेड, कर्व्वण, मडम्ब, द्रोणमुख, पुर, पट्टन और राजधानी, इन ९ विभागोंमें विभाजन।

प्रथम पृथ्वीका भोग चालुक्य राजाओंके द्वारा; पुनः रट्ट राजाओं द्वारा हुआ; उनको हटाकर तैलने पृथ्वीका शासन किया। तैलका पुत्र सत्याश्रय; उसका पुत्र विक्रम; जिसका छोटा भाई अय्यण था; उसका भी छोटा भाई जयसिंह; है (जयसिंहका) पुत्र आहवमल्ल; उसका पुत्र सोमेश्वर; उस राजाका पुत्र पर्म्माडि-देव; जिसका पुत्र भूलोकमल्ल; उसका पुत्र जगदेकमल्ल; जिसका छोटा भाई नूर्म्मडि तैल था।

इसके बाद, चालुक्य राज्यकी लक्ष्मी कळचूरि-तिलक **विज्जल**के हाथमें आयी। उसकी बहादुरीके श्लोक। विज्जलकी महत्ता (बड़प्पन) कैसे बढ़ी, इसके लिये कहा है:—सिंहल राजा, नेपाल राजा, केरल, गुर्ज्जर, तुरुष्क, लाळ, पाण्ड्य, कलिंग,—ये उसके किसी-न-किसी दैनिक कार्यको करके उसकी सेवा बजाते थे। राजा विज्जलके छोटे भाई मैलुगि-देवने प्रेम और शक्ति-बलसे पृथ्वी-की रक्षा की; इसके बाद उस विज्जल राजाके पौत्र राजा कन्दारने पृथ्वीका पालन किया; इसके बाद, उस (कन्दार) राजाके अनुतात (छोटे चाचा), सोयि-देवने पृथ्वीका पालन किया। राजा रायमुरारिने क्रमशः कर्णाट और कुन्तलको एक में मिलानेके बाद उसी राज्यमें लाट और काञ्ची-प्रदेशको भी मिला लिया। उसके छोटे भाई मैलुगि-देवने पृथ्वीका शासन किया; उसके बाद उसके छोटे भाई, लेकिन कीर्त्तिमें सबसे बड़े, राजा शंकमने पृथ्वीकी रक्षा की। उसकी प्रशंसा। (इस) निश्शंकमल्लके बराबर दूसरा कौन था? उसके बाद राजा शंकका छोटा भाई राय-नारायण आहवमल्लने पृथ्वीका शासन किया।

क्रमशः, राजा विज्जलको सातगुनी सम्पत्तिके दिलानेवाले उनके दण्डाधिनाथ **रेच** या **रेचि** थे। उसके प्रशंसा-व्यञ्जक बहुत-से श्लोक, जिनमें उसे 'वसुधैक-बान्धवम्' कहा गया गया है। नागाम्बिका और नारायण के ये पुत्र थे, उनकी पत्नी गौरी थी, वृषभ-चिह्नवाला उनका झण्डा था।

उस रेचरस (रेच-दण्डाधिनाथ) को कळचुरि सम्राटों से क्रमशः बहुत-से देश मिले थे; उनमें एक **नागर-खण्ड** था।

कदम्ब-कुल-कमलमें, उस नागर-खण्डका शासक राजा **ब्रह्म** था। उससे और चट्टल-देवीसे **बोप्प** उत्पन्न हुआ था। बोप्प-देवकी पत्नी श्री देवी थी। उसका पुत्र राजा सोम हुआ। जब वह कुछ बोलने लगा, तो उसके आकर्षक शब्दों के कारण उसका नाम 'सत्य-पताक' पड़ गया; जब उसने इधर-उधर चलना शुरू किया, उसे लोग 'निगलंक-मल्ल' कहने लगे; जब उसकी शक्ति प्रकट होने लगी, तो उस 'कडम्ब-रुद्र' कहा जाने लगा; जब उसे राज्य मिला, तो उसे 'गण्डर-

दावणि (शूर लोगोंके लिये पशु-रज्जु)' कहने लगे। इस तरह उसकी बहादुरीके गुणों की कितनी लम्बी सूची थी। एक दूसरे श्लोकमें उसकी उदारताकी प्रशंसा है। उसकी पत्नी लक्ष्मल-देवी थी। इनसे बोप्पका जन्म हुआ था। उसका कृष्णसे मिलान किया है और कहा है कि उसके १८ अक्षौहिणी सेना थी।

उसकी राजधानी समृद्ध वान्धव-पुर था, जिसमें शान्तिनाथ भगवान्का मन्दिर था।

उस मन्दिरमें मानुकीर्त्ति-सिद्धान्ती आचार्य थे। इनके गुरुकुलमें कोण्डकुन्दान्वयके मूल-संघके कई यतिपति थे। रायगन्दि-सिद्धान्तीके शिष्य पद्मनन्दि थे। उनके शिष्य मुनिचन्द्र थे। ये सर्वविद्याओंके बड़े प्रकाण्ड पण्डित थे। इनके शिष्य काणूर-गण, तिन्त्रिणिक-गच्छ और मुल-वंशके **भानुकीर्त्ति** थे। ये सैद्धान्तिक चक्रवर्त्ती थे। इनके शिष्य (प्रशंसा सहित) नयकीर्त्ति-व्रती थे।

इस परम्पराके गुरुओंसे 'आगम' सीखकर, जिन-समयके 'चिन्तामणि' शंकर-सामन्त थे। कदम्ब-राजा बोप्पदेवके राज्यको बढ़ानेके लिये शंकर ही उचित रूपसे प्रथम व्यक्ति कहे जाते थे। सामन्त-शंक द्वारा सुशोभित नण्डु वंशमें उस कुलका तिलक, सिङ्गम् उत्पन्न हुआ। उसकी पत्नी मालियक्क थी, जिसका पुत्र एक-गौड था, जिसका छोटा भाई केरेयम था। केरेयमकी पत्नी रेसव्वे थी, और उनका बोप्प गावुण्ड हुआ। उसकी पत्नी चाकि-गौडि थी, और उनका पुत्र शंक या सामन्त-शंक था। उसकी प्रशंसामें कई श्लोक। उसकी पत्नी चक्कणव्वे थी। उसका ज्येष्ठ पुत्र सोम, जिसका छोटा भाई मुद्दय्य था।

इस प्रकार सम्मानित शंकर-सामन्तने मागुडिमें, उस स्थानसे सम्बन्ध होनेके कारण, शान्तिनाथ भगवान्के लिये एक बढ़िया जिन-मन्दिर बनवाया। इस मन्दिरके चमत्कारका वर्णन। वलिपुरके त्रिपुरान्तक-सूरि, जिनका नाम सूर्य्यामरण था, उन्होंने इस कारण कि यह मन्दिर तीर्थंकर और शिवके भक्तोंको एक-सा

प्यारा था, इसके लिये ५०० सुपारीके वृक्षोंका बाग तथा एक पुष्प-उद्यान, अच्छी धान्य (चावल) की भूमि तथा एक कोल्हूके रूपमें एक अच्छी 'स्थल-वृत्ति' दी।

उस गुणी कार्यको जारी रखनेके लिये, और अपनी न्याय-प्राप्त सम्पत्तिका अपने आश्रितोंकी आवश्यकताओंकी पूर्त्तिके लिये शंकर-देव-चक्रीने राजा बल्लाल-का आश्रय लिया। वह (? राजा) कुछ दिनोंके लिये ताणगुण्डके निवास-स्थान-में था। वहाँ रहते हुए, रेचण-दण्डाधीश्वर, राजा बोप्प और शंकरके साथ, मागुडिमें जिनेश्वरके पूजनके लिये आया। वहाँ आकर उसने जिन-मन्दिरसे बहुत प्रसन्न होकर जिनकी पूजाके लिये तलवे (गाँव) दिया।

जब, कालञ्जर-पुर वराधीश, राजा विजकी सन्तान, राय-नारायण, आहवमल्ल मोदेगनूरके अपने निवास-स्थानसे शान्ति और बुद्धिमानीसे राज्य कर रहे थे:—

तत्पादपद्मोपजीवी रेचि-देवरसने मागुण्डिके रत्नत्रयदेवकी वसदिके पुरोहित भानुकीर्त्ति-सिद्धान्त-देवको बुलाकर, (उक्त मितिको)[1] मूलसंघ, क्राणूर्-गण, तिन्त्रिक-गच्छ, और नुन्न-वंशके भानुकीर्त्ति-सिद्धान्त-देवको वेलेय-वाड ... ... में तळवे दिया। यही तळवे तीन पीढ़ियों तकके लिये, सब करोंसे मुक्त करके बोप्प-देवने दिया था।

और इस कामके संरक्षणका भार उसने प्रधान-मन्त्री मुरारि-केशव-देवको सौंप दिया। उसकी (मुरारि-केशवकी) प्रशंसा।

और उस वस्तिमें, एक समय चार स्थानोंके वनञ्जु तथा मुम्मुरिदण्डने (उक्त) कुछ चुङ्गी दी।]

[E C, VII. Shikarpur tl., no 197.]

१—'शक-वर्ष नूर-नाल्कने (शक वर्ष १०४)' इतना ही रह जानेके कारण और वर्षका नाम मिट जानेसे, निःसन्देह ११०४का मतलब दीखता है। एक हजारका उल्लेख मिट गया है।

४०९

वोम्मनहल्लि;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक ११०४ = ११८२ ई०]

[जै. शि. सं., प्र. भा.]

४१०

[जोडि] **वसवनपुर;**—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक सं० ११०५ = ११८३ ई०]

[जोडि वसवनपुरमें, हुण्डि-सिद्दन चिक्कके खेतके किनारेके एक पाषाणपर]

(प्रथम बाजू)

निर्दूय-पूति-मल-लेपमलं कलङ्कमालोकतश्च-जगति प्रतिपूचितो ह्यः ।
श्री वर्द्धमान इति पश्चिमतीर्थनाथो भव्यात्मनां दिशतु सन्ततमिष्टपुष्टिम ॥
श्री-वर्द्धमानजिनवक्त्रसमुत्थमर्त्थ-सार्थं समस्तमपि सूत्रगतं-चकार ।
यस्सर्वमन्यवनकण्ठविभूषणार्त्थं श्रीगौतमो गणधरोऽस्तु स नः प्रसिद्धयै ॥
गुरूणां कीर्त्तिमन्मूर्त्तिर्व्वाग्निषद्या विराजते ।
तद्विप्रयोगशोकार्त्तभक्तचित्तप्रशान्तये ।
श्रीमद्द्रामिळसङ्घेस्मिन्नन्दिसंघेऽस्त्यरुङ्गळः ।
अन्वयो भाति निःशेषशास्त्रवाराशिपारगैः ॥
समन्तभद्रस्संस्तुत्यः कस्य न स्यान्मुनीश्वरः ।
वाराणसीश्वरस्याग्रे निर्जिता येन विद्विषः ॥
उपेत्य सम्यग्दिशिं दक्षिणस्यां **कुमारसेनो** मुनिरस्तमाप ।
तत्रैव चित्रं जगदेकमानोत्तिष्ठत्यसौ तस्य तथा प्रकाशः ॥
कृत्वा चिन्तामणिं काव्यममीष्टार्थ-समर्थनं ।

चिन्तामणिरभून्नाम्ना भव्यचिन्तामणिर्गुरु··· ॥
विद्वच्चूडामणिश्चूडामणिकाव्यकृते ··· ।
चूडामणिसमाख्योऽभूल्लक्ष्य-लक्ष ··· लक्षणः ॥
यस्य सप्ततिमहावादविजयी वन्द्य एव सः ।
ब्रह्म-राक्षस-वन्द्याङ्घ्रि**धर्मभूषण**मुनीश्वरः ॥
आशान्त-वर्त्तिनी-कीर्त्तिस्तपश्श्रुतसमुद्भवा ।
यस्यानवद्य-शान्तात्मा **शान्तिदेव**मुनीश्वरः ॥
तस्या**कलङ्कदेव**स्य महिमा केन वर्ण्यते ।
यद्वाक्यखड्गघातेन हतो बुद्धो विबुद्धिसः ॥
श्री**पुष्पसेनमुनि**रेव पदं महिम्नो देवस्सयस्य समभूत्स भवान् सधर्म्मा ।
श्रीविभ्रमस्य भवनं तनु पद्ममेव पुष्पेषुमित्रमिह यस्य सहस्रधामा ॥
कीर्त्तिर्**विमळचन्द्र**स्य चन्द्रांशु-विशदा बभौ ।
यद्वाक्यलालितोल्लासमत्र शोकोऽयमीदृशः ॥
पत्रं शत्रुभयंकरोरु-भवन-द्वारे सदा सञ्चरन् ।
नाना-राज-करीन्द्र-वृन्द-तुरग-व्रताकुळे स्थापितम् ।
शैवान् पाशुपतांस्तथागतमतान् कापालिकान् कापिलान् ।
उद्दिश्योद्धतचेतसान् **विमळचन्द्राशाम्बरेणा**दरात् ॥
इन्द्रनन्दिमुनीन्द्रोऽयं वन्द्यो येन प्रकल्पितौ ।
प्रतिष्ठा-ज्वालिनी-कल्पौ कल्पान्तर-कृत-स्थिती ॥
परवादि-मल्ल-देवो देवी यद्भाग्य- दि ··· प्रवृत्ता कृष्णराजाग्रे
स्वनामादेश-देशिनी ॥
गृहीत-पक्षादितरैः परस्यात् तद्वादिनस्ते पर-वादिनस्स्युः ।
तेषां हि मल्लः **परवादिमल्ल**स्तन्नाम मन्नाम वदन्ति सन्तः ॥

(दूसरी बाजू)

सन्मतिः सत्यनामा··· ··· ··· ··· ···
··· ··· ··· ना गौतमा ··· ··· ।

... ... तत्य चातो भट्टारक ... ...

(३१ पंक्तियाँ यहाँ नष्ट हैं)

... ... श्रीमलधारि ... ...

श्रीमद्-द्रमिल-संघ ... ...

(तीसरी बाजू)

... ... ऽजितसेन-पण्डित ... ...

... ... दिवौक-स्तुतः

तर्क-व्याकरणागमादि-विदित स्त्रैविद्यविद्यापतिः

... मूल-प्रतिपालको गुण-गुरुर्विद्यागुरुर्यस्य सः ।

श्रीचन्द्रप्रभनामतो मुनिपतेस्सिद्धान्त-पारङ्गतो

... चन्द्रोऽजितसेन-देव-मुनिपो व ... ख्यातां प्राप्तवान् ॥

श्रीमत्त्रैविद्यविद्यापति[प]द-कमलाराधना-लब्धबुद्धि-

स्सिद्धा ... णिधानः विशदमृतस्वादु ... ष्ट-प्रमोदः ।

दीक्षा-रक्षा-दु-वक्षा ... मकृति-निपुणस्सन्ततं भव्य सेव्य-

स्सोऽयं दाक्षिण्य-मूर्त्तिर्जगति विजयते वासुपूज्य-व्रतीन्द्रः ॥

नमः

... तिमिर-मित्रस्सद्-गुरुस्सच्चरित्रः

विश्रुध-वन-दु-चैत्रः पुण्य-सम्पूर्ण-गात्रः ।

वित-निगदित-सूत्र[र्] पा ... सा सत्पवित्र-

स्स जयति गुण ... शाम-चन्द्रप्रभोऽत्रः ॥

य ... म-क्लापः ध्वस्तनिःशेषतापः ।

... सकळ-भूपो निर्वित· पुष्पचापः ॥

गर्हित-सकल-कोपस्सन्मुनिस्सत् ... पल्

स जयति गुण-रूपस्सूरि-चन्द्रप्रभाङ्कः ॥

नमोऽस्तु

(चौथी बाजू)

स्वपरमतविकासश्रीसुतेः कण्ठपाशो
नमितमुनिगणेशः भव्यबोधोपदेशः ।
श्रुत-परम-निवेशश्शुद्धमुक्त्यङ्गनेशः
जयति वर-मुनीशस्सूरिचन्द्रप्रभेशः ॥
समयदिवाकरदेवो तच्छिष्यः परम-तार्किकाम्बुज-मित्रः
चन्द्रप्रभमुनिनाथो कृत्वा सल्लेखनं शुभतनुत्यागम् ॥
शाके सायक-खेन्दु-भूमि-गणिते-संवत्सरे शोभकृन्-
नाम्नीष्टे कुजवार-शुद्ध-दशमी-प्राप्तोत्तराषाढ़के ।
मासे भाद्रपदे प्रभातसमये चन्द्रप्रभाख्यो मुनि-
स्सन्यसने समाधिना सुमरणं से ··· गणी द्रागभूत् ॥
यस्यार्यस्य गुरुस्सतां गुणगुरुस्त्रैविद्यविद्यानिधिः
ख्यातोऽसौ समये दिवाकर इति स्वादीक्षया शिष्यकैः ।
तैर्दत्तं सकलं ··· त श्रुतगुणं रत्नत्रयाख्यं क्रमाद्
आराध ··· त्य-समाधि ··· पातिश्चन्द्रप्रभाख्योऽभवत् ॥
य ··· ··· प ··· दशविधो धर्म्मं क्षमा ··· ···
कर गणागमे परिणतिस्साहित्य ··· ··· ···
भ्राजन्ते स भवान् समाधि-विधिना ··· ··· चार्यो दिवं
यातो ध्यानबलान्वितः ··· ··· रागद्वेषमोहास्थिरः ॥
यस्तत्वो ··· ··· ··· ··· वर्द्धन-विधुः कामेभ-कण्ठीरवः
श्रीमद्-द्राविड़संघभूषणमणिस्सद्ज्ञानचिन्तामणिः ।
धृत्वा चारुतपश्चरित्रममलं स्मृत्वा जिनाङ्घ्रिद्वयं
कृत्वा सन्यसनं जिनालयगतो चन्द्रप्रभस्सन्मुनिः ॥
लोके दुष्टजनाकुले हतकुले लोभातुरे निष्ठुरे
सालङ्कारपरे मनोहरतरे साहित्य-लीलाघरे ।
भद्रे देवि सरस्वती गुणनिधिः काले कलौ साम्प्रतं

कं यास्यत्यभिमानरत्ननिलयं चन्द्रप्रभार्य्यं विना ॥
साहित्योन्नतपादपं क्षितितले दुष्कर्मणा पातितं ।
वाग्देवी-पृथु-वक्त्र-मण्डनमहो सङ्क्षिप्य निर्नाशितं ।
सर्व्वज्ञागम-सार-भूधरमिदं द्वेषेण निर्लोठितं ।
श्रीचन्द्रप्रभदेव-देव-मरणे शास्त्रार्णवं शोषितम् ॥

नमोऽस्तु-

[इस लेखमें द्रमिल-संघगत नन्दि-संघके अरुङ्गल-अन्वयकी समन्तभद्र-मुनीश्वरसे लेकर चन्द्रप्रभ-मुनिनाथ तककी पट्टावली या शिष्य परम्परा दी हुई है। वह क्रमसे इस प्रकार है :—

१. **समन्तभद्र** मुनीश्वर—वारणासी (वाराणसी=बनारस) में राजाके सामने विपक्षियोंको हराया।

२. **कुमारसेन**—दक्षिणमें आकरके उनकी मृत्यु हुई, परन्तु मृत्युके बाद भी उनकी कीर्त्ति सारे भारतमें सूर्यकी तरह प्रकाशित हो रही थी।

३. गुरु **चिन्तामणि**—चिन्तामणि काव्यकी रचना की थी। विनमक्कोके लिये वास्तवमें ही 'चिन्तामणि' थे।

४. **चूड़ामणि**—चूड़ामणि काव्यकी रचना की थी, जिसमें काव्यगत अलङ्कारोंका वर्णन था। वे वास्तवमें विद्वच्चूड़ामणि थे।

५. मुनीश्वर **महेश्वर**—इन्होंने महान् उत्तर ७० शास्त्रार्थोंमें विजय पायी थी। उनके पैर ब्रह्म-राक्षस भी पूजते थे।

६. **शान्तिदेव** मुनीश्वर—दिशाओंके अन्ततक तपसे समुद्भूत उनकी कीर्त्ति फैली हुई थी। वे बहुत शान्तमूर्ति थे।

७. **अकलङ्कदेव**—उनकी कीर्त्तिका वर्णन कौन कर सकता है। इनके प्रबल विजयी शास्त्रार्थों से बौद्ध पण्डितोंको मृत्युतकका आलिङ्गन कराया गया था।

८. **पुष्पसेन** मुनि—यह अकलङ्कदेवके सांयी (सधर्म्मा) थे।

९. दिगम्बर **विमलचन्द्र**—ये बड़े भारी तार्किक पण्डित थे। शैव, पाशुपत, तथागत (बौद्ध) कापालिक और कापिल मतोंका बुरी तरह खण्डन करते थे। अपने घरके द्वारपर उनके लिये चैलेञ्ज लिखकर टाँग दिया था।

१०. **इन्द्रनन्दि** मुनीन्द्र—इन्होंने 'प्रतिष्ठा-कल्प' और 'ज्वालिनी-कल्प' ग्रन्थोंकी रचना की थी।

११. **परवादिमल्ल**—इन्होंने कृष्णराजके समक्ष अपने नामका निर्वचन इस तरहसे किया था :—गृहीतपक्षसे इतर 'पर' है, उसका जो प्रतिपादन करते हैं वे 'परवादि' हैं, उनका जो खण्डन करता है वह 'परवादि-मल्ल' है; यही नाम मेरा नाम है, ऐसा लोग कहते हैं।

१२. इससे आगेका शिलालेखका बहुत-सा अंश घिसा हुआ है : **मलधारि** और **द्रमिलसंघ** के नाम मिलते हैं।

१३. तत्पश्चात् **अजितसेन-पण्डित** और **चन्द्रप्रभ**, जिनके शिष्य **अजितसेन-देव** थे, की प्रशंसा आती है। इसके बाद समय-सभामें दिवाकर-सूर्यके समान **समयदिवाकर**के शिष्य **सूरि चन्द्रप्रभ**की प्रशंसा आती है।

१४. **चन्द्रप्रभ**-मुनिनाथने सल्लेखना व्रत धारणकर शकवर्ष ११०५, शोभकृद्वर्ष, मंगलवार, भाद्रपद शुक्ला १०, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रमें, प्रभातसमयमें देहोत्सर्ग किया।]

[EC, III, Tirumakudlu Narasipur tl., no 105.]

४११

अळेसन्द्र;—संस्कृत और कन्नड।

[शक ११०५=११८३ ई०]

[अळेसन्द्र (नेल्लीकेरी प्रदेश) में, गाँव के मुख्य प्रवेशद्वार के दक्षिण की पड़े हुए पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

जीतराग । स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्व यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि वासन्तिकादेवीलब्धवरप्रसाद मलेपरोळु गण्डाद्यनेकनामावलीसमलङ्कृतरप्प श्रीमन्त्रिभुवनमल्ल **विनेयादित्यहोय्सळं कोङ्कणदाळ्वखेडद वयल्नाड तळेकाड् साविमले**यिनोळगाद भूमियेल्लमं दुष्टनिग्रह-शिष्टप्रतिपाळनेयिं ।

सळनेम्बनागे यादव- । कुलदोळु पुलि पाये कण्डु मुनि पुलियम्पोय् ।
सळ येने पोय्दुदरिं **पोय्-** । **सळ** वेसरवनिन्दवागे तद्वंशजरोळ् ॥
कन्द ॥ सळ-नृपनि वळियं यदु- । कुळ-वीरप्पेलवरोगेदरवर अन्वयदोळ् ।
वळवद्विरोधिभूभृत्- । कुलिशं वनियिसिदनेसेये **विनेयादित्यं** ॥
वलिदडे मलेदडे मलेपर । तलेयोळु वाळिदुवनुदित-भव्य-रसवसदिं ।
वलिपद मलेयद मलेपर । तलेयोळु कैयिडुवनोडने **विनेयादित्यम्** ॥
आ मण्डलेश्वरन मनोनयनवल्लभे ।
परिवनकं पुर-वनकं परमार्त्थ ताने पुण्य-देवतेयेनलेम् ।
घरेयोळु नेगळ्दळो **केळेयव्-** । **वरसि** वनाराध्ये भुवन-वनितारत्नम् ॥

अन्तरिर्व्वरुं सुखसङ्कथाविनोददि **सोसवूर** नेलेवीडिनोळु राज्यं गेप्युत्तमिर्द्दा-**केळेयल-देवियर मरियाने**-दण्डनायकनं तन्न तम्मनेन्दु रक्षिसि **विनेयादित्य-पोय्सल देवरं** तानुमिद्दु **मरियाने-दण्डनायकङ्के देकवे-दण्डनायकितियं** कन्यादानं माडि आसन्दि-नाड **सिन्दगेरेयं** प्रभुत्वसहितं नेलेयागि **शक-वर्ष ९६७. नेय सर्व्वजित् संवत्सरद फाल्गुण-सुद्ध-तदिगे सोमवारदन्दु** कन्यादानमुं भूमि-दानमुमं धारा-पूर्व्वकं कोट्टु स्व-धर्म्मदिं रक्षिसुत्तमिरे ।

धरणिगे नेगळ्दा-पोय्सळ- । नरपतिग कमनकम्बुकन्धरे केळेयव्-
वरसिगमुदियिसि नेगर्दे । धरित्रियोळु **वीर-गङ्गनेरेयङ्ग**नृपम् ॥

आ-विभुगं नेगळ्द्वेचल- । देविगमुदियिसिदरदटरेने **यल्लाळ-** ।
क्ष्मा-वल्लभ **विष्णु**-धरि- । त्री-वल्लभ सुभटनुदित**नुदेयादित्यम्** ॥
एनितित्तडमेनिंतिरिंदडम् । अनितोप्पुं कूर्प्पुमप्पुवे पेर्रगांद्रुकेम्-
मने नोड दिटरे **वळ्ळा-** । **ळ**-नृपाळने चागि **वल्लु-देव**ने वीरं ॥

अन्तु सुख-संकथा-विनोददिं श्रीमद्राजधानी **वेलुहुर**-वीडिनोळु राज्यं गेय्युत्तं इद्दुं **मरियाने**-दण्डनायकन द्वितियलक्ष्मी-समानेयरप्प **चामवे-दण्डनायकितिगं** पुट्टिद **पद्मल-देवि चामल-देवि बोप्पा-देवि**गरिन्ती-मूवुरुं शास्त्रगीत-नृत्यदल्लु प्रवुडेयरुं मूर्रु-राय-कटक-पात्र-जस-दळेयरेनेसि वळेयला-मूवरु कन्यकेयरनोन्दे-हसे-योळ् **वल्लाळ-देवं** विवाहमाडि **सक-वर्षं १०२५ नेय सुभानु-संवत्सरद कार्त्तिक-शुद्धदशमि-बृह(स्पति)वारदन्दु** मोलेवाक्ष-रिणक्के **मरियाने**-दण्ड-नायकङ्गे सिन्दगेरेय एरडनेय-पर्यायदल्लु प्रभुत्व-सहितं नेलेयागि पुनर्द्दारापूर्व्वकं कोट्ट सलिसुत्तमिरे ।

तुळु-देशं (चक्र) **चक्रगोहं तळवनपुर उच्चंगि कोळाल एळु-**
मले वङ्ककंञ्चि कङ्गविसुव हडिय-घट्टं बयल्-नाडु नीला- ।
चळ-दुर्ग्ग रायरायोत्तम-पुर तेरेयूर्क्कोयतूर्ग्गोण्डवाडि-
स्थळवं भ्रू-भङ्गदि गेल्दतुळ-भुव-वळातोपदि **विष्णु**-भूपं ॥
अरि नृपरं तडङ्गडिदु वेलियनिक्कि पट्टु प्रतापवुर-
व्विरे तळकाड नीडु-गडिदल्कुरें सुट्टु तुरङ्गदञ्चि-सञ्-
चरणदिनुत्त वीर-रसदिं हदनाडे कूडे वित्तिदम् ।
सु-रुचिर-कीर्त्तियं नृप-सिखामणि **साहस-गङ्ग-होय्सळम्** ॥

स्वस्ति श्रीमतु कञ्चि-गोण्ड विक्रम-गङ्ग **विष्णवर्द्धनदेवं दोरसमुद्रद** नेलेवी-डिनोळु पृथ्वी-राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीविगळप्प हिरिय-मरियाने-दण्डनायकन् मद्दुननप्प **गङ्गराजदण्डाधीशम्** ।

मत्तिन-मातवत्तिरलि जीर्ण्ण-जिनालय-कोटियं क्रमं-
बेट्टिरे मुन्निनन्ते पल-वूर्गळुमं नेरें माडिसुत्तवत्-

युत्तम-पात्र-दानदोळ्वं मेरेवुत्तिरे गङ्गवाडि-तोम्-
मट्टर्ग-शायिरं कोप्पणवादुदु **गङ्गण-दण्डनाथ**नम् ॥
तत्तनय ॥ कदनदोळान्तरं गेळुवडेम् गळ निन्न पेसर्ज्जितारियेम्-
दुदे बुध-बन्धुवेम्बुदे जनाग्रणियेम्बुदे **बोप्प-देव**नेम्-
दुदे कलियेचि-राव-विभुवेम्बुदे गङ्गन गन्ध-हस्तियेम्-
दुदे रण-रङ्ग-पाण्डु-सुतनेम्बुदे वैरि-धरट्टनेम्बुदे ॥

आतन मट्टुनरु संस्त (समस्त) राज्यभरनिरूपितमहामात्यपदवीप्रख्यातरुमभिज्ञातरुं श्रीमद्दर्हत्परमेश्वरपदपयोजषट्चरणरुं । रत्नत्रयाळङ्कृतरुमप्प श्रीमन्महाप्रधानं **मरियाने-दण्डनायक**नुं श्रीमदादि-भरतेश्वर नेनिप **भरतेश्वर-दण्डनायक**नुं तम्मोळनेद्-भावदिं गुणि-गुण-स्वरूपरागि ।

उन्नतवंशनुत्सव-कुलोत्तम भद्र-गुणान्वितं जगत्-
सन्नुतदानयुक्तविभवं मरियाने रिपु-प्रमेदनोत्-
-पन्न-जयाभिरामनेनगोतने नच्चिन पट्टदानेयेन्द् ।
एम् नेरें नच्चि माडिदनो विष्णु-नृपं ध्वजिनी-पतित्वमम् ॥
दिनपति देय्वतात्म-जनकं-प्रभु पेर्ग्गडे **देचि-राज**नोळ्-
पिन कणि तन्न ताय् नेगळ्द् **नागल-देवि** चमूप-वक्त्र-चन्-
दन-तिळकं [•••] **मरियाने**-चमूपति नायनिन्तु सत्-
जन-विनुतान्वयोन्नतिये **जक्कल-देवि**ये धन्ये धात्रियोळ् ॥
तोळतोळगि वेळगि कीर्त्ति- । वळयदिनळवट्ट **विष्ण**-भूपन राज्य-
स्थळके मितुपेसेव-हेमद । कळसं केवळमे **भरत**-दण्डाधीशं ॥
कान्तं श्रीमव्यचूडामणि **भरत**चमूनाथनाट्यन्तिक-श्री-
कान्तं त्रैलोक्यनाथं परम-जिनने देवं समभ्यस्त-सद्-सिद्-
धान्तं **श्रीमाघनन्दि**व्रतिपति गुरुगळ् तन्दे **मारैय**न् एन्दन्द् ।
इन्तुं तां धन्येयेन्दो-**हरियले**येने भूमण्डलं विच्चळिक्कुम् ॥
एणिकेय लोकद-गणिकेयर् । एणेयल्लरु नोडे चिक्क-हरियळे गारुम् ।
गुणदोळु शासन-देवियर् । एणेयप्परु भरत-राजन्नर्द्धाङ्गनेयम् ॥

इन्तु पोगळ्तेगे नेलेयाद कौण्डिल्य-गोत्रद **डाकरस-दण्डनायकन एचव-दण्णायकितिय** मक्कलु **नाकण-दण्डनायकनुं मरियाने-दण्डनायकनुं** अवर मक्कळु **नाचण दण्डनायकनातन** सति **हम्मवे दण्णायकितियुं** डाकरस-दण्डनायक आतन-सति **दुग्गव्वे-दण्णायकिति** अवर मक्कळु **मरियाने-दण्डनायकन् भरतिम्मेय**-दण्डनायकनुमवर तङ्गे।

जिन-पद-पद्म-भक्ते सुचरित्र-नियुक्ते विनीते माचि-रा-
जन सुते **काव-राजन** मनः प्रिये **चाकले**सद्वधूजना-
नन-विळसल्ललामे मरियानेय सद्धरतेश-दण्डना-
यन किरि-दङ्गे मन्मथन विक्रम-लक्ष्मियोलादमोप्पुवळ् ॥

श्रीमत्काञ्चि-गोण्ड विक्रम-गङ्ग **विष्णुवर्द्धन-देव**नन्वयद **मरियाने**-दण्डनायकनुं **भरत**ण-दण्डनायकनुं सर्व्वाधिकारिगळुं माणिकभण्डारिगळुं प्राणाधिकारिगळुं आगि सुखदि सलुत्तमिरे। **विष्णवर्द्धनदेवं** श्रीमद्राजधानि-**दोरसमुद्र**द नेलै-वीडिनोळु पृथ्वी-राज्यं गेय्युत्तमिरे उत्तरायण-संक्रमानदोळ···नदोळु तम्म मगनं **विट्टि-देव**न हेसरनिट्टु १००० होन्नं पाद-पूजेयं कोट्टु **आसन्दि-नाड सिन्दगेरेयुं** वाय्-वेण्णेगे **वग्गवळ्ळयुं कलिकणि-नाड दिण्डिगनकेरेय** प्रभुत्वमुमं **विट्टि-देव**न स्वहस्तदिं धारा-पूर्व्वकं हडदु सुखदिनिरे।

वनियिसिदं विष्णु-मही-। शन वधु **लक्ष्मा-देवि**गनुपम-**नारसिंघा**-।
वनिपं नतरिपुभूपा-। ळ-निकाय-ललाट-तटाघट्टित-चरणम् ॥

श्रीमन्महा-मण्डलेश्वर **नारसिंघ-देव**रु राज्यं गेयुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीविगळु महाप्रधान **मरियाने**-दण्डनायकरुं **भरतिम्मेय**-दण्डनायकरुं तम्मन्वयद सिन्दगेरेय वग्गवळ्ळय दण्डिगनकेरेय प्रभुत्वके ५०० होन्नं पाद-पूजेयं कोट्टु **नारसिंघ-देव**र कैयलु पुनर्द्दत्तियागि हडदु सुखन्दिनिरे।

काल-निभ-प्रतापि नरसिंघ-महीपतिगं मदेभ-ली-
लालस-याने कम्बुनिभकन्धरे **एचल-देवि**गं जय-।

श्री-ललनेशनीतनेने पुट्टिदनूर्ज्जित-पुण्य-मूर्त्ति **वल्-**
लाल-नृपाळकं समदवैरिमहीमुखदर्प्पमर्द्दनम् ॥
कलिकालकृतपुत्रप्रबळतरदुराचारसन्दोहदिन्दम् ।
पोले पोर्द्दल् पेसि वेसचळवळिद् महीकान्तेयं रक्षिसल्का-
वलचार्द्दं ताने वन्दित्वत्तरिसिद्रोला-**चोर-चल्लाल-देवम्** ।
कुलवात्याचारसारं नृपवरनुदयं गोद्दनाश्चर्यसौर्य्यम् ॥

श्रीमन्महामण्डलेश्वरन् असदायशूर निश्शङ्कप्रताप होय्सळ-चोर-चल्लाल-देवर तत्पादपद्मोपजीविगळप्प श्रीमन्महाप्रधानं **भरतम्मय्य-दण्डनायकरं** श्रीमन्महाप्रधान **बाहुबलि-दण्डनायकरं** सर्व्वाधिकारिगळु माणिक-भण्डारिगळुं प्राणाधिकारिगळुमागि सुखादिं सलुत्तमिरे ।

भरतचमूपतिगनुचितान्वय-चार-चरितदोप्पुवा-
हरियले-दण्डनायकितिगं गुणरत्नपयोधि पुट्टिदम् ।
परिचित-नीति-शास्त्र निखिळास्त्र-विशारदनिष्ट-विशिष्ट-मा-
नुर-निधि **विट्टि-देव**नखिळावनि-मण्डन-मौळि-मण्डनम् ॥
सेनापति मरियानेगे । भानुगे कानीननादबोल् सुतनादम् ।
भानु-सम-द्युति विट्टुध-नि- । धानं गुणरत्नराशियप्पं **वोप्पम्** ॥
मरियाने-दण्डनायङ्करिविन कणियेनिसि पुट्टिदं धन-विनुतम् ।
करमरेयिल्लद वसदिं । नेरेदं जित-वीर-वैरि **हेग्गडे-देवम्** ॥
भरत-चमूपन पुत्रं । पुरुषार्थम्बोधि मान-कनक-नागेन्द्रम् ।
पु···खचर मनु-मुनि- । चरितं **मरियाने-देव**नदर गोवम् ॥
अनुपम-दण्डनाय-भरतात्मजे भू-सुत- ··· नेचि-रावनङ्-
गने विभु-राय-देव-मरियानेगळम्बिके **सिन्दधट्टदोळ्** ।
धनतर-कूट-कोटि-सुत-पार्श्व-विनेश्वर-गेहमं जगत्-
जन-नुतमागे माडिसिद् **शान्तल-देवि** कृतार्थे धात्रियोळ् ॥
विन-धननिगेणेवे **चम्मवे** । धनमि गड तण्डे नेगळ्द् **हेग्गडे-गार**ङ्गं ।
अनुनयदे पुत्रनादं । दिन-पतिगे ··· ··· निप-तेवदातं **शान्तं** ॥

तङ्गेवरु **हेमल-देवि दुग्गिल-देवि**वरु ।
भरत-चमूपनिं पिरियना-**मरियाने-चमूपना**-मू- ।
वर···गं महाप्रभु महागुणि वीर्य्यद धैर्य्यदागरं ।
भरत-चमूपनङ्गमव-रूपनपास्त-रवि-प्रतापनुद्-
धराळवि विक्रम क्रम-विनिर्जित-शत्रु-पराक्रमाक्रमम् ।
अन्तेनिप भरतसेना- । कान्तन कडु-होन्न कान्ते **वूचले** मू-च- ।
क्रान्त-स्थापित-शशि-मणि- । कान्ति-लसत्-कीर्त्ति-मूर्त्ति सति **रति**-यन्नळ् ॥
भरत-चमूपगे तम्मं । स्थिर-गुणनभिमतनेने **बाहुबलि-दण्डेशम्** ।
पुरुषार्थ-सार्थ-तीर्थं । पर-हित-विद्याधरेन्द्रनिन्द्रेज्य-निभम् ॥
आ-विभुविन सति **नागल**- । **देवि** जगत्ख्याते सीते पति-हितदिन्दम् ।
भावमवाङ्गने रूपि । भाविसे तां जान्मेयिन्द लक्ष्मेनिप्पळ् ॥
ओदवद-रूपिनिन्दे नयदिन्द्···नोडुव कण्ण वे···तां ।
पदेदनुरागदिन्द चमूपति **भरत**नेम्ब महा-गजेन्द्रमम् ।
पुडिदळु तन्न यौव्वनद कम्बदे (आ-) वाचले-नारि··· ।
पदे जिनमक्ते पुण्यवति दान-विनोदे पतिव्रता-गुणि ॥
वेसनं **वल्लाळ**-भूपम्वेससे **भरत**-दण्डाधिपं रागादिं वा- ।
यु-सुतं रामाज्ञेयिन्दं नडव-तेरंदे वीळ्कोण्डु सामग्रियिन्दन्द् ।
असुहृद्देशङ्गळं केसुरिगे नेरेये विट्टन्ते निष्कण्टकं भू- ।
प्रसरं तानाय्तधीशङ्गेनिसि पगेय चिन्तिल्लदन्तागे कोण्डम् ॥
ताङ्गदे युद्ध-रङ्गदोळिदिर्च्चुवने ··· ··· गर्व्वदिम् ।
··· मलेवन्दडवनं ··· ··· ओन्दे यट्टि वीरम् ।
तुङ्ग-भुजासियं तविसि विक्रम-लक्ष्मीगे गण्डनाद पेम्-
पिङ्गे जगज्जनं पोगळ्वुदी-**भरतेश्वर**-दण्डनायन !!
कुदुरेयनेरलङ्कवणिगड्डियनोय्यने नीडे वैरिगळ् ।
कदन-पराङ्मुखर्प्परिदु वेट्टमनेरिदरुळ्दुदिक्किदर् ।
नदिगळोळद्दरङ्गुळिगळं नेरे कर्च्चिदरेय्दे हुत्तने-

रिदरिदु दण्डनाथ भरतान्वय बाहुबलि ... ... रुशं ॥
नाभि-सुत-सुवर तेरेंदे स- । नाभिगळ् आदि-प्रभाव-चरितप्रभवर् ।
श्शोभित-शुभ-मति-युवर- । सोभितरी-**भरत-बाहुबलि-दण्डेशर्** ॥

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वरं तळकाडु-कोङ्गु-नङ्गलि-वनवासे-उच्चङ्गि-हानुङ्गलु-गोण्ड भुवक्ळ वीरगङ्गन् असहाय-शूर शनिवार-सिद्धि गिरि-दुर्ग-मल्ल चलदङ्कराम निश्शंकप्रताप **होय्सळ-वीर-वल्लाळ-देवर** श्रीमद्राजधानि-द्वारसमुद्र नेलेवीडि-नोळु सुख-सङ्कथाविनोददिं पृथ्वी-राज्यं गेय्युत्तमिरे **शक वर्ष ११०५ नेय शुभ-कृत्संवत्सरद मार्गशिर-शुद्ध-पाडिव-सोमवारदन्दु कुमार-वीरनारसिंघ-देवं** चन्द्रोत्सव-महा-दानदोळु तम्मन्वयद **सिन्दगेरेंय** वळ्ळवळ्ळिय कलुकणि-नाड **दडिगणकेरेंय** अणुवसमुद्र प्रमुखमुं अणुवसमुद्रदलु कन्ने-वसदियागि माडिसि आ-वसदिगं **चाकेयनहळ्ळिय** वसदिगं देवपूजे आहारदानं ऋषिगळिगे सेत्तेयं तेत्तु अणुवसमुद्र सिट्टायद मोदल होन्नोळगे इप्पत्तु-होन्नं व- सहित नाल्वत्तु-होन्नं स्वाण-सहित गळिहि श्रीमन्महाप्रधान **भरतिमय्य दण्डनायकरु** श्रीमन्महाप्रधानं **बाहुबलि-दण्डनायकरुं वळ्ळाल देवन** श्री-हस्तदलु धारा-पूर्व्वकं हडदु **श्रीमूलसंघ देशियगण पोस्तक-गच्छ कोण्ड-कुन्दान्वय इङ्गळेश्वरद वळि कोल्लापुरद सावन्तन-वसदिय** प्रतिबद्ध **श्रीमाघनन्दि-सिद्धांत-देवर** शिष्यर **श्रीगंधविमुक्त-सिद्धांत-देवर** अवर शिष्यर श्री-**देवकीर्तिपण्डितदेवर** अवर शिष्यरप्प श्री-**देवचंद्र-पण्डित-देवर्गे शक वर्ष ११०६ नेय शोभकृत्संवत्सरद पुष्य शुद्ध-दशमी-सोमवारद** उत्तरायण-संक्रमण-महादानदलु धारा-पूर्व्वकं माडि काट्ट दत्तिगळ वृत्ति ॥ (आगेकी ६ पंक्तियोंमें दानकी विशेष चर्चा और हमेशाकी तरह अन्तिम वाक्यावली तथा श्लोक हैं)

[इस लेखमें सबसे पहले विनयशासनकी प्रशंसा है। वीतराग। (अपने [illegible] सहित) त्रिभुवनमल्ल **विनयादित्य-होय्सळने** कोङ्गुण, आळ्वखेड, वयल्-नाड्, तलेकाड् और साविमलेसे घिरी हुई तमाम भूमिमें दुष्टनिग्रह-शिष्ट प्रति-पालन किया था।

यादव वंशमें **सळ** हुआ था। एक चीतेको किसीपर शिकार करनेके लिये उछलते हुए देखकर और किसी मुनिके यह कहनेपर कि "मारो (पोय्) सळ!" सळने इसे मारकर 'पोय्सळ' नाम प्राप्त किया था और यह नाम आगे चलकर उसके तमाम वंशका द्योतक हुआ। यदुवंशमें सळके बाद बहुत-से प्रबल राजा हुए, उन्हींमें एक **विनेयादित्य** हुआ। उसकी रानीका नाम केलेयब्बरसि था।

जिस समयमें दोनों (विनेयादित्य और केलेयब्बरसि) सोसवोरुमें रहते हुए सुख और बुद्धिमत्तासे राज्य कर रहे थे शक सं० ९६७ में केलेयल-देवीने मरियाने दण्डनायकसे **देकवे-दण्डनायकिति**को ब्याह दिया और भेंटमें आसन्दिनाड्के सिन्दगेरीको उसे दिया।

विनेयादित्य पोय्सळ और रानी केळेयब्बेसे राजा वीर-गङ्ग-एरेयङ्ग उत्पन्न हुआ। वीर-गङ्ग एरेयङ्ग और एचल-देवीसे **बल्लाल, विष्णु** और **उदयादित्य** उत्पन्न हुए थे। बल्लाल या बल्लु-देवकी प्रशंसा।

जिस समय बल्लालदेव अपनी राजधानी वेलुहूरुमें रहकर सुख-शान्तिसे राज्य कर रहे थे, मरियाने-दण्डनायककी दूसरी पत्नी **चामवे दण्डनायकिति**से पद्मलदेवी, चामलदेवी और बोप्पदेवी उत्पन्न हुई थीं। बल्लालदेवने इन तीनों कन्याओंका विवाह एक ही मण्डपमें शक सं० १०२५ में विभिन्न तीन राजाओंकी राजधानियोंमें कर दिया और उनकी दूध पिलाई (wet nursing) की तनखाके रूपमें द्वितीय पीढ़ीके मरियाने-दण्डनायकको पुनः सिन्दगेरीका स्वामित्व दे दिया।

राजा विष्णुने तुलु देश, चक्रगोट्ट, तळवनपुर, उच्चंगि, कोळाळ, सप्तमले, बल्लूर, कञ्चि, कोङ्गु, हडिय-घट्ट, वयल्-नाड, नीलाचल-दुर्ग, रायरायपुर, तेरेपूर कोयत्तूर और गौण्डवाडि-स्थल,—इन सब प्रदेशोंको जीता था। साहस-गङ्ग-होय्सळने विरोधी राजाओंका नाश करके तलकाड्को (खादके लिये) बुलाकर घोड़ोंके खुरोंसे उसे जोतकर अपने वीररसकी नदीसे उसे सींचकर अपने यशके अच्छे बीजसे इसे बोया।

जिस समय कञ्चिके अधीनस्थ करनेवाले विक्रम-गङ्ग-विष्णुवर्द्धनदेव राज्य करते हुए अपने निवासस्थान दोरसमुद्रमें थे, उनका पादपद्मोपजीवी, ज्येष्ठ मरियाने-दण्डनायकका साला **गङ्गराज-दण्डाधीश** था। गङ्ग-दण्डनायने अनेक जिन-मन्दिरों की पुनस्स्थापना की थी, अनेकों ध्वस्त नगरों को फिर से बसाया और अनेकों दानवितरण किये थे, इस कारण गङ्गवाड़ि ९६०००, कोषणके समान, चमक रही थी। उसका पुत्र (प्रशंसा सहित) **बोप्पदेव** था। उसके साले या बीवा मरियाने दण्डनायक और मरतेश्वर दण्डनायक थे।

विष्णुवर्द्धन ने मरियाने को अपनी सेना का सेनापति बनाया था।

कौण्डिल्यगोत्रीय डाकरस-दण्डनायक और एचव-दण्डनायकितिके पुत्र नाकण-दण्डनायक और मरियाने दण्डनायक थे। डाकरस-दण्डनायक की पत्नी दुग्गव्वे-दण्डनायकित्ति थी और इन दोनों के पुत्र मरियाने-दण्डनायक और मरतिम्मेय-दण्डनायक थे।

जिस समय मरियाने-दण्डनायक और मरतय्य-दण्डनायक 'सर्वाधिकारी' के पद पर थे, तब उन्होंने अपने पुत्र का नाम **विट्टिदेव** रक्खा और उसे १००० 'होन्नु' देकर, विट्टिदेवसे उसके ही हाथ से आसन्दि-नाड् की सिन्दनेरी दण्डवळ्ळी सहित तथा कलिकणि-नाड् में दिड्डिगनकेरी का प्रभुत्व प्राप्त किया।

राजा विष्णु की रानी लक्ष्मी-देवी से **नारसिंह** उत्पन्न हुआ था। जिस समय वह शासक था, उस समय मरियाने-दण्डनायक और मरतिम्मेय-दण्डनायक ने ५०० 'होन्नु' देकर के उसके हाथ से सिन्दगेरी, दण्डवळ्ळी और दड्डिगनकेरीके प्रभुत्वका नया दान प्राप्त किया।

राजा नारसिंह और एचल देवीसे **वीर-बल्लाल-देव** (प्रशंसा सहित) उत्पन्न हुए।

मरत-चमूपति और हरियले-दण्डनायकिति से विट्टिदेव उत्पन्न हुआ था। मरियाने-सेनापति से बोप्प उत्पन्न हुआ था; मरियाने-दण्डनायकसे हेग्गड-देव

उत्पन्न हुआ था; और भरत-चमूपसे एक पुत्र मरियाने-देव उत्पन्न हुआ था। भरत-दण्डनाथकी पुत्री, एचि-राजाकी पत्नी, तथा रायदेव और मरियानेकी मां **शान्तल-देवी**ने सिन्दघट्टमें एक **पार्श्व** जिनमन्दिर बनवाया।

अन्तमें इस लेखमें बताया है कि जिस समय, (अपने पदोंसहित), निःशंक-प्रताप-होय्सल वीर-वल्लाल-देव अपनी राजधानी दोरसमुद्रमें थे और अपने राज्य का शासन कर रहे थे :—शकवर्ष ११०५में, जब कि उन्होंने अपने पुत्र वीर-नारसिंघ-देवके जन्म-समयमें अनेक दान दिये तब महाप्रधान **भरतिमय्य-दण्ड-नायक** और महाप्रधान **बाहुबलो-दण्डनायकने** वल्लालदेवके हाथों से अपने कुलकी सिन्दगेरी, बळ्ळबळ्ळी तथा दडिगनकेरि और कलुकणी-नाड्में अणुवसमुद्रके साथ-साथ उसके लगानमेंसे कुछ दान प्राप्त किया। यह दान उन्होंने अणुवसमुद्र और चाकेयनहल्लिकी बसदियोंके लिये लिया था। अणुव-समुद्रकी बसदि उन्होंने ही बनवायी थी। शकवर्ष ११०६में वह दान उन्होंने **देवचन्द्र-पण्डित-देव**को समर्पित कर दिया। वे देवकीर्त्ति-पण्डित-देवके शिष्य थे, ये **गन्धविमुक्त-सिद्धान्त-देवके** शिष्य थे, जो माघनन्दि-सिद्धान्तदेवके शिष्य थे। माघनन्दि-सि०-देव श्रीमूलसंघ, देशिय-गण, कुन्दकुन्दान्वय तथा इङ्गु-लेश्वरबलिके **कोल्लापुर** की सावन्त बसदिके थे।]

[EC, IV, Nagamangala tl.,no 32]

४१२

चिक-मगलूर-कन्नड।

वर्ष क्रोधन [= ११८४ ई० (लू० राइस).]

[चिक-मगलूर में, जलके अन्दर पड़े हुए पाषाणपर]

स्वस्ति श्रीमतु क्रोधन-संवत्सरद वैशाख-शुद्ध-पञ्चमी आदिवारदन्दु श्री-वीर-बळ्ळाळ-देव पृथ्वी-राज्यं गेय्युत्तिरे **किरियमुगुळिय** कट्टित-काळगदलु **मुद्दगौडन** मग [illegible] कादि विद्दु सुर-लोक-प्राप्तनाद।

[(उक्त मितिको), जब वीर-बल्लाल-देव पृथ्वीपर राज्य कर रहे थे :— किरिय-मुगुळिकी सीमाके युद्धमें मुद्द-गौडका पुत्र बम्मय्य युद्धमें लड़ा और मरकर स्वर्ग को प्राप्त किया।]

[EC, VI Chickmagalur tl., no 5]

४१३

अजमेर;-प्राकृत ।

[सं० १२४३=११८६ ई०]

संवत् १२४३ वैसाख सुदी १ श्रीमूलसंघे (वे) देव श्रीवासुपूज्यः प्रतिमा साधुहालण सुतवर्द्धमान तथा यांत देव तथा साधुपुत्रभादिपाल देवप्रतिमा प्रतिष्ठापितमिती ।

अर्थ स्पष्ट है ।

[JASB, VII, 52, no2.]

४१४

तेरदाल;—कन्नड़ ।

[शक ११०९=११८७ ई०]

वीर-कणिङ्कराय-गद-केसरि सिंहणराय-शैळ-निर्घारणवज्र मार्म्मलेव गूर्ज्जर-राय-भुज-प्रताप-नीरेरुह-वन्य-दं (द)न्तियेने पेर्म्मेयनोम्मेयुमान्तु गण्ड-पेण्डारनुदारनुर्वि-गेसेवं विभु तेर्वुगि-दण्ड-नायकन् ॥ समदारि-क्षितिभृत्-कदम्बकदोळ्यामीळ-वज्राग्नि तेवमनुन्मत्तमहीशवंशवनदोळ् दुर्व्वार-दावाग्नि-तेवमनन्योर्व्विप-सैन्य-सागरदोळुद्यद्-वाडवाग्नि-तेवमनोरन्तिरे तोरि विश्व-धरेगिन्ती गण्डपेण्डारनश्रमदिन्दं मेरेदं निज-प्रचण्ड-बाहु-तेवमं तेवनन् ॥[1]

१. पाँच पादोंका यह श्लोक है ।

भूरि-त्यागं विपश्चिज्जनजनितविपत्त्यागवुग्रप्रतापम्
क्रूरार (रा) ति-प्रतापं मृदु मधुर, वचः-सम्पदं साधु सत्य-
श्री-रामा-सम्पदं तानेनिसि जन-नुतं **तेज-दण्डाधिनाथम्**
पारावारावृतोर्व्वीवलयदोर्ज्जातविख्यातिवेत्तोप्पुतिप्पन् ॥

आतन तनयं विनयोपेतं विद्विष्ट-दण्डनाथ-कुमारत्राताचळ-पविदण्ड-ख्यातं श्री-भायिदेवनेसेवं जगदोळ् ॥

परदण्डाधिपनन्दनर्प्पलवरं पुट्टल्कर्मुं-पुट्टुगुम्
गुरु-गोत्रक्कपसद्यशं परिजनक्कुद्वेगमिन्ता चमू-
वर-तेजात्मज-भायिपं पदपिनि पुट्टल्क पुट्टित्तु वन्धर-
हर्षं स्वकुलक्क तीव्र-परितापं शत्रुमळ्गा क्षणम् ॥
क्रूरातिनृपप्रधान-तनुजातानीकमं गण्ड-पेण्-
डारं **तेजुगि-दण्डनाथ**तनयं श्री- **भायिदेवं** जगद्-
वीरं तीव्रकरासियिं पुगिसुवं स्वस्थानमं तानन-
ल्कारम्पर्क्कदनैक-वीरननेनेकाम्भोधि-गम्भीरनन् ॥

आसुरवागे तागिदहितर्क्कळनाहवरङ्गभूमियोळ् पेसदर्दिर्व्वं मिक्क किरु-गण्टकरं मुरुदिक्कि कून्दि-मू-सासिरमं वसं निमिरे सुस्थिरदिं नृपनीयलाळ्वने सासिय-भायि-देव-वृतना-पति **तेजुगि-देव**-नन्दनम् ॥

पर-भूभृत्-कुळमं तगुळ्दु शरणायातर्क्कळं काडु पुण्-
डेर दग्गित्तु समस्त-देव-सदनक्कं विप्र-संघक्कदा-
दरदिं भू-गृह-दानमं दयेयिनादं माडि कीर्त्यङ्गना-
वारङ्गल् विभु-भायिदेव-सचिवं **वङ्गं** परर्वल्लरे ॥

कडलनेडं-गलिसि शेषन पडयोळ् दिक्-कुम्भि-कुम्भदोळ् सुर-सभेयोळ् विडदे कलि-**भायिदेव**न तोडवेनिसिद कीर्त्तिनर्त्तिपळ् नलविन्द ॥ अन्तु दशदिशान्त-र्व्यवर्त्तित कीर्त्तिकान्तनेनिसिद कुन्तळ-महीं-वल्लाभनीये कूण्डि-मूरु-सासिरमुमं निःकण्ट-कदिन्दाळुत्तं **राय**-दण्डनाथ-गण्ड-पेण्डारं कुमारं **भायिदेव** दण्डनायकर् श्रीमत्-

तेरिनाळद गोङ्क-विनालयद श्रीनेमि-तीर्त्थेश्वरन अङ्ग-रङ्ग-भोगक्कं ऋषियराहार-दानक्कं खण्डस्फुटित-जीर्णोद्धारक्कं शक-वर्ष ११०९ नेय प्लवंगसंवत्सरद चैत्र सु १० बृहस्पतिवारदन्दु नुन्न गोङ्करसर् विट्ट पूर्व्ववृत्तियेप्पत्तेरडु आ ७२रि वड-गल्ल कोलल् सर्व्वबाधापरिहारविागि विट्ट-भत्त मूवत्तारु ३६ मत्तं धवलारक्के अङ्गडि-गेरि-पर्य्यन्त-निवेशनमं विट्टु शासनद कल्लुगळं प्रतिष्ठेयं माडिदर् ।

मद्वंशजाः परमहीपतिवंशजा वा
पापादपेतमनसो भुवि भावि-भूपाः ।
ये पालयन्ति मम धर्म्ममिदं समस्तं
तेषां मया विरचितोऽञ्जलिरेष मूर्ध्नि ॥

इदु तानैहिक-पारमार्थिक-सुखक्कावासवी धर्म्ममिन्तिदनुल्लंघिसिदातनुग्रनरकोद्दीर्णोत्त-संवर्त्त-गर्त्तदोळाळ्गुं परिरक्षे गेय्वनुपेन्द्राहिन्द्रा-देवेन्द्र-सम्पददोळ् कूडुगुम-न्दिं पडेगुमाकल्पायुमं श्रीयुमन् ॥ प्रियदिन्दमिदनेन्दे कादं पुरुषङ्गायुं महा श्रीयुमक्कुविदं कायद पातकंगे पिरिदुं गङ्गा-गया-वारणासि-कुरुक्षेत्र (त्रा) दि पुत्र-गो-द्विज-मुनि-ब्रातंगळं कोन्द पातकमक्कुं विडदिक्कुमा पुरुषनेन्दुं रौरवस्थानमम् ॥ शासनमिदावुदे ल्लिय शासनमारित्तरेके सलिसुवेनानो शासनमनेम्ब पातकना सकळं रौरवक्के गळङ्गवनिळिगुम् ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टिवर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥

[IA, XIV, p. 14-26 (lines 68-85)] t. and tr.

४१५-४१६

पर्वत आबू—संस्कृत

[सं० १२४५ = ११८८ ई०]

श्वेताम्बर लेख मालूम होते हैं ।

[Asiat. Res., XVI, p. 312, no XXII, a.]

४१७

अजमेर;—प्राकृत ।

[सं० १२४६ = ११८९ ई०]

संवत् १२३९ *फा सुदी ४ सुक्रे साधूलाहड पतनी तोलोत धासेडी वहुबिल वितसी लषमसी महासी**मलिनाथ**प्रतिमाकारपिताः ।

अर्थ स्पष्ट है ।

[JASB, VII, p. 52, no 1, t.]

४१८

अजमेर;—प्राकृत ।

[सं० १२४६=११८९ ई०]

संवत् १२३९ फा वदि ४ सुक्रे आचार्य **माणिक्यदेव**-सिष्य**सोमदेव** अर्जि-का**मदन श्री**सर्वगोष्ठिका प्रणमति ।

इसमें बताया है कि आचार्य **माणिक्यदेव**के शिष्य **सोमदेव**की मूर्ति किसी अर्जिका **मदन श्री**ने प्रतिष्ठापित की और वह उसकी रोज वन्दना करती है ।

नोटः—ये सब लेख अजमेरवाले **१२ वीं शताब्दिकी** जैनलिपिमें लिखे गये हैं ।

[JASB, VII, p. 52, no 5, t.]

---

*इस लेखमें और अगले लेखमें संवत् १२३९ है, लेकिन ए. गैरिनो (A. Guerinot) ने संवत् १२४६ कैसे दिया है, सो समझमें नहीं आता ।

४१९

तलगुण्ड;—कन्नड़-भग्न।

[काल लुप्त,—पर लगभग ११८६ ई० !]

नोटः—इसका लेख नहीं है; मात्र 'Mysore ins. Trnsalated' में नं० १०१ शिलाशासनमें (पृ० १८८) लु० राइसके द्वारा अनुवाद दिया हुआ है, जो निम्न प्रकार हैः—

स्वस्ति ! चवकि पृथ्वी और भाग्यका कृपापात्र, महामण्डलेश्वर, सर्वोपरि शासक, सम्राटोंमें प्रथम····· ····विल्लहराज शान्ति और बुद्धिमानीसे बनवसे नाड्के ऊपर शासन कर रहा था—शक नृपके संवत्सर, स ·· ··· ··· वर्षमें··· ··· ···

अक्षर बहुत अस्पष्ट हैं।

(यहाँ आकर लेख बिल्कुल पढ़नेमें नहीं आता।)

[Mysore ins. Translated, no 101.]

४२०

बलगाम्बे;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[काल लुप्त, पर सम्भवतः ११८६ ई० !]

[बलगाम्बेमें, काशीमठके दरवाज़ेमें वीरकल्( )पर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥
प्रिय-सुचरित्रे भव्य-जन-बान्धवे ··· ···सामि माळि-से-।
ट्टिय सति चैन-धर्म्मद तवर्म्मनेया-पति-भक्तियिन्नि सी-।
तेय-नेगळ्द् तिमौवेय समान नेगळ्तेयें पद्मियक्कनो-।
र्म्मेये ··· ··· समाधि-विधियिं पडेदळ् सुर-लोक-सौख्यमम्॥

अर्हं ॥ स्वस्ति श्रीमतु यादव-चक्रवर्ति **वीर-वल्लाळ-देव-वसदि १६ रे नेय विश्वावसु-संवत्सरदुत्तरायणद संक्रान्ति-पुस्य(ण्य) दमावासे-आदित्य-वारदन्दु** पट्टणस्वामि **माळि-सेट्टियर** मदवळिमे **पद्मौवे** मुचित्तदिं समाधि कूडि स्वर्ग-प्राप्तेयादळु मंगळ महा श्री श्रीवीतरागाय नमः ॥

[जिन शासनकी प्रशंसा । पद्मियक्केकी प्रशंसा, जिसने समाधिमरणकी विधिसे परलोकका सुख प्राप्त किया । यादव-चक्रवर्त्ति वीर-वल्लाळ-देवके १६वें वर्षमें 'पट्टण-स्वामि' माळिसेट्टिकी स्त्री पद्मौवेने, स्वयं अपनी इच्छासे समाधि धारण करके स्वर्ग प्राप्त किया ।]

[EC, VII, Shikarpur, tl., No. 148.]

४२१

अजमेर;—प्राकृत ।

[सं० १२४७ = ११९० ई०]

सं० १२४७ वैसाख सुद १५ श्रीमूलसंघे(घे) साधु बहुमानपत्नी आस्त कर्म्म-क्षयार्थे प्रतिष्ठापित श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा पुत्रमहीपालदेव ।

इसमें पार्श्वनाथकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठापना की गयी है । 'साधु' उपनामधारी किसीकी बहुत आदरवाली पत्नी 'आस्त' थी, उसीने प्रतिष्ठा करायी थी । उसके पुत्रका नाम महीपाल देव था ।

[JASB, VII, p. 52, No. 4. t.]

४२२

चिक्क-भागदि;—कन्नड भग्न ।

[काल लुप्त, पर सम्भवतः लगभग]

[चिक्कभागदिमें, वस्तिके पासके पाषाणपर]

श्री स्वस्ति श्रीमतु यादव नारायण-प्रताप-चक्रवर्त्ति ..... **धाविसंवत्सरद**

आश्वयुज-बहुळ ५ **सोमवार** ··· ··· सन-समाधियिं पडेदु सुगति-प्राप्तनाद मग ··· ··· **विरोधि-संवत्सरद** चैत्र शु २ शुक्रवारदन्दु **वीरोज** मुडिपि सुगति-प्राप्तनाद ॥ मङ्गळ महा श्री श्री ··· ··· वेस्पतिवारदन्दु **वोम्मळे** सन्नसन-समाधियं ··· ··· आदळु मङ्गल महा श्री ॥

[वीरोज और बोम्मव्वेकी समाधिका स्मारक ।]

[EC, VII, Shikarpur, tl., No. 201.]

४२३

चिक्क-मागडि;—कन्नड ।

[विना कालनिर्देशका, पर लगभग ११६० ई० का]

[चिक्क-मगडिमें, बस्तिके पासके पाषाणपर]

श्रीमज्जैन-पदाम्बुजात-चनित-श्री-कान्तेयेम्बन्दिम् ।
भूमि-प्रस्तुते दान-धर्म्म ··· ··· ··· ··· ।
कामाल्र-प्रविभासि-रूपिनलेव ··· ··· **सान्तियकं** जग- ।
क्के मातन्दिन सीतेयिं ··· ··· वाग्-देवियिन्दशळम् ॥
जनकं **संकय-नायकं** जननि **तां मुद्दब्बे शान्तीश्वरम्** ।
जिननाथं तनगिष्ट-देव्यवेसेवा-सद् भव्यरे गोत्रदिं ।
मुनि-नायं **नयकीर्त्ति-देव-मुनि**याराध्यं दलेन्दन्दड् आर् ।
व्वनिता-रत्नमेनिप्प **सान्तले**यनोल् धन्यर्क्कळी-धात्रियल् ॥
दानद गुणदुन्नतियिम् ।
ज्ञानी-धरेगधिकेयेनिसि सान्तवे सुखदिम् ।
ध्यानिसि जिन-पति-पदमम् ।
तानैदिदळमर-लोकमं हलरियल् ॥

[सान्तियक्क या सान्तले स्त्रीकी समाधि का स्मारक। इसके पिता संकय-नायक, माँ मुद्दव्वे, इष्ट-देव शान्तीश्वर-जिननाथ और गुरू नयकीर्त्ति-देव मुनि थे।]

[EC, VII, Shikarpur, tl., No. 200.]

३२४

चिक्क-मागडि;—कन्नड़।

[विना कालनिर्देशका, पर लगभग १२११ (?) ई० का]

[चिक्क-मागडिमें, वस्तिके पासके पाषाणपर]

स्वस्ति श्रीमतु **यादव-नारायणं** भुज-बळ-प्रताप-चक्रवर्त्ति होय्सळ-**वीर-वल्लाळ-देव-वरुषद २१ नेय प्रजापति-संवत्सरद मार्ग्गशिर-सुद्ध आदिवारदन्दु ॥**

श्री-जिन-राज-राजित-पद-द्वयमं नलविन्दमोर्पेमुम्।
पूजिसि ..... तज्जिन-स्मरणदिं गत-जीविते **मल्ले-गवुण्डि** ताम्।
पूजित-देवराज-पदेयादळिदच्चरियल्तु मुक्तियम्।
राजदिनीयलार्प्प जिन-भक्तियदेनुमनीयलारदे ॥
गुरु **सकळचन्द्र-मुनिपर्**।
परमागममागमं जिनेन्द्रं देव्यम्।
परहितमेने शुभ-चरितम्।
वर-गुणि **मल्लव्वे**-गौडिगेने वोप्पदरार्॥

[स्वस्ति। यादवनाराण, भुजबल-प्रताप-चक्रवर्त्ति होय्सळ वीर-वल्लाल-देवके २१वें वर्षमें, मल्ले-गवुण्डि (स्त्री) ने 'मुक्ति' प्राप्त की। उसके गुरु सकळचन्द्र मुनिप-देव जिनेन्द्र थे।

[EC, VII, Shikarpur, tl., No. 202.]

४२५

गुण्डलूपेट—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १११८=११९६ ई०]

[गुण्डलूपेट किलेमें, वस्ति-माळमें एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्रीपृथ्वी (थ्वी) वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारक **पादवकुलाम्बरद्युमणि** सम्यक्त्वचूडामणि मलेपरोळ् गण्ड कदन-प्रचण्डन् असहायसूर शनिवारसिद्धि गिरिदुर्ग्गमल्ल चलदङ्कराम निःशङ्कप्रताप भुजबलचक्रवर्त्ति **होय्सळ-वीर-वल्लाळ-देवरु** वडग **हेब्बोरें**-पर्यन्त साधिसि **बोर समुद्र** नेलवीडिनोळु सुखसङ्कथाविनोददिं राज्यं गेयुत्तमिरे तत्पाद-पद्मोपजीवि ।

पुरुष-विधान-रूप होरलाधि-कुलाग्रणी लोकसंस्तुतं
गोरव-गावुण्डनग्र- तनयं विनयाम्बुधि कीर्त्ति-सम्पदं ।
हरद-गावुण्डनातन सुतं वर-**विट्टि-गावुण्ड**नोल्दु ताम्
निरुपमप्प **तुप्पूर**-जिनालयमं भरदिन्दे माडिदं ॥
विनयनिधि सत्य···धर । मनुचरित वदान्यमूर्त्ति मन्दरधैर्य्य ।
जनता- संस्तुतनेम्बोन्द् । अनुपमगुण रणवितान **विट्टि-गावुण्ड** ।
श्रीमद्-द्रमिळ-सङ्घेऽस्मिन्नन्दिसङ्घेऽस्त्यरङ्गळः ।
अन्वयो नाति निश्शेष-शास्त्र-वाराशि- पारगैः ॥

स्वस्ति श्रीमन्महाप्रधानं कुमार-लक्षण-दण्डायकराधिकारं माडुत्तिर्प्पन्दातन सन्नि-धानदल्लु स्वस्ति समस्त-गुण-सम्पन्नरप्प कुडुग-नाड-मुन्नूर् समस्त-प्रभु-गावुण्डु-गळिन्दु **तुप्पूर** विट्टि-जिनालयक्का-बूर **मडहळिळय** सर्व्व-बाधापरिहारवागि **शक-वर्ष १११८ नळ-संवत्सरद** ज्येष्ठ-सुद्ध १३ बृहस्पतिवारदन्दु धारा-पूर्व्वकं माडि विट्ट दत्ति । वसदिय वडग दिशा-भागदलेरडु वेलि भूमियुं खण्ड-स्फुट्ति-

जीर्णोद्धारके देवरष्टविधार्च्चने··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···ब्राह्मण··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···कोन्द पापके··· ··· ··· ··· ···(हमेशा की तरह अन्तिम श्लोक) स्वस्ति श्री समस्त-कोटि-जिनालयं भद्रमस्तु जिनशासनाय ॥

[जिन शासनकी प्रशंसा ।

जिस समय, (अपने पदों सहित), होय्सळ वीर-वल्लाल-देव हेड्डुरें (कृष्णा नदी) तक उत्तरकी ओर पृथ्वीको स्वाधीन करके सुख और शान्तिसे राज्य करते हुए अपने निवासस्थान दोरसमुद्रमें थे:—तत्पादपद्मोपजीवी होरलाधिकुलाग्रणी एक **गोरव-गवुण्ड** थे । उन्होंने तिप्पूरमें एक जिनालय बनवाया । वह मन्दिर द्रमिलसंघ, नन्दिसंघके आरुङ्गल अन्वयका था । जिनालयकी मरम्मत तथा पूजाके प्रबन्धके लिये उसने मदहल्लि गाँव का, बसदिके उत्तरकी ओरकी जमीन सहित, दान किया था ।]

[EC, IV, Gundlupet, tl., No. 27.]

४२६

हलेवीड—कन्नड़ ।

वर्ष नल [शक १११८= ११९६ (कीलहार्न)]

[पार्श्वनाथ बस्तिके प्रवेशद्वारके पासके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
श्री-**मूलसंघ**-क्रमज्ञाकर-राजहंसो
देशीय-सद्-गणि··· ···रावतंसः ।
जीयाज्जिनेन्द्रसमयार्णव-तूर्ण-चन्द्रः
श्री-वक्र-गच्छ-तिलको मुनि-बालचन्द्रः ॥

स्वस्ति श्रीमद्-भुजबळ-चक्रवर्त्ति यादव-नारायण-वीर-**वल्लाल-देवर्** सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे। **नळसंवत्सरद कार्त्तिक-शुद्ध-पडिव-बृहस्पतिवा-**

रदन्दु श्रीमन्महा-वडु-व्यवहारि **कवडमय्यन देवि-सेट्टिय**रु माडिसिद श्री-शान्तिनाय-देवर वसदियूरु **कोरडुकेरेय** कालुहल्लि माचियहल्लिय **वम्मतिगट्ट**व इट्टगेय मल्लरसय्यंगण मक्कळु अप्पय्य-गोपय्य-वाचय्यङ्गळु आ-शान्तिनाय-देवर वसदिय परिसूत्रदोळगण तम्म माडिसिद पट्टशालेय श्री-मल्लिनाय···वरष्ट-विधार्च्चनेगं खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारकं ऋषियक्कळाहार-दानक्कं पर्व्वदिनपूजेगं श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यर् माण्डविय **बालचन्द्र-सिद्धान्तदेव**र शिष्यर् **रामचन्द्र-देव**र्गे अरुवत्तु-गद्याण होन्नं क्रयवागि कोट्ट कोण्डरा-वम्मतिगट्टद सीमा-सम्बन्धवेन्तेने (आगेकी ३ पंक्तियोंमें सीमाकी चर्चा है) आ-केरेयनिप्पत्तु-होन्नं कोट्टु कट्टिसिदर् देवर नित्य-पूजा-क्रममेन्तेने ॥ (आगेकी ६ पंक्तियोंमें दानकी चर्चा है) इत्ति नितुमं सर्व्व-बाधा-परिहारवागि श्री-शान्तिनाथ-देवर वसदिय-आचार्य्यरारोर्व्वरिर्द्दरिद्दवरं कोरडुकेरेय गौडुगळु ऊरुवत्तोंक्कलुं अरुवण्णवोळगाद अन्यायवेनु वन्दडं तावे तेत्तु सलिसुवरु ई-धर्म्मवं नरवरंगळारैन्दु प्रतिपालिसुवरु ॥ (हमेशाका अन्तिम श्लोक) मंगल महा श्री ॥

[इस लेखमें सबसे पहले मुनि बालचन्द्रकी प्रशंसा है। वे मूलसंघ, देशियगण और वक्र-गच्छके थे। जिस समय यादव-नारायण वीर-बल्लालदेव शान्ति और बुद्धिमत्तासे राज्य कर रहे थे :—(उक्त मितिको) बहुत पुराने व्यापारी कवडमय्य और देवि-सेट्टिने शान्तिनाथ-देवकी वसदिके लिए कोरडुकेरेके एक छोटे गांव माचियहल्लिके वम्मटिगट्टको बनाया और इट्टगे मल्लरसय्यके पुत्र अप्पय, गोपय्य और वाचय्यने, शान्तिनाथ-वसदिके घेरेके अन्दर अपने द्वारा बनाये गये पट्टशालेके मल्लिनाथ-देवकी अष्टविध पूजाके लिये, महामण्डलाचार्य माण्डवि बालचन्द्र-सिद्धान्त-देवके शिष्य रामचन्द्रदेवको ५० होन्नु देकर उस वम्मटिगट्ट (उसकी सीमायें) खरीदकर भेंट कर दिया; और २० होन्नु देकरके एक तालाब बनवा दिया। इस दानकी रक्षा शान्तिनाथ वसदिके आचार्य, कोरडुकेरेके किसान, और गाँवके ६० कुटुम्ब करेंगे।]

[EC, V, Belur, tl., No. 129]

४२७

चिक्क-मागडि;—संस्कृत तथा कन्नड ।

[संभवतः लगभग १२१२ (?) ई०]

[चिक्कमागडि में, वसवण्ण मन्दिर के प्राङ्गणमें एक खम्भे पर]

(पूर्व मुख) स्वस्ति श्रीमत्-प्रताप-चक्रवर्त्ति यादव-नारायण **होय्सल-वीर-वल्लाळ-देव-वर्षद २३ नेय** ॥

दोरेवेत्ताङ्गिर···त्सरं नेगळ्द-मास श्रवणं शुद्ध-वा- ।
सरमळ् देरिसि शुक्रवारमु·····पुष्य-धस्त-सा- ।
ध्य्···सु···वहयापाढ़·····परं वि·····सत्-
करणं तैतिलमि·····न्दिद विभातं कूडे पु···यिम् ॥
जिन-वाक्यामृत-सेवयिं मनद मिथ्यात्वामयं पिङ्के द- ।
र्शन-संशुद्धते-वेत्त चित्तदोदविन्दन्तर्महो···प्ति···।
अनितुं तन्नविवल्लवेम्···वगेयं विट्ट कुश-···त्म-शु- ।
द्ध-नयं तन्न···देव ताळिद् गुणमं **जक्कव्वे** निश्चय्सुतम् ॥
मति-जिन-पाद-पङ्कजदोळ् अन्वितमादुदु दृष्टि नासिका- ।
श्रतेयोळे निन्दुवागम-पदङ्गळनालिसुतिद्दुवागळुम् ।
श्रुति-युगळं···दृष्टि-युत-सन्यसनं नेरेदोप्पे नाक-सं- ।
गति-वडेदळ् समाधि-विधियिं वरे **जक्कलेयेम्** कृतार्थेयो ॥
सले···भानु-ज्योतियिन्दं विकचिसियद्रोळ् देव-देवेशनं निश्- ।
श्चळमागिर्द्द···सन्तोषदोळे जिनपनं जानिसुत्ता-लता-को- ।
मळे विट्टळ् बक्कियक्कं तनुवनुळिदराप्पोळ्वरेम्बन्तु तन्नम् ॥
क्षयमं मिथ्यात्व-कर्म्मक्कमर्द्द गुणद सम्यक्त्व-स···सम्वृ- ।
द्धियुमं मुम्मण्डि देश-श्रुतमननितुमं कोण्डु निर्मोहे ताय्-तन्- ।
देयुमं विट्टन्दे सन्यासमनमळिनवं पून्दु जैनेन्द्र-पाद- ।
द्वयमं चित्तय्सि **जक्कव्वे** दलेसे···अ·····॥

...त-दर्शने विस्तारित-मु.....र-कलेवर चक्रले-नाचिनाङ्.....
वि.....नेनेयुत चक्रले तनुवं विट्टागवन्ते तुक्कुम...सुधाशन-पूज्य-
समवशरणमननाकुळं पोक्कु विननमिवन्दिनुव.....

(दक्षिण ओर)

श्रीमत्पुण्य-फलादभूद् भुवि सुता सानन्त-सुख्यस्य या
सा सर्व्वज्ञ-पदारविन्दमसकृत् सम्पूज्य भक्त्यादिशत् ।
शुद्ध-ध्यान-विशोधि-शोधित-मनःपूर्व्वं समाधि-क्रमैस्
साश्रये त्यजति स्व-देहमणुवच्छ्री-जक्कलाम्बा सती ।
चित्तं वित्तार्यं पुण्याश्रव-करण-विधौ सर्व्व-कर्म्माणि नाशी- ।
कर्त्तुं त्यक्त्वा विमोहं सनयनुपशमं प्राप्य चात्मोपयोगम् ।
शुद्ध-ध्यानामृताम्भः-प्लुत-म...दिनेन्द्रस्य पादारविन्दम्
प्रत्याप्यालोक्य देहं त्यजति तृणमिव श्रीमती जक्कलाम्बा ॥
नित्यानन्द-सुखामृताम्बुधि-पयः-पूर्व्वावगाहोत्सुका
स्वात्मानुष्ठित-सम्यनाम-विळसत्-सम्यक्त्व-पोतेन या ।
संसारार्ण्णव-पारमाशु तरणोद्योगं समुत्पादिनी
चित्रं देव-गतिं प्रति त्यजति किं देहं तु जक्काम्बिका ॥
निखिल-वनज-वल्ली-पुष्प-माला-कदम्बैः
घृत-दधि-वर-दुग्धैरामिषिच्यार्च्चयं तीर्थान् ।
न भवति हृदि तृप्तिं जक्कलाम्बा स्व-देहात्
समवशरण-नाथं द्रष्टुकामा प्रयाति ॥
दानान्वितेति गुण-रत्न-विभूषितेति
शान्तेति सर्व्व-वनितासु दया-परेति ।
जैनागमोक्त-चरितानुगतेति भव्यः
कैं न स्तुवन्ति भुवि जक्कल-योषितं ते ॥

(पश्चिम ओर)

श्री-विबुधेन्द्र-वन्दित-विनेन्द्र-महा-महिमार्च्चना-शची- ।

देवियेनिप्प **जक्कल**-महा-सतियुद्ध-चरित्रमं कला- ।
श्री-विभवङ्गळं विविध-दानमनाप्त-जिनेन्द्र-भक्ति-सं- ।
भावित-सत्-समाधि-मृतियिं सुकृतार्थिगळारो कीर्त्तिसर् ॥
वनिता-भूषणे सच्-चरित्रवति ताय् **लच्छव्वे** सामन्त-**मण्-** ।
डन-मुद्दं जनकं विनूत-**भरतं** कान्तं सुतत्त्वोपदे- ।
शनना-श्रीम**दनन्तकीर्त्ति-मुनिपं** पूज्यं जिन-स्वामियेन्द् ।
एने जक्क·····वंश-शील·····सम्यक्त्वं जगत्-पावन ॥
·····डिगे जिनाग···जिनमतं मतिगा-जिन-सू···सत्पदम् ।
नडेगोडनाडियाप्तेने जिनोक्तियनोदि तदागमार्त्थमम् ।
नडे तिळिदन्ते मुक्तिगिरदेय्दिप शील-गुण-व्रताध्वदोळ् ।
नडेदेडेगेय्दवाल्के गड **जक्कले** नारि महेन्द्र-कल्पदोळ् ॥
नेरेये मुनीन्द्ररुं पोगळ्दणं तले दुगे परिग्रहङ्गळम् ।
तोरेदु गृहीत-सन्यसनदिं निज-बान्धव-मोह-पाशमम् ।
परिदु सुवृत्ते **जक्कले** महा-सति चित्तमनाप्त-तत्त्वदोळ् ।
नरिसि समाधियिं नेरेये साधिसिदळ् सुर-लोक-सौख्यमम् ॥
तळर्दिरदेक-पार्श्व-नियम-स्थिति दृष्टि सु-नासिकाग्रदिम् ।
कळिवेडे वल्पु वळिक्करदे मेय् मिडुकाडदे जैन-भक्ति सञ्-।
चळिसदे माणदुच्चरिसि पञ्च-पदङ्गळगनात्म-तत्त्वदोळ् ।
नेलसिद सत्-समाधि-विधि **जक्कले**-नारिगिदेक-लावणम् ॥

(उत्तरकी ओर) श्री-जिनेन्द्र ॥

त्यक्त्वा देहं विमोहाद् व्रत-गुण-चरित-श्रेणि-निश्रेणि-मार्गाद्
आरुह्य स्वर्ग-दुर्गं निज-भजन-बलादेव यत् तद् गृहीत्वा ।
याहं **जक्काम्बिकास्मिन्** दिवि दिविजवरोऽभूवमात्म-प्रसादाद्
इत्थं तुष्टाव गत्वा समवसरण-भूस्थं नतेन्द्रं जिनेन्द्रम् ॥
जिन नाथाभिषवङ्गळिं जिन-गुण-स्तोत्रङ्गळिन्दं जिनार्-।

र्च्चनेयिन्दं जिन-भक्तियिं जिन-मुनीन्द्राहार-दानङ्गळिम् ।
जिन-वाक्यार्त्थ-विचारदिन्दलेदु मिथ्या-मार्गमं तत्त्व-भा-।
वनेयिं पेट्टमरत्वदिन्देरगिदळ् **जक्कव्वे** जैनाङ्घ्रि योळ् ॥
तत्त्वमना-जिनेन्द्र-मतदिं तिळिदुज्ज्वळमाद शुद्ध-दृ-।
ष्टित्व-गुणार्कनिन्दलरे शील-गुण-व्रत-वारिजाळि मि-।
थ्यात्व-तमस्-तमं परेये सत्पथ-वर्त्तिनियागि शुद्ध-सं-।
वित्वदिनेय्दिदळ् नेगळ्द चक्कले नारि सुरेन्द्र-लोकमम् ॥
ललित-पतिव्रताचरण-चारु-नदी-सलिल-प्रवाहदिम् ।
कलि-मलमं कळल्चि निज-निर्म्मळ-कीर्त्ति-लता-वितानमम् ।
वळेयिसि-शील-शालि-वनमं परिवर्द्धिसि पुण्य-नन्दनङ् -।
गळने निर्मिर्च्चि **जक्कले** वलं पडेदळ् सुमनो-विभूतियम् ॥
परिकिसि सद्-सुधर् प्पोगळे तन्न चरित्र-गुणाङ्क-मालेयम् ।
विरचिसि सुप्रबन्धमने दिक्- कुळ-भित्तिगळोळ् तेरळ्च मुं-।
वरेदुदनीगळा-दिविज-लोकदळोप्पुव लेख-जाळदोळ् ।
वरेयिपनेन्दु **जक्कले** महा-सतियेरिदळल्ते सग्गमम् ॥
पुगेयवसर्प्पणं भरतदार्य्येयोळन्वितमाद भोग-भू-।
मिगळ विरामदोळ् सुकृत-दुष्कृत-वर्तनेयागि सन्द का-।
ल-गत-च···तु ··· ळन्त्यदोळे पञ्चम-कालदोळोन्दिदन्द···।
महात्मरोळ् गुणमे **जक्कले**-नारियोळुत्तरोत्तरम् ॥

[प्रताप-चक्रवर्त्ति-यादव-नारायण होय्सल वीर-वल्लाल-देवके २३वें वर्षमें उक्त मितिको जिसका बहुत विस्तृत वर्णन है, परन्तु जो बहुत घिस गया है । :

जक्कव्वे (चक्कले) ने समाधिमरण धारणकर स्वर्ग प्राप्त किया ।

(सम्पूर्ण लेख उसकी भक्ति और तपकी प्रशंसासे भरा हुआ है, कुछ भाग संस्कृत में है और कुछ कन्नड़में है) । उसकी माता लक्कव्वे, पिता मण्डनमुद्द,

पति विख्यात भरत, तप-साधक उपदेष्टा (गुरु) अनन्तकीर्त्ति-मुनिप। उसने अपना जीवन, शील और उपाधियाँ पद्यमें गुम्फित करा लीं थीं।]

[EC, VII, Shikarpur, tl., No. 196,]

४२८

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १११८= ११९६ ई०]

[जै० शि० सं, प्र० भा०]

४२९-४३०

श्रवणबेलगोला—कन्नड़।

[बिना कालनिर्देशका]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

४३१

अद्रि;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १११९=११९७ ई०]

[अद्रिमें, वन-शङ्करी मन्दिरके सामनेके पाषाण पर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
चीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥

स्वस्ति श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाराजाधिराजं परमेश्वरं परम-भट्टारकं यादव-कुळाम्बर-चुमणि सम्यक्त्व-चूडामणि मलेराज-राज मलपरोळ् गण्ड कदन-प्रचण्डनेकाङ्ग वीरसहाय-शूर शनिवार-सिद्धि गिरिदुर्ग-मल्ल चलदङ्क-राम निश्शंक-प्रताप चक्रवर्त्ति ०-वीर-बल्लाल-देवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कं-तारम्बरं मेरे॥

भुवनं भू-चक्र-चक्रायुधनेने नेगळ्द **वीर-वल्लाळ**नुर्व्वी- ।
स्तवनीय-प्रांशु-मत्स्प-च्छवि सुचरित-कूर्म्मोदयं सार-सूकरि- ।
य विळासं विक्रम-श्री-नरहरि-परमं त्रिक्रमं राम रामो- ।
त्सव-रामानन्दि विद्या-सुगतमति-कलि-प्राभव-प्रौढ़-तेजम् ॥
वळवद्-वल्लाळनुग्राहव-पटह-रवं कर्ण्णवन्ताये विद्युत् (विद्विट्)-
कुळ-कान्ता-कर्ण्ण-पुत्रं केडवुदणकवल्लोन्दे केळ् विस्मयं कर्ण्-
मलरिं वाष्पाम्बु कय्यिं कडगवडिगळिं नूपुरं वक्त्रदिं सुय्।
तले-कट्टिं माले-वूवाकेगळ गळकदिं विळ्बुदुत्तार-हारम् ॥
जित-धात्री-चक्र चक्राधिप नृप-वर **वल्लाळ** केळ् निनु ओळान्तु- ।
द्धत-वीरारति-यूयं विगत-विभवमागिर्द्दं रज्जिकुं वि- ।
श्रुत-नाना-वाहिनी-सङ्कुळ-परिगत-शोभानुकूल्यं सदा-से- ।
वित-राचद्राज-वंशं सकळ-कवि-निकाय-स्तनाकीर्ण्ण-कर्ण्णम् ॥
एनसुं तीव्र-प्रतापक्कगिदु दिनकरं मित्रनागिर्द्दपं ने- ।
हने राजं राज-नामं तनगे पगेयेनिप्पुम्मळं पेर्च्चि कन्दिर- ॥
प्पनवं मत्तावनण्मं मेरेवनदटनिं तोर्प्पनावं महोग्रा- ।
रि-नृपाळं विश्व-भू-चक्रदोळेले चलदिं **वीरवल्लाळ** निन्नोळ् ॥
आनोलविन्द वण्णिसदडेम् गळ दक्षिण-चक्रि युद्धदोळ् ।
तानसहाय-शूरनेनिपुन्नतियं रिपु-राय-**सेवुणा**- ।
नून-गजाश्व-सङ्घट-वळङ्गळनळ्कुरदोन्दे-मेय्योळोन्द्- ।
दानेयोळोक्किशिक्किद पराक्रमदुन्नति ताने हेळदे ॥

व॥ अन्ता-प्रताप-चक्रवर्त्तियेनिसिद धीरं **वीर-वल्लाळ-देवं** निज-
भुज-वळदिन्दुण्डिगे साध्यं माडि चलदिन्दाळ्द पलवुं देशङ्गळोळ् ॥
पुलवुं पूर्ण्ण-तटाकदि वलेद-नाना-शालि-केदारदोळ् ।
पोलदिं वारिज-षण्डदिं परिमळ-भ्रान्ताळि-माळोद्घ-पु- ।
ष्पलता-सङ्कुळदिं फलोन्नमित-चूतादि-क्षमाजङ्गळिम् ।

नेलेयागिर्प्पदु मन्मथाङ्गे **वनवासी**-देशवेत्तेत्तलुम् ॥

क॥ एने नेगळ्द-वनवासी- ।
वनिता-मुख-तिळकवेनिप **जिङ्डुलिगे**यना- ।
नृपाळ-प्रकरद शौ- ।
र्य्य-निधान-स्थानमेसेवुदु**द्धरे**य-पुरम् ॥

व॥ अदेन्तेन्दडे ॥
सरसिज-वक्त्रदिं कुमुद-लोचनदिं विळसल्लताङ्गदिम् ।
सुरुचिर- पल्लवाधरदिना-शुक-भावण्डदिन्दे मल्लिका- ।
परिमलदिं मदाळि-कुळ-कुन्तळदिं वन-लक्ष्मि-रूपनुद्- ।
धरेय पुरोपकण्ठ-वनदोळ् पडेदोप्पुवळावळाव-कालमुम् ॥

मत्तमल्लि ॥
सले तत्-पुराधिनाथर् ।
पलरुं मुन्नेगळ्दरवरोळतुळित-शौर्य्यम् ।
चलदर्त्थि-गण्डनेनिपोळ्- ।
गलि जट्टीगनिरिव **विट्टिगं** पेसर्-वडेदम् ॥
परियिट्टु वरि-भूपा- ।
ळर पुरवं सुट्टु हरिव कञ्चिगनादम् ॥
विरुदिं तन्नृप-तनयम् ।
धरेयोळ् जयदुत्तरंगनपगत-भङ्गम् ॥
गङ्ग-कुळोत्तमं मरेयनेरिद मेयूगलि **मारसिग**-भू- ।
पंगे तनूभवं नेगळ्द **कीर्त्ति**-नृपाळकना-नृपङ्गे पु- ।
त्रं गड **मारसिग**नवनग्रे-तनूभवमेन्दोडानदा- ।
वङ्गेणे माळ्पेनप्रतिम-रूपन**नेक्कल-देव**-भूपनम् ॥
आ-नेगळ्द**ेक्कल-देव**-म- ।
हि-नाथन तङ्गे **दसवमरस**न सति धा- ।
त्री-नुते **चट्टल-देवि** क ।

ळा-निधि पडेदळ् पवित्र-पुत्र-त्रयमम् ॥
पर-भूपाळ-पुर-त्रिनेत्र**नेरग**-क्ष्मापाळकं वैरि-दुर् ।
घर-दैत्य-प्रकर-प्रताप-हरणोद्यत्केशवं **केशवम्** ।
सरसोदार-कवित्व-तत्त्व-चतुरास्यं **सिंगदेवं** महा- ।
पुरुष-त्रै-पुरुषत्वमं तळेदरन्ता-भूवरं भूवरर् ॥

अवरोळ् पिरियनेनिसि ॥

मरेदुं पर-सतिगर् ।
क्करोलच्युतनल्लदन्य-देव्यर्क्कार्प्पम् ।
मरेयिप निच-घन-लोमक्क ।
एरगनेरगनेरग-नृपनेने नेगळ्दम् ॥
एने नेगळ्देरग-नृपाळक्कन् ।
अनुजं **कोळाल-पुर**-वराधीशं पा- ।
वनतर नन्निय-गङ्गम् ।
विनुत-गुणोत्तुंगनवनी-पति **नरसिंगम्** ॥
आ-विभुविन सति **लक्ष्मा-** ।
देवि मुकुन्दङ्गे लक्ष्मि परमेष्ठिगे वा- ।
णी-व्वधु रुद्रङ्गद्रिजे ।
देवेन्द्राङ्गेसेव-सचियेनल्पेसर्-वडेदळ् ॥
आ-रमणी-विशाळ-विनुतोदार-पद्मदोळुद्भगर्मनन्त् ।
आ-रमणी-निवासमळिन-गर्व्व-पयोधियोळिन्दु रागदिन्द् ।
आ-रमणी-लसज्-वठर-बाह्वियोळ् सुरसिन्धु-नं स-वि- ।
स्तारदे पुट्टुवन्ददोळे पुट्टिदनेक्कल-भूमिपाळकम् ॥

भूदेन्तेन्दोदे ॥ स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरम् **कोळाळपुर** वराधीश्वरं गङ्ग-कुल-कमल-मार्त्तण्डं विरुद-मण्डलिक-शरभ-भेरुण्डं जयदुत्तरंगं **नन्निय-गङ्गं** विराजित-मयूर-पिञ्छध्वजं भूप-रूप-मकरध्वजं श्रीमदच्युत-चरणालिप्त-

चन्दनचर्च्चिताङ्गं विप्राशीर्व्वाद-सत-सहस्र-सम्भृत-शेषाक्षत-पवित्रीकृतोत्तमाङ्ग भूमि-कन्या-स्वर्ण्णान्न-दान-विनोदं सकळ-जन-मनोह्लादमेनिसि **देक्कल-देवन** प्रतापम् पेळ्वडे ॥

जवनं जक्कुलिपं कडङ्गि सिडिलं माक्कोळ्वनामीळ-का-।
ळ-विपोग्राहियनेत्ति मारिडुवनौर्व्व-ज्वळेयं मर्ग्गिपम् ।
तविपं तीव्र-निषाट्दग्गळिकेयं तानेन्दोडिन्दुक्किनि-।
क्कुवमारान्तपरेक्कल-क्षितिपनं संग्राम-रङ्गाग्रदोळ् ॥
दवरूपं रिपु-काननक्के पवि-रूपं शत्रु-शैळक्के वा-।
डव-रूपं [द्] विपदर्ण्णवक्के निज-तीव्रात्युग्र-कोप-प्ररू-।
पवेनल् पोङ्गि कडङ्गि निन्दतुळ-वाहा-गर्व्वदिन्दाम्परार् ।
अवनीपाळकरेक्कल-क्षितिपनं संग्राम-रङ्गाग्रदोळ् ॥
इं बेसेगोळ्वुदेनो सुभटोत्तमनेक्कल-देवनिष्टरोळ् ।
नम्बुगे दप्पिदन्दु पर-कान्तेयोळोळ् [द्] ओडगूडिदन्दु लो-।
वम्बिडिदर्त्थदत्तळिपिदन्दिदिरान्तडे कोल्लदन्दु केळ् ।
अम्बुधि मेरेयिं तोलगुगुं तळर्गुं नेळेयिं सुराचळम् ॥
तक्कतनक्के मिक्क पर-कामिनियर्क्कळनेम्म तङ्केयेम्म्-।
अक्कनेनुत्ते नम्वे मोरेंगोण्डोडगूडुव साधु-गळ्ळरे-।
तक्कुपायोग्यवा-महीपरेम् गळ पोल्वरे शौचदेळोयिन्द् ।
एक्कल-भूपनं पर-वधू-विनुतोदार-पद्म-गर्व्भनम् ॥
गति-भावं चारि सूत्रं निरिसळवि बळं काङ्के वल्योजे काय्पु-
न्नति गाढं लागु वेगं तेरपु पसरवारैके तेरक्के कूर्प्पङ्-।
कितवाकारं तडं कित्तडवेनिप भृगु-प्रौढियिं कोल्वनुग्रा-।
हितनं मारङ्कवं मार्म्मलेदडे चलदिन्देक्कल-क्षोणिपाळम् ।
ग-नृपाळनन्वयागत-प्रधानरोळ् ॥
स्तुति-वेत्तं विश्व-लोकोन्नत-वितरण-शीलं रिपु-क्षोणिपाळ-।
प्रतति-प्रख्यात-दण्डाधिप-कुळ-विळयोदग्र-काळं मही-वन्-

दित-मास्वत्-सच्चरित्र-व्रत-युत-गुण-लोळं जगत्-नेत्र-मन्य-
प्रतिगळं स्वीकृत-प्राकट-वर-बुध-चाळं **चमूनाथ-माळम्** ॥
आ-विमुविङ्ग सति-**मा**- ।
देविगमोगेदं प्रताप-निधि वैरि-क्षय- ।
श्री-वरनहित-वनोद्यद्- ।
दावानळनप्प **धोप्प-देव-चमूपम्** ॥
एरेदर्यार्त्थि-क्षयक्के कळ्प्-कुबविप्पन्तिप्पनं द्योप्पनम् ।
वर-वंशाम्बुधि-वर्द्धनक्के शशिविप्पन्तिप्पनं धोप्पनम् ।
आ-सेनापति-सति-विन- ।
शासन-देवते समस्त-चतुर्कोटि कळोद्- ।
भासित-पद्मावति जग- ।
ती-संस्तुतेयेनिप **धोप्पियक्कं** नेगळ्द्ळ् ॥
आ-दिव्य-सतियेनिप **धो-** ।
प्पा-देवि-गममद्र-कीर्त्ति-द्योप्पङ्गं पुण्- ।
योदर्यादनोगेदनमृत-म- ।
होदधियोळ् सोमनेगव-तेरदिं **सोमम्** ॥
घरे ब्रह्मपुदु मन्त्रि-द्योप्पन तनूजारामनं प्रेमदिम् ।
निरवद्यामळ-नामनं प्रणुत-विद्व [त्] -स्तोमनं प्रोल्लसद्- ।
वर-नारी-जन-कामनं विनय लक्ष्मी-धामनं भव्य-वन्- ।
धुर-धर्म्म-व्रत-नेमनं बहु-कळा-निस्सीमनं सोमनं ॥
सुरि-चकोर-सोमननवद्य-कळागम-सोमनुद्धतो- ।
गारि-सरोज-सोमनति-निर्म्मळ-वंश-पयोधि-सोमना- ।
चार-वन-प्रवर्द्धन-वसन्तक-सोमनशेष-भव्य-हृत्- ।
कैरव-सोमनेन्दिनिप **सोम**-चमूपनिदेनुदात्तनो ॥
आ-महिमाद्यदनोनर्षिद- ।
सोम-चमूरङ्गे पात-हितादन्धति सु- ।

प्रेमान्विते सतियादळु ।

सोवल-मादेवि सखिगे सखि-लेखेयवोल् ॥
पडेमातेम् विळसत्कळा-परिणतं विद्या-गुणोद्भासि हेग्- ।
गडे-सोमं पति सामि-वज्रकर गण्डं दण्डनाथं जसक्- ।
ओडेयं श्री-**महादेव**नात्म-सुतनेन्दन्दिन्दु मत्तन्यरार् ।
प्पडेदर् **स्सोमल-देवि**यन्ते सतियर् स्सौभाग्यमं भाग्यमम् ॥
एने नेगळ्द मंत्रि-सोमन ।
वनितेगे पति-हितेगे सत्-कुल-प्रभवेगे सज्-ं ।
जन-नुते-सोवल-देविगे ।
तनयर् **म्महदेव-राम-केशव**रोगेदर् ॥
आ-मूवरोळं मध्यमन् ।
ई-महियोळु ताने पलरोळुत्तमनेनिपम् ।
रामं यशोभिरामम् ।
सोमात्मजनमळ-धर्म्म-कर्म्म-प्रेमम् ।
पर-सेना-जय-विक्रमोन्नतियोळादं भीमनुं रामनुं ।
धरणी-स्तुत्य-कळा-विळासदोदविन्दा-सोमनुं रामनुम् ।
वर-नारी-जन-मोहनाकृतियोळुद्यत्-कामनुं रामनुम् ।
सरियेन्दी-जगवेल्दे वण्णिपुदु कीर्त्ति प्रेमनं रामनम् ॥
श्री-रामननुजनेनिसिदन् ।
आ-राम-चमूपननुजनुरु-लक्ष्मण-वि-।
स्तार-सुमित्राधिक-पुण्-।
यारामं केशवं जगज्जन-विनुतम् ॥
एरेदन्दागळे माणिपं बुध-विपत्-संक्लेशवं केशवम् ।
विरुदिन्दान्तरनेद्दिपं स्फुरदरण्योद्देशवं केशवम् ।
शरणागेन्दडे नीडुवं बहळ-बाहा-पाशवं केशवम् ।

चिर-कीर्त्ति-प्रमेयिं वेळप्पनखिळाशाकाशवं केशवम् ॥
कडु गलि माधवङ्गे मुनिदेळ्वर गोण्मुरि मन्त्रि-माधवङ्ग ।
एडवरनोक्किलिक्कुव जवं सले **माधव-दण्डनाथ** नोळ
तोडर्वर मृत्तु माधव-चमूपनोळण्मिन मच्चर्क्के मार् -।
न्नुडिवर मारि **केशव-चमूपति**यण्गन गन्ध-वारणम् ॥
तरुणी-लोचन-काम-देवनकळङ्काचार-विस्तारनक्-।
करिगर्ग्गाश्रयनाश्रितैक-शरणं प्रोद्वृत्त-वीरारि-सिन्-।
धुर-सिंहं सकळागम-प्रणुत-जैनानून-वारासि-वन-।
धुर-चन्द्रं महदेव-मन्त्रियनुवं दण्डाधिपं **केशवम्** ॥
आ-नेगळ्द्दनुज-द्वितयम् ।
पीन-भुजाकृतियिनात्म-भुजदोळ् तत्तळ्र्-।
ब्बी-नुतमेनिसल्केसेदम् ।
ताने चतुर्म्मुखनेनल्के **माधव-देवम्** ॥
मरसि परार्त्थमं तेगेव मेळिसि पोर्द्दि पराङ्गना-रतङ्-।
एरगुव नम्बिदाळ्दनिरे मत्ते पतित्वमनासेगेय्दु बे-।
सरनुसिर्वन्य-मन्त्रि-निकरक्कदटिं तोडरिक्कदं गडेन्।
अरियिरे सामि-वज्रकर गण्डननी-**महदेव-मंत्रियम्** ॥
पर-वधु रम्भेगं रतिगवग्गळवोप्पुवडं परार्त्थवी- ।
श्वर-सखनर्त्यदिं वरुणनर्त्यदिनूर्ज्जितवागि वप्पडम् ।
पर-नृपनोल्दु मन्त्रिसुवडं पिरिदीवडवत्त चित्तवो- ।
सरिसदिदेम् महत्वदोदवो महियोळ् महदेव-मन्त्रियम् ॥
बहु-चक्रं पद्मगर्ब्भ तनुज-गुरु गुरु-द्वेषि जीवं सुराधी- ।
श-हितात्मं सु-प्रबुद्धोद्धवनेनिपवनुं तानकार्य्य-प्रयुक्तं ।
महियोळ् पोल्वन्ननावं तनगेने नेगळ्दं विश्व-लोक-प्रसिद्धम् ।
महदेवं मंत्रिमुख्यं मनु-मुनि-चरितं मन्त्र-युद्ध-प्रवीणम् ॥
गेडेगोण्डं धन्यनोल्दालगिसिद्दने कृतार्त्थं मनं वेट्ट मेय्-सार्-

द्दोडनुण्डं पुण्य-पुञ्जं पोरेव-नृपने नैर्म्मल्य-धर्म्मानुसङ्गम् ।
नुडि-गल्तं विश्व-विद्वज्जन-विनुत-कळा-प्रौढनेन्दन्दु तन्नोळ्
पडियावं मन्त्रि-वर्य्यं बुध-निधि महदेवज्ञे मत्तोर्व्वनन्यम् ॥
मति कृतिगळ्गे दृष्टियेनिसिप्पुदु तन्नय सूक्ति-शक्ति भा- ।
रतिगे विवेकवं कलिसुवोजुवोलिर्प्पुदु चारु-सत्-कळा- ।
ज्ञते चतुराननङ्गरिवनीवेरवट्टेनिसिर्प्पुदेन्दु वन्- ।
दि-तति निरन्तरं पडेदु वण्णिपुदी-**महदेव**-मन्त्रियम् ॥
वनदोळ् हुट्टिद-भद्र-जाति-जयमं मुण्डट्टु तां पट्टवर्- ।
द्धनरप्पन्तिरे चक्रवर्तिगे चळं गोण्डेक्कल-द्दोणिपा- ।
ळन दुर्ग्गं-बिडिदिद्दुं दोर्व्वळद बल्पं तोरि **वल्लाळं**-दे- ।
वन सेनापतियादनूर्ज्जित-भुजं दण्डाधिपं **माधवम्** ॥
परिकिपडुम्ब-वस्तु हदिनारवरोळु तुदिर्यि निवृत्ति तळ्त् ।
एरडेरदुत्तरोत्तरमनेय्दे मोदल् परवा-जिनेन्द्र-भा- ।
सुर-पद-पूजेयोळ् फळदिनित्त जळम्बरवोन्दु माणुद्दडे ।
निरुपमवल्ते **माधव**-चमूपनं जैन-जन-स्तुत-व्रतम् ॥

अदेन्तेन्दडे । श्रीमन्महा-प्रधानम् । पुरुष-निधानम् **सोवल-देवी**-जठर-जाह्नवि-समुद्भूत शौच-गाङ्गेयम् । अणु-व्रतादि-सुव्रताचरण-नियमागण्य-पुण्य-कायम् । निखिल-समय समुत्पाटन-प्रकटीकृत-ज्ञानानून-जैनागम-शिक्षा-क्षम-**सकल-चन्द्र-भट्टारक-देव**-चरण-सरसीरुह-परिमळ-परितोष-समुल्लसित- षट्चरणं । जिन-समय-समुद्धरण-परिणतान्तःकरणम् । भुवन-विनुत-भव-रहित-जिन-भवन-विनिर्म्मापणो-द्वृत्त-चित्त-नित्पाहादम् । आहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दान-विनोदम् । श्रीम-**देक्कल देव**-राज्याभुदय-करण-कारणम् । त्रि-शक्ति-चतुरुपाय पञ्चांग-मन्त्र-प्रवीणम् । सामि-वञ्चकर गण्डम् । निखिळ-गुण-गण-करण्डम् । पर-नारी-सहोदरम् । सा[illegible]स-वृकोदरम् तानेनिसि नेगळ्द-**महदेव**-दण्डनाथन महा-सतिय महत्त्वमं पेळ्वडे ॥

आतनु मनः-प्रियं रतिगे लक्ष्मिगे भाविपोडोर्व्व गोवळम् ।
पति गिरिराज-पुत्रिगे मरुळ्गेरेयं वरनेन्न कान्तन- ।

च्युतनतितेव्यनूर्ज्जित-कळाधरनेन्दिळिकेय्वळी-महा- ।
सति **महदेव**-मन्त्रिय मनः-प्रिये **लोकल-देवि**सन्ततम् ।
चतुरतेगाद सैपु सुचरित्रतेगाद पोडर्प्पु जैनदुन्- ।
नतिकेगे सार्द्द पुण्यमभिमानके तळ्त महत्त्वी-जगन्- ।
नुत **महदेव**-मन्त्रिय मनः-प्रिये **लोकल-देवि** निन्न सत्- ।
पति-हितदिन्दवाप्तेनलदेवोगळ्वेम् निज-सद्-गुणङ्गळम् ॥
चतुरतेयोळ् समन्तु जिन-शासन-देवते जैन-धर्म्मदुन्- ।
नतिकेयोळ**त्तिमव्वे** सततं पति-भक्तियोळोळ्पुवेत्तरुन्- ।
घति पडि पाटि पासटियेनला-सति **लोकल-देवि**गिन्नदार् ।
प्रति **महदेव**-मन्त्रिय मनः-प्रियेगन्य-चमूप-कान्तेयर् ॥

अन्तु गोत्र-मित्र-कळत्र-परिजन-परितोष-प्राज्य-राज्यान्वितनेनिसि नेगळ्द **महदेव** दण्डनायङ्गे गुरुवेनिसिद **सकळचन्द्र-भट्टारक-देव**राचार्य्यावळिय पेळ्वडे ॥

जनता-संस्तुत-**पद्मण**न्दि-**मुनिपं** तच्छिष्यनादं जगज्- ।
जन-चूडामणि **रामण**न्दि-**यतिपं** तच्छिष्यनुद्यद्-यशम् ।
मुनिचन्द्रं जिन-धर्म्म-निर्म्मळ-लसत्-**सौद्धान्त-चक्रेश**ना- ।
तन शिष्यं **कुळभूषण-व्रति-वरं त्रैविद्य-विद्याधरम्** ॥
विमळ-प्रोन्नत-कीर्त्ति कीर्त्तित-गुणाढ्यं विश्व-मास्वज्जगन्- ।
नमितं तर्कदोळप्रतक्यं-महिमं सैद्धान्त-सर्व्वज्ञनुत्- ।
तम-शद्भातिशय-प्रचण्ड-मति धर्म्म-व्यक्त-मुक्त् [यू] अङ्गना- ।
रमणं श्री-कुळभूषण-व्रति-वरं त्रैविद्य-विद्याधरम् ॥
तनगादं परिचारकाकृति यशश्श्री चारु-चारित्र-का- ।
मिनी रावच्-चमरीज-कान्ते मनेगादिर्प्पाके निच्चं दयाङ्- ।
गने वाग्वल्लभे बुद्धि वानसे करं भास्वत्-तपो-लक्ष्मि-सच्- ।
चनमागल् कुलभूषण-व्रति-वरं स्त्री-राज्यदिं राजिपम् ॥
क्ष्यम् ॥ पुदिदेप्पुं मदवं तिरस्करिसि तळ्तेळ्दं भयक्कासे-दो- ।
रदेयारायतनङ्गळं तोरेदु सन्दैदिन्द्रियङ्गळ्गे शो- ।

लदे नाल्कुं गतियिन्दवोसरिसि मूरुम्मूडवं विट्टु ता-
ने दया-वल्लभनादनी-**सकळचंद्रं**-चारु-**भट्टारकम्** ॥
श्री-वनितेगे मोगवित्तु त- ।
पो-वनितेगे मेय्यनोड्डि मुक्त्यङ्गनेयम् ।
भाविसुव वम्मचारियन् ।
ए-वोगुळ्वुदो **सकळचन्द्र-भट्टारकरम्** ॥
सकळागम-कोविदरम् ।
सकळ-जगद्-भरित-कीर्त्ति-लक्ष्मीश्वरम् ।
सकळात्मकरं पोगळ्गुम् ।
सकळ-जनं **सकळचन्द्र-भट्टारकरम्** ॥

स्वस्ति श्री **सक-वर्ष १११६ नेय पिङ्गल-संवत्सरद माघ-शुद्ध १२ वडुवार उत्तरायण-सङ्क्रान्ति-व्यतीपातदन्दु** श्रीमन्महा-प्रधानं **महादेव दण्डनायकर्म्माडिसिदेरग-जिनालयद शान्तिनाथ-देवर** प्रतिष्ठेयं माडिदल्लि श्रीमन्महा-मण्डलेश्वर **येक्कलरसरुं** समस्त-परिवारङ्गळुमिद्दु वसदिय खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारकं ऋषियराहार-दानकं देवरष्ट-विधार्च्चनाभिषेकङ्ग-भोग-रङ्ग-भोगकं **श्री-मूलसंघद काणूर्-ग्गणद तिन्त्रिणी-गच्छद श्री-सकलचन्द्र-भट्टारक-देवर** कालं कर्च्चि धारा-पूर्व्वकं माडिसि सर्व्व-नमस्यमागि कोट्ट स्थळ-वृत्ति (शेषमें दान और सीमाओंकी विशेष चर्चा है ।)

[जिन शासनकी प्रशंसा । जिस समय, (अपने पदों सहित), होय्सळ-वीर-वल्लाल-देवका राज्य प्रवर्द्धमान था:—उसकी बहादुरी को कहनेवाले श्लोक, जिनका अन्तिम कथन यह है कि उसने राजा सेवुणको, जिसके पासमें अगणित हाथी, घोड़े, तथा अच्छे योद्धा थे, युद्धमें अकेले ही हराया ।

प्रताप-चक्रवर्त्ति वीर-वल्लाल-देवके द्वारा जीते गये बहुत-से देशोंमें से एक बनवासी-देश था जो काम-देवका स्थान था । इस देशका तिलक-स्थानीय चिङ्गळि-लिगे था; जिसके शासकोंके पास रत्न और कोष-भवनके तौर पर उद्धरे था;

इसकी सुन्दरताका वर्णन। इसके शासक बहुतसे प्रसिद्ध व्यक्ति हुए, पर उन सबमें सबसे ज्यादा नाम विट्टिगका हुआ। युद्धसे भाग जानेवाले शत्रु-राजाओंके नगरको जलानेसे उसे 'हरिवकञ्चिग' (ध्वंसक कञ्चिग-अनुर) की उपाधि मिली थी। उस राजाका पुत्र, जोकि गङ्ग-कुलका अग्रणी था, राजा मारसिंग था; जिसका पुत्र राजा कीर्त्ति था, जिसका पुत्र मारसिंग, जिसका ज्येष्ठ पुत्र राजा एक्कल-देव था। उस विख्यात एक्कल-देवकी छोटी बहिन दलवमरसकी पत्नी, संसार-प्रसिद्ध चट्टल-देवी थी जिसके तीन लड़के थे,—एरग, केशव और सिंग-देव। एरगकी प्रशंसा। उसका लघुभ्राता कोळाल-पुरका अधिपति, नन्निय गंग, नरसिंग था, जिसकी पत्नी लक्ष्मा-देवी थी। और उससे राजा एक्कल उत्पन्न हुआ था। उसके पद्य। युद्धमें उसके पराक्रमकी प्रशंसा करने वाले श्लोक।

उसके मन्त्रियोंमें, (प्रशंसापूर्वक), चमूनाथ-माल था। उस और उसकी पत्नी मादेवीसे बोप्प-देव-चमूप उत्पन्न हुआ था। उसकी पत्नी बोप्पियक या बोप्प-देवी थी, और उनका पुत्र सोम-चमूप था, जिसकी पत्नी सोवल-मादेवी थी। उसके महादेव, राम और केशव पुत्र थे। इनमेंसे राम और केशवकी प्रशंसा। महादेव-मंत्रीकी प्रशंसायें। यह सकलचंद्रभट्टारक-देवका भक्त था।

उसके (महादेव-दण्डनायके) गुरु सकलचन्द्र-भट्टारक-देवकी गुरुपरम्पराः—पद्मणन्दि-मुनिपके शिष्य रामणन्दि यतिप, जिनकी क्रमगत शिष्य परम्परा ये थीः—मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रेश, कुलभूषण-व्रति त्रैविद्य-विद्याधर, इनके शिष्य सकल चन्द्र-भट्टारक थे; उनकी प्रशंसा। (उक्त मितिको), महाप्रधान महादेव-दण्डनायकने एरग जिनालय बनवाकर और उसमें शान्तिनाथ भगवान्‌की प्रतिष्ठा करके, महामण्डलेश्वर एक्कलरसकी उपस्थितिमें, मूलसंघ, काणूर-गण तथा तिन्त्रिणी गच्छके सकलचन्द्र-भट्टारक-देवके पाद-प्रक्षालनपूर्वक, हिडगण तालाबके नीचे 'भैरण्ड' दण्डेसे नापकर ३ मत्तल चावलकी भूमि, दो कोल्हू, एक दुकानका दान किया। कुछ दानोंका और भी जिक्र है। मन्दिर-भूमिकी [illegible]।]

[EC, VIII, Sorab, tl., No. 140]

४३२

यिडगूरु;—कन्नड़-भग्न ।

[विना काल—निर्देशका, पर लगभग १२०० ई०]

[यीडगूरु (चिट्टनहल्लि परगना) में, तालाबकी मोरी पर एक टूटे हुए पाषाणपर]

·····यं **रत्नसिद्धान्त-देवर कुमुदचन्द्र-देवर** गुम्म-सेट्टि यिवं [प-] रोल्विन··· ··· ···निनिस्धि··· ··· ···

[रत्नसिद्धान्त-देवके (शिष्य) कुमुदचन्द्र-देवके गृहस्थ-शिष्य गुम्म-सेट्टिका स्मारक ।]

[E C, XII, Gubbi tl., No 36]

४३३

चन्दलिके;—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न ।

—[विना काल-निर्देश का, पर संभवतः लगभग १२०० ई० का]—

[शान्तीश्वर वस्तिके आंगनमें, उत्तरकी ओर के समाधि-पाषाणपर]

लेख बहुत घिसा हुआ है)·····शासन के एसवी-शासन-देवि जिनेन्द्र-पूजे··· ···जित-देव-कान्ते जिन-योगि-निकाय-समग्र··· ···व्रतेयू···तिम्वे विबुधा-ळिगे तां सुर धेनु येम्··· ···नेगळ्द् **सोमल-देवि**··· पूजेगं मुनि··· ··· व्रत····· प्रवृत्ति-जिन-पादाम्भोज-सद्-भक्तियोळ···व्रतादि-गुण-सन्दोह···तन्देगे··· वगार् दोरे एणे भू-चक्रदलि कान्तेयरु ॥

श्रीमद्-भ···रोत्तम-लसत्- **श्री-तीर्थ-शान्तीश्वरो**-।
द्दाम-स्तान···माळ्पोन्दु सद्-दानदिन्द् ।
एमन्ता-**शुभचन्द्र**···युं नोळ्पडी-।
रामा-रत्नवेनिप्प **सोमव्रे** लोक-त्रय··· ···॥

··· ···ल-देवि जैन-पद-पूजा-दान-शीलादियि-।
··· ···रोत्तरं सन्दिर्द्द सम्यक्त्वदिन् ।
सन्तर् व्यञ्जिसे··· ···दं कालान्तदल् निर्म्मळम् ।
शान्तं चित्तवेनल्के वि··· ···देवत्तमं ताळिदळ् ॥

[लेख बहुत बिगड़ा हुआ है। इसमें शान्तीश्वर वसदिमें जैन विधियों के पालन पूर्व्वक सोमल-देवी या सोमव्वेकी मृत्यका उल्लेख है। उसके गुरु शुभचन्द्र थे, और लेखमें उसकी उदारता तथा विनम्रताकी प्रशंसा की गयी।]

[E C, VII, Shikarpur tl., No 232,]

४४३

—विना काल-निर्देशका—तिरुमलै—संस्कृत और तामिल।

१ स्वस्ति श्री [॥] चेर-वंशत्तु अतिरैमान् (इ) एळिनि डेव्द वर्म्म-
२ न्नर् [र्] युं यक्कियारैयुमेळुप्द [व] ळुवित्त एम्मिणियुमि-
३ दुके उप्पेन्-का [लु] ड्डुण्डु कुडुत् [।] न् ॥ श्रीमत्केरलभूभृ-
४ ता यवनिकानाम्ना मु-वर्म्मात्मा तुण्डीराह्वयमण्डलाहँस्तु-
५ गिरौ यक्षेश्वरौ कल्पितौ [।] पश्चात्तत्कुलभूषणाधिक-
६ नृप श्रीराजराजात्मज व्यामुक्तश्रवणोज्ज्वलेन तकटानाथेन चीर्णो-
७ च्छ्रितौ ॥ वञ्जियर् कुलपति योणिनि वगुत्तविधकरियक्कियरो-
८ डेक्कियवळिनु तिरुत्तियि वेण्गुणविरै तिरुमलैवैत्तान् अ,
९ क्षितन् वळि वरुम् वन् वळि मुदलि कलि अतिकनवकन् नूळ् विन्नैयर्
१० स्यल पुनै तकमैयर् कावलन् विडुकादळगिय प्येरुमाळेय् [॥]

दूसरा शिलालेख

[यह शिलालेख पूर्व शिलालेखका संस्कृतमात्र श्लोक है। मूल लेखमें यही श्लोक छोटी-छोटी १५ पंक्तियोंमें दिया हुआ है। हम यहाँ इसे ४ पंक्तियोंमें ही देते हैं।]

श्रीमत्केरलभूभृता यवनिका-नाम्ना सुधर्म्मात्मना
तुण्डीराह्वय-मण्डलार्हसुगिरौ यक्षेश्वरौ कल्पितौ [॥]
पश्चात्तत्कुलधूपणाधिकनृपश्रीराजराजात्मज
व्यामुक्तश्रवणोज्वलेन तकटानाथेन जीर्णोच्छ्रितौ [।]

[यह लेख बहुत घिसा हुआ है। इसमें एक तामिल गद्यका प्रघट्टक (Passage), शार्दूल छन्दमें एक संस्कृत श्लोक, और दूसरा एक और तामिल पद्यका प्रघट्टक है। इसमें व्यामुक्त-श्रवणोज्ज्वलके या (तामिलमें) 'विडु-कादरगिय-पेरुमाळ्, उर्फ चेर-वंशका अतिगैमान्के दानोंका उल्लेख है। इस युवराजकी राजधानीका नाम 'तकटा' मालूम देता है। वह किसी राजराजका पुत्र था और केरलके राजा किसी यवनिका, या (तामिलमें) वञ्चिके राजा एरिणि, की सन्तान। राजाने यवनिकाके द्वारा कल्पित (स्थापित) यक्ष और यक्षिणीकी प्रतिमाओंका जीर्णोद्धार कराया उनको तिरुमलै पर्वतपर प्रतिष्ठापित किया, एक घण्टा दिया और एक नाली बनवायी। लेखमें तिरुमलै पर्वतको 'अर्हत्सुगिरि (अर्हत्का उत्तम पर्वत)' कहा गया है; इसीको तामिलमें 'एण्णु विरै तिरुमलै (अर्हत्का पवित्र पर्वत)' कहा है। संस्कृतके श्लोकके अनुसार यह पर्वत 'तुण्डीर-मण्डल'में था; यह प्रसिद्ध 'तोण्डै-मण्डलम्'का संस्कृतीय रूप है।

[South India ins., I, no 75 aud 76 (p. 106-107), t. and tr.]

४३५

अल्लूर;—संस्कृत और कन्नड़।

विना कालनिर्देशका [ई० १२०० (फ्लीट)]

१ ओं [॥] नमस्तुङ्गशिरश्चुम्बिचन्द्रचामरचारवे।
त्रैलोक्यनगरारम्ममूलस्तंभाय शंभवे ॥
श्रीमद्-गङ्गा-तरङ्गो-

२ च्छलित-जल-कण-श्रेणि-पुःपालि-शोभा-धामम् चञ्चज्जटा-पल्लवममृतकरोदयत्फलम्
बाहु-शाखा-रामं गौरी-लता-

३ लिङ्गितममरनुतं शंभुकल्पद्रुवादं **रामंगो**गर्त्थियिं वाञ्छितफळचयमं सन्ततो-
त्साहदिन्दम् ॥ श्रीकण्ठं **रामदेवं** गनुपम-

४ महिमंगोगे सम्पत्तनेन्दुम् (णना) नाकौकानीकमौळि-प्रकरमणिगणश्रेणिशोणांशु-
जाळ-व्याकीर्णाङ्घ्रि-द्वयालंकृतनमरवरं शीतशैलेन्द्र-

५ कन्यालोकांशु-श्री-निवासं सकलगणवृतं वीर-**सोमेशु**नीशम् ॥ चलदुग्रग्राहव-
क्त्रच्युतंतिमिनिकरातुच्छपुच्छाग्रघाता-कुलितां-

६ भः-कुम्भि-यूथ-प्रकर-सजल-फूत्कार-हस्ताभ्र-माला-मिलितं सुत्तुर्प्पुदुद्यन्मणिगण-
किरणस्फारमुक्तांशु वेळाचलमाळं

७ भू-रमा-मण्डन-विपुल-कटीदेश-मुद्रं समुद्रम् ॥ व ॥ अन्तनेकजलचरनिवासमुं
समुत्तुंगलहरीनिर्वासमुमेनिसि सोगयिंतुव

८ **लवणसमुद्रदिं** परिवृतवाद **जम्बूद्वीपदि** तेङ्कलु **नील-निषध-हिमवन्त-**
पर्व्वतङ्गळोळवल्लि ॥ वृ ॥ एसेगुं पूर्व्वापरांभोनिधि-मि [ति]-

९ विततायायामदिं सिद्ध-कन्या-विसरानंगोरुकेळी-श्रम-शम-महिमा-कन्दरं स्वर्धुनी-
वाः-प्रसरोपक्लुप्त-नाना-[नग-नि]-

१० कर-गलद्गण्डशैलालिमाला-विसरं प्रस्फार-शीतद्युति-रुचि-निचय-भ्राजितं शीत-
शैलम् ॥ व ॥ आ हिमगिरीन्द्रद दक्षिणपार्श्ववर्त्ति-

११ यत्तिप्प **भारतवर्षदोळु कुन्तल-देश**वेम्बुदधिकशोभेवेत्तेसेवुदल्लि ॥ क ॥
सोगयिपुदल्लन्देयेम्बुदु नगरं चेलुवेसेदु नाडेयम-

१२ रावतिगं मिगिलेनिसि विबुधवनदिन्दगणितघनधान्य-बल-समृद्धियिनेन्दुम् ॥मच॥
प्रकटितकमरावतियोळु सुकेशियुं मञ्जुघोषेयुं तामिर्व्व स-
कलवधूतातियेल्लं सुकेशियर्म्मञ्जु-घोषेयर्त्तत्पुरदोळ् ॥ वृ ॥ अदु नानाविध-
गन्धशालि-वनदिं सर्व्वर्त्तु कोद्यान-नन्दनदिं पूर्ण-तटाक-कूप-

१४ सरसी-सन्दोहदिम् सारसोन्मद-भृङ्गि - पिक-कोक-केकि-शुक-संघानीक-शाकुन्त-नाददिनेत्तम् गणिका-विनोद-कृत-वीणा-नाददिदोप्पुगुम् ॥ व·॥ अन्तपरि-मित-के-

१५ दार-भूमियुमपारजलाश्रयाभिरामुं बहुजनाकीर्ण्ण-मुममेय-गणिका-निवासमुमग-णितवणिग्जनाश्रयमुमेनिसि शोभानिवासमागे ॥

१६ वृ ॥ अवतरिसिर्द्दनल्लि रजताचलदि गिरिजा-समेतमुत्सवदोळे सोमनाथनखिला मरमौलिविनद्धरत्नसंभवकिरणप्रभापटलपुञ्जपरागपदाब्जनर्त्थियिन्द-

१७ वनत-भाक्तिकाभिमतसिद्धिफलोदयकल्पभूरुहम् ॥क॥ आ सोमनाथपुर-संवासि-तरोळु ब्रह्मपुरिगळोळ् विप्ररोळा **व्यास-शुक-वामदेव-पराशर-कपि-ल**ादि-सदृशनो-

१८ र्व्वन्नेगळ्दम् ॥क॥ **श्रीवत्स-गोत्र**नुर्व्वीदेवनुतं निखिलवेदवेदाङ्गविदं पावन-चरित्रगुणसद्भावं **पुरुषोत्त**मं द्विजोत्तमनेनिपम् ॥कं॥ आ विप्रन सति सीता-देविगवा [स] त्य-

१९ तपन-सतिगं गुण-सद्भावदे **पद्माम्बिके** सले पावन-सुचरित्रे पतिहित-व्रतेये-निपळ् ॥ आ दम्पतिगळ् पलकालवनपत्यरागिर्द्दोन्दु देवसं नापुत्रस्य लोकोस्ति येम्ब वेदवाक्यमम् ति-

२० [ळिदु] ॥क॥ पुत्रार्त्थवागि सत्यपवित्राचरणं नेगळ्द**पुरुषोत्तम**नापत्त्राणनी-शनेन्दु कलत्रान्वितनागि शम्भुवं पूजिसिदन् ॥व॥ अम्नेगमित्त दिविज-दनुज-वृन्द-वन्दित-पादारविन्द-

२१ [नप्प] महेश्वरं कैलास-पर्व्वतद रम्यभूमियोळु केशव-वासवाब्जभवरोलगि-सलसंख्यातगणपरिवृतनुमासहितं वोड्डोलगदोळु सुखसंकथा-

२२ विनोददिन्दमिरे नारदनेम्ब गणेश्वरनिन्तेन्द ॥वृ॥ ओहिल दास चेन्न-सिरियाळ हलायुध बाणनुद्भटर्द्देहदोळोन्दि वन्द मलयेश्वर केशवरा[ज्ञ]-दिया गैहि-

२३ क-सौख्यमं विसुदसंख्यगणं निवृवाद मक्ति-सद्गेहदोळिक्षिरुछु समयमुक्त्वादुदु
(दु) जैन-बौद्धगेळळ् ॥ एम्बुदुं महेश्वरं दर-हसित-वदनावि-

२४ दनागि वीरभद्रनं नीं मनुष्य-लोकदोळु निर्लंगदोळोर्व्वणं पुट्टिसि पर-समयगळं
नियामिसेम्बुदुं वीरभद्रनुं **पुरुषो-**

२५ **त्तम-भट्टर्मो** त्तनदोळ्तायस-रूपदिं वन्दु पुत्रं पर-समय-नियामकं निमगे
पुट्टुगुमेन्दु मत्तमिन्तेन्द ॥ श्लोक ॥ जैनमार्गेषु ये या-

२६ ता वहवो दक्षिणाग्ये ते । दूषिता भवन्तु सर्व्वे **रामेण** तव सूनुना ॥ व ॥ एन्दु
व (प) रम-प्रसादं-माडि पोपुदुं **पुरुषोत्तम-भट्टरु**

२७ क्कि (क्क) तार्थ्यगागि सन्तर्पिसुत्तं मगनं पडेदु चातुर्मासदि-क्रियेगळं माडि
देवतोदेयर्दि **रामनेन्दु** पेसरनिट्टरातनु तन्न दिव्य-सन्मानुरूपमा-

गे शिव-योग-युक्तनागि निरुह त्रि (वृ) त्तिर्दि चरियिसुत्तुम् ॥ कन्द ॥
एकाग्र-भक्ति-योगदिनेकाक्षिवेनल्के सन्दु शिवनं विरिञ्चिकान्तदोळारावि-

२८ दियेकान्तद-**रामनेम्ब** पेसरं पडदन् ॥ वृ ॥ सततं सन्तु शिवागमोक्त-विविध
क्षेत्रङ्गळोळु शान्तवायतनानेक-नदी-नद-प्रकरदोळु गौरि (री) वरांघ्रद्वय[1]

३० याश्रित-वाक्कायमनोनुगं चरियिसुत्तुं वन्दु कण्डं सुरार्च्चितनं दक्षिण-सोमनाथ-
ननवद्य-वासिगं प्रीतियिम् ॥ व ॥ अन्तु वन्दनवर-

३१ त-विनमद्मर-वर-मौलि-मणि-किरण - मञ्जरी - रञ्जिताङ्घ्रियुगनप्प **हुलिगेरेय**
सोमनाथननाराधि-सुत्तमिप्पुदुमा परमेश्वरं प्रत्यक्षवागि ॥

३२ अत्र श्लोकद्वयम् ॥ **अब्बलूरु**-वर-ग्रामं गत्वा राम समाज्ञया [।] तव
वार्तां कुरु स्वस्थं वद नो भक्ति-योगतः ॥ **जैनैः** सह विवादं च शङ्कां
हित्वा कु-

३३ रुष्व । स्वशिरोपि पणं क्कि (क्क) त्वा पुत्र त्वं विजयी भव ॥ एन्दु सोम-

---

१ अङ्घ्रिद्वय ।

नाथ-देवर्व्वेससिद्दडेकान्तद-रामय्यनव्वळूर ब्रह्मेश्वर-स्थानदोळु निस्पृहवृत्तियिन्द-
मिरे ॥ क । (॥)

३४ यु (उ) लिदड्डि-व्रन्दु **जैन**र्पलरन्ता **सङ्क-गौण्ड**-सहितं पिरिदुं चलदिं
कैवारिसिदत्तोंलगदे जिन दैवनेन्दु शिव-संधियोळु ॥ व ॥ आदं केळ्दे-
कान्तद-रामय्य-

३५ नति-क्रुद्धनागि शिव-सन्निधियोळन्य-देवता-स्तवनं माडलागदेण्ड्डदं माणदे
नुडियुत्तिरलिन्तेन्दम् ॥ वृ ॥ जगमं माडुवनावनावनावनदना-

३६ पत्का [ल] दोळ्कावनिं मिगे कोपं तनगागे संहरिसलावं दक्षण शम्भु सर्व्व-
गनिर्द्दन्ते गत-प्रभाव-वैभाव संसारदोळु ब्रिद्दु दंदुगदोळु बद्दुं तपक्के सादुं

३७ सुखमं पोर्द्दिर्प्पनुं देवने ॥ क ॥ हरनन्तिरीवने निम्मरुह मुं-कोट्टिटावुदावुदु
मुन्नं हरनोळ् पडदरनेकर्व्वरमं वाण-दिनिशाळ-भक्त-गणङ्गळु ॥ क ॥ एने **जै-**

३८ **न**रेङ्क नीं मुम्निन हितरं हेळलेके निम्नय सि (शि) रमं जनमरियल्लिदु
कोट्टातनोळिं पडे नोने भक्तनातने देवम् ॥ क ॥ एन**लेकान्तद-रामं**
मनसिज-रिपुगित्त तलेय

३९ नाम् पडेदडे नीवेनगीव पणमदेनेने मुनिदेन्दर्जिनन किन्तु शिवनं निलिपेवु
॥ क ॥ एने कुडुवुदोलेयं नीवेनगेन्दित्तोले गोण्डु शिरमं तां भोक्केनवरिदु
कुडुव पददो-

४०. ळु शिवनं सान्निध्यमाडि **रामं** नुडिगुं ॥ वृ ॥ उड्डगदे शंभु नीने शरणेम्न-
दं मनमन्यवा (भा) वदोळोडर्दडमी क्रि (कृ) पाणमुखदिं तले पोगदे
निल्कदल्लदि-

४१ र्द्दडे शिव निम्न मुन्नडिगुरुळुगेनुतं कलि **रामना**द्दुं केयिडदरिदिक्कलारयि-
सिदं शिरमं शिवनङ्घ्रि-युग्मदोळु ॥ वृ ॥ अरे-गाय्-गोण्डने कित्तु नोडिदने
कूर्प्पङ्ग-

४२ ळुकि मेपि (मेय्) गाय्दने सेरगं पाद्दने बाळ्गे भक्तरेनुतं बल्लाळ **रामं**

त्व-कन्वरमं चक्केने हुल्लं कट्टनरिवन्तक्केशदिन्दागळन्तरिदोशाङ्त्रियोळि [कि शंकर-] गणक्कानन्द-

४३ वं माडिदन् ॥ क ॥ अरिद तलेयेळु-देवसं वरेगं मेरदिं वळिक्कवित्तं हरनादरदिं तले कलेयिल्लदे तिरुवाडुदु लोकवळि (रि) वे रामं पडेदं ॥ क ॥ वेर-

४४ गागि **जैन**रेल्लं मरिगि जिन-प्रळे (ळ) यवेम्बुदं माडदिरिम्मेडेरगि काळ्विडिये माणदे वरसिडिळन्तेरागि जिनन तलेयं मुरिदम् ॥ वृ ॥ वडिगोण्डोर्व्वने सोक्कि वाळे-

४५ वनमं काडने पोक्कन्तिरलु कडगलु कापीन वीररं तुरगमं सामन्तरं तूळ्दु मार्प्पडेगळु **जैनर** मारि बन्दुदेनुदुं वेङ्कोट्टु पोगलु जिनं कडेवंनं वडिदल्लि कैको-

४६ ळिसिदं श्री-वीर-सोमेशनं ॥ वृ ॥ अदनेल्लं नेरे पोगि **विज्जण**-महीपाळङ्गे **जैनक्कळ**क्किवदिं पेल्दु विरोधवागे पिरिदुं दूरुत्तिरलु कोप-दुर्म्मदना **विज्जण** भूमुवं मुनिसिनिम्

४७ **रामय्यनं** कण्डु नीनिदनन्यायमनेके माडिदेयेनल्कोट्टोलेयं तोरिदम् ॥ क ॥ अवरित्त वोलेयिदे नीनवधरिसुवुदिक्कु निम्न मण्डारदोळिन्-

४८ नवरोडुविरलियिन्नोड्डुवुदार्प्पडे निम्न मुन्दे जिनरं पलरम् ॥ [व] ॥ अन्तप्पडी तलेयनरिदवर कैयोळ्पोड्डुवेनवरदं सुट्टिम्बळिक्कां पडुवेनेनगानेसेज्जेय-वस-

४९ दि मुख्यवागियेन्नुरुव (एन्दु-नुरुं-) वसदिय जिनरं पलरनोड्डुवुदेने **विज्जण** रायं नामी कौतुकमं नोडुवेवेन्दु वसदिगळ पण्डितरुमं **जैनरुमं** करदु नीमप्पडे

५० वसदिगळं पर्ण-माडि ओलेयं कुडिवेन्दडवरावी-मुन्नोडद वसदियं दूरल् वन्देवल्लदिनोडि जिन-प्रलयं-माडलु वन्दवरल्लवेने **विज्जण**-रायं नक्कु नीविम्मुडि-

५१ रदे पोगि सुखदिनिरिवेन्दवरं कळिपि **रामय्यंगळिगेल्ल**रुवरिये जयपत्रमं कोट्टम् ॥ वृ ॥ अरि-राय-क्षितिभृं-नगारियरिरायाम्भोधि-कुम्भोद्भ-

५२ वं अरि-रायेन्धन-तीव्र-वह्नि अरि-रायानङ्क-भावेक्षणं अरि-रायोग्र-भुजङ्ग-भूमि गरुडं श्री-**विज्जणं** वैरि-राज-रमाकर्षण-दोलितासि-सुहृदं कीर्त्यङ्गनावल्लभं ॥

५३ **चोलन**निक्कि **लालन**नधक्करिसि स्थिति-हीन-माडि **नेपाळननन्धनं** तुळिदु **गुर्ज्जरनं** सेरेयिट्टु **चेदि**-भूपाळन मैमेयं मुरिदु **वङ्गन** बीसिसि कादि कोन्दु **वं**-

५४ **गाल-कलिंग-मागध-पटस्वर-माळव**-भूमिपाळरं पालिसिदं धरा-वळयमं कलि **विज्जणराय**-भूभुजम् ॥ क ॥ कोडदोळगे पुट्टि कडलं कुडिदं घट्योनि पुट्टि **कलचूर्य्यं**-

५५ रोळोगडिसदे च (चा) लुक्यरन्वय-गडलं कुडिदुक्कुं सजनं **विज्जणनोळ्** ॥ व ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वरं । **कालञ्जर**-पुरवराधीश्वरं [।] सुवर्ण्ण-वृष-

५६ भ-ध्वजम् । डमरुग-तूर्य्य-निर्घोषणम् । **कलचूर्य्य-कुल**-कमल-मार्त्तण्डम् । कदन-प्रचण्डम् । मोने-मुट्टे-गण्डम् । सुभटरादित्यम् । कलिगळङ्कुशम् । राज-सा-

५७ मन्त-शरणागत-वज्र-पञ्जरम् । प्रताप-लङ्केश्वरम् । पर-नारी-सहोद,म् । स (श) निवार-सिद्धि । गिरि-दुर्ग्ग-मल्लम् । चलदङ्क-रामम् । निस्स (श) ङ्क-मल्ल-नित्यखिल-नामादि-स-

५८ मस्त-प्रशस्ति-सहितम् । श्रीमतु **विज्जणदेवं रामय्यङ्गळु** माडिद परम-साहसकम् निरतिशयवप्प मा (म) हेंश्वर-भक्तिगं मेच्चि वीर-सोमनाथ-देवर देगुल-

५९ द माट-कूठ-प्राकार[1]-खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारक्कं देवरंगभोग-नैवेद्यक्कं **वन-वसे**-पन्निर्च्चासिरद कम्पणं **सत्तलिगेय्** एप्पत्तर मन्तेय **चट्टरसनुमा** (मन्) कम्पणदग्रायित-प्र-

[1] यहाँ भी सदाकी भाँति 'प्रासाद' पाठ होगा।

६० मुनौन्डुगळुमं मुन्दिट्टु श्रीमद्दु-**विज्जनदेवं सत्तळिगेये**-नत्तरेळगे **मळ-गुन्दिं** तेङ्कण **गोगावे**येन्द्र ग्रामनं प्रसिद्ध-सीमा-सहितं त्रिभोगमुमं

६१. श्रीमद्देकान्तद-रामय्यङ्गळ काल कल्लि धारापूर्वकं माडि कोट्टु प्रतिपालिसिदन् ॥ अन्न् [॥] श्री-मुत-कीर्ति-विक्रमदोळ्तेन्दिद **सोम-कुलैक**मूर्तिगं तानेनिसी ।

६२. **चलुक्य-नृपर**-वदोळु वसुधाधिनाथरुल्लान-नराक्रमर्कळिये घात्रिपराहतेयागे **तैलपं** ताने चलुक्य-वारि-कुलशैलनेनल्लु मुदविन्दे ताळ्दिदं ॥

६३. अन्ता **तैलपदेवङ्गे सत्याश्रयदेव**नेन्ब मगं पुट्टिदं तच्चनयं **विक्रमदेवं** तदनुजं **दशवर्म्मदेव**नातन मगं **जयसिंगराय**-नातन मगनाहव-

६४. मल्लनातन मगं **त्रिभुवनमल्ल-पेर्म्माडिराय**नातन मगं **भूलोकमल्ल-सोमेश्वरदेव**नातन मगं प्रतापचक्रवर्ति **जगदेकमल्ल**नातन तम्मं त्रैलो-

६५. क्यमल्ल-नूर्म्मडि-तैलप**नातन मगं **त्रिभुवनमल्ल-सोमेश्वरदेव**नातन पराक्रम-प्रभावमेन्तेन्दडे ॥ वृ ॥ कोडुव्वुग्र-मदेमत्तोन्देरडेनल्कैम्बत्तुमोड्डागिरल्कोडि-

६६. ट्टानदे वस्तु कोटि गेल्दं (लदं) कोडिळ्दोन्दानेयिं नाडं वीडनिमङ्गळं टुरगनं **सोमेश्वरं** किरिय नोडल्का **कळचू(चु)र्य्य**-वंशननदं निर्मूलवं माडिदं ॥ वृ ॥ ट (ठ)—

६७. रे निस्तारम्यवागलु मिरि निवस्स (श) दिं सन्दुदारक्के तानागवागलु कीर्त्ति दिग्गळक-निकर-मुख-आदेशवागलु दया-सौन्दरि निश्चन्तोळ वाळं सेरे-विडिदिरे साम्राज्यनं ताळ्दिदं द्रु-

द्धर-शौर्य्य **वीर-सोमेश्वर**नहित-वधू-नेत्र-नीरवशोनं ॥ अन्वतनवेनिप **कळचुर्य्य**-आन्वं मनुळक्के तम्म केतदे धरेगनुदन्वं तम्मोळे सते तम्मं-

६६. धिसे **चालुक्य-राय-सोमं** नेगल्दम् ॥ व ॥ अन्ता **त्रिभुवनमल्ल-सोमेश्वरदेवं** सकल-चमूनाथ-शिरोमणियुं चालुक्य-राज्य-प्रतिष्ठापक-नप्प कु-

७०. मार-**वम्मय्यनुं** तानुं **सेलेयहळ्ळय-कोप्पदोळु** सुखसंकथा-विनोद-दिनिर्द्दोन्दु देवसं धर्म्म-गोष्टि (ष्ठि) योलिर्दु पुरातन-नूतनरप्प शिवभक्तर गु-

७१. ण-स्तवनं-माडुत्तमिर्द्दे **कान्तद-रामय्यङ्गळव्वलूर**-लिद्दल्लि **जैन**रेल्लं नेरदु वन्दु महाविवादम्माडि नीं तलेयनरिदु-कोण्डु शिवन कैयोळ्पड देयप्पडे जिन-

७२. ननोडेदु शिवनं प्रतिष्ठे-माडुवेन्दोडुमनोडियोलेयं कोट्टडेवरु कोट्टोलेयं कोण्डु तन्न तलेयनरिदु-कोण्डु शिवङ्गे पूजे माडि बळिका तळेयं येळु-

७३. देवसके मुन्निनन्ते तलेयं[1] पो (?)ले-वीळवन्तु पडेदु **विज्जण-देवन** कैयिन्दं जय-पत्रवं पूजे-सहितं कोण्डुदुमं जिननन्नोडेदु वसदियनळिदु विसु-

७४. टु नेलनं खंडिसि[2] वीर-सोमनाथ-देवरं प्रतिष्ठेमाडि शिवागमोक्तवागे पर्व्वत-प्रमाणद देगुलमं त्रिकूटवागे माडिसिदरेम्बुदं केळ्दु **त्रिभुवन-मल्ल-सो-**

७५. **मेश्वरदेवं** विस्मयं-वि (व) ट्टु नोडुवर्त्तियिं विन्नवत्तलेयं बरयिसि वरिसियवरनिडिर्-गोण्डु तन्नं[3] मनेगोड-गोण्डु पोगि पिरिदुं सत्कारदिं पूजि-

७६. सि श्रीमद्-वीर-सोमनाथ-देवर देगुलद माट-कूटप्राकार-खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारक्कं देवर अङ्गभोग रङ्गभोग-नैवेद्यक्कं चैत्र-

---

१ इस शब्दकी अनावश्यक पुनरावृत्ति मालूम पड़ती है।

२ शायद 'मिडिसि।'

३ 'तन्न' या 'तन्नाय' पढ़ो।

७७. पवित्र-वसन्तोत्सवादि-पर्व्वगळिगवन्नदान-विद्यादानकं **वनवसे**-पनिच्छोसिरद कम्पणम् **नागरखण्ड**-वेप्पत्तरोळगण अव्वलूरना देवर्गा वूराग-

७८. लु-वेळ्कुवेन्दु परममक्तियिन्दा कम्पणद मन्नेय **मल्लिदेवनं** मुन्दिट्टा वूर मेलाळिके-मन्नेय-मुङ्क दण्डदोष-निधिनिक्षेप-सहितवागि **एकान्त-**

७९. **द-रामय्यङ्गळ** कालं कर्च्चि पूर्व्व-प्रसिद्ध-सीमा-सहितं त्रिभोग-सहितं धारा-पूर्व्वकम्माडि परमेश्वर-दत्तियागे (गि) ताम्र (ताम्र)-शासनमं कोट्टानेयनेळि (रि) सि मे-

८०. रयिसि परम-भक्तियिं प्रतिपाळिसिदम् [॥] ॐ [॥] श्रीकण्ठ-पदाम्बुजमन-नाकुल-चित्तदोळे पूविंपं शिव-समय-प्राकारनेळ (नि) सि सले नेगळ्-**देकान्तद-राम**-नीश-

८१. मक्ति-प्रेमम् ॥ ॐ [॥] श्रियं दीर्घायुवं कीर्त्तियननुदिनवुं माळ्के गीर्व्वाण-वृन्द-ध्येयं श्री-वीर-सोमं विधि (धृ) त-हिमकरं **कामदेवङ्गुदार-श्री-युक्तं—**

८२. गद्रिना-सम्मित-सित-तरळालोल- विस्तार- लीला-नेत्र (त्र) आळोकोद्ध-(१) त-श्री-ललित-रति-काळा-लात्य-शैलूष-वेषं ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्च-महाशब्द-महामं-

८३. डलेश्वरं **वनवासि**-पुरवराधीश्वरं **जयन्तो**-मधुकेश्वर-देव-लब्ध-वर-प्रसादं विद्वज्जनाह्लादकं **मयूरवर्म्मकुल**भूषणं **कदम्ब**-कण्ठीरवं कदन-प्रचण्डं साह-

८४. सोत्तुङ्गं कलिगळङ्कुशं सत्य-राघेयं शरणागत-वज्र-पञ्जरं याचक-कामधेनुवित्य-खिळ-नामावळि-सहितनप्प श्रीमन्महामण्डलेश्वरं **कामदेवरस-**

८५. र्प्पानुङ्गल्यनूरं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपालनदिनाळुत्तमिर्द्द-**व्वलूर** वीर-सोमनाथ-रं वन्दु कण्डु **रामय्यङ्गळु** शिवागवा (म)-विधा-

८६. नदिं माडिसिद पर्व्वतोपमानमप्प देगुलमं कण्डवरु माडिस साहसमं स-विस्त केळ्दु मेचि परम-प्रीतियिन्दोड-गोण्डु पोगि

८७. **पानुङ्कल्ल** नेलेवीडिनोळ् प्रधानरुं तानुं **मदुकेय**-मण्डलिक-सहितं सुख-सङ्कथा-विनोददिं कुल्लिदर्दु परम-भक्तियिं वीर-सोमनाथ—

८८. देवर्गे **पानुङ्कल्ल्**-अय्नूररोळगण कम्पणं **होसनोड्** पट्टरोळगे **मुण्ड-गोड** समीपद **जोगेसरदिं** वडगण **मल्लवळ्ळ**येम्ब ग्राममं प्रसिद्ध-सी-

८९. मा-सहितवागि त्रिभोगाभ्यन्तरं नमस्यमाडिया देवर देगुलद खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारक्कं देव-रङ्गभोग-रङ्गभोग-नैवेद्य [क्रम] चैत्र-

९०. पवित्र-वसन्तोत्सवादि-पर्व्वगळ्गमन्नदानक्कवेन्दु **रामय्यङ्गळ** कालं कर्चि धारा-पूर्व्वकं-माडि-परम-भक्तियिं कोट्टु धर्म्ममं प्रतिपालिसिदम् । (॥) स्वस्त्यस्तु ओम् ॥

९१. इन्ती धर्म्मङ्गळं प्रतिपाळिसिदवरु श्री-वारणासि प्रयागे कुरुक्षेत्र अर्ध्वतीर्थ श्रीपर्व्वतादि-पुण्य-क्षेत्रदल्लि सायिर कविलेगळ कोडुं

९२. कोळगुवं होन्नोळ्कट्टिंसि चतुर्व्वेद-पारगरप्प सु-ब्राह्मणर्गे सूर्य्यग्रहण-सोमग्रहण-व्यतीपात-संक्रमणादि-पुण्य-कालदोळ्विधि-युक्तवागे कोट्ट

९३. प (फ) लवं पडेवरु ई धर्म्मवनळिदवरा गङ्गे वारणासि कुरुक्षेत्र-प्रयागादि-पुण्य-क्षेत्रङ्गळोळा कविलेगळुवं ब्राह्मणरुवं कोन्द पापमं पडेवरीयर्त्थ सं-

९४. देह विल्लेम्बुदं मुन्नं मनु-वाक्यङ्गळु (ळं) पेळ्गुं ॥

श्लोक ॥ बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः ।
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥
गण्यन्ते पांसवो

९५. भूमेर्गण्यन्ते वृष्टिविन्दवः ।
न गण्यते विधात्रापि धर्म्म-संरक्षणे फलम् ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
षष्टि-वर्ष-सहस्राणि विष्ठायां जा-

९६. यते कृमिः ॥

कर्म्मणा मनसा वाचा यः समर्त्योप्युपेक्षते ।
सम्यस्तयैव चाण्डालः सर्व्व-धर्म-बहिष्कृतः ॥
कुलानि तारयेत् कर्त्ता सप्त सप्त च सप्त च ॥

अधोवपा—

९७ तयेद्धर्त्ता सप्त सप्त च सप्त च ॥

श्लोक ॥ अपि गङ्गादितीर्थेषु हन्तुगामथवा द्विषम् (।)
निष्कृति (:) स्यान्न देवस्व-ब्रह्मस्व-हरणे नृणाम् ॥

सामान्योयं धर्म्म-सेतु—

९८. नृपाणाम्

काले-काले पालनीयो भवद्भिः (।)
सर्व्वानेतान् भाविनः पार्थिवेन्द्रान्
भूयो भूयो याचते रामचन्द्रः ॥

स्वस्त्यस्तु मंगलं च । श्रीश्च ॥ ओम्

९९. ओम् [॥] हरनोळ्तवनिधियन्ताम् दरखुरविल्लेनिसि पडेदु देगुलवं पुरहरन कैळासदन्तिरे वीरचिसिदं शम्भु-भक्ति-धामं **राममम्** ॥ वृ ॥ देगुलकेन्दु भक्त-

१००. जनवादरदिन्दिदिरेर्द्द कोट्टड (दं) हागवनादडं कळदुकोळ्ळदे वेडदे नाडे द्वे (दै) न्यदिं पोगि नृपाळरं शिवननुग्रहवत्तयवागे माडिदं देगुल [व] म् हराद्रिगेणे-

१०१. यागिरे **रामनि**देम् क्रि (कृ) तार्त्यनो ॥ क ॥ **केशवराज**चमूपं शासनवं पेळ्दनन्तदं तिर्द्दि निरायासने वरदनीशन दासं शिव-चरणकमल-शरणं सरणम् ॥ ॐ [॥]

१०२. स्वस्ति श्रीमतु-हर-घरणी-प्रसूत-**मुक्कण्ण-कादम्ब**- [वंश] रं **वनवासि**-पुरवराधीश्वररं श्री-मद्दु (धु) कनाथदेवर दिव्य-श्री-पाद-

१०३. पञ्चारावकरं **मल्लिदेवरायरं नागरखण्डेय**··· ··· ··· ··· ·····
रिगे-नाडुमं··· ···

१०४. ··· ··· ··· ··· ···कोट्टरु ॥

[इस प्रकाशित अभिलेखकी कहानीका संक्षेप इस प्रकार है:—

कुन्तल देशके आलन्दे (या आलन्द) नामक नगरका निवासी श्रीवत्स गोत्रका पुरुषोत्तमभट्ट नामका एक शैव ब्राह्मण था। उसके राम नामका एक पुत्र उत्पन्न हुआ। कालान्तरमें, शिवकी अधिक भक्ति करनेके कारण, इसका नाम 'एकान्तद-रामय्य' पड़ गया। उसने बहुत-से शैव तीर्थ स्थानोंकी यात्रा की। और अन्तमें वह हुळिगेरे (लक्ष्मेश्वर) आया जहाँकि 'दक्षिणका सोमनाथ' इस नामसे प्रसिद्ध एक शैव मन्दिर था, इसके बाद अल्लूर जहाँ कि, जैनधर्मके एक मज़बूत गढ़ होनेके सिवाय, ब्रह्मेश्वरके मन्दिरमें एक महत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली शैव केन्द्र भी था। अल्लूरमें वह जैनोंके साथ विवादमें फँस गया। जैनोंने वहाँ शङ्कगौण्ड नामके ग्रामणीके अधिनायकत्वमें उसकी भक्तिका अन्त कर दिया। कुछ शर्तें रक्खी गईं और वह एक ताड़-पत्र पर लिख दी गईं। शर्तें यह थी कि हारनेपर जैन लोग अपने जिन देवकी जगह शिवकी प्रतिमा स्थापित कर देंगे। एकान्तद-रामय्य शर्तोंमें विजयी हुआ। इस पर जैनोंने उपर्युक्त शर्तनामेकी शर्तोंका पालन करनेसे इन्कार कर दिया। तब जैनोंके रक्षक, घुड़सवार, सरदार, तथा उनके सैनिकोंके विरोधमें होते हुए भी, उस अकेलेने जिनको उठाकर (फेंककर) वेदीको ध्वस्त कर दिया, और, जैसाकि आगेके लेखसे प्रकट होता है, उसकी जगहपर पर्वत सरीखा एक 'वीर-सोमनाथ' नामसे शिवालय खड़ा कर दिया। इसपर जैन लोग विजलके पास गये और उससे एकान्तद-रामय्यकी शिकायत की। राजाने एकान्तद-रामय्यको बुलवाया और उससे प्रश्न किया कि उसने जैनोंका यह भयंकर नुकसान क्यों किया। इसपर एकान्तद-रामय्यने वही ताड़-पत्र वाला शर्तनामा पेश कर दिया, और विजलसे उसे अपने [illegible]नें जमा कर देनेको कहा तथा यह बात भी कही कि अगर जैन लोग अपने

८०० मन्दिरोंको जिनमें आनेसेज्जेयवसदि भी शामिल रहेगी, शर्तपर लगादें तो वह फिरसे वही चमत्कार[1] (feat) दिखलायेगा जिसे कि उसने अभी ही दिखलाया था। इस दृश्यको देखनेकी इच्छासे विज्जलने जैन मन्दिरोंके जितने विद्वान् थे उन सबको बुलाया और उसी शर्तनामेकी शर्तको दुहरानेके लिए अपने तमाम मन्दिरोंको शर्तपर रख देनेके लिये कहा। जैनोंने यह कहते हुए कि वे अपनी शिकायतकी क्षतिको मिटानेके लिये उसके पास आये हैं न कि उस क्षतिको और बढ़ानेके लिये, दूसरे बारकी इस परीक्षाको माननेसे इन्कार कर दिया। इसपर विज्जलने उनका उपहास किया और यह शिक्षा देते हुए कि इसके बाद तुम लोगोंको अपने पड़ोसियोंके साथ शान्तिसे रहना चाहिये, उन्हें बर-खास्त कर दिया, और एकान्तद-रामय्यको खुली सभामें जयपत्र दिया। तथा, जिस अद्वितीय साहससे एकान्तद-रामय्यने अपनी शिवभक्ति प्रकट की थी उससे प्रसन्न होकर, उसने उसके पैर धोये और वीर-सोमनाथके मन्दिरको गोगाव नामका [illegible], जो बनवासी १२००० में सत्तलिगे-सत्तरके मळुगुण्डके दक्षिणमें है, दानमें दिया।

इसके बाद लेख कहता है कि जिस समय पच्छिमी चालुक्य राजा सोमेश्वर चतुर्थ और उनके सेनापति ब्रह्म शेलेयदण्डिधिकोप्पमें थे, एक आमसभा की गई जिसमें पुराने और नये शैव-सन्तोंके गुणोंका वाचन किया गया था। जब एकान्तद-रामय्यका किस्सा उससे कहा गया तो सोमेश्वर चतुर्थने एक पत्र लिखकर एकान्तद-रामय्यको अपने पास अपने राजमहलमें आनेके लिये कहा। वहाँ उसने उसके पैर धोये और उसी मन्दिरको स्वयं अल्लूर ग्राम ही भेंट किया। यह अल्लूर-ग्राम नागरखण्ड-सत्तरमें है जो बनवासी बारह हजारमें है। और अन्तमें, महामण्डलेश्वर कामदेवने उस मन्दिरको जाकर देखा, सब कहानी सुनी,

---

१. यह चमत्कार और कुछ नहीं सिर्फ कटे हुए सिरको जोड़ देना है। एकान्तद-रामय्यने अपना सिर काट दिया था और फिर शिवकी कृपासे उसे पुनः जोड़ दिया था।

एकान्तद-रामय्यको हान्नाल बुलाया, और वहां उसके पैर धोये और मल्लवल्ली नामका गाँव मन्दिरको दानमें दिया। यह मल्लवल्ली गाँव पानुङ्गल-पाँच सौ में होसनाड्-सत्तरमें मुण्डगोडके पास चोगेसरके दक्षिणमें है।]

[EI, V, No. 25, E.]

४३६

अब्लूर—कन्नड़।

[बिना काल निर्देशका]

१. श्री-ब्रह्मेश्वर-देवरल्लि **एकान्तद-रामय्य** वसदिय जिननोडुवागि तलेयनरिदु इडेद टावु ॥ संक-गावुण्ड वसदिय नोडेयलीयदे (दे) आळुं कुदुरेय्··· ···

२. नोडिदिलु **एकान्तद-रामय्य** कादि गेल्दु जिननननोडेदु लि [ङ्गमं प्रतिष्ठे-माडिदम् ॥]

अनुवाद:—ब्रह्मेश्वर भगवान्के पवित्र मन्दिरमें, जब कि एक मन्दिरके 'जिन' शर्त (दाव) पर रख दिये गये थे, एकान्तद-रामय्यने अपना सिर काट डाला और इसको फिरसे प्राप्त कर लिया! जब सङ्कगावुण्डने उसे (एकान्तद-रामय्यको) मन्दिर या वेदीको ध्वस्त नहीं करने दिया और अपने आदमियों तथा घुड़सवारोंको (उस वेदीकी रक्षाके लिये)··· ··· ··· ··· एकान्तद-रामय्यने लड़ाई लड़ी और उसमें विजय प्राप्त की तथा 'जिन'को भग्न करके 'लिङ्ग' की प्रतिष्ठा की।

[EI, V, No. 25, F.]

४३७

कम्बेनहल्लि;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[बिना काल निर्देशका]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

४३८

बन्दलिके:—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[बिना काल निर्देशका, पर संभवतः लगभग १२०० ई०]

[शान्तीश्वर वस्तिके रङ्गमण्डपके दक्षिण-पश्चिम खम्भे पर]

(पश्चिम-मुख) स्वस्ति श्रीमतु **अभयचन्द्र-सिद्धान्ति-देव**रगळ् शिष्यरु ···क्कन अदर **मुरारि-देव**-दान-प्रतिपालक-वंशोद्भवरु **चारुकीर्ति-पण्डित-देव**रु **हिरिय-महळिगेय पञ्च-वस्ति**य जीर्णोद्धारव माडिदरु । आ-स्थानक्के अरसिन्दलु नाडिन्दलु बिडिसिकोण्ड वृत्ति आ-**ताळुगुप्पेय** वस्तिगे पूर्व्व तोडगि सन्दु बहुदु । **वळेयगारु** । **वाळेयहळ्ळ** । **तगुडवत्तिगे** यी-मूरु-ऊरु सर्व्वमान्य अरसियकेरेय ···ळगे ताळुगुप्पेय गऊडुगळु बिट्टदु ४ हाद । मुरवत्तूर गौडुगळु वीर गोण्डन केरेय केळगे बिट्टदु ४ हाद । विदळ २ सासव हेरुवडे १० येत्तु हदिनेण्टु कम्पण-दलु सलुऊदु । वत्तियकेरी सर्व्वमान्य । वलेयगारलि गुरुगळु बिट्ट भूमि अल्लिय मूलस्थानके ४ हाद । हच्चड २० मान्य येत्तु हच्चड सर्व्वमान्य समेय-समुच्चयद भोगवट्टिगेय पञ्च-वस्ति यी-धर्म्मक्के ··· ··· रुदरुखन हदिनेण्टु समेबवु कर्त्तरु ॥ श्री श्री

[स्वस्ति । मुरारि-देवके दानके प्रतिपालक वंशमें उत्पन्न, अभयचन्द्र-सिद्धान्ती देवके शिष्य चारुकीर्त्ति-पण्डित-देवने हिरिय-महलिगेकी पञ्च-वस्तिको सुधारा । राजा और नाड्से जो दान पहले ताळगुप्पेकी वस्तिके लिये मिला था, अर्थात् वलेयगारु, वळेयहल्लि और तगडुवत्तिगे,—ये तीन गाँव, सब करोंसे मुक्त, उस मन्दिरके लिये भी लागू हो सकते हैं । (उक्त) कुछ भूमि भी दानमें दी थी ।

इस गुणी कार्यके लिये १८ जातियाँ प्रबन्धक हैं ।]

[EC, VII, Shikarpur, tl, No. 227.]

४३९

नित्तूर;—कन्नड़ ।

[बिना काल-निर्देशका, पर लगभग १२०० ई० का]

[नित्तूर (गुब्बि परगना) में, आदीश्वर वस्तिकी उत्तरीय दीवालमें एक पाषाण पर]

श्री-मूल-संघ-देशिय-गण-पुस्तक-गच्छ-कोण्डकुन्दान्वयद श्री (य्) **अभयचन्द्र-सिद्धान्तिक-चक्रवर्त्ति**गळ प्रिय-शिष्यरागमाम्बुनिधिगळुं सकळ-गुणाकळितरुमप्प **बाळचन्द्र-पण्डित-देव**र प्रिय-गुड्डियरु ॥

विनय-निधि **माळियक्क** । अनुपम-गुणमन्ते **बामि-सेट्टि**गळं ताम् ।
जिन-भक्तियिन्दे पडेदळु । जिन-भक्तर्प्पडेव पडवुयोगळलुम्बम् ॥
शोळान्विने **चौडले**गं । **माळवेय तनूज मल्लि-सेट्टि**गे सुतेया- ।
व्याळ-गज-गमने **पद्मले** । बाळक-माळिक्य **मल्ल**-माळात्मवरुम् ॥
मुळिदु जवं माळवेयुमन् । उळिहदे सोसे **चौडियक्क**नं माडिपलु स्त्री-
कुळ-साहस-षड्-गुणदोन्द्- । अळव समाधियोळे मेरेदु मुडिप्दिरलुते ॥

माळव्वेयुं चौडियक्कनुमेम्बिर्व्वर निषिधि ॥

[श्री-मूलसंघ, देशिय-गण, पुस्तक-गच्छ और कोण्डकुन्दान्वयके अभयचन्द्र-सिद्धान्तिक-चक्रवर्त्तीके शिष्य बालचन्द्र-पण्डित-देवकी प्रिय गृहस्थ-शिष्या,—**माळियक्के** थी ।

चौडले और माळवेके पुत्र मल्लि-सेट्टिकी पद्मले और मल्लम दो पुत्रियाँ उत्पन्न हुई थीं । जब यम (मृत्यु) ने क्रुद्ध होकर, मालवेको न बचाकर, उसकी पुत्रवधू चौडियक्कको भी मारा वह समाधिको प्राप्त हुई, और स्त्रियोचित भक्तिके ६ गुणोंको प्रदर्शित कर दिवंगत हुई । यह स्मारक (निषिधि) मालव्वे और चौडियक्क दोनोंका है ।]

[E C, XII, Gubbi tl., No 5]

४४०

नित्तूरु;-कन्नड़ ।

[विना काल-निर्देशका, पर संभवतः १२०० ई० का !]

[नित्तूरु (गुब्बि परगना) में, आदीश्वर वस्तिकी उत्तरीय दीवालमें एक पाषाणके बायी ओर की तरफ]

माळव्वेय मग वामि-सेट्टिय मद्दवळिगे वूचव्वेय निषिधि ॥

[माळव्वेयके पुत्र वामि-सेट्टिकी पत्नी वूचव्वेकी निषिधि (स्मारक) यह है ।]

[E C, XII, Gubbi tl., No 6]

४४१

नित्तूरुः-कन्नड़ ।

[विना काल निर्देशका पर संभवतः १२०० ई० ? का]

[नित्तूरु (गुब्बि परगना) में, आदीश्वर वस्तिकी उत्तरीय दीवालमें एक पाषाणके दाहिनी ओर]

माळव्वेय मल्लिळ-सेट्टिय तन्दे गुणद वेडङ्ग मल्लि-सेट्टियुमातन प्रिय-पुत्र माळेय्यनुमेन्द् इर्व्वर निषिधि ॥

[मालव्वेके पिता मल्लिसेट्टि, और मल्लि-सेट्टिके प्रिय पुत्र माळय्य दोनोंकी [illegible] यह है ।]

[E.C., XII, Gubbi, tl., No. 7]

४४२

कडकोल;—कन्नड़ ।

वर्ष खर [=१२वीं या १३वीं ई० (फ्लीट) ।]

[१] श्रीमत्-खर-संवत्सरदन्दु
[२] **कत्तेय-ऐचि-सोट्टि [ट्]** य म-
[४] ग **चंदयन** निषिधिगेय क-
[५] ल् [ल्] ड ॥

अनुवाद—श्रीवाले खर संवत्सरमें,—(व्यापारी) कत्तेय-ऐचिसेट्टि के पुत्र चन्दयके निषिधिगे' का पाषाण ।

[IA, XII, P. 101, No 3] t. and tr.

४४३

सिग्गाम्वे (जिला धारवाड़);—कन्नड़ ।

वर्ष व्यय [=१२वीं या १३वीं शताब्दि ई० (फ्लीट) ।]

[धारवाड़ जिलेमें बङ्कापुर तालुकाका तालुका स्टेशन **सिग्गाम्वे** है । यहाँके कलमेश्वर मन्दिरके सामनेके स्मारक पाषाण पर यह अभिलेख है ।]

[१] स्वस्ति श्रीमत्तु-**व्यय-संवत्सरद मार्ग्ग-**
[२] **सि (शि) र व ११ सु (शु)** । देसी (शी) य-गणद **वाळचं-**
[३] **द्रत्रैविद्यदेवर** गु [ड्] ड **सव (?) रसिंगि-से [ट्] टि**
[४] यरु स्वर्ग-प्राप्तनादनु ॥

अनुवाद स्वस्ति ! देशीयगणके वाळचन्द्रत्रैविद्यदेवके गुड्ड (शिष्य या अनुयायी) (व्यापारी) (?) सवरसिङ्गिसेट्टिने, शोभनीक व्यय संवत्सरके मार्गशिर (महीने) के कृष्ण पक्षकी एकादशी, शुक्रवारको स्वर्ग प्राप्त किया ।

[IA, XII, P. 102, No, 5.] t. and tr.

४४४

एहोले—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका; १२वीं या १३वीं ई० शताब्दि (पलीट).]

[१] श्री-मूलसङ्घ-वल्लो (ला) त्कारगण कुन्दकुन्दगळ गुड्ड ऐचि-सेट्टि

[२] यर मग येरम्बरसे-नाड सेट्टिगुत्त रामि-सेट्टियर निपोवि ॥

अनुवाद रामिसेट्टि चोकि एरम्बरसे[1] जिलेका सेट्टिगुत्त था—श्रीमूलसङ्घके वल्लो (ला) त्कारगणके कुन्दकुन्दु का गुड्ड (शिष्य) था; और ऐचिसेट्टि (व्यापारी) का पुत्र था, उसकी यह निपोवि (निषद्या) है।

[इं ए०, १२, पृ० ६६]

४४५

गिरनार—संस्कृत मन्त्र।

[बिना काल—निर्देशका]

लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका है

[Revised list and Rem. Bombay (ASI, XVI), p. 351-352, No 8, t. and tr.]

४४६

रायबाग—संस्कृत।

[शक ११२३=१२०१ ई०]

[मूल लेखका अब पता नहीं है।]

इस शिलालेखका प्रारम्भ उस राजा कृष्णके वर्णनसे शुरू होता है, जिससे रट्टवंश यशस्वी हुआ था। तदनन्तर राजा सेनका वर्णन है, जो रट्ट राजाओंकी [illegible] 'सेन'-नामधारी राजाओं में द्वितीय संख्याका सेन है। इसके बाद

---

१. यह नाम 'एरम्बिरसे' भी लिखा जा सकता है।

वंशावली (Genealogy) कार्त्तवीर्य चतुर्त्थ और मल्लिकार्जुन तककी दी हुई है। कार्त्तवीर्य चतुर्त्थका समकालीन एक राजा यादववंशी रेव्व[1] नामका था। इसके बाद लेख में कुछ दोनोंका उल्लेख आता है जो 'दुर्म्मति संवत्सर' शक ११२४ में किये गये थे। दान करने का दिन वैशाख शुदी पूर्णिमा, शुक्रवार 'व्यतीपात' का समय था। ये दान राजा कार्त्तवीर्यदेवने अपनी माता चन्द्रिका-महादेवीके द्वारा बनाये गये रट्टोंके जैन मन्दिरके लिये तत्कालीन गुरू शुभचन्द्र भट्टारक देवके लिये थे। सीमाओंके निर्धारण में बहुतसे गाँवों और शहरोंके नाम आये हैं।

[JB. X, P. 183, No 9, a.]

४४७

रोहो—संस्कृत तथा गुजराती

[सं० १२५६=१२०२ ई०]

लेख भग्न है और श्वेताम्बर सम्प्रदायका मालूम पड़ता है।

[EI, II, No. 5, No 12 (P. 28-29) t, and tr.]

४४८

वन्दलिकेः—संस्कृत तथा कन्नड़।

—[शक ११२५=१२०३ ई०]—

[वन्दलिकेमें, शान्तीश्वर नस्तिके सामनेके पाषाण पर]

कवि-निवह-स्तुतं नेगळ्द **रेच-चमूपतियिं** बळिक्कमा-।
भुवनदोळिन्तनन्त-जिन-धर्म्मव्रधृद्धरिपर्द्धे-रेचनम्।
सुविदितमागे बान्धव-पुराधिप शान्ति-जिनेश-तीर्थमम्।
कवडेय वोप्पनुद्धरिसिदं यदु-व्रज्जम-राज्य-भूषणम् ॥

१—कलहो की के शिलालेखमें भी 'रेव्व' नाम आया है। पर यहाँका रेव्व उस रेव्वसे भिन्न है (जे. एफ्. फ्लीट)।

मडगिडलेन्देम् धनमं ।
पडेवने नाळ्-देरद दानमं माडलुकेन्-।
दोडमेयनर्ज्जिपनारिम् ।
कडु-चाणं भव्यरोळगे कवडेय वोप्पम् ॥
श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
चीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥
वसुधा-कान्तेय कुन्तलोपममेनिप्पी-**कन्नल**-क्षोणियम् ।
पेसर्व्वेत्ता-**नव-नन्द-गुप्त-कुल-मौर्य्य**-क्षमापरळ्दर् क्षसञ्-।
नसदाण्मर् क्षलि-**रट्ट**राळ्दरवरिं **चालुक्य**रळ्दर् व्वलिक् ।
एसेदिर्द्दी-कळचूर्य्यं वंशजरोळाळ्दं **विज्जल**-क्षोणिपम् ॥
अल्लिं वळिके घरेयोळ् ।
वल्लिदरं तरिदु निज-भुजाविथिनदटं ।
वळ्ळाळ-नृपं घरेयं ।
सल्लीलेयिनाळ्दनरिवळ-देशं पोगळल् ॥

आतन वंशावतारमेन्तेने ॥

वृत्तम् ॥ कृष्णन नाभि-पङ्कजनप्पनिं वोगेदत्रियत्रिनम् ।
विष्णुवदामासिं ससि पुट्टिदनातन वंश-सम्भवम् ।
विष्णु-पराक्रमं पुरु पुरूरवना-नहुषं ययाति रा-।
जिष्णु यदुत्तमं क्रमदे तत्तदपत्यरेनल्के पुट्टिदर् ॥
सळनादं यदु-वंशदोळ् मुडदवं वासन्तिका-देविया ।
चळनाराधनेयं प्रोणर्च्चि शशकोघद्-ग्रामदोळ् पायदोडा-।
गळे तां पेट्-न्नुलि पोप्पळेन्दु सेळेयं जैन-व्रतीन्द्रं जपत्-।
श्लोकं कोट्टोडे पोय्ये होय्सळ-वेशर् त्तानादुडी- घात्रियोळ् ॥
सेळे सिन्दद कावागिरे ।
मुळिसिन्दं पाय्द पुलिये पुलियागिरे ताम् ।

तोळतोळ तळ्दपुदु यदु-नृप-।
बळदोळ् पुलियेसेव-सिन्दवन्दिन्दित्तलू ॥
सळनिन्दं बळिकं नृपाळकरनेकर् य्यादवेशर् म्मही-।
तळमं पालिसिंदर् ब्बळिक्के **विनयादित्यङ्गे** पुत्रं जगत्-।
तिळकं **नुन्नेरेयङ्ग**नादनेरेयङ्गङ्गोप्पे **बल्लाळ**नुम् ।
विळसद्-विष्णुवुमर्क्क-तेज**नुदयादित्या**ङ्कनुं पुट्टिदर् ॥
अवरोळ् रञ्जिप **विष्ण-वर्द्धन**-नृपङ्गादं सुतं मेदिनी-।
धवनप्पा-नरसिंह-भूपनदटं **तन्नारसिंह**ङ्गमुत्-।
सवदिन्दे**चळ-देवि**गं **यदु-कुल**-प्रोत्तंसनादं सुतम् ।
भुवनानन्दन-मूर्त्ति कीर्त्ति-निळयं **बल्लाल**-भूपालकम् ॥
निरिदिदिरान्तंवरं निज- ।
चरणक्केरगिदरनोसेदु रक्षिसि धरेयम् ।
परिपाळिसुतं सुखदिन्द् ।
इरे **विजयसमुद्र**दल्लिया- **बल्लाळम्** ॥
धरणी-कान्तेय मुखदन्त् ।
इरे **बनवसे-नाडु** रक्षिसुवुददरोळ् **ना**- ।
गर-खण्डं तिळकदवोल् ।
परिशोभिपुदाव-**काल**मुं सिरियोदविम् ॥
ऊरून्नंन्दनदि लता-भवनदिन्दूरूर्त्तटाकङ्गळिन्द् ।
ऊरूर्त्तळ्तेले-वळ्ळयिं कोळगळिन्दूरूर् प्पळोर्व्वीजदिन्द् ।
ऊरूर् क्कब्बिन तोण्टदिं कळवेयिन्दूरूर् प्रजा-व्रातदिन्द् ।
ऊरूर् देव-गृहङ्गळिं विभुघरिन्दूरूर् क्करं रञ्जिकुम् ॥
परलोळ् पसुसं घेनूत्- ।
करदोळ् सुर-घेनु नन्दनदोळमर-कुजम् ॥
करमेसेवन्तिरे सले ना- ।
गर-खण्डदोळेसेवुदेसेव **बान्धव-नागरम्** ॥

वृ ॥ अदु ऋषिर्द्द नन्दनदिनम्बुज-षण्डदिनोळ-गवुंगिनिम् ।
पुडिदेले-वळ्ळियिं वेळद्-शाळियिनोप्पुव कोप्टेयिं समन्त् ।
ओदविद्-लक्ष्मियिं विभवदिं विळसल्जनदिं सु-देव-गे- ।
इद कडु-चेल्विनिन्दमळक्का-पुरमं नगुतिर्प्पुदोर्म्मेयुम् ॥
अदनाळ्वं प्रजे मेच्चे गण्डनदट्टं कादम्ब-वंशोद्भवम् ।
मुडदिं **सोम-नृप**नात्मजातनेनिसिर्द्दा-**वोप्प-देवङ्ग** पुट्ट् ।
इद सत्पुत्रननून-शौर्य्य-निळयं कन्दर्प्प-सन्-मूर्त्तिय- ।
भ्युदयालङ्कृतनात्त-कीर्त्ति-रमणं श्री-ब्रह्म-**भूपाळकम्** ॥
आ- **वन्दणिकेय** शान्तिनाथ-देवर मण्टपमं माडिसि **कवडेय वोप्पि-सेट्टियरु** सर्व्व-नमस्यमं माडिदम् ॥

नागर-खण्डदोळ् हरन वक्त्रदवोल् नेगळ्द्ग्रहारमद्द् ।
आगळुमोप्पुगुं निखिळ-वेद-पुराण-स्मृनीति-शास्त्र-तर्क्क- ।
आगम-काव्य-नाटक-कथा-स्मृति-यज्ञ-विधानमं मनो- ।
रागदिनोदुवोदिसुवशेष-महाजनदोन्दु-प्योगदिं ॥
प्रत्येक-बृहस्पतिगळ् ।
नित्यानुष्ठान-चारु-चारित्र-परर् ।
स्तुत्य-युतर् त्तेवदोळा- ।
दित्य-सट्टशरल्लियिर्प्प माचनवेल्लं ॥
केरेयूर शम्भु-देवनेय् ।
अरितकं सकळ-विद्वेगळ्गं सल्ले कण्- ।
दरवीयेनिसिप्पनवनम् ।
नेरे पोलल्लु नेरेयनवनुमा-भारतियुम् ॥
उरदे वणञ्जु-धर्म्मदोळगं नयदिं नडेयुत्तमिर्प्परम् ।
परिदु सु-धर्म्मदिं नडेवरं प्रतियाळिप **सेट्टिकव्वेयक्** ।
करिन-सुतङ्गे पुण्य-निधि **शंकर-सेट्टि**गे सेट्टि-गुत्तरार् ।
प्पेररेणे सत्यदिं विभवदिं नुत-शौर्य्यदिनुद्द्य-धैर्य्यदिम् ॥

तनगय्यं **शङ्करं** तज्जननि नेगळ्द **जक्कव्वेयाप्तं** जिनं सन्-।
मुनि-वन्द्यं **भानुकीर्त्ति-व्रति-पति** गुरु **वल्लाळल**नाळ्दं विनेपर् ।
त्तनगिष्टर् क्षान्ते **लच्छाम्बिके** सति सति-नुते **जक्कव्वे-मल्लव्वे**गळ् नन्-
दनेयर् **व्वल्लाळ-देवं** सुतनेनेयेसेदं वीर- **सामन्त-मुद्दम्** ॥
कविगळ मुद्दनाश्रितर मुद्दननाथर मुद्दनिष्टनप्प्-।
अवर्गळ मुद्दनर्त्थिगळ मुद्दनेडर्-न्नेले-गोण्ड शिष्ट-व्रान्-
धवरेसेवोन्दु-मद्दनेनसुं परिकारद मुद्दनङ्गना-।
निवहद मुद्दनेय्दे सलियं प्रभु-मुद्दनिळा-तळाग्रदोळ् ॥
स्वच्छतर-कीर्त्तियिन्दम् ।
कच्छवियूरडेय **बिट्टियरसं** जगमम् ।
प्रच्छादिशिदनवङ्गति-।
तुच्छरेनिप्पूरडेयरदेम् पेळेणेये ॥
सागर-वळयित-धरणी-।
भागदोळत्युन्नतिक्केयिं बल्पिं सत्-१
त्यागदिनरिं वन्देणेये ।
वेगूर प्रभुगे माळ-गौडङ्गन्यर् ॥
सोगयिप्प **कण्णसोगेय** ।
नेगळ्दर्देरकाटि-गौड**नरितवनार्प्पम्** ।
मृग-रिपु-विक्रममं नेरे ।
पोगळल्का-बलजभवनुमेनार्त्त (र्प्) पने ॥
मळवल्लि येरह-गौडङ्ग।
एळेयोळ् समनप्परुण्टे सत्यदिनरिविम् ।
वीळसत्-त्यागदिनत्युज्-।
ज्वळ-कीर्त्तियिनधिक-शौर्य्यदिं सद्-गुणदिम्
चलद नेले चागदागरं ।
अलघु-गुळङ्गळ निधानमरितद तवरुज्-।

ज्वल-कीर्त्तिय करुवेनिपम् ।
सले हलरिं **दव्वळूर सोम-गवुण्डम्** ।
नुदे **मुनिचन्द्र-सिद्धान्**-।
त-देवरळ्कण्-शिष्यरनुपम-विचर्
म्मद-रहितर् स्सलेनेगळ्दर् ।
ख्विदित-गुणर् **ल्लितकीर्त्ति-सिद्धान्तेशर्** ॥
अवरानन्दन-नन्दनन् ।
अवनी-संस्तुत्यमेनिप काणूर्गण-कै-।
रव-चन्द्रनेनिसि नेगळ्दम् ।
विवेकि **शुभचन्द्र**-विनुत-**पण्डित-देवम्** ।
मळिनते इल्लद कुन्दम् ।
तळेयद सले राहु-पीडे वैदद दोषा-।
वळियोळ् परियिसदस्ता-।
चळकेळसद चन्द्रनेनिसुवं **शुभचन्द्रम्** ॥
वन्दणिकेय तीर्थवना-।
नन्दाचार्य्यरवोलुद्धरिसिदं जगदा-।
नन्दकर-ललितकीर्तिय ।
नन्दन **शुभचन्द्र**-विनुत-पण्डित-देवम् ।
कुसुम-व्रातदोळम्बुचं वळधियोळ् दुग्धाब्धि तारालियोळ् ।
ससि चिन्तामणि कल्पगळोळ् तरुगळोळ् कल्पोर्व्विपं रत्नदोळ् ।
मिसुपा-कौस्तुभमोप्पुवन्ते जिन-योगि-व्रातदोळ् रञ्जिसम् ।
वसदाणं शुभचन्द्र-देव-मुनिपं कानूर्गणोद्धारकम् ॥
इन्तिदु चित्रमेम्बिनेगमेय्दे मोसर् प्योरस्से पाल्गळेर्-।
अन्तिरे पुत्तिनोळ् पुगे वज्रातिशयं नव-पुष्प-मालिका-।
सन्ततियिन्दमादतिशयं-नेरसोप्पुव **शान्तिनाथ-तीर्**-।
स्थान्तर-पारिपत्यदेत्तेवं **शुभचन्द्र**-मुनीन्द्रनोर्म्मेयुम् ॥

श्रीमद्-**वल्लाळ**भूपाळकन विनुत-सन्-मंत्रि विप्रान्वयाब्ज-।
स्तोमोद्यद्-भानु नारायण-पद-कमल-द्वन्द्व-भृङ्गं यशश्-श्री-।
धामं साहित्य-विद्याधरनखिळ-गुणालंकृतं मान्तन-प्रो-।
द्दामं श्री-**मल्ल**नी-वन्दणिकेयनोलविं पालिसुत्तिप्पंनोळिपं ॥
कडिवं मारान्तरं वेगदे करगिसुवं शत्रु-सैन्यङ्गळं सङ्-।
गडकेल्लं धैर्य्य-वर्ण्ण-क्रम···णसेये तां तोरुवं कीर्त्तियल्दम् ।
कडु-चेल्वप्पन्तिरच्चोत्तुनखिळ-दिशा-दन्ति-दत्तङ्गळोळ् नोळ्-।
पडे सन्तं **कम्मट**कन्तोडेयनेनिसुवं **मल्ल-कृष्णाधिनाथम्** ॥
आ-कम्मटद् श्री-मल्लन प्रधाननेनिप ॥

वृ ॥ अलरे विरोधि-सन्तमसमळ्क्करेयाटविकोद्ध-कैरवम् ।
सले पोडल्देय्दे सज्जन-विसं प्रविकासमनेय्दे रागमग्-।
गळिसिरे मित्र-चक्र-चयदोळ् बेळेयं नुत-विश्व-धात्रियम् ।
सललित-मूर्त्ति कीर्त्ति-निधि **सूर्य्य-चमूपति** सूर्य्यनन्दिम् ॥

अन्तु पोगळ्ते-वडेदधिकारि **मल्लि-सेट्टि**यरुं द्विज-वंश-कमळ-सूर्य्य-नप्प **सूर्य्य-देव**नुं यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-धारण-मौनानुष्ठान-जप-समाधि-शील-सम्पन्नरप्प नागरखण्डद्य्दग्रहारदशेष-महाजनङ्गळुं सकळ-साहित्य-विद्या - विलासिनी - विलास-मूर्त्तियेनिप **केरेयूर** यूरडेयं **शम्भुदेव**नुं स्वच्छाच्छ-गाङ्गाम्भ-सदृश-कीर्त्ति-वल्लभ-नेनिप **कच्छावियूरडेय विट्टियरस**नुं वणञ्जु-धर्म्म-वार्द्धि-वर्द्धन-चन्द्र-लेखेयेनिप **त्रिभुवनमल्ल-सेट्टिकव्वे**युं तदपत्यं शौर्य्य-निधाननप्प **शङ्कर-सेट्टि**ं सकळ-याचक-जन-मनोभिलषित - फळ-प्रदामर-कुज - सदृक्षनप्य **शंकर-सामन्त**ानन्दन-नन्दनं भव्य - जन - बान्धवनप्प नाळ् - प्रभु सामन्तं - **मुद्दय्य**नुं रत्नत्रया-भरण-भूषितनप्य **वेगूर माळ गौड**नुं देव-द्विज-गुरु भक्तनप्प **कण्णसोगेय एरकाटि-गौड**नुं निखिळ-गुणालंकृतनप्प **मळवल्लि-एरह-गौड**नुं विनेय-गुण-निधाननप्पब्बलूर **सोम-गौड**नुमिन्तिनिवरुं मुख्यवागि नागर-खण्डवेम्पत्तर समस्त प्रभु-गावुण्डुगळेकस्थरागिद्दु **सक-वर्ष ११२५ सले रुधिरोद्गारि-संवत्सरदुत्तरायण - संक्रमण** - निमित्तवागि **वन्दणिकेय श्री - शान्ति**

नाथ-देव - रमिपेकाष्ट - विधार्च्चने - पूजा - विधानोचित-त्रयकं अल्लिय पात्र-पावुळक्कं खण्ड-स्फुटित-वीर्णोद्धारक्कं चातुर्व्वर्ण्यदाहार-दानक्कमेन्दल्लिय तीर्त्थाचार्य्य **शुभचन्द्र-पण्डित-देव**र कालं कर्च्चि सर्व्वाबाध-परिहारवागि तम्मनितरं धारा-पूर्व्वकं माडि बिट्ट दति येन्तेदडे दण्डियहल्लियुं बावळियुं गङ्गळळ्ळियुं स्थळवृत्तियुं ऊरूलु नन्दादीविगेगे नालकु-पणमं मुद्दे-सावन्तं चिक्क-मागुण्डिय बडगणोणियिं पडुवलु ५०० मरद अडके-दोटमुं इन्तिनितुमं बिट्टरु धर्म्मदिं प्रतिपाळिसुवन्तप्पवरु गङ्गेय तडियलु सहस्र-कविलेयं नवरत्न-भूषणं माडि सहस्र-ब्राह्मणरिगे दानं माडिद फल-बीधर्म्मक्कळिवनन्नयमं मनडोळ चिन्तिसिदनावोनातननिदु-कविलेयुमननिदु-ब्राह्मणरुमं गाङ्गेय तडियोळळिड पाप ॥ (हमेशाके अन्तिम श्लोक)।

[विख्यात रेच-चमूपति; उसके बाद यदुवल्लभराज्यभूषण, बान्धव-पुराधिप **कडवे बोप्पने** शान्ति-जिन तीर्थ (बन्दलिके) की उन्नति की।[1]

जिनशासन की प्रशंसा।

कुन्तल-देश नव नन्दों, गुप्त-कुल मौर्य्य राजाओं; इसके बाद पराक्रमी रहो; इसके बाद चालुक्यों; तदनु कलचूरि-वंशके राजा बिज्जल द्वारा शासन किया गया। तत्पश्चात् इस देशपर राजा बल्लालने शासन किया।

उसके वंशका अवतार (परम्परा):—होय्सल राजाओंका उदय और बल्लाल तककी वंशावली ही वर्णित है जो पिछले कई शिलालेखोंमें आ चुकी है।

पृथ्वी रूपी स्त्रीका वनवसे-नाड् चेहरा था, जिसमें नागर खण्ड तिलकके समान मालूम पड़ता था। इसके कुञ्जों, बगीचों और तालाबों इत्यादिका वर्णन। नागरखण्डमें उत्तम बान्धव-नगर चमक रहा था। इसके आकर्षणका वर्णन। इसके शासक कदम्ब-वंशके थे; वे सोम-राजाके पुत्र बोध-देव थे। उनका

---

१. यह सब शासनके पूरे लिखे जानेके बाद जोड़ा गया मालूम पड़ता है।

ब्रह्मभूपालक नामका लड़का था। कवडेय बोध-सेट्टिने उस बन्दिणिकेके शान्तिनाथ-देवके लिये एक मण्डप खड़ा किया और विधिपूर्वक यह उसे समर्पण कर दिया।

नागरखण्डमें, हरके मुखोंके समान, पाँच अग्रहार थे, जिनसे ब्राह्मणोंके वेद आदि विद्याओंके पढ़ने-पढ़ानेकी ध्वनि निकलती थी। वहाँके ब्राह्मणोंकी प्रशंसा। केरेयूर शम्भु-देवकी समस्त विद्याओंमें अद्वितीय निपुणता। सेट्टिकव्वेके पुत्र वनञ्जु-धर्म-निवासी संकर-सेट्टिकी; सामन्त-मुद्दकी, जिसके पिता शंकर, मां चक्कव्वे मित्र चिन, गुरु भानुकीर्त्ति-व्रतिपति थे, शासक वल्लाल, पत्नी लच्चाम्बिके, पुत्रियां चक्कव्वे और मल्लव्वे, पुत्र वल्लाल-देव था; कच्छविपूरके मालिक विट्टियरसकी; वेगूरके प्रभु-माळ-गौडकी; कण्णसोगेके एरकाटि-गौडकी; मळवळिळके एरह-गौडकी; तथा अंब्लूरके सोम-गौडकी प्रशंसामें श्लोक।

मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवके प्रिय शिष्य ललित कीर्त्ति-सिद्धान्ती थे। उनके पुत्र, काणूर-गण समुद्रके चन्द्रमा, शुभचन्द्र-पण्डित-देव थे। उन्होंने शान्तिनाथ-तीर्थ (बन्दलिके) का प्रबन्ध अपने हाथमें लिया।

राजा वल्लालका प्रसिद्ध मन्त्री मल्ल या कम्मट मल्ल-दण्डाधिनाथ था। उसने बन्दलिकेकी बहुत प्रेमके साथ रक्षा की थी। उसके पराक्रमकी प्रशंसा। उसका मंत्री सूर्य्य-चमूपति था।

नागरखण्ड सत्तरके इन सब मुख्य-मुख्य व्यक्तियोंने, प्रजाने और किसानोंने (उक्त मितिको) तीर्थके पुरोहित शुभचन्द्र-पण्डित-देवके पाद-प्रक्षालनपूर्वक (उक्त) दान दिया।]

[EC VII Shikarpur tl No 225]

४४९

कलहोली;—कन्नड़

[शक ११२७=१२०४ ई०]

लेख-परिचय

यह लेख कलहोलीके एक पुराने मन्दिर—जो कि अब एक लिङ्ग-मन्दिरके रूपमें, जैसा कि इस भागके सभी जैन मन्दिरोंका हुआ है, परिवर्त्तित है—के पाषाण-तलसे लिया हुआ है। कलहोली बेलगाँव जिलेके **गोकाक** तालुकामें है। इसका पुराना नाम **कलपोडे** है। हम देखते हैं कि रट्टोंकी राजधानी इस समय **वेणुग्राम**, आधुनिक **वेलगाँव** थी। सबसे पहले राजा **सेन**का वर्णन आया है, जो शि० ले० नं० १३० में द्वितीय क्रमपर वर्णित है। इन दोनोंके ऐक्यका कथन आगेके किसी भी अन्य आधुनिक शिलालेखमें नहीं दिया गया है, लेकिन कालोंकी तुलना इस निष्कर्ष पर पहुँचाती है। दूसरे, शि० ले० नं० १३० की ३८वीं पंक्तिका 'बृहद्दण्ड' [1]विशेषण इस शिलालेखकी चतुर्थ पंक्तिमें सेनके लिये दिये गये प्रथम विशेषणसे मिलता-जुलता है। इसमें सेनके बादसे तीसरी पीढ़ी तकका उल्लेख है। और अन्तमें कुछ दान आते हैं, जो शक ११२७ (ई० १२०५,६) में, कार्त्तवीर्य चतुर्थकी आज्ञासे **सिन्दन-कलपोडे**में बने हुए जैनमन्दिरकी ओरसे किये गये थे। यह गांव उन गांवोंमें से एक था जो **कुरुम्बेट्ट 'कम्पण'** के नामसे विख्यात थे। यह कुरुम्बेट्ट कुण्डी-तीन हजार जिलेमें शामिल था। लेखसे पता चलता है कि कार्तवीर्य चतुर्थको अपने शासनमें अपने छोटे भाई 'युवराज' **मल्लिकार्जुन**से सहायता मिलती थी। प्रसंगवश लेखमें एक यादव सरदारोंके कुटुम्बका भी उल्लेख आता है जो उस समय **हगरटगे** जिले पर शासन कर रहे थे। आजकल यह किस जिले

---

१. जिसके पास बड़ी भारी या शक्तिशालिनी सेना हो।

या स्थानका नाम है, इसका पता नहीं चलता। यादव कुटुम्बकी यों दी है:—

रेव्व, जिसका विवाह होलादेवी से हुआ था.
|
ब्रह्म ,, ,, चन्दलदेवी से ,, .
|
राजा प्रथम ,, ,, मैळलदेवी से ,, .

चन्दलदेवी, चन्द्रिके, या **चन्द्रिकादेवी**

सिंह, या सिंगिदेव, भागलदेवी से विवाह हुआ।
|
राजा द्वि०, चन्दलदेवी, और लक्ष्मीदेवीसे विवाह.

राजा प्रथमकी पुत्री **चन्द्रिकादेवी** रट्ट सरदार लक्ष्मण या लक्ष्मीदेव प्र[illegible]मकी पत्नी हुई, तथा कार्त्तवीर्य चतुर्थ और मल्लिकार्जुनकी माता हुई। उल्लेखित दान-प्रदत्त जैनमन्दिरको राज द्वितीयने बनवाया था। मन्दिरके गुरू मूल कुन्दकुन्दाम्नायकी इनसोगे शाखाके थे; उनमेंसे तीनके नाम यहां दिये हैं:—मलधारी, उनके शिष्य सैद्धान्तिकनेमिचन्द्र, उनके शिष्य शुभचन्द्र थे।

ओं नमः सिद्धेभ्यः [॥] श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादामोघलाञ्छनं [।] जीयात्त्रै (त्रैं) लोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं [॥] श्री जन्ममूमि वरसुरभूजं क्षीराम्बुराशि (शी) यन्ते गभीरं श्री जैन शासनं सले सजिसुतिर्क्कमळ राजपूजितमहिमं॥ विळसित विपुळामृत गोकुलदिंदं सकलसत्य संपददिं निर्म्मळवर्ण्ण दिन्दे विधु मण्डळदंतिरे कूण्डिमण्डळं कण्णोळिकं॥ अदनाव्वं सेनं साहस भीमसेनन सकुद्विद्या विळासेन ना ज्ञानरि प्रियवल्लभं प्रथुसभं तीभ्रां (व्रां) शुतेजस्प्रभं नानादानि कीर्तगने **कार्त्तवीर्य**नखिलोर्व्वीचक्रमं चक्रर्यातरे दोर्दण्डदोळान्तनन्त गुतगुणं श्रीरट्टनारायणं मेरु नभस्तळं जळधि मु (म) त्पतियं नति सन्महत्व (त्व) गम्भीरगुणक्के मच्चरिपुवेन्द मराद्रियनिक्के मेट्टिया नीरदमार्ग्गमं पुदिदु वारिधियं

मिगेदार्णट कीर्तिया शारमण्णर्गे वंणिपुदु पंपिन लंपिने कार्त्तवीर्यन अर्जिततेजनिर्जित-यशं परितर्जितराष्ट्रकंटकं निर्जितदुर्जयारिनिवहं कमलाधिपनन्ते दानि नागार्ज्जुननन्ते रावणविदारण कारणरामनन्ते मिक्कर्ज्जुननन्ते रंजिपनिळेश शिखामणि मल्लिकार्जुनं ॥ श्रीचक्रवर्त्तितनुजे कळाचतुरे विशाळलोळलोचने येनि**सिद्धेचलदेवि** सतीत्वलोचने येने कार्त्तवीर्यनवू पेसर्वडदेळ् ॥ स्वस्ति स्मधिगत पंच महाशब्द महामण्डलेश्वरं **सत्तनूर्प्पुर**वराधि ईश्वरं त्रिवळीतूर्यनिर्घोषणं रट्टकुळभूषणं सिन्दूरलाञ्छनं सफळीकृतविद्वज्जनाभिवाञ्छनं वीरकथाकर्ण्णनजातरोमांचं साहित्यविद्याविरिंचं सुवर्ण्णगरुडध्वजं सहजमकरध्वजं संग्राम कौतूहळीकृतगदादण्डं कदनप्रचंडं सिन्धुरारातिबन्धुरकबन्धनर्तनसूत्रधारं वैरिमण्डलिकगण्डतळप्रहारं परवधूनंदनं विभवसंक्रन्दनं साहसोत्तुंगं समाराधितमहासिंग निदु मोदलादनेकनामावळिविराजितं श्री **कार्त्तवीर्य**देवं निजानुज युवराज वीर **मल्लिकार्ज्जुन**देवं देसु **वेणुग्राम** स्कन्धावारदोळ् सुखदिं साम्राज्यलक्ष्मीयननुभविसुत्तमिरे ॥ श्रीकविकुळ श्रीरत्नाकळितं चळधियंदंदि यदुकुल लक्ष्मीकान्तं श्रितकमळानीकं हगरटगे नाडु चगदोळगेसेगुं ॥ आ नाडनाळ्वं यदुवंशं श्रित राजहंस मेसेदिर्क्कु व्योमदन्तक्षियग्युदयं वेत्त करात्तभृतनुरुतेजं कीर्तिभाजं सनुद्यदिळेज्यं सुमनस्पपूज्यनमळस्वान्तं चितच्चान्तन्तेप्पिदनादं कमलाधिप प्रभुतेयिं श्रीरेव्वनुर्व्वीश्वरं ॥ आ रेव्वप्रभुविंगमग्रवद्दु हीलादेविनं स्वान्वयोद्धारं धीरनुदारनुद्गुणसारं शुंभदंभोधिगम्भीरं वाग्वनितालन स्थगितहारं सौख्यसंपादकाचारं ब्रह्मनवोलतर्क्यमहिमं ब्रह्माहगं पुट्टिदं ॥ चळधिगभीरभृतभूमळय ब्रह्मगं नुचितवेलोपम **चन्द्रलदेवी**गमागेदं मण्डळनाथं रावनन्दनिं रावरसं । पुदिदिरे रागदिं सकळमण्डलमप्रतिमप्रसाद संपदमखिळाशेषनेळये पुरिसि जैनमतामृताणर्णवं पडेदभिवृद्धियं तळेये तन्न पेसर्गनुरूप मागेयम्युदयमनेयिन्दं विमळवृत्त विराजित राजभूभुजं ॥ क्षितिपतिराजराजन मनोरमे **मैळलदेवि** ता यशस्वति नुतियोग्य भाग्यवति दानदयावति सत्कळासरस्वति यभिलेष रूपमळभावति जैनपदाम्बुजार्च्चनावति पुरुपुण्य पुत्रवति रंजिसुवळ् सुविशाळ शीळदिं ॥ कुलवित्तारक राव राव विभुगं श्रीरोहिणी मूर्ति **मैळलभादेवी** गमासमवर्पतिहित श्री **चन्द्रिकादेवी** निर्म्मळरुक्चन्द्रिकेयन्ते सिंहमहिपं साम्यम्भो-

लादर्म्महीतळपूज्यर् विबुधेज्यरुज्वळगुण श्रीकान्त रात्यन्तिकं ॥ अनुपमशौर्य्यशाळी यदुवंश शिरोमणि राजराजनन्दने विबुधाभिनंदने घटोदरसुस्थित सर्प्पदर्प्प भुजने पतिचिन्तरंचने जगंनुत जैनमतामृताभिवर्धनकरचारुचंद्रिके महासति चन्द्रिके धन्ये धात्रियोळ् ॥ श्रीपति लक्ष्मीदेवमहीवल्लभवल्लभे कार्त्तवीर्य धात्रीपति **मल्लिकार्ज्जुन** महीश्वर मातृ महासतीत्व सीतोपमे जैनपूजनसुरेन्द्रवधूपमे रूपकेतु-कान्तोपमे रंजिपळ् नेगळ्द् **चन्दळदेवि** समस्तधात्रियोळ् ।

स्फुरितानर्ग्घ्यमणि-प्रणूतकटित प्रख्यातदानेन्द्र भूमि -।
रुहोर्व्वीतळधारितुंगशिखर श्रीमद्भुजादण्डमं-॥
दरदिं वैरि बळाब्धियं मथियिसुत्तुद्यज्जय श्री वधू -।
वरनादं यदुवंशभाळतिळकं सिंहावनीपाळकं ॥
सजळं गोण्डु समग्रसिंहमहिपं मेल्पातिसल्पा जिमं ।
सबळं वैरिबलं जवंगे कबळं वेताळबावक्के कोट्ट ॥
पिरि श्रोणि बळारिगित्त बडिनं हार्द्दिर्द्द हर्द्दंगे नेद्दुं ।
मृककेत्तिदबुत्तियेदोड हितर्म्मेन्योलि महाम्परे ॥

जनपति सिंगिदेवन मनःप्रिये **भागलदेवी** भाग्यमेदिनि गुणयूथनाथ मुनिदान विनोदिनि संश्रितार्त्तिभेदिनि विबुधप्रमोदिनि कळागममेदिनी नित्यसत्यवादिनि दुरितापनोदिनि पतिव्रते पूजितरूपे रंजिपळ् ॥ भोगपुरन्दर-प्रतिम सिंहामहीपतिगं बिनार्च्चनोद्योग सच्चेचरित्रवति **भागलदेवी**गनाद नात्मजं रागसमागमप्रद सुमूर्त्ति जयंत नतिप्रसिद्ध जैनागमवार्द्धिवर्धनकळा-निधि राजरसं समंजसं ॥ जिनपूजाविबुधाधिपं विपुळतेजं प्राप्तधर्मप्रभावनयं पुण्य-जनोत्तमं गुणगणांभोराशि वैरीप्रभंजननर्व्वीधनदं महीश्वरनेनिप्पी पेपिनिं लोक-पाळनिळं राजिरसं जगद्बळयमं पाळिप्पु देनोप्पुदे । क्षिति सले कूत्तुं कीर्तिपुदु मूर्ति मनोभवराजनं समर्च्चितजिनराजनं यदुकुळामृत वारिधिराजनं समुन्नतिगिरिराजनं गुणविराजितनूजसिंहभूपति सुतराजनं विषमवाजि सुशिक्षणवत्सराजनं ॥ पिंगदवर्य्यः शौर्य्यमसुहृन्नरलोक जगद्बळंगे राजंगे जगत्प्रमोदजनकाभ्युदयं **यदुवंश** संभवोत्तुंग-[illegible] विनयप्रियवृत्तिनृपाळ सिंह जातंगे पराक्रमं पोसते वंणिसुबन्दु समस्त-

धात्रियोळ् ॥ द्यूतमृगप्पि मांसगणिकापरदारखळप्रसंग चौर्यातुळमल्लमेघखगयुद्ध-निषिद्ध विनोदनोद्यतब्भूतळ नाथरप्परदु माण्डु जिनस्तवनार्च्चनाम होल्यातमुनीन्द्र-दानिरतप्परे राजनृपाळ निंनवोळ् ॥ सति **चन्दळदेवि** पतिव्रते **लक्ष्मीदेवि**-मेम्बरीर्वरू मवनीपति राजनृपन राणियरतिशयगुणयुतयरेनिसि नेगळ्द्दर्ज्जगदोळ् ॥ स्वस्ति समस्तप्रशस्ति सहित श्रीमन्महामण्डळेश्वरं **कुपणपुर**वराधीश्वरं यदुकु-ळांवरद्युमणि बुधजनचिन्तामणि निजभुजाभिनिर्द्दळितरिपुनृपकंठकदळं नरलोक-जगद्दळं अनवरत जिनस्नवनसुरभि मलिलपवित्रीकृतोत्तमाङ्गं धर्मकथाप्रसङ्गं जिनसमयसुधाण्णवसुधाकरं सम्यक्त्वरत्नाकरनेनिसि नेगल्द क्षत्रियमस्तकाभर-णराजनृपं विभुसिंहस्नरत्नं त्रयमूर्ति निर्म्मळिन धर्म्ममेनुत्तदनोल्दु पेळ्व्वो-ल् धात्रिगे मिक्क कल्योळेयोळेत्तिसिदं जिनशासतिगेहमं नेत्रविचित्रमं महिते (तिं) रीट मनप्रतिकूटमं ॥ अन्तनन्तसुख श्रीकान्त (तं) शान्तिनाथ समुत्तुंग भृत्य निधानमं कनककळश मकरतोरण मानस्तंभविराजमाननं राजसं सिंद कल्योळेयल्लि माडिसि तन्न गुरुगळुं जगद्गुरुगळुवेनिसिद **शुभचन्द्रभट्टारक**-देवर्गे कोट्टनवर गुरुकुळक्रममेंतेने ॥ जयनिळय कुण्डकुन्दान्वय विश्रुत मूलसंघदेशि पूर्णोदय पुस्तक गच्छदोळतिशयमेने हनसोगेयेम्ब वळि व्रगेगोळिकुं । गुरुकुळतिळक-प्पविन चरितर्गुणभरितरल्लि नेगल्दव्वीर्जितस्मर **मलधारि** मुनींद्रर्च्चरणाम्बुजनत-नरेन्द्रपगततन्द्रर् ॥ पदनखसंकुळं विषमत्राणविषाहिमहाविषापहारद मणि नाम-दक्करमे मोहपटुग्रहभेदिमंत्रमंगद भटभाजमंजवरुजाहरणौषधमेन्दोडेननेम्बुदो मळ-धारि मुनिपोत्तम प्रभावतपःप्रभावमं ॥ शान्तरसावतार मळधारिमुनीश्वररशिष्य सैद्धान्तिक **नेमिचन्द्र**गुरुधर्म्मरय श्रुतवार्द्धि **नेमिचन्द्रं** तममं निवारिप कळागुणमद्र-नमानुपामृतस्वान्त **समन्तभद्र**नेने वंणिसरारकळंकमृत्तनं । आ सैद्धान्तिक नेमिचन्द्र-यतिवर्यार्चार्य्य शिष्यर्गुणावास श्री**शुभचन्द्र**भासुर **यशोभट्टारक** व्वीश्वाधात्रि संपू-जित शीलधारकरुदग्रानंगसंहारकर् श्रीसद्दर्शन बोधमृत्त(धामृत)पदवीविस्तार निस्तार-कर ॥ शुभचन्द्रं स्वगुणोल्लसत्कुवळयं श्रीचन्द्रिकाशुद्धवृत्तिभवप्रभावदिं दिगम्बरश्रीवृद्धियं मण्डळप्रभुसंपूजितपादनुज्वळ गुणाढ्यं शान्तरूपं कळाविभवात्युंनतभृत्तनभ्युदययुक्तं माळ्पदेनोप्पदे ॥ मारमदापहारिपरमोग्रतपश्शुभचन्द्रदेव भट्टारकशिष्यरी **ललित**-

कीर्ति समुन्नतनामधेय भट्टारकरिन्दु सल्ललित कीर्तिगळन्वित शान्तमार्तिगळ् सार-
चतुष्टयार्त्तचयवेदिगळुत्तम सत्यवादिगळ् ॥ स्वस्ति समस्त गुण संपन्नरुं भव्यप्रसन्नरुं
चन्द्रलदेविवन्दित पदारविन्दरुं निजात्मभावनाभिरुपण्ड(द)रुं श्रीराजनृपाळ सुप्रतिष्ठ
शान्तिनाथदेवर वसदियाचार्य्यरुं मण्डळाचार्य्यरुमप्प शुभचन्द्र भट्टारकदेवर्गे श्री-
कार्त्तवीर्य्य देवं आ शान्तिनाथदेवरंगभोगक्कं रंगभोगक्कमा वसदिय खण्डस्फुटित
जीर्णोद्धारणक्कमल्लिप्पं मुनिजनंगळाहाराभयभैषज्यशास्त्रदानकं **शकवर्ष ११२७ नेय**
रक्ताक्षिसंवत्सरद पौष्य शुद्ध विदिगे शनिवारदन्दुत्तरायणसंक्रमणदल्लि कूण्डि-
मूरुसासिरद वळिय कुलंवेट्टगंपणदोळगण सिंदनकल्पोळेयल्लिय कळगडियर सिन्द-
गाऊण्डं मुख्यवागि हंनीर्व्वं गाऊण्डुगल्छेये हन्नेरडु तप्पडिय कुचुम्मेह गोलिंदेर-
डु सहस्र कंब केय्यं धारापूर्वकं सर्व्वसमस्यवागि कोट्टन्त केय्य सीमे [।] ऊरिं वडणल्
कंक्कणनूर् हेद्दारियिं मूडलविलहल्लद मुरुविनल्लि नैरुत्य कोणल्नेट्ट कल्लल्लिं वडगमुखं
विळियत्रावियिं मूडलागि पडुवणसीमे नडियल्कें भोरडियल्लि वायव्यद कोणल्नेट्ट
कल्लल्लिं मूडमुखं वडगण सीमे नडियलीशान्यद कोणल्नेट्ट कल्लल्लि [illegible]मुखं
पंचवसदिय मान्यदिं पडुवळागि मूडणसीमे मडियल् नविलहल्लदल्लि आग्नेयको-
णल्नेट्ट कल्लल्लिं पडुमुखं तेंकणसीमे नविलहळ्ळं [।] आ वसदियिं संमन्यद
मनेय निवेशनविंमोळनुं गेणु [।] वाचेयविडिय राजहस्तदला वसदियिं वडगळ
गजवीथियिं मूडल् वडुवणे क्केय हस्तं नाल्वत्तु सिरिवागिल कल्लिं मूडळ
पंचवसदिय केरियल्लिगे वडगणेक्केय हस्तविपत्तारु आ केरियिं पडुवण भागं
विडिदु मूडणेक्केय हस्त नाल्वत्तु तेंकणेक्केय हस्त ऐवत्तेरडा मान्य दोळगणंगडि नल्कु
गाणवोन्दा वसदिय वणवेय निवेशनवन्दु [।] ऊरिं पडुवळ् हूदोंडद कंब मूवत्तु
[॥] मत्तमा ऊर सन्तेयं माडल् वेडिचे ळगले मुख्यवागि नल्कुंपट्टणद सेट्टियरुं
महानाडागि नेरेदिर्द्दल्लि आ शान्तिनाथदेवर नित्याभिषेकक्कमष्टविधार्च्चनेगं
सर्व्वबाधापरिहारवागि विट्ट एत्तु कत्ते कोणं मोदळादवरवत्तु ६० ॥ मत्तुमेळुवरे
हंनोन्दुवरेय समस्त मुंमुरिदण्डं मुख्यवागि नाडुगळ् विट्टायद क्रममेन्तेन्दोडे [।]
सकळधान्यमाउदु वन्दडं हेरैंगोमनं [।] भंडिगे वळ्ळवेरडु [।] हसरक्कडकें औदु
[।] हेवैगेले नूरु [।] होत्तळकैय्यत्तु हाडक्कें सोल्लिगे एण्णे उलेय होरे मारितक्के

ओन्दु कट्टोले[।] किरुकुळमेनु नारिदं सट्टुगायं हिडिवत्ति [।] कण्गे मडिकेवन्दु॥

श्रीवन्नायत मूर्ति तीर्थमहिमावित्तारि धात्रीस्फुरत् ।

तेवश्रकधरं वगंनुवयश्र तन्नन्दर्दिदेन्दु रा -॥

रादिन्नी विन शान्तिनाथ नवनीनाथप्रणुतोदयं ।

राजन्नापतिगीगे वेळ्प वरवं चन्द्रार्कचारांवरं ॥

ललितपदार्थालंकृतिगळिनोसर्व रसंगळिदे हुवरेळ् पुळकावळि सत्यमोगेये कविकुलतिलकं शासनमनोल्दु पेळ्दं पार्श्व ॥

बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः [।] यस्य यस्य यदा भूमिह (मित्त) स्य तस्य तदा फलम् ॥ गण्यन्ते पांसवो भूमेर्गण्यन्ते वृष्टिबिन्दवः [।] न गं (ग) ण्यते विधात्रापि धर्म्मतरक्षणे फलं ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां [।] षष्टिर्व्वर्ष सहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥ सामान्योयं धर्मसेतुर्नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः । सर्व्वां (र्व्वा) नेतान्भाविनः पार्थिवेन्द्रान्भूयो भूयो याचते रामचन्द्रः ॥ सामान्याः परमहीपतिर्वंशजा वा पादादेतमनघा मुवि भूमिपालाः । ये पालयन्ति मम धर्ममिमं समग्रं तेन्यो मया विरचितांजलिरेष मूर्ध्नि । मंगळमहा श्री श्री [॥] अर्हते नमः ।

[JB, X, p. 173–175, a.; p. 220–228, t.; p. 229–239, tr. (ins. No. 5).]

४५०

पुरले;—कन्नड़—भग्न ।

वर्ष रक्ताक्ष [१२०१ ई० (लू. राइस) ।]

[वीर सोमेश्वर मन्दिरमें, लिङ्गके आसन-पाषाणपर]

रक्ताक्षि-संवत्सरद भाद्रपद-शुद्ध १३ आ स्वस्ति श्री **वीर-चळ्ळाळ-देवर** [·····] **समुद्र** नेलेवीडिनलु नुसदि राज्यं गेय्युत्तिरे श्रीमतु-महा **हिरिय-हेडेय-असवर मारय्यङ्गळ** सन्धिवानदलु·····दण्डायक विभु·····हेम-गावुण्ड हडवळकाळय्य गङ्ग-गावुण्ड रूप-गावुण्ड गायि-गावुण्ड माञ्चगावुण्ड लक्क-गावुण्डुगळु दयिवय्य होन्नय्य-मुख्यवाद समस्त-प्रभु-गावुण्डुगळ

तम्मगागि·····**कुन्तलापुर**दल्लि सदाचारय्यरप्प **नेमिचन्द्र-भट्टारक-देव**रिगे नाळु-प्रभु·····**सावन्त-मारय्य**नु विचारिसि·····काळ-गावुण्ड····· मयण पेम्म·····दियरं कण्डु तव·····वरद शीलाशासनवं तोडदु बलात्कारं तम्म भक्तियागे सलुत्त·····वेण्णवळिळ-यल्लि·····कोण्डु नाळ्-प्रभुगळु अधिकारि सावन्त-मारय्यनुं मनढारेयागि **नेमिचन्द्र-भट्टारकदेव**र कालं तोळदु धारा-पूर्व्वकवागि·····शिला-शासनवं वरेदु वेनवसेय दोडिकेय···(महेशके अन्तिम वाक्यावयव तथा श्लोक)

[(उक्त मितिको) जिस समय वीर-बल्लाल-देव दोरसमुद्रके निवासस्थानमें था;—प्रधान मंत्री हिरिय-हेडेय-असवरमारय्यकी उपस्थितिमें, तमाम सरदार और किसानोंने (बहुत-सोंके नाम दिये हैं), कुन्तलापुरके आचार्य नेमिचन्द्र-भट्टारक-देवके लिये·····;—सावन्त मारय्यने जांच-पड़ताल करके, जबर्दस्ती, उस लिखे हुए शिला-शासनको मिटवा दिया और अधिकारी सावन्त-मारय्यके साथ मिलकर, नाळ्-प्रभुओंने, नेमिचन्द्र-भट्टारक-देवके पाद-प्रक्षालन-पूर्वक···एक शिला-शासन लिखवा करके दिया ।]

[E C, VII, Shimoga tl., No 65.]

४५१

गोग्ग;—कन्नड़

[बिना काल निर्देशका, पर लगभग १२०५ ई० का]

गोग्गमें, वीरभद्र मन्दिरके दरवाजेके सांचेके दोनों ओर]

(बाईं ओर)

माडिसिदं जिनालयमव्·····एल्लियुमिल्ल करेनल् ।
नाडे विराजिसल् **वेळगवत्ति**य-नाडोळनून-भक्तियिम् ।
कूडे विभूतियष्ट-विधार्च्चनेयेम्बिरु कुन्ददन्तु कोण्ड्- ।
आडुतविप्पे[1]नन्दुवेन**लीचण**नन्तिरे भव्यनावव (न) म् ॥
करोळ् तप्पदे बसदियन् ।
ओरन्तिरे माडि **वेळगवत्ति**य-नाडम् ।

धारिणिगे नेगळ्द कोपणक्- ।
ओरगे माडिदनुदार-निधियीचरसन् ॥

दायीं ओर)

एरेयन देय्वज्ञदु तन्नय देय्वमदाज्ञदातनोळ् ।
नेरद गुणोन्नतिक्केयदु तन्नय मिक्क-गुणोन्नतिके कण्- ।
देरदडदाव धर्म्मवधिनाथनोळन्तदे तन्न धर्म्मवेन्द् ।
एसकदे मन्त्रियोचणन वल्लभे सोवल-देवि माविसळ् ॥
नगेनगे मोगवम्बुवमम् ।
मिगे मृग-वीक्षणमनीक्षणं मिगे मृगवरनन् ।
तेगळे मोख-कान्ति चेल्वन् ।
त्रि-गुणिसिदुदु निज रूपु सोवल-देवि ॥

[इंचणने वेळगवत्ति-नाड्में ऐसा एक जिनालय बनवाया जैसा उस प्रदेशमें और कहीं नहीं था। और इस तरह वेलगवत्ति-नाड्को कोपणके समान बना दिया। मंत्री इंचणकी पत्नी सोवल-देवीकी प्रशंसा।]

[EC, VII, Shikarpur tl., No 317]

४५२

वक्कलगेरे—संकृत तथा कन्नड

[शक ११२७ = १२०५ ई०]

[वक्कलगेरे (यगटे परगना) में, बाण-लिंगनाथ मन्दिरके बाहरी आंगनके एक पाषाण पर]

नमः सिद्धेभ्यः ॥ भद्रमस्तु जिन-शासनाय ।
श्रीमत्-परमगंभीर स्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं चालुक्याभरणं श्रीमद्-भू-वल्लभ पेर्म्माडि-रायं कल्याणद नेले-वीडिनोळ् सप्तार्द्ध-लक्ष-भूमियं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपालनं गेय्दु सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्ये । स्वस्ति सम-

धिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं **द्वारावतीपुरवरा**धीश्वरं **यादव-कुला**म्बर-द्युमणि सम्यक्त्व-चूडामणि त्रिभुवन-मल्ल तळकाडु-कोङ्गु-नङ्गलि-हानुङ्गळ्-उच्चंगि-बनवसे- हलसिगे-हुलिगेरे- बेळुवल-गोण्ड भुज-बल- वीर-गंग- विष्णुवर्द्धन-होय्सळ-देवरु गंगपाडि-नोणम्बवाडि-बेळुवल-नाड दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपालनं गेय्दु हानुङ्गल नेले-वीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे। अन्तातनग्र-तनूज **नरसिंह**-भूपालकम्।

वृत्त ॥ देवो देव-गिरीन्द्र-रुद्र-शिखर-व्याकीर्ण्ण-कीर्त्ति-ध्वजो।
देवश्चण्डधर-प्रताप-महिमावन्यां च लङ्केश्वरः।
देवो भव्य-विदग्ध-मुग्ध-सुदती-प्रख्यात-मीनध्वजो।
देवश्री-**नरसिंह**-भूपतिरसौ जीयात् स्थिरं भूतले ॥
सरधि-व्यावेष्टितोर्व्वी-पति एनिसि सुखं बाळ्गे चन्द्रार्क्क-तारं।
सुरराजं लीलेयिन्दं **यदु-कुळ**-तिळकं [वीर-] सङ्ग्राम-रामं।
पिरिदुं विक्रान्तदिन्दं निज-भुज-विजयं गङ्ग-भूमण्डलेशं।
नरसिंहं भूमि-पालं स्थिर-त...लक्ष्मी-वल्लभं होय्सणेशं ॥

आतन तनेयन तोल्-बलद पेम्मेयेन्तेन्दोडे।
जय-जाया-प्रिय-वल्लभं सकळ-भूभृन्-मस्तक-न्यस्त-पा-।
द-युगं दोर्व्वळ-दृप्तनप्रतिमनत्योदार्यनत्यूर्जितो-।
दयनत्यद्भुत-विक्रमं [रिपु-बळ-प्रध्वंस निश्शेष-निर्-।
दय निस्त्रिंश-निरग्गंळ] नियमदिं **बळ्ळाळ**-भूपालकम् ॥
काळगदोळ् निशात-करवाळ-इतक्के हत-प्रभर् मही-।
पाळकरोडि पोक्कु गहानान्तरदोळ् च्युधेयळुवे वन्य -भू-।
जाळदोळिर्द्द हङ्गलने हण्णेनलम्मदे कायि कायि ब-।
ळ्ळाळ-नृपाळ येम्बिदने पम्बलसिद्दुदु वैरि-संकुळम् ॥

स्वस्ति श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाराजाधिराज परमेश्वरं परम-भट्टारकं **यादव-कुला**म्बर-द्युमणि सम्यक्त्व-चूडामणि मलेराज-रान मलेपरोल् गण्ड कदन-प्रचण्ड शूरनेकाङ्ग-

वीर निश्शङ्क-मल्ल प्रताप-चक्रवर्त्ति होय्सल-वीर-**चल्लाल-देवरु** गङ्गवाडि-नोण-म्बवाडि-बनवासि-हानुङ्गल्लु यरदरु-नूरर-राजधानियं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपालनं गैय्दु लोक्कु-गुण्डिय नेले-वीडिं सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तिरे । तत्पादपद्मोपजीवि । स्वस्ति श्रीमन्महा-सामन्ताधिपति महा सामन्त-घसण **निर्गुण्डद चक्रय्य-नायकर** प्रतापं एन्तेन्दोडें ।

श्रियं श्री-गोरियं पेरुरदोळेडदोळप्पिद्दंवर्व्विश्व-लोक- ।
ज्यायं मालारिंय-माला-घररमृत-पयोराशि-कैलाश-नित्य- ।
श्रेयोर्द्धद्धि-त्रि-यत्तं नेगद्दं हरि-हरर्कत्तुं सामन्त-चट्टं -
मारिट्टम्बमं सुराचलमनोर्क्कैसिट्टु दिक्किट्ट तत्-।
पारावारमनन्तुविन्तुवळेदुम्मुन्त्गियुं [पोगियुं] ।
पारं-गण्डरुण्डु पोलिपडे पेर्म्पि विण्पिनिं गुण्पिनिन्-।
दारं पोलिपरे वोलन्य-प्रितना-संघट्टनं चट्टनम् ॥
बन्देरेदङ्गे कोट्टु सले वैरिगे वेङ्गडनेन्दु वेम्बिदा-।
वन्दमो तन्नोळिल्ला भयवा-भव्यमं पगेगीवनुन्ते चि-।
त्तं दलेनुतु मत्तं पोगळ्गुं वसुधा-तळवर्क्करिन्दे निर्-।
गुन्दद चट्टनं रिपु-घरट्टननिन्दु-ललाट-पट्टनम् ॥

आतनन्वयमेन्तेन्दोडे ।

दोरेवे**त्ताहवमल्ल-देव**-महिपं **कल्याण**दोळ् नोडे मच्-।
चरदिं **धर्म्म**-तनूजनेकतुळदिं दोड्डुङ्कदोळ् कादे निर्-।
भरदिं गेणुदेयाल्के पोय्दु तळदिं बायिं भूगिल्लेन्दु ने-।
त्तरुगल् कोन्दु तल-प्रहारि-वेसरं कैकोण्डना-**गण्डमम्** ॥
क ॥ तडेदिरदाहवमल्लं । कुडे नेगर्द तल-प्रहारियुं दोड्डुङ्कम्-।
मूडिवन्नुवेने पडेदं मि-। क्कडकिल-वेसरं प्रचण्डरार् गण्डमनिम् ।
आ-गण्डम-वीर-मनो-। रागाविळे मुर्द्दियक्कनवरिव्वर्गंम् ।
चागक्कं चलकं मिक्कु । आगरवेने तनयनादनाहवमल्लम् ॥

आ-नेगर्द्दहवमल्लन । मानिनि होन्नव्वेयवर्गे सुतनहित-मरुत्-।
सूनु-हिरिदीव दिनकर-। सूनुवेनळ् मिक्क **माच**नग्र-तनूजम् ।।
पेर्म्मेय **सितगर-गण्ड**-वे-सर्म्मिगे **विष्णु**-नृपनरिये कटकदोळेन्-।
दोर्म्मोदले **रेवि-शेट्टि**य । वर्म्मननम्मेन्दु कोन्दु कूरने माचम् ।।
आ-सितगर-गण्डङ्गं । श्री-सतियम्मिगुव **माळियक्क**ङ्गं सन्-
त्रासित-रिपु-बळनधिक-वि-। ळासं सामन्त-**मल्ल**नार्थं तनयं ।।
पुट्टलोडं चातुर्य । कट्टायं शौर्य-त्राप्पुमोल्पुं सोवगुम् ।
नेट्टनिविन्तिवुतन्नोडव् । इट्टिदुवेने नेगर्द मल्लन सुहृत्-सेल्लं ।

आतन पराक्रमवेन्तेन्दोडे ।

प्रकटं दोर्व्वळदुर्व्विनिं सु-भटनासामन्त-मल्लं रणा-।
नकमुण्मल्किदिरागि तागिदरि-सेना-चक्रमं सीळ् पोय्-।
ये कबन्धं कुणिदाडे वीरर सिरं बीरेळे मारान्त-**रा**-।
वुकनं कोन्देरडानेयं पिडिदना-**चङ्गळ्व**नुग्गराजियोळ् ।।
तोळ्वलद वलदे मल्लम् । वळुवळ वळ्देदोगेद कोपदिन्दं हयमं ।।
तळुविल्लदे पायिसि चं-। गाळ्वन मद-करियनिरिदु कोडेयं कोण्डम् ।।
आ-मल्लेय-सामन्तन । सीमन्तिनि **सोमियक्क**नवर्गे कोन्ति-।
प्रेमात्मवरेनलिवरोळ् । सामन्त**ादित्य**नादनग्र-तनूजम् ।।

स्वस्ति श्रीमन्हा-प्रधानं सर्व्वाधिकारि महा-पसाय्तं भेरुण्डन-मोत्तदिष्टायकं **अमि-तय्य-दण्णायक**र प्रतापमेन्तेन्दोडे ।

मनेयोळ् मन्त्रि-प्रधानं मोनेयोळदटना-कोपडोळ् निर्व्विकारं ।
घनदोळ् विश्वाशि हेन्नोळ् सुचि निज- पदडोळ् भक्तनेन्दोल्दु **वल्ला**-।
ळ-नृपाळम् यादव-श्री-पति कुडे पडेदं दण्डनाथत्वमं ता-।
नेने दण्डाधीसरोळ् मिक्क मितनोळेणेयर् सामि-सम्पत्तियिन्दं ।।
गुणि गम्भीरं प्रसिद्धं पति-हितनदटं धार्म्मिकं गोत्र-चिन्ता-।
मणि धीरं दानि दक्षं पट्टु शुभ-मति पुण्याधिकं मंत्रि-चूड़ा-।

मणि सेव्यं सौ [न्यन] म्याकृवि कलि कुलवं चरित्रं क्षमाम्-।
कन-लं-लक्ष-माया-नमितनमित-दण्डाधिपं कीर्त्तिवेत्तन् ॥
आतन वंशोदयनं । माता-पितृगळ महत्त्वनं सहवास-।
ख्यातियनुदितोदित-पु-। प्रातिशयमनर्त्तियिन्दमित्तिण्णिसुवेन् ॥
चक्कलतेयङ्कुरितं प-। ल्लविवं कुट्टुमिवमिदेनिवि फल्लितं तन्नु-
द्भवदिनेने मूल-वर्ग्गद । नक्क-मणि-कळवं चतुर्थ-वर्ग्ग-नदेसेगुन् ॥
आ कुलदोळ् पुट्टिदन-। व्याकुळ-पुण्यं समस्त-जनयाधारम् ।
लोक-प्रसिद्धनखिळ-क-। ळा-कुशलं चेट्टि-सेट्टि चारु-चरित्रम् ॥
एने नेगळ्द चेट्टि-सेट्टिग-। वनुमने अक्कव्वेगं कुलक्कनुरागम् ।
जनियिसे जनियिसिदं पेम्-। निन हरियम-शेट्टि चक्कल-लोक-ख्यातं ॥
ऐसवा-हरियम-शेट्टिगे । निसुव सुग्गव्वेगोगेदरमृत-चमूना-।
य-नमेतं कलय्यं । मसणय्य वसवय्यनेम्ब नाल्वर् तनयर् ॥
ऐसेवी वल्लाळ-वार्णीशतिगे निसुव नाल्कुं मोगं वीर-वल्ला-।
ल-सरोजाक्षङ्के नाल्कुं मुख रविर-यशो-भागि-वल्लाळ-भूमृ-
वसुधा-चक्रक्के नाल्कुं वळवियनृत-दण्डाधिपं मन्ति-कलन् ।
मसणय्यं दण्डनायं वसवनुरु-वचो-वीर-गाम्भीर्य्यदिन्दम् ॥
तन्नेसेव चन्न-भूमि-र-। गन्नुतमा-लोक्कु गुण्डि पृथ्विगे ललेयोळ्-।
पिन्नेगळ्दनल्लि पुट्टिद । पोन्नन्तिरे तोळगुवसृत-दण्डाधीशं ॥
एळ्गेयोळावे पेळुवडे पेळवे येच्चिसिदल्लुदय-दे- ।
वाळयवोल्तु कट्टिसिद पेर्म्मेरियिक्कुल-सत्तवोर्म्मेयिन् ।
पाळिसुवग्रहार-त्रयविहरवट्टिगे बम्बिदेन्दे क- ।
ल्लाळन दण्डनाय ननृतं गुणि दानि कृतार्थनेन्नुदम् ॥
अनन लक्के तन्न गुडि ओन्दनृतं नगेवेच्च नोव्वोन्द् ।
अक्षिसुदारवोन्दनृतवादरवोन्दनृतं विवेकवोन्द् ।
अनृतवेनल्के होय्सळ-नृपालन राजित-राज्यदोळ्ग् [अद्] ओन्द्
अनृतनेनिप्प मन्त्रि-वनृतंगनृतं सननागलार्प्पुदो ॥

अमर्द्दल्लिये नेलसिदनोसे- । दु महेश्वरनेन्दोडमृत-दण्डेश्वरनोल्द् ।
अमृत-समुद्रदोळेत्तिसिद् । अमृतेश्वर-निळयवगलिदिनेनुन् [न] तमो ॥

अवर गुरु-कुळान्वयमेन्तेन्दोडे ।

इदे हंसी-वृन्दमीण्टळ् वगेदपुदु चकोरी-चयं चञ्चुविन्दम् ।
कर्दुकल् साद्दंप्पुदीसम्मुडियोळिरिसलेन्दिर्द्दपं सेज्जेगेरळ् ।
पडेदप्पं कृष्णनेम्बन्तेसेदु विस-लसत्-कन्दली-कण्ड-कान्तम् ।
पुडिदश्री-**मेघचन्द्र**-व्रती-तिळक-बगद्वर्त्ति-कीर्ति-प्रकाशम् ॥

अवर शिष्यरु **प्रभाचन्द्र-सिद्धन्त-देवरु** ।

जिन-धर्म्मोद्यान-षण्ड-प्रथित-पृथु-लसत्-तोषमं वाग्वधूटी ।
स्तन-हारं भव्य-पङ्केरुह-दिवसकरं काम-मत्तेभ-सिंहम् ।
विनुतं सिद्धान्त-चन्द्रेश्वरनेने पेसर्व्वेत्तं **प्रभाचन्द्र**-योगी- ।
न्द्रन पुत्रं सच्चरित्रं मुनि-पति-**जिनचन्द्रं** गुणाम्भोधि-चन्द्रम् ॥

अवर शिष्यरु **नयकीर्त्ति-पण्डित-देवरु** । अवर पुत्र **चट्टिय नेमय केरेयण** । अन्ता-श्रीमन्महा-प्रधानं **अमितय्य-दण्णायकरुं** कल्लय्य-मसणय्य बसवय्य-दण्णायकरु तम्मदिं···र **चोक्कलुगेरेयलु येक्कोटि-जिनालय**व प्रतिष्ठेयं माडिसि तमगभ्युदय-निमित्तवागियुं धर्म्म-प्रतिष्ठेयं माडिसि बाडुवेयनायक आदेय-नायक·····य-नायक चट्टेय-नायकनुं समस्त-प्रजे-गावुण्डगळुविद्दुं **शान्तिनाथ-देव**रष्ट-विधार्च्चनेगं ऋषियराहार-दानक्कवागि बिट्ट दत्तियेन्तेन्दडे (आगेकी ६ पंक्तियोंमें घानकी चर्चा है) विन्तिनितुमं **शक-वर्ष ११२७ नेय-दुन्दुभि-संवत्सरद उत्तरायण-संक्रमणदन्दु** श्रीमन्महा-प्रधान-अमितय्य-दण्णायक मरिमल्लेय-नायक चेट्टेय-नायकनुं **नयकीर्त्ति-पण्डितर** कालं कर्च्चि धारा-पू·····(आगेकी पांच पंक्तियोंमें हमेशाके अन्तिम श्लोक हैं)

[प्रारम्भिक भागमें नारसिंह-देव तकके होय्सळ राजाओंका वर्णन है । उसका पुत्र वल्लाळ था ।

जिस समय (अपने पदों सहित) होय्सळ वीर-बल्लाळ-देव गङ्गवाडि, नोळम्बवाडि, बनवासि, हन्नुङ्कल्, और दो छः सौ की राजधानीमें दुष्ट-निग्रह और शिष्ट-प्रतिपालन करता हुआ अपने लोक्कुगुण्डीके निवास स्थानमें था :—

तत्पद पद्मोपजीवी लिक्कुण्डका चट्टि-नायक था, (उसकी प्रशंसायें)। उसकी परम्परा निम्न भाँति थी:—बम्मेका पुत्र गन्धम था। बम्मेको एक नाम और मिला था और वह था 'वत्त-प्रहारी'। कारण यह था कि उसने आहवमल्ल-देवको कल्याणमें ऐसा हाथका प्रहार किया कि जिससे उसके गालोंसे खून बह निकला; अतएव उसका नाम 'वत्त-प्रहारी' पड़ गया। उसे आहवमल्लसे 'दोड्डुङ्क-बंकेयर' का भी नाम मिला। गन्धम और मूर्दियकसे आहवमल्ल नामका पुत्र उत्पन्न हुआ था। उसकी पत्निका नाम होक्कवे था, और उनका पुत्र माच था, जिसको राजा विष्णुने रवि-सेट्टिके पुत्र बम्मेको पड़ावमें मारनेसे 'गन्धगुण्ड' का नाम दिया। उससे और मालियकसे मल्ल उत्पन्न हुआ। उसने रेबुकको मारा और चङ्गाल्वकी लड़ाईमें उसके दो हाथियोंको पकड़ लिया: और उसके घोड़े पर भी प्रहार किया, चङ्गाल्वके उत्तम हाथीको मारा मारा और उसका छत्र ले लिया। उसकी पत्नी सोमियक थी, और उनका ज्येष्ठ पुत्र आदित्य था।

महाप्रधान (मंत्री), सर्वाधिकारी अमितव्य दण्डनायक था (उसकी प्रशंसा)। चेट्टि-सेट्टि और चक्कवेसे हरियन-सेट्टि उत्पन्न हुआ था। उसकी पत्नी सुमाचे से अमृत-चमूनाथ, कृष्ण्य, मल्लय्य और कलय्य, ये चार पुत्र उत्पन्न हुये। अपने निवास स्थान लोक्कुगुण्डीमें अमृतदण्डाधीशने एक मन्दिर, एक बड़ा तालाब बनवाया, एक सत्र स्थापित किया एक अग्रहार बनवाया तथा एक प्याऊ खिलाई।

उसके गुरुओंकी परम्परा:—मेघचन्द्र-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देव। उनका पुत्र जिनचन्द्र-नयकीर्ति-पण्डित-देव, इनका पुत्र चट्टि-नेमय केरेयग। अमितव्य

दण्णायकने, अपने उन चारों भाइयोंके साथ, ओक्कलुगेरेमें येक्कोटि-जिनालयकी स्थापना की और (उक्त मितिको) नयकीर्त्ति-पण्डितके पाद-प्रक्षालन-पूर्वक दान दिया।]

[EC, VI, Kadur tl., No. 36.]

४५३

बलगाम्बे;—कन्नड़।

[शक ११२७ = १२०५ ई०]

सारांश

यह शासन **हल्ल** कन्नड़[1] भाषामें वेलगाँव (बलगाम्बे) में एक पेगोडा (वस्ति) की दीवालोंपर उत्कीर्ण है। काल शक ११२७ (१२०६ ई०)।

यह एक जैन वस्तिके लिए एक जैन राजाके द्वारा दिया गया एक गाँवका दान है, जिसने कर्णाटकमें वेगिग्राम (वेल्गाम = बलगाम्बे) पर शासन किया था, (इस वंशका एक राजा **सेन राजा** है, जो भारतवर्षमें प्रसिद्ध है।)

इस शासनमें पाँच राजाओंका वर्णन आया है, जो शक १०२७ से शक ११२७ तकके एक राजवंशका वर्णन करता है। वे पाँच राजा ये हैं:—१. **सेन** राजा; २. उसका पुत्र **कार्त्तवीर्य**; ३. उसका पुत्र **लक्ष्मीभूपति**; ४ और ५. उसके पुत्र **कलि-कार्त्तवीर्य** और **मल्लिकार्जुन**। यह दान शक सं० ११२७, रक्ताक्षि संवत्सर, द्वितीय पौष सुद, बुधवार, मकरसंक्रान्तिके दिन किया गया था। यह दान कुल-गुरु चन्द्रदेव भट्को जलधारापूर्व्वक दिया गया था। इसके बाद आठ दिशाओंकी सीमा आती है।

---

१. यह एक पुरानी कन्नड़ भाषा है; लिपि और भाषा दोनों ही आधुनिक कन्नड़ लिपि और भाषा से बहुत कुछ भिन्न हैं, और थोड़े ही लोग इसको पढ़ सकते हैं।

रायः—यह उल्लिखित कुल वही प्रसिद्ध जैन वंश माना जाता है, जिसने कर्नाटकमें, तुलनापुरके पास, कल्याणीमें राज्य किया था, और जिसके अस्तित्वके [illegible] मैकेञ्जी (Makenzie) के संग्रहके अनेक शिलालेख हैं। इस लेखमें शिवबुद्ध राजाको पूजनेका भाव प्रगट किया गया है, जो जैनधर्मका रक्षक एवं पोषक था।]

[JRAS, 1835, p. 387-388, No 7, a.; 1839, p. 174-176, No 6 (sic), tr.]

४५४

वेलगाँवः—कन्नड़।

[शक ११२७ = १२०५ ई०]

[संभवतः मूल लेख पुरानी कन्नड़ लिपिमें है]

यह लेख दो लेखोंका समाहार (इकट्ठा) है। पहला लेख राजा सेनके वर्णनसे शुरू होता है, यह राष्ट्रकूट वंशी राजाओंकी सूचीमें उसी नामका धारी द्वितीय राजा है। यह वंशावली लेखमें **कार्त्तवीर्य** और **मल्लिकार्जुन** इन दोनों भाइयों तक जाती है। इसके बाद किसी एक राजा **बोच** और उसके पुत्रोंका वर्णन आता है। तत्पश्चात् लेखमें रक्ताक्षि संवत्सर शक वर्ष ११२७ (१२०५–६ ई०), जब सूर्य उत्तरायण हो रहा था पुष्य सुदी २ को शुभचन्द्र-भट्टारकदेवको राजा बीचके द्वारा बनाये गये मठोंके जैन मन्दिरके लिये दान करनेका उल्लेख आता है। इस समय वेणुग्राम (बेलगाँव) राजधानीमें महा-[illegible] **कार्त्तवीर्यदेव** और उनके छोटे भाई युवराजकुमार मल्लिकार्जुनदेव शाही प्रभुताका उपभोग कर रहे थे। जो भूमि दान की गयी थी वह कुण्डी-३००० में अन्तर्गत कोर्रवल्ली 'कम्पण' के मम्बरवाणी गाँवकी दी गयी थी।

द्वितीय शिलालेखके, जिसका ऐतिहासिक भाग पहले ही लेख-जैसा है, दान भी ठीक उसी काल, उसी व्यक्ति, और उसी कार्यके लिये किये गये हैं। पर इस लेखमें दान स्वयं वेणुग्रामकी भूमिके थे। इस लेखमें कार्त्तवीर्य तृतीयकी पत्नीका नाम **पद्मावती** दिया हुआ है। यही नाम दूसरे कन्नड़ लेखोंमें पद्मलदेवी[1] आता है।

इन सब ऊपरके शिलालेखों परसे निष्पन्न रट्टोंकी वंशावली इस प्रकार प्रतिफलित होती है:—

[यहां यह ध्यानमें रखना चाहिये कि वंशपरम्परामें सिर्फ एक जगह टूट आती है और वह **शान्तिवर्मा** और **नन्न**के बीचमें है।]

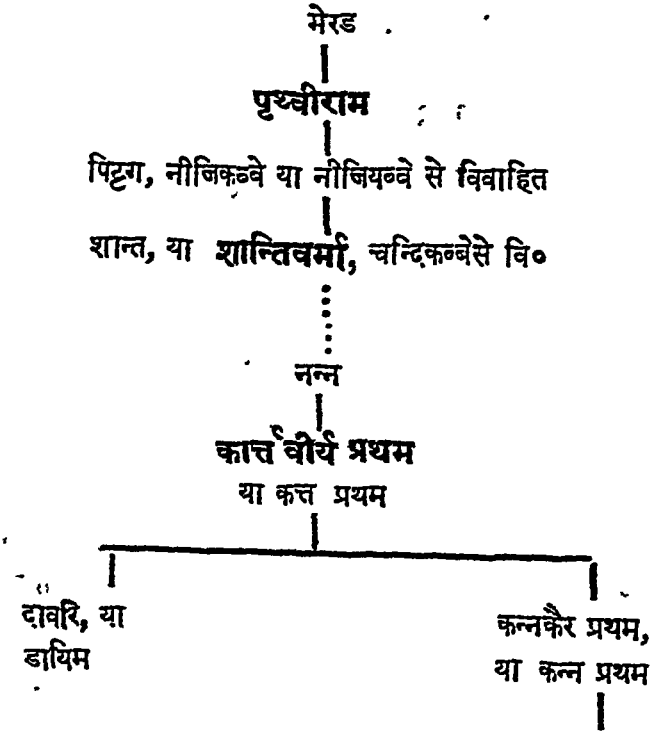

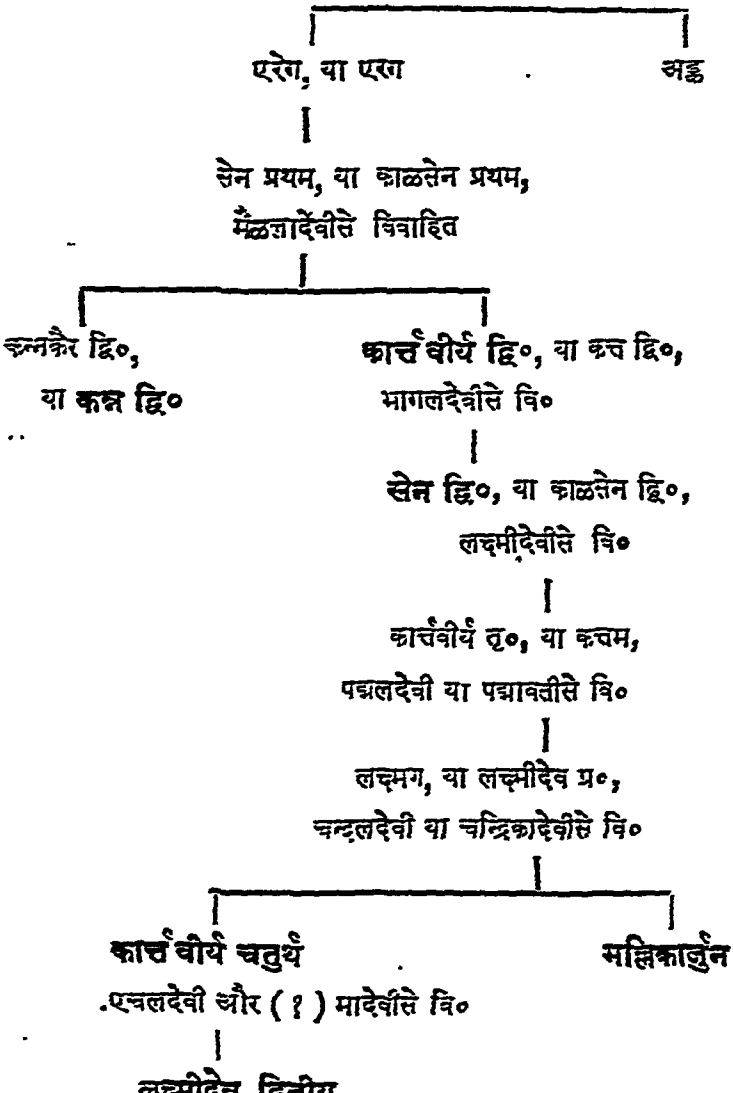
एरेग, या एरग
अङ्क
सेन प्रथम, या काळसेन प्रथम,
मैळलादेवीसे विवाहित
कन्नकैर द्वि०,
या कन्न द्वि०
कार्त्तवीर्य द्वि०, या कच द्वि०,
भागलदेवीसे वि०
सेन द्वि०, या काळसेन द्वि०,
लक्ष्मीदेवीसे वि०
कार्त्तवीर्य तृ०, या कचम,
पद्मलदेवी या पद्मावतीसे वि०
लक्ष्मग, या लक्ष्मीदेव प्र०,
चन्द्रलदेवी या चन्द्रिकादेवीसे वि०
कार्त्तवीर्य चतुर्थ
एचलदेवी और (?) मादेवीसे वि०
मल्लिकार्जुन
लक्ष्मीदेव द्वितीय

निम्नकोष्ठक से अब तक के आये हुए रट्टोंकी ऐतिहासिक कालावलीका पता एक ही बारके देखने में लग जायगा:—

रट्टका नाम	किसके अधीन	इन शिलालेखोंसे विदित काल
पृथ्वीराम.....	राष्ट्रकूट कृष्णराज जो शक ७६८ तथा शक ८२५ में शासन कर रहा था।	लगभग शक८००
शान्तिवर्मा.....	चालुक्य तैलपदेव द्वितीय, शक ८६५ से ६१६.	शक ६०३
कार्त्तवीर्य प्रथम...	चालुक्य सोमेश्वरदेव प्र०, शक ६६२ ? ६६१ ?	.....
अङ्क.....	चालुक्य सोमेश्वरदेव प्र०	शक ६७१
कन्न द्वितीय.....	.....	शक १००६
कार्त्तवीर्य वि०...	चालुक्य सोमेश्वर द्वि०, शक ६६१ ? ६६८, और चालुक्य विक्रमादित्य द्वि०, शक ६६८ से १०४६.	शक १०१०
सेन द्वितीय.....	चालुक्य विक्रमादित्य द्वि० का पुत्र जयकर्ण। बादमें स्वतन्त्र।	लगभग शक १०५०
कार्त्तवीर्य चतुर्थ, और मल्लिकार्जुन	स्वतन्त्र.....	शक ११२४ और ११२७
अकेला कार्त्तवीर्य च.	वही...	शक ११४१
लक्ष्मीदेव द्वितीय...	वही...	शक ११५१

[JB, X, p. 184-185, No 2 II and 12,] a.

४५५

गोग्ग;—कन्नड़—भग्न ।

[शक लुप्त—पर लगभग १२०७ ई०]

[वीरभद्र मन्दिरके पासके एक तीसरे पाषाण पर]

(अग्रभाग घिसा हुआ है)···नेक-ऋषिय ··· ··· ··· वैशाख सुद्ध ५ वृ··· ···· ···· ···अदके सीप्र वडगल्··· ··· ···वण तुम्ब केळगे पडुवलु··· ··· ····· ···मत्तरु १··· ···व ५० अदके चतुस्सीमे नट्ट कलु··· ··· ··· व ५ देवर नन्दा-दिविगेगे गाण १ हत्तेत्तिन वक्कलु··· ··· ···हुडिके-देरे हडियदे ग असगर वोक्कलु १ यिन्तिनितुम सुङ्क··· ··· ···विरुपय्यङ्गलु विट दत्ति समस्त-प्रजेगळिर्द्द कोट्ट धान्यव ग नेल्लु को २ नवणे को २ एळु को १ यिन्तिनितु धर्म्ममं श्रीमतु सोवल-देवियरु ई··· ·· कन्या-दान माडि वासुपूज्य-देवर काल कर्च्चि ग-पूर्व्वक माडिदरु यिन्ती धर्म्ममं नाग-गौडन्···नय-प्रमेतेयागि प्रतिपाळिसुवरू ॥ (हमेशाके अन्तिम श्लोक) ।

[(प्रथम अंश नष्ट हो गया है, और उसका अधिकांश मिट गया है) विरूपय्यके द्वारा भूमिका दान । वासुपूज्य-देवके पाद प्रक्षालन-पूर्वक सोवल-देवीके द्वारा (उक्त) अनेक तरहके धान्यका दान, तथा एक कुमारीकी भेंट । इस पुण्यकी रक्षा नाग-गौड, अपनी आँखकी ज्योतिकी तरह, करेगा । हमेशाका अन्तिम श्लोक ।]

[EC, VII, Shikarpur tl., No 321 .]

४५६

गोग्ग; कन्नड़—भग्न ।

[शक ११३०=१२०८ ई०]

[गोग्गमें, वीरभद्र मन्दिरके पासके पाषाण पर]

ऊपरका भाग मिट गया है)··· ··· ··· ···अच्छुरिये··· ··· ··· ···बुद्धि

... ...भोच्चण्ड ... ...**वीर-चळ्ळाल**... ... ... अरसंक-कर
... ...वोळगागनेक... ... -- चट्टरस... ... ...
आ-दम्पतिगळ पुण्यदिन् ।
आर्द मगनधिक... ... ... ।
... ... ।
... ...विख्यात-सन्धि-विग्रहि **यीच** ॥
अभ्याहारादि-शास्त्र... ... ।
शुभ-चारित्र [ङ्ग] ळिन्दं पर-हित-गुणदिन्दं व्रताचार दिन्दम् ।
शुभ... ... ...उर्वी-नुतं कीर्त्ति-कान्त- ।
प्रभु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-युतनधिकं सेव्य... ।
पति-हिते सीतेयन्ते जिनपार्च्चकि तेवकियन्ते भर्तृ-सम्-
युते गिरिजातेयन्ते... ...लक्ष्मियन्ते सु- ।
व्रते नेगळ्द तिम्मवे... ...न्विते वाणियन्ते तान् ।
अतिशयस् इर्द्दळ्... ... ...अङ्गने **सोवल-देवि** धात्रियोळ् ॥
...ति पद्मसंभवनोळद्रिजे **चन्द्र**... ...नोळ् ।
परम-सुख-प्रशस्ते सिरि विष्णुविनोळ् नेलसिप्प माल्कैयिं ॥
स्थिरतर... ... ...**सोवल-देवि** मनोनुरागदिं ।
निरुपम-सन्धि-विग्रहि-सिखामणि**यीच**नोळी-... ... ॥

[(लेखका प्रथम अंश नष्ट हो गया है, और उसका अधिकांश मिट गया है)।

ईच और उसकी पत्नी सोमल-देवीकी प्रशंसा। उनके गुरु-परम्परा (गुरु-कुल) की तारीफ—लेखमें सिर्फ चन्द्रप्रभाचार्यका नाम रह गया है।

महामण्डलेश्वर मल्लि-देवरस सन्धि-विग्रही मंत्री एचकी पत्नी सोवग-देवीने, अपने छोटे भाई ईचके मर जाने पर, एक वसदिका निर्म्माण किया;—भगवान शान्तिनाथकी अष्टविध पूजनके लिये, और मन्दिरकी मरम्मतके लिये, (एक मितिको) चन्द्रग्रहणके समय, (उक्त) भूमिका दान किया।]

[EC, VII, Shikarpur tl., No 320.]

४५७

सोरबं;–संकृत तथा कन्नड़ ।

—[शक ११३० (१)=१२०८ ई०]—

[सोरबमें, दण्डावती नदीके पूर्व्वी किनारे पर अवभृत-मण्डपके स्तम्भपर]

श्रीमत्परमगंभीर स्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥
अम्बुधि-कमळाकरदोळ् ।
जम्बु-द्वीपाब्जदोन्दु-कर्णिकेयेनिकुम् ।
पोम्वेट्टदरिं तेङ्कलु ।
चेम्वेट्टेस्ळेनिपुदल्ते **भारत-क्षेत्रम्** ॥
भरत-श्री-भूषणदन्त्-।
इरे **कुन्तण-देस** मल्लि नायक-मणियन्त् ।
उरुतर-शोभा-विक्रम-।
करमेने **वनवास-देस**मोळुपं पडेगुम् ॥
तद्देशाद्यनेक-जर्ळानिधि-वळय-वळयित-देशाधिपति ।
यी-वसुधाग्रमं **यदु-कुळ**क्के सळंगे कुडल्के कुर्त्तु प-।
द्यावतियं **सुदत्त-मुनिपर्** व्वरिसल् पुलियागि वर्प्पुदुम् ।
भाविसे नोडि पोय् शळयेनळ मुनिपर् स्सेळेयिन्दे पोय्दु तद्-
देविगे शौर्य्यमं मेरेदु **पोय्सळ**-नाममनान्तना-नृप ॥

अन्तु सुदत्ताचारियर् **पद्मावती-देवि**यिं पदेदित्त·····रदिं तदन्वयदोळनेकरु मुदितोदितमागे राज्य गैद वळिय ॥

उदयिसिदनमृत-वार्धियो ।
ळ् उदयं-गोय्दमर-मूलमेन्निनेगं चेल्व्-।
ओदविरे **वल्लाळ-नृपम्** ।

यदु-कुलदोळु विशद-कीर्त्ति दानाभरणम् ।
धुर-रङ्गं नृत्य-रङ्गं पर-नृपति-कपाळालि ताळालि नन्दल्-।
चरियर्कळ् पाडुवर् तद्विजय-रुह-यशं दुन्दुमि-ध्वानमागुन्त् ।
इरे विद्विष्टोवनिपाळक-निकरद रुण्डङ्गळिं ताण्डवाडम्-।
वरमं माळ्पोळ्पनिं नट्टविगनेनिसिदं **बीर-बल्लाळ-भूपम्** ॥
पगेवर पेण्डिर कण्णिन्द् ।
ओगेदञ्जन-पङ्कितास्बुविन्दं वेळक्कम् ।
मिगुवुदु विचित्रमिन्तिदु ।
जगदोळु **बल्लाळ भूप**-निज-विशद-यशम् ॥

एने नेगळ्द **बल्लाळदेवं दोरसमुद्र**द नेलेवीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे ॥

दोरेयेने **कोडकणि वनवा**-।
से-रोहणाचळद पुरुष-कान्ता-विबुधोत्-।
कर-रत्नङ्गळ कणियेने ।
निरन्तरं तोळगि वेळगि राजिसुतिर्क्कुम् ॥

तद्ग्रामाधिपति ॥

वनवास-देश-भूषण-।
नेनिपं गावुण्ड-मण्डनं-दिक्-कान्ता-।
स्तन-मण्डल-परिशोभित-।
घनतर-तेजः-प्रकाश-बुशृणं **मसणम** ॥

तदपत्य ॥

ध्रु-नदी-प्रोतुङ्ग-रङ्गद्-बहळ-लहरिकान्दोळनोद्भूत-संधा-।
त-नमेरुद्यल्लतान्तावलि-वळयित-डिण्डीर-पिण्ड-प्रभा-मण्-।
ड्न-पाण्डु-प्रौढ़-कीर्त्ति-प्रसर-विसरितोर्व्वी-नभश्चक्र-दिक्च-।
क्र-निकायं तानेनिप्पोन्देसकदिनेनसुं **कीर्त्ति-गावुण्डनादम्** ॥

मनमोल्दुव्वरे कीर्त्तिकुं मसण-गाबुण्डोत्तम-प्रेम-नन्-।
दननं वन्दि-जनार्थितार्थ्य-फळदं प्रत्यक्ष-कल्प-द्रु-नन्-।
दननं दुर्ज्जन-दर्प्प-खण्डननुर्व्वी-जात-गाउण्ड-मण्-।
डननं कीर्त्तियनिन्दु-कुन्द-हर-हासोद्भासि-सत्-कीर्त्तियम् ॥
आर्त्तोंव दानियं घरे ।
कीर्तिकुमभिमान-मूर्त्तियं घन-तेजस्-।
स्फूर्त्तियनी-प्रभु-मण्डन-।
कीर्त्तियनङ्गभव-मूर्त्तियं प्रियदिन्दम् ॥

तदपत्यरु ॥

सोमं जननयनोत्पळ-।
सोमं **मसणं** विरोधि-जन-द्रुत्-रवपणम् ।
श्री-महित-**महादेवम्** ।
प्रेम-महादेवनल्ते रामं **रामम्** ॥

आ-कीर्त्तिगाबुण्डनणुगिनळियम् ॥

विततैश्वर्य्यन माधिनाथ-विभवं-राज-प्रियं वाहिनी-।
पति भोगीश्वर-भूषणं नुत-वृषाङ्कं केशव-प्रेम-वि-।
श्रुतनेम्बोळ्पेनसुं विराजिसे **महादेवं** महादेवनेम्-।
व तदीयाङ्घ्रमनन्वितार्थमेनळर्त्थ्य-व्यक्तियं माडिदम् ॥
सुमनो-भूधर-राजितं विपुळ-शाखं बन्धुर-स्कन्ध-मूर्-।
त्ति महीजात-वरं सु-पत्र-निचय-स्तुत्यं धरा-शेखराङ्-।
घ्रि महोदारि दलेम्ब तन्नेसकदिन्दं भव्य-कल्पावनी-।
चमेनिप्पं विबुध-स्तुतं विभु-**महादेवं** चमूपोत्तमम् ॥
ओदवल् कण्गडे मर्व्वु पोगे रवि लोकक्केय्दे कण्णागि तान् ।
उदयं-गेय्दे वोलिन्दु रेचरसनिन्द्रत्वक्के पक्कागे का-।
णदे मुन्दं देसेगेट्ट जैन-जनक्केल्लं लोचनं तानेनल्क् ।

उदयं-गेय्दनिला-तळ-स्तुत-**महादेवं** चमूपोत्तमम् ॥
कवि-रिपु गुरु गुरु-रिपु भृगु-।
ववरेवरेनल् धरित्रि कवि-गुरु-जनतोद्-।
भवमोदवे मन्त्र-गुणमोप्-।
पुवुदु **महादेव-दण्डनाथो**त्तमनोळ् ॥
अन्तु कीर्त्ति- गावुण्डं तन्नळिय **महादेव-दण्डाधिनाथ**नुं तदपत्यरुं बेरसु ॥
सल्ललित-गुण-गुणगणं श्री- ।
वल्लभनभिमान-मूर्त्ति कीर्त्ति-वधू-धम्- ।
मिल्ल-विराजित-मल्ली- ।
फुल्लं श्रेष्ठि-प्रतान-मण्डन मल्लम् ॥
एने नेगळ्द **मल्ले-सेट्टिग**- ।
मनुपम-चरित्र-सीते **माचाम्बिके**गम् ।
जनियिसिदं सुकृतं सञ्- ।
जनियिसे निज-कुलके **नेम**नखिळ-ललामम् ॥
नेगळ्दर् गुरुगळ् **गुणचन्**- ।
द्र-गणि-वर**धर्मसेन**संग (घ)-**काणूर्-गण**दोळ् ।
सोगयिसुव **नुन्न-वंश**दो- ।
ळेसेवररागे **नेम**नभिनन-रामन् ॥
पर-हित-मूर्त्ति भव्य-जन-कळ्प-कुजं विभु **नेमि-सेट्टि** बिन्-
तरदोळे कूडे **जिड्वळिगे-नाड् एडे-नाडे** निसिप्प नाळ्गवोळ् ।
परम-जिनेन्द्र गेहमननेकमनुद्धरिसुत्तामित्तलुद्- ।
धरिसिदनुत्तरोत्तरमेनल् निज-कीर्त्ति-लता-वितानमम् ॥
कोड कणि-पुर-लक्ष्मय मेय्- ।
दोडवेनिसिरे **नेमि-सेट्टि** विभु माडिसिदम् ।
कडु-गोर्व्वि कीर्त्ति-लते दोङ्- ।
गुडि विट्टुविने शान्तिनाथ-जिन-मन्दिरमन् ॥

मनमर्हत्-प्रतिकृतिनिम् ।
तनु सु-व्रतदिं घनं जिनेन्द्रालयसञ्-।
जनन-क्रियेयिन्दति-पा ।
वनमागिरे **नेमि-सेट्टिट** नेगळ्द जगदोळ् ॥

अन्तु **नेमि-सेट्टि** सक-वर्षद [सावित्रद] **नूर** मूवतेनेय **विभव-संवत्सरद ज्येष्ठ शु १०** शुक्रवारदोळ् **शान्तिनाथ-देवर** प्रतिष्ठेयं माळ्प कालदोळ् **कीर्त्ति-गावुण्डनुं** तत्तनूजरुं तन्नाळय **महादेव-दण्डनायकनुं** परिवृत मागिरलु देवरष्ट-विधार्च्चनेगं ऋषियराहारदानकं कोट्ट गद्दे कम्म ५०

वरद-**श्री कण्ठ-व्रति-**।
परिक्किदर् शान्ति-[जि]न-गृहाचार्य्यर्गोप्-।
दरे योग-पट्टिगेयना-।
दरदिन्दं वज्र-पञ्जरमनिक्कुवोलु ॥
यिदु जोग-पट्टिगेयनान्-।
तुदु मद्-धर्म्मन् दलेन्द-संख्यात-गणा-।
त्युदित-यशर् प्रतिपालिप-।
रुदात्तदी- **शान्तिनाथ-जन-मन्दिरमम्** ॥

[जिन शासन की प्रशंसा ।

जम्बूद्वीप, उसमें भरतक्षेत्र, उसमें कुन्तण देश, उसमें बनवास-देश ।

जिस समय उस तथा समुद्र-परिवेष्टित अन्य देशोंका अधिपति यदुकुलके सळको यह मुख्य क्षेत्र देना चाहता था, सुदत्त मुनिपने पद्मावतीको एक चींतेके रूपमें प्रकट करवाया । पद्मावतीको चींतेके रूपमें देखते ही, उन्होंने सलसे कहा—'पोय् सल' (सल, मारो); जिसपर उसने चींतेको सल (डण्डे से) मारा और देवी पद्मावतीको उसके साहसका प्रदर्शन कराया, और इससे राजाका नाम 'पोय्सळ' पड़ गया ।

इस तरह सुदत्ताचार्यके पोय्सळ राज्यकी नीवं गेरनेके बाद उस वंशमें बहुत-से राजा क्रमशः हुए। जिनके बाद राजा वल्लाळ उत्पन्न हुआ; उसकी कीर्त्तिकी प्रशंसा।

जिस समय वल्लाळ-देव दोरसमुद्रके निवास स्थानमें था और सुखसे राज्य कर रहा था:—

कोडकणि क्षेत्रका वर्णन। उसका अधिपति मसन था। पुत्र, (प्रशंसा सहित), **कोत्ति-गावुण्ड** था। उसके पुत्र **सोम, मसन, महादेव** और **राम** थे। उसका दामाद **महादेव-दण्डनाथ** था; (उसकी प्रशंसाएँ)।

मल्ल-सेट्टि और माचाम्बिकेसे नेम उत्पन्न हुआ था, जिसके गुरु मूलसंघ तथा काणर-गण के गुणचन्द्र थे। नुल-वंशके नेमि-सेट्टिने बिद्दळिगे-नाड् तथा एडे-नाड् में कई जिनेन्द्र-भवन बनवाये थे। कोडकणिमें उसने शान्तिनाथ-जिनालय बनवाया था।

इस प्रकार नेमि-सेट्टिने (उक्त मिति को[1]) शान्तिनाथ-देवकी प्रतिष्ठाके समय, कीर्त्ति-गावुण्ड, उसके पुत्र तथा दामाद महादेव-दण्डनायकसे परिवेष्टित होकर ५० दण्ड प्रमाण धान्य-क्षेत्र भगवानकी अष्टविध पूजाके लिए तथा ऋषियोंके आहारके लिये दानमें दिया।

और श्रीकण्ठ-व्रतिपने शान्ति-जिन मन्दिरके पुजारीको एक योग्य स्थान दिया।

[EC, VIII, Sorab, tl., No. 28]

१—'शक-वर्षदनूर-मूवतेनेय,' इसमें हजारकी संख्या लुप्त है।

४५८

अनवेरी;—संस्कृत तथा कन्नड़ भग्न ।

वर्ष प्रजापति [१२११ ई० (ल्यू० राइस) ।]

[अनवेरी (होंऊलूर परगना) में रंगप्पाके खेतमें पड़े हुए पाषाणपर]

स्वस्ति श्रीमतु ··· **यणन्दि-भट्टारक-देवरु** ···अर्हन्त-बोवि-सेट्टि श्री-मूलसंघ-सुर ··· गण **मार-सेट्टिय** मग **विट्टि-सेट्टि** धर्म्मं ··· माडिसिद ··· **प्रजापति-संवत्सरद** चैत्र-शुद्ध १० सोमवार श्रीमतु **होय्सण-चोर-वल्लाळ-देव** पृथ्वी-राज्यं गेय्युत्तिरलु कळु ··· तिन्नयङ्के ··· ··· २० कम्ब केय्य ·····पूर्व्वक माडि भूमि ·····

··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· लाञ्छनम् ।
लेखात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

(अन्तिम श्लोक)

[कुछ सेट्टि लोगोंने (जिनके नाम दिये हैं), (उक्त मितिको),··· यनन्दि-भट्टारक-देवको, जब कि होय्सग चोर-वल्लाल-देव दुनियांपर शासन कर रहे थे, दान किया । जिन शासनकी प्रशंसा । इनेशाके अन्तिम श्लोक ।]

[EC, VII, Shimoga tl., No103.]

४५९

वन्दलिके-संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न ।

वर्ष श्रीमुख [१२१३ ई० (ल्यू० राइस) ।]

[वन्दलिके में, शान्तीश्वर बस्तिके उत्तरकी ओरके द्वितीय पाषाणपर]

श्री-मूलसंघ-जलधौ समुदेत्य नित्यम्
क्षाणूर्गणोज्ज्वल-सुधाम्भसि तिन्त्रिणीक- ।

गच्छाच्छके **ललितकीर्त्ति-मुनेर्व्विनेयः**
आशाम्बर-श्रियमभाच्छु**भचन्द्र-देवः** ॥
वर्ष-श्रीमुख-मास-चैत्र-सित-पक्षाच्चैः-चतुर्थी-दिने
वारे चान्द्र [···] महति नक्षत्रेऽश्विनी-संज्ञिके ।
दैने ज्योतिपि कृत्तिका ··· परि ··· सौभाग्य-योगे वणिग्-
नामाद्योत्करणे स्व ··· य **शुभचन्द्राख्य**-व्रती योगतः ॥
सन्यस्य सर्व्व-सङ्गानि पठन् पञ्च-पदानि च ।
समाहितो निर्व्ववृते **शुभचन्द्र**-व्रतीश्वरः ॥
भरताधीश्वरनिन्दमन्द-शुभचन्द्राभिख्यनिन्देन्दु भा- ।
सुर-जैन-व्रतिनायनप्प विदितानन्दाभिधाचार्य्य ··· ।
··· ··· **शुभचन्द्र-देव**-मुनियिन्द् ··· आदुदत्यूर्जितम् ।
सुर-राज्योर्जितवप्प ··· ··· ··· जगत्पावनम् ॥
बन्दणिके-मठाधिपति-**शान्ति-जिनावसथा**ग्रदोळ् **जगम्** ।
ब ··· ··· मण्टपमनोप्पिरे मासिसि तन्न कीर्त्ति-या- ।
नन्द ··· नाडे भू-भुवन-मण्टपडोळ् ··· ··· ··· ।
सन्द समाधियन्द ··· ··· ना **शुभचन्द्र**-संयुतम् ॥ श्री

[श्री-मूलसंघ, क्राणूर्-गण तथा तिन्त्रिणीक गच्छके, ललितकीर्त्ति-मुनिके आज्ञाकारी, शुभचन्द्र-देव थे। (उक्त मितिको) वह स्वर्ग गये। 'सन्यसन' (समाधि या सल्लेखना) में सब कुछ त्यागकर, पाँच शब्दों (परमेष्ठियोंके वाचक) को उच्चारण करते हुए, उनका मरण होगया। भरतेश्वरसे लेकर ··· ··· ··· ··· ·· बन्दणिकेके मठाधिपतिके लिये ··· ··· ··· शान्ति वसदिके सामने एक मण्डप खड़ा किया गया था।

[EC, VII, Shikarpur tl., No 226 .]

४६०

होलल्केरे,-संस्कृत तथा कन्नड ।

[बिना काल-निर्देशका, पर लगभग १२१४ ई० का ?]

[होळल्केरेमें, शान्तेश्वर मन्दिरके पश्चिमकी ओरके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परम-गम्भीर-इत्यादि ॥

स्वस्ति य [म]-नियम-स्वाध्याय ध्यान-मौनानुष्ठान-जप-समाधिशील-गुण-सम्प-न्नरं ··· कडियाण-प ··· ह क्रमा रं मध्याह्न-कल्प-वृत्तरुमप्य **पार्श्वसेन-भट्टारक-देवरु** होळल्केरेय शान्तिनाथ-देवर चीर्ण्ण-जिनालयोद्धारवनु माडिसिद तुर्ग्गा ··· हुलिराय-गण्ड-भेरुण्ड **पाण्ड्य-राय**-प्रतिष्ठपनाचार्य्य गल-वेण्टेका ··· श्रीमं-महा-प्रताप-चक्रवर्त्ति **होयिसण**-श्री-**वीर-वल्लाळ-देवरु** वि ·· ··· **पट्टण**-द्रोल सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरलु तत्पादपद्मोपजीविगळप्प श्रीमतु-म. ·वान ····· **दण्डनायकर** कुमार **सोम-दण्णायकरु हिरिय-वल्लाळ-दण्णायकरु वेम्मलूर-पट्टण**ोळु सुखसंकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे अवर मनेय वळ ··· नायक व ··· नायक नारायण मेच्चि मेच्चे-दन-गण्ड ना ··· नाय-कर गण्ड मूरु सङ्गण रावुत्तर गण्ड श्रीमतु-महा-सामन्ताधिपति **वाडद्** ··· **से-नायकन** मग मीसेयर गण्ड वाडद ··· पे-नायकनु **होळळकेरेय** वीर-वृत्ति-यागि ··· तं विदलि **शक-वर्ष ११३६ नेय श्रीमुख-संवत्सरद फाल्गुन-सु** ··· **बृहस्पतिवारदलु** होळल्केरेय शान्तिनाथ-देवरिगे नित्यो ··· वागि विट्टु हिरिय-केरेय हिन्दे होल ··· कोळग ··· ··· ··· ··· हट्टनद ··· ··· ··· वृत्ति ··· ··· ··· ···

[इस लेखका पहला अंश पूर्वगामी लेख नं० ३३८ के अंशसे मिलता है ।

जिस समय महा-प्रताप-चक्रवर्त्ति होय्सण वीर-वल्लाल-देव ··· पट्टवमें राज्य करते हुए निवास कर रहे थे :—तत्पादपद्मोपजीवी, महाप्रधान, ··· ··· दण्ड-

नायकके पुत्र सोमदण्णायक जो पुराने वल्लाळ-दण्णायक थे, वेम्मतूर-पट्टणमें, शान्ति से राज्य कर रहे थे :—बहुतसे नायकोंने (जिनके नाम दिये हैं), (उक्त मितिको), होळलकेरेके शान्तिनाथदेवकी पूजाके लिये उक्त भूमिएँ हमेशाकी भेंटके रूपमें दीं।]

[EC, XI, Holalkere tl., No 2 .]

४६१

श्रवणबेल्गोला;—कन्नड-भग्न।

[बिना कालनिर्देशिका]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

४६२

सियाल-वेट;—संस्कृत

[सं० १२७२=१२१५ ई०]

लेख श्वेताम्बर सम्प्रदाय का है।

[Revised Lists ant. rem. Bombay (ASI, XVI), p. 254, t.]

४६३

श्रवणबेल्गोला-कन्नड-भग्न।

[वर्ष ईश्वर = १२१७ ई० ? (लू० राइस)]

जै० शि० सं०, प्र० भा०]

४६४

गिरनार-संस्कृत-भग्न ।

(सं० ? [२७१] (?) = १२१३ ई०)

श्वेताम्बर लेख ।

[Revised Lists ant. rem. Bombay (ASI, XVI), p. 355 No 14, t. and tr.]

४६५

आसीकेरे- संस्कृत और कन्नड ।

[शक ११३१ = १२१३ ई०]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलांछनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥
श्री-रामावसथं जगज्जननुतं गोत्रास्पदं भूरि-गं- ।
भीरं सत्व-समन्वितं निखिल-वस्तु-ख्यानधुर्व्वीतळा- ।
धारं नित्यमुदात्तवप्रतिमवेम्बी-परमेयिं वानिसल् ।
पारावारद-वोल् नेगल्ते-वडेदिर्क्कुं **यादवा**ख्यान्वयम् ॥
सळनेम्ब तद्-**यदुर्व्वीश्वर-कुळ**-वनितं जैन-योगीन्द्रनं निर्- ।
म्मळ-चित्तं सादर्दुं सन्दिर्प्पुदुवति-कुपितं व्याघ्रनेय्तर्प्पुदुं **होय्** ।
सल येन्दा-योगि पेळ् ··· दे सेळेयोळदं पोय्दु गेल्दर्कळिं **होय्** ।
सळ-नामं यादवर्मादुदुबसदोदविन्दादवन्दिन्दविन्तल् ॥
आ-**होय्सळा**न्वयदोळुदयिसिद **विनयादित्य**-पुत्रनप्पेरेयङ्ग-नृपङ्गव्-
एरेय-देविगं पुट्टिद **विष्णु-नृपन** विक्रमं पेळ्वडे ॥
पर-भूपाळरनिक्कि तद्धरेयनार्न्नु यत्नमं माडे वित्- ।

तरदिन्देत्तिसिदा-सुरालय-समूहं प्रेमदिन्दा-तुला- ।
पुरुषं कट्टिसि ••• ••• रेगळ् बिट्टग्रहारङ्गळी- ।
धरेयोळ् कूडे निमिर्चि ••• नसवनेन्दुं **विष्णु**-भूपालन ॥
आ-विभुगं सति-लक्ष्मा- ।
देविगवादं विशाल-निर्म्मल-कीर्त्ति- ।
श्री-वरनदटर नवनं ।
भूवर-गन्धेभ-सिंहनेनिप **नृसिंहम्** ॥
नेगळ्दा-वीर-**नृसिंह**-भूमिपतिगं शृंगार-वार ••• ।
••• यप्पेचल-**देवि**गं नेगळ्दनुव्वीं-मण्डनं कीर्त्तिग- ।
र्त्तिगनन्यावनिपाळ-दर्प्प-दळनं दानोन्नतं मा ••• ।
जगती-रक्षण-दक्ष-दक्षिण-भुजं **वल्लाळ**-भूपालकम् ॥
बुधनन्तिळा-वरं वा- ।
र्धियन्ते विशाल-विलसद्यडङ्गोणं ।
मधुसखनन्तसमाज्ञं ।
सुधांशुधरनन्तुमा-धवं **वळळाळम्** ॥
सिरि हरिय सङ्गदिं शं- ।
वर-रिपुवं पडेद तेरदे **वल्लाल**-मही- ।
वर-सति पद्मळ-माडे- ।
वि रमणि पडेदळ् नृसिंहनं गुण-निधियम् ॥
हृदय-कळंकनल्लद जडात्मकनल्लद शीतरोचियेम्- ।
बुदु गुरु-गोत्र-शत्रु-व्रणवल्लद कौशिकनल्लदिन्द्रनेम्- ।
बुदु विपरीतनल्लद कु-जन्मकनल्लद कल्पवृक्षवेम्- ।
बुदु विबुधाश्रयैक-निधियं कुवराग्रणि-**नारसिंह**नम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभं महाराजाधिराजं परमेश्वरं **द्वारावती-पुरवराधीश्वरं यादव-कुला**म्बर-द्युमणि सम्यक्त्व-चूडामणि मलेराज-राज मले-परोळ् गण्ड कदन-प्रचण्डनेकाङ्ग-वीर निश्शङ्क-प्रताप चक्रवर्त्ति होय्सळ **वीर-**

बल्लाळ-देवर् स्सकल-धरित्रियं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपाल [न] दिं **दोरसमुद्रद** लेवीडिनोळ् सुखदिं राज्यं गेय्युत्तुमिरे तदीय-पाद-पद्मोपजीविगळप्प**रसियकेरेय भव्य-नकरङ्गळ** रत्नत्रयाधिष्ठितत्वमे धर्म्म-प्रतिपालन-शक्तियं **कळचुर्य्य-कुळ**-सचिवोत्तमं **रेचरस** केळ्दा बल्लाळन पद-पयोजमनाश्रयिस तद··· वत्तियं··· अरसियकेरेयोळ् सहस्र-कूट-जिन-बिम्बमं प्रतिष्ठेयं माडिसिया-देवरष्ट-विधार्च्चनक्कं पूजारि-परिचरकर जीवितक्कं जीर्णोद्धरणक्कवेन्दा **बल्लाल**-भूपनिं इन्दर-हाळं धारा-पूर्व्वकं पडेदु तम्मन्वय-गुरुगळ् श्री-**मूल-संघद देशि-गणद पुस्तक-गच्छदिङ्ग-ळेश्वर**द वळियेनिसिद **माघनन्दि-सिद्धान्त-देवर** शिष्यर् **शुभचन्द्र-त्रैविद्य-देवर** शिष्यरप्प श्री-**सागरनन्दि-सिद्धान्त-देवर्गे** धारा-पूर्व्वकवागूरं कोट्टि-धर्म्ममं भव्य-नकरंगळ्गे कैय्-तडेयागित्त रचरसन म ··· ··· नरसियकेरेय पेर्म्मेयं पेळ्वडे ॥

वदनं वाग्-वनिता-विलास-सदनं वक्त्रं रमा-नर्त्तकी-
विदितानर्त्तबुदारवर्त्ति-जनता-सन्तर्प्पणं कीर्त्ति-कौ- ।
मुदि जैनार्ण्णव-वर्द्धनं गुण-गणं भू-भूषणं मूर्त्ति-चा- ।
रु दयान्वितमेनल्के **रेचण-चमूपं** पेर्म्मेयं ताळ्द्दम् ॥
ओसेदवरिवरेन्नदे स- ।
न्तोसमप्पिनेवित्तु पडेदनी-वसुमत्तियोळ् ।
वसुधैक-बन्धुवेम्बी- ।
पेसरं **रेचरस**नुन्तु देशियिनाय्ते ॥
सारं नोळ्पर्गे पेम्पुळळरसियकेरेयोळ् विश्व-वेदाङ्क-विप्रर्-
व्वीरर्क्काव्याळूगळाढ्यर्प्परदरचल-वाक्यत्तुं रीयर्व्विनूता-
कारं कान्ता-जनं कारुगळ-मदरिळा-मण्डनं देगुळं गं- ।
भीरोदारं तटाकं फळ-भरित-वनं पूत-पूदोटवेन्दुम् ॥
नत-भृङ्गाम्भोज-षण्डं शुक-पिक-विविधोद्यान-संकीर्णवापू-
र्णन-तटाकं गन्ध-शाळी-परिमळ-कळितं पुष्प-पुंड्रेक्षु-वापी-

वृतवुत्तुङ्ग-प्रभा-भासुर-सुर-गृह-संपन्नवुद्यत्प्रजा-पू- ।
रितवुर्व्वी-मण्डनं सन्दरसियकेरेयं वण्णिसल् बल्लनावम् ॥
जिन-धर्म्मवादियागिर्- ।
द्द निखिळ-धर्म्मङ्गळं समन्तनुनयदिन्- ।
दे निमिर्च्चि नडयिपर्स्सुज्- ।
जनररसियकेरेय सायिरोक्कल् सततम् ॥

आ-सायिरोक्कल् तमगाधारवागिर्प्प भव्यर पेम्मेंयेन्तेने ॥
नुडि सत्योद्योत-गेहं नडेवळे जिनधर्मानुगं शाकनिं नाल् ।
मडि जैनाङ्घ्रि-द्वयाराधने घनद-निभं पेम्मेंं सत्पात्रदोळ् मेय्- ।
वडेदिक्कुं दानवर्त्यार्ज्जने निखिळ-जनोत्साहवाबन्ददेम् नोळ् ।
पडे पेम्यं ताळ्दि सन्दीयरसियकेरेया भव्यरोळ् पाटियाव्रम् ॥
भू-भुवनदोळरसियकेरे- ।
या भव्यगुंण-गण-प्रसन्नर्सुबनर् ।
ल्लोभ-विवर्जितराहा- ।
राभय-भैषज्य-शास्त्र-दान-विनोदर् ॥
एसेये सहस्र-कूट-जिन-बिम्बमनग्रणि रेच मुं प्रति- ।
ष्ठिसि [.] वनक्के भव्य-तति कोटेयनिक्किसि गोटेयिन्दवे- ।
त्तिसि गृहमं नेगळ्दरसियकेरेयोळ् गृह-गतियागि पेम्प्- ॥
ओसेये नृपं ··· ··· र्द्दंस-निष्क्रमना-धरित्रियम् ॥
एळ्-कोटिगळी-धर्म्मम- ।
नळ्कर पेर्च्चिन्दे नडेयिप ··· नेळे- ।
योळ् ··· ल्वे ··· धर्म्म-मन्दिर- ।
र् ऐल्कोटि-जिनालयाङ्कमादत्तादम् ॥

स्वस्ति समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमत्-तेङ्कणय्यावळे एनिसिद् सीताळमळिगेयरसिय-केरेय भव्य-नकरङ्गळु संहस्र-कूट-चैत्यालयमनेत्तिसिया-देवरष्ट-विधार्च्चनेगं पूजारि-

परिचारकर चीवितक्कं वन्द-चातुर्व्वर्ण्णङ्गळाहार-दानक्कं चीर्णोद्धारणक्कवेन्दु समस्त सायिरोक्कुगळ कय्यलु धारा-पूर्व्वकं भूमियं पडेदा-भूमिय तेरेगा **वल्लाल**-भूपनिं [illegible] इत्तु-होन्न ··· तेरेयोळगिळिहिसि सकळ-श्री-करङ्गळ सिवडियो ··· चन्द्रार्क-तार-म्बर सले सल्वन्तं वर·· **इङ्गळेश्वरद वळियेनप्पा-सागरणन्दि-सिद्धान्त-देवरन्वयदवर वशं माडि निखिलभव्य-जनङ्गळारय्यागि सक-वर्षद ११४१ नेय प्रमादि-संवत्सरद पुष्य-मासद पौ** ··· **दिवारदन्दु** बिट्ट दत्ति देविगेरेय मूड-गेरय तोण्ट्द कम्ब ४० । बसव-गेरय केळगण तो ··· ·· द कम्ब ··· ··· ··· कम्मं ····· वूर गडियलु भट्टद हसरदलु समस्त-नकरंगळु बिट्ट गद्दे ··· ··· हरवरु बिट्ट मानेण्णेगे गाणवेरडु ॥

नुत-भुवन-शान्तिनाथ- ।
प्रतिष्ठेयं भद्रमागे तद्-गृहमुमं ।
क्षिति पोगळे माडिदर्स्सन्- ।
नुतरर्सियकेरेय भव्य-नकर-प्रकरम् ॥

आ-देवर प्रतिमेगळ-पट्टण-स्वामि **कल्लि** ····· कोट्ट ग ··· ··· देवरर्च्चनेगे बट्टियिं वन्दुं नडवन्तु बिट्टनङ्गडिय **जक्कि-सेट्टिय** मग नाडिगम-सेट्टियक्कय-भण्डार-वागे कोट्ट ग १२ प्रसन्न-**कलिसेट्टि** कोट्ट ग २

जिन धर्म्मं नेलसिर्क्के भूतलदोळेन्दुं धर्म्मिग ····· ।
तनवी-धर्म्मद दत्तियं तिलिसिदग्गळियुं वय-श्रियुमक्क् ।
ए नेरळ्दोवादेदर्के कुन्दनोडरिप्पङ्गावगं सार्गं सव्-
वन-गो-ब्राह्मण-सन्मुनि-प्रकरमं कोन्दा-महा-पातकम् ॥

[जिन शासनकी प्रशंसा । हमेशाकी तरह बल्लालतककी होय्सलोंकी वंशावली और उन्नतिका वर्णन ।

जब (अपनी उपाधियों सहित), प्रताप चक्रवर्ती होय्सल वीर-बल्लाळ-देव शान्तिसे राज्य करते हुए, दोरसमुद्रमें निवास कर रहे थे:—

तत्पादपद्मोपजीवी अरसियकेरेके निवासी थे। उनकी रत्नत्रय और धर्ममें दृढ़ता सुनकर कलचुर्य्य-कुलके सचिवोत्तम रेचरसने, बल्लाल देवके चरणोंमें आश्रय पाकर अरसियकेरेमें सहस्रकूट जिनकी प्रतिमा स्थापित की। उन भगवान-की अष्टविध पूजन, पुजारी और नौकरोंकी आजीविका, और मन्दिरकी मरम्मतके लिये,—राजा बल्लालसे हन्दरहालु प्राप्त करके उसे अपने वंशके गुरू श्री-मूलासंघ, देशिगण, पुस्तक-गच्छ और इङ्गुलेश्वरबलिके माधनन्दि-सिद्धान्त-देवके शिष्य शुभचन्द्र-त्रैविद्य-देवके शिष्य सागरनन्दि-सिद्धान्त-देवको सौंप दिया।

रेच-चमूपकी प्रशंसा। अरसियकेरेकी शोभाका वर्णन। वहांके जैनोंका वर्णन।

रेच द्वारा स्थापित चमचमाते हुए सहस्रकूट जिन-बिम्बके लिये जैन लोगोंने १ करोड़ रुपया इकट्ठा कर प्रसिद्ध अरसियकेरमें एक मन्दिर तथा उसके चारों ओरकी चहारदीवारी बनवायी। इसमें जिससे जितना बन पड़ा, यथाशक्ति द्रव्य दिया, और राजा ··· ··· ने १० निष्ककी रेट (भाव) से जमीन दी। इस जिनालयमें समस्त ७ करोड़ लोगोंकी सहायता होनेसे, इसका नाम 'एल्कोटि-जिनालय' रखा गया। इस चैत्यालयके लिये १००० कुटुम्बोंसे जमीन खरीदी गयी थी और राजा बल्लालसे उस जमीन परसे १० होन्नुवाला कर छुड़ा लिया गया था। अरसियकेरके लोगोंने एक शान्तिनाथका मन्दिर और बनवाया था। उसके पूजा के प्रबन्धके लिये कल्ल ··· ··· ने एक दुकान दी तथा दूसरे लोगोंने (उक्त) दान दिया।]

[EC, V, Arsikere, tl., No. 77.]

४६६

निट्टूरु;—कन्नड़-भग्न।

वर्ष प्रमाथि [= १२१६ ई० ? (लू. राइस)।]

[निट्टूरु (गुब्बि परगना) में आदीश्वर वस्तिकी पश्चिमीय दीवालके एक पाषाणपर]

स्वस्ति श्री-मूलसंघ देशी-गण पोस्तक-गच्छ श्री-कोण्डकुन्दान्वयद श्री-**पद्मप्रभ-मलधारि-देव**र गुड्डि जैनाम्बिके येनिसिद **माळव-सेट्टिकब्बे**यर मग **मल्लि-सेट्टि** ई-चैत्यालयद होर-भित्तिय सुत्तण प्रतिमेयं **प्रमाथि-संवत्सरद ज्येष्ठ-शुद्ध-पञ्चमी** ····· दण-वागि माडिद ··· ··· महा श्री

[श्री मूलसंघ, देसिय-गण, पोस्तक-गच्छ तथा कोण्डकुन्दान्वयके पद्मप्रभ-मलधारि-देवकी गृहस्थ-शिष्या माळवे-सेट्टिकब्बेके पुत्र मल्लि-सेट्टिने,—(उक्त सालमें), इस चैत्यालयकी बाहरी दीवालोंको चारों ओर मूर्त्तियोंसे सजाया।]

[EC, XII, Gubbi tl., No. 8.]

४६७

हुम्मच:—कलश-भग्न।

[काल लुप्त, पर लगभग १२२० ई० ?]

[पद्मावती मन्दिर के प्राङ्गणमें, छठे पाषाणपर]

श्री

स्वस्ति श्री-जिन-शासन-।
विस्तारित-**मूल-संघ-देशि-गणदोळ्**।
····· ····· ····· ··· ···।
····· ····· निसिर्द्द **कोण्डकुन्दान्वयदोळ्** ॥

कीर्त्ति-देवर मुनिचन्द्र-मलधारि-देवर शिष्यरमय ····· ····· ····· समाधियिं मूडपि स्वर्गक्के सन्दरु

[मुनिचन्द्र-मलधारिके शिष्य मूलसंघ, देशीगण तथा कुन्दकुन्दान्वयके अमय ····· ····· का स्मारक।]

[EC, VIII, Nagar tl., No. 54.]

४६८

दानसाले;—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न।

११८० ?

—[··· ··· =लगभग १२२० ई०]

[दानसालेमें, उत्तरकी ओर, वस्तिके पासके एक समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

नमो अरिहन्ताण॥ स्वस्ति श्रीमतु **शक वर्ष ११४ ··· नेय सार्वधारि-संवत्सरद कार्त्तिक-सुद्ध १० सोमवारदन्दु** श्रीमन्महामण्डलेश्वरं कलिगण-कुल **मण्डळ-महीपालन** सर्व्वाधिकारि-**पद्मप्रभ-देवर** गुड्ड **वैजण-सेनवोवन** पुत्र **वय्ळ-सेनवोवन** तम्म **चळिग-सेनवोवनु** निलायु··· ··· सानमनपिदु॥ पोरेदा ··· ··· अगे पर-मण्डळद महीपाळरभिप्राय (२ पंक्तियां नष्ट हो गई हैं) सुखदिं वैजण-सेनवोव॥ तनुजातं ··· ··· ··· **कादम्बलिग** यिन्ती ··· ··· ··· सहितं मन्त्रि ··· ··· ··· दियकोगेद ··· ··· ···

[जिन शासनकी प्रशंसा।

स्वस्ति। (उक्त मितिको), चलिग-सेनवोव,—जो वैजण-सेनवोवके पुत्र वय्ल-सेनवोवका छोटा भाई और महामण्डलेश्वर मण्डल-महिपालका सर्व्वाधिकारी पद्मप्रभ-देवका गृहस्थ-शिष्य था,—अपना अन्त समीप जानकर, ··· ····· ··· ···कादम्बलिगमें ··· ··· ··· स्वर्गको गया।

[EC, VIII, Tithahalli tl., No. 191.]

४६९

पुरले;—कन्नड़।

—वर्ष विजय [१२२७ ई० ? (लू. राइस)।]

[पुरलेमें, वस-सेट्टिके खेतके स्तम्भपर]

पूर्व-मुख

व्यय-संवत्सर-पुण्यद । बहुळद वारसिय कुज्जन वारदोळ् सद्- ।
विनय-निधि **बाळचन्द्र** । नु-समाधियं मुडिपि नाकमेय्दिदनीगळ् ॥
अतिथिगम् ••• । प्रतिमा-प्रागल्भ्य मनु-मुनिगु ••• ।
••• ••• रुत-वाडिगळ दानम- । वतिशयमी-**बाळचन्द्रनुळ्ळन्नेवरं** ॥
ळले वुच-समिति सिश्टर । वळगं मेल्मक्षने मरुगे दान-विनोदम् ।
प्रळल-प्रक्षोभदवोल् । कळि श्री-**बालचन्द्रनभिनव-चन्द्रम्** ॥

पश्चिम मुख

मनमं निपमिसलरियर् । त्तनुमं ••• तोर्प्प मुनियं मुनिये ।
मनमं तनुवं नियमिस- । लनुदिनमी **नेमि-देव**नोर्व्वने श्लक्षम् ॥

[(उक्त मितिको) विनयनिधि बालचन्द्रने समाधिमरण किया और स्वर्ग प्राप्त किया । (उनकी प्रशंसा) ।
मन और काय दोनोंके दैनिक नियमनमें, नेमि-देव ही अकेले योग्य हैं ।]

[EC, VII, Shimoga tl., No. 66.]

४७०

सौंदत्ति,—कन्नड ।

[शक ११५१=१२२६ ई०]

शिलालेखका परिचय

यह शिलालेख कुन्तलदेशके अन्तर्गत कुण्डी जिलेके अधीश्वर राष्ट्रकूटवंशके **लक्ष्मण** या **लक्ष्मीदेव प्रथम** के प्राथमिक वर्णनके बाद लक्ष्मीदेव द्वितीयका वर्णन करता है। ल० द्वि. **कार्त्तवीर्य चतुर्थ** और **मादेवी**का पुत्र था। इस तरह यह लेख और शिला लेखोंकी अपेक्षा रट्टोंकी वंशावलीको एक कदम

और आगे बताता है। यह कार्तवीर्य चतुर्थकी द्वितीय पत्नी होनी चाहिये, क्योंकि शि० ले० नं० ४४६ में उसकी पत्नीका नाम **एचलदेवी** दिया है। तत्पश्चात् हम देखते हैं कि **सुगन्धवर्त्ति बारह** का शासन लक्ष्मीदेव चतुर्थकी अधीनता में रट्टोंके राजगुरु मुनिचन्द्रदेवके द्वारा होता था, और मुनिचन्द्रके सहायको या परामर्शदाताओं में शान्तिनाथ, नाग और **मल्लिकार्जुन** थे। मल्लिकार्जुनकी वंशावलीके देनेमें स्थानीय दो महत्वशाली वंशोंका विशेष वर्णन है—१८ गाँवोंके वृत्त (समूह) के अधिपति (इन गाँवोंमें **बनिहट्टि** मुख्य था जो आजकल जामखण्डीके पासका एक छोटा शहर मालूम पड़ता है), और **कोलार** के अधिपति (आजकलका कोर्त्ति-कोल्हार जो कलाद्रीसे नातिदूर कृष्णाके किनारे है)। कोलारके वंशमें पुरुष-उत्तराधिकारीके न होनेसे वहाँका अधिपतित्व विवाहके द्वारा बनहट्टिके अधिपतियोंके वंशमें चला गया। कोलारके अधिपतियोंका वंश गृहपति **वशिष्ट**के वंशसे शुरू होता है, और उसमें निम्न नामोंका वर्णन आया है :—

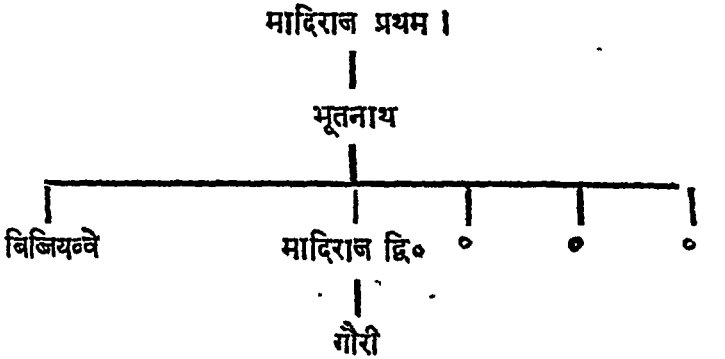

मादिराज द्वि० अपने छोटे भाइयोंके साथ—जिनके नाम नहीं दिये हैं—युद्धमें मारा गया था। उसकी मृत्युके बाद उसकी बहिन बिज्जियव्वेने शासन-सूत्र अपने हाथमें ले लिया और कुछ समय बाद इसे बनिहट्टिके मल्लिकार्जुनके साथ गौरीके विवाहमें दहेजके रूपमें दे दिया। बनिहट्टिके शासकोंके वंशका नाम 'सामासिग-वंश' था और यह अत्रि ऋषिसे प्रारम्भ होनेवाले इन्दुवंशकी एक

शाखा थी। इस खानदानकी वंशावली, जिसमें ६३वीं केसिराजके पुत्र मादिराज का भी नाम आ जाता है, निम्नभाँति है :—

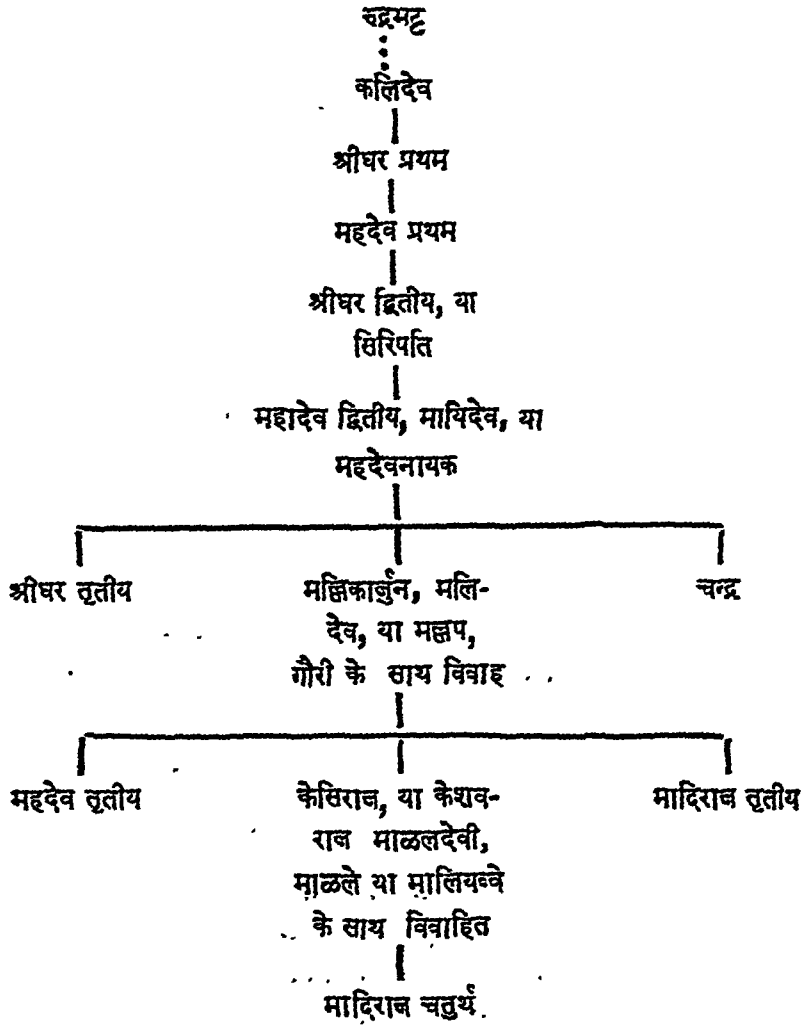

जैसा कि ऊपर निर्दिष्ट है, यह खान्दान रुद्रभट्टसे शुरू हुआ।

इसके बाद लेखमें बताया है कि किस तरह केसिराज, श्री-शैलके मल्लिकार्जुन देवकी वेदीके 'लिङ्ग' की तीन यात्रा और वहाँ कठिन व्रत धारण करनेके बाद, पवित्र पर्वतकी चट्टानसे बने हुए 'लिङ्ग' को अपने साथ लाया और उसे सुगन्धिवर्त्ति नगरके बाहर नागरकेरे तालाबके पास अपने पिताके नामपर बनानेवाले मल्लिकार्जुन देव या मल्लिनाथ देवके मन्दिरमें स्थापित किया। बादमें इस मन्दिरके उच्च-पुरोहितका पद उसने लिङ्गय्य, लिंगशिव, या वामशक्तिके पुत्र देवशिव, उसके पुत्र वामशक्तिको दे दिया। इसके बाद लेखमें इस मन्दिरके लिये भूमि और उसके दशवें अंशके कई दानोंका उल्लेख आया है। ये दान सर्वधारी संवत्सर, **शक वर्ष ११५१ में**, राजगुरु मुनिचन्द्रकी आज्ञासे किये गये थे। उस समय शासनकर्त्ता वेणुग्राम राजधानीमें महासामन्त **राजा लक्ष्मीदेव** थे। अन्तमें इस लेखके लेखकका नाम मादिराज दिया है। यह केसीराजका पुत्र था।

समस्तुंग शिरश्चुम्बिचन्द्रचामरचारवे [।] त्रैलोक्य नगरारम्भमूलस्तम्भाय शंभवे ॥ ईगे निरन्तरं सुखमनाश्रितर्गी गिरिजाधिनाथनुर्व्वीगगनेन्द्विनानलमरुत्संलिलात्मवराष्टमूर्तियं रागदे लोक यात्रेमे निर्भोगिसि तन्न मनोनुरागदि श्रीगिरियोळ् विराजिप सदाशिवनी विभु मल्लिकार्जुन। वनधिमृतावनिमध्यद कनकाद्रिय तेंकदेसेय भरतवनियोल् जनपदमेसेपुदु कुन्तळवेनसु सोगयिसुवुदल्लि कूण्डीदेशं [॥] आ देशाधि ईश्वरं **लक्ष्मण**नृपनेसेदं तत्सुतं कार्त्तवीर्य्यगाढ्ळ् महादेवि तां श्रीसतियवर्गे जगज्जात विद्व(ज्ज)नकाहादं (पेळ्के) ळ विद्विद् ज्ञितिपति निवहक्कुम्बेगं पुट्टे तद्रामादित्योणि ईश शौर्य्य सकळगुणयुतं पुट्टेदं **लक्ष्मीदेवं** [॥] सुकुमाराकारने श्रीसतिगुदयिसिदं धारणोचक संरक्षकने श्रीकार्त्तवीर्य्यावनिपतिसुतने रट्टवंशोद्भवं राजकदोळ्सम्सेव्यने भाविसुवडे निजदिं **लक्ष्मीदेवं** प्रभावाधि(कने) तिग्मांशुवंश प्रकटित विभवं नोर्प्पडी **लक्ष्मीदेवं** ॥ इदमोघं राष्ट्रकूटान्वयनतुळनक्कं लक्ष्मीदेवं सुरूपन्वदोळुद्य (त्तेजदोळ् शौर्य्यदो) ळखिलजनानन्ददोळ् आर्य्यदोळ् दार्य्यदोळा कन्दर्प्पनं भानुवननिलजनं रोहिणीनाथनं पूर्व्वदिशाकान्तेशनं कर्णमनतिशयदिं पोल्तु विख्यातिवेत्तं आ रट्टराज्यमं विस्तारिसि नलविन्दे रट्टराज्य स्थिर

निस्तारक नेनिपं लक्ष्मीनारीशं रट्टराजगुरु मुनिचन्द्रं [॥] कुमुदानन्दतेयिन्द वोन्दि मुनिचन्द्रं शत्रुभूभृन्मुखाब्जमनिप्पोंडिप तेजदिंदे **मुनिचन्द्रं** रट्टराजाब्धियं क्रमदिं [illegible]तमं पळंचलेविनं पेच्चेप्प तलोन्दु विक्रमदिंदं मुनिचन्द्रनिन्तु मुनिचन्द्रं चन्द्रनामान्वितं [॥] गुरुवादं **कार्त्तवीर्य्य**क्षितिपतिगेनसुं मन्त्रदिं ताने शिक्षागुरुवादं शस्त्रशास्त्रस्थिरपरिणतेयोळ् लक्ष्मीदेवंगे दीक्षागुरुवादं प्राज्यराज्यापहरणदे परद्रोणिपाळर्मोनल्केळुशब्दं वाग्वज्रवाग्वल्लदे वरमुनिचन्द्रंगिदें देसेगाय्दे [॥] धरणीशाग्रणि **कार्त्तवीर्य्य**सुतनप्पी **लक्ष्मीदेवं**गे सुस्थिरवप्पंतिरे धात्रियं नयदिनेकायत्तमं माडिदं वरवाहाब्धळदिं (विरो) धित्रपरं वेंकोण्डनी वाणसा भरणं श्रीमुनिचन्द्रदेवन सुहृन्मांतंगकण्ठीरवं [॥] आर्य्य सचिवरोळतिचातुर्य्य रट्टोर्व्वीप प्रतिष्ठाचार्य कार्य्यधुरन्धरतेयोळौदार्य्यदोळारिंदवधिकनी **मुनिचन्द्रं** [॥] आ मुनिचन्द्र देवमल मात्यरिळास्तुतरिष्टचिंतामणिक्षामराजतनयं करुणाग्रणि शान्तिनाथनुद्दामपराक्रमं नेगळ्द कूण्डिय नागानुदारचारुलक्ष्मी महिमावळम्बनसुखानुभवं मले मल्लिकार्जु[illegible]॥] एने नेगळ्द मल्लिकार्ज्जुननुपम वंशावतार मेन्तेने चतुराननन सभ्यल्लि पूज्यं मुनिसप्तकमद्रोळत्रिमुनिवरनधिकं ॥ (आ) मुनि मुख्य कान्तेयनस्ये पतिव्रते वोल्दु धर्म्ममं काममनर्थमं परमसंपदमं पुरुषंगे माडे तत्का (मि) निगदरा हरिहराब्जभवर्स्तुतरत्रिनेत्रदिं सोमन जन्मव्यनुद इन्तकुलविन्दुकुलं धरित्रियोळ् [॥] धरेगिन्दुवंशमेने विस्तरवं तळेदत्रिगोत्रदोळ् वरविद्यापरिणतरिळामरप्पलेवरोगेदरवरोळतो रुद्रमट्टकवीन्द्रं [॥] तन्नय वंशजक्कळरुदिगळोळुद्ध कवीश्वरप्प वाक्योन्नतियं सरस्वतियिनूर्प्पदिनेंटरोळं प्रभुत्वमं कन्नरनिंदवन्दु पडेदं दोरेमा कविताविळास दोन्दुन्नतियोळ् प्रभुत्वद नेगर्च्चेयोळा विभु रुद्रमट्टनोळ् [॥] आ सुकवि रुद्रमट्टनिन्न सोमकुलाब्धनेनिसुव त्रिकुलं सामासिग कुलवेनिसिदुदन्ता सत्कुलदोळगे पुट्टिदमळिचरित्रं ॥ अदरोळ् निन्न रामान्नरविदे सासिर पोंगे कोट्टदं विडिय निवुदिनं पडेदं रुद्रटनेम्बी पडेमातं रुद्रमट्टमुर्व्वी (र्व्वी) जनदिं नुतसामासिग वंशदोळतुळबळर्प्पलवरावनि[illegible]भुवन स्तुतनेनिसि विभुतेवेत्तुन्नतिवडेदं विमलकीर्तियं कलिदेवं ॥ तदपत्यं **बानहट्टि**नामपुरमुख्याष्टादशक्कं प्रभुत्वदिना श्रीधरनोप्पुवं तनुजनातगादनुजन्मखास्पदनप्पं महदेवनातन सुपुत्रं श्रीधरं विक्रमोन्मदनप्पं महदेवनेम्ब सुतनागल्

लीलेवेत्तिप्पिनं ॥ गगनसरोवर पुरदवरिगमा सिरिपति गवागे वैरं होलवे रेगे सिरिपति तत्पुरवासिगळिं. यमपुरमनेमिन्दं रणमुखदोळ् ॥ जनकं शत्रुशराळिगळ्गे गुरियागळ् तानदं केळ्दु भोकेने देशान्तरमेद्दुं पोगि रविसंख्याब्दं वरं द्वीपदोळ्ं धनमं सादिसि तन्दु भूपतिगे कोट्टा शत्रुवं कोपदुर्व्विनदिं गन्धगजंगळिं तुळिदु कोन्दं भायिदेवोत्तमं ॥ मुं जमदग्निरामनखिलक्षितिनाथरनिप्पतोन्दुळ्सूम्मांबन गाळियन्ते तवे कोन्दुवोली महादेवनायकं कुंजरदिंदे वैरिकुलमं तवे कोन्दु पितंगे माडिदं तां अवदानविक्रियेगळं बनिहट्टि समुद्भवेश्वरं ॥ शरणागतरं रक्षिप विरुदं धरे पोगळे हगवदोळ् सीयल् कळ्करेनिप मातंगरनन्दुरियोळ् तां पोक्कु कायिद ना महादेवं ॥ शरणागतरं रक्षिसि परबळमं गेय्दु मान्यरं मन्निसि दिक्करि वेरवायतियं विस्तरिसिये महादेवनायकं धरेगेसेदं ॥ एनिसिर्प्पा महदेवनायकन पुत्रर् श्रीधरं मल्लिकार्ज्जुननुं चन्द्रनुमेम्ब मूवरोगेदर्त्तत्पुत्ररोळ् वंशवर्धनमुं पुण्ययशोवर्धनमुमागळ् तन्नोळा मल्लिकार्जुन नात्मीय कुळाब्जषण्डत्रनमार्त्तण्डं करं रंचिपं ॥ गुणजळदिं तेजद वलुकणि बुध शिष्टेष्टजन मनोरथ चिंतामणि सामासिगवंशाग्रणियेने विभु मल्लिकार्ज्जुनं रंजिसुवं ॥ एने पंपुक्ते मलिदेवन पुण्यांगने पितृ द्विजाभरसंपूजनरते पतिहिते गौरी वनिते तदंगनेय कुलमनभिवर्ण्णिसुवे ॥ मुनिसप्तकदोळ् पेंपिगे नेलियिनिप्पं **वशिष्ठ**मुनिमुख्यं तन्मुनिगोत्रदोळुदयिसि **कोलार**नगरविभु **मादिराज** पुण्यचरित्रदोळेने **माळलदेवि** भुवनवन्दितेयादळ् । पतिहितवप्प चारुचरितं पतिभक्तियोळोंदिदा मनं पतियने वण्णिपोन्दु वचनं सति लक्षणविन्दु तन्नोळ्मूर्जितवेने **केसिराज**न मोंगने **माळलदेवि** गोत्रसन्नुते वरपुत्रपौत्रबहुसंततियिं धरेयोळ् विराजिकुं ॥ मनेयोळगेनुळ्ळडविल्लनुतं स्वयमर्थभूरियागुत्तिप्पंगनेयम्मळिल्लदेविय विनयाम्भोनिधिय गुणदोळेन्तेणेयप्पर् ॥ मनेयोळगुळ्ळुडं मडगे तत्पतिगं मनेभक्तळिंगवेळ्ळनितुवनिक्कला इदे केलं कडेयुं सुडेनल्के जीविपगेनेयरनें कुलांगने भरेन्देनलक्कुमे **केसिराज**नंगने पतिभक्ते चारु गुणयुक्ते कुलंगने भूतळाग्रदोळ् ॥ मनेगो वन्दरे विट्टमरेनलोळयिंगोडि होगियडगुव समुखं तनगादडे नीवारेम्ब [illegible]यरि मांळियब्बेगेन्तेणेयप्पर् ॥ कुटिळे कुमार्गे कुत्सिते कुरूपि कुभाग्ये, कुशीले, जिह्वलंपटे, शठे धूर्त्ते दुग्गुणि दुरन्विते दुर्ज्जने दुष्टे कष्टेयेम्ब टमटकार्त्तिर्स्सतियरे

गुणदोळ् सले माळियव्वेयुंगुटकेणेयागरेन्दोडितरांगनेयर्म्मुवनांतराळदोळ् ॥ पुरुष-
रमेळिदवं माळ्परिदुं हिन्दिगे वगेव पररं मायाचरणदोळेसगुव सतियर्द्दोरेये हेळ्
ळिळियव्वेयोळ् कुत्सितेयर असवने गंगलक्के तलेमांगिलेगच्चने नोडली इलिंगो-
सगेगे नोपिंगंगडिगे वाडिन सन्तेगे वायिनक्के पोपेसकदे पाम्बगोळ् नेरेवरं कुल-
नारियरेम्बुदे विचारिसे पतिभक्तिवेत्तेसेव **माळलदेवि**यनल्लदन्यरं । गाळुतनदिदे
पुरुषरने विदवं माळ्पं दुश्चरित्रेयरं वाचाळेयरं कण्डघतति **माळलदेवि**य गुणानु
कथनदे केडुगुं ॥ पति वसदक्कुमिन्नुतमगेन्दु दुरौषधमं प्रयोगिप क्रितकेयरन्तयिन्दे
परुषर्द्धय कामळे पाण्डु गुल्मदिंद तिकुषरागे विचळिसुतिप्पवरेन्त् कुलांगवनं पतिहिते
माळियव्वेये कुलांगने वार्धिपरीत धात्रियोळ् कृतयुगचरितद सतिगुणवतिशयदिं
तन्नोळिक्कुवेने नेगळ्द् महासति **माळलदेवि** पतिवृते **मल्लिदेवन** सुजननि रंचि-
सुतिर्प्पळ् ॥ जननुते **माळलदेवि**यनुपमगुणवतियनी महासतियं कण्डनितरोळ-
मरकद्दोसेवनेय फलप्राप्तियेन्दडे वण्णिसुदो । अत्रिमुनिन्द्रपत्नियनसूये पतिवृत-
र्यिंदे लोकत्रयवेद्दे वाणिसे विरिंचेयनच्युतनं त्रिनेत्रनं पुत्ररेनळ्के
पेत्तळेसवीयुगदोळ् पतिभक्ति तन्न चारित्र दिनत्रिगोत्रदोळगुण्डेने **माळलदेवी**
रेविगळ् ॥ कुलवधुविन नडवळियोळ् कुळनुं पतिव्रतागुणदिंदं नेलसिक्कुमेम्बु-
दिदु **माळलदेविय** चरितदिंदे धरेगतिविदितं । जननि महापतिवृते वशिष्ठकुलो
द्भवे गौरि **मल्लिकार्जुन**नभवाब्धीपंकरुहपट्चरणं पितनग्रतानुजनर्व्वनधिगमीरनप्प
महदेवनुमा विभु **मादिराज**नुं वनिते विनूते माळलेयेनल् विभु **केशवराज**-
नोप्पुवं ॥ वचन ॥ आपुण्यांगनेयर शिष्टकाम भोगंगळननुभविसुत्तं मल्लिकार्जुनंनु
मादिराजनुमेम्बीर्व्वैप्पुत्तरं पडेयलवरीर्व्वैरं श्रीरट्ट राज्यप्रतिष्ठाचार्यनुं अरिविरुदमण्ड-
लिकजवराजनुमप्प श्रीमद्राजगुरुगळ् **मुनिचन्द्र**देवरनोलगिसि कूण्डि मूरु मुसासिरद
वळिय वाडं श्रीमद्राजगुरुगळ् **मुनिचन्द्र**देवराळ्के वाडं **सुगन्धवर्त्ति** हन्नेरडुमं
तद्राज्येयिं प्रतिपालिसुत्तमिरसा कंपणद मोदलु वारं पट्टणं **सुगन्धवर्त्तिय** विळास-
मन्दिडे ॥ होन्नवोळलोल् विराजिसुव चूतवनं गिरसंकुळं फलं दुसुगिदनारि केरवन-
वोप्पुवशोकवनं शिवालयं मिसुप जिनेन्द्र गेहमेत्रिपिंतिवलव्दव शेषसौख्यदोन्नेसेदु
सुगन्धवर्त्ति सले कूण्डि महीतळदोळ् विराजिकुं । पन्नीर्व्वर्माऊण्डुगळुन्तत सत्वप्रता-

प्रगुणगण निळयस्संनुत चरित कीर्ति महोम्नतरप्रतिमरा स्थळकधिपतिगळ् आ स्थल दोळ् ॥ आराधिपनभवनन सुरोरजखचरामरेन्द्रवन्दितपदपंकेरुहननर्थियिं कोलारद् विभु केसिराजनमळचरितं । विदितं श्रीपर्व्वताधीश्वरन चरणमं काणली **केसिराजं** मुददिं नेसेदं धरेयोळ् ॥ सुतनादं मादिराजं गभळ चरितन्त भूतनाथं यशोरंजित रप्पय्यस्तुतर्त्तप्रभु गोगे दरिळास्तुत्यरम्तय्यरोळ् सन्नुतनादं मादिराजं सेणसुवव्वर गंटळ्गे गाळं प्रतापोनंतनेन्दुर्व्वी जनं वर्णणेसि पेसेर्व्वडेदं तेजदोंदेळ्गेयिंदं ॥ शरणागतजनमं नित्तरिपेडेयोळ् वज्रपंजरं तानेने डोंकरमादिराज विभु तोडर्दर् डोंकेनिप्प विरुदनिरदेत्तिसिदं ॥ इरे कोलारदोळा समानविभुपुगर्व्वत्तिलोपार्त्तता तुरचेतर्म्मरेवोक्कडन्तवरनादं कादु तानुग्रसंगरदोळ् सानुजनेयिद् वीरसिरियं पंचत्वमं पोर्दि विस्तर देवानकऊणमे दिव्यगतिवेत्तं धात्रि वाप्पेम्बिनं । आ मादिराजनग्रजे भूमिस्तुते विज्जियव्वेयनुजर महिभोद्दामभुमंनन्प्रतेयन्त माळ्केयिनधिकवागे नडेयिमुतिर्द्दळ् ॥ सले कोलारदोळ् प्रभुत्ववेसे गुं तेनामदोळ् मादिराजळ सत्पुत्रियन्त प्रभुत्वसहितं श्रीगौरियं पोम्मे मंगळतूर्य्य विभु **मल्लिकार्ज्जुन** नोव्वेळिंप विविधंवे प्रभुत्वलताविस्तरयागे तां नेरपि चिन्तोत्साहमं ताळिद्दळ् ॥ इन्तप्प विभवदिं पेंपं तळेद महाप्रसिद्धवंशजे गौरीकान्ते निज कान्तेयेने चैरन्तनरोळ् मल्लिकार्ज्जुनं समविभवं ॥ आ दंपतिगळ् मुखदिनिरे ॥ पिन्त्येपात्तं तदीयप्रभु तेयेनिसुवष्टादशग्राममुं दौहित्रं तां **मादिराजं**गद इनमरे कोळारदोन्दु प्रभुत्वं पुत्रं श्रीगौरिगं मल्लपविभुगोगेदं **केसिराजं** लसच्चारित्रं श्रीशैलकन्या पति पदनखचन्द्रांशुचंचच्चकोरं ॥ सात्विकदादिनन्दे परमेश्वरनी गिरिजेशनेम्बुव तत्वविचारादेदे इदु नम्बिद निश्चळभक्तियिंदे शान्तत्वमे रूपगोण्डु मुदमानविषाददोळेंदर्प्प शूरत्वदोळी धरावळयदोळ् विभुकेशवराजनोप्पुवं ॥ परक्तिकळिपदेयं परवधुविगेन्तुवे इकमं माडदेयं हरचरणपरिणतान्तःकरणतेयिं केसिराजनें कृतकृतं ॥ एने नेगळ्द **केसीराजन** वनिते नुतागस्त्यगोत्रसंभवे पुरुषंगनुवशपोपल्लि तां रक्षिसुवनिवरोळं पिन्ते रोगादिगळ् तोसिडोदं भक्तिं वारें दिडवेनलभवं कूत्तु तत्पुत्र वर्गं कुळं निश्चित विप्पन्निरिसिदनधिकं धात्रिगाश्चर्य्यमागळ् ॥ मत्तमा तीर्थयात्रेयोळ् ॥

गारुं परिचर्य्यमं मुददे माडम्बाय्दव्दोगै तन्नने रं वाद्वोंड गुडि बप्पवर्गे काळ-

प्राप्तिश्चन्दादो डोक्कमे सावन्तवर्गाळागदेनिपी वीरवृतं **मल्लिकार्ज्जुनदेवं** दृयेगेय्यलि प्रभुगे सल्लुं केशवंगुर्व्वीयोळ् ॥ इन्तिवादियागिरनन्तवीरवृतंगळिं श्री-शैळद मल्लिकार्ज्जुन देवरं मूरुसळ् दर्शनं माडि तत्प्रीतियिं पर्व्वतलिंगमं तन्दु कुण्डि मूजुसासिरद वलिय कपणं **सुगन्धवर्त्ति** हन्नेरदर मोदळ बाडं श्रीमद्राजगुरुगळ् **मुनिचन्द्र** देवराळ्केवाडं पट्टणं **सुगन्धवर्त्तिय** होळतोळम मागरकेरेयसिं तन्न तन्दे मल्लिकार्ज्जुन पेसरोळ् श्रीमल्लिनाथदेवर प्रतिष्ठेयं माडि ॥ स्वस्ति समधिगत पंचमहाशब्द महामण्डलेश्वरं **सत्तनुप्पुर**वराधीश्वरं गोवळीतूर्य्यनिर्घोषणं **रट्टकुळ** भूषणं सिंधूरलाञ्छनं शशिविशदयशोलाञ्छनं सुव्वर्ण गुरुदध्वजं विदग्धमुग्धांगनामकरध्वजं वैरिवळवीरवृकोदरं परनारिसहोदरं मण्डलिकगण्डतळप्रहारि उद्दण्डरिपुमदनिवारि साहसोत्तुगं **बोप्पनसिंग** नामादि समस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्महामण्डलेश्वरं **लक्ष्मोदेवरसर्** **वेणुग्रामेय** नेले वीडिनळ् सुखसंकथाविनोददिंदनवरतं राज्यं गेय्युत्तमिरे **शकवर्ष ११५१** नेय **सर्वधारि संवत्सरद** आषाढदमवासे सोमवारदन्दिन सर्व्वग्रासिसूर्य्य ग्रहण दुत्तमतिथियोळा **मल्लिनाथ** देवर अङ्गभोगरंगभोगक्कं खण्डस्फटितजीर्णोद्धारक्कं श्रीमद्राजगुरुगळ् **मुनिचन्द्र** देवर कोट्टकेय्यन वर नियामदिंदा **सुगन्धवर्त्तिय** हेनीर्वर गाळण्डगळ् वूर्प पडुवणं होळनोळ् मुळुगुन्दवळिळय होळवेरेय हत्तिमत्तर मान्यद होलवेरेयिं तेकळ् हमुडिय दारियिं बडगळ्ं कडिमण्ण कोळिनलळेन्दु सर्व्वसमस्थमागि कोट्ट केयि कंबवरुनूरु ६०० सिरिविगिळिं पडुवळ् राजद्रीदियिं पडुवण केरियोळ् राजहस्तद सेक्कय्यगळ इप्पत्तोन्दु कैनीळद मनेय कोट्टर ॥ मत्तमा हीनीर्व्वर गावुण्डगळ् मुख्य समस्तप्रजेगळु देवर नित्योपहारक्केन्दु चन्द्रार्क्कस्थायियागि मेटेगोळगव कोट्टर् ॥ मत्तमाहन्नीर्व्वर गाळण्डगळ् कौदिय मादिगाळण्डनुं पंचमठतपोद्यनसं एण्डहिट्टु सहित विर्द्द समेय समक्षदलि कडसेय नागगाळण्डनु मोदलूर गौडुवान्यदोळगे तन्न गौडुमान्यं कडलेयवळनहन्डहसुगेयन्निमा गौडुमान्यद कोलिनलळेदु सर्व्वसमस्थमागि कोट्टकेयि कम्बविन्नूरु २००, [॥] मत्तं ॥ स्वस्ति समस्त भुवनविख्यात पंचशतवीरशासनलब्धानेकगुणगणालंकृतसत्यशौचाचारचारुचारित्रनयविनयविज्ञानवीरावतारवीरत्रणम्बुसभयधर्म्मप्रतिपालकरप्प **सुगन्धवर्त्तिय** हन्नीर्व्वर्माळण्डुगळ् मुख्य

स्थळसमस्त नरवर मुम्मुरिदंडगळ् सन्तेय देवस महासमेयागिर्दु तम्मोळैक्यमतवागि आ मल्लिनाथदेवरिगे बिट्ट आयवेन्तेन्दडे [।] एळेय हेलिंगेनूरेळेय कोट्टर् होत्त-लिंग ऐव्वत्तेलेय कोट्टर् [।] अरो गेय्दु सतेयोळगेयुं माळुव धान्यवर्ग्गदलुं भत्त-वसरदलुं सट्टुगवत्तवकोट्टर् [।] पसारक्करडडकेय कोट्टर् [।] अल्ल व्वेल्ल अरिसिन मोदलागि किरिकुळवेल्लवं पसारक्कोन्दोन्दु कोट्टर् [।] हत्तिय पसारक्के हिडिवत्तिय कोट्टर् [।] मत्तमा देवर नन्दादीविगेगेय्वत्तोक्कळ् गाणक्के सोहिगण्णेय कोट्टर् [।] वेऊरिन्द वन्ध माळुव एण्णेय हाडक्केयद्देण्णेय कोट्टर् आस्थळद अय्सावन्तर् ।

देवरग्घणिय बिन्दिगेगे आवलेगळन कोट्टर । मत्तवन्यूर्व्वर वाडुकाय माडुव नल्लगेरडु सूडु हेचिंगे नाल्कक्कु काय कोट्टर [।] वोव क्कट् तन्दु मारुव वाडुकायिगे तिर्प्पे सुंकव कोट्टर ॥ मत्तमा देवर्गे एळरावेव हंनीर्व्वर गावुण्डगळ् तम्मूर तेंकण होलनोळ् सवधवत्तिय तम्म होलन सीमेयोळ् सिरिवारेंगे होद हेब्बेट्टेयिं मूडळ कद्दिगुरुहल्लार बडगळ् नविल्गुन्द गोलिनलळेदु सर्व्व समस्यागि कोट्ट केयि मत्तनाल्कु ४ अयुग्यगल हंनिकैनीळद मनेय कोट्टर । मत्तं वेट्टगुरद मेनेय सिंदर मैलेय नायकनुं अ स्थलदलुवर्ग्गाऊण्डु गळुं तम्मूरि तेंकण होळनोळ कद्दिगुरुहल्लदिं तेकल् नविलुण्द गोलिनलळेदु सर्व्वसमस्यमागि कोट्ट केयि मत्तनाल्कु ४ अयिगय्यगळ हंनिकैनीळद मनेय कोट्टर ॥ मत्तमा देवर्गे हूलिय **माणिक्य तीर्थद** बसदियाचार्य **प्रभाचन्द्र सिद्धान्तिदेवर** सहधर्म्मिगळप्प **शुभचन्द्रसिद्धान्तिदेवरुं** या **प्रभाचन्द्र सिद्धान्तिदेवर** शिष्यरप्प इन्द्रकीर्ति-देवर श्रीधरदेवर मुख्यवा संघसमुदायंगळु आ माणिक्य तीर्थद बसदिय स्थलं हिरिय कुंवियल् आल्लियकवर्ग्गावुण्डगळ् सहितविद्दु आ ऊरिं तेकददेसेयल नल्लियचट्ट गौडन बळवोळगे नेमणन केयिं तेकल् उरुगोळनहोल सीमेयं मूडल् नविल्गुन्द गोलिनलळेदु सर्व्वसमस्यमागि कोट्ट केयि मत्तनाल्कु ४ अमिगय्यगळ हंनिकै-नीळद मनेय कोट्टर । मत्तमा देवर्गे श्रीमदनादिय पिरियग्रहारं हसुर्जियंर्न्नूर्म्महाव्रतनं-गळुं हन्नीर्व्वर्ग्गावुण्डुगळुं तम्मूर तेकण धैस्सगेरियिं तेंकल् **समन्धवत्तिय** सबजुलद होलवेरेयिं पडुवल् तम्म बासिगवाडद पडुवण हेब्बसुगेय स्थळदोळगे सोगळद बोललळेदु सर्व्वसमस्यमागि कोट्ट केयि कंबं मून्नूरु ३०० [॥]

मत्तं श्रीमुनोन्द्रदेवर आयद चट्टिमरगर विन्नपदिं गाणायदायकारदल्लि सोमवारं प्रति वोन्दु सोल्लगे एण्णेयं कोट्टर ।

इन्तिनितुमना कोलारद केसिराजं सुगन्धवर्त्तिय नागरकेरेय श्रीमल्लिनाथदेवरिंगे वृत्तियं पडेदु आकेरेय कट्टिसि सुत्तलु मारवेयनिट्टु तन्नाराधिसुव माल्लेय शुद्ध शैवमार्गिळप्प तन्न गुरु भागिगळ शिष्यर् वामशक्तिनामामिघेयरप्प वल्लिटगेय श्रीमूळस्थानदाचार्य्यलिंगय्यंगळिगी स्थानमं धारापूर्व्वकं कोट्टनवर वंशानुक्रयनमेन्तेने ॥ आ मुनि दूर्व्वासान्वयनेमातनुपहतनेन्दु दिव्यम्बिडिदा वामशक्तिवृतीशं भूमिस्तुतनेनिसि वयसि पेसवंसेदेसेदं तत्तनयर्द्देवशिवदात्तयशस्सकलशास्त्र संपन्नस्सद्वृत्तस्सर्व्वसुबोपार्व्वितवृत्ति समाव व्वीराचिसिदरुर्व्वरेयोळ् तदपत्यलिंग शिवव्विदितशिवा गमररतक्कर्य्य गुणगणनिलयस्सदमळ चरित श्रीशैळदमवनं भक्तियुक्तवादाधिसुवर ॥ सिंगननाराधिपर्दं श्रीमल्लिनाथपदसरसिजदोळ् भृंगनवोलेसेवनेन्दु मनंगोण्डा केसीराजन वर्गिदनित्तं । ततशासनार्थवप्पी क्षितियं विमवोनंति संततवोर्द्दोदित वक्कुं प्रतिपालिसलोल्लदल्दिनसुगतिगिळिगुं ॥ गये वाराणसि कुरुभूमि येनिप तीर्थगगळल्लि गोकुलयं तन्नय कुलमं ब्रह्मणरं दयेगिडे कोन्दिनिदु पापमिदनळियलोडं ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां ।
षीष्टवर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥

तंनिसुद मेणन्यकुलोन्नत रिसुदु मनवनियं धर्म्मात्मळं मन्निसदळिदा मनुचं मुन्नं क्रिमियागि वळिके. नरकक्किळिगुं ॥

मद्वंशजा परमहीपतिवंशजा वा पापादपेतमनसा भुवि भाविं भूपाः ।
ये पालयंति मम धर्म्ममिदं समग्रं तेषां मया विरचितांजलिरेष मूर्ध्नि ॥

तानोसगिसिद नृपकुलदा नृपरक्कम्य भूपरक्की धर्म्मक्केनुमनळिवं तारदडा नृपरिगविन्दे सुगिन्द कर्य्यान्दिर्प्पे इदा केसिराजन वचन ॥ एसेवी शासनमं विरसि वरेदं पूर्व्व जन्मदोल् सुकृतमनर्जिसि केसिराजविभुविन सिसुवेनिसिद मादिराजनाधिसुमतदिं ॥ ई धर्म्ममं सुगंधवर्त्तिय हेनीर्व्वर्गाळण्डुगळ्गुं प्रतिपालिसुवर ॥]

[*JB*, X, p. 176-179, a; p. 260-272, t.; p. 273-286, tr. (Ins. No 7.):]

४७१-४७२

पर्वत आबू—संस्कृत

[सं० १२८७=१२३० ई०]

श्वेताम्बर सम्प्रदायके लेख

[EI, VIII, No 21, No 1. f.-p., t. aud tr.]

४७३-४७४

पर्वत आबू—संस्कृत

[सं० १२८८=१२३१ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[EI, VIII, No 21, No 12, t.
and
[EI, VIII, No 21, No 4o-11 and 13-18, t.]

४७५

श्रवणबेलगोला;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[वर्ष खर = शक ११५३ = १२३१ ई० (क्रीकहौर्न)]

[जैन शिलालेख संग्रह, प्रथम भाग]

४७६

गिरनार;—संस्कृत।

[सं० १२८८ = १२३२ ई०].

श्वेताम्बर सम्प्रदायका लेख।

[Revised Lists ant. rem: Bombay (ASI, XIV), p. 328–331, No. 1, t, and tr.]

२३७

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[Epigraphia Indica, p. 327–328, No. 21 & 22, A. and B.]

२३८

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

कलि-धर्म्म-नृपतिगं **बा**-।
चल-देविगवुदित-भद्र-लक्षण-वक्षस्-।
स्थळक**निरुङ्गोळ**-धारा -।
तिळकं नळ-नहुष-भरत-चरितं नेगळ्दम् ॥
हरि गोवर्द्धन-गोत्रमं दशमुखं रुद्रादियं राम-कि -।
क्रूररुग्राचळ-कोटियं रविसुतं तेर्-ग्गालियं पूण्डु दु -।
र्द्धर-संरम्भदिनन्दु मेट्टि किळे नोन्दायासविन्दारिदु -।
र्व्वरेगी-दक्षिण-बाहु-सङ्कदिनिरुङ्गोळ-क्षमापाळन ॥
कुळिकन लवलविके लया -।
नळनुरुवणि सिडिल सडगरं मिल्लुविन -।
ग्गळिके जवनुज्जगं मार्प्प -।
ओळेवुदिरुङ्गोलनालिगेत्तिद वाळोळ् ॥

अन्तु नेगळ्द निगलंक-मल्लं परनारी-सहोदरनरुवत्तनाल्वर् म्मण्डलिकर् तले-गोण्ड मण्ड वुद्दण्ड-मण्डलिक-दानव-मुरान्तकं रोद्दद गोवं वाण्डर वावं खड्ग-सहदेवं देव-देव-सदाशिवपादाब्ज-सेवा-समुन्मिषत्-प्रभाव **निरुङ्गोळ-देवं** राज्यं गेय्यु-त्तमिरे तत्पाद-पद्मोपजीवियप्प **गङ्गेय-नायकङ्गं चामाङ्ग** नेगवुद्धविसि **गङ्गेयन मारेयं** श्री-**मूल-संघद देशिय-गणद कोण्डकुन्दान्वयद पुस्तक-गच्छद** वाणद-वळिय श्री- **वीरनन्दि-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगळ** शिष्यराद मेदिनीसिद्धर **पद्मप्रभ-मलधारि-देवर** चरण-परिचर्य्येयिं पर्य्याप्त-कामितराद **नेमि-पण्डित**-रिनङ्गीकृत-व्रतनादम् । आगि ॥

काळाञ्जनवेम्बुदिरुङ् -।
गळन गिरि-दुर्ग्गवन्तदभ्रङ्कषदा -।
भीळतर-चूळवदरुत् -।
ताळतेयने नोडि धात्रि **निडुगल्ले**न्दुम् ॥
आ-कुलकीळद बदर-त -।

टाकट दक्षिण-शिलाप्रदोळ् **पार्श्व-जिन** -।
व्याकोसि-वसतियं प्रिय -।
लोकं गङ्गेयन मारनिदनेत्तिसिदम् ॥
इदु **जोगवट्टिगेय वस** -।
दि द्वला-चन्द्रार्कविं सनातनविं सल् -।
वुदु पञ्च-महा-शब्दवद् ।
इदर्के पालिसुवरिन्नसङ्ख्यातर्कळ् ॥

स्वस्ति निरस्ततम-कमठानेक-वैकुर्व्वाणनप्प पार्श्व-जिनेश्वरन दैनन्दिन-सपर्य्या-कार्य्यक्कं महाभिषेकक्कं चातुर्व्वर्ण्ण-दानक्कं **गङ्गेयन मारेय**नुं नारि **वाचलेयुवा**-चन्द्र-तारमिनित्तने सलुपुदेन्दो **डिरुङ्गोळ-देवं** धारा-पूर्व्वकवित्त दत्ति (दानकी विगत तथा वे ही अन्तिम वाक्य और श्लोक) ।

(प्रथम लेख)

[स्वस्ति । (उक्त मिति को), नेमि-पण्डितके पुत्रने इस वसदि की भूमि प्राप्त की ।]

(द्वितीय लेख)

जिन शासनकी प्रशंसा ।

स्वस्ति । चोळ राजाओंमें,—मङ्गि-नृपका पुत्र वप्पि-नृप, (और) गोविन्दरका पुत्र इरुङ्गोळ हुआ, जिसके भोग-नृपका जन्म हुआ था, जिसके वर्म्म-नृप हुआ । जिससे और वाचल-देवीसे **इरुङ्गोळ** (प्रशंसा सहित) उत्पन्न हुआ था ।

जब (अपने पदों सहित), इरुङ्गोळ-देव राज्य कर रहा था:—तत्पादपद्मोपजीवी **गङ्गेयन-मारेय** गङ्गेय-नायक और चामासे उत्पन्न हुआ था । इसने नेमि-पण्डितसे व्रत लिये थे । ने० प० को पद्मप्रभ-मलधारि-देवसे मनोभिलषित अर्थकी प्राप्ति हुई थी । प० म० देव श्रीमूलसंघ, देशिपगण, कोण्डकुन्दान्वय, पुस्तक-गच्छ तथा वाणद-वलियके वीरनन्दि-सिद्धान्त-चक्रवर्तीके शिष्य थे ।

काळाञ्जन इरुङ्गोळके पहाड़ी किलेका नाम था। यह देखकर कि इसकी चोटियाँ बहुत ऊँची हैं, लोगोंने इसका नाम निडुगळ् रख दिया। उस पर्वतके बदर तालाबके दक्षिणकी तरफ एक चट्टानके सिरेपर गङ्गेयन मारने पार्श्व-जिनेश, वसति खड़ी की थी। इसीको 'बोगवट्टिगे वसदि' भी कहते थे।

पार्श्वनाथ-जिनेशकी दैनिक पूजा, महाभिषेक करनेके लिये, तथा चतुर्वर्णको आहार दान देनेके लिये गङ्गेयन मारेय तथा उसकी स्त्री बाचलेने इरुङ्गुल-देवसे आ-चन्द्र-सूर्य-स्थायी दान करनेके लिये प्रार्थना की और उसने तब यह (उक्त) भूमियोंका दान किया; तथा गङ्गेयनमारेयनहल्लिके कुछ किसानोंने मिलकर बहुतसे (उक्त) अखरोट और पान प्रति बोझपर दिये; पेलिके किसानोंने भी कोल्हुओंसे तेल दिया। वे ही अन्तिम श्लोक।]

[EC, XII, Pavagada tl., No. 51 and 52]

४७९

गिरनार;—संस्कृत।

[सं० १२८८–१२८९ = ११३३ ई०]

श्वेताम्बर सम्प्रदायका लेख।

[Revised List ant. rem. Bombay (ASI, XV1, p. 361, No. 34, t. and tr.]

४८०

पर्वत आबू;—संस्कृत।

[सं० १२९० = १२३३ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[EI, VIII, No. 21, No. 19–23, t.]

४८१

एलूरा;—संस्कृत ।

[शक ११५६ = १२३५ ई०]

[फाल्गुण सुध त्रीतिआ[1] बुधे]

[१] स्वस्तिश्री शाके ११५६ जयसंवद्धरे (संवत्सरे)
श्रीर्द्धना (श्रीयर्द्धना) पुरे । जभा — जनि राणगिः ।
तत्पुत्रो म्हालुगिः स्वर्ण्णा वल्लभो जगतोप्यभूत् ॥१॥
ताभ्यं (भ्यां) जभूवुश्चत्व (त्वा) रः पुत्राश्चक्रेश्वरादयः ।
मुख्यश्चक्रेश्वरस्तेषु दा[न]धर्मगुणोत्तरः ॥२॥

[२] चैत्यं श्रीपार्श्वनाथस्य गिरौ वा (चा) रणसेविते ।
चक्रेश्वरोसृजद्दानाद्धृ (ना धृ१) ताहुतीं च[2] कर्म्मणां ॥३॥
द्रुहिनं त्रिजानि जिनेश्वराणं (णां) महाति (हान्ति) तेनैव विरच्य सर्वतः ।
श्रीचारणाद्रिर्गमितः सुतीर्थतां कैलासभूभृद्वरतेन यद्वत् ॥४॥

[३] धर्म्मैकमूर्तिः स्थिरशुद्धदृष्टि हृद्योसती (१)[3] वल्लभकल्पवृक्षः ।
उत्पद्यते निर्मलधर्मपालश्चक्रेश्वरः पञ्चमचक्रपाणिः ॥५॥
शुभं भवतु ॥
फाल्गुण त्रितीयां बुधे

अनुवादः—स्वस्ति श्री १ शक सं० ११५६, जयसंवत्सरमें । श्री (व) र्द्धना-पुरमें राणगिने जन्म लिया था, उसका पुत्र म्हा (गा) लुगि था जिसकी पत्नी स्वर्ण्णा थी और जो जगत्को भी प्यारा था ।

२. उनके चक्रेश्वरादिक चार पुत्र हुए । इनमें चक्रेश्वर मुख्य था, वह दानधर्म गुणमें सबसे आगे था ।

---

१. तृतीया । २. भगवानलाल इसको ० छात्रीलता हंत्रवि० पढ़ते हैं ।
३. भगवानलाल इन्द्रजी इसे 'दोनो सती' पढ़ते हैं ।

३. चारणोंसे सेवित इस पर्वतपर उसने श्री पार्श्वनाथका विम्ब बनवाया, (प्रतिष्ठित किया) और इस कृत्यसे उसके कर्मोंकी निर्जरा हुई।

४. जिस तरह भरतने कैलास पर्वतको पवित्र तीर्थ बना दिया था, उसी तरह उसने इस पर्वतपर जिनेश्वरोंके विशाल-विशाल विम्बोंको बनवाकर इसे एक सुतीर्थके रूपमें परिवर्तित कर दिया था।

५. धर्म्मैकमूर्ति, स्थिरशुद्धदृष्टि, दयावान, सतीवल्लभ (अपनी पत्नीके प्रति एकनिष्ठ), दानादि गुणोंसे कल्पवृक्षके समान चक्रेश्वर निर्मलधर्मका रक्षक बन जाता है, पाँचवाँ वासुदेव। शुभ हो। फाल्गुन ३, बुधवार।

[Ins. Cave-tamples of western India, p. 99–100, t. and tr.]

४८२

पर्वत आबू;—संस्कृत।

[सं० १२११ = १२३६ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[EI, VIII, No. 21, Nos 24–31, t.]

४८३

दिलमाल (Dilmal);—संस्कृत तथा गुजराती।

[सं० १[२]९५ (?) = १२३८ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[EI, II, No. 5, No. 4, (p. 26), t. and tr.]

४८४

हेरेकेरी;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक ११६१=१२३९ ई०]

[उसी बस्तिके दक्षिणके समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्-परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
चीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥

स्वस्ति श्रीमतु **कुमार-पण्डितर** गुड्डि **पेक्कम-सेट्टिय** हेण्डति गुण-गण सम्पन्ने शीलवतियप्प **मल्लब्बे शक-वर्ष ११६१ नेय विकारि-संवत्सरद मार्ग्गशिर-मास बहुळ-पक्षद त्रयोदशि बृहस्पतिवारदन्दु** दान-धर्म्म-परोपकार-निरतेयागि समाधि-विधियिं सुर-लोक-प्राप्तेयादळु **केलसे सोवोजन** माडिद।

[कुमार-पण्डितकी गृहस्थ शिष्या, पेक्कन-सेट्टिकी पत्नी, मल्लब्बेके जैन-विधिसे किये गये समाधिमरणका स्मारक। केलसे सोमोजने इसको बनवाया।

[EC, VIII, Sagar, tl., No. 161.]

४८५

कोरग्राम;—संस्कृत।

[सं० १२११=१२४० ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[EI, I, No. XVII (L. 118-119), t. and tr.]

४८६

पर्वत आबू;—संस्कृत।

[सं० १२१७=१२६१ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[EI, VIII, No. 21, No. 32, t.]

४८७

रोहो;—संस्कृत तथा गुजराती।

[सं० १२९९ = १२४२ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[EI, II, No. v, No. 14 (p. 29), t. and tr.]

४८८

सियालवेट;—संस्कृत।

[सं० १३०० = १२४३ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[ASI, XVI, p. 253-254, t.]

४८९

हेरेकेरी;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक ११६५ = १२४३ ई०]

[इसी बस्तिके उत्तरकी ओरके समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्पवित्रमकलङ्कमनन्तकल्पम्
स्वायम्भुवं सकल-मङ्गळ-वस्तु-मुख्यम्।
नित्योत्सवं मणिमयं निलयं विनानाम्
त्रैलोक्यभूषणमहं शरणं प्रपद्ये ॥

स्वस्ति श्रीमतु शुभकीर्त्ति-पण्डित-देवर गुड्डि पेक्कम-सेट्टिय मगळु कामव्वे सकळ-गुण-गण-सम्पन्ने शीलवति शक वर्ष ११६५ नेय शुभकृतु संवत्सरद

वैशाख-मास-शुक्ल-पक्ष-विदिगे-बृहस्पतिवारदन्दु आहारामय-भैषज्य-शास्त्र-दान-निरतेयागि सन्यसन-समाधि-विधियिं सुरलोक-प्राप्तेयादळु ॥ **सोवोजन** बेस

[शुभकीर्त्ति-पण्डित-देवकी शिष्या, पेक्कम-सेट्टिकी पुत्री, कामव्वेका भी वैसा ही स्मारक। सोवोजका कार्य्य।]

[EC, VIII, Sagar tl., No. 162.]

४९०

कडकोल;—कवड़।

[शक ११६८ = १२८६ ई०]

[१] स्वस्ति श्रीमत्-यादव-**रायनारायण** भु (भु)जबल-प्र-
[२] ताप-चक्रवत्ति **सिंहणदेव** [र] वर्ष ३७ **परा-**
[३] **भव-संवत्सरद** मार्गशिर सु (शु)ध(द्ध) पंचमी बि(बृ)ह-
[४] स्पति वारदलु **सूरस्थगणद मूलसंघद श्री-नन्दि-**
[५] **भट्टारकदेवर** गुड्ड **कडकुळद सावन्त-चो-**
[६] **प्पगौड हेग्गडे सोमय्य**नु समादि (धि) ई (यि) म्
[७] मुडिपि स्वर्ग-प्रातनाद [नु] [।]
मंगळ-महा-श्री [॥]

अनुवाद:—स्वस्ति! यादवोंमेंसे श्रीवाले रायनारायण भुजबल-प्रताप-चक्रवर्ती **सिंहणदेव**के ३७वें वर्ष, पराभव-संवत्सरके मार्गशिर (महीने) के शुक्लपक्षकी पंचमी, बृहस्पतिवारको सूरस्थगणके मूलसंघके श्रीनन्दिभट्टारक देवके शिष्य या अनुयायी; तथा कडकुळ[1]के सावन्त-चोप्पगौडके 'हेग्गडे'[2] **सोमय्य**ने पूर्ण इन्द्रिय-विरतिकी हालतमें मरणकर स्वर्ग प्राप्त किया। मंगल-महा-श्री।

[IA, XII, p. 100, No. 1. t. and tr.]

---

१. दूसरे शिलालेखोंमें यही नाम 'कडकोळ' पाया जाता है। २. मैनेजर।

४९१

ऊद्रि;—कन्नड़ भग्न ।

[वर्ष दुन्दुभि (?)

[ऊद्रिमें, वन-शङ्करी-मन्दिरके मार्गके एक पाषाणपर]

(प्रथम अंश मिट गया है)··· गतिनयनेश-संख्येय **शकाब्दद दुन्दुभि-नाम-संवत्सर**···वर-ज्येष्ठमासद सितेतर-पक्षदोळ् द्वितीय-सन्नुतमक्कवार मनुव ···तां वसवले लोक-विश्रुते···दळ् समाधि-विधियिन्दमनिन्द्र-निवास-सौख्यमम् ॥ **नन्दि-देव**-पद-युग-सरसिरुहद पञ्च-पद-विनुतान्तःकरणे-महादेव-विभु-विधु वर-**सूरस्थगणे** सुगतिय नडे पडेंदळु ॥

सुररोद्दुं पुष्प-वृष्टिय-।
नेरदागळे सुरिये देव-दुन्दुभि-रवमम्-।
वरदोलेसेयल्के वसवले ।
सुर-लोकवोंब्बदळु महोत्सवदिन्दम् ॥

नमो वीतराग ॥

[लेख स्पष्ट है । इसमें भी समाधिमरण [धारणकर सुगति-प्राप्तिका उल्लेख है ।]

[EC, VIII, Sorab tl., No, 142.]

४९२

श्रवणबेलगोला—कन्नड़ ।

[वर्ष पराभव = १२३६ ई० (ल्यू० राइस०)]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

४९३

गिरनार—संस्कृत ।

[सं० १२०१=११४८ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[Revised Lists ant. rem. Bombay (ASI, XVI), p. 358, No. 23, t. and tr.]

४९४

हुम्मच;—कन्नड़—मन्न ।

[शक ११७०=१२४८ ई०]

[पद्मावती मन्दिर में, प्राङ्गण में दूसरे पाषाण पर]

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्रस्य शासनायाघ-नाशिने ॥

स्वस्ति श्रीमत् स (श)क- वर्ष ११७० नेय प्लवंग-संवत्सरद पुष्य-शुद-पञ्चमी-बृहस्पतिवारदन्दु श्रीमतु से ··· ··· ··· सोमयन मग ··· डे वेग्गडे-त ··· ··· ··· वसेयन ··· दक्षिय समुदायमं··· मं करदु समस्त ··· न-सेवित्तुमागि व्रतारोपणमं माडिकोण्डु समाधि-विधियिं मृडुपि सुर-लोक-प्राप्तनाद मङ्गळ महा श्री श्री

[सोमयके पुत्र ··· ··· डे-वेग्गडेके लिये एक समाधिमरणपूर्वक सुरलोक-प्राप्तिका उल्लेख है ।]

[EC, VIII, Nagar tl., No. 50]

४९५

मलालकेरे;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

शक ११७०=१२४८ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

४९६

हीरेहल्लि;—संस्कृत और कन्नड—भग्न।

[शक ११७०=१२४८ ई०]

[हीरेहल्लिमें, मल्लेश्वर मन्दिर की दक्षिणी दीवालके एक पाषाण पर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

नमोऽस्तु॥

श्रीमत्-**पोय्सळ-वंश**दल्लि **विनयादित्या**ख्यनादं यशः-।
प्रेमं तन्नृप-पुत्रनादनेरेयङ्गोर्वीश्वरं तत्सुतम्।
भूमिपाळक-मौळि-लाळित-पदं श्री-**विष्णु**-भूपाळनुद्-।
दाम-स्व-क्रम-विक्रमोर्जित-जय-भ्राजिष्णु विष्णूपमम्॥
मलेयेल्लं वसमाय्तदोन्दे तळकाडुं कोयटूर् कोङ्गु नं-।
गळि काञ्ची-पुरी गङ्गवाडि पेसर्वेत्तुच्चङ्गि बळ्ळारे बेळ्-।
वल-नाडा-राचनूर्म्मुडुगनूर्व्वल्लूरिवं कोण्ड तोळ्।
वलदिं पोल्ववरारो पेळ् भुज-बळ-भ्राजिष्णुवं विष्णुवम्॥
आ-**विष्णुवर्द्धन**ङ्गम्।
भावोद्भव-राज्य-लक्ष्मियेनिसिद लक्ष्मा-।
देविगमुद्भवसिदिनव-।
नी-विश्रुत-**नारसिंह**नाहव-सिंहम्॥
आ-विभुवन पट्ट-महा-।
देवि मही-देवि विदित-यादव-लक्ष्मी-।
देवि जय-देवि**येचल**-।
देवि जगत्ख्याते सीतेगेगे गुण-गणदिम्॥

आ-**नरसिंह-देवंगं** पट्ट-महा-देवियेनिसिदे**चल-देवि**गम् ।
सकल-कला-परिपूर्ण ।
सकलोर्व्वी-नयन-सुखदनक्लाङ्कं तान् ।
अकुटिळपूर्व्व-नव-सी- ।
तकरं **बल्लाळ-देव**नुदयङ्गेय्दन् ॥
चोळम्मुचिरे पन्नेरळ्-वरिसेकं कोळ्पोय्ते तां पोदनेम्ब् ।
आळापं वरे साल्ददोन्दु मोळनं मेलु-डे ··· उच्चंगियुं ।
पेळासाप्पवदादुदेन्दु दिविच ··· धर वि. ये व- ।
ल्लाळाळ्दं गिरिदुर्ग-मल्ल-वेसरं **बल्लाल-भूपालकम्** ॥
सानिवारदन्दे पाण्ड्या- ।
वनिपन सप्ताङ्गमेय्दे सिद्धिसिदुदरिन् ।
सानिवार-सिद्धि-वेसरं ।
जनपति **बल्लाल-देव**नेसेदिरे तळेदम् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरम् । **द्वारावती-पुर**वराधीश्वरम् । त्रिभुवनमल्ल तळकाडु-कोंगु-नङ्गलि-गंगवाडि-नोळम्बवाडि-बनवसे-हुलिगेरे-हानुङ्गल्-गोंड भुजबळ वीरगङ्गनसहाय-शूर सनिवार-सिद्धि गिरि-दुर्ग-मल्ल चलदङ्क-राम निश्शङ्क-प्रताप होय्सळ-**चीर-बल्लाळ-देव**र **दोरसमुद्र**द नेलेवीडिनल्लि सुख-संकथा-विनोददिं पृथ्वीराज्यं गेय्युत्तमिरे ।

वृ ॥ मले-नाडन् तुलु-नाडनग्गड वयल्-नाडं लसच्चोड-मण्-
डलमं पेर्दोरे मेरेयागे बडगल् श्री-**विष्ण**-भूपङ्गे भू- ।
तलनं साधिसि कोट्टु माण्डु रणदोळ् मारन्तरं कोन्द दोर्-
बलदिं द्रोह-घरट्टनेन्दु पेसर्व्वेत्तं **बोप्प-दण्डाधिपम्** ॥

श्रीमन्महाप्रधानं **हिरिय-दण्डनायकं** द्रोह-घरट्ट-**बोप्प-देवं** आसन्दि-नाड कोण्डलियं तन्न हेसरिं द्रोहघरट्ट-चतुर्व्वेदिमङ्गलमेन्दु पेसरनिट्टु भुवन-वीरावतारमेम्ब तन्नपेसर्गनुरूपमप्यन्तव्यतिर्व्वेर मरणवागिं सर्व्व-नमस्यवागि बिट्टना-महाग्रहारद अशेष-महाबनङ्गळुम् ।

कोण्डलिय माचनं भू -।
मण्डल-विदितं समस्त-शास्त्र-विचार -।
खण्डित-मतिमद्-ब्राह्मण -।
मण्डलि-सरसीज-खण्ड-चण्डांशु-निभं ॥
भूतेय-नायकत्वुर्व्वी -।
ख्यातं कटकैक-रक्त-शक्त-तळारम् ।
भूतल-विदितं तत्तनु -।
जातं बल्लाळ-नृप-कुमारं मारम् ।

व ॥ इन्तिनिवरविर्द्दं तम्मूरिन्दं बडगण चक्कवेगेरेयं केम्पणनकेरेयन्नी-भी वूरं माडवेळकेन्दु प्रार्थिसि काळ-गावुण्डन तम्मनप्प होन्न-गावुण्डन चक्क-गावुण्डिय मगनप्प महा-प्रभु-आदि-गावुण्डरु सन्तेयं कोट्टडायय्यनुं तन्न तम्म माडि-गावुण्डनुं मार-गावुण्डनुं अवर मक्कळुं माच-गावुण्डनुं मार-गावुण्डनुं नाक-गावुण्डनुं चिक्क-मारेयनोळगागि काडं कडिदु कन्नेगेरेयं कट्टिसि वूरं माडिदरु ॥

आ- यय्यन अन्वयवेन्तेन्दोडे ।

कच्च-गावुण्डम्मुत्तेय ।
·····हिरियय्यम् ।
सञ्चित-सद्-गुण-गण-मणि ।
सञ्चय ··· ळिद् होन्न-गौडण्डं जनकम् ॥
आ-नेगळ्द् होन्न-गावुण्डन ।
··· ··· ··· आदि गावुण्डुन ताय् ताम् ।
भू-नुत-पतिव्रता-गुणे ।
जानकियो चक्क-गावुण्डि गुण-निधिये ··· ॥
··· ··· ··· । ··· ··· ··· ··· ··· ॥
पसुगूसुगळिगे पालम् ।
पसिट्टगन्नमन-वारियागिरे नच्चम् ।
हस-गालदोळ् ··· ··· अ ।

··· सनदिनारादि-गौण्ड ··· ··· ॥
केरेयं कट्टिसुतिर्प्पुदु- ।
मरवण्टगेयिंडिसुतिर्प्पुदेसे ··· ··· ।
··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ।
··· ··· ··· ··· ··· उज्जुगवेन्दुम् ॥
··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ॥

हसिदर मोगमं नोडम् ।
हसिवुं नीरळ्के यिल्ल कण्ड ··· ··· ।
··· ··· एनिप ··· ··· ··· ··· ।
वसुधेयोळान्नोळ्पडादि-गौडण्डन दोरेयर् ॥
अन्तेसेडादि-ग [व्] ण्डन ।
कान्ते मनः कान्ते नाग-गावुण्डि जगत्- ।
कान्ते पति-भक्ति-गुणदिन्द् ।
अन्तिल्लद वसदिनेसेदळवनी-तळदोळ् ॥
वन्दर् त्रिदिनरेन्दन्द् ।
ओन्दिद सन्तोषदिन्द सासिरकं कय्- ।
सन्दडुणलु वड्डिप-गुण- ।
दिन्दं पेळु नाग-गौण्डि ··· ··· ··· ॥
··· ··· ··· ··· । ··· ··· ··· ··· ।
··· ··· भू - । मण्डलदोळगिन्नु नोन्त कान्तेयरोळ्रे ॥
अवरिर्व्वर्मों पुट्टिद ।
··· **माच-गौडण्ड**नातन तम्मं ।
भुवनाधारं ··· ··· य- ।
नवननुजरु ··· ··· चिक-मारेयनेम्बर् ॥
अवरोळगं ··· ··· ।
भुवन-हितं **माच-गौण्ड**नेम्ब महात्मन् ।

बवसेयिनोळिप्पन्दार्प्पिद् ।
इवन-बोलाग्गुणिगळेनिसि नेगळ्दं जगदोळ् ॥
... ... ।
... ... मत्तवधिक-बलदिं किरिदल्लु ... ।
... निपं समस्त-पुरुषा- ।
र्त्थ-निधानं **माच-गौण्ड**नर्त्थि-निधानम् ॥
मार-गौण्ड ... ... ।
... ... निधानम् ॥
वारिनिधि-वेष्टितोर्व्वियो- ।
ळारुं तन्नन्नरिल्लेनिप्पं गुणदिम् ॥
लोकापकार-कारण- ।
नेक-क्रमव ... ... ।
... ... ।
... ... णनी-लोकदोळगे लोकं बडेवं ॥
मातृ-पितृ-भक्तनखिळ- ।
ख्यातं पुण्य-क ... त्रि-मूर्त्ति ... ... ।
... ... ।
... ... क तम्मनम्मङ्गणुगम् ॥

आदि-गौण्डन गुरु-कुळ-क्रमवेन्तप्पुदेन्दडे । श्रीमद्-**द्रमिळ** ... ...वारिसि ... ... धर्म-तीर्त्थं प्रवर्त्तिसुव ... ... **द्रस्वामि**गळिन्द ... ... पर-वादीश्वर ... ... वृन्द-वंद्य-श्री-पादरशेष-शास्त्र-वार्द्धिग ... ... रायणर्प्पर-हित-व्यापार ... ... गुण-धनं श्री-**वासुपूज्य-मुनि** ... ...न्त-देवर-शिष्य **पेरुमाळे-देव**रिगे ... ... न्तोषेद ... ... बसदि माडिसि श्री-देवर-प्रतिष्ठेयं माडिसि आ-देवरष्ट-विधार्च्चनेगं रिषियराहार-दानक्कं जीर्णोद्धारक्कं नडवन्तागि बिट्ट तळ-वृत्ति (आगेकी ५ पंक्तियोंमें दानकी चर्चा है) शक-वर्ष ११७० नेनेय **प्लव-संवत्सर**दुत्तरायण-सङ्क्रमाण-व्यतीपातदन्दु

कोण्डलियशेष-महाबनङ्गळु आदि-गौण्डनु माडि कोट्टर मङ्गल महा श्री (हमेशा का अन्तिम श्लोक) नमोऽस्तु वीतरागाय ॥

[इस लेखमें आदि-गावुण्डने अपने गुरु पेरुमाळे-देवके लिये एक विशाल वसदि बनवायी और उसके लिये (उक्त) कुछ भूमिका दान दिया, और (उक्त मितिको) आदि-गावुण्ड, और उसके पुत्रों तथा गाँवके ४० कुटुम्बोंके साथ कोण्डलिके सारे ब्राह्मणोंने उस भूमि तथा मन्दिरको पेरुमाले-देवको समर्पण कर दिया।]

[EC, V, Belur tl., No. 138.]

४६७

हुम्मच;—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न।

[शक ११७२ = १२५० ई०]

[पद्मावती मन्दिर में, एक पाषाण पर]

वरमसेन··· नाथ···स्वस्ति

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति श्रीमत्-स (श)क-वर्ष ११७२ नेय कीलक-संवत्सरद शुद्ध-श्रावण-दशमी-शुक्रवारदन्दु श्रीमन्महामण्डलेश्वर श्री-ब्रह्म-भूपालकन सचि ··· ·· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ब्रह्मय-सेनबोवन प्रिय-पुत्र पार्श्व-सेनबोव ··· ··· ··· ··· ··· माडि ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· सुर-लोक-प्रापितनादम् श्री (बाकीका पढ़ा नहीं जा सकता है)।

[महा-मण्डलेश्वरब्रह्म-भूपालके मन्त्री ··· ··· ·· ब्रह्मय्य-सेनबोवके प्रिय पुत्र पार्श्व-सेनबोवने 'समाधि' की विधिसे स्वर्गलोक प्राप्त किया।]

[Ec, VIII, Nagar tl, No. 56]

४९८

श्रवणबेलगोला;—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न ।

[बिना काल निर्देशका]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

४९९

हलेबीड;—संस्कृत और कन्नड़ ।

[शक ११७७ = १२५५ ई०]

हलेबीड से लगी हुई बस्तिहल्लिमें, पार्श्वनाथ बस्तिके बाहरकी दीवालके पाषाणके एक ओर]

श्रीमत्-सम्पक्त्व-चूडामणि **सल**-नृपना-वंश-सिंहासनस्थम् ।
सोमेशं नित्यनप्पन्तोसेदु **विजय-तीर्थाधिनाथङ्के** नाल्कुम् ।
सीमा-संस्थानदोळ् मुक्कोडे यसेविनेगं नट्टु धर्म्मक्के कोट्टम् ।
भूमीशत्वक्के तानेन्दरिपुव तेरदि तत्सुतं **नारसिंहम्** ॥

शकवर्ष ११७७ नेय आनन्द-संवत्सरद मार्ग्गशिर-व १ बृ-दन्दु श्रीमत् प्रताप-चक्रवर्त्ति-होयसळ-श्री-वीर-**नारसिंग-देवरस**र **बोप्प-देव-दण्णायक्कर** बसदिगे बिजयं गेय्दु श्री-विजय-पार्श्व-देवरिगे काणिकेयनिक्कि आ-बसदिय मुण्डण शासनवं कण्डु तम्मन्वयराजावळियनोदिसि-गोडुत्तविद्दवसरदोळु आ-शासन-स्थवह देव-दानद क्षेत्रदोळगे मय्दुनं **पद्मि-देव**र वट्टारव कट्टि मनेय माडि आ-बठारलु हलवु वरुसदिन्दलु हालागि विद्दुदनु केळि तम्म अन्वयद धर्म्मवोप्पु ··· कारणवागियुं श्रीमतु प्रताप-चक्रवर्त्ति-होयसळ-श्री-वीर-**सोमेश्वर-देवरस**र राज्याभ्युदयवहन्तागियुं पूर्व्व-देसे ··· ··· नट्ट कल्लिन्दोळगणभूमिसहित मट्टिन-**पद्मि देव**न बठारवनु जी ··· ··· मनेयमाडि आ-विजय-पार्श्व-देवन श्री-कार्य्यव नडिसुवन्तागि सर्व्वा-बाधे-परिहारवागि आ-चन्द्रार्कस्थायियागि सलुवन्तागि अन्दिन

धनुस्-संक्रमणदलु आ-देवर सन्निधियलु आ-कुमार-**नारसिंह-देवरु** तम्म श्री-हस्तदलु पुन-[ऱ्]-धारेयनेरेदु कोट्टरु मङ्गल महा श्री श्री श्री

[१२६]

आनन्द-संवत्सरद फाल्गुन-ब २ बु। **दन्दु** श्रीमतु प्रताप-चक्रवत्ति-कुमार-**नारसिंह-देव**रसरु तवगे उपनयनवादल्लि **बोप्प-देव**-दण्णायकर वसदिय **श्री-विजय-पार्श्व-देवर** श्री-कार्य्यके आ-चन्द्रार्क-स्थायिगि नडवन्तागि हिरिय-केरेय केळगे केम··द साल-मावि न गट्टिनोळगे कोळद-होलयन पट्टशालेगे कल्ल् नट्टु विट्ट भूमियिन्द मूडलु गद्दे गुम्मेश्वरद कोळगदलु गद्दे सलगे नाल्कुवम् धारा-पूर्व्वकं माडि सर्व्व-बाधे परिहारवागि कोट्टरु (परिचत अन्तिम श्लोक), मंगळ कहा श्री श्री श्री

[सलके वंशमें **सोमेश** हुआ। उसका पुत्र **नारसिंह** था। सोमेशका सुत-तीर्थाधिनाथ (दण्णायक) **बोप्पदेव** था। (उक्त दिन) प्रताप-चक्रवत्ति होय्सळ वीर-नारसिंह देवरसने बोप्पदेव-दण्णायककी वसदिका निरीक्षणकर वसदिका पूर्व 'शासन' देखा और अपनी वंशावली पढ़ी। उसने अपने साले या बीजा पद्म-देवके द्वारा बनवायी गई चहार-दीवारी और एक मकानको, जो कि ध्वस्त हो गया था, सुधरवाकर धनुस्-संक्रमणके समय में विजय-पार्श्व-देवकी सेवामें अर्पण कर दिया।

[१२६]-कुमार **नारसिंह देवरसने** (उक्त मितिको) अपने 'उपनयन' संस्कारके समय (उक्त) कुछ दान दिये।]

[EC, V, Belur tl., No. 125 and 126.]

५००

हुम्मच;—कन्नड़ ।

[वर्ष आनन्द = १२५५ ई० ? (लू. राइस) ।]

[पद्मावती मन्दिरके प्राङ्गणमें, २रे पाषाणपर]

श्री-मूलसंघ-देशी-गणद ··· ··· **दु-त्रैविद्य-देवर** गुड्ड ··· ··· ··· जननी **बाळचन्द्र-देवर** गुड्डि व्रत-शील-गुण-सम्पन्ने **सोयि-देवि आनन्द-संवत्सरद पुष्य-मास-बहुळ-दशमि-बुधवारदन्दु** समाधि विधियिं मुडिपि सुर-लोकव सूरे गोण्डळु

माता **कामाम्बिका** श्रीमान् ··· **माधवाह्वयः** ।

पुत्री **सोमाम्बिका** तस्याः **सोयि-देवी** ··· ज ··· ॥

कवित्वे गमकित्वे च वादित्वे वाग्मिता-जये ।

त्रैविद्य-बालचन्द्रस्य सदृक्षो नास्ति नास्ति हि ॥

मङ्गळ महा श्री

[श्री-मूलसंघ और देशी-गणके ··· दु-त्रैविद्य-देवके गृहस्थ शिष्य ··· की माँ, बाळचन्द्र-देवकी गृहस्थ-शिष्या सोयि-देवि, (उक्त मितिको), समाधिकी विधिसे मर गयी और स्वर्गलोकको प्राप्त हुई । उसकी माँ कामाम्बिका थी, पिता माधव, तथा पुत्री सोमाम्बिका थी ।

कवित्वमें, गमकित्वमें, वादित्वमें, वाग्मिता तथा जयमें त्रैविद्य-बाळचन्द्रके समान दुनियामें कोई नहीं है, कोई नहीं है ।]

[EC, VIII, Nagar tl., No. 53.]

५०१

श्रवणबेलगोला;—कन्नड़ ।

[वर्ष नल = १२५६ ई० (लू. राइस.)

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५०२

चिक्क-मागडि;—कम्बद-भग्न ।

[संभवतः करीब १२५६ ई०]

[चिक्क-मागडिमें, बस्तिके पासके पाषाणपर]

स्वस्ति श्रीमतु यादव-नारायण भुजबल-प्रताप-चक्रवर्त्ति श्री-कन्दार-देवन ११ नेय **नळ-संवत्सरद** ..... त्र-बहुळ-अमवासे-बृहवारदन्दु मुडिय सा.....वन्त सन्यसन-समाधियं माडि सुगति-प्राप्तनादं मङ्गळ महा श्री श्री गज-सैलेन्दु-शशांक ... .. कार्त्तिक-कृष्ण-पक्षमेने हिमना ... ... शनिवार उत्तरायण ... स ... ... प्रणष्ट ... देवर गुड्डनेसेव शान्त ... नवरनु सामन्त ... ... नु ... मनद्रोळु ता पञ्च-पदवं चिन्तिसुत्त ... ... मरसु ... स्वर्ग-जनके ... आप्त-जनं परिवा[रं] बन्धु-जनमुमाश्रित-जनमुं निलेदेल्लरुं ... ... शरणिल्लदेन्दु... बुत्तिद्दरु ।

पुरुष-निधाननं सकळ-भोगियनाश्रित-कल्प-वृक्षनम् ।
नर-सुर-धेनु वन्दि-सुर-भूज नवीन-मनोज्ञ-रूपन ।
गुरु-पद-भक्ति ... ळ् प्रभाव-सावन्त मुव्वनु ... वोव्देनि ... ।
करुणि विधात्रमूल ... पद-लोमिगळि ... ... ॥

(बाकीका मिट गया है) ।

[स्वस्ति । यादव-नारायण भुजबल-प्रताप-चक्रवर्त्ति कन्दार-देवके ११वें वर्षमें,—मुडिके सा ... वन्तने, 'सन्यसन' महोत्सवकी (विधि) को करते हुए, सुखी हालत प्राप्त की । उसकी और भी प्रशंसा । (शिलालेख बहुत घिसा हुआ है ।]

[EC, VII, Shikarpur tl., No. 198.]

———

५०३

हुम्मच;—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक ११७८=१२५६ ई०]

[उसी आङ्गनमें पार्श्वनाथ वस्तिके पूर्वकी ओरके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति श्रीमतु **शक-वर्ष ११७८ आनन्द-संवत्सरद** पुष्य-**बहुल-चौति-मंगलवारदन्दु** यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-मौनानुष्ठान-जप-समाधि-शील-गुण-सम्पन्नरुं त्रि-पद-त्रिशल्यरुं त्रि-गारव-रहितरुं गुप्ति-त्रय-संयुतरुं सप्त-भयातीतरुं अस (श) रण-शरण्यरुं श्रीमतु महा-मण्डलाचार्य्यरुं राज-गुरुगळुमप्प श्री-**पुष्पसेन देव**रुमकलङ्क-देवरु सन्यसन-विधियिं मुडिपि मुक्ति-पथवं पडेदरु ॥

श्री-परमात्म-चिन्तेयोळे चित्तमनागळे पतुं चिट्टनन्त- ।
आस्यद-सौख्यमं पडेव पञ्च-पदङ्गळनोदुतत्थियिम् ।
बाप्पुरे **वादिराज-मुनि**-पाद-पयोरुह-वृं (भृं) ग मुक्तियेम्- ।
वोपळ **पुष्पसेन**-यति कूडिदनैदे मनोनुरागदिम् ॥
आ-नन्दन-संवत्सरद् ।
आनन्ददे पुष्प-बहुळ-मङ्गळवारम् ।
ताना-चौतिय-दिनदोळु ।
ज्ञानात्मं **पुष्पसेन** मुडिपिदनोलविम् ॥
स्थिरदिन्द पञ्च-वसदिय ।
वर-मुनि-**गुणसेन**-सिद्धान्तर कय्योल् ।
भरदिं कय्येदे गोट्टा- ।
नर-लोकं पोगळे मुक्ति-पथवं पडेदम् ॥
परम-जिन-तत्व-चिन्तेये ।

स्थिरतरत्वागिरलु भाव नेलेगोळे मुनिपा ।
घरेयोळगे मुडिपि मुक्तिगे ।
वरनार्द निष्कळङ्कनीयकळङ्कम् ॥
अकलङ्क-देवरेय्दिद ।
सकळङ्कानन्दवप्प संवत्सरदोळ् ।
मुक्तिगे मार्गशिरं ताम् ।
शुक्लं पौर्णमिय दिनद बुधवारदोळम् ॥
प्रकटिसि जिन-धर्म्ममुमम् ।
सुकृतमुमागिरलु पेळ ··· यतियम ।
सकळागम-कोविदनम् ।
अकलङ्क-व्रतियनोय्य तक्कुदे धात्रा ॥
इल्लेम्बने कुडुवत्तरव् ।
अल्लेम्बो मुन्निनन्दवल्लदु कालम् ।
होल्लेम्बरे वेळ्पवसर ।
निल्लेम्बरे **पुष्पसेन-व्रति-पति** घरेयोळ् ॥
तर्क-व्याकरणाब्धिमस्वनमानेज्ञानेन यः पप्लुते ।
श्री-नन्द्यान्वय-राजभूषण-मणि श्री- **वादिराजो** मुनिः ।
तच्छिष्यः पर-वादि-पर्व्वत पविः साहित्य-रत्नाकरः ।
जीयाद्-द्रविळ-जैनसंघ-तिलकः श्री-**पुष्पसेनो मुनिः** ॥
लायोजन मग **सान्तोज** माडिद ॥

[जिनशासन मा प्रशंसा । स्वस्ति । (उक्त मिति को), साधुके गुणोंको (गुणोंके नाम दिये हैं), त्रिशल्य रहित त्रिपद[1]को धारण कर,

१. त्रिपद अपूर्वकरण, अधःप्रवृत्तिकरण और अनिवृत्तिकरण हैं ।

त्रिगारव[1]से मुक्त होकर त्रिगुप्तिसे संयुक्त होकर, सप्त-भय[2]से रहित होकर, महा-मण्डलाचार्य और राज-गुरू **पुष्पसेन-देव** और **अकलङ्कदेव**ने सन्यसन-विधिसे शरीर त्याग कर मुक्तिका मार्ग प्राप्त किया। परमात्माके ध्यानमें अपनेको लगा-कर, शाश्वत सुख देने वाले पञ्च-नमस्कार मंत्रका उच्चारण करते हुए, वादिराज-मुनिके चरण-कमलोंके भ्रमर,—पुष्पसेन-यतिने मुक्ति-फल प्राप्त किया। उक्त मितिको, आनन्दके साथ संभले हुए पुष्पसेन मुनिने इच्छा-पूर्वक देहत्याग किया। मुख्य मुनि गुणसेन-सिद्धनाथको पञ्चवसदि स्थायीरूपसे सौंप कर उन्होंने मुक्तिका मार्ग अख्तियार किया।

अकलङ्कने भी उक्त मितिको मुक्तिका मार्ग अपनाया। वादिराज-मुनिके शिष्य **पुष्पसेन-मुनि** थे।

सायोजके पुत्र सान्तोजने इसे बनाया।]

[EC, VIII, Nagar tl., No. 44]

५०४

हीरेहल्लि—कम्बद।

[शक ११७९=१२५७ ई०]

[हीरेहल्लिमें, मल्लेश्वर मन्दिरकी दक्षिणी दीवालके पाषाणके बायीं ओर]

नमोऽस्तु सिद्धेभ्यो नमः स्वस्ति श्री **शक-वरुष ११७९ नेय राक्षस-**[3] **संवत्सरद वैशाख-शुद्ध ··· सोमवारदन्दु आदिगौण्डन तल्लिय** वसदिय

---

१. त्रिगारव पञ्चसून (काटना, पीसना, रसोई बनाना, जल भरना, बुहारना), स्त्रीमोहादि, परिग्रह (भूमि, मकान, पशु, धान्य, द्विपद, चतुष्पद, सवारी, बिस्तर, दासी-दास, कुप्य-भाण्ड) हैं।

२. सप्त-भय मरण-भय, राज-भय, चोर-भय, व्याघ्र-भय, दुष्ट-देव-भय, परिषद्-भय और संसारभय हैं।

३. राक्षस=११७८।

आ-स्थानिक **पेरुमाळ्भा**-वूर माच-गौण्ड मार-गौण्ड चिक-गौण्ड चिक्क-मारेय अल्लिय स्थानिक कल्ल-लोय समस्त-प्रजेगळुं **वज्र-नन्दि-सिद्धान्ति-देवर मल्लि-षेण-देवर पेरुमाळु-कन्ति**यर **माचय्य**न मग **माडय्य**ङ्के धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्ट वसदियं मादय्यन हिरियमगं वेलनारण ·· अवचैय मचेलनुं (वे ही अन्तिम वाक्यावयव) **एक्कोटि-जिनालय** ··· मंगल महा श्री श्री

[(उक्त मितिको) आदिगौण्डनहल्लिकी वसादिके पुरोहित पेरुमालने दूसरों के साथ (जिनका नाम दिया है) मिलकर एक वसदि बनाकर पेरुमालु-कन्तिके पुत्र माचय्यके पुत्र मादय्यको दी। (वे ही अन्तिम श्लोक।)

एक्कोटि-जिनालयकी वृद्धि होवे !]

[Ec, v, Belur tl. No 131]

५०५

श्रवणवेल्गोला;—कन्नड़।

[वर्ष काल्युक्त=१२५८ ई० ! (लू० राइस)]

[जै० शि० सं०, प्र० भाग]

५०६

सियाल-वेट;—संस्कृत

[सं० १३१५=१२५८ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[ASI, XVI, p. 254, t.]

५०७

पर्वत सुन्ध (राजपूताना)—संस्कृत

[सं० १३१९ = १२६२ ई०]

श्वेताम्बर सम्प्रदायका लेख।

[EI, IX, No. 9, G, t. and a.]

५०८

कडकोल;—कन्नड़।

[शक ११८९ = १२६८ ई०]

[१] स्वस्ति श्री- **सं० (श) कवरुस (ष) ११८९ प्रभ**
[२] व- **संवत्सरद** माघ सु (शु) ध (द्ध) ५ सु (शु)-
[३] क्कवारदलु मूलसंघद सूर-
[४] स्थगणद **श्री-नन्दि भट्टारकदेवग्गु-**
[५] [ड्] ड **कडकोळद सावन्त-देवगावुण्ड-**
[६] न मग **मारगावुण्ड** सर्व्व निव्रि (वृ) [त्ति] यं कै-
[७] यि- कोण्डु समाधियिं मुडिपि स्व-
(८) (र्ग) ग्ग- प्राप्तनाद निपिधिय स्तंभ [।] मं-
(९) गळ-महा-श्री-श्री-श्री [॥]

अनुवाद स्वस्ति ! मूलसंघ के सूरस्थगणके श्रीनन्दिभट्टारक देव के शिष्य या अनुयायी; (तथा) कडकोळ के सावन्त-देवगावुण्ड के पुत्र—मारगावुण्डकी स्मृतिमें यह 'निपिधि' का स्तम्भ है। मारगावुण्डने तमाम इन्द्रियों का निरोध करके, सर्व सांसारिक कृत्योंसे निवृत्ति लेकर प्रभव संवत्सर-जो कि शक वर्ष ११९९ था—के माघ (महीने) के शुक्ल पक्षकी पञ्चमी, शुक्रवार को समाधि पूर्वक स्वर्ग प्राप्त किया। मंगल-महा-श्री-श्री-श्री।

[IA, XII, p. 101-102, No. 4.] t. and tr.

५०९

हुम्मच;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

वर्ष विभव=१२६८ ई०]? (लु. राइस) ।]

[पद्मावती मन्दिर के प्राङ्गणमें, दायें हाथ की तरफ के खम्भे पर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

श्रीमद्विभव-संवत्सरद चैत्र-मा १३ दश्यां तिथौ... वैभव...जकपाख्यस्य पुत्राभ्यां राम-श्रेष्ठि-ब्रह्म-श्रेष्ठिभ्यां धन्य (आम्) आवासं प्रथम-मण्डप-निर्म्माणं कृतं चिर-कालं वर्द्धतां जैन-शासनं कर्तृणां सद्-धर्म्म श्री-बलायु-रारोग्यैश्वर्यामि-वृद्धिरस्तु मङ्गल महा श्री

[जिन शासन की प्रशंसा । (उक्त मिति को) धनिक चक्पके दो पुत्रों, राम श्रेष्ठि और ब्रह्म श्रेष्ठि ने पहला मण्डप बहुशोभा-युक्त बनवाया ।

जैन-शासन चिरकाल तक बढ़े । इसके प्रचार करने वालों में सद्धर्म, बल, आयु, आरोग्य और ऐश्वर्य भी अभिवृद्धि होवे ।]

[EC, VIII, Nagar tl., No. 55]

५१०

कण्ठकोट;—संस्कृत

[सं० १३२८=१२७० ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

ASWI, Selections, No. CLII, p. 64, a; p. 86, t. (ins. No. 30).]

५११

वेतूरु;—कन्नड़-भग्न।

वर्ष प्रजापति = १२७१ ई० (लू० राहस)]

[वेतूरमें, सिद्धेश्वर मन्दिरके पास एक पाषाणपर]

··· ल्ल ॥

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं ··· ··· ॥

··· नाना-नूत्न-रत्न-प्रवण ··· ··· समुद्रा ··· ··· ग् अनून-दान-विभव ···
··· **जम्बूद्वीप**मा-समुद्रदिं मुद्रितमागिर्प्पुदल्लि ॥

कन्द ॥ **भरतावनि**-वन-शोभा ···। ··· ग् आश्चर्य्य ··· ··· खण्डम्।
··· ··· **कर्णाटक**-। वर-विषयं सन्ततं ··· विषयम् ॥

··· ··· येनिप-भोग्य-नुत-वस्तु ··· ···••• ··· नीकानेक ··· ··· धामनेसे
सार-सौख्यारामम् ॥ ··· अन्तु सन्ततं मोदलाद्-अनेक-घनपदक् अधीश्वरनुमतुल-
प्रताप-लङ्केश्वरनुं **यादवा**न्वय-वियत्-तळ-मार्त्तण्डनुं नय-वि ··· नाना-दान-गुण-
मणि-करण्डनुं विजया ····· विघायकनुमप्प ·· **रामचन्द्र**-भूपाळनन्वय ··· ···
माळव ··· **मागध-वङ्ग-कळिङ्ग-चेर-नेपाल** व ··· ··· पाळर ··· ••••••
एनिसु जीविपुदी ··· **जयसिंहं** ··· ···

कन्द ॥ आत ··· भुवन-भवनं ··· मातेनो ताने।
मत्तं ··· सु-ललित-प्रताप-निधि ··· गुण-मणियम् ॥

··· ··· प्रगूढमेनिसिर्प्प-वरूथव दोरे ··· ··· बलं ··· ··· दिं नेषेद ··· ···
धरित्रियोळ् मर्त्य-रूप ··· सहोदर **महादेव** ··· यन प्रतापमेन्तेने ॥

वृ ॥ सन्तत-रं ··· ··· मत्तु सन्ता ··· ··· ··· ।
··· ··· ··· ईश्वर-पदं ··· ··· ··· ··· ।
··· नोडलेयलोत्तिपनेन्दौडे ··· ··· बनं ··· ।

··· एनिप्पुदी-महदेव-महीपतियं निरन्तरम् ॥

व ॥ मत्तमा-**कन्दर-राय**,तनूभव-श्री-**राम-देव**-प्रतापमेन्तेने ॥

··· पदाम्बुज-युगानतरं सततं समन्तु ··· ··· ।

··· **यदु-वंश**-चक्रियुर्व्वी ··· ··· ··· ··· ।

··· इंतनेम्ब ··· ··· ··· ··· ··· ··· ।

··· **रामदेव**-भूपाळन तोळ-बळ-बयाङ्कने ··· ··· ।

व ॥ मत्तं तत्पाद-द्मोपजीवियप्प **कूचि-राजन** राज-गुरु श्रीमज्जिन-भट्टारक-देवरन्वय महोन्नतियेन्तेने ॥

वृ ॥ एळेयोळ् नेट्टने **वीरसेन-जिनसेनाचार्य्य**-वर्य्यर् सुधा- ।

बळ ··· कल्पिता ··· चार्य्यावलि श्री ··· ··· ।

··· **गुणभद्र योगि**-रमणं राद्धान्त-चक्रेश्वरम् ।

··· श्रीमज्जिनसेन-योगि सततं ··· रोळ् कीर्त्तियम् ··· ।

··· ग्रगण्यर महोन्नतियेन्तेने ॥

॥ श्री-मुनि-**पद्मसेन-यति**-गोत्तम ··· ··· ··· ।

··· महोन्नति-नि ··· र-वर्ण्णनेयिन्दमे मत्ते ··· ।

··· राममेनिप्प शास्त्र ··· यिन्दमे ··· श्रेष्ठियं ··· ।

··· मद-विभञ्जनन् ··· त्व ··· रे भाविपुदी-धरित्रियोळ् ॥

··· ··· राद्धान्त-सम्पत्तियं ··· ··· ··· ।

··· करं विनष्टमेनिपा-तन्त्रौषदि मन्त्रदिम् ।

देवेन्द्र-स्तुत-जैन-मार्ग-तपदिं ··· यं ताळ्दिदम् ।

भू-वन्द्यं वर-**पद्मसेन**-मुनिपं भट्टारकाग्रेसरम् ॥

नत-विन-पाद ··· त्र सु-चरित्र कळावळि-चारु-चि··· वि- ।

श्रुत-बुध-माळनेत्र निखिळाघ-दुरन्त-लता-लवित्र सम् ।

स्तुत-**महशे (से) न**-पुत्र नय-पात्र लसदुरु-पुण्य-गात्र भू- ।

पति-नुत **पद्मशे (से) न**-यति-नाथ कृतार्थने नीने धात्रियोळ् ॥

व ॥ मत्तमा-मुनीश्वर-पादारविन्द-द्वन्द्व-भक्तनुमनून ··· धीरनुं निज-तुरग-दळ-खर-खुर-प्रद्य ··· ··· ··· मनेक-विरिदावळि-विराजमाननुमप्प श्री-**कूचि-राज**नन्वय-महोन्नतियेन्तेने ॥

धरणी-वन्दित-**सिं [ह] देव**-तनयं **मल्लाम्बिका**-नन्दनम् ।
शरदिन्दूज्ज्वळ-कीर्त्ति **चट्ट**तनुजं **लक्ष्मा**ङ्गना-वल्लभम् ।
वर-योगीश्वर-**पद्मसेन**-पद-पद्मारा धकं कूचणम् ।
स्थिर-पुण्यं पेसर्वेत्तनुत्तम-यशं साहित्य-सत्याश्रयम् ॥
प्रणय-प्राणा ··· तम्मोळवरी-भू-भागदोळ् रा-म-ल- ।
क्ष्मणरं पोल्वरे पोल्वरा-**भरत**-भास्वद्-**बाहुबल्या**ख्यरम् ।
गुणदिं पोल्वरे पोल्वरेन्दु बुध-बन्धु-व्रातमानन्ददिम् ।
गणियिक्कुं वर-मन्त्रि-**चट्ट**-नृपनं श्री-**कूच**-दण्डेशनम् ॥

व ॥ मत्तमा-कूचि-राजन सर्व्वाङ्ग-**लक्ष्मिमय** महोन्नतियेन्तेने ॥

वृ ॥ भावज-मन्त्र-देवतेयनुत्तम चम्पक-वर्ण्ण-गात्रेयम् ।
पावन-शीलेयं गुणद शालेयनुद्घ-कळा-प्रवीणेयम् ।
भू-वळय-प्रणूत-मद-कुञ्जर-यानेयनोल्दु कीर्त्तिकुम् ।
श्री-विभु-कूचि-राजनेशेव्- ( ) अङ्गनेयं धरे **लक्ष्मि-देवि**यम् ॥

वा ॥ मत्तमा-कूचि-राज-तनूजन-प्रतापवेन्तेने ॥

कं ॥ सूरन सुतङ्गमधिकं । धारिनियोळ् कूचि-राज-तनुजं दानो- ।
दारतेयिं **वोण-देवं** । शूरतेयिं शू८कङ्गमग्गळमेनिपम् ॥
सङ्गर-रङ्गदोळदट्टं । सिङ्गद विक्रममनिरदे तानेळिसुवम् ।
मङ्गळ-निधि **वोण-देवं** । तुङ्ग-यशं-पद्मशेन-पद-युग-भक्तं ॥

व ॥ मत्तं **पाण्ड्य-देश**-मध्याध्यासितमाद **वेतूर**न्वलुवेन्तेने ॥

कं ॥ निरुपम-देवागारं । सु-रुचिरमेनिसिर्द्द विपणि गणिका-वाटम् ।
करमेसेव-प्राकारम् । पिरिदेशेदुद्यानदिन्दे **वेतूरे**सेगुम् ॥

च ॥ मत्तमा-वेतूर मन्नेयर शेट्टि-गुत्तर गौडुगळ वूरोडेयर महोन्नति-येन्तेने ॥

क ॥ सन्नुत-गुण-त्रयाञ्चित- । र् उन्नतमेनिसिर्द्द पाण्ड्य-देशाधीश्वर् ।
मन्नेय-कुल-सञ्जात- । प्रोन्नत-विक्रमिगळखिळ-गुण-गण-निळयर् ॥
कोण्डेयरं दुर्ज्जनरं । गण्डिगरं तेगदु तेगदु सिक्किपरन्ता- ।
मण्डळद शेट्टि-गुत्तर् । म्मण्डित-विक्रमिगळेसेवरवनी-तळदोळ् ॥
क्षितियोळ् माचि-तनूजं । विततं-यशं **हरिप-गौड**नुदधि-गभीरम् ।
रति-पति-निभ-**भाक**-प्रिय- । सुतनेसेवं **योग-गौड**नूर्जित-तेजम् ॥
श्री महित-**राम-गौडं** । भूमियोळमराद्रियन्ते सु-स्थिरनेनिपम् ।
सोम-सुतं गौड-कुळ- । व्योमाङ्कं सूरनन्ते वर्त्तिसुतिर्प्पम् ॥

व ॥ मत्तमा-कूचि-राजं वेतूरु-प्रभृति-ग्रामगळं वळितमागि पडेदु सुखदिनिर्प्पुदुं श्री-**पद्मसेन**-भट्टारकरुपदेशदिं निज सर्व्वाङ्ग ··· लक्ष्मि ··· स्वर्गापवर्ग्ग-सौख्यं कारणमागि **लक्ष्मी-जिनालय**मं माडिसिदनदेन्तेन्दोडे ॥

कं ॥ निरुपम-**मूल-सु-संघद**- । सु-रुचिरमेनिसिर्द्द-शे (से)**न-गण**-दोळ् मेपेर्वा- ।
वर-**पोगळे-गच्छ**दिन्दं । निरविसिदं कूचनेसेव-जिन-मन्दिरमम् ॥

व ॥ मत्तमा-कूचि-राजं प्रजापति-संवत्सरदल्लि श्री-**वीर-महदेव-राय**न प्रशस्त-हस्तदल्लि राज्यमनग्रहारमागि बिट्टुवल्लि लक्ष्मी-जिनालयक्के **हुणिसेयहळ्ळ**यनु हन्नेरडु होन्निनिं नियत-श्रोत्रमागि पुण्यतिथियोळ् धारेयं पडेदु-वन्दु तज्जिनालयद श्री पार्श्वनाथ-देवर्ग्गे शासन-पूर्व्वकं श्री-**पद्मसेन-भट्टारक-देव**र श्री-पाद-प्रक्षालनवं माडि गौडुगळु समन्वितमागि कोट्टवावुवेन्दोडे ॥

कं ॥ अङ्गडियनडके-दोण्टम- । नङ्गच-निमरेनिप-गौडु-सहितं कूचम् ।
गङ्गन-मत्तरनेरड । ··· गाणम धारेयनेषेदर् ॥
गुण-निधि धारा-पूर्व्वं । हुणिसेयहळ्ळयननन्त-भोग ··· ।
··· ··· ··· । प्रणुत-श्री-पार्श्वनाथ-वसदिगे कोट्टम् ॥

च ॥ मत्तमा-हुणिसेयहल्लि ··· ··· मेगण-नट्ट-कल्लु तेङ्कण-दिक्किनल्लि ··· ··· ।

[यह शिलालेख बहुत-कुछ घिसा हुआ है।]

जिन-शासनकी प्रशंसा। जम्बूद्वीप, भरतक्षेत्र और कर्णाटक विषयकी प्रशंसा।

बहुत राष्ट्रों का स्वामी, लङ्केश्वर, यादववंशीय राजा **रामचन्द्र** थे। उसकी उत्पत्ति। जयसिंह नामके कोई राजा थे। उनके पश्चात् [कन्दर राय] और उसका भाई महदेव था। कन्दर रायका पुत्र **रामदेव** हुआ।

तत्पादपद्मोपजीवी कूचि-राज था, और राजगुरु जिन-भट्टारक-देव थे। उनकी उत्पत्ति। वीरसेन और जिनसेनाचार्यकी परम्परामें। गुण-भद्र-योगी और जिन-सेन-योगी हुए। इसके बाद महसेनके पुत्र मुनि पद्मसेन-यतिपकी प्रशंसा आती है।

उक्त मुनीश्वरके चरणोंका भक्त कूचि-राज था। उसकी उत्पत्ति। वह सिं[ह] देव और मल्लाम्बिकाका पुत्र था, उसका छोटा भाई चट्ट था, पत्नी लक्ष्मा (या लक्ष्मी) थी। उसकी पत्नी लक्ष्मी-देवीकी प्रशंसा। उसका पुत्र वोणदेव था, जो पद्मसेन मुनिके चरणोंका भक्त था।

पाण्ड्य-देशके मध्यमें स्थित बेतूर की प्रशंसा। माचिके पुत्र हरिप-गौड, माकके पुत्र योग-गौड, तथा सोमके पुत्र राम-गौडका उल्लेख।

और जब उस कूचि-राजको बेतूर तथा दूसरे गाँवोंका घेरा मिल गया,—और जब उसकी स्त्री स्वर्गस्थ हो गयी,—पद्मसेन-भट्टारककी सम्मतिसे, उसने लक्ष्मी-जिनालय खड़ा किया। और कूचने यह मन्दिर श्री-मूलसंघके सेनगणके पोगले-गच्छको दे दिया।

कूचि-राजने (उक्त मितिको) वीर-महदेव-रायके शुभ हस्तोंसे अग्रहारके रूपमें, लक्ष्मी-जिनालयके लिये, हुणिसेयहल्लि प्राप्त करके तथा १२ होन्नुपर काम करनेवाला एक श्रोत्रिय सदाके लिये नियत कर, उसे पद्मसेन-भट्टारक-देवके पाद-प्रक्षालनपूर्व्वक, उस जिनालयके पार्श्वनाथ देवके लिये एक शासन (लेख) द्वारा सौंप दिया। तथा, गौड लोगोंके साथ-साथ चलकर, उसने एक दुकान तथा सुपारीका एक बगीचा भी दिया।

[EC, XI, Davangere tl., No 13]

५१२

श्रवणबेलगोला-संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १११३ (ठीक ११९५ ?) = १२७३ ई० (कीलहौर्न)]

[जै० सि० सं०, प्र० मा०]

५१३

चिक्क-मागडि; कन्नड़-भग्न।

[बिना काल-निर्देशका]

[चिक्क-मागडिमें, वस्तिके पासके पाषाण पर]

स्वस्ति श्रीमतु यादव-नारायण प्रताप-चक्रवर्त्ति ··· ··· ···देवर वर्षद २८ नेय शर्वरि संवत्सरद कार्त्तिक ··· ··· चिक्कमागडिय अक्कसाले बम्मोज स ··· ··· वदिर ··· ··· गति ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· नेय्दे पुण्डु सत्-पुरुष-सिवनुदात्त-निधि सबरित पडेद समाधियम् ॥

पडेदु समाधियनिन्नोर ··· ।
पडलडर्दमर-पुरकेगगि देव-निकायम् ।
गेडेगोडरे सुर-सुखमं ।
पडेदं बम्मोजं अमळ-जिन-भावनेयिन् ॥

[सुदत्त बम्मोजके लिये उसकी समाधिकर प्रदर्शक यह लेख है।]

[Ec, VII, Shikarpur tl, No 199]

५१४

हलेबीड—कम्बद ।

[शक ११९७ = १२७४ ई० (फ्लीटहॉर्न)]

[आदिनाथेश्वर वस्तिके पास-वस्तिहल्लिमें]

श्रीमन्नेमिचन्द्र-पण्डितदेवरु
केळिद्दरु

श्रीमद्बाळचन्द्र-पण्डित-देवरु
सारचतुष्टयादि-ग्रन्थगळ
व्याख्यानमं माडिदपरु*

(बायीं ओर) स्वस्ति श्री **मूलसंघ-देशिय-गण-पुस्तक-गच्छ-कोण्डकुन्दान्वयदिङ्गळेश्वरद वळिय श्री-समुदायद-भाषनन्दि-भट्टारक-देवर** प्रिय-शिष्यरुं श्रीमन्नेमिचन्द्र-भट्टारक-देवरुं श्रीमद्भयचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगळु दीक्षा-गुरुगळुं श्रुत-गुरुगळुमागे तम [स्]-श्रुतङ्गळिं—जगदोळ् विख्यातं-वेट्ट श्रीमद्बाळचन्द्र-पण्डित-देवरु **सक-वर्ष ११९७ नेय भाव-संवत्सरद भाद्रपद-शुद्ध १२ बुधवारद** मध्याह्न-कालदोळु यमगे समाधियन्दु चातु-र्वर्ण्यगळगरिपि नीवेल्लरुं धार्म्मिकरप्पुदेन्दु नियामिसि क्षमितव्यमेन्दु सन्यसनपूर्व्वकं सकळ-निवृत्तियं माडि पल्यंकासनदोळिर्द्दु पञ्च-परमेष्ठिगळ स्वरूपमं ध्यानिसुतं स्व-उभय-पर-समयंगळु मेच्चे उत्तम-समाधियं पडदरु श्रीमद्राजधानी-**द्वारसमुद्रद** समस्त-भ-(दायीं ओर) व्य-जनं-गळु तत्कालोचितमप्प धर्म्म-प्रभावनेयं माडि परोक्ष-विनय-मागि गुरुगळ प्रतिकृति-समन्वितं पञ्च-परमेष्ठिगळ प्रतिमेयं माडिसि यथा-क्रमदिं लोकोत्तरमागे प्रतिष्ठेयं माडि पुण्य-वृद्धि-यशो-वृद्धियिं माडिकोण्डरु । भद्रमस्तु जयतु जिन शासनाय ।

श्री-जैनागम-वार्द्धि-वर्द्धन-विधुः कन्दर्प्प-दर्प्पापहो

---

* उपर्युक्त पाषाणके सिरे पर दो मूर्त्तियोंके ऊपर यह लिखा हुआ है ।

भव्याम्भोज-दिवाकरो गुण-निधिः कारुण्य-सौधोदधिः ।
स श्रीमानभयेन्दु-सन्मुनि-पति-प्रख्यात-शिष्योत्तमो
ऽवीयात् कालनिशान्निजात्मनि रतौ **बालेन्दु-योगीश्वरः** ॥
पूर्वाचार्य्य-परंपरागत-घन-स्तोत्रागमाध्यात्म-सच्-
छास्त्राणि प्रथितानि येन सदसामुद्भासिता-मण्डले ।
श्रीमन्नाभय-भयेन्दुयोगि-विबुध-प्रख्यात-सत्-सूनुना
बालेन्दु-व्रतपेन तेन लसति श्री-जैनधर्मोऽधुना ॥

श्री-बालचन्द्र-पण्डित देवाय नमः ॥

दूसरा लेख

(उसी बस्तिमें, समाधि-मण्डपके बायीं ओर)

श्रीमदभयचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगळु व्याख्यानमं माडिदवर ॥
श्रीमद्-बालचन्द्र-पण्डित-देवर केळिदवर ।
श्रीमद्विनेन्द्र-मुख-निर्गत-दिव्य-वाणी
यल्यानन्दुमुरस्तुद्य विवर्द्धमाना ।
तं **बालचन्द्र-मुनि**-पण्डित-देवमस्मिन्
लोके स्तुवन्ति कवयः परमादरेण ॥
कस्त्वं कामः क एते हरि-हर-विधि-विध्वंसकाः पञ्च-बाणाः
कोऽहं धर्म्मः क एष भ्रमर-मद-गुणस्तेऽत्र किं, दोषकामः ।
संख्यातीतैर्गुणौघैर्ज्जगति दश-विधैश्चारु-धर्म्मैरनन्तैर्-
व्याप्तिल्लेन्दु-योगी लसति कुरु ततस्तत्पदाम्भोज-सेवाम् ॥
येनाधातमतात-बाधर्मामृतं स [च्]-ज्ञान-सम्पादकम्
हृद्यं सर्व्व-जनोपकार विहिताचारोचितं प्रेमतः ।
तस्मादनन्त-भव्य-कञ्ज-रवि-श्रीबालेन्दु-योगीश्वराद्
आप्तं मुक्ति-सुखैक-साधनमनु प्रेक्षोपदेशादिकम् ॥

दत्तोऽयमक्षपादादि-पक्षमावीक्ष्य तत्क्षणे ।
प्रत्यक्षादि-प्रमाणेन भेत्तुं बालेन्दु-सन्मुनिः ॥

वर्द्धतां जिन-शासनम् । श्री-पञ्च-परमेष्ठिगळे शरणु । श्री-बालचन्द्र-पण्डित-देवाय नमः ॥

ॐ ह्रीं हं

[बालचन्द्र-पण्डित-देव 'सारचतुष्टय' तथा अन्य ग्रन्थोंपर टीका बनाते हैं (या करते हैं)। नेमिचन्द्र-पण्डित-देव सुनते हैं (ऊपर पाषाणके माथे पर लिखा हुआ)।

श्री-मूलसंघ, देशिय-गण, पुस्तक-गच्छ, कौण्डकुन्दान्वय, इङ्गलेश्वर-बलि, श्री-समुदायके माघनन्दि-भट्टारक-देवके प्रिय शिष्य,—नेमिचन्द्र-भट्टारक-देव और अभयचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रवर्त्ती उनके क्रमसे 'दीक्षागुरु' और 'श्रुतगुरु' थे,—बालचन्द्र-पंडित-देवने चतुर्वर्णोंके सामने यह घोषणा की कि "(उक्त स्थितिको) मध्याह्न-कालमें मैं समाधि (सल्लेखना) ले लूँगा।" तदनुसार उनके समाधि-मरण प्राप्त करनेके बाद दोरसमुद्रके भव्य लोगों (जैनों) ने उनके स्मारक के रूपमें उनकी (अपने गुरू की) तथा पञ्च-परमेश्वरकी प्रतिमायें बनवाकर उनकी प्रतिष्ठा की। इससे उनका गुण और कीर्त्ति खूब बढ़े।

१३२ वें लेखमें अभयचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रवर्त्ती टीका करते हैं। बालचन्द्र-पण्डित-देव सुनते हैं। इसमें बालचन्द्र-पण्डित-देव की प्रशंशा भरी हुई है। कामको भी उनकी सेवा करनेका आदेश इसमें दिया हुआ है।]

[Ec, V, Belur tl. No 131 and 132]

५१५-५१६

श्रवणबेलगोला;—कन्नड़।

[वर्ष भाव = १२७४ ई० ? (ल. राइस.)

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५१७

श्रवणबेल्गोला—कटह ।

[विना काल निर्देशका]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५१८

गिरनार;—संस्कृत

[सं० १३३६=१२७६ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[Revised Lists ant. rem. Bombay ASI, XVI), p. 353, No. 10, t. and tr.]

५१९

चित्तौड़ (राजपूताना);—संस्कृत ।

[सं० १३३७=१२७७ ई०]

[शृङ्गार चावड़ी मन्दिर के पास किले की दीवाल में एक पुराने मन्दिर के उल्टे बनाये गये चौखट के ऊपरी भागपर]

(१) (चिह्न) ० ॥ स्वस्ति श्री-सं०-१३३४ वर्षे वैशाख सुदि २ बु (बु) ध-दिने श्री बृ (बृ) हद्-गच्छे सा० **प्रल्हादन**-पुत्र-सा०-**रत्नसिंह**-कारित-श्री-**शान्ति-नाथ-चैत्ये** सा०-**समधा**-पुत्र-सा०-**महण**-भार्या-**सोहिणी** पुत्री-**कुम-**

(२) **रल**-श्राविकया मातामह-सा०-ठाडा-श्रेयसे देव-कुलिका कारिता ॥

[लेखमें शान्तिनाथमन्दिरके प्राङ्गणमें एक छोटे मन्दिर (देव-कुलिका) के निर्माण का स्पष्ट उल्लेख है ।]

[ASWI, progress Report 1903-1904, p. 59, t.]

५२०

श्रवणबेलगोला—कन्नड़ ।

[शक १२००=१२७८ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५२१

अमरापुर;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १२००=१२७८ ई०]

[अमरापुरमें, तालाब के नष्ट बांध में एक पाषाण पर]

श्रीमत्परम-गंभीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-वसुमता-भार-धौरेय-दोर्-दण्डरुं अधः-कृतो-द्दण्डरुं **मार्त्तण्ड-कुल-भूषण**रुमभिसम्पात-भीषणरु**मोरेयूर-पुर**-वराधीश्वरमेनिप्प **चोळा**धनाशरोळु ॥ स्वस्ति श्रीमन्-महा-मण्डलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल भुज-बळ-भीम रोद्द गाव खड्ग-सहदेव अरुवत्तारु-मण्डळिकर तलै-गोण्ड-गण्ड बण्टर बाव पर-नारा-सहादर पडे मेच्चे. गण्ड निगळङ्क-मल्ल भीतरं कोल्ल मरेवुगे काव शरणागत-वज्र-पञ्जरमसहाय-शूर येकाङ्गवीर निश्शंक-प्रताप-चक्रवर्त्ति वीर-दानव-मुरारि **पिरुङ्गाण-देव-चोळ-महाराज**रु श्री **पृथ्वी-निडुगल्लु**-नेलेवीडिनोळु नेलास सुख-सङ्कथा-विनोददि राज्यं गेय्युत्तमिरलु **शक-वर्ष ॥ १२०० नेय ईश्वर-संवत्सरद आषाढ-शुद्ध-पञ्चमी-सोमवारन्दु तैलङ्गेरेय जोग-भट्टिगेय ब्रह्म जिनालय**के. मूल-संघ देशिय-गण कोण्ड-कुन्दान्वय पुस्तक-गच्छ यिङ्गळे.द बळिय. **त्रिभुवन कीर्त्ति-रावुळ**र प्रधान शिष्यरु **बाळेन्दु-मलधारि**-द . प्रयु[illegible]डुनुं [illegible] न **बोम्मि-सेट्टिगं मेळन्वेगं** पुट्टिद **मल्लि-सेट्टि तम्मडियहळ्ळिय** [illegible] तन्न [illegible]डु-भागवू एरडु-सासिर-अडकय-मरनु **तैळङ्गेर**ा बसदिय

प्रसन्न-पार्श्वदेवर प्रतिहस्तवागि मकळु-पर्य्यन्तं वृत्तिवन्तनेन्दुं **दक्षिण-पाण्डय-देशद दक्षिण-मधुरेय** उत्तर-भागदल्लि **पोन्नर** ··· न्नति-सीमेय **भुवलोक-नाथ-विषयद भुवलोकनाथन** वूर (पुर) जिन-ब्राह्मणरल्लि यजुर्व्वेददैत्रेय-शाखे वशिष्ठ-गोत्र कौण्डिन्य-मैत्रा-वरुण-वैशिष्टमेम्ब-प्रवरद **दीप-नायकङ्गं पोन्नव्वेगं** पुट्टिद श्री-**सयनगिरियुं** आ-**बाळेन्दु-मलधारि**-देवर प्रिय-शिष्यनु-मप्प **चेल्लपिल्ले**-हस्तदल्लि आ-चन्द्रार्कं-बरं तन्न मेळि-भागवनु धारा-पूर्व्वकं वृत्ति-यागि कोट्ट ॥ यिन्तप्पुदके साक्षि हदिनेण्टु-समयं मल्लि-सेट्टि ओप्प श्री-वीतराग हदिनेण्टु-समयद ओप्प सदाशिव-देवरु (वही अन्तिम श्लोक)

[जिन शासनकी प्रशंसा ।

स्वस्ति । मार्त्तण्ड-कुल-भूषण, ओरेयूर्-पुरवराधीश्वर, चोळ राजा थे,—जिनमेंसे,—जिस समय महा-मण्डलेश्वर, यिरुङ्गोण-देव-चोळ-महाराज अपने पृथ्वी-निडुगलके निवासस्थानमें थेः—

(उक्त मितिको,) तैलङ्गेरेमें जोगमट्टिगेके ब्रह्मजिनालयके लिये, (मूल संघ, देशिय-गण, कोण्डकुन्दान्वय, पुस्तक-गच्छ, और इङ्गळेश्वर-बळिके त्रिभुवन-कीर्त्ति-रावुळके प्रधान शिष्य) बालेन्दु मलधारिके प्रिय गृहस्थ-शिष्य, सङ्गयके (पुत्र) बोम्मि-सेट्टि तथा मेळव्वेसे उत्पन्न,—**मल्लिसेट्टिने**, तैलङ्गेरे बसदिके प्रसन्न पार्श्व-देवके लिये, तम्मडियहळ्ळीमें सुपारीके २००० पेड़ोंके २ हिस्से वंशानुवंश तक जानेके लिये अलग निकाल दिये तथा दीपनायक और पोन्नव्वे-से उत्पन्न चेल्लपिल्लेको वे अर्पित कर दिये । (यहाँ दीपनायकके शहर, खानदान आदिका परिचय दिया है ।) चेल्लपिल्ले सयनगिरि और बालेन्दु-मलधारिका प्रिय शिष्य था । साक्षियों के हस्ताक्षर ।]

शाप ।

[EC, XII, Sira tl., No. 32.]

५२२

कलस—कन्नड़ ।

[शक १२००=१२७७ ई०]
[दूसरे ताम्बेके शासनपर]

स्वस्ति श्रीमत्-पट्टद पिरिपरसि **कळाळ-महादेवि**यरु पृथ्वी-राज्यं गेयुत्तिरलु **शक-काल १२०० नेय ईश्वर-संवत्सरद वृश्चिक ३ आ १ कळस**नाथ-देवरिगे जिनेश्वर-देवरिगे मादेवसवागि **कलसेट्टिय मादव** दारेयनेरसिकोण्डा अकि मान २ नडवन्तागि निमानिय मेगे कोडङ्गिय नि ··· क सहितौ गूळु विट्टि तेरुमा सलुव प १ ल्लदे आव त्यरूगडेयू अल्ल अन्तप्पुदके साक्षि आ-मरसणिय नाळु कळसद हेब्बरुवकळु (औरों का नाम दिया है) कलसनाथदेवर अमृतयडिगे अकि कुडुते १ नील-कण्टकोबळ माकेयन कैयलि कोण्ड अलुगल-मकिय ··· दृलियहाळिय मेळे मुदुकिय तलेय गण्ण १ मेले न ··· अन्तप्पुदक्के साक्षि कळसद ग्राम आ-हेब्बारुवकळु ।

[जिस समय अभिषिक्त ज्येष्ठ रानी कलाल-महादेवी पृथ्वीका राज्य कर रहीं थीं :—(उक्त मितिको) जब कि यह कलसनाथ और जिनेश्वर दोनोंका महान् दिन था,—कलसेट्टिके पुत्र मादवने, सर्व करोंसे मुक्त; दो 'मान' धान्य (चावल) देनेके लिये (उक्त) दान दिया । साक्षी । उन्हीं देवताके लिये एक और भी (उक्त) भूमिका दान ।]

[EC, VI, Mudgere tl., No. 67 l.]

५२३

गिरनार—संस्कृत ।

[सं० १३३५ = १२७८ ई०]
श्वेताम्बर लेख ।

[Revised Lists ant. rem. Bombay (ASI, XV) p. 352-353, No. 9 (II part), t. and tr.]

५२४

हलेबीड—संस्कृत और कन्नड़।

[शक १२०१=१२७९ ई०]

[बस्तिदक्षिमें, शान्तिनाथेश्वर बस्तिके पहिले ही प्रतिमा पाषाणपर]

(सामने)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
श्री-संघ-रै-कुमृति देशिय-सद्गणाख्य-
कल्पाङ्घ्रिपो लसति पुस्तक-गच्छ-शाखः ।
श्री-कुण्डकुन्द-मुनिपान्वय-चारु-मूलः
सारेङ्गळेश्वर-बलि-प्रघळोपशाखः ॥
[ ]न्तु पोगळ्ते-नेत्त यति-सन्ततियोळ् कुलभूषणाख्य-सै- ।
द्धान्तिक-शिष्यनूर्जित-जिनालय-कारक-निम्ब-देव-मा- ।
मान्तन सुव्रतक्के गुरु वाग्-वनिता-पति माघनन्दि-सै- ।
द्धान्तिक-चक्रवर्त्ति येसेदं वसुधा-पति-राजि-पूजितम् ॥
नमो गन्धविमुक्तय तच्छिष्याय विमुक्तये ।
विशुद्ध-जैन-सिद्धान्त-नन्दिने शुभनन्दिने ॥

तच्छिष्यरु ।

धवळ-यशो-नीरञ्जित- ।
भुवनं कवि-गमक-वादि-वाग्मि-वितान- ।
प्रवरं सार्थक-निज-ना- ।
म-विलासं चारुकीर्त्ति-पण्डित-देवम् ॥

तच्छिष्यरु ।

कु-मतौघ-निवारकनम् ।

नमस्करिप्पेम् जिनागमोद्धारकनम् ।
विमल-दयाधारकनम् ।
समुदायद माघनन्दि-भट्टारकनम् ॥
श्री-**नेमिचन्द्र-भट्टारक-देवो**ऽप्यभयचन्द्र-सैद्धान्तोऽपि ।
इतिं शिष्याभ्यां गुरु-माघनन्द्यभूद्धर्म्म-इव ... भ्याम् ॥

तदुभयरोळ् अभयचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रव (दायीं ओर) त्तिगळ महिमेयेन्तेने ।
वृ ॥ छन्दो-न्याय-निघण्टु-शब्द-समयालङ्कार-षट्-खण्ड-वाग्-
भू-चक्रं विवृतं जिनेन्द्र-हिमवज्जात-प्रमाण-द्वयी- ।
गङ्गा-सिन्धु-युगेन दुर्म्मत-खगोर्व्वीभृद्भिदा यत् स्व-धी-
चक्राक्रान्तमतोऽभयेन्दु-**यतिपः सिद्धान्त-चक्राधिपः** ॥

तद्दुभयमुं क्रमदिं दीक्षा-गुरुगळुं श्रुत-गुरुगळुमागे पेम्पु-वडेद ।
मालिनी ॥ नुत-गुण-मणि-कोशं कीर्त्ति-वल्लीवृताशं
विंतत-सदुपदेशं शस्त-बोध-प्रकाशम् ।
कृत-मदन-निवासं नौमि निर्म्मोहपाशम्
हत-कुमत-निवेशं **बालचन्द्र-व्रतीशम्** ॥

तन्मुनीन्द्र-शिष्यरु ।

स-विशेषागम-वांक्-सुधौषधमनीष्टल् कोट्ट कार-त्रि-दो- ।
ष-विकारङ्गळनेत्ति किल्तु विळसद्रत्नत्रयं रक्षया- ।
गे विनयाळिगे कट्टि रक्षिसिदनी-सिद्धान्त-चक्रेशनेम् ।
भव-रोगक्के सु-वैद्यनो**वभयचन्द्रं** बाळचन्द्रात्मनम् ॥

सासिरदिन्नूरेरडेने- ।
या-**शक-वर्ष-प्रमादि**-समदूर्ज्ज-लसन्मा- ।
सासित-पक्षद नवमी- ।
शसिवार-त्रियामदोळ् तन्मुनिपम् ॥
अरिडात्मीय-समाधियं तोरदु सर्व्वाहारमं देहमं ।
मेरेडत्तोभतेयं जगं पोगळे पर्य्यङ्कासन-प्राप्तियिम् ।

नेरेदाल्मोद्द-कलांशुवं दिवदोळं तोर्प्पेन्दलेम्बन्दिम् ।
तरिसन्दं सुर-मन्दिरक्कमयचन्द्रं रुन्द्र सैद्धान्तिकम् ॥
- मुदमयचन्द्र-सिद्धान्- ।
ति-देवरमाद निसिधियं दोरसमु- ।
द्रद नरवरङ्गळ् निर्म्मिसि ।
विदित-यशः-पुण्य-वृद्धियं कैकोण्डर् ॥

मंगलमहा श्री श्री श्री ॥

(बायीं ओर) श्री-अमयचन्द्र-सिद्धान्ति-देवर् तम्म शिष्य-बालचन्द्र-देवरिगे व्याख्यानं माडिदपरु ॥ श्री श्री

[इस लेखमें बालचन्द्रके श्रुतगुरु अमयचन्द्र महासैद्धान्तिकके समाधि मरणका उल्लेख है ।

जिन शासनकी प्रशंसाके बाद श्री-संघ (मूलसंघ) को एक पर्वत मानकर उसके ऊपर देशिय-गणको एकवृक्षकी उपमा दी है । इस कल्पवृक्षकी बड़ कुन्द-कुन्दान्वय है, इसकी शाखाएँ पुस्तक-गच्छ हैं, और इसकी उपशाखायें इङ्गलेश्वर बलि हैं । इसी प्रसिद्ध परम्परामें कुलभूषण-सैद्धान्तिक, उनके शिष्य एक जिन-मन्दिरके संस्थापक निम्बदेव-सामन्त हुए । उस सामन्तके चारित्र-गुरु माघनन्दि-सैद्धान्तिक-चक्रवर्त्ति हुए ।

एक गन्धविमुक्त हुए, उनके शिष्य शुभनन्दि-सैद्धान्त, उनके शिष्य चारुकीर्त्ति-पण्डित-देव, उनके शिष्य समुदायद-माधनन्दि-भट्टारक थे । माधनन्दिके दो शिष्य हुए,—नेमिचन्द्र-भट्टारक-देव और अमयचन्द्र सैद्धान्ती । तत्पश्चात् अमयचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्त्तीकी महिमाका वर्णन । ऊपरके ये दोनों बालचन्द्र-व्रतीशके क्रमसे दीक्षागुरु और श्रुतगुरु थे । बालचन्द्रके पुत्र अभयचन्द्र बालचन्द्रके शिष्य हुए । (उक्त मितिकी) रातको अपने सल्लेखनाके समयको जानकर, उसकी विधिको धारण करके अमयचन्द्र महासैद्धान्तिक दिवंगत हुए ।]

[EC, V, Belur tl., No. 133.]

४२५

कडकोल;—कन्नड ।

[शक १२०१ = १२७९ ई०]

[कडकोल गाँवके अन्दर हणमन्त या हनुमान मन्दिरके पासके स्मारक पाषाण पर यह अभिलेख है]

[१] स्वस्ति श्री स (श) कवर्ष १२०१ प्रमाथि-संवत्स-
[२] रद भाद्रपद सु (शु) द्ध छ [द्] टि सोमवारदन्दु श्रीम-
[३] न्-मूलसंघद पडुमसि (? से) न-भट्टारकदेवर गु-
[४] [ड्] डि कडकोळद सावन्त सिरियम-गौडन हेण्डति
[५] चण्डिगौडि सर्व्व-निव्रि (वृ) त्तियं कयि-कोण्डु स-
[६] माद्धि (धि) यिं मुडिपि स्वर्गप्राप्तेयाद निषिद्धि (धि)-
[७] य स्तम्भम् [।] मंगळ-महा-श्री-श्री-श्री [॥]
[८] हिर्य्य-बोप्पगौड चिक्क-बोप्पगौड चिक्कगौड
[९] क (?) लिदेव रुवा (?) घ (?) विरिदेव मुख्य हन्नेरडु-हि-
[१०] ट्टु समस्त-प्रजे बसदिगे कोट्ट येरे मत्तरु १ [।] श्री-
[११]-वान्य मङ्गल-महा-श्री-श्री-श्री [॥]

अनुवाद—स्वस्ति ! पवित्र मूल संघके पडुमसेन-भट्टारकदेवकी गुड्डि (शिष्या या अनुयायिन); (तथा) कडकोळके सावन्त-सिरियमगौडकी पत्नी चण्डिगौडिकी (स्मृतिका) यह 'निषिधि'-स्तंभ है। उसने यह समाधि सर्व इन्द्रियोंके विषयोंसे निवृत्त होकर तथा सर्व सांसारिक कार्योंका त्याग करके प्रमाथि संवत्सर—जो शक वर्ष १२०१ था—के भाद्रपद (महीने) के शुक्ल पक्षकी छठ, सोमवारको ली थी स्वर्ग प्राप्त किया था। मंगल और लक्ष्मी बढ़े ! १२ हिट्टु तथा हिर्य्य-बोप्प गौड, चिक्क-बोप्पगौड चिक्कगौड, (?) (कलिदेव, (तथा) रुवाघविरिदेव प्रमुख सब लोगोंने बसदिके लिये ! 'मत्तर' काली-मिट्टी वाली भूमि दी। मंगल-महा-श्री-श्री-श्री !

[IA, XII, P. 100–10I. No 2. T and Tr]

५२६

चिक-मगलूर—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १२०२=१२८० ई०]

[चिकमगळूरमें, कालबागमें एक पाषाण पर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ।

श्रीमन्-नाळ्-प्रभु सु-चरितनेने विनय-निधियु निर्म्मल-चित्तं प्रेमं बुध-जननिकरकालय वासुनेमं सकळजनकाधारं धार्मिष्टं वीरं धुरन्धरं पुरुषाकारं कामरूपं **मसण-गावुण्ड**नग्र-तनूजं **सोम**-नामं धरेयोळ् ।

जिन-समय वर्षि-वर्द्धन [न्] । अनवरतं चारु-वर्णकिर्तुं तणियम् ।
धन-महिम-श्रेयांस-। मुनियगुडुनु विनय-निधि चलदङ्क-रामनेनिपं सोमम् ॥
आरदि-गौण्डेयव्वे ··· । सारदे गुण-रत्न-भूमि-चिन्तामणिय ··· ।
··· ई नोव्वं ताय्वरे । तोरद ··· ··· सोम-गौण्डनेम्ब निधानम् ।

स्वस्ति परम-जिन-समय-समृद्धरण-करण-परिणतनुमेनिसिद्द **श्री-मूल-संघद देशि-गण-पोस्तक-गच्छ हनसोगेय बळि कोण्डकुन्दान्वयद श्रेयान्स-भट्टारक** गुरु **चिक्कमुगुळिय** मसण-गौडनग्र-सुत **सक-वरुस१२०२ नेय विकम-संवत्सरद श्रावण-शुद्ध-तदिगे मंगळवारदन्दु सोम-गौड** समाधि वड्दु सुर-लोक-प्राप्तनाद ई-निधिधिय कल्ल आतन मग **हेग्गडे-गौड** प्रतिष्ठे माडिद अष्ट-विधार्च्चने चरुविगे कारुविय ·· गुळिय गद्दे ··· कोम्ब ५ ··· ···

[जिन शासनकी प्रशंसा । मसण-गौडके पुत्र सोमकी प्रशंसा ।

चिक-मुगुळिके मसण-गौडके ज्येष्ठ पुत्र सोम-गौड, जो श्री-मूलसंघ, देशि-गण, पोस्तक-गच्छ, हनसोगे-बलि तथा कोण्डकुन्दान्वयके श्रेयान्स-भट्टारकका गुरुरय-शिष्य था, के समाधिमरण धारणकर स्वर्ग जानेके बाद, उसका यह स्मारक-पाषाण

उसके पुत्र हेग्गडे-गोडने खड़ा किया था। उस समय अष्टविध पूजनके लिये (उक्त) भूमिका दान दिया था।]

[Ec, VI, Chikmagalur tl., No, 2]

५२७

श्रवणबेल्गोला—कन्नड़।

[शक १२०६ (ठीक १२०१ ?)=१२८१ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५२८

श्रवणबेल्गोला—संकृत तथा कन्नड़।

[शक १२०५ = ११८२ ई०]

[जैन शिलालेख संग्रह, प्रथम भाग

५२९

गिरनार—संस्कृत।

[सं० १३३९=१२८२ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[Revised-Lists ant rem Bambay (ASI, XVI), p. 352–353, No 9 (lst parh), t. and tr.]

५३०

गिरनार—सस्कृत।

[सं० १३३९ = १२८२ ई०]

श्वेताम्बर लेख

[Ant. Kathiawad. and kachh (ASWI, II), p. 169, tr.]

५३१

कण्ठकोट;—संस्कृत ।

[सं० १३४० = १२८३ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[ASWI, Selections, No. CLII, p, 64, a.; p. 86, t. (ins, No. 26).]

५३२

सियाल-चेट;—संस्कृत ।

[सं० १३४३ = १२८६ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[ASI, XVI, p. 254, t.]

५३३

श्रवणबेलगोला;—कन्नड़ ।

[वर्ष सर्वधारी=शक १२१०—१२८८ ई० (कीलहौर्न)]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५३४

तवनन्दि;—कन्नड़ ।

[वर्ष सर्वधारी = १२८८ ई० ?]

तवनन्दिमें, किलेकी बस्तिके दक्षिणकी ओरके समाधि-पाषाणपर]

स्वस्ति श्रीमतु सर्व्वधारी-संवत्सरद आषाढ़-सुद्ध-तदिगे-बृहस्पति-वारद श्रीमतु काणूर-गणद माधवचन्द्र-देवर गुड्डि श्रीमत्-नाळु-प्रभु माळि-गौडन

सोसे अप्पे-गौडन हेण्डति श्रीमत्-नाळु-प्रभु उदरैयन मगळु सिरियव्वे समाधि-विधियिं मुडिपि स्वर्गस्तेयादळु मङ्गळ महा श्री श्री

[यह लेख भी समाधि-मरणकी विधि लेकर स्वर्ग प्राप्त करने का है।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 195.]

५३५

हिरे-आवलि;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[**हिरे-आवलिमें, ध्वस्त जिन-वस्तिके सामनेके १३वें पाषाणपर**]

श्रीमत्-परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥

श्री-**रामदेव**-राज्यद-**विकृत संवत्सरद भाद्रपद-ब ४ सु मलधारि-देवर गुरु चोळय** समाधियिं मुडिपि स्वर्गस्थनादनु मङ्गळ

[लेख स्पष्ट है। ईस्वी सन् १२६०; राम-देवका राज्य था।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 113]

५३६

पर्वत आबू;—संस्कृत।

[**सं० १३२० = १२६३ ई०**]

श्वेताम्बर लेख।

[Asiat. Res., XVI, p. 311, No. XXII, a.

५३७

गिरनार;—संस्कृत-नागर।

[**सं० १३५० = १२६३ ई०**]

श्वेताम्बर लेख।

[Revised Lists ant. rem. Bombay (ASI, XVI), p. 360–361, No. 33, t. & tr.]

५३८

हिरे-आवलि;—कन्नड़ ।

[१]

[हिरे-आवलिमें, ध्वस्त जिन-वस्तिके सामनेके २१वें पाषाणपर]

श्री स्वस्ति श्रीमतु यादव-नारायण भुज-बळ-प्रौढ़-प्रताप-चक्रवर्त्ति श्री-रामचन्द्र-राज्योदयद २२ नेय जय-संवत्सरद पुण्य-बहुळ-अष्टमी-आदिवारदन्दु श्रीमन्-नाळ्-प्रभु अवलिय-माद-गौडन मग काम-गौडन तम्म बेळ-गौडन हेण्डति मूल-संघ सेन-गण कोण्डकुन्दान्वयद कन्तरसेन-देवर गुड्डि बक्कचि-गौडि समाधि विधियि मुडिपि स्वर्ग-प्राप्तळादळु मङ्गळ महा श्री

[लेख स्पष्ट है । ईस्वी सन् १२५५; रामचन्द्रका राज्य था ।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 124.]

५३९

खम्भात (Cambay);—संस्कृत-गद्य ।

[सं० १३५२=१२९५ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[Bhavnagar Ins., p. 227–233, t. and tr.]

५४०

तवनन्दि;—कन्नड़ ।

—[१] पर ई० १२१२

[तवनन्दिमें, पाँचवें समाधि-पाषाणपर]

कलि-चलि-महदेवण्णन ।
कुलम्रमनुद्धरिसलेन्दु रामन बसरोळ् ।

सले पुट्टि कीर्त्ति-वडेदम् ।
बल-युत **दण्डेश-माधवं** वसुमतियोळ् ॥
सकळ-गुण-भरिते जिन-पा- ।
द-कमळ-युग भक्ते अरसलाङ्गने या··· ।
सु-कवि-सुरभूज- **दण्णा-** ।
यक-**माधव**नेसदनखिळ-वसुधा-तळदोळ् ॥
श्रीमच्चन्दन-वत्सरे परिलसज्-ज्येष्ठे तु मासे सिते
पक्षे रुद्र-(मिते) दिने गुरौ च विमळे वारे-कळा-कोविदः ।
श्रीमन्**माधवचन्द्र-देव**-चरणाम्भोजात-भृङ्गो जगद्-
विख्याताभित-कल्प-वृक्ष-सदृश-श्री-**माधवा**ख्य-प्रभुः ॥
स्वामि वञ्चकरोळ् गण्डस् सर्व्व-सांसारिकं पुरा ।
त्यक्त्वा जिनालयं कृत्वा ख्यातं तवनिधावळम् ॥
सोऽयं प्रभुगळादित्यस्समाधि-विधिना भुवि ।
नाक-लोकमगाद् दण्डनाथ-श्री-**माधव**-प्रभुः ॥

श्रीमद्-यादव-नारायण भुज-बळ-प्रौढ़-प्रताप-चक्रवर्त्ति श्री **वीर-रामचन्द्र-राय-विजय-राज्योदयद २३ नेय नन्दन-संवत्सरद ज्येष्ठ-ब. ११ गुरुवार-दन्दु** श्रीमत्-**काणूर-गणद माधवचन्द्र-भट्टारकर** गृह्द श्रीमत्-नाळ्-प्रभु प्रभुगळादित्यं प्रजे-मेचे-गण्डं ··· ··· ··· दण्णायक-**माडि-गौडं** समाधि-विधियिं मृडुपि स्वर्ग-प्राप्तनादनु मङ्गल महा श्री श्री

[वीर महदेवण्णके कुलको आनन्दित करनेके लिये रामकी कुक्षिसे **दण्डेश-माधव** उत्पन्न हुआ था । वह माधवचन्द्र-देवके चरण-कमलोंका भ्रमर था, उसने तमाम कौटुम्बिक बन्धनोंको छोड़कर, जिनमन्दिर बँधवाकर समाधिमरणपूर्वक स्वर्गको प्रयाण किया था । यादव-नारायण, भुजबल-प्रौढ़-प्रताप-चक्रवर्त्ती वीर-रामचन्द्र-रायके विजय-राज्यमें, (उक्त मितिको), काणूर-गणके माधवचन्द्र-भट्टारकके गृहस्थ शिष्य-नाळ्प्रभु दण्डनायक माडि-गौड स्वर्गको गये ।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 198]

५४१

हिरे-आवली;—कन्नड़।

—[१]= १२९५ ई० का

[हिरे आवलिमें, ध्वस्त जिन-वस्तिके सामनेके पाषाणपर]

स्वस्ति श्रीमतु **यादव नारायणम्** भुव-वळ प्रवुड-प्रताप-चक्रवर्त्ति **श्री-राम-चन्द्र-विजय-राज्यदोयद १ १३ नेय मनुमथ(मन्मथ)-संवत्सरद** मार्ग्ग-सिर-वहुळ १३ य ..... श्रीमन्-नाळ्-प्रभु **आवलिय** कामं **काळ-गवुडनु श्री मूल-संग** (घ) द **कोण्डकुन्दान्वयद सुराष्ट-गणद देवणन्दि-देवर** गुड्ड समाधि-विधियिं मुडिहि स्वर्ग्गस्तनादनु मङ्गल महा श्री ॥

[स्वस्ति। यादव-नारायण, भुवबळ-प्रौढ़-प्रताप चक्रवर्ती रामचन्द्रके विजय-राज्यके २३वें (१) वर्षमें, जो कि **मन्मथ** वर्ष था, (उक्त मितिको), श्री-मूल-संघ, कोण्डकुन्दान्वय तथा सुराष्ट-गणके देवनन्दि-देवके गृहस्थ-शिष्य, नाळ्-प्रभु आवलि-काळ-गवुड, समाधि-विधिको धारण करके, स्वर्गको गया।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 101.]

५४२

हुम्मच;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १२१८ = १२९६ ई०]

[उसी स्थानपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति श्रीमतु **शक-वर्ष १२१८ नेय दुर्म्मुखि-संवत्सरद पुष्य** सु-विदि-गेलु **श्री-गुणसेन-सिद्धान्त-देवर** प्रिय-गुड्ड **यादगवुड** समाधि-विधियिं मुडिपि सुर-लोक-प्राप्तनाद मङ्गळ महा श्री

[जिन शासनकी प्रशंसा। स्वस्ति। (उक्त मितिको), गुणसेन सिद्धान्त-देवके प्रिय गृहस्थ-शिष्य याद-नावुडने 'समाधि'-विधि द्वारा देवलोक प्राप्त किया।]

[EC, VIII, Nagar tl., No. 43.]

५४३

श्रवणबेल्गोला—कन्नड़।

[वर्ष दुर्म्मुखि = १२९६ ई० ? (लू० राइस)]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५४४

हिरे-आवलि;-संस्कृत तथा कन्नड़।

[वर्ष दुर्म्मुखि = १२९६ ई० ? (लू० राइस)।]

[हिरे-आवलिमें, ध्वस्त जिन-वस्तिके सामनेके १४ वें पाषाण पर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
चीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वरं **कोटि-नायक**न विजय-राज्योदयद **दुर्म्मुखि-संवत्सरद भाद्रपद-ब १३** आ। श्रीमन्-नाळ्-प्रभु अवलिय काळ-गौडन पुत्र सिरियम-गौडन मग श्री-मूलसंग (घ) देसि-गणद रामचन्द्र-मलधारि-देवर गुड्डु-कल्ल-गौड सन्यसन-समाधियिं मुडिपि स्वर्ग्गस्तनाद मङ्गल महा श्री श्री श्री

[लेख स्पष्ट है। ईस्वी सन् १२९६ (?); कोटि-नायकका राज्य था।]

[Ec, VIII, Sorab tl. No 114]

५४५

हेग्गेरे;—कन्नड़ ।

[शक १२२० = १२९८ ई०]

[हेग्गेरेमें, उसी बस्तीमें तीसरे पाषाण पर]

स्वस्ति श्रीमन्पञ्च-कल्याणाभ्युदय-शक-वर्षद १२२० ने हेमलम्बि-संवत्सर-कार्तिक व ११ चु-चेनिप नन्दा मृगुविनलु उत्तरा-नक्षत्रवलु उत्तरोत्तरवह श्री-मूल-संघ देशिग्य य)-गण श्रीमन्-त्रिभुवनकीर्ति-राजद्व-शिष्यर कलि-युग-गण-धर ललन गेलिद अति-बल सकल-वैरि-दप प)-रनेन्द्र भलधारि-बालचन्द्र-राजर ... ... सुत चन्द्रकीर्ति स्वर्ग वडेदम् ।

हेग्गेरेय मल्ल-बस्तिय -।

केय्लवेनिसिदर्ग ... दीक्षे कैकोण्डु ।

स्वर्ग वडेद मुनिगल ।

केय्लवेनिसिद लिपिविद माडिसिदरु ॥

[स्वस्ति । (उक्त तिथिको), श्री-मूलसंघ, देशिय-गणके त्रिभुवनकीर्ति-राजके शिष्य, कलियुग-गणधर, भलधारि-बालचन्द्र-राजके पुत्र चन्द्रकीर्तिने स्वर्गलाभ किया । हेग्गेरेके मल्ल (जैन) बस्तीके अग्रणियोंने मुनियोंने अग्रणीके लिये उनके स्वर्ग-प्राप्तिके उपलक्षमें यह स्मारक बनवाया ।]

[EC, XII, Chik-Nayakan halli tl., No. 24]

५४६

गिरनार—संस्कृत ।

[सं० १३२६ = १२७२ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[Revised Lists ant. rem Bombay (ASI, XVI), p. 363, No, 37, t. & tr.]

५४७

हिरे-आवलि;—कन्नड़ ।

[वर्ष विकारी = १२९९ ई० ? (लू० राहस) ।]

[हिरे-आवलिमें, ध्वस्त जिन वस्तिके सामनेके ३२ वें पाषाण पर]

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वरं तुळुव-राय ..... राय-वेण्टेकार मलेयमण्ड-लिक-मदेभ-कुम्भ-विदळन-वेदण्डारि-सदृश श्रीमन्महामण्डलिक कोटि-नायकन राज्याभ्युदयदन्दु **विकारि-संवत्सरद श्रावण-मास-शुक्लपक्ष-पञ्चमी-शनिवार-दन्दु श्री-मूल-संघ देशी-गण-कोण्डकुन्दान्वयद** समस्त-गुण-शाल-सम्पन्नरप्प **गुणनन्दि-भट्टारकर** गुड्डि खण्ड-स्फुटित-जीर्ण्ण-जिनालयोद्धरण-परिणतान्तःकरणनु आहारामय-भैषज्य-शास्त्र-दान-विनोदनुं सम्यक्त्व-रत्नाकरनु जिन-गन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमांगनुमप्प श्रीमन्-नाळ्-प्रभु अवलिय शिरियम-गौडन सव्वांग-लदिम शिरियम-गौडि सकल-सन्यसन-पूर्व्वकं समाधियिं मुडिपि स्वर्गस्तेयादळु ॥ मङ्गल महा ! श्री

[लेख स्पष्ट है । १२९९ ई०; कोटि-नायकका राज्य था ।]

[Ep, VIII, Sorab tl., No 122.]

५४८

हलेवीड—संस्कृत और कन्नड़ ।

[शक १२२२ = १३०० ई०]

[वस्तिहल्लिमें, दूसरे प्रतिमा-पाषाण पर]

(१सामने)

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति श्री मूल-संघ-देशिय गण-पुस्तक-गच्छ-कुण्डकुन्दान्वयद पिङ्गलेश्वरद बळिय श्री-समुदायद **माधनन्दि-भट्टारकदेवर** प्रिय-शिष्यरु **श्री-नेमिचन्द्र-भट्टारक-देवरु** श्रीमद्भयचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगळु विद्या-गुरुगळु श्रुत-गुरुगळुमागे तपश्श्रुतंगळिं वगदोळ् विख्यातियं पेट्ट श्रीमद्**बालचन्द्र-पण्डित-देवर** प्रियाग्र-शिष्यरुमप्प श्रीमद्**रामचंद्र-मलधारि-देवरु सक-वरुष-सासिरदिन्नूरिप्पत्तेरडनेय सार्व्वरि संवत्सरद-चैत्र-बहुल-तदिगे-बृहद्वार-दपराह्नकालदोळेमगे समाधियेन्दु चातुर्व्वर्ण्यंगळ्गरिपि** (बायीं ओर) नीमेलरं धार्म्मिकरप्पुदेन्दु नियामिसि क्षमितव्यमेन्दु सन्यसनपूर्व्वकं सकळ-निवृत्तियं माडि पर्यङ्कासनदिं पञ्च-गुरु-चरण-स्मरणेयं माडुत्त दिवके सन्दरु । अवर तपो-माहात्म्य-मेन्तेन्दोडे ।

नडेवडे बाहु-दूगड युगान्तरमं नेरे नोडदावगम् ।
नडेयद कामिनी-कनकमं सले शोकद कर्क्कसङ्गळम् ।
मुडियदहर्निशं विक्रयेयं मारेदाडद मोह-पाशदोळ् ।
तोडरट्ट ··· **मलधारिय** ··· ··· ··· विराविक्कुम् ॥

श्रीमद्रामचन्द्र मलधारि-देवरु तम्म प्रियाग्र-शिष्यरु-मप्प **शुभचन्द्र-देवरिंगे** श्रे-यो-मार्गोपदेशमं माडियरु अवरु केळिहरु ॥

श्रीमद्-बालचन्द्र-पण्डित-देवरु तम्म प्रियाग्र-शिष्यमरुप्प श्री-मद्-**रामचन्द्र-मलधारि-देवरिंगे** सारचतुष्टयं मोडलाद ग्रन्थगळ व्याख्यानं माडिहरु अवरु केळिहरु ॥*

विन्नु पोगळ्ते-वेत्त श्रीमद्रामचन्द्र-मलधारि-देवर प्रतिकृति-समन्वित-पञ्च-परमेष्ठिगळ प्रयुमेगळं श्रीमद्-रावधानि-**दोरसमुद्र**द मन्यचनंगळु माडिसि पुण्य-वृद्धि-यशोवृद्धिय कैक्कोण्डरु ॥ भद्रमस्तु जिनशासनाय मंगल महा श्री ॥

[इस लेखमें रामचन्द्र-मलधारि-देवके सल्लेखना-व्रत लेनेका उल्लेख है। रामचन्द्र-मलधारिदेवके गुरु बालचन्द्र-पण्डित-देव, इनके गुरु माघनन्दि-भट्टारक

---

* ये दो प्रतिमाओं पर लिखे हुए हैं।

देव, जो मूलसंघ, देशिय-गण, पुत्तक गच्छ, कुण्डकुन्दान्वय, पिङ्गलेश्वर-
और श्री-समुदाके थे। वा० प० दे० के विद्यागुरु नेमिचन्द्र-भट्टारक-देव
श्रुत-गुरु अभयदेव-सिद्धान्त-चक्रवर्त्ति थे। रा० म० दे० के शिष्य शुभचन्द्र
थे। इनकी प्रतिमा दोरसमुद्रके जैनोंने बनायी थी।

[Ec, V, Bel w tl., No I34]

५४९

हलेबीड—कन्नड़।

[बिना काल-निर्देशका पर लगभग १३०० ई० ?]

[हलेबीडसे लगी हुई वस्तिहल्लिमें, पार्श्वनाथ वस्तिके बाहरकी
दीवालके स्तम्भ पर]

ईशान्यद-आदि-मोदलागि ईशान्यद हदिनैदु-कैयन्तरदल्लु आरुगय्युव
शान्तिनाथ-रेवरु भूमिस्थवागिर्द्दरु आवनानुं पुण्य-पुरुषं तेगदु प्रतिष्ठेय
पुण्यमं माडिकोळ्ळुवुदु ॥

[ईशान दिशासे शुरू करके, उससे (ईशान दिशासे) १५ बित
अन्तरपर शान्तिनाथ देव, जिनकी ऊँचाई ६ बिलस्त है, जमीनके अन्दर
हुए हैं। कोई पुण्य-पुरुष उनको बाहर निकालकर, उनकी प्रतिष्ठाकर पु
लाभ ले।]

[Ec, v, Belur tl. No 127]

५५०

पर्वत आबू-प्राकृत।

[सं० १३१०=१२०३ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[Asiat, Res, XVI, P. 311, No XX, a.]

५५१

होन्नेनहल्लि:—कन्नड़ ।

[शक १२२५ = १३०३ ई०]

[होन्नेनहल्लि (किलजाजि प्रदेश) में, बस्तिके प्रवेशके बायीं ओरके पत्थरपर]

स्वस्ति श्री मूलसंघ देशियगण पोस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वय हनसोगेय वळिय श्री **बाहुबलि-मलधारि-देव**र प्रिय-शिष्य-रुमप्प **श्री-पद्मनन्दि-भट्टारक-देव**रु **शक-वर्ष १२२५ शुभकृतु-संवत्सरदन्दु होन्नेयनहळ्ळिय** बसदिय गन्ध-गुडियनु गद्याणं हदिनय्दनू कोट्टु माडिसिदरु (**बाहुबलि-देव**रु **पारिश्व-देव**रु बरिसिदरु) मङ्गळमहा श्री इवनळिदवरु नरकक्के लोहरु ॥

[पद्मनन्दि-भट्टारक-देवने, जो मूलसंघ देशीगण पुस्तकगच्छ तथा कोण्डकुन्दान्वयके, और हनसोगेके बाहुबलि-मलधारि-देवके प्रिय शिष्य थे, होन्नेयनहल्लि बसदिको १५ 'गद्याण' (गद्याण एक सिक्का (मुद्रा) विशेष है) दिये और उसके लिये 'गन्ध-गुडि' भी बनवायी थी । (इस लेखको बाहुबलि-देव और पारिश्व-देवने लिखा था ।)] .

[EC, IV, Hunsur tl., No. 14]

५५२

श्रवणबेल्गोला;—कन्नड़ ।

[शक १२३५=१३१३ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भाग]

५५३

गिरनार,—संस्कृत

[सं० १३७०=१३१३ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[Revised Lists ant. rem. Bombay (ASI, XVI), p. 362, No. 36, t. and tr.]

५५४

पर्वत आबू—संस्कृत।

[सं० १३७६ = १३२२ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[Asiat. Res. XVI, p. 312, No XXII, a.]

५५५

कुप्पटूरु;—संस्कृत तथा कन्नड़।

वर्ष चित्रभानु [१३४२ ई० (या १४०२) ? (लू. राहस)]

[कुप्पटूरुमें, चौथे पाषाणपर]

श्रीमत्परम-गंभीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥
द्वीपे जम्बूमति क्षेत्रे भारते श्रीधरान्वते ।
चन्द्रगुप्तैन सु-क्षेत्र-धर्म्मगेहेन धीमता ॥
रक्षितो दक्षिणा-पा ••• -जन-सम्पद्-विराजितः ।
अखण्डैश्वर्य-निलयो नागरखण्डक-नाम-भाक् ॥

स्वस्ति-भागस्ति विषयो विषयोऽखिल-सम्पदाम् ।
निलयो लय-राहित्यादासतां धीमतां सताम् ॥
॥ नाळिकेराम्र-पूगा [•••] द्यारामेण विराजितः ।
विद्यते **कुप्पटूरा**ख्यो ग्रामो **गोपेश**-रक्षितः ।
तत्रास्ति **हरिहरा**धीश-भू-सती-तिलकोपमः ।
जिन-चैत्यालयो नाम **कदम्बै**: कृत-शासनः ॥
तच्चैत्य-पूजनोद्योग-चातुरी-वार्द्धि-चन्द्रमाः ।
चन्द्रप्रभ इति ख्यातः **पार्श्वनाथ**स्य बान्धवः ॥
पितृ-**दुर्गेश**-निर्दिष्ट-गुरु पण्डित-सेवकः ।
वर्त्तमाने चित्रभानौ वत्सरे कार्त्तिके च सः ॥
मासे स कृष्ण-दशमी-तिथौ सोम-समाह्वये ।
वारे दुर्व्वार-यम-राड्-दूत-ज्वर-गदार्दितः ॥
आयुः-परिसमाप्तेश्च कृत-पुण्य-परिग्रहः ।
सं-सुतः ••• ••• ••• ••• नित्य-सुखास्पदम् ॥

श्री श्री

[जम्बूद्वीप, भरतक्षेत्रमें श्रीधरपर्वतके पास नागरखण्ड नामका एक प्रदेश था। उसमें अनेक फल सहित वृक्षोंके बगीचों सहित, गोपेश द्वारा रक्षित कुप्पटूर् नामका गाँव था। उसमें राजा हरिहरकी भूमिमें एक जिन-चैत्यालय था, जिसमें कदम्बोंकी तरफसे एक शासन (दान-लेख) मिला था। उस चैत्यमें पार्श्वनाथके बान्धव प्रसिद्ध चन्द्रप्रभ थे जो कि एक पण्डितके गुरू थे। (उक्त मितिको) उसे यमराजके दूतोंकी तरफसे बुखार आ गया और अपनी जिन्दगीका अन्त करके नित्य सुखके स्थान (अर्थात् स्वर्गको) चला गया।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 263]

५५६

हिरे-आवलि;—कन्नड़।

[वर्ष विजय = १३४६ ई० ? (ल. राहस)।]

[हिरे-आवलिमें, ध्वस्त जैन-वस्तिके सामनेके पाषाणपर]

व्यय-संवत्सरद ज्येष्ठ-सु ५ गु **रामचन्द्र-मलधारि** गुरुगळ गुड्डु अव-लिय **चन्द्र-गौडन** मग **राम-गौड** जिन-पदवनयिदिद।

[लेख स्पष्ट है। १३४६ ई०; राजाका उल्लेख नहीं है।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 123]

५५७

तिरुमलै,—तामिल।

[?]

१. स्वस्ति श्री [॥] **राजनारायणन् शंवुवराजक्कु** या-
२. ण्डु १२ वदु **पोन्नूर् मण्णैपोन्नाण्डै**
३. मगळ् **नल्लात्ताळ् वैगैत्तिरुमलैक्कु** एरियरुळ-
४. प्पिण्णिन **श्रीविहारनायनार् पोन्नेयिल्-**
५. **नाथर्** [।] धर्म्मयिरुयतु [॥]

[यह लेख राजनारायण शम्बुवराजके १२वें वर्षका है और वैगै-तिरु-मलै, अर्थात् वैगैके पवित्र पर्वतपर जैन प्रतिमाकी प्रतिष्ठापनाका उल्लेख करता है। इस प्रतिष्ठापनाकी करनेवाली पोन्नूरकी निवासी मण्णै-पौन्नाण्डैकी पुत्री नल्लाताल् थी।]

[South Indian ins., I, No. 70 (p. 101–102) t. & tr.]

५५८

हिरे-आवलि;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[वर्ष विजय=१३५३ ई० (ल. राहस) ।]

[[हिरे-आवलिमें, ध्वस्त जैन-वस्तिके सामनेके १०वें पाषाणपर]

श्रीमत्परम-गंभीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वरं अरि-राय-विभाडु श्री-वीर **हरियप्प-वोडेयर** राज्योदयदन्दु **विजय संवत्सरद** पुष्य-सुद्ध ३० शु ॥ श्रीमनाळुव-प्रभु **राम-चन्द्र-मलधारि-देवर** गुंडु सुरगियहळिय **गोप-गौडनु** मग अवलिय **काम-गौण्डन** मोग्म **काम-गावुडनु** प्च्च-नमस्कारदिं मुडिहिद मङ्गल महा श्री

[लेख स्पष्ट है । १३५३ ई०; उस समय हरियप्प-वोडेयर्का राज्य था ।]

[EC, VIII, Sorab. tl., No. 110]

५५९

हिरे-आवलि;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १२७६=१३५४ ई०]

[हिरे-आवलिमें, ध्वस्त जैन-वस्तिके चौथे पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वरं अरि-राय-विभाडु **हिन्दुव-राय-सुरताळ** श्री-वीर-हरियप्प-वोडेयर राज्योदयदन्दु **शक-वरुष १२७६ विजय-संवत्सरद** पुष्य-वहुळ-तदिगे आ ॥ श्रीमन्नाळुव-प्रभु-आवलिय काम-गौडन मग सिरियम-गौड

सिरियम-गौडन सुपुत्र मल-गौडनु सन्यासन-समाधियिं मुडिपि स्वर्गस्तनादनु आतन अर्द्धाङ्गि चेन्नकनु सहगमनदिं स्वर्गस्तेयादळु । मंगळ मा (महा) श्री श्री

[ऊपरके उल्लेखोंके समान ही, महामण्डलेश्वर, शत्रु राजाओंका नाशक, हिन्दुव राजाओंका सुरताल, हरियप्प-वोडेयरके राज्यमें,—स्वर्गगत मालगौड तथा उसकी भार्या चेन्नके, जिसने 'सहागमन' करके स्वर्ग प्राप्त किया, के लिये भी उल्लेख है ।]

[EC, VIII, Sorab tl.. No. 104]

५६०

मलेयूर;—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक सं० १२७७=१३५५ ई०]

[उसी पहाड़ीपर, बड़े गोल पत्थरके पूर्वकी ओर]

स्वस्ति समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्री **मूलसंघ देशिय-गण कोण्ड-कुन्दान्वय पुस्तक-गच्छ हनसोगेय बळिय** श्रीमद्-राय-राजगुरु-मण्डलाचार्य-समयाचरण-रुमप्प **हेमचन्द्र-भट्टारकर** शिष्यरु **तेलुग आदि-देवरु ललितकीर्त्ति-भट्टारकर** शिष्यरु **ललितकीर्त्ति-भट्टारकरु शक-वरुष १२७७ मन्मथ-संवत्सरद** चैत्र-बहुळ १४ गुरुवारदल्लु तम्म निषिधि-निमित्वागि कनकगिरि-यल्लु माडिसिद **विजय-देवर** प्रतिमेगे अवर मुख्यवाद आचार्य्य ओलगरु मङ्गलमहा श्री श्री श्री

[श्री-मूलसंघ, देशियगण, कोण्डकुन्दान्वय, पुस्तकगच्छ तथा हनसोगे-बळिके हेमचन्द्र-भट्टारकके शिष्य तेलुग आदि-देव और ललितकीर्त्ति भट्टारकके शिष्य ललितकीर्त्ति भट्टारकने अपनी निषिधिके निमित्तसे कनक-गिरिपर **विजय-देव**की प्रतिमा बनवायी ।]

[EC, IV, Chamarajnagar tl., No. 153]

५६१

कणवे;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १२८४ = १३६२ ई०]

[कणवेमें, मण्डगद्देके समीप, कल्लु-वस्तिमें एक पाषाणपर]

श्री-मूल-संघ-देशी- ।
गण - क-गच्छ कोण्डकुन्दान्वयदोळ् ।
भूमियोळखिळ-कला··· ।
काम-कं चारुकीर्ति-पण्डित यतिपम् ॥
श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरमरि-राय-विभाड भाषेगे तप्पुव रायर गण्ड समुद्र-त्रयाधीश्वर श्री-सङ्गमेश्वर-कुमार श्री-वीर-बुक्क-महारायरु राज्यं गेय्युत्तिरे अवर कुमार विरुपण्ण-वोडेयरु मले-राज्यवनाळुवल्लि हेद्दूर-नाडोळगे तडताळ पार्श्व-देवर देव-स्वद सीमा-सम्बन्धक्के आ-हेद्दूर-नाडवरु आस्थानद आचारियरु सूरिगळ कूडे संवादव माडिदडे श्रीमन्महा-प्रधानं नागण्णगळु प्रधानि-देवरसरू आ ····· दा देवरसरू ····· ····· जैन-मल्लप्पनू आरगद चावडियल्लि मूरु-पट्टणद हलरनू हदिनेण्टु-कम्पणवनू करसि विचारिसि आ-नाड-नोडम्बडिसि पडकोट्टु पूर्व-मरियादेयलि मूडलु बेट्ट तेङ्कलु बेट्ट पडवलु हळ्ळि वडगलु होळे सीमेयागि पार्श्व-देवर देवस्ववेन्दु चतुस्सीमेयनु विवरिसि शक-वर्ष १२८४ शुभकृत्संवत्सरद माघ-शुद्ध-पञ्चमी-गुरुवारदलु आ-अरसु प्रधान-रनू (औरोंके नाम दिये हैं) तडताळनु आ-चन्द्रार्क नडव हागे शासनव नडसि कोट्टरु (वे ही अन्तिम वाक्यावयव) !

अक्षय-सुख-मी-धर्म्ममन् ।
ईक्षिसि रक्षिसुव पुण्य-पुरुषर्गक्कुम् ।

भक्तिसुवातन सन्ता- ।
न-क्षयमायु-क्षयं कुळ-क्षयमक्कुम् ॥

श्री-मूलसंघ-देशिगण-पुस्तक-गच्छ-कोण्ड-कुन्दान्वय ... ...

श्री-मूलसंघ, देशि-गण, पुस्तक-गच्छ, तथा कोण्कुन्दान्वयमें चारुकीर्त्ति-पण्डित-यतिप थे। जिन शासनकी प्रशंसा। जिस समय महामण्डलेश्वर, संग-मेश्वरके पुत्र वीर-बुक्क-महाराय राज्यका शासन कर रहे थे,—हेद्दूर-नाड्के तड-ताळके पार्श्व-देव मन्दिरकी जमीनकी सीमाओंके विषयमें जब हेद्दूर-नाड्के लोगों और मन्दिरके आचार्यों में झगड़ा चल रहा था,—प्रधानमंत्री नागण्ण और अनेक अरसू लोगोंने, इसकी जांच-पड़ताल करके, फैसला कर दिया। और इस बातका शासन (लेख) लिख दिया।]

[EC, VIII, Tirthahalli 51., No. 197]

५६२

हिरे-आवलि;—कन्नड़

[शक १२२६ (Sie), वर्ष पार्थिव = १३०६ ई० ? (लू. राइस)।]

[हिरे-आवलि में, ध्वस्त जिन-वस्तिके सामनेके द्वितीय पाषाण पर]

श्रीमतु। विजयानगर-मुख्यवाद-समस्त-पट्टणाधीश्वर श्री-अभिनव बुक्क-राय राज्यं गेय्वल्लि। सकल-गुण-सम्पन्न सिद्धान्त-देवर गुड्ड। रत्न-त्रयाराधक-रुम्। आवलिय वेच-गौण्डन सुत चन्द-गौण्डन तम्म। सक-वरुष १२२६ नेय पार्थिव-संवच्छरं व ११ सोमवारदलु। सन्यसन-समाधि-विधियिं मुडिहि स्वर्ग-प्राप्तियादनु। मङ्गळमस्तु।

मान-गर्व्ववनु ... ... लनु -।
मानदोळं नडिय वल्लमोल्दा-तेरदिम्।
ज्ञानिगळ सलहुतिप्पम्।
दान-रतं रा ... पुरकभिरामन्॥

[जिस समय विजयनगर और दूसरे समस्त पट्टण (नगरों) का अधीश्वर, अभिनव-बुक्क-राय राज्य कर रहा था :—

सिद्धान्त-देवका गृहस्थ-शिष्य, आवळि-वेच-गौडके पुत्र चन्द-गौडका छोटा भाई, (उक्त मितिको), सन्यसन और समाधि-विधिसे मरकर, स्वर्ग गया। उसकी प्रशंसामें श्लोक।]

[Eo, VIII Sorab tl, No 102]

५६३

कुप्पटूरु:—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १२८१ = १३६७ ई०]

[कुप्पटूरमें, जैन-बस्तिके पासके वीरकल् पर]

शक-कालं नव-वारण-द्वि-शशि-संख्योक्त-प्लवंगाब्ददुत् -॥
त्सुकदापाढ़द मासदोळ् विधु-लसद् वारं समन्तोन्दिरल्।
प्रगटं-वेत्ततिसय्यवा-श्रुत-मुनि-श्री-पाद-सेवा-रतर्।
सु-कवीन्द्र-स्तुत-देवचन्द्र-मुनिपर् स्वर्-लोकमं पोद्दिदर्॥
श्रुत-मुनिगळ शिष्यर् भू -। नुत-देशी-गणद देवचन्द्र-व्रतिपर्।
यति-कुल-ललामरत्नूर् -। जित-तेवरन्नेगळ्दरादिदेवर गुरुगळ्॥
श्रुत-मुनि-वल्लभेन्द्र-गुरु दीक्षेयनीयलदादियागतूर् -।
वि [त]-गुण-शील-सच्चरि .... कूडि वेत्तु।
अतिश (य) य-जैन-धर्मद निमिर्कैयोळोन्दि विराविर्दुदी -।
तितियोळु देवचन्द्र-मुनि-वर्य्यरुमागम-कोविदर्निजम्॥
वीर्ण्ण-विन-भवनमं घरं। वर्ण्णिसल्बुदरिसि कीर्त्तियं तळेदरु सम्-।
पूर्णतर-चरितरेनि [सि] द्दं। अर्णव-गम्भीर देवचन्द्र-व्रतिपर्॥
नेगळ्द-मुनिपर् भव-मा-। लेगळ्दिक सन्यसनदिं समाधियनेय्दिद्।

अगणित-महिमेयोलोन्दिद । सु-ग [ति] यनान्तर्ब्बनेय-बन-नुत-चरित्र् ॥
श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
श्रुत-मुनि-वर्य्याद् भव्यात् पूज्य-श्री-देवचन्द्र-परम-गुरुः ।
तच्छिष्य आदिदेव ··· ··· ··· सत्-तपो-निळयः ॥

शुभमस्तु ॥

[(उक्त मितिको) प्रसिद्ध श्रुतमुनिके चरणोंका उपासक देवचन्द्रमुनिपने स्वर्गलाभ किया । श्रुतमुनिके शिष्य संसार-विख्यात, देशी-गणके देवचन्द्र-व्रतिप यतियोंके कुलमें तिलक-समान थे, वे आदिदेवके गुरू थे । उनकी और भी प्रशंसा, जिसमें कहा गया है कि उन्होंने एक ध्वस्त जिनमन्दिरका पुनरुद्धार करवाया था । श्रुतमुनिसे सन्मानित देवचन्द्र थे जिनके शिष्य आदिदेव थे ।]

[Ec, VIII, Sorab tl., No 260]

५६४

हिरे-आवलि;—कन्नड ।

[वर्ष प्लवंग = १३६७ ई० (लू० राइस) ।]

[हिरे-आवलिमें, ध्वस्त जैन-वस्तिके सामने १ले पाषाण पर]

स्वस्ति श्रीमतु **प्लवंग-संवच्छरद** अस्वैज-बहुळ-पञ्चमी-शुक्रवारदन्दु श्री-**मूल-संघद वारिसेन-देवर** गुड्ड **मसण-गौडन** मग **गोरव-गौड** पञ्च-नमस्कार-समाधि-विधियिं स्वर्गस्तनाद ॥

[लेख स्पष्ट है । १३६७ ई०; राजाके नामका उल्लेख नहीं है ।]

[Ec, VIII, Sorab tl., No 109]

५६५

श्रवणबेल्गोला;—कन्नड़।

[शक १२९०=१३६८ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५६६

कल्य;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १२९०=१३६८ ई०]

[कल्य (सातनूर् परगना) में, चिक्कण्णके खेतमें एक पाषाणपर]

स्वस्ति समस्त-प्रशस्ति-सहितम्

पाषण्ड-सागर-महा-वडवा-मुखाग्नि-
श्रीरङ्ग-राज-चरणाम्बुज-मूल-दासः ।
श्री-विष्णु-लोक-मणि-मण्डप-मार्ग-दायी
रामानुजो विजयते यति-राज-राजः ॥

शक-वर्ष १२९० नेय कालिक संवत्सरद श्रावण-शु २ सो-दलु श्री-मन्महा-मण्डलेश्वरं अरि-राय-विभाड भाषेगे तप्पुव रायर गण्ड श्री-**वीर-बुक्क-रायनु** पुट्टु (शु,) वी-राज्यवनाळुव कालदलि जैनरिगे भक्तरिगे संवादवादल्लि **आनेयगोन्दि-होसपट्टण-पेनगोण्डे-कळ्यह**नाळगाद समस्त-नाड जैनरु बुक्क-रायङ्गे मक्करु अन्यायदलु कोल्लुवदनु विन्नहं माडलागि **कोविलु-तिरुमले पेरु-माळ्कोविलु-। तिरुनारायणपुर**-मुख्यवाद सकलाचार्य्यरु सकळ-समयिगळु सकळ-सात्त्विकरु मोष्टिकरु तिरिमणि-तिरुविडि तन्दवरु नाळ्वत्तेण्टु-तले-मक्कळु **सहस्र-नोवर्क्कलु तिरुकुल-जाम्बवकुल**-वोळगाद पदिनेण्टु-नाडा-श्री-वैष्ण-वर कय्यलु महारायनु ··· निम्म वैष्णव-दरुसनद मपेवोक्करुवेन्दु कोट्ट-सम्बन्ध पञ्च-वस्तिगळलि **कळस जगळे-जगटे**-मोदलाद पञ्च महा-वाद्यङ सलुकुदु अन्यरि

[गे] वरकूडदु जैन-समयके सलुबुदेन्दु ··· ··· ··· ··· वृद्धिपाद (बायीं ओर) श्री-वैष्णव-समय ··· ··· ··· ··· ··· यी-मर्यादे ··· ··· ··· ··· ··· ओळगुळ बस्ति ··· श्री-वैष्णव ··· ··· ··· ··· नेट्टु कोट्टेवु (बाकी का पढ़े जाने लायक नहीं है)

[रामानुज की स्तुति।

(उक्त मितिको), जिस समय महामण्डलेश्वर वीर-बुक्क-राय पृथ्वीपर राज्य कर रहे थे :—जैनों और भक्तों (वैष्णवों) में कोई विवादका विषय उपस्थित होने पर आनेयगोन्दि, होसपट्टण पेनुगोण्डे और कल्यह,[1] इन नाडोंके जैनोंने बुक्क-रायको इस बातका प्रार्थनापत्र देकर कि १८ नाडोंके श्री-वैष्णवोंके हाथोंसे जैन लोग अन्यायसे मारे जा रहे हैं,—महारायने (यह घोषणा करते हुए कि) "हम तुम्हारे वैष्णव दर्शनमें बाधक नहीं होंगे" निम्न हुक्म दिया :—कलश इत्यादि पाँच बस्तियोंमें पाँच महा वाद्य बज सकते हैं। और में वे नहीं बजाये जा सकते। वे जैन समय (या समऊ) की हैं। श्री-वैष्णव समय, जो बढ़ गया है ··· ··· ··· ··· (बाकीका अधिकांश अपठनीय है)]।

[Ec, IX, Magadi tl., No 18]

५६७

एचिगनहल्लि—कलश।

[शक सं० १२६२ = १३७० ई०]

[एचिगनहल्लि (नञ्जनगूड प्रदेश) में, नदीके पास, नेमिनाथ-वस्तिके उत्तर एक पाषाण पर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥१॥

---

१. जहाँ यह शिलालेख है, वहाँ कल्य कहते हैं।

धीरपार-सद्गुण-मणि-त्रद-वारिधिगळ् अपाय-सं-
हारिगळाद मावरररिदविनेश्वरधर्म्मराशिगळ् ।
कूरेन्चरित्र-**बाहुबलि**-देवर् अभिष्टुत-**पार्श्व-देवरुं** ।
सूरि-विनूतवद्विशद-शक्तियनान्तेतेदर्निरन्तरम् ॥२॥
जिनमताम्बुराशि-परिवर्द्धना-चन्द्रनन् अल्प-तन्द्रनं ।
मानित-सार-सर्व्व-गुण-वन्द्रनन् उन्नत-कीर्त्ति-सान्द्रनन् ।
धीन-विमोह-मारण-मृगेन्द्रननुद्दम-कूरा-नदीन्द्रनम् ।
भू-नुत-**मेघचन्द्र**ननशेष-वनं नलविन्दे वण्णिकुम् ॥३॥
आरियद विद्देयिल्ल विडदोदद केळद शास्त्रविल्ल कूर्च्चं-
दे ... ...भूपरिल्ल सले सोलद वादिगळिल्ल सन्ततं ।
नेरेदे समस्तरं पोगळदिर्द्द कवीश्वरं इल्ल लोकदो-
ळरे **पार्श्वदेव**स्तुत-**बाहुबलि**-व्रति-शक्तियद्भुतम् ॥४॥

शकवर्ष १२९२ नेय सन्द विरोधिकृत्-संवत्सरद मार्गशिर-सु १५ आ । वारद दिवसदल्लि **मेघचन्द्र-देवर** मुक्तिगे सन्दर मंगळमहा श्री यिवरिगे निसिधिय माडिसिद वरकोट्य **मेघचन्द्र-देवर** शिष्यर **माणिक-देवरु** ।

[इस लेखमें दूसरे श्लोकमें बाहुबलि-देव और पार्श्व-देवकी प्रशंसा है । तीसरे श्लोकमें भूनुत (प्रसिद्ध) मेघचन्द्रकी प्रशंसा है । चौथे श्लोकमें पुनः पार्श्वदेव और बाहुबलि-व्रतीकी प्रशंसा है । उनके विषयमें कहा गया है कि ऐसी कोई विद्या नहीं थी जिसको वे न जानते हों, ऐसा कोई शास्त्र (Science) नहीं था जिसको उन्होंने पढ़ा या सुना न हो, ऐसा कोई राजा नहीं था जिसने उनके ऊपर कृपा न की हो, ऐसा कोई वादी नहीं था जिसको उन्होंने हराया न हो, ऐसा कोई कवि नहीं था जिसने कभी उनकी प्रशंसा न की हो,—क्या संसार उनकी अद्भुत शक्ति को माननेके लिये तैयार न होगा ? अस्तु, होगा ही ।' मेघचन्द्र-देवका देहान्त होनेके बाद, उनकी स्मृतिमें उनके शिष्य मणिक-देवने यह स्मारक खड़ा किया ।]

[Ec, III, Nanjangud tl., No 43]

५६८

तवनन्दि;—कन्नड़।

[शक १२९२ = १३७० ई०]

[तवनन्दिमें, आठवें समाधि-पाषाणपर]

श्रीमतु **शक-वर्ष १२९२ नेय साधारण-संवत्सरद माघ-शुद्ध ८ सोमवारदन्दु** श्रीमन्माधवचन्द्र-मलधारि-देवर प्रिय-गुडु **तवनिधिय माडि-गौडन** सु-पुत्र **बोम्मण्णनु** समाधि-विधियि मुडिपि स्वर्ग-लोक-प्राप्तनादनु ॥

[(उक्त मितिको), माधवचन्द्र-मलधारी-देवका प्रिय गृहस्थ-शिष्य तव-निधि माडि-गौडका पुत्र बोम्मण्ण, समाधि मरणपूर्वक स्वर्गको गया।]

[EC, VIII, Sorab tl.,:No. 201]

५६९

तवनन्दि;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १२९३ = १३७१ ई०]

[उसी स्थानमें, छठे समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परम-गंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

श्रीमन्महा-मण्डलेश्वर अरि-राय-विभाड भासेगे तप्पुव रायर गण्ड हिन्दु-राय-सुरत्राण पूर्व-दक्षिण-पश्चिम-समुद्राधीश्वर श्री-वीर-**बुक्क-राय** विजय-राज्यं गेय्युत्त-मिर्प्पल्लि **शक-वर्ष १२९३ नेय विरोधिकृत्-संवत्सरद फाल्गुन शु १३ मङ्गळवारदल्लु** श्रीमद्-राय-राज-गुरु मण्डलाचार्य्य **बलात्कार-गणाग्रगण्यरुमप्प श्री-सिंहनन्द्याचार्य्यर** प्रिय-गुडु **सोरवद विठ[ल]-गोण्डन** सुपुत्रि श्रीम-

नाळ्व **महाप्रभु तवनिधिय** ब्रह्मन अर्द्धाङ्ग (ने) **लक्मि बोम्मक**नु समाधि-विधियिं मुडिपि स्वर्ग-लोक-प्राप्तियादल् ॥

'विनय-गुण-अगल्मे पेसर्वेत चतु-र्विध-दान-युक्ते पा-।
वन-विन-राज-राजित-पदाम्बुज-भक्तियोळोप्पुवेत्तु तोर्प्-।
अनुपम-शीले विट्ठलन नन्दने सौन्दर-रूपे **बोम्म-गौ**-।
ङ्न सति बोम्मक मेरेवळगद पुण्य-वधू-जनङ्गळोळ् ॥

[जिन शासनकी प्रशंसा। जिस समय, (अपनी उपाधियो सहित), वीर-बुक्क-राय अपने विजयी राज्यपर शासन कर रहे थे:—(उक्त मितिको), राय-गुरु, वलात्कार-गणके अग्रणी, सिंहनन्दाचार्य्यकी गृहस्थ-शिष्या, सोरब-वीर-गौण्डकी सुपुत्री, आळ्व-महा-प्रभु तवनिधि ब्रह्मकी पत्नी, लक्मी-बोम्मक, समाधि-मरण-पूर्वक स्वर्गको गयी। उसकी प्रशंसा।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 199]

५७०

हिरे-आवलि;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १२९३=१३७१ ई०]

[हिरे-आवलिमें ध्वस्तजैन-वस्ति के सामने १५ वें पाषाण पर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर अरि-राय-विभाडु श्री-वीर-बुक्क-राय-राज्योभ्युदयदन्दु (१) [सं]या १२९३॥ **प्रमाथि-संवच्छरद फाल्गुन-सुध-एकादशी-आदि-वार** श्रीमनाळुव-महा-प्रभु **रामचन्द्र-मलधारि-देवर** गुड्ड आवलिय **चन्द्र-गौडन** मग **राम-गौण्ड**नु पञ्च-नमस्कारर्दि मुडिहिद मंगळ (महा) श्री श्री श्री

श्री श्रीमतु हिरिय-जिडुवळिगेय आवळिय महाप्रभुगळु जिन-चरण-स्मरण-परिणातान्तः-करणरुमप्प आवलिय ज्ञान (१) अन्याय आवलिय मशण-गौण्डन- मग **गोरव-गौण्डन** मग रवळ-गौण्डन मग **गोप-गौण्डन** मग **चन्द्र-गौण्डन** मग **गोप-गौण्डन** तम्म **राम-गौण्डन** तम्म **वेच-गौड** अन्तु विवरु मुक्तियन् पैदिदरु मंगल महा श्री श्री श्री मडिद तगरोजन मग **मदोज नागोज** आवळिय विल्ति-वन्तरु ॥

[लेख स्पष्ट है। १३७४ ई०; बुक्क-राय का राज्य था।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 115]

५७१

हुलुहल्लि;—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[शक सं० १२९४ = १३७२ ई०]

[हुलुहल्लि (कड़ले प्रदेश) में, वरदराज-स्वामी मन्दिर मुख्य प्रवेश द्वारके उत्तर की ओर के एक पाषाण पर]

श्रीमन्त्रैलोक्य ··· ··· मकुटस्य ··· ··· नेन्द्रस्य।
शासन ··· ··· ··· लाञ्छनं सततं ॥

पेरुमाळे-देवरसरु ··· ··· चक्रवर्त्तिदेवरु ··· ··· देवरु

वितत-मोदोभरं ··· ··· ··· । ··· ··· ···

निरुपम-विभवश्री-वैभवैर्वर्द्धमानो
दिशतु चरम-तीर्थाधीश्वरस्सम्पदं नः ॥
यस्य श्री ··· ··· जिनेन्द्रस्य दिव्य-वाक-तत्त्वार्थात्
अङ्गैस्सर्व्वैः पूर्व्वैस्संजगृहुर्गौतमादि-गणधर्मः ॥
तच्चरमजिनेश ··· ··· नमिह जगति साम्प्रतं भारतेऽस्मिन्

ते गणमृतस्तदुदितसिद्धान्त तदनुगश्च सकलसंघः ॥
तत्र श्री-जिन-शासनोन्नतकरे श्रीमूलसंघोदिते
श्री-देशीय-गणे तु-संयम-धरे श्री-कोण्डकुन्दान्वये ।
सुश्लाघ्यश्रिय इङ्गळे ··· ··· चार्य-वर्यावली
श्रीमत्पुस्तकगच्छमाप्तवधरास्तंबभिरे ··· ··· ॥
श्रेयः-पद्म-विकास ··· रणिस्त्याद्वादरत्नामणिः
सद्विद्वज्जन ··· ··· ··· ··· चूडामणिः ।
··· ··· मुनिश्चादेष्ट-चिन्तामणिः ॥
··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

पादौ राव-समाव-पूजित-पदौ हस्तौ ··· ··· कवि-
त्रातानन्दनकारि-दान-विभवेनास्यं गिरो-लास्यदं ।
··· ··· कुण्ठित-नीलकण्ठ-ललना ··· रश्च यस्याग्रतो
लोऽयं ··· श्वरो विलयते सङ्गीत-विद्यापतिः ॥
तदन्ववाय--दुग्धाब्धि-समुल्लास-कलानिधिः ।
मूल-श्रुतमुनि ··· बौद्धोधो ···
श्रुतमुनिराजः सशिष्यसंघस्तपश्चरणविद्द ··· ।
तरण-पद्म-पर्यन्त ··· विक-लोकं पुनानोऽस्थात् ॥
साकेब्देऽथ विरोधिकृत्समभिधे पाथोधि-नन्दांशुमत्
संख्ये [१२९४] मासि सुचौ सित-प्रतिपदि च्छायासुते यामके ।
इत्वा पूतमिळातळं श्रुतमुनिस्तन्यस्य त्रिष्यापुरे
प्रीत्यार्या परमेष्टि-भावन-मतः प्रापत् प्रशस्तां गतिम् ॥
दुर्म्मुख्याख्ये शकाब्दे वसु-मुनि-रवि-संख्याङ्किते [१२७८] मासि चैत्रे
पञ्चम्यां भौमवारे निशि लसित-रमे पत्तने केल्लहाख्ये ।
त्रैन्यं तन्यस्य सर्व्वं परम-गुरु-कुलं भावयन्नुद्यमावः
प्राप्तो दिव्यं गतिं श्री श्रुतमुनि-तनयश्चन्द्रकीर्त्ति-व्रतोद्यः ॥
तद्भक्तियुक्तिभविका चयकीर्त्ति-देव-सूरीश्वर- श्रुतिमुनि-प्रमुखा ···

श्री श्रीमतु हिरिय-जिडुवळिगेय आवळिय महाप्रभुगळु जिन-चरण-स्मरण-परिणातान्तः-करणरुमप्प आवलिय ज्ञान (१) अन्याय आवलिय मशण-गौण्डन- मग **गोरव-गौण्डन** मग रवळ-गौण्डन मग **गोप-गौण्डन** मग **चन्द्र-गौण्डन** मग-**गौंप-गौण्डन** तम्म **राम-गौण्डन** तम्म **बेच-गौड** अन्तु यिवरु मुक्तियन् यैदिदरु मंगल महा श्री श्री श्री मडिद् तगरोजन मग **मदोज नागोज** आवळिय विल्ति-वन्तरु ॥

[लेख स्पष्ट है। १३७४ ई०; बुक्क-राय का राज्य था।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 115]

५७१

हुलुहल्लि;—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[शक सं० १२९४ = १३७२ ई०]

[हुलुहल्लि (कड़ले प्रदेश) में, बरदराज-स्वामी मन्दिर मुख्य प्रवेश द्वारके उत्तर की ओर के एक पाषाण पर]

श्रीमन्त्रैलोक्य ··· ··· मकुटस्य ··· ··· नेन्द्रस्य।
शासन ··· ··· ··· लाञ्छनं संततं ॥
पेरुमाळे-देवरसरु ··· ··· चक्रवर्त्तिदेवरु ··· ··· देवरु
वितत-मोदोभरं ··· ··· ··· । ··· ··· ···
निरुपम-विभवश्री-वैभवैर्वर्द्धमानो
दिशतु चरम-तीर्थाधीश्वरस्सम्पदं नः ॥
यस्य श्री ··· ··· जिनेन्द्रस्य दिव्य-वाक-तत्त्वार्थात्
अङ्गैस्सर्व्वैः पूर्व्वैःसंजगृहुर्गौतमादि-गणधर्मः ॥
तच्चरमजिनेश ··· ··· नमिह जगति साम्प्रतं भारतेऽस्मिन्

सु-श्रावणश्च पुरुषोत्तम-राज-कामश्रेष्ठयादयो भुवि चरन्तु चिरं सुभव्याः ॥
श्री-श्रुतमुनीश्वर शिष्यरु । **माधनन्दि**-सिद्धान्ति-देवरु । सार्व्व-परमागमोपदेश-निपुणरप्प आ ··· ळु । **श्रुतकीर्त्ति**-देवरु । **मुनिचन्द्र**-देवरु । **बाहुबलि**-देवरु । ··· गिय-**पार्श्व**-देवरु । **जिनचन्द्र**-देवरु । सन्यसन-समाधियि ··· गतियन्नेयुदिदरु ॥ ··· ···

··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ···

··· ··· पेरुमाळु-महीशः कुशाग्र-बुद्धिर्व्विदितसकलनयसूत्रः ॥
श्री-माचिराज-मालाम्बिकयोरजनिष्ट **पेर्मि-देव**-नृपः ।
जनहितजैन-मतार्णव-संवर्धन-पूर्णिमा निशाधीशः ॥
शाके सिन्धु-गिरि-प्रभाकर मिते [१२७४] ऽब्देऽस्मिन् खराख्यान्विते
चैत्रे मासि ··· हये तिथौ वारे नवम्यां तिथौ ।
प्रत्यूषे सितपक्षके ··· ··· ··· ··· ··· ···
··· ··· ··· पेरुमाळ-देव-नृपतिः प्राप प्रकृष्टां दिवं ॥
शाकेब्दे शून्य-नन्द-द्वितय-विधु-मिते [१२९०] ऽस्मि प्लवङ्गाह्वयोद्यद्-वैशाखे मासि शुद्धे दिनमुखनवमी सन्-तिथौ जीवनारात् ।
तज्जायांस ··· या जिनमुनि-वरिवस्यार्ह-शुद्धान्ववाया
अह्लाम्बा प्राप दैवीं गतिममळमति भावयन्नर्हदादि ॥
··· वान्वयाम्भोज-दिवाकराभा **नरोत्तम-श्री-नृप**-नामधेया ।
यदीय-कीर्त्तिर्धवति जहार जगत्त्रयं सद्गुणदानसम्भवा ॥

आ-पेरुमाळ-देव-अरसरु पेर्म्मि-देवरसरु **हुल्लनहळ्ळि**यलु सुखदिं राज्यं गेयुत्तिरलु तम्म इह-पर-लोक-साफल्य-निमित्त्वागि **त्रिजगन्मंगळ**मेम्बुत्तंगचैत्यालयमं माडिसि आ ··· चिन्तामणि-प्रतिमरप्प **माणिक्य-देव**र प्रतिष्ठेयं गेय्दु आ हुल्लनहल्लि-यल्लि पुरातन-भव्य-जन-प्रतिष्ठितमप्प आ-परमेश्वर-चैत्यालयमं जीर्णोद्धारमं माडिसि आ-एरडु चैत्यालयङ्गळामृतपडिगे कोट्ट गद्दे बेद्दल सीमे यन्तेन्दोडे (इसके बाद की ६ पंक्तियोंमें सीमाओं इत्यादि की चर्चा है ।)

अक्षय-सुखदि धर्म्ममन् ।
ईक्षिसि रक्षिसुव पुण्य पुरुषर्गक्कुम् ।
नक्षिसुवातनु ··· ··· ।
··· क्षयं आ ··· तु क्षयं ··· क्षयनक्कुम् ॥
स्याद्वादाय सदा स्वस्ति प्रवादि-मत-भेदिने ।
शुभमस्तु सर्व्व-जगतः । मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[इस लेखमें प्रारम्भमें जिनशासन, पेरुमाले-देवरस, तथा अन्य व्यक्तियोंकी, जिनके नाम मिट गये हैं, प्रशंसा है। बादकी गुरु (आचार्य) परम्परामें, जिनशासनके प्रभावक-आचार्य हुए। उनमें मूलसङ्घ, देशीय-गण, कोण्डकुन्दान्वय तथा इङ्गुलेश्वरकी शाखामें बहुतसे पुलकगच्छके मुनी हुए। ऐसे ही मुनियों में एक **अमयेन्दु** थे। (इस जगह लेख बहुत मिटा हुआ है।) सङ्गीत विद्या-निधि ईश्वरकी प्रशंसा। इसके बाद श्रुतमुनि और उनके शिष्योंकी प्रशंसा है। श्रुतमुनि शक वर्ष १२६५ में, विरोधिकृत् नामक वर्षमें, आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदाके दिन शनिवारको प्रातः प्रशस्त गतिको प्राप्त हुए। यह उनका स्वर्गमन **त्रिण्यापुर** (= हुलुहल्लि) में हुआ था। शक वर्ष १२७८, दुर्मुखी नामके संवत्सरमें ईश (आश्विन) महीनेकी पञ्चमी तिथि रात्रिको मंगलवारके दिन श्रुतमुनिके पुत्र व्रतीन्द्र **चन्द्रकीर्त्ति** दिव्य गतिको प्राप्त हुए। उनके भक्त उपासक—जयकीर्ति-देव, सूरीश्वर श्रुतमुनि तथा इतर, श्रावकोत्तम पुरुषोत्तम-राय, कानश्रेष्ठी तथा अन्य लोगोंकी चिरकालतक जिन्दा रहनेकी मनोकामना की गयी है। श्रुतमुनीश्वरके शिष्य क्रमसे ये थे—भावनन्दि सिद्धान्ति-देव, श्रुतकीर्त्ति-देव, मुनिचन्द्र-देव, बाहुबलि-देव, ··· गिय पार्श्वदेव, जिनचन्द्र-देव। इन्होंने मरणके समय समाधि ली थी। पेरुमालु-महीश की प्रशंसा। मन्त्रि-राज और मालाम्बिकाके **पेर्म्मि-देव-नृप** उत्पन्न हुए थे। शक १२७४ में पेरुमाळ-देव स्वर्गस्थ हुए। शक १२९० में उनके बड़े भाईकी स्त्री **अल्लाम्बा** स्वर्गस्थ हुई। उसके पुत्र नरोत्तम-श्री-नृप थे।

जिस समय पेरुमाल-देवरस शान्तिसे सुखपूर्वक राज्य कर रहे थे, उस समय उन्होंने 'त्रिजगन्मङ्गलम्' नामके चैत्यालयका निर्माण कराया, और माणिक्य-देवको प्रतिष्ठित किया; साथ ही हुल्लनहल्लिके प्राचीन मन्दिर 'परमेश्वर चैत्यालय' का भी जीर्णोद्धार किया, तथा दोनों चैत्यालयोंमें विधिवत् सतत पूजा चालू रहे, इसके लिये भूमिदान किया।

अन्तमें इन मन्दिरोंकी रक्षा तथा उनमें लगी हुई भूमिका जो गुणवान् आदमी रक्षण करेगा उसके लिए निरन्तर सुखकी मङ्गल-कामना की गई है।]

५७२

श्रवणबेलगोला—संस्कृत भग्न।

शक १२१५ = १३०२ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५७३

श्रवणबेलगोला—कन्नड

[बिना कालनिर्देशका]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५७४

हिरे-आवलि;—कन्नड।

[शक १२९८ = १३७६ ई०]

[हिरे-आवलिमें, ध्वस्त जिन-बस्तिके सामनेके छोटे पाषाण पर]

स्वस्ति श्रीमतु शक-वरुष १२९८ नळ-संवत्सरद आश्विज-शु[illegible]२ गु श्रीमन्नाळ्व-महा-प्रभु आवलिय चन्द-गौण्डन मग वेचि-गौण्डनु रामचन्द्र-

मलधारि ··· ··· ··· र गुड्डनु **वेचि-गौण्ड** नु **वीर-वुक्क रायन** राज्याभ्युदयदन्दु पञ्च-नमस्कारदिं मुडुपि स्वर्गस्तनादनु आतन किरिय-मदवळिगे आ-मुद्दि-गौण्डि सहगमनदिं विन्दरु मुक्तिप्राप्तरादरु आवलिय प्रभुगळ सन्तान **मसण-गौडन** मग **गोरव-गौड काल-गौड गोप-गौड चन्द्र-गौड** आ-चन्द्र-गौडन मग **वेचि-गौड** वू··· गौडन मनेय **गोरवोजन** मग **मादोज नागोज** माडिद निशितिय कल्लु मङ्गळ महा श्री श्री श्री

[(उक्त मितिको), आवलि चन्द्र-गौडके पुत्र वेचि-गौड, जो रामचन्द्र-मलधारिका गृहस्थ-शिष्य था—वीर-वुक्क-रायके राज्य में,—पञ्चनमस्कार पूर्वक मर गया और स्वर्ग गया। उसकी नवीन स्त्री मुद्द-गौण्डिने 'सहगमन' किया, और दोनोंने 'मुक्ति' पायी। आवलि प्रभुओंने (जिनमें कईओंके नाम निर्दिष्ट हैं) यह स्मारक बनवाया। बनाने वाला गोरवोजका पुत्र मादोज नागोज था।]

[Ec, VIII, Sorab tl., No 106.]

५७५

श्रवणबेलगोला;—कन्नड।

[वर्ष नल=१३७६ ई० (लू. राहव)]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५७६

गिरनार—संस्कृत-भग्न।

[विना कालनिर्देशका]

श्वेताम्बर लेख।

[Revised Lists ant rem Bombay (ASI, XVI), p. 347–351, No 7 t. and tr.]

५७७

तवनन्दि;—कन्नड-भग्न ।

[शक १३०१=१३७९ई०]

[तवनन्दिमें, सातवें समाधि-पाषाणपर]

श्रीमन्महा-मण्डलेश्वर श्री-**वीर-हरिहर-राय** विजय-राज्यं गेय्युत्तमिर्प्पल्लि शक-वरुष १३०१ दनेय काळयुक्तान्दि संवत्सरद श्रवण-शुद्ध १ शुक्रवारदलु श्रीमत्-**तवनिधिय शान्ति-तीर्थकर**-पाद-पद्माराधकनुं दासि-वेसि-गर-नारी-सहोदर श्रीमतु श्रीमन्नाळ्व-**महा-प्रभु तवनिधिय** बोम्मण्णं मनेय ··· ··· नि श्रीरा ··· ··· ··· ··· ··· **मलधारि-देवर** प्रिय-शुद्ध ··· ··· ··· (४ पंक्तियाँ पढ़ी नहीं जा सकती हैं) ।

[जिस समय महामण्डलेश्वर वीर-**हरिहर-राय** विजयी राज्य पर शासन कर रहे थे :—(उक्त मितिको), तवनिधि के शान्ति-तीर्थकरके चरणोंका पूजक, एक दासीके वेषमें, रा ··· ··· मलधारि देवका गृहस्थ-शिष्य, आळ्व-महा-प्रभु तवनिधि बोम्मणके घरका पवित्र व्यक्ति,·····]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 200.]

५७८

तवनन्दि;—कन्नड-भग्न ।

[शक १३०१ = १३७९ ई०]

[तवनन्दिमें ही, तीसरे समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

श्रीमन्महामण्डलेश्वरं अम्मि-राय-विभाड मासेगे तप्पुक-रायर गण्ड हिन्दु-राय-सुरत्राण पूर्व-दक्षिण-पश्चिम-समुद्राधीश्वर श्री-**वीर-बुक्क-राय**न कुमार श्री **हरिहर रायनु** राज्यं गेय्युत्तमिर्प्पल्लि ॥ स्वस्ति श्री **जयाभ्युदय शक-वरुष १३०१ नेय काळयु [क्कि]- नाम-संवत्सरद** पुष्य ब २ सोमवारदलु श्रीमन्नाळुव-**महाप्रभु** प्रजे मेच्चे गण्ड अल्लिय **हदिनेण्टु-कम्पणक्के** शिरोमणि एनिप महा-प्रभुगळादिय **तवनिधिय वोम्म-गौडनु** सकल-सन्यसन-विधियिं मुडिपि स्वर्गं प्राप्तनादनु ॥ आतन गुणावलि एन्तेन्दडे ॥

पारावार-त्रयाधीश्वरनतुळ-बळं-बुक्क-रायङ्क लोक्का- ।
चारङ्गं ••• माडिदनिय घर्नङ्गळं जैन-ळा-
चारं ••• ळं गड ••• ••• मर ••• ••• माडि पुण्या- ।
कारं ••• कीर्त्ति-वृत्तं **तवनिधि** यधिपं **वोम्मणं** नेर-धैर्य्यम् ॥
परम ••• यादि-देव परद ••• तान् ••• वगं ••• ••• ।
दरिसिद् जैननोर्व्व कलि ••• पाळकनिन्दु भक्तियिन् ।
परम-जिनेश्वर ••• ••• ••• नेम्ब ••• ।
••• दृढ-चित्तनी-**तवनिधि**-प्रभु ब्रह्मनि ••• क-लोकदोळ् ॥
जिन-पतियन्तरङ्गदोळिर्प्पं (बाकी का पढ़ा नहीं जा सकता ।)

[जिन शासनकी प्रशंसा । जिस समय, (अपने पदों सहित), वीर-बुक्क-रायके पुत्र हरिहर-राय शासन कर रहे थे :—(उक्त मितिको), आळुव महा-प्रभु, १८ कम्पणोंका शिरोरत्न, महा-प्रभुओंका सूर्य्य तवनिधि वोम्म-गौड 'सन्य-सन' की विधिपूर्वक, मर कर स्वर्गको गया । उसकी प्रशंसा ।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 196]

५७९

ऊद्रि;—संस्कृत तथा कन्नड़-मिश्र ।

[शक १३०२ = १३८० ई०]

[ऊद्रि गाँवके मध्यमें एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
यैदिदनु स्वामि-कार्य्यव ।
यैदि···रतिरलु कण्डनी-मार्व्वलमम् ।
यैंदे कडि-खण्ड माडिद् ।
यैदिद् जिन-पाद-पद्मगं वैचप्पम् ॥

अदेन्तेने ॥

वारिधि-परिवृत-वर-धर ।
णी-रङ्गद-मध्यद्मरगिरियिं तेङ्कलु
राराजिप-भरत-धरा- ।
नारी-भूषणमेनिप्प कुन्तळ-देशम् ॥
तां नेरे मेरेवुदु वनवसे ।
पन्निर्च्छासिर-समेतमदरोळ् मं- ।
···निजदिं पदिनेण्टेनिप् ।
उन्नत-कम्पणके राजधानियेनिक्कुम् ॥
मत्ता-कम्पण-निचयम- ।
नित्तरोळं नेगळ्द् हिरिय-विदरेय-नाड्- ।
उत्तममदरोल् सुख-सम्- ।
पत्ति-स्थानाभिवृद्धि बुद्धरे मेरेगुम् ॥
वृ॥ अदु नाना-देव-हर्म्य-प्रयुतवतुळ-वापी-तटाकाञ्चितं सम्- ।

पदमं ताळ्दर्प्प-विप्राधरिवळ-वन-समेतं लसत्पुष्पवाटी-
विदितोद्यानादि-युक्तं प्रकट-कळन-चाळ-प्रमूता····· ।
तोर्प्पुदु सकळ-मुनि-प्रेन-धर्म्मोमिरामम् ॥
·····एने मेरे उद्धरे··· ।
·····नत-स्थळमागिरल्के तां सौन्दर्यदिम् ।
मनुव-मनोज्ञं **वैचप्पन्** ।
अनुपम-कीर्ति-प्रभावदिन्दोसे[दि]प्पन् ॥
क्षितिनुत-शान्ति-विन-क्रम- ।
शतपत्र-मद्रुव्रतं सुरञ्जन-मित्रम् ।
चतुरं वैचय-नायक- ।
न तनूजं रानिसिप्पनी- **वैचप्पम्** ॥
भू-देवाशीर्व्वादा- ।
[हा]दं निज-शिर-करण्ड····· ।
[···]दं वर्त्तिसे मेरेवन् ।
मेदिनि-मीसेयर गण्डनी-**वैचप्पम्** ॥

तदनन्तरम् ॥

विलसित-विजयानगरिय ।
नेलेवीडिनोळे **वीर-बुक्क-राज**-तनूजम् ।
बलि-निम-**हरिहर रायम्** ।
सले राज्यं गेय्युतिर्द्दनति-मुददिन्दन् ॥

तत्पादपद्मोपजीवि ॥

वृ ॥ **माधव-राय** अप्रतिम-तिय ना···उ[द]ग्र-साहसं- ।
मोघिगळेन्दु···रणद् दन्तिगे·····मोघ-कालदोळ् ।
बोधक-रूपिनिं···गोण्ड···र्णं···बुद्धि-वि- ।
धाधर् आर्णं तो···तोळेय··· ··· ··· ॥

वर-वस्त्राभरण··· ··· ··· च्छत्रमं··· ··· ।
··· व्रातम ··· ··· ··· रूर्गळम् चामरो- ।
त्करमं कप्पुर दम्बुल-प्रकरमं कोण्डा···गीत··· ।
ष्ठुरदी-**कोङ्कण-देश**नर् खळर् एनुत्तागेत्तडं माडदे ।:
चल्लाम्बेयोळ्ळं धात्री- ।
वल्लम माधव निरुत्तरमल्लि तर ।
रल्लल्लि निलुतं वरल् ।
एल्लर परेयल्के कण्डु कलि-**वैचप्पम्** ॥
वृ ॥ हयमं देरेगेइं नेलक्किळिवुतं पाय्देरि नोडुत्ते मल्- ।
लेयनुक्कॆय्दि ··· ··· ··· तारुं तट्टुगुत्तुत्ते बल्- ।
मेयोळडुं वरुत्तिर्प्प **कोङ्कणिगरं** कीनाश-लोकक्के निश्- ।
चयदिन्देय्दिसुतं पराक्रमयुतं **वैचप्प**निन्तिर्प्पिनम् ॥
केलवर् क्कोङ्कणिगर् म्मार्- ।
म्मलेवटिं वण्डु-गट्टि नेट्टने परितन्द् ।
अलगडुणमं चाळिसि ।
नेलनदिरलु ··· ··· ··· मेय्द ॥
तलेयिन्दं ··· सिडि ··· तूळ्दाडि खड्गांशु कण्णोळ् ।
किडि सूसित्तेम्बिनं ··· रदटिनिं पाय्दु ··· ··· वन्- ।
दडे कट्टी-**वैचपं माधव**-नरपति नोडल्के सङ्ग्रमदिम् ।
किडि-खण्डं माडिदं मार्व्वलमनदटिनिं भीमसेनोपमानम् ॥
आ-रण-रंगदोळ् विडदे कूगि नेगळ्द्-वीर ··· ··· ।
··· ··· विट्टु नेट्टने समाधि-विधानमोन्···चित्तदोळ् ।
मार-विरोधि ··· ·· नूर्जित-नाक-लोकमम् ।
सारिदनुत्तम-प्रभु-कुलाम्बर-चन्द्र-मरीचि **वैचपम्** ॥
निरुतं **श्री-शक-सङ्के सासिरद मूनूरोन्द**···रौद्रि-व- ।
त्सर-वैशाख-सित-त्रयोदशि-लसद्-भौमाह्वयं वार··· ।

बरे बैचप्पनुदार-चारु-जिन-पदाम्भोज-सक्तं मनो- ।
हर रूपं वर-धात्रियोळ् मडिदु नाक-क्षेत्रमं पोर्द्दिदम् ॥

[बैचप्पने किस तरह जिन चरणों का आश्रय लिया, इसका इस लेखमें वर्णन है। भरत क्षेत्र-कुन्तलदेश-वनवसे १२०००-१८ कम्पण-उद्धरे-और उसमें बैचप्पका वर्णन। बुक्कराजके पुत्र हरिहर-राय विजयनगरीमें राज्य कर रहे थे। कोंकण-देशसे लड़ाई का वर्णन। उसमें बैचप्प की जीत हुई।]

[EC, VIII, Sorab tl.,:No. 152]

५८०

मलेयूर—कन्नड़।

[बिना काल निर्देशका, पर लगभग १३८० ई०]

[उसी पर्वतपर, पार्श्वनाथ वस्तिके प्राङ्गणमें दक्षिणकी ओरके पाषाणपर]

बाहुबलि-पण्डित-देवरु ।

नयकोर्त्ति-व्रति-नन्दनं सकळविद्याचक्रवर्त्याह्वयं
द्वय-भाषा-कविता-त्रिणेत्रनुरु-होरा-शास्त्र-सर्व्वंतकम् ।
नययुक्तमवर-मूल-सङ्घदोडेयं देशी-गणाग्रेसरं
प्रियर्द पोस्तुक (पुस्तक)-गच्छ-पूर्ण्ण-तिलकं श्रीकोण्डकुन्दान्वयं ॥

[बाहुबलि-पण्डित देव—नयकीर्त्ति-व्रतीके पुत्र, सकलविद्याचक्रवर्ती, द्वयभाषा कवितात्रिनेत्र, होराशास्त्रसर्वज्ञ, नययुक्त मूलसंघाधिपति, देशीगणाग्रेसर, पोस्तुक-गच्छके पूर्ण तिलक और कोण्डकुन्दान्वयी थे।

[EC, IV, Chamarajnagar tl., No. 157]

५८१

तिरुप्परुत्तिक्कुण्रू (काञ्जीवरम्के निकट)—**तामिल ।**

(दुन्दुभि वर्ष = १३८२ ई० (हुल्ज)]

१—स्वस्ति श्रीः [॥] **दुन्दुभि**वर्षं कात्तिगै-मादत्ति । पूर्व्व-पत्तत्तुत्तिङ्गळ्-किळ-मैयु पौर्णैयुं पेर्र ताकात्ति-

२—गै-नाळ् महामण्डलेश्वरन् **अरिहरराज**-कुमारन् श्रीमद्- **वुक्करायन्** धर्म्म आग **वैचय**-दण्डनाथ-पुत्रन्

३—जैनोत्तमन् **इरुगप्** [**प**]-महाप्रधानि **ति** [**रुप्**] **प्परुत्तिक्कुण्रू**-नायनार् त्रैलोक्यवल्लभर्क्कु पूजैक्कु

४—शालैक्कुं तिरुप्पणिक् [कु] म् **मावण्डूर्**-प्पर्रिल् **महेन्द्रमङ्गलं** नोर्पा-कैल्लैयुं इटै-इलि पल्लिच्छन्दभाग चन्द्रादित्यवरैयुं नडक्कत्तरुवित्तार धर्म्मोयं जयतु

[काञ्जीवरम्के निकट **तिरुप्परुत्तिक्कुण्रुमें** वर्धमान जिनमन्दिरके भण्डारकी उत्तर तरफकी दीवालपर नीचेकी ओर यह तामिल तथा ग्रन्थ लेख उत्कीर्ण है । इसमें बताया गया है कि वैचय दण्डनाथ (सेनापति) का पुत्र **इरुगप्प** महामन्त्रीने मावण्डूर् तालुकेका महेन्द्रमङ्गलं गाँव जैनमन्दिरको दानमें दे दिवा था । उसने यह दान **हरिहर द्वितीय** के पुत्र **अरिहरराज,** अर्थात् **बुक्क द्वितीय,** के पुत्र **बुक्कराज**के गुणके कारण किया था । अतः दुन्दुभिवर्ष, जिसमें दान किया गया था, १३८२ ई० से मिलना चाहिये ।]

[EI, VII, No. 15 A.]

———

५८२

वस्तीपुर—कन्नड ।

[शक १३०५=१३८३ ई०]

[वस्तीपुर (वळगुळ तालुका) में, सीमा-पाषाण पर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

श्री-मूलसङ्घ कानूर-गण तिन्तिणि गच्छ कोण्डकुण्दान्वयद श्री-वासुपूज्य-देवर शिष्यरु श्री-सकलचन्द्र-देवर तपद प्रभावमेन्तेन्दोडे ॥

स्थिरवाक्यं सु-व्रताम्भोनिधि सकळ-जगत्-पावनं राजपूज्यं
परम-श्री-जैनधर्म्माम्बर-दिनकरनुद्यत्तपोमूर्त्ति ··· णा ।
मरणं त्रैविद्य-चक्रेश्वर-विमल-पदाम्भोज-विङ्गं जिनश्री-
चरणालंकार-शीरुप (ज) म् सुकविवन-यतप्-सन्मुनिं राजहंसं ॥

सोल्ति श्रीशकर्प १३१५ नेय सुभकृतु-संवत्सरद श्रावण-मास-सुद्-पाड्य-आदित्यवार-सिंह-लग्नदल्लि कूरिगिहळ्ळिय प्रभु-गळु गौड-कुल-तिलकरु मरॅ-होकर-कावरु शिथिल-वेङ्कोम्बरु सत्यदल्लि कर्णरुमप्प केत-गौड राम-गौड सम्बुव-गौड मादि-गौड मोदलाद समस्त-गोडगळु वस्तिय प्रतिष्ठेयं माडिसि वस्तिय वडगण बिट्ट वेद्दलु को १० पारुप-देवर अमृतपडि ····· त्तरु । देवोजन वहर मंगल महा श्री श्री श्री

[मूलसङ्घ, कानूरगण, तिन्तिणि गच्छ और कोण्डकुन्दान्वयके वासुपूज्यदेवके शिष्य सकलचन्द्रदेवके तपकी स्तुति या प्रशंसा है । कूरिग (गि) हल्लिके गौड़ोंने एक पारुप-देवकी वस्ति (मन्दिर) बनवाई और उसे दान दिया ।]

[EC, III, Seringapatam tl. No. 144]

५८३

हिरे-आवलि;—कन्नड़ ।

[वर्ष उद्गारि = १३८३ ई० ? (लू. राइस) ।]

[हिरे-आवलिमें, १२ वें पाषाणपर]

स्वस्ति श्रीमतु रुधिरोद्गारि-संवत्सरद ज्येष्ट शुध-पुण्णमि-सोमवार-दन्दु श्री-मूल-संघद वीरसेन-देवर गुड मुद-गौड मगळु एकमतियवे पञ्च-नमस्कार-समाधि-विधियिं स्वर्गस्थेयादळु अचेयवे गौडि माडिसिद कलु ॥ बोपो-होज गेयिद कलु ॥

[लेख पहिलेके ही लेखों के समान है, अतएव स्पष्ट है । सन् १३८३ ई० का है । किसी राजाका उल्लेख नहीं है ।]

[EC, VIII, Sorab tl.. No. 112]

५८४

रावन्दूर—संस्कृत और कन्नड़ ।

[शक १३०६=१३८४ ई०]

[रावन्दूर (रावन्दूर प्रदेश) में, बस्तिके एक पाषाणपर]

श्रीमत्-परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति श्रीमद्-राय-राज-गुरु-मण्डलाचार्यरेनिसि श्री-मूलसंघदेशीय-गण पुस्तक-गच्छ कोण्डकुन्दान्वय यिङ्गळेश्वरद वळि श्री मदभयचन्द्रसिद्धान्तचक्रवर्त्ति-गळु तत्-शिष्यरु श्री-श्रुतमुनिगळु तत्-शिष्यरु प्रभेन्दुगळु अवर प्रियाग्रशिष्यरु श्री-श्रुतकीर्त्ति-देवरु शक-वर्ष १३०६ नेय रुधिरोद्गारि-संवत्सरद द्वितीय-भाद्रपद-व ८ आदित्यवारदलु मुक्तिवधू-वल्लभरादरु तत्प्रतिनिधियनु सुमति-

तीर्थंकरनू ई-चैत्याल[य]द जीर्णोद्धारवनु अवर शिष्यरु **आदिदेव-मुनि**गळु श्रुत-गण-मुख्यवाद समस्तभव्यजनङ्गळु माडिसिद शासन वर्द्धतां जिन-शासनम्।

[मूलसङ्घ, देशियगण, पुस्तकगच्छ, कोण्डकुन्दान्वय, और इंगुलेश्वर-बलिके **अभयचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्त्ती**के शिष्य श्रुतमुनि उनके शिष्य प्रभेन्दुके प्रियाग्र शिष्य—श्रुतकीर्त्ति-देवके मुक्तिवधूके वल्लभ होनेके बाद (अर्थात् स्वर्गस्थ हो जानेपर), उनके शिष्य **आदिदेव मुनि** तथा श्रुत-गणके जैनोंने उनकी तथा सुमति तीर्थङ्करकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा कर इस **चैत्यालय**को सुधरवाया।]

[Ec, IV, Hunsur tl., No. 123.]

५८५

विजयनगर—संस्कृत।

[शक १३०७=१३८६ ई०]

(जैन मन्दिरके सामने दीपस्तम्भ पर)

यत्पादपंकजरजो रजो हरति मानसं।
स जिनः श्रेयसे भूयाद्भूयसे करुणालयः॥ [१]
श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥ [२]
श्रीमूलसंघेजनि नंदिसंघ [स्त] स्मिन् बलत्कारगणोतिरम्यः।
तत्रापि सारस्वतनाम्नि गच्छे स्वच्छाशयोऽभूदिह **पद्मनंदी**॥ [३]
आचार्य्य **कुंड** [**कुंदा**] ख्यो **वक्रग्रीवो** महामतिः।
एलाचार्यो गृध्रपिच्छ इति नन्नाम पंचधा॥ [४]
केचित्तदन्वये चारुमुनयः खनयो गिरां [।]
श्लाघाविंव रत्नानि बभूवुर्दिव्यतेजसः॥ [५]
तेन्नासीच्चारुचारित्ररत्नरत्नाकरो **गुरुः**।
धर्म्मभूषणयोगीन्द्रो भट्टारकपदांचितः॥ [६]

भाति भट्टारको **धर्म्मभूषणो** गुणभूषणः ।
यद्यशःकुसुमामोदे गगनं भ्रमरायते ॥ [७]
शिष्यस्तस्य **मुनेरा**सीदनर्गलतपोनिधिः ।
श्रीमा**नमरकीर्त्यार्य्यो देशिकाग्रे**सरः शमी ॥ [८]
निजपद्मपुटकवाटं घटयित्वानिलनिरोध [तो] हृदये ।
अविचलितबोधदीपं तममरकर्त्तिं भजे तमोहरणम् ॥ [९]
केपि स्वोदरपूरणे परिणता विद्याविहीनांतरा
योगीशा भुवि संभवंतु बहवः किं तैरनंतैरिह ।
धीरः स्कूर्ज्जति दुर्ज्जयातनुमदध्वंसी गुणैरूर्ज्जितै-
राचार्य्योमरकीर्त्तिशिष्यगणभृच्छ्री **सिंहनन्दो** व्रती ॥ [१०]
श्री**धर्मभूषो**जनि तस्य पट्टे श्रीसिंहनंद्याचार्य्यगुरोस्सधर्म्मा ।
भट्टारकः श्रीजिनधर्म्महर्म्यरतंभायमानः कुमुदेन्दुकीर्त्तिः ॥ [११]
पट्टे तस्य मुनेरासी**द्वर्द्धमान**मुनीश्वरः ।
श्रीसिंहनंदियोगींद्रचरणांभोजषट्पदः ॥ [१२]
शिष्यस्तस्य गुरोरासी**द्धर्मभूषण**देशिकः ।
भट्टारकमुनिः श्रीमान् शल्यत्रयविवर्ज्जितः ॥ [१३]
भट्टारकमुनेः पादावपूर्व्वकमले स्तुमः ।
यदग्रे मुकुलीभावं यांति राजकराः परं ॥ [१४]
एवं गुरुपरंपरायामविच्छेदेन वर्त्तमानायां—
आसीदसीममहिमा वंशे यादवभूभृतां [।]
अखंडितगुणोदारः श्रीमान् **बुक्म**महीपतिः [१५]
उदयद्भूभृतस्तस्माद्राजा **हरिहरे**श्वरः ।
कलाकलापनिलयो विधुः क्षीरोदधेरिव ॥ [१६]
यस्मिन् भर्त्तरि भूपाले विक्रमाक्रांतविष्टपे ।
चिराद्राजन्वती हंत भव [त्येषा] वसुंधरा ॥ [१७]

तस्मिन् शासति राजेन्द्रे चतुरम्बुधिमेखलां ।
धरामधरिताशेषपुरातनमहीपतौ ॥ [१८]
आसीत्तस्य महीजानेः शक्तित्रयसमन्वितः ।
कुलक्रमागतो मंत्री **चैच**दंडाधिनायकः ॥ [१९]
द्वितीयमंतःकरणं रहस्ये बाहुस्तृतीत्सुमरांगणेषु ।
श्रीमान्महा **चैच** [प] दंडनाथो जागर्त्ति कार्ये हरिभूमिभर्त्तुः ॥ [२०]
तस्य श्री**चैच**दंडाधिनायकस्यो [ज्जि] तश्रियः ।
आसी **दिरुग**दंडेशो नंदनो लोकनन्दनः ॥ [२१]
न मूर्त्ता नामूर्त्ता निखिलभुवनाभोगिकतया
शरद्राकाचंद्राकाविदनिटिलनेत्रद्युतितया ।
प्रभूता कीर्त्तिस्ता चिर**मिरुग**दण्डेश कथय-
त्यनेकांताद्कांतात्परमिह न किञ्चिन्मतमिति ॥ [२२]
वंशचोपि गुणवानपि मार्गणाना-
माधारतामुपगतोपि च यस्य चापः ।
नम्रः परान्विनमय**न्निरुग**क्षितीश-
स्योच्चैर्व्वनाय रज्जु शिक्षयतीव नीतिम् ॥ [२३]
हरिहरधरणीशप्राज्यसाम्राज्यलक्ष्मी-
कुवलयहिमधामा शौर्य्यगाम्भीर्य्यसीमा ।
इरुगधरणीश**स्सिंहनन्दा**र्य्यवर्य्य-
प्रपदन [लि] नभृंगस्त प्रतापैकभूमिः ॥ [२४]

स्वस्ति **शकवर्षे १३०७** प्रवर्तमाने **क्रोधनवत्सरे** फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे द्वितीयायां तिथौ शुक्रवारे ॥

अस्ति विस्तीर्ण**कर्णाट**धरामण्डलमध्यगः ।
विषयः **कुन्तलो** नाम्ना भूकांताकुंतलोपमः ॥ [२५]
विचित्ररत्नरुचिरं तत्रास्ति **विजया**भिधं ।
नगरं सौधसन्दोह दर्शिताकाण्डचन्द्रिकं ॥ [२६]

मणिकुट्टिमवीथीषु मुक्तासैकतसेतुभिः ।
दा[न]वूनि निरुंधाना यत्र क्रीडंति बालिकाः [॥ २७]
तस्मिन्निरुगदंडेशः पुरे चारुशिलामयं ।
श्रीकुन्थुजिननाथस्य चैत्यालयमचीकरत् ॥ [२८]
भद्रमस्तु जिनशासनाय ॥

सारांश

इस लेखमें २८ संस्कृत-श्लोक हैं और यह प्राचीन जैन मन्दिरके सामने दीपस्तम्भ पर खुदवाया है। इस मन्दिरको आजकल 'गाणिगिट्टी' मन्दिर, यानी, "तेलिनका मन्दिर" कहते हैं। पहले श्लोकमें जिन, दूसरेमें जिनशासनकी मंगलकामना है। तत्पश्चात् एक जैन संघके प्रधान **सिंहनन्दि**के आध्यात्मिक पूर्वजों तथा शिष्योंके वंशका वर्णन है। वह इस तरह है :—

मूलसंघ
|
नन्दिसंघ
|
बलात्कार-गण
|
सारस्वतगच्छ
|
पद्मनन्दी
⋮
धर्मभूषण प्रथम, 'भट्टारक'
|
अमरकीर्ति
|

सिंहनन्दि, 'गणभृत्'

|

धर्म्मभूष, 'भट्टारक'

|

वर्द्धमान

|

धर्मभूषण द्वितीय, उर्फ भट्टारकमुनि

लेखमें इन गुरुओंकी पदवियाँ ये लिखी हैं :—आचार्य, आर्य, गुरु, देशिक मुनि और योगीन्द्र। गुरुवंशावलीके बाद ही प्रथम **विजयनगर** वंशके दो राजाओं, **बुक्क** और उसके पुत्र **हरिहर**का संक्षिप्त वर्णन है। बुक्क यादववंशके राजाओंमें उत्पन्न हुआ था। हरिहरका कुलक्रमागत मंत्री दण्डाधिनायक **चैच** था। **चैच** था, जो जिन भक्त था। चैचका पुत्र दण्डेश या द्वितीश (युवराज) **इरुग** या **इरुगप** था, जो उपर्युल्लेखित सिंहनन्दि गुरुके सिद्धान्तोंका उपासक था (श्लोक २४)। १३०७ [अतीत] शकमें, क्रोधन संवत्सरमें इरुगने विजयनगरमें एक मन्दिर बनवाया और उसमें श्री कुन्थु-जिननाथकी स्थापना की। यह नगर कर्णाट प्रान्तके कुंतल जिलेमें था (श्लोक २५)।]

नोट :—इस मंत्री इरुग या इरुगपने 'नानार्थनाममाला' नामक ग्रन्थ बनाया था, ऐसा ई० हुल्श, पी० एच० डी० महाशयके लेखसे मालूम पड़ता है।

[South Indian ins, Vol. I, No. 152.
(p. 155–160)]

५८६

मसार;—संस्कृत ।

[सं० १४४३ = १३८६ ई०]

नं० १

[वृषभ चिह्नवाली आदिनाथकी प्रतिमाके चरण-पाषाणपरका लेख]

१—सं० १४४३ ज्येष्ठ सुदि ५, गुरो **महासारस्य** न
२—**राजनाथ देव** राज्ये काष्ठसंघे आचा-
३—र्य्य **कमलकीर्त्ति** जयसरङ्गाचार्य
४—* * वपुत्रल * * *

यह लेख सं० १४४३में, सारंग (या उसके पुत्र) द्वारा एक प्रतिमाके समर्पणका उल्लेख करता है। समर्पण महासारके राजनाथ देवके राज्यमें हुआ। गुरु काष्ठासंघके कमलकीर्ति आचार्य थे।

नं० २

[एक प्रतिमाके, जिसका चिह्न मिट गया है, चरण-पाषाणपरका लेख]

१—सं० १४४३ समये ज्येष्ठ सुदि ५, गुरो
२—**राजनाथ देव** प्रवर्द्धमाने[1] महासारस्य काष्ठसंघे मथुरान्वये
३—पुष्करगणे प्रतिथ वन **कमलकीर्त्ति देव**
४—जैसवल वेसल रणचर्ण * * *
५—पुत्र लवम देव सम * * *
६—यन प्रतिष्ट * *

इस लेख में पहलेके लेखके दिन ही एक प्रतिमाके समर्पणकी बात है। राजनाथ देव और उसके गुरु कमलकीर्त्ति का नाम स्पष्ट है।

---

१. मूलमें 'राज्ये' छूट गया है।

नं० ३

[शंख चिह्नवाली नेमिनाथकी प्रतिमाके पीठ-स्थलपरका लेख]

१—सं० १४४३, ज्येष्ठ सुदि ५, गुरो महासारस्य न (?)
२—काष्ठसंघे आचार्य-कमलकीर्त्ति देव
३—जै महन्साचार्य उदे सिदि

उसी राजा और उसी गुरुके तत्त्वावधानमें उसी दिन नेमिनाथकी प्रतिमाका दान।

[A. Cunningham, Reports, III, p. 68–69 No. 1–3.] t. & a.

५८७

तिरुप्परुत्तिक्कुण्रु;—संस्कृत।

[प्रामव (प्रभव) वर्ष = शक १३०९ = १३८७ ई० (हुल्श और चीलहॉर्न)]

श्रीमद्वैचयदण्डनायतनयस्तस्मात्तरे प्राभवे
संख्याजानिरुगप्प-दण्डपतेश्श्रीपुष्पसेनाज्ञया ॥

श्री काञ्चीजिनवर्द्धमाननिलयस्याग्रे महामण्डपं
सद्गीतार्थमयीकरञ्च शिलया बद्धं समन्तात् स्थलम् ॥१॥

[पूर्व शिलालेखवाले मन्दिरकी वेदीके सामनेके मण्डपकी छतमें यह ग्रन्थ-लेख उत्कीर्ण है। इसमें शार्दूलविक्रीडित छन्दका एक ही श्लोक है। इसमें उल्लेख है कि प्राभव (प्रभव) वर्षमें गुरु पुष्पसेनकी आज्ञासे सेनापति वैचय-पुत्र उसी (पूर्व वर्णित) सेनापति इरुगप्पने उस मण्डपको बनवाया है जिसमें यह लेख उत्कीर्ण है।]

[E C, VII, No. 15, B.]

५८८

ऊद्रि;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[वर्ष विभव = १३८८ ई० (ल० राइस) ।]

[उसी तालाबकी मोरीके पासके पाषाणपर]

श्री-शान्तिनाथाय नमः ।

श्रीमत्परम-गंभीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥
वर-वृषभ-तीर्त्थकर गण- ।
धररेनिसिद **वृषभसेन-मुनि**-पुङ्गवरुद्- ।
धुर-वंश-सम्भवाचा- ।
र्य्यर पेम्पं पोगळ्दरिदपने फणिरमणम् ॥
आ-नियमाग्रणिगळु **जिन**- ।
सेन-श्री-**वीरसेन** रनिपाचार्य्यर् ।
भू-नुत-चरित्रवरम् ।
जानिसुव विन्ये-जनद पेम्मेंयदार्म्मम् ॥
अमर्द तदन्वयदिं वन्- ।
द मुनीशरु **लक्ष्मिसेन-भट्टारक**रुत्- ।
तम-चरित्रवर शिष्यरु ।
विमळ-गुणरु **चन्द्रसेन-सूरि**गळनघर् ॥
आ-मुनि-राजर शिष्यो- ।
द्दामरु **मुनिभद्र-देव**वर चरित्रम् ।
भू-महितमेन्दोडदनिन्न् ।
ए-मतो वण्णिसल्के वल्लवनावम् ॥
वृ ॥ क्षेममम्बिनं विमल-कीर्त्ति दिगन्तमनेय्ददर्व्विनम् ।

कामन चाप चापळते सार्व्वीनमोप्पिदरं पोगळ्द्पेम् ।
श्री-मुनिभद्र-देवरनिळा-विनुतोंच-शुम-स्वभावरम् ।
प्रेमदोळर्त्थिगर्त्थमुमनीवरमुग्र-तपः-प्रभावरम् ॥
मुनिसं मन्मथ-युद्धदोळ् निरुतमं तत्त्वार्थदोळ् भक्तियम् ।
बिन-पादाम्बुजदोळ् द्वयाधिकतेयं सच्चित्तदोळ् देसेयम् ।
विनुताचार-चयङ्गळोळ् वचनमं वक्तृत्वदोळ् रुक्म रञ् ।
चनेयं देहद कान्तियोळ् निरिसिद्वाक्यादि-वर्णाढ्यर् ॥

॥ हिसुगल्ल वसदियं मा- ।
डिवि मुळुगुण्ड जिनेन्द्र-मन्दिरके सुधा- ।
प्रसरमनेमर्पिमि चम्मम ।
प्रसरिसि मुनिभद्र-देवगोळ्पं तळेदर् ॥
न्यायोपायट हरिहर- ।
रायं वर-विजयनगरियोळु नेलसिर्प्पन्द् ।
आयतिक्के सेन-गण- ।
ल्यायरु मुनिभद्र-देवररनेरकदवर् ॥
इन्तेसेव तपश्चरणा- ।
नन्तरमाप्तागम-प्रभावमनेसगुत्- ।
तं तूळ्द दुरितमं निश्- ।
चिन्तरु मुनिभद्र-देवरिर्प्पन्नेवरम् ॥
कालावसान-सांस्यतिग् ।
आलम्बमेनिप्प निर्णयं दोरकलोडम् ।
शीलाचार-समाध वि- ।
शालमुनिभद्र-देवररितं चनिसल् ॥
नीरोळगण-तावरेयेले ।
नीरं पोरदन्ते बाह्य-वस्तुवनेल्लम् ।

दूरं माडि वळिळक्कम् ।
धीररु **मुनिभद्र-देव**रगणित-महिमर् ॥

वृ ॥ क्षमे निश्शल्यमेनुत्ते सन्यसनदिन्दात्म-प्रत्रोधादयम् ।
समसन्दोन्दिरे दिव्य-पञ्च-पद-चिन्ता-पंक्ति मुन्नेय्दुवुत्- ।
तम-ताणक्कदु सञ्चितार्त्थमेने धर्म-ध्यान-मौनोद्यम- ।
क्रमदिन्दं **मुनिभद्र-देव**रोडलिं वेर्म्मोडिदर्ज्जीवमम् ॥
लसित-शकाङ्कमुद्ध-नभ-चन्द्र-पुरेन्दुविनिन्दे सोभिसल् ।
पेसर्वडेदोप्पि तोर्प्प विलसद्-**विभवाव्दद-चैत्र-सुद्ध-ते-** ।
रसे-शनिवारदोळ् सकळ-सन्यसन-व्यसनं समाधि सन्- ।
दिसे **मुनिभद्र-देव**रुरे सद्-गति सौख्यमनेय्दिदर् निनम् ॥

क ॥ लसित-**मुनिभद्र-देव**र ।
निसिधियुमनवर शिष्यरेने सोगयिप **पारि-** ।
ससेन-देवरुरे मा- ।
डिसि कीर्त्तियनान्तरिन्तु कन्तु-विद्रर् ॥

भद्रमस्तु जिनशासनम् श्री

[वृषभ-तीर्थंकरके गणधर वृषभसेन-मुनिप और उद्धुर-वंशके आचार्योंकी कीर्त्तिका वर्णन कौन कर सकता है ? इस वंशके आचार्योंके अग्रणी जिनसेन और वीरसेन थे । उस परम्परामें लक्ष्मीसेन-भट्टारक अवतीर्ण हुए थे, जिनके शिष्य चन्द्रसेन-सूरि थे । उनके शिष्य मुनिभद्र-देव थे; उनकी प्रशंसाएँ । उन्होंने हिसुगल वसदिको बनवाया था, और मुलुगुण्ड जिनेन्द्र मन्दिरका विस्तार किया था । जिस समय हरिहर-राय विजयनगरीमें विराजमान थे, सेन-गणके वृद्धजनोंने उस यतिके गुणोंको नमस्कार किया था । तपश्चरणके बाद उन्होंने बहुत समयतक निश्चिन्त जीवन बिताया । अन्तमें, उन्होंने अपना अन्त नजदीक जानकर, विहित विधिका अनुष्ठान करके उच्चावस्थाके लिये अपनेको तैय्यार किया, तथा

(उक्त मितिको), 'सन्यसन' की विधिपूर्वक, प्राणोत्सर्ग करके शाश्वत सुखका आनन्द लिया। उनका स्मारक उनके शिष्य वा (पा) रिससेन-देवके द्वारा खड़ा किया गया था। जिनशासनका कल्याण हो।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 146]

५८६

हिरे-आवलि;—कन्नड़।

[शक १३११=१३८६ ई०]

[हिरे-आवलिमें, १६वें पाषाण पर]

श्रीमद्-राय-राजधानि-हस्तिनापुर-**विजयानगरि**-मुत्तवाद। समस्त-पट्टणाधीश्वर। अश्वपति-गजपति-नरपति-अरि-राय-तुरुस्क(ष्क)-विभाड। हिन्दूराय-सुरत्राण। मापेगे-तप्पुव-रायर गण्ड। समस्त-भुवनाश्रय पृथ्वी-वल्लभ। महाराजाधिराजम्। श्री-वीर-**वुक्क-राय**न कुमार **हरिहर-राय** राज्यं गेय्युत्तमिर्प्प कालदल्लि महा-प्रधानि मन्त्रि-शिरोमणि **मादरस-वोडेयर** काल। स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-मौनानुष्ठान-जप-तप-समाधि-शील-गुण-सम्पन्नरप्प श्री-**मुनिभद्र-स्वामि**गळ गुड्ड। आहाराभय-शास्त्र-दान-विनोदनुं। रत्नत्रयाराधकनुं। जिन-मार्ग-प्रभाव-करनुमप्प जिङ्डुलिगेय-नाडिङ्गे मुख्यवाद **हिरियावलिय** पुराधीश्वरनप्प श्रीमन्नाळुव-महा-प्रभु **काम-गौण्डन** सुपुत्र कुल-दीपकनप्प। हिरियचन्दप्पनु **शक-वर्ष १३११ शुक्ल-संवत्सरद कार्त्तिक-बहुळ-रजनी-कुज-वार-चतुर्द्दशि**- शुभ-दिनदल्लु सन्यसन-समाधि-विधियिं मुडिहि स्वर्ग-प्राप्तनाद ॥

क ॥ कार्त्तिक-बहुळ-चतुर्द्दशि।

कीर्त्तिय मुनिभद्र-यतिय प्रियद गुड्डम्।
स्फूर्त्तिय देहव तोरदन-।
मूर्त्तद देवरने नेनेदु कीर्त्तिय पडेदम् ॥
वोडने हुट्टिदरनेल्लर

कडु-मोहद मात-पितर-बन्धु-जनङ्गळ ।
यडवरियद मडदियरम् ।
कडु-गलितनदल्लि तोरेदु सन्यसनिन्दम् ॥
रजनि-कुजवार-शुभ-दिन ।
भलियिसिदं देव-गुरुव व्रतगळनेल्लम् ।
सुजनत्वद चन्द्रमनुम् ।
गजभजिसदे मडिहि स्वर्गमं नेरे पडेदम् ॥
अण्ण चन्द्रमगे गोपय ।
पुष्यद सम्बळ वनिते **राम-गौण्ड**-गौण्डिय पुत्रम् ।
वण्णिसुव हरिहरायन ।
पुण्णिदन कालदल्लि शुक्लोत्सरदोळ् ॥

गंगळ महा । श्री श्री

[लेख स्पष्ट है । हरिहर-रायके समयका है ।]

[Ec, VIII, Sorab tl., No 116]

५९०

मुल्लूर;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १३१३ = १३९१ ई०]

[मुल्लूरमें, वस्ति-मन्दिरमें चन्द्रनाथ वस्तिके पास]

स्वस्ति श्री शक-वर्ष १३१३ नेय **प्रमोदूत**-संवत्सरद वैशाख-शुद्ध ५··· **रदल्लु** श्री-मूल-संघ देसी-गण पुस्तक-गच्छद ··· कोण्डकुन्दान्वय**राय्य**-शुभेन्दु-कन्द- **विजयकीर्त्ति-देवर** ।प्र ··· ··· ··· ··· **लित देवरु** ई-स्थानमं पडेदुद्धरिसिदरु श्री-**राजा** ··· ··· ··· ··· **कोङ्गाळ्व सुगुणि-देवि**य **शारद विजय-देवर** द्वारा ··· ··· स्व-जननि ··· ··· आ-**पोचव्वरसिगे** पुण्यार्थ-वागि प्रतिष्ठेय माड्सि ··· ··· बिट्ट ऊरु अणिलवाडिय नेलविहळ्ळयम् (यहाँ

दान और सीमाओंकी विस्तृत चर्चा आती है; और वे ही अन्तिम वाक्यावयव)।

[स्वस्ति। (उक्त मितिको), श्री-मूल-संघ देशीगण पुस्तक-गच्छ और कोण्डकुन्दान्वयके, आर्य शुभेन्दुकी सन्तान विजयकीर्त्ति देवके प्रिय·····ल्लि-देव-को यह मन्दिर मिलनेके बाद इसकी पुनः स्थापना की। और राजा ····· कोङ्गाळ्व सुगुणि-देवीने, अपने शरीररक्षक विजयदेवके द्वारा,—इसलिये कि अपना माँ पोचब्बरसिके लिये पुण्योपार्जन हो सके, —(प्रतिमाकी स्थापना की और इसके लिये जैसे कि लेखमें कहे गये हैं, सीमाओं सहित) दान दिये। शाप।]

[EC, IX, Coorg tl., No. 39]

५९१

श्रवणबेलगोला;—कन्नड़।

[विना कालनिर्देशका]

[जै० शि० सं०, प्र० भाग]

५९२

हिरे-आवलि;—कन्नड़।

[वर्ष आङ्गिरस=१३५३ ई० (लु. राइस)।]

[हिरे-आवलिमें, ११वें पाषाणपर]

स्वस्ति श्रीमतु आङ्गिर-सं [व] अ (त्स) रद आश्र (पा) ढ-सुध त्रयोदशे-गुरुवार दन्दु। मूल-संघद शुभचन्द्र-देवर गुड अर्वालय मसण गौडन मग गौ-ल-गौडन तम्म काळ-गौड समाधियिं मुडिपि स्वर्ग्ग-प्राप्तनाद ॥

[लेख स्पष्ट है। राजाका उल्लेख नहीं है।]

[Ec, VIII Sorab tl, No 111]

५९३

हले-सोरब—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक सं० १३१७=१३९५ ई०]

[हळे-सोरबमें, उसके दक्षिण-पूर्वमें, तालाबके उत्तरीय नष्ट बन्धके पासके समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

शक-वरुष १३१७ नेय भाव-संवत्सरद भाद्रपद-व ७ बु सोरवद मोलेय-तम्म गाउडन मग **तम्म-गऊड** तनगे क्षय-व्याधियाद-निमित्त घट्टद केळगण **नगिलेयकोप्पक**के होगि औषधिय माडिसिकोळ्ळुतिरलागि रोग विडदे **सिद्धान्ति-देवर** पञ्च-नमस्कारद ध्यानदिं जिन-चरण-सेवेगैदिदनु ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा । (उक्त मितिको), सोरबके तम्म-गौडको क्षय-रोग हो जानेसे घाटीके नीचे नगिलेयकोप्पमें दवाई लेनेके लिये गया । लेकिन चूँकि बीमारी (रोग) उसे छोड़नेवाला नहीं था,—सिद्धान्ति-देवकी आज्ञाके अनुसार, पञ्च-नमस्कारके उच्चारणपूर्वक, वह जिनके पाद-मूलमें गया ।]

[Ec, VIII, Sorab tl., No 52]

५९४

हिरे-आवली;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[वर्ष भाव = १३९५ ई० (लू. राहस)]

[हिरे-आवलिमें, तीसरे पाषाणपर]

श्रीमत्परम-गंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

श्रीमद्-राय-राजधानि-**हस्तिनापुर-विजयानगर**-मुख्यवाद-समस्त-पट्टणाधीश्वर अश्वपति-राजपति-नरपति-अरिराय-विभाड ससस्त-भुवनाश्रय पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराजं श्री-**हरिहर-राय** राज्यं गेय्युत्तमिर्प्पल्लि तत्प्रधानि **हरिय-रायन**··· कालदल्लि **भाव-संवत्सर-फाल्गुण-मास-बहुळ-एकादशी-बुधवारद**····· **कान-रामण**न सति **कामीगौण्डि** सन्यसनि-विधियिं मुडिहि स्वर्गस्थेयादळ्॥

वृ॥ सुरपति-वन्य-पार्श्व-जिन-पाद-सरोजद युक्त-कान्तियुम्।
धरे-नुत-राय-राज-गुरु **सिद्धान्ति-यतीश**ने तन्न राध्यनुम्।
भर ··· न- **नाड जिडुळिगे** आवलि-पुराधिप **वेच-गौण्ड**नुम्।
उरुतर-माम **वोम्मर**नुमत्तेयु शोभिप कामि-गौण्डियुम्॥
कान-रामण [न] सतियेने।
दानदोळं धर्म्मदल्लि सन्यसनियम्।
येनु तडविल्ल मुडिहिदम्।
मानि पतिव्रते नाकमं नेरे पडेदळ्॥ मङ्गळ महा श्री श्री श्री॥

[जिन शासनकी प्रशंसा। जिस समय राजधानी हस्तिनापुर-विजयनगर और समस्त शहरों (पट्टण) का अधीश्वर, महाराजाधिराज हरिहर-राय राज्य कर रहे थे :—उसके मंत्री हरिहर-रायके समयमें, (उक्त मितिको), कान-रामणकी स्त्री काम-गौण्डिने, 'सन्यसन' लेकर, मृत्युको प्राप्त होकर स्वर्ग गयी। आगेके श्लोकोंमें बतलाया गया है कि राजगुरु सिद्धान्ति-यतीश उसका पुरोहित था; जिडुलिगे-नाड्के आवलि-पुरका अधिप वेच-गौण्ड चाचा था; वोम्मर उसकी सास थी।]

[Ec, VIII, Sorab tl., No. 103.]

५९५

हिरेआवलि;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[—शक १३१९ = १३९७ ई०]

[हिरेआवलिमें, २१वें पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥

स्वस्ति श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरम्। अरि-राय-नवभाड। श्री-वी[र]-**हरियप्प-वोडेयर** राज्योदयदन्दु **शक-वरुष १३१९ धातु-सं-आषाढ़-शु० ११** म इर्द्द विट्टलि-गेय-नाडोळ-गण हिरियवलिय राम-गौडन सति माधवचन्द्र-मलधारि-गाळ गुड्डि रामि-गौडि श्री-जिन-पदवनेय्दिदळ्

पड्दर्शन-सम-शीलम्।
दृढ़-व्रत-दृढ़ ध्यान-मौन-दृढ़-गुण-चरितव।
विडदे श्री-जिन-पदाब्जव।
नेनऊत्तं **रामि-गौडि** स्वर्गस्तेयादळ्॥

[लेख स्पष्ट है। हरियप्प-वोडेयर्के समयका है।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 12I]

५९६

श्रवणबेलगोला;—संस्कृत।

[शक १३२० = १३९८ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

५९७

हुम्मच;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[काल=शक १३२१=१३९९ ई०]

[पार्श्वनाथ वस्तिके मुखमण्डपके तीसरे पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं विनशासनम्॥

स्वस्ति श्रीमतु शक वरुष (वर्ष) सा १३२१ नेय बहुधान्यसंवत्सरद मार्गसिर-बुद्ध ४ ··· ··· श्रावण-नक्षत्रद ··· ··· मल्लप्पगळ मग **होम्बुच्चद** यि ··· **पायण्ण** सकल-सन्यसन-सल्लेखन ··· दणियं सरीर-भारमं विट्टु स्वर्गस्तरादरु मङ्गळ श्री श्री

[होम्बुच्चके पायण्णने सन्यसन और सल्लेखनाके द्वारा अपनेको अपने शरीर-भारसे मुक्त किया और स्वर्ग प्राप्त किया। यह उसीका स्मृति-लेख है।]

[EC, VIII, Nagar tl., No. 51, t. & tr.]

५९८

हिरे-आवलि;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १३२१=१३९९ ई०]

[हिरे-आवळिमें, पाँचवें पाषाण पर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं विनशासनम्।

स्व[स्ति] समस्त-भुवनाश्रय पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज अश्वपति गजपति नरपति पूर्व्व-दक्षिण-पश्चिम-समुद्राधीश्वर श्रीमद्-राय-रायघनि-हस्तिनापुर-विजयानगर-नुख्यवाद समस्त-पट्टणाधीश्वर श्री-**हरिहर-राय** राज्यं गेय्युत्तमिप्प कालदल्लि।

शक-वर्ष १३२१ नेय बहुधान्य-संवत्सरद आषाढ़ शुद्ध १२ बुधवारदुदय-काल-दोळु श्रीमन्नाळुव-महाप्रभु जिड्डुलिगेय-नाड़िङ्गे मुख्यवाद आवलिय **चन्द-गौण्डन** सति **चन्द-गौण्डि** सन्यसन-समाधि-विधियिं मुडिहि स्वर्ग-प्राप्तेयादळ्॥

क ॥ वर-पार्श्व-जिनर. चरणम्।

उत्तर-श्री-**विजयकीर्त्ति**-चरणाम्बुजमम्।
शरणेन्दु मनदि नेनेवुत।
वर-वडदळ् यिन्द्र-स्वर्गमं सुखदिन्दम्॥
नडव महा-लक्ष्मि-चौण्डक।
यडवरिय ... ... आवलियोळम्।
कडयिल्लद कीर्त्तिय ... ...।
पडेद सति सतियरोळगे ... ... गद सतियळ्॥

भद्रमस्तु॥ मङ्गळ महा श्री श्री श्री

[यह लेख ऊपर के लेख नं० ५६४ से मिलता है, लेकिन चन्द-गौण्ड की पत्नी चन्द-गौण्डि, जिनके पुरोहित विजयकीर्त्ति थे, का उल्लेख है।

[EC, VIII, Sorab tl., No. 105]

५६६

ऊद्रि;—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[बिना काल निर्देशका, पर लगभग १३८० ई०]

[ऊद्रिमें ही, एक दूसरे पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥

स्वस्ति समस्त-भू-वळय-मध्यदोळ् इर्प्पुदु **मेरु-पर्व्वतम्**।
प्रस्थदि दक्षिणाश्रयदोळिर्प्पुदु **कुन्तळ-देश** देशदोळ्।

स्व-स्थितात् वनवसेगवाश्रयमुं पदिनेष्टु-कम्मणम् ।
वित्तदिन्व जिदडुळिगेगोप्पुव दर्पणबुद्धरा-पुरम् ।
उद्धरेयोळ् चनिसिद्दम् ।
··· दार्च वयिचपात्मजं सिरियण्णम् ।
उद्धर्म्मिगळ सुरद्रुम ।
··· ··· ··· सिद्धरं पालिसुवं ॥
आतन सति चौडाम्बिके ।
मूवळ्वोळ् पुरुष-भक्ति बन्धुगळिल्ला- ।
मात्रदि पुर-वनबहुदेने ।
गोत्रं पेच्चुंचे नडत्तल्यार्य्यन् ॥

व ॥ अन्ता-सिरियण्ण ··· ··· स्व-पत्नी-सहित-बन्धु-बान्धव ··· परिवन-पुर-वनमं पालिसुत्त सुख-संक्रान्तिर्क्कोदिन्दमिरुत्तं दिसु ॥ वोन्दानोन्दु-दिनं अरहत्-परमे-
मुनिमद्र ··· सिरियण्ण ··· चिन्तानेयं माळ्प ···
मुनिभद्र-देवराग्नेयोळ् ।
अनुवर्त्तिसिद्द गुडनातनेम् ··· ।
··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· तङ् ।
अनुमत-मदवीवेनेन्दु नेनेवक्कसरदोळ् ॥
अनु ··· चदिं कुसुम-वृष्टिगळं सुरिवल्के वेगदिन् ।
वन-स्व-भेरि-दुन्दुभि महा-सुरवं बहु-वाद्य-घोषदिन् ।
तन तनगाद्दि पाडुतिरे ··· ··· ··· ··· ··· ।
चिन-पद-पद्ममं सिद्द ··· सिरियण्णनेम् कृतार्थनो ॥

(बाक़ीका पढ़ा जाने योग्य नहीं है) ।

इस लेखमें वयिचपके पुत्र सिरियण्णने किस तरह जिन-चरणोंका आश्रय लिया, इसका वर्णन है । नं० ५७६ लेखकी ही तरह यहाँ भी उदयेका वर्णन है । इसमें वयिचपके पुत्र जिन-भक्त सिरियण्णने जन्म लिया था । उसकी स्त्रीका

नाम वरदाम्बिके (?) था। एक दिन अर्हत् परमेश्वरने (?) मुनिभद्रको यह बतलाया कि वे पूर्ण गृहस्थ-शिष्य सिरियण्णको एक सुखी अवस्थामें पहुँचायेंगे। उस अनुकूल समयमें, जब कि पुष्प-वृष्टि हो रही थी और भेरी, दुन्दुभि तथा महा-मृदङ्गके बाजे बज रहे थे, साधु सिरियण्ण हमेशाके लिये जिन-चरणोंमें लिपट गया। कितना भाग्यशाली वह था ?]

[EC, VIII, Sorab tl.,: No. 153]

५८०

मलेयूर—संस्कृत तथा कन्नड़।

[प्रमाथि वर्ष = १४०० ई० ? (लू. राइस)।]

[उसी पहाड़ीपर, बड़े गोल पाषाणके पश्चिमकी ओर]

प्रमाथि-वत्सरे ज्येष्ठ-मासस्थ श्वेत-पक्षके।
पञ्चम्यां च तिथौ शुक्रवारे चन्द्रप्रभस्य तु ॥
प्रतिष्ठां कुरुते **चन्द्रकीर्त्ति-योगी** स्वयं मुदा।
स्व-निषिध्यर्थं उद्दाम-जिन-धर्म्म-प्रकाशकः ॥

श्री-मूलसंघ देशीगण पुस्तकगच्छ इङ्गलेश्वरद बळि कोण्डकुन्दान्वयद सम्बन्धिगळु **श्रुत-मुनि**गळ पद-पद्म-भृङ्गरु, **शुभचन्द्र-देव**र प्रियाग्र-शिष्यरु श्रीमतु सकल-कला-प्रवीणरुमप्प **श्री-कोपणद चन्द्रकीर्त्ति-देवरु** माडिसिदरु श्री-चन्द्रप्रभ-स्वामि-गळन्नु।

[सकलकलाप्रवीण, शुभचन्द्रदेवके प्रियाग्रशिष्य, मूलसंघ, देशीगण, पुस्तक-गच्छ, इङ्गलेश्वर-बळि तथा कोण्डकुन्दान्वयके श्रुतमुनिके पद-पद्म-भृङ्ग, कोपणके चन्द्रकीर्त्ति-देवने चन्द्रप्रभकी एक प्रतिमा बनवायी और उसकी, अपनी निषिधिके लिये, प्रतिष्ठा करायी।]

[EC, IV, Chamrajnagar tl., No. 151]

६०१

हिरे-आवलि;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १३२५ = १४०३ ई०]

[हिरे-आवलिमें, १७ वें पाषाण पर]

श्रीमत्परमगंभारस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति श्रीमतु **हरिहर-राय** राज्यं गेय्युत्तविप्प कालदलु ॥ श्रीमन्नाळुव-महा-प्रभु अवलिय **वेचि-गोण्डन** महा-सति **सक-वर्ष १३२५ दनेय स्वभानु-संवत्सर-भाद्रपद-बहुळ-सप्तमी-शुक्रवार-रोहिणी-नक्षत्र-वेळ्प** - नावदलु **श्रोम्मि-गोण्डि** सन्यसन-समाधि-विधियिं शरीर-भारमं विट्टु स्वर्ग-प्राप्तियादळु ॥

क ॥ तन्नय दर्व्वं जिन-पति ।
तन्न गुरुं **मारचन्द्र-मलधारि-देवर्** ।
तन्न पति **वेचि-गौण्डनु** ।
तन्न सुतं **चन्द्र-गौण्ड** अवलिपुरेशन् ॥
यी-तेरद बन्धु-बळगद् ।
ख्यातिय प्रभु-मनेगळेल्ल तन्नवरेल्लम् ।
••• ताय गुणके पासटि ।
भूतळदोळु बम्मकङ्के सरि दोरे उण्टे ॥
जिनर नेनेवुत्त वचनदोळ् ।
मनसिनोळं पुत्र-पौत्ररं तोरेवुत्तम् ।
येनगीग पञ्च-पदगळे ।
घनवेनुतले नुडिदि स्वर्गमं नेरे पडेदळ् ॥

महा श्री श्री ॥

[लेख स्पष्ट है । हरिहर-रायका राज्य था ।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 117.]

६०२

श्रवणबेलगोला;—कन्नड़ ।

[वर्ष तारण = शक १३२६ = १४०४ ई० (कीलहौर्न)]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

६०३

हले-सोरब;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १३२७=१४०५ ई०]

[हले-सोरबमें, उसके पूर्वमें आक्षनेय मन्दिरके पासके समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्-परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ।।

स्वस्ति श्री **शक-वरुष १३२७ नेय पार्थिव-संवत्सरद प्रथम-आषाढ-ब ३० सु सोरब**द महा-प्रभु **देव-राजन** अर्द्धाङ्गि **मेचकं** जिन-पदवनेय्दिदळ-देन्तेने ॥

कन् ॥ पोडविपर नेलेवीडिदु
ध्रु (ट्ट) उत्तर-पुर **चन्द्रगुप्ति** अदकाश्रयवी -।
एड-नाडु मोदल-कम्पण ।
कडेगं पदिनेण्टु-नाडनार् बण्णिपरो ॥
घनतर-तेजदेळेगेगेसदिप्पववेम् **पदिनेण्टु-कम्पण**क्कं ।
अनितरोळोप्पु **उद्धरेय** श्री-वनिता-सति **वयिच-राज**नोळ् ।
जनिसिदळिल्लि बाळ्द **ळेड-नाड** महा-प्रभु देव-राजनङ् -।
गने एने मेचकं जिन-पादाब्जमनेय्दिददवेम् कृतार्थेयो ॥

कन् ॥ अरुहत्-परमेश्वरनम् ।
स्मरिसि महा-दुरित-दुर्ग्घटङ्गळ कळिदळ् ।
गुरुगळ सम्बोधने उच्चरणेयलेयिदिदळु सु-समदिं जिन-पदमं ॥

[जिन शासनकी प्रशंसा। (उक्त मितिको), सोरब महाप्रभुकी अर्द्धाङ्गिनी मेचक जिन पदोंके पास गयी। उसकी प्रशंसामें श्लोक, जिनमें कहा गया है कि कि अठारह-कम्पणमें उद्धरेके वयिचि-राजकी पुत्री थी। १८-कम्पणमें पहिला कम्पण एडेनाड् था, जो कि बलवान् नगर चन्द्रगुप्ति पर आश्रित था।]

[Ec, VIII, Sorab tl., No 51.]

६०४

हिरे-आवलि;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १३२९=१४०७ ई०]

[हिरे-आवलिमें, सात वें पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज भुजबल-प्रताप चक्रेश्वर श्री-**वीर-हरिहर-राय**न कुमार **देव-राय**र पृथ्वी-राज्यं गेय्युत्तमिर्प्प-कालदल्लि **शक-वर्षे १३२९ सर्व्वधारि-संवत्सरदलु जिड्डुळिगेय नाडिङ्ग** मुख्यवाद **हिरि-आवलिय** ग्रामदल्लि श्रीमन्नाळ्व-महाप्रभु **राम-गौण्डन** सुपुत्र **हारुव-गौण्ड** स्वर्ग-प्राप्ति आद्द॥

वृ॥ परम-श्रीं-जिन-राज देव्व मुनिपं वैराग्य-सम्पत्तिन्द।
··· द श्री-**मुनिभद्र-देव** मुनियोळ् कैकोण्डुमिर्प्पासेयुम्।
बरेयुं वल्लमेयेन्दु वीरतनदिन्दाश्रित-भानुदिनम्।
र-मु ··· त्तयाङ्गनेगक्कु हारुव-गौण्ड-प्रभु धर्मस्य-कीर्त्ति ··· ॥
अण्ण **गोपण्ण**न तम्मनु;
पुण्यद् कणि धर्म-चित्त सच्चारित्रम्।

पुण्यदनपवर्ग्गकम् ।
बण्णिसली-हारुव-गौण्डगेयार् घरेयोळ् ॥
नोडिदडे मदन-सन्निभ ।
रूढियोळतिकीर्त्ति वेत्त सज्जन-पुरुषम् ।
पाडरिदं हारुव-गौण्डम् ।
बेडिदवरिगन्न-होन्नु-वस्त्रवनीवम् ॥
जिनर नुडि जिनर भावने ।
जिन-विम्बक्कल्ददन्य-देय्वक्केरगम् ।
जिन-पद-नळिन-भ्रमरम् ।
जिन-धर्म्मोद्धार हारुव-गौण्डनुदारम् ॥

मंगल महा श्री श्री श्री ॥

[जिन शासनकी प्रशंसा । स्वस्ति । जिस समय, (अपने पदों सहित), वीर-हरिहर-रायके पुत्र देव-राय पृथ्वीका राज्य कर रहे थे :—(उक्त मिति को) हिरि-आवलिमें, जो कि निड्डुलिगे-नाड्का मुख्य ग्राम है, शासक महाप्रभु राम-गौण्डका पुत्र स्वर्गको गया ।

आगेके श्लोक बताते हैं कि उसके पुरोहित मुनिभद्र-देव थे, और उसके ज्येष्ठ भाई गोप्पण, तथा उसकी उदारता और जिनभक्तिकी भी प्रशंसा की गयी है ।]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 107]

६०५

कुप्पुटूरु—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १३३० = १४०८ ई०]

[कुप्पटूरु में, जिन-बस्ति के उत्तर-पश्चिमकी ओर के पाषाण पर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति श्री-प्रणतामराधिप-हटत्-कोटीर-चूड़ामणि- ।
स्तोमोद्दाम-रुचि-प्रदीप-निकरैर्न्नीराजिताङ्घ्रि-द्वयः ।
श्री-गोपीश-महा-प्रभोर्व्वर-कुले स्वाम्यादि-चक्रादितः
श्रीमद्-**बान्धव-पुरि**णो विजयते श्री-शान्तिनाथ-प्रभुः ॥
तच्छ्रान्तीश्वर-चन्द्र-सान्द्र-करुणा-पीयूय-संवर्द्धितात्
सत्-सन्तान-परिष्कृतात् स्वयमभूद् **गोपीपते** स्वस्तरोः ।
नाम्नाप्यर्थवता सदा नरकजित् सद्-धर्म-सन्नाहवद्-
धाम्ना **श्रीपति**राश्रितार्त्थि-सुमनश्-श्रेयः-फलं सत्-सुतः ॥
तत्पुत्रो जिन-धर्म्म-तामरस-सन्मित्रः सु-मित्रं सताम्
साहित्यामृत-वाहिनी-सरिदिनः संगीत-विद्या-घनः ।
सोऽपि स्वस्य पितामह-प्रतिनिधिन्नाँम्ना च गोपीपतिः
स्वानूकाश्रम-योग्य-सद्-गुण-मणि-श्रेणी शुभालंकृतिः ॥
तेन श्री-मूलसंघ-प्रथित-गणि-गुणोद्दासि-देशी-गणोद्यत्-
सिद्धान्ताचार्यवर्य्य-प्रियतम-वर-शिष्येण तेजस्विना च ।
श्रीमज्जैनेन्द्र-पूजा-जिन-गृह-कृति-सत्-पात्र-दानादि-पुण्य-
श्रेण्या ••• हानि त्रिदिव पथ-सुनिश्रेणि-कल्पान्यकारि ॥
तन्नोळगिर्द्द मौक्तिकविळा-घरवद्रि-घराङ्क-रोचिगळ् ।
तन्नोळगोळ्पु-वेत्तु पोष्पोण्मुव-वोल्-जळ-शीकरङ्गळिन्द् ।
उन्नतमाद वल्-देरेगळित् तेरे-मालेय नील-रोचियिम् ।
तन्नति-गुण्पु घोषदोदवि लवणाम्बुधि नाडे रञ्जिकुम् ।
आ जळनिधि-परिवेष्टिसिद्- । आ-**जम्बू-द्वीप**-मध्यदोळ् **मेरुनगम्** ।
राजिपुदेन्देसेगमर-स- । मावदे सुर-धेनु-देव-तरु-पञ्चकदिम् ।
-मेरु-गिरिय तेङ्कण-दिक्कितोळु-धर्म्म-भूमि **भरतखण्ड**मिर्प्पुदडरोळति-रमणीय-
-नाना-देशमुण्टा-देशदोळु ॥
जिन-धर्मावासवदत्तमळ-विनयदागारवादत्तु पद्मा- ।
सननिर्प्पा-सन्नवादत्ततिविशद-यशो-धामवादत्तु विद्या- ।

घन-जन्म-स्थानवादत्तसम-तरळ-गम्भीर-सद्-गेहवादत्त् ।
एनिसल्किन्तुळ्ळ नाना-महिमेगळेसुगुं चारु-**कर्ण्णाट-देशम्** ॥
अदनाळ्वं शत्रु-भूभृद्-गिरि-कुळिशनिळा-दानि राजाधिराजम् ।
कदन-क्रीडा-त्रिणेत्रं पृथुल-भुज-बलाज्ञ-प्रभाव-प्रसिद्धम् ।
चदुरं बाण-प्रयोग-क्रमदे निरुपमोग्राग्रदेकाङ्ग-वीरम् ।
मदनाकारं गभीरं **हरिहर**-नृपनात्मोद्भवं **देव-रायम्** ।
आ-नरनाथं सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्दुत्तमिरे ॥
पलवुं देशक्के सोम्पिं सोगयिपुवुदु कर्ण्णाट-सम्पूर्ण-भू-मण्- ।
डलवा-कर्ण्णाट-देशक्कतिशयवदरोळ् **गुत्ति-नाडो**प्पुगुं मत्त् ।
ओलविन्दा-देशवेल्लं सहजदे पदिनेण्टागियुं **कम्पणङ्गळ्** ।
सले कूर्प्पिन्दिर्प्पुवा-कम्पणदोळतिशयं तानेनल् नाडे तोर्क्कुम् ॥
वोलविं **नागर-खण्डे**यं ललितदा-नाडिङ्के दल् **कुप्पटूर्** ।
त्तिलकं तानेनिसुत्त भव्य-जन-धर्म्मावासदिं सन्ततम् ।
सले चैत्यालयदिन्दे पू-गोळगळिन्दुद्यानदिं गन्ध-शा- ।
ळि-लसत्-क्षेत्र-निकायदिन्दे रमणीयं-वेत्तु विभ्राजिकुम् ॥
पू-लते पू-गिडु-पू-मर । सालिन्दल्लल्लि केरि-केरिगळोळ् चै-
त्यालयद मुन्दे तुम्बिय । बाळं मदवेरे मेरेववा-परिमळदोळ् ॥
आ-पुरमं तानाळ् । **गोप-महाप्रभु** जिनेश-धर्म्म-विशुद्धम् ।
सोपानं स्वर्गक्केने । पाप-रहित-सच्-चरित्रदिं सोगयिसुवम् ।
आ-गोप-गौण्ड-तनयं । सागर-परिवेष्टितसिद्ध जम्बू-द्वीपक् ।
आगळ् वितरण-विभवदे । भोगद **सिरियण्ण**नेसेवनेळेगप्रतिमं ॥
आ-सिरियण्ण-तनूजम् । भासुर-गुण-निलयनुचित-दानि कृपाम्भो- ।
राशि गरुवर्ग्गे गुरु जिन- । दासं **गोपण्ण**नखिल-गुण-निस्सीमम् ॥
आ-गोपण्णन वितरणदेळ्गेयेन्तेन्दोडे ॥
वारिजसद्मे सद्मदोळगिर्द्दवोलिन्-नुतिसिद्द पारदम् ।
पारदे बन्द-तोर्क्के सुमनो-मणि सन्मणि-हारदल्लि बन्द्- ।

ओरणमागि निन्द-परि वन्दि-जनक्केनिपोन्दु दान-गम्- ।
मीरतेयादुदेम् पोगळ्वे नाम् सिरियण्ण-तनूज-गोपनम् ॥
सत्यद मेलपेच्चरिके धर्म्मद मेलण लोभविन्तु सा- ।
हित्यद मेलणासे विन-पादद मेलण-निष्ठे नाडे सद्- ।
भृत्यर मेलणादरणे कीर्त्तिय मेलण कूर्म्मे लोक-सं- ।
स्तुत गोपण-प्रभुविगुण्टुळिदर्गिनिनुण्टे धात्रियोळ् ॥
करुण-रसं पोनल्-कविदु धर्म्म-महा-लतेगालवाल-दु- ।
स्थिर-बलमागे तल्-लते विनागम-कल्प-महाद्रमं मनो- ।
हर-तरदिन्दे पर्व्वि निले गोपन दुक्क-कृपानुभवनम् ।
निरुपम-धर्म्मम वर-विनागम दुन्नतियं पोगळ्दरार् ॥
येनेन्दार् कीर्त्तिसल् वल्लरो विमल-महा-मोक्ष-लक्ष्मी-निवासन् ।
ज्ञानागिन्तोप्पि तोर्प्पा-विन-पतिय लसत्-कोमलाङ्गयव्व-सम्यग्
दानं कैगळ्मुवा-निर्म्मळ-मनदोदविन्देन्दे विभ्राजिपं सु- ।
ज्ञानाम्भोराशि-गोपण्णन तेरदोळिळा-लोकदोळ् धन्यनावम् ॥
गुरुगळ् **सिद्धान्ति-देवर्** तनगे वर-जिनेन्द्रागम-ज्ञानमं मा -।
सुर-वाक्यानीकदिन्दं तिळिपि बळिक मन्त्रोपदेश-प्रभा-वि-
स्तरमं सार्व्वज्ञवत्सं गुरु-कृपेयिन्दे कैकोण्डु सत्-सेव्यनादं ।
सिरियण्णात्मोद्भवं गोपण्णन तेरदोळिन्नावं पुण्य-रूपम् ॥

आ-पुण्य-मूर्त्ति-गोपण्णन पुण्याङ्गनेयर गुण-समुदयवेन्तेन्दोडे ॥

स्थिरदिं निर्म्मळ-चित्तदिं सोवगिनिं शान्तत्वदिं रूपिनिम् ।
गुरु-पादाम्बुज-भक्तियिन्दे विन-मार्गाचारदिं सन्मनो -।
हरमप्पा-पुरुष-व्रत-स्फुरणेयिं **गोपायि-पद्मायिगळ्** ।
-क्षितं नाडे विरोचिपर्गे दोरेयार् स्सर्वोर्व्वियोळ् कान्तेयर् ॥

सिरियण्ण-सूनु **मले नाड महाप्रभु गोपण्णं** पतिव्रतेयराद पुण्याङ्गनेयरोळ् पलवु कालं नलिदु तनगे संसार-सुखं हेयमागे ॥

गगनाग्नि-पुर-हिमांशुगळ ।
ओगेद **शकं १३३० सर्व्वधारि-संवत्सरदा ।**
मिगे वैशाख-[वि]-शुद्धदे ।
सोगयिसुवा-दशमी-मिसुप-शनिवासरदोळ् ॥
हिरण्य-धान्य-भूमि-गो-दान-मुख्यवाद समस्त-दानङ्गळं द्विजवरर्गित्तु ॥

मनदोळ् जिह्वाग्रदोळ् सत्-करुहदे जिन-ध्यानमं मन्त्रमं मन् -।
त्र निरूपं तानेनिप्पा-जप-गणनेगळं सार्च्चुतं मोक्ष-लक्ष्मी -।
विनयं कैगळ्मलागळ् त्रिदिवमनतिसन्तोपदिन्देय्दिदं सच् -।
जिनरेल्लं कूत्तु सैय्पि पोगळे सिरियणात्मोद्भवं गोप-गौडम् ॥

अदं कण्डु ॥

परम-श्री-निधि-गोपनङ्गने अरेल्ला-दानमं सद्-द्विजोत् -।
कर-हस्ताग्रदोळित्तु शुद्ध-मनदिं सिद्धान्त-योगीन्द्रना -।
चरणाब्जक्कोळविन्द वन्दिसि महा-श्री-वीतरागाङ्घ्रियम् ।
स्मरिसुत्तं दिवकेय्दिदर् जलविनिं गोपायि-पद्मायिगळ् ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा ।

भगवान शक्तिनाथकी स्तुति । गोपीपति-श्रीपति-पुनः गोपीपति, इन राजाओंकी परम्परा । जम्बूद्वीप, मेरु पर्वत और भरतखण्डका निर्देश । उसमें कर्णाट देशका वर्णन; उसके राजा हरिहरके पुत्र, देवरायका उल्लेख । उनके राज्यके समय गोपीपतिने, जो मूलसंघ तथा देशी-गणके आचार्य सिद्धान्ताचार्य्यका शिष्य था, एक जिनमन्दिर बनवाया, और उसे दान दिया ।

कर्णाट प्रान्तके गुत्ति-नाड्के १८ कम्पणोंमेंसे अत्यन्त प्रसिद्ध नागरखण्ड था, जिसका तिलक 'कुप्पटूर' था । इसका कारण यह था कि इसमें जैन लोग निवास करते थे, उनके साथ बहुत-से चैत्यालय थे, सुन्दर कमलयुक्त तालाब थे इत्यादि उसकी शोभा थी ।

उसका शासक जैन धर्मावलम्बी गोप-महाप्रभु था। गोप-गौडका पुत्र **सिरि-यण्ण** था। उसका पुत्र **गोपण्ण**। उसकी प्रशंसाके श्लोक। उसकी पत्नियोंके नाम गोपायि और पद्मायि थे। वह सब कुटुम्बको छोड़कर त्यागी हो गया और स्वर्ग गया। उसका अनुसरण उसकी दोनों पत्नियोंने भी किया।]

[EC, VIII, Sarab., tl. No. 261]

६०६

हिरे-आवलि;—कन्नड-भग्न।

भित्ति लेख (?)

[हिरे-आवलिमें, आठवें पाषाण पर]

(अग्र भाग मिट गया है)

१ ... ... । स्वस्ति सम ... ... देव-रायरु ... भाद्रपद ... ... डुळिगेय ... ... होरगेय ... ...आडिद-वळिकं पेर-कोण्डाडनु ... ... नोडनु जिनपद ... ... द्रमनेन्दुम् ॥

मुनि-भ ... ... मूपिय करुणदे।
... ... गिद्दुं सुख-सङ्कथदिम्।
जिन-पद-कमळव मनदोळग्।
अनुदिन तां नेनदु नाक-सुखमं पडदम् ॥
यिन्दु कळङ्कनेम्बवर मातुगळं पुसि-माळ्पेनेन्दु आ -।
न्दे घात्रियल्लुदसिदं कळे कुन्ददे कोट्टु नष्टमम्।
पोन्दे कण्डुसिर्प्पवरे बल्लिद सर्व्व-जनाविध-चन्द्रमम्।
चन्द्रमनोप्पिदं मुददि चोवय्यनात्मव भू-तळाग्रदोळ् ॥

मंगळ महा श्री श्री श्री

[इस लेखमें चीवयके पुत्र चन्द्रमके लिये एक वैसी ही स्मारकका उल्लेख है जैसा कि नं० ६०४ के लेख में है।]

[EC, VIII, Sorab tl.. No. 108]

६०७

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड़।

शक १३३१ =१४०९ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

६०८

चैतनाथ (ग्वालियर); प्राकृत-भग्न।

[सं० १४६७=१४१० ई०]

ॐ सिद्धिः ; संवत् १४६७ वर्षे मार्गसुदि ५ सो, दिनं ॥ महाराजाधिराज श्री **वोलक्क देवः**। श्रीत्तियं काकौमनपुकर वासौः। प्रधान—जनार्द्दनः। भुजदानु रा —व—। सूत्र धारदान वाभुः ॥ माढा पेति—॥—

अनुवाद—सिद्धि ! संवत् १४६७ के माघ महीने के सुदी पक्ष के पाँचवे दिन। महाराजाधिराज **बिलक्क देव** (शेष पढ़ने में नहीं आता)।

कर्नल सी. उक्त नामको '**विरम**' पढ़ते हैं।

JASB, XXXI, P. 404, t.; p 422, tr.]

६०६

धर्मपुरः—संस्कृत तथा कन्नड़—भग्न।

[काल लुप्त, पर लगभग १४१० ई०]

[धर्मपुर (धर्मपुर परगने) में पुलिस स्टेशन के सामने के एक पाषाण पर]

ॐ नमः शान्तिनाथाय ॥

श्रीमत्परम-गंभीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति श्रीमन्महाराजाधिराज राज-परमेश्वर पूर्व दक्षिण-पश्चिम-समुद्राधिपति हिन्दू-राय-सुरत्राण भाषेगे-तप्पुव-रायर गण्ड श्रीमत्-प्रताप-चक्रवर्ति श्री-वीर-**देव-राय-महारायरु विजयानगरद** नेलेवीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे

कन्द ॥ आ-देव-राय सकळ-ध -। रादेत्तं राज्य-रक्षणक्कोलवि ··· ··· ···
आदरिसले **निडुगल्ल-म-**। हा-दुर्ग्गमनाळ्दनोसेदु **गोप-चमूपम्** ॥

वृत्त ॥ आतन ··· श-जरने वेसगोण्ड ··· कौशिकान्वयोद् -।
भूतनुदग्र-मन्त्रि-पदवी-प्रथितं विभु ··· ··· ··· ।
··· ··· ··· ··· तमनं जिनेन्द्र-समयाम्बुधि-वर्धन-पूर्ण-चन्द्रने-मातो
दिगन्त ··· ··· ··· ··· ··· ॥

कं ॥ ··· ··· मन्त्रि-महा ।··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ।
··· ··· ··· ··· ···। ··· ··· ··· ··· ··· ··· ॥

·····गोपणन यशस्सुर-भूजद वीर-राजियन्ददिन् (बाकीका मिट गया है)।

ॐ। शान्तिनाथ के लिये नमस्कार। जिनशासनकी प्रशंसा।

स्वस्ति। जिस समय महाराजाधिराज राज-परमेश्वर, पूर्व-दक्षिण-पश्चिम-समुद्राधिपति, हिन्दू-राय-सुरत्राण, वीर-**देव-राय**-महाराय विजयनगरके अपने निवास-

स्थानमें थे:—जब वह देव-राय राज्य की रक्षा करनेमें प्रसन्न था—प्रधान मन्त्री के पदको सुशोभित करते हुए, जिन-समय रूपी समुद्र के बढ़ाने के लिये पूर्ण चन्द्र ऐसा गोप-चमूप महान् निड्डुगळ् किले पर शासन कर रहा था।]

[EC, XI, Hiriyur tl., No 28]

६१०

भारङ्गी:—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १३३७ = १४१५ ई०]

[भारङ्गीमें, कल्लेश्वर-बस्तिके पाषाणपर]

... ... - - खण्डितानङ्ग-राजस्

स्तुत-हित-**जिन-राजः** प्राप्त-सत्-पाद-पूजः।
धृत-सगुण-समाजो वादिनं **वादि** ... ...
... ... राजोऽभून्नताशेष-राजः॥

सरसि च सित-सरसिजमिव
गगने विधुरिव हरिरिव हर-हसनम्।
इव हलधर-रुचिरिव विलस ...
... ... मुनि-पति-वर-विशद-यशः॥

तच्छिष्यो **जयकीर्त्ति**-नाम-**मुनिपस्**तत्पाद-सेवा-रतः।
सिद्धान्त-व्रतीपो नताखिल-नृपस्सिद्धान्त-पारङ्गतः।
तच्छिष्योत्तम-**वुळ्ळ-गौड**-तनुजः श्री-**गोपिनाथो**ऽभवत्
तच्छिष्यः स्वयमप्यभूत् स्व-जननी श्री-**माळि-गावुण्ड्य**पी॥

क्रमदिन्दी येल्लर गुणस्तुति येन्तेन्दोडे॥

शेषोऽप्यस्तु सहस्र-रम्य-रसनस्स्तोत्रे समर्थो हि यो
भूयो या धिषणा [... ...] श्री-शारदाप्यस्तु सा।
सोऽप्यस्त्वत्र गुरुर्गुरुस्मर-ततेर्य्यश्शुद्ध-बुध्या गुरुर्

वक्तुं श्री-जयकीर्त्ति-वृत्तमखिलं नान्यः कथं मादृशः ॥
यम-नियम-समेतो ध्यान-दण्डाव-दातो
जय-शत-विधि-दृष्टेऽनूदनुष्ठाननिष्ठः
अनुगत-गुण-वाक्यो वर्द्धितात्मीय-शीलो
भुवि किल जयकीर्त्तिश्चारु-मूर्त्तिर्बभूव ॥
दीक्षा-स्वीकारकालागत-जन-निवहे जात-तीव्रान् प्रमूतान्
कीर्त्तिं कुर्वन्त्यनूनं जय-जय-वचसा यस्य मुक्ताखितार्त्तिन् ।
स नानार्थैव नामाभवदिति भुवने ख्यातिरासीदितीदम्
दाने वक्तुं तदीयानगत-गणनान्नैव दाने गुणौघान् ।
तच्छिष्यः श्रुत-वार्द्धि-वर्द्धन-विधुस्सिद्धान्त-पारङ्गतः
सिद्धान्तामिध-शुद्ध-नाम-सहितोऽभूच्छुद्ध-विद्योदयः ।
कौदाद्युद्धत-वादि-वृद्ध-नमनः सिद्धस्तुतौ तत्परम्
देवेशश्च विशुद्ध-बुद्धि-सहितो ह्यद्योऽनवद्यो भुवि ॥
यद्वाणीनव-दर्पणे शुचि-गुणे धी-मल-सन्दीपन-
प्रक्षीणावरणादि-कल्मष-गणे सत्यं जगद्दर्शने ।
मत्वा-दित्य निज-स्वरूपममलं रत्नत्रयाकल्पकम्
स्वीकृत्यामृतकामिनीं निज-वशे कुर्वन्ति शीघ्रं किल ॥
सिद्धान्तदेव-कर-पिञ्छ-मिवोद्वहन्ती
किं कर्णिकारकुसुमं रुचिरैः किं मौक्तिकैर्निर्म्मितैः
किं नानामणि-निर्म्मितैरपि वरैर्म्मालेति मुक्त्वा पुनः ।
सिद्धान्त-व्रतिनस्तु नामसहितं वाणीं सुवर्णोज्ज्वलाम्
कर्णीकृत्य इतीव शाश्वतिमां कुर्वन्ति सर्वे जनाः ॥
सांख्याः किंकरतामिताः किल पुनर्योगा नियोगं किल
चार्वाकाश्च वराकतां किल गता बौद्धाश्च दुर्बुद्धिताम् ।
भाट्टो भ्रष्ट-मतिः किलाभवदिमं प्रामाकरं वेत्ति कः
तस्मात् को नटनाटनोति पुनस्सिद्धान्त-वादीशिनः ॥

स्याद्वाद-वाराकर-शीतभानोः
सिद्धान्त-देवस्य मनोज्ञ-शिष्यः ।
अभूदसौ **वुळ्ळप-गौड़**-नामा
चारित्र-वाराकर-शीतरोचिः ॥
जिनेन्द्र-गन्धोदक-पूत-गात्रो
जिनार्च्चना-पुष्प-निवास-मूर्द्धा ।
जिनार्च्चना-चन्दन-कान्त-भालो
जिनेन्द्र-मन्त्रालय-मानसाब्जः ॥
नित्यं विशुध्या कृत-धर्म-चक्रो
नित्यं ललाटे कृत-धर्म-चक्रः ।
नित्यं मुदा पालित-देहि-चक्रो
नित्यं यशः-पूरित-भूमि-चक्रः ॥
दिनेदिने सम्भृत-धम-बुद्धिर्
दिनेदिने वर्द्धित-दान-वृद्धिः ।
दिनेदिने वृत्त दयाभिवृद्धिर्
दिनेदिनेवृत्त-हिरण्य-वृद्धिः ॥
अमी गुणास्सन्त्यखिळे जनेऽपि
सम्यक्त्व-रत्नकरता तु नैव ।
सा **वुळ्ळ-गौडे** खलु सत्यमस्ति
कौ वा ततो वर्णयति प्रभुं तम् ॥
तत्पुत्रस्तत-सद्गुण-स्तुत-जिनसिद्धान्त-नाम्नो मुनेस्
सिद्धान्तोद्भट-वादि-वर्द्धन-विधोश्शिष्यःसुपुण्यद्वयः ।
सत्याब्जाकर-भास्करः प्रियकरश्चारित्र-वाराकरः ।
श्री-पूर्णो भुवि गोपण-प्रभुरभूत् सम्यक्त्व-रत्नाकरः ॥
सिद्धान्तदेव-गुरु-पाद-पयोज-भक्तः ।
श्री-वुळ्ळ-गौड़-हृदयाम्बुज-भानु-बिम्बः ।

सन्मल्लि-गौडि-कर-पङ्कज-बाल-भृङ्गः ।
श्री-**गोपणो** निखिळ-बन्धु-मणीष्ट-सिन्धुः ॥
कीर्त्तिद्दिक्कामिनीनां शिरसि वितनुते मल्लिका-पुष्प-शोभाम्
तेजस्वीमन्तिनीनां विलसति विमले कान्त-सीमन्त-भूमौ ।
सिन्दूर-श्रीरिवाशा-परवश-विदुषां प्रीति-कृद् दान-सम्पद्
वाणी पीयूष-साम्या समल-गुण-निधेर्गोपिनाथ-प्रभोःस्यात् ॥

श्रीमद्-राय-राज-गुरु-मण्डलाचार्य्य महा-वाद-वादीश्वर-राय वादि-पितामह सकल-विद्वज्जन चक्रवर्त्तिगळप श्रीम**दभयचन्द्र-सिद्धान्त-देव**र प्रियाग्र-शिष्यनप्प **चुळ्ळ गौड**न मग **गोप-गोड**नव-पोरक्कधिपतियेन्दोदे ॥

द्विपङ्गळोळगे **जम्बू** -।
द्वीपं देशाङ्गवोळगे **कन्नड-देशम्** ।
-विमवदलि सत्या -।
लापंदि सोगयिसुतमिर्प्पवतिमुददिन्दम् ॥

अन्ता-जम्बू-द्विपदोळगण कर्णाट-विषयदोळगे ॥

फल-भरवाद शालि तळ्देरिद चूत-कुजालि तेङ्क कण् -।
गोळिसुव कौङ्कु पूत लते पू-गिडु पू-मरदोळि पल्लवङ् -।
गळ पोळगोन्दि तां निमिर्व शाक-कुलं तिळि-नीर्गोळङ्गळिम् ॥
सुललितवागि रञ्जिपुदु **नागरखण्ड**मदेत्त नोळ्पडम् ।
आ-नाडिङ्के शिरो-विभूषणवेनल् **भारङ्कि**चेल्वागि सु -।
ज्ञान-व्यापकरप्प भव्य-जनदिं विद्वज्जनानीकदिम् ।
नाना-नीति-विदग्धरिं घनिकरिं तीविद्दुं लक्ष्मी-महा -।
-र्तं तन्नोळगिर्प्पुदेम्ब वगे-दोरत्तिर्प्पुदेल्लागळुम् ॥

आ-पुरद मध्य-प्रदेशदोळु ॥

ओळकोण्डभ्रमनेय्दे चुम्बिपुदय-श्री-शलवा-भानु-मण् -।

ढलवो येम्बवोलुन्नतोन्नतदोळा-चैत्यालयं चेन्न पोण् -।
गळशं रञ्जिसे भित्तिगळ् पोळपु-दोरल्गा-महा-सद्मदोळ्।
विलसत्पार्श्व-जिनेशनिर्प्पनदरोळ् देवाधिदेवेश्वरम् ॥
अन्ता पुरदधिपति भू -।
चिन्तामणि **गोप-गौड**-सुत **वुळ्ळप्पङ्ग**् ।
इन्तुदयिसि **गोपण्णम्** ।
कन्तु-समाकृतियोळोप्पुवं वसुमतियोळ् ॥
जिन-सद् धर्म्ममनेल्लमं तिळिपि मत्ता-मूल-सन्मन्त्रमम् ।
नेनेवुत्तिर्प्पुदेनुत्तल् च्चषिसिदं सिद्धान्त-योगीन्द्रना -।
तन कारुण्यमनप्पुकेय्दु मुददिं सर्व्वज्ञ-पादाब्ज-वन् -।
दनेयं माडुत धर्म्मदिन्द नडेवं **गोपण**-भव्योत्तमम् ॥
गोपति-वाहन-प्रभेयनेळिसि गोपति-वाहनांशुमम् ।
रूप-गिडल्के जवेडु गोपति-वाहन-कान्तियं महा -।
टोपदे ताने निन्दिसि मनोहरदेळ्गेयोळोप्पुत्तं वहु -।
द्वीपमनेय्दे पर्व्विदुदु **गोपण**नग्गद-कीर्त्ति पाण्डुरम् ॥

पुनः ॥

अखण्डतर-पाण्डित्य-मण्डितानन-मण्डलः ।
पण्डिताचार्य्य-वर्य्योऽस्याखण्ड-श्री-कारणं किल ॥
यत्-कारुण्य-कटाक्ष-वीक्षित-पुमान् लक्ष्मी-पतिस्स्यात् किल
यत्-पादानति-मानितामल-मनास्सत्यं महेशः किल ।
तच्छ्री-पण्डित-देव संयत-कृपावामः किलासौ प्रभुः
तस्मादस्य सु-गोपणस्य सुकृतं तत् केन वा कथ्यते ॥
एको निवर्त्तयति दुर्गति-मार्गतो यम्
अन्यो हि दर्शयति निर्वृति-वर्त्म यस्य ।
यौ पण्डित **श्रुत मुनि** मुनिपौ तयोस्तत्
तद्-गोपणस्य मुनि पुण्यं अगण्यमत्र ॥

मत्तें ॥ विन-पद-सरोज-भृङ्गम् ।
विन-वाणी-वारि-धौत-कलिल-मलौघम् ।
विन-मुनि-जन-पट-भक्तम् ।
विनयाढ्यं गोप-गौडनखिळ-गुणाळ्यन् ॥

इन्तु कीर्त्तिगावासवागिद्दु ॥ पुनः ॥

अन्यदा गुण-माणिक्य भूषणो गोपण-प्रभुः ।
मर्त्य-लोकोद्भवं सौख्यं साधितं भुक्तमुत्तमम् ॥
तत्मादनेन भुक्तेन सुखेनालमतः परम् ।
स्वर्ग-लोकोद्भवं सौख्यं भोक्तव्यमधिकं मया ॥
इत्थं स्वान्ते विचिन्त्येव गोपणो वासरे शुभे ।
पुरन्दर-पुरं शीघ्रं इन्त गन्तु-मना अभूत् ॥
[illegible]-वासरदादुदेन्दोडे ॥

सप्त त्रिंशत्-समेत-त्रि-शत-दश-शतेब्दे शके मन्मथाब्दे
मासे चाषाढ-संज्ञे वर-गुरु-दिवसे सत्-त्रयोदश्युपेते ।
कृष्णे पक्षे मनोज्ञे निखिल-गुण-गणो गोपणो भूषणात्तो
भोक्तुं वा स्वर्ग-सौख्यं सुर-पुरमगमद् दिव्यमव्याहत-श्रीः ॥

आतन समाधि-विधानमेन्तेन्दोडे ॥

परम-विनेन्द्र-मूर्त्तियने वानिसुतं हृदयाम्बुजातदोळ् ।
परम-विनेन्द्र-मन्त्रमने जिह्वेयोळुच्चरिसुत्त निष्ठेयिम् ।
वेरळ्गळोलोय्यनोय्यनेणिसुत्त जपावधियागे देहमम् ।
त्वरितदि विट्टु मुक्ति-वधेदं कलि-गोपणनेम् कृतार्थनो ॥

भद्रपदे ॥

पूर्व्वस्मिन् शक-वत्सरे शुभतरे पक्षे च कृष्णेऽधिके
मासे भाद्रपदेऽष्टमी-तिथि-युते श्री-भौमवारे वरे ।

आ-तारापति-भानु-भूधर-धरा ताराम्बरं तिष्ठ (ष्ठ) तु
श्री-गोपीश-परोक्ष-शासनमिदं सत्कर्म्मणा स्थापितम् ॥

[वादिराज मुनिकी प्रशंसा। उनके शिष्य जयकीर्त्ति-मुनिप थे; उनके शिष्य सिद्धान्त-व्रतिप थे। उनके शिष्य बुल्ल-गौड, उनके पुत्र गोपीनाथ, और उसकी माँ मल्लि-गावुण्डि। इन सबकी क्रमसे प्रशंसा। उनके शिष्य (प्रशंसा सहित) **सिद्धान्त-देव-मुनिप** थे, जिनका मस्तक बौद्धोंको चुप करनेके लिये हमेशा सन्नद्ध रहता था। सांख्य, योग, चार्व्वाक, बौद्ध, भाट्ट तथा प्राभाकर सभीको उन्होंने शास्त्रार्थमें जीता था। बुल्लप-गौड, तथा उनके पुत्र गोपण-प्रभु जो अपनी माँ मल्लि-गौडिके हाथमें मक्खीकी तरह था, की प्रशंसा।

राय-राजगुरु-मण्डलाचार्य्य, महा-वाद-वादीश्वर, रायवादि-पितामह अभय-चन्द्र-सिद्धान्त-देवका पुराना (ज्येष्ठ) शिष्य बुल्ल-गौड था, जिसका पुत्र गोप-गौड नागरखण्डका शासक था। नागरखण्ड कर्णाटक देशमें था। नागरखण्डका खास भूषण भारङ्गि था, जिसमें जैन लोग, विद्वान्, न्यायी एवं श्रीमन्त लोग भरे हुए थे। इसमें एक उत्तम चैत्यालय था, जिसमें पार्श्व जिनेश विराजमान थे, उस नगर (भारङ्गि) का शासक गोप-गौडके पुत्र बुल्लप्पका पुत्र गोपण था, जिसके दो गुरु थे, पण्डिताचार्य्य और श्रुत-मुनिप; इनमेंसे एक उनको अनीतिके मार्गसे हटाता था तो दूसरा अच्छे मार्गपर लगाता था। इस संसारकी अच्छी-अच्छी वस्तुओंका उपभोग कर, परलोकके फलोंकी इच्छासे, (उक्त मितिको), गोपणने समाधिकी रस्मसे शरीर-त्याग किया, और 'मुक्ति' प्राप्त की। भद्रमस्तु। यह समय उसी शक कालका था, जिसमें यह पाषाण लगाया गया था।

[EC, VII, Sorab tl., No. 329.]

६११

हिरे-आवलि,—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १३३९ = १४१७ ई०]

[हिरे-आवलिमें, १९ वें पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

व ॥ श्रीमद्-राय-रावधानि-विजयानगर-मुख्यवाट-समस्त-पट्टणाधीश्वर श्री-वीर-हरिहर-रायन कुमार प्रताप देव-रायनु राज्यं गेय्युत्तमिर्प्प कालदल्लि **शक-वर्ष १३३९ नेय विलम्बि-संवत्सरद चैत्र-बहुळ १० गुरुवारदलु** श्रीमत्-सेन गणाग्रगण्यरु **मुनि-भद्र**-स्वामिगळ प्रिय-शिष्य हिरि-अवलिय राम-गौण्डन सत्-पुत्र **गोप-गौण्डनु** समाधि-विधियिं मुडिपि स्वर्ग-प्राप्ति आद ॥

वृ ॥ वीर-जिनेन्द्र-पाद-पङ्कज-भृङ्गनुदार-चित्तनुद्-।
धारकनन्त-कीर्ण्ण-जिन-वासव निर्म्मित-दान-पारगम् ।
गोरट-दासि-वेसि पर-नारि-सहोदर मार- सन्निभम् ।
अपारद-गोप-गौण्ड-प्रभुवं पुर वर्ण्णिसुतिर्क्कुमागळ्दम् ॥

क ॥ वसटि-कलु-वेसननेसगिये ।
वसुधेयोळ्दं पुण्य-कीर्त्तियं अवलियोळम् ।
दस-दिक्किनलि गोपण्णम् ।
पसरिसिदं राम-गौण्डनदेन् पवित्रनु ॥

वृ ॥ परमाराध्यं जिनेन्द्रं गुरु ऋषि-निवहं राम-गौण्डात्मजातम् ।
निरुतं रामाम्बिका जननि अनुजनुं हा राम-गावुण्डं गुणज्ञम् ।
सिरि-अण्णं चन्द्रमाङ्कं सरसिज-मुखि गोवकं पत्तियेम्बळ् ।
पिरिदुं स्वर्गापवर्ग-प्रकरदोळेसेवं **गोप-गौण्डं** कृतार्थम् ॥

क ॥ पोडवि-पति देव-रायनु ।
तडेयदे राज्यवनु आळ्व-कालदोळन्दुम् ।
विडदे जिन-चरण-सेवेय ।
कडु-गुणि **गोपण्ण** पडेदनुत्तम-गतियम् ॥
गुत्तिय-राज्यद वोळगम् ।
उत्तमवेनिसिहुदु हिरिय-जिड्डुळिगेयोळम् ।
अत्युत्तम-हिरि-अवलिय ।
पेत्तनु प्रभु-राम-गौण्ड-सुत गोपण्णम् ॥
गुरुगळु श्री-मुनिभद्ररु ।
धरिसिदमवरिन्द गोपणाङ्कनु व्रतमम् ।
नररोळ्गे पुण्यवन्तनु ।
पिरिदुं स्वर्गापवर्गमं नेरे पडदम् ॥
अळवह-चैत्र-वहुळदि ।
वेळगप्पा-जावदलि गुरुवारदोळम् ।
विलसित-विलम्बि-वत्सरद- ।
ओळगादुदु दुहूरण-योग **गोपि-देव**र्गम् ॥
दासी-वेसिय-रूपम् ।
व···घोळं पिरिदेन्दु तो··· अनि व्रतदिम् ।
मासिद-कीर्त्तिगळिन्दम् ।
लेसेनिसिये **गोप-गौण्ड** स्वर्गव पोक्कम् ॥

मंगल महा श्री

[इस लेखमें वंशावलि वर्णित है । देव-रायका राज्य-काल था ।

[EC, VIII, Sorab tl., No. 119]

६१२

हादिकल्लु;—संस्कृत तथा कन्नड़-गद्य ।

[वर्ष हेमलम्बी = १४१७ ई० (लू. राइस) ।]

[हादिकल्लुमें, रते हकल्के पासके समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

… … … … श्रीमतु हेव(म)ळम्बि-संवत्सरद आषाढ़-सु १ बृहस्पतिवारदन्दु श्री-गुणसेन-सैद्धान्ति-देवर गुड्डु … … … हादिगलगुडियप्प-गौडन हेडति काळि-गाव्रुण्डि समाधि-विधियिं मुडिपि सुर-लोकप्राप्तेयादळु मङ्गल महा

[जिन-शासनकी प्रशंसा । (उक्त वर्षमें), गुणसेन-सिद्धान्ति-देवके गृहस्थ शिष्य … अयप्प-गौडकी पत्नी काळि-गौण्डि समाधि-विधिके द्वारा मृत्युको प्राप्त हुई और स्वर्गको गयी ।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl., No. 121.]

६१३

हिरे-आवलि;— कन्नड़-गद्य ।

[शक १३४३ = १४२१ ई०]

[हिरेआवलिमें, २०वें पाषाणपर]

स्वस्ति श्रीमद्-राजधानि-विजयानगर-मुख्यवाद समस्त … … श्री-वीर-प्रतापदेव-राय-वोडेयर राज्यं गेयुत्तमिर्प्प कालदल्लि शक-वरुष १३४३ प्लव-समाश्विज ब-६ लु हिरियावलिय गोप-गौडन मगनु भैरव-गौडनु पञ्च-नमस्कारदिं स्वर्म्मस्तनादम् ॥

पग्म-जिन-पार्श्वनाथन
चरण ··· ··· ··· ··· ··· ।
··· ··· चरण-कमल-पट्टम् ।
··· ··· भवि(भै)रव ··· ··· भव्य ॥
जिन-रत्न ··· ··· ··· ··· ।
··· ··· जिनदासन उदित-वीर-व्रतदिम् ।
··· ··· ष्टनेन्दा- ।
विनयाम्बुधि भवि(भै)रवं ··· ··· पोकम् ॥
पित गोपीनाथनेनिपनु ।
मत ··· ··· मातेयु कञ्चि-गौडि-मातेयु तनगम् ।
··· ··· माते सुत ··· ··· ··· ।
··· ··· भैरप्प ··· ··· मुडिपि स्वर्गव पोकम् ॥
गुरु-पञ्च-पदव नेनेऊत ।
सु-रुचिर-सच्चित्तदिन्दनात्मन ··· ··· ।
पिरिदप्प गतिय पडदम् ।
··· ··· ··· सणि भैरप्प ··· ··· ··· ॥

[इस लेखमें भी समाधिके स्मारकका उल्लेख है। देव-रायके राज्यका काल है।]

[EC, VIII Sorab tl, No 120]

६१४

हिरे-आवलि;—कन्नड-भग्न ।

[शक १३४३ = १४२१ ई०]

[हिरे-आवलिमें, १८ वें पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

श्रीमतु राजधानी-**विजयनगर**-मुख्यवाद्-समस्त-पट्टणाधीश्वर श्री-वीर-प्रताप-**देव-राय** राज्यं गेयिकुत्तमिर्प्प कालदलि **सकवरुष** १३४३ नेय सार्व्वरि-सं [व] स्वर-फाल्गुण-सु. ४ सो श्रीमत्-सेन-गणाग्रगण्यर **मुनिभद्र-स्वामि**गळ्गे प्रिय-शुद्ध **हिरिय-आवलिय वेच-गौडन** सुपुत्र **मदुक गौडनु** समाधि-विधियिं मुडिपि स्वर्गासियादम् मङ्गळ महाश्री श्री यी-[क] ल्ल माडिदातमी-ऊर पूर्व्विक **मद्दोजन** मग **वनदोजनु** ॥

[लेखमें स्मारकका उल्लेख है। देव-रायका राज्यकाल है।]

[Ec, VIII, Sorab tl., No 118]

६१५

पहला लेख

मलेयूर (रु);—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक १३४४=१४२२ ई०]

[मलेयूरु (उय्यमवल्लि प्रदेश) में ग्राम-प्रवेशके एक पाषाणपर]

ीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
चोयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति श्री **शक-वरुष** १३४४ नेय शुभकृत्-संवत्सरद श्रावण-शुद्ध १५ ल्लु श्रीमद्राजाधिराज-राज-परमेश्वर श्री-वीरदेव-राय-महारायर कुमार श्री-वीर-हरिहर-रायर सोम-ग्रहणदल्लु **कनकगिरिय** श्री-**विजय-देव**र श्री-कार्यक्के सल्लुव अङ्ग-रङ्ग-भोग मोदलाद देवता-विनियोगक्के **मलेयूर** चतुस्सीमेयोळगाद तोट तुडिके गद्दे वेदलु सुवर्ण्णादाय होन्नु होम्बरि हुङ्क तळवडिके ग्राम्मद मणय वोसगे मद्दुके क्षीर डलपे सरदि निधि निक्षेप बल पाषाण अक्षीणि आगामि मुन्तागि ऐनु-ळ्ळन्या [illegible]-सर्व्वादाय-सहित आ-**मालेयूरु**-ग्रामवन्नु धारा पूर्व्वकवाद शासन-दत्तवागि वाणुदेवर-कैर्ें-गद्दे स्थान-मान्यगळु होरीतागि बिट्ट दत्ति (हमेशाकी तरह अन्तिम श्लोक)

[राजाधिराज राजपरमेश्वर वीर-**देवराय**-महारायके पुत्र वीर **हरिहरराय** ने कनकगिरिके देव विजयकी उपासनाके लिये मलेयूर ग्रामकी सारी भूमिका दान किया।]

दूसरा लेख

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य **वर्द्धतां** जैन-शासनम्॥

स्वस्ति श्री **जयाभ्युदय-शालिवाहन-शक-वर्ष १३४४** सन्द वर्तमान-शुभकृतु-संवत्सरद श्रावण-शु १५ आ लु कनकगिरिय श्री-विजय-देवरिगे श्रीमन्महाराजाधिराज राजपरमेश्वर श्री वीरप्रताप **देवराय**-महारायर कुमार **हरिहरराय**र् **ओडेयरु** आ-कनकगिरिय श्री-विजयनाथ-देवर अमृत-पडि अङ्ग-रङ्ग-भोग-वैभवक्के कोट्ट धर्म-शासन तमगे कोट्टिह **तेरकणाम्बेय राज्यक्के** सलुव **कोलगणद** भागेय **मलेयूर** ग्राम १ र चतुस्सीमेयोळगल्ल गद्दे बेद्दलु तोट तुडिके आरु-वन्नु मेलु-ओन्नु अड-देरे कुम्बार-देरे कल्ल-मने कोडेगे देव-दान बिट्टुगु बेस-वक्कलु होन्नु होम्बळि होङ्गे हागे सुङ्क दण्णायकर स्वाम्य मुन्तागि प्राकु-मर्य्यादे **ऐनुळ्ळ** सर्व्व-स्वाम्यवनु अनुभविसिकोम्ब **मलेयूर** ग्राम १ र कालुवल्लि **हुणु-सूरपुर**द ग्राम १ उभय ग्राम २ क्कं हिरिय मनेय पट्टे प्रमाण ग २३० (आगेकी १३ पंक्तियोंमें दानका विस्तृत विवरण है) अत्तरदलु नूरिपत्त-ऐळु होन्निन मलेयूर ग्राम १ न् सोम-ग्रहण-पुण्य-काल शुभकृतु-संवत्सरद कार्त्तिक-शु १ आरभ्यवागि **त्रियम्बक देव**र सन्निधियल्लि स-हिरण्योदक-दान-(दान)-धारा-पूर्व्वकवागि धारेयनेरेदु आ ग्रामद चतुस्सीमेयल्लि मुक्कोडंय कल्लनु नेट्टिति कोट्टे (IIb) वागि आ-ग्रामद चतुस्सीमेयोळगुल्ल अत्तिणी-आगामिनिधि-निक्षेप-जल-पाषाण-सिद्ध-साध्य अष्टभोग-तेजस्-स्वाम्य सर्व्व-पृथ्वी समस्तबलिसहित देवर अमृत-पडिगाङ्ग-रङ्ग-भोग-वैभवक्के धारयन्नु एरदु कोट्टेवागि आ-चन्द्रार्क्क-स्थायियागि चित्तायसुवुदेन्दु कोट्ट, धर्म्मशासन-विट्ट वृत्ति (पूर्वकी तरह अन्तिम श्लोक) **कोलगणद वासुदेवरिगे** मले (IIIa) यूरलि कोट्टिह वूरु-मुण्डाग केरेय केळगे

चतुर्सानेयल्लि प्राकु-मर्य्यादि नीरु वरिदु बेळव इप्पु गद्दे होरंते स्थान-मान्य पूर्व्व मर्य्यादि वर् ··· ओप्प श्री विरूपाक्ष (कन्नड़ अक्षरोंमें)

[इस लेखका विषय शिलालेख नं० १४४ (ए० क०, जिल्द ४ थी, चामराजनगर तालुका) से भिन्न नहीं है। अतः १४४ और १५६ नं० के लेखोंका विषय एक ही है। इस लेखमें भी हरिराय ओडेयरने कनकगिरिके विजयनाथ-देवकी पूजा, सवारी और रथयात्राके लिये हुणसूरपुर ग्राम सहित मलेयूर ग्रामका दान किया। यह दान त्रियम्बक-देवके समक्ष किया गया था। मालेयूर गाँव तेरकनाम्बे राज्यके कोलगणका था।]

[EC, IV, Chamarajnagar tl., No., 144 & 159.]

६१६

श्रवणबेलगोला—संस्कृत।

[वर्ष शुभकृत्=शक १३४४ (कोलहौर्न)=१४२२ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

६१७

देवगढ़;—संस्कृत।

[सं० १४८१ तथा शक १३४६=१४२४ई०]

[ललितपुर से लाये गये एक शिलालेख की नकल]

१—वृषभ वयत संश्रीमद्वर्द्धमानमहोदये विपुलं विलसत्कान्तौ कान्तारव्येऽमृत-सागरे। सुगत सुमतिमन्नैणाङ्काकलङ्क सकौमुद वितनुते सतां शान्त्यै शान्ति श्रियं सुमतिं चयं ॥१॥+ + + + र्भुवः श्रोते नश्वरानुदयाय ते। तच्चिदुद्यज्ज्व-लज्ज्योतिरार्हतं श्रेयसे अये ॥२॥ पायादपायात् सदयः सदा नः सदा शिवो यद्विशदो हितात्मा चञ्चच्चिदा—१

२—नन्दविशुद्धचन्द्रद्युतौ चकोरं त्वपि (?) शुद्धहंसाः ॥३॥ **श्रीशंकरं** श्रीरमणाभिरामं + + +ल्लक्ष्मणमर्हणार्हं। जिनेन्द्रनन्दं धनदं सुमित्रमजातशत्रुं विभजे चकोरं ॥४॥ स्वनाममायामयमप्यमायं वामं ललल्लक्ष्मणमर्हणार्हं। सीतेशसुग्रीवमहार्हणार्हं वन्दे—२

३— सहर्षं सहसैकशीर्षं ॥५॥ सशल्यदुःशासननाशहेतुमजातशत्रुं सहदेववर्य्यं। वन्दे विशालार्जुन सद्य + + नन्दत्सतां कर्णकुलं मृगाङ्कं ॥६॥ वामयेधाष्टकं (?) स्वेन कर्म्मघार्द्धाद् वरत्नरं (?)। साधोर्द्धार्द्धं दुरेखं तम्हंलीये विलयश्रिये ॥७॥ विगर्ज्जन्नागरवाङ्क—३

४—मन्त्रितं तक्षकं नुमः। दुर्व्वादं नुवद्धर्द्धमानजैनमहोत्सवं ॥८॥ वदनपरगिरीशो ···विविदशन····· वेत्रवत्याकलेर्यत्। प्रभवतु स मृगाङ्कोप्यस्तदोषोऽकलङ्कः। कुवलयसुखहेतुर्नः श्रिये **शान्तिसोमः** ॥९॥ योदीदहच्च तिलकेक्षण वह्निदेह कामं—४

५—अमीमरदरं वनकं तदीयं। शक्त्यान्वितस्त्रिनयनोप्यपवामवामः शान्तीश्वरत्रिजगतां स शिवाय·····पदपद्मयुग्म ··· छद्म उपास्महे तदहं मुदा यदमर्त्यमर्त्यभुवङ्गमनम्रमौलिकुलात्मचित्। विदलत्तमालसमुल्लसत्सुनखेन्दुमण्डलमण्डलीविगलांशुमिभेवश्री—५

६—मृषः **शशि**नोऽर्हतो भवत्संभवे ॥११ क्षीरकर्पूरनीहार-हारहीरहरावरां कुन्देन्दुकुमु···क्षीरसमुद्रसान्द्र विलसत्कल्लोलमालोज्ज्वलां श्रीसर्व्वज्ञ सुधांशुमण्डलमिलत्स्वर्लोककल्लोलिनीं। विद्रावन् निजभक्तक्लेतसि समुन्मीलत्तमोपद्रवां वन्दे—

७—वाङ्मयमिदे मुदे च भगवद्वाणीश्च सत्सम्पदे ॥१ श्रीमूल-लक्ष्म्या नृपनन्दिसंघे गच्छेपतुच्छे **मदसारदाख्ये**। क्षणे बलात्कारगणे गरिष्ठे **श्रीकुं**····· जिनेन्द्रचन्द्रागमदुर्गमार्गो यस्योडुपं त्यत्र सतां हि वाचः। अद्याप्युदञ्चद्दयासामलसत्कधाश्च स **धर्म्मचन्द्रः** ॥२ यस्याशागजकर्णकैरववना—७

—नन्दैकसत्कौमुदीकीर्तिर्नागनरामरेन्द्रभुवने जेगीयतेऽहर्निशं। **धर्म्मेन्दुः**

सकलः कलङ्कविकलः स स्याच्छुधांशुश्रिये श्रीमूल··· ···विलसल्ल··· ··· दये ॥३ **धर्मचन्द्र**मुनीन्द्रस्य पट्टोत्कृष्टोदयाचले। यस्योदयोऽभवत्तस्य तमस्तोमापनोदिनः ॥४ **रत्नकीर्त्ति**र्लसन्मूर्त्तिस्तिग्मांशोः क–८

६—मलोदये। सतामप्यपङ्कानां तपसां स्युर्यशोऽशवः ॥५ अद्याप्युच्चैर्जलम्भे चरणचयचिंतलम्भदम्भाद् यदीया ज्योत्स्नेवानुष्णरश्मेः क्षरदमृतमयी··· ···। सख्या ··· ··· ··· ··· समिनां पुण्यपुण्योपदेष्टा सृष्टा सप्तप्रतिष्ठासु च विनशशिनो रत्नकीर्त्तिः प्रशस्त्यै ॥२ रत्नकीर्त्तिपदाम्भोजकमलालङ्कृतासने। ये नोद्यद्वाग्वि-६

१०—लासेन भारती भूषणायितं ॥१ गर्ज्जद्दुर्वादिवृन्दाम्बुददलनविधौ योऽभवत्तीव्रवातस्त्वेकान्तध्वान्तभानुः कुवलयसुखकृद् यस्त्वनैकान्त ··· ··· ध्वान्ताङ्को-ऽकलङ्कः ··· ··· सकलकलः शङ्करो+ +वृत्तः स्याद्वृद्धयै मूलसङ्घामल-कमलनिधौ श्रीप्रभाचन्द्रदेवः ॥२ पदे ततो नमदशेषमहीशमाललग्नानि यत्क्रमरत्नस्तिलकान्यभूवन् -१०

११—कल्याणकारिकमलाकुचकेलिदानि पापापहानि समभूदिह **पद्मनन्दी** ॥१ कः सरीसर्त्ति साम्यत्वं सन्निधावञ्जनन्दिनः। न ··· ··· न सम्मसे यस्य स ··· ॥ २ के के पुराणसार्थाय्यं शिष्यानाकर्ण्य कर्णयोः। श्रीपद्मनन्दिनः प्रापुः सस्मितां धर्म्मदेशनां ॥ ३ प्रेम्ना कलितं विशच्छलमितं चेतोभुवा वर्त्ति—११

१२—तं रागाद्यैः समयदूषितैः परमतैर्भ्रस्यत्तमस्तोमितं। मायैः प्रस्फुटितं नयैर्विरचितं धर्म्मैः समुद्योतितं सत्यात्राम्बुजनन्दिदीपतपसि प्राग्जैनधर्म्मालये ॥४ सै ··· ··· क+चलति सद्वंसत्यनुण्णा द्युतिः क्षीणम्मोध्यतिचन्द्रमत्यहरहः स्पर्द्धन्ति हन्तो अति। श्रीमानम्बुजनन्दिनत्रिभुवने जेगीयमाना न यै–१२.

१३—वाद्यत्सद्यशसा न केन सुनटी कीर्त्तिर्नरीनर्त्यहो ॥५ ज्ञानार्णवः समयसार-गभीरशब्दसल्लक्षणः प्रणवलीनलयः प्रमाणः। सि ··· ··· भुवनोपकृत्यै···

…॥ ६ इन्द्रोपेन्द्रफणीन्द्रगीष्पतिमतिं यः कोऽपि धत्ते पुमान् मन्ये पद्मनन्दिनो गणगुणान् वक्तुं न सोयीशते । संसाराणंवतीर्ण–१३

१४—यामलधिया सन्नौकया सन्मुनेर्निष्कल्लोलचिदम्बुधावच्चलया पद्मार्चितं लीलया ॥३ श्रीपद्मनन्दिसुगुरोःपदपद्मप … … … धर्मोपलक्षितदिशा … … मारमनोभिरम्यः प्रोद्भेद्य कौमुदमरं **शुभचन्द्रदेवः** ॥ १ अथ संवत्सरेस्मिन् नृपविक्रमादित्यगताब्द **१४८१** शा–१४

१५—के श्रीशालिवाहानाम् **१३४६** वैशाखमासशुक्लपक्षीय पूर्णमास्यां गुरुवासरे । स्वातिनः(न)क्षत्रे । सिंहलग्नोदये ॥ अतिविक्र++र्ष्येन्दे चन्द्राद्रयब्धीन्दु … … वैशाखे पूर्णराकायां … … मृगयोदये ॥…साकृष्टकृपाणपाणिविलसत्तीव्रप्रतापानलज्वालाजालसमाकुलीकृतगजाधीशा–१५

१६—धरीशैणपे । श्रीमान् मालवपालकेशकनृपे **गोरीकुलोद्योतके** निःक्रान्ते विक्रमाय **मण्डपपुराच्छ्रीसाहि आलम्भके** ॥१… … सुमण्डलमण्डमानाखण्डलबालकुलमण्डमपी++न्ये । संनिर्म्ममे शिवशिरोमणिकर्म्मनोज्ञं सद्बोधिनः सुविधिना सुविधिः सुबोधः ॥ १ सोऽभूत्तस्मिन् त्रिभुवनपालो भुवने १६

१७—लसद्यशः कलशः । योऽलं त्रिभुवनलक्ष्म्या लेभे गणगुणं गणा + रणं ॥२ निर्दम्भः सम्भगर्जद् गजसकलकला + + लाङ्काकलङ्कं … … … त्रिपुलयशसो यस्य चित्रं पवित्रं । तस्य श्रीपुण्यलक्ष्याखिलगुणनिलयो धीरधीरो गभीरः पुत्रो गोत्राभप + पममहिमनिधिर्धोरधीः साधुसाधुः ॥ ३ + + लवालकीर्त्तिलताबि- १७

१८—तानधारावरः सुसमयोप्यतमस्ककल्पः । सन्तापहारि … … कापसार्यभव … … … … वनिवि + देवः ॥ विद्युल्लतेव विमला … … … … पतिव्रताङ्का सौभाग्यभूधरसुता नररत्नगर्भा तस्याश्चिवका च वनिता जनितात्रकेव ॥ ५ अमूदसमसौम्योपि तयोपि तयोर्वागर्थयोरिव **होलीसुनन्दनः** श्रीमान् १८

२६—रसोत्साहाभिनन्दनः ॥ ६ वर्द्धमानार्थिनामर्थैं वर्द्धमानान् मनोरथान् सार्थ-
चन्नर्थतः श्रीमान् होली कल्पाङ्घ्रिपायते ॥७ सन्मूलः सदलोल्लसत् ·····
प्रशाखोच्छ्रितः श्लाघ्य स्वच्छ कुलैः फलैरविकलः सुच्छायकायश्रियः।
सन्तापेऽपि कृपाकरः कुवलये श्रीहोलिकल्पाङ्घ्रिपो जीयात्तर्जितदुर्ज्जनोऽ
र्जुनव- १६

२७—शोवासोऽर्कचन्द्रार्थिभिः (१) । ८ अविकल्पलल्पलतया सुकान्तया कान्तया
कान्तः । असकृत् सुकृतसद्घनतघाराधरनिर्भरासारैः ॥ ६ यः कान्ता + +
लत ··· ··· ··· कमलाख्ययाधनाख्यं धनदं सुधनञ्जयं साधुः ॥१०
वधूधनश्रीफलंमालयालं गल्हेशवंशानुनन्दनैश्च सुवर्णरुक्माहिरमा- २७

२८—गरैभिः सरत्नभूगजरठकुराग्यैः ॥११ गाम्भीर्य्यजलदासये विचलतां दैवाचलो
नार्द्दवं नृत्यत्कार्त्तिककेकिकाय विगलत्व + + तं + दयः ··· ··· ···
सदाश्रिततया सर्व्वं सहत्वं धरा यत्मादेव मिता दधुः स जयतात् श्रीहोलि-
सङ्घाधिपः ॥१२ विस्मयन्ते धरित्राणि··· ··· ···होलिसाधुना । य- २१

२९—यशोऽकृसदुग्धाब्धौ वृषः कौमुदमेधते ॥१३ यद्यशो विष्णुनाप्युच्चैः
कलावप्यकलङ्किना । + +स भेशशेषत्वं विश्वविश्वमुपादधे ॥१४ + दैव
+ ति सुजनवाच्छ ··· ··· णां । अनुभवति वचांसि गुरुर्विश्वं विस्मयति
होलिकृती ॥१५ गुणवानपि धर्म्मात्मा वक्रः सद्धर्म्मनोपि यः । यद् +
सोमदो हो- २२

३०—ली ऋजुगन्याप्यलोभमाक् ॥१६ रोदसांवरसच्छुक्लासंपुराद् यद्यशो-
लसत् मुक्ता मुक्तयङ्गना मुक्ताहारं होल्या रसोर्हतात् ॥१७ सत्केतकीकु
··· ··· कायसंकास ··· ··· यशसात्ममयीकृताशः । सोल्लासमारसनि-
वासिमया महान्तो होलीश्वरोऽस्तु सघनञ्जयसार्थवाहः ॥१८ नाको- २३

३१—स त्वमहं वृषस्तनुतनुः किं पुत्रपित्रोः शुचा सानन्दं वद सत्र किं मृगयसे
भूयोवतारस्तयोः । त + +क्व कलौ वदाशु नृकवे किं वर्द्धमानेऽक्षये···
··· मद्रूपो··· ··· ·· होलि सं + +रे ॥१६

श्रीहोलीकमलाकरे कुवलयं सत्कीर्त्तिकञ्जायते शेषेनालसि सद्दलीयति गजै-र्दिक्षु प्रकाशीयति । मेरौ चित्रम- २४

२५—जात्र चित्रमपि तन्मित्रास्तच्चिन्तापभृद् यन्नालीयति सन्मरालति कलङ्की यत्र टोपाकरः ॥२० चन्द्रो निर्हसिता + तिप्रविकशद्र··· ··· ···जम्बालति । सिद्दीपत्यखिलाचलाचलविभुभं + + नन्तमित्युद्यद्धोलियशोम्बुधौ सम ··· ···धम्मकनौकेत्यहो ॥

२६—२१ तत्रप्यत्रैको हेतुस्तद् यथा तथा हि ॥ विविक्तः शक्तिमान् होली विविद्यश्चोक्तिमानहं । इत्यावयोर्महान् स्नेहः सततं ववृधे बुधाः ॥२२ येनाकारि मनोहारि···पुरन्दर ··· ··· श्रीलब्बिनाज्ञयं ॥ २३ सतां सन्तोष-पोषाय श्रेयसे चात्मनः श्रिये । सुखाय विमुखाज्ञाणां चेह स्नेहाय पश्यतां ॥२४ खण्डे भू + त + शो···२६

२७—तंसोभूत् **साधुदेहाख्यः** । वेदश्रिया स लेभे सुसुतं श्री**वल्लदेवाख्यं** ॥ स वल्लणश्रीरमणोपि सूनुं विचक्षणं लक्षणलक्षिताङ्गं । लेभे नृपं **लक्षण-पालदेवं** देवा··· ··· ···श्रिया श्रीमत्**क्षेमराज**ाभिधाङ्गजं । धर्म्मार्थ-कामसंसिद्धिसाधकं भाग्यतोऽलभत् ॥३ द्वितीयमद्वितीयोद्यत्प्रतापापापि—२७

२८—तद्विषं । + + भाग्धुराधूर्य्यवर्य्यं माधुर्य्यसागरं ॥४ नाम्ना देवरतिं सदो-दयमतं सन्मर्त्यलक्ष्मीपतिं धर्म्मध्यानगतिं निरस्तकुमतिं यो नित्यमेवाददे । यश्चक्रे जिन+र्च्चनेऽचलरतिं स ··· ··· साधुजनेवि···॥५ श्रेष्ठः **पद्म-श्रिया** श्रेष्ठं स्ववंशाम्भोजभास्करं सूनुं नयनसिंघाख्य लेभे रत्यामरावरं ? ॥६ नूरत्नं **रत्न**नामानम- २८

२९—यत्नाभ्यस्तपाटवं ? सुतमाप्य समस्तास्तकुमति स दिवं ययौ ॥७ अलभन्मल्ह-णदेवनयार**म्भाभय**ाङ्गजं चाथ । बालकलेशमिवालं कलया कलय··· ···पतिसङ्गनाथो··· दिल्हणदेव्याभिनन्दितनन्दनः । अथ **पद्मसिंह**नन्दन-मुख्यैरपि नन्दतादनिशं ॥९॥ प्रतिष्ठयाति गारिष्ठयं यन्नामादेव देहिनां । तस्याञ्जनन्दि- २९

३०—नो मूर्त्तेः कः प्रतिष्ठावदामदेत् ॥१ शुभसोमाह्वया सोसौ तथापि गुण-कीर्त्तिना। वर्द्धमानाभिधैः श्रीमद्वरपत्यादिभिर्बुधैः ॥२ श्रीपद्मनन्दि··· दमवसन्तमहात्मने मूर्त्योस्विधाय विधिनाभिमतां प्रतिष्ठामेतां हि नन्दन-सुनन्दत नन्दनाद्यैः ॥३ सङ्घेश्वरः कुवलये ऽमलहोलिचन्द्रः सङ्घेश ३०

३१—देवगतिवाप्यतिनेन्द्रमुद्रः। सन्मङ्गलैः सकलबन्धुजनो + वृन्दैर्वर्धत् सहर्षमुप-कारमुवाश्रुधारां ॥४ परोपकर्त्ता यो यद् यशा ··· ··· ··· श्रीमान् सतत-धर्म्मामृतवृष्टिं यो दानवारिणा। धत्ते स सत्यधर्म्मेशो वीयाद्धोलो नरे-त्तमः ॥२ मोदत् कुवलयं यस्य यशस्तिलकमुत्तमं। वि- ३१

३२—दीपे उपनं सोमः स वीयाद्धोलिशङ्करः ॥१ प्रातः कालीयरागदलदखिलत-मोगुरुपादपद्मद्वयपद्मोल्लासिलक्ष्म्यास्तरुण ··· ··· ··· चञ्चच्चान्द्रीयश्चा-क्षङ्क सकलकुवलये साधुतां होलिसाधोः ॥४ सम्प्रोतकान्वये गर्गगोत्रे हाटवुधाङ्गजाः वभू ३२

३३—हुः साधवः सीमाहरगङ्गामरानिधाः ॥५ तेषामाद्यात्मजस्तत्र वील्हो-नृपल्हिकाङ्गज हरश्रीप्रियोः सूनुस्तवो मूत्तल्हणः सुदृक् ॥२ ··· ··· ··· गनया ततः ॥३ तनूजनि वसन्तश्रीर्य्यो वोल्हणवर्द्धमानजन्मा मृगयन् माताचयितश्रील्हाल्हीचार्य्याकरो हिमाशुवः ॥३३

३४—प्रशस्तिमुद्यद्वृषभार्हचन्द्रसान्द्रार्थतीर्थो + + वा चकोरः। सतां मुदे सत्कवि-वर्द्धमानो विनं सनाराध्य विवर्द्धमानं ॥५ श्रीवर्द्धमानवदुधाननपद्मचञ्चत् पीयू ··· ··· धारां पीत्वा द्रुतां श्रुतियुगाञ्जलिभिस्त्वमीमां नन्दत्तु संतुमनसः शुचिचञ्चरीकाः ।६॥ शुभमस्तु सतां सदा ॥ ··· सुतश्चिरं वीयात्। रिपुनृ-सिन्दुसवा ··· ··· विभू ··· ··· पत्नाहि आलम्भः ॥१ श्रीवाल्हालम्भाधि-पुत्रतुजे रिपुभूमौलिमाणिक्ये। गर्वति गर्वनत्याने ग + + गोरीकुलं कुवलयेन्दिन् ··· ··· ···

सार

इस शिलालेखको मिस्टर एफ़० सी० ब्लैक (Mr. F. C. Black)

ने ललितपुर जिलेमें पाया था। यह देवगढ़के पुराने किलेके भग्नावशेषोंके ऊपर उगे हुए जङ्गलमें मिला था। मि० ब्लैकका अनुमान है कि यह शिलालेख किसी ध्वस्त जैन मन्दिरका है।

इस शिलाखण्डका माप ६ फीट २ इञ्च × २ फीट ६ इञ्च है तथा मोटाई ३ इञ्च है।

लेख की भाषा अत्यन्त शब्दाडम्बर सहित है।

लेखके करीबन मध्यमें (पंक्ति १५) में दिया हुआ काल अक्षरों और अङ्कों दोनोंमें खूब संभालके साथ दिया हुआ है। वह यह है ··· "गुरुवार, विक्रम सं० १४८१ के वैशाख मासकी पूर्णमासी तथा शालिवाहन (शक) सं० १३४६ के स्वाति नक्षत्र और सिंह लग्नके उदयमें।" राजाका नाम घोरी (गोरी) वंशका **शाह आलम्भक** दिया हुआ है, यह मालव या मालवाका राजा (शासक) था। श्री राजेन्द्रलाल मित्र, एल एल० डी, सी० आई० ई (Rajendralala Mitra, LL. D., C. I. E.) अपने नोट (पृ० ६७) में कहते हैं कि उन्हें इस नामके किसी राजाका पता नहीं है; लेकिन सुल्तान दिलावर गोरी (Ghori) के द्वारा संस्थापित मालवाके गोरी वंशमें द्वितीय सरदार **सुल्तान हुशंग गोरी** उर्फ़ **अलप् खाँ** था, जिसने माण्डुका शहर बसाया, राज्यकी राजधानी धारसे वहाँ हटायी, और १४०५ ई० से १४३२ ई० तक राज्य किया, और इसमें कोई संशयकी बात नहीं है कि इसी सरदारको संस्कृतमें **'आलम्भक'** लिखा है। उसकी नयी राजधानीका नाम शिलालेखमें **मण्डपपुर** दिया हुआ है।

लेखका विषय **होली** नामके जैन पुरोहित द्वारा **पद्मनन्दि** और **दमचसन्त**की दो मूर्त्तियोंका समर्पण है। यह समर्पण **शुभचन्द्र**की आज्ञासे किया गया था। उनके नाममें कोई शाही विशेषण नहीं लगा हुआ है।

लेखका प्रारम्भ वर्द्धमान नगरमें कान्तमें स्थापित होनेवाले वृषभ (वृषभदेव, प्रथम तीर्थंकर) की स्तुतिसे होता है। और इसका अन्तमें लेखकके अपने विषय

के संक्षिप्त वर्णनसे होता है। बीचमें कुछ नामोंकी वंशावली आती है, वह इस तरह है :—१. शांतदेव, २. उसका पुत्र बलदेव, ३. उसका पुत्र लक्ष्मीपालदेव, ४. उसका पुत्र क्षेमराज, ५ ?, ६. पद्मश्री, ७. रत्न, ८. रत्नाभय, १०. पद्मसिंह।

[JASB, LII, p. 67-80] t. & tr.

६१८

सरगूह;—संस्कृत और कन्नड़-भग्न।

[शक १३४६ = १४२४ ई०]

[सरगूह (सरगूह प्रदेश) में, गाँवके दक्षिणकी ओर पल्ल-बस्तिमें एक पाषाणपर]

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतरत्नप्रभा-
भास्वत्पादनखेन्दवे प्रवचनाम्भोजैकमार्तण्डवे ।
स्याद्वादाम्बुधिपूर्णचन्द्रवे भुवो भव्यैकचूडामणि-
स्तीर्थात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति **शक-वरुष १३४६** नेय शोभकृतु-संवत्सरद वैशाख शु १२ गु। प्रचण्ड-दोर्-दण्ड-मण्डली-मण्डन-मण्डलाग्र-खण्डितारांति-प्रकाण्ड महा-मण्डलेश्वर समुद्र-दायाधीश्वर श्री-मतु विजय-बुक्क-राय-राज्याभ्युदये श्रीमद्भगवद्र्हत्परमेश्वर श्रीपाद-पद्मोपजीवकरप्प श्रीमन्महाप्रधान **वयिचय-दण्डनायक** पादपद्मोपजीवी होय्सल-राज्याधिपति **नागण्ण-वोडेयर** ··· हम्मिनूर् ····· ताम-हार दण्डेश-रजाग्रगण्यर् अप्प श्रीमत्पण्डितदेव इवर शिष्यरु **वयि-नाड** महाप्रभु **मसणेयहळिय कम्मण-गावुडरु** तमगे स्वर्गावर्ग-निमित्तवागि वेळगुळद श्री-रं दनाथ-स्वामिगळ अङ्ग-रङ्ग-भोग-रक्षणार्थवागि तम्म ध्व-नाडोळगण **तोट-हळ्ळि** ये ग्राम १ आ चतुर्सीमेयोळगण केरे-गद्दे-वेदलु-तोट-तुडिके-कुळ-होन्बाळ आय-होन्नु ··· ··· होन्नु हन्दलु-मिक्क-होति मादार्-तेटे-शुङ्क-निधि-निक्षेप-सल पाषाण-मुताद सकल स्वाम्यद् कुळवनु रायर दण्डायकर ··· ··· बलि नागण्ण-

ओडेयर कयिन्दवु विडिसि **श्री-गुम्मटनाथ-स्वामि**गळिगे आ-चन्द्रार्क्क सलुवन्तागि **गुम्मटपुर**वेन्दु कोट्ट दान-शासन ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां ।
षष्टि-वर्ष-सहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥

अक्षयसुखमी-धर्म्ममनीक्षिसि रक्षिसुव पुण्य-पुरुषर्गक्कुम् ।
भक्षियिपातन सन्तानक्षयमायुःक्षयं कुलक्षयमक्कुम् ॥

(हमेशाकी तरह अन्तिम श्लोक)

[जिन शासनकी प्रशंसा ।

इस लेखमें विजयी वुक्करायने, स्वर्गप्राप्तिके लिये, वेळगुळ (श्रवण-बेल्गोल) के गुम्मटनाथ-स्वामीकी पूजा एवं सजावट के लिये **तोटहल्लि** गाँव भेंटमें दिया है। वुक्कराय भगवदर्हत्परमेश्वर का आराधक था। वयिनाड् मसनहल्लि कम्पनगवुडका अधिपति था। तोटहल्लि गाँवके साथ-साथ उसकी चारों तरफकी सीमाओंके अन्दरके तालाब, धान्य (चावल)-भूमि, सूखे खेत, बगीचा, भण्डार, आसामी, 'हो-न्नलि', आयका रुपया, ... , छप्परखाने, ... निम्न श्रेणीकी चीजोंपर कर, चुङ्गी, भूमि-भण्डार, निधि, रहन (निक्षेप), जल, पाषाण तथा पूरे स्वामित्व (मालिक) के जितने अधिकार हैं, वे सब दिये। इन चीजों को नागण्ण-ओडेयरके हाथ से दिलवाया तथा इन सबमें राजा तथा दण्णायककी भी आज्ञा ले ली, जिससे कि यह सब दान तबतक जारी रहे जबतक चन्द्र और सूर्य गुम्मट स्वामीकी रक्षा करते हैं। और गाँवका नाम **गुम्मटपुर** रख दिया। इस सबका उसने दान-पत्र (शासन) लिख दिया।]

[EC, IV, Heggadadevankote tl., No. 1]

६१६

वराङ्गना—संस्कृत तथा कन्नड़

काल-शक सं० १३४६ (A. D.1424)

(साठय वैनरा के Sub-Court में)

कन्नड़ लिपिमें संस्कृत और कन्नड़ भाषामें तीन ताम्र-पत्रोंपर जो एक अंगूठीके द्वारा जुड़े हुए हैं। इस अंगूठीपर एक मुहर लगी है जिसपर एक जैनमूर्ति है। दानदाता विजयनगरके राजा देवराय हैं। दान का काल शक सं० १३४६ (१४२४ ई०), क्रोधी संवत्सर है। इस दानपत्रके द्वारा वराङ्गनाका गाँव वराङ्गनेमिनाथके मन्दिरको दान किया गया था। राजा की वंशावली इस प्रकार दी हुई है :—

बुक्क महीपति
|
हरिहर
|
देवराय
|
विजय भूपति,
नारायणीदेवीसे विवाह किया
|
देवराय

* शासनकाल उस राजाके राज्यकालसे मिलता है जिसे बर्नेल Burnell ने (South Ind. Paleography, p. 55) देवराज, वीरदेव या वीरभूपति बताया है। लेकिन उसके वंशजका नाम उक्त लेखके के द्वारा दिये गये नामसे

भिन्न पड़ता है। (८२, ८७ अङ्कोंसे तुलना करो, जिनमें दी गई वंशावली इस दानपत्रगत वंशावलीसे मिलती-जुलती है।) लेखकी भूमिकामें कुन्तल देशकी राजधानी **विजयनगर** बतलाया गया है।

[R. Sewell, Archaeslojical Survey of Southern India (ASSI, II), p. 14. No 89, a.]

६२०

विजयनगर—संस्कृत।

[शक १३४८ = १४२६ ई०]

A. मन्दिर के महाद्वारके समीप बायीं ओर।

शुभमस्तु ॥ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥१॥

श्रीमद्यादवान्वयार्णवपूर्णचन्द्रस्य श्रीवुक्कपृथ्वीभुज [:] पुण्य [परिग]-क परिणतमूर्त्तेर्हरिहरमहाराजस्य पर्य्यायावतारादृद्वीराद्देवराजनरेश्वराद्देवराजादिव विजयश्रीवीरविजयनृपतिस्संजातस्तस्माद्रोहणाद्रेरिव महामाणिक्यकांडो नीतिप्रतापस्थिरीकृतसाम्राज्यसिंहासनः। राजाधिराजराजपरमेश्वरादिविरुदविख्यातो गुणनिधिरभिनवदेवराजमहाराजो निजाज्ञापरिपालितकर्णाटदेशमध्यवर्त्तिनः स्वावासभूतविजयनगरस्य क्रमुकपर्णापणवीथ्यामाचंद्रतारमात्मकीर्त्तिधर्म्मप्रवृत्तये। सकलज्ञानसाम्राज्यविराजमानस्य स्याद्वादविद्याप्रकटनपटीसः पार्श्वनाथस्यार्हतः शिलामयं चैत्यांलयमचीकरत् [। ।]

देशः कर्णाटनामाभूद्भावासः सर्व्वसंपदां।
विडंबयति यः स्वर्गं पुरोडाशाशनाश्रयं ॥ [२]

विजयनगरीति तस्मिन्न [ग] री नगरीति रम्यहर्म्यास्ते।
नगरि (री) पु नगरी यस्या न गरीयस्येव गुरुभिरैश्वर्य्यैः ॥ [३]

कनकोज्ज्वलमालरश्मिजालैः परिवांछुप्रतिबिंबितैर्नृपं या
वसुधेव बिभर्ति बाहवाद्रिवृतस्तोकमेरुका मणीता ॥
श्रीमानुद्दामधामा यदकुलतिलकस्सारसौंदर्यसीमा-
धीमान् रामाभिरामाकृतिरवनितले भाति भाग्याद्भुना [।]
विक्रांत्याक्रांतदिक्को विमतवरगिरिभ्रूंकलश्रेणिविक्कः (।)
क्षोण्यां जागर्त्ति वुक्कक्षितिगतिरगिरिभृच्छिर्गचंद्रवृत्तकः ॥ [४]

तत्प्राप्तान्नावतारः स्फुरति हरिहरक्ष्मापतिर्दक्षनागे
दाक्षिण्यस्फारयागक्रतुरयवि [धौ] विस्फुरत्कर्मधारः ।
भूदानस्वर्णदानानुकृतगगधुवृ (या 'भृ') त्स्निग्धनीवंधुमुत्-
स्फारकूष्मांडगावल्लिनिहितजयस्तंभविन्यस्तकीर्त्तिः ॥ [५]

तेनाजय्यरिराजतल्लजशिरस्तोमस्फुर -
च्छैलस्तम्भप्रलुप्तोपलदीपिकापरिणमत्पादाब्जनीराजनः ।
[विद्वत्कैरवमंडलीहिमकरो [वि] ख्यात वीर्याकर [:]
श्रेयान्वीरमास्वर्वृतवरः श्रीदेवराजेश्वरः ॥ [६]
तज्जन्मन्यनवद्यान्वो व [य] ति विजयते पुण्यचारित्रमान्यो
दानध्वस्तार्तियंदन्वो विजयनृपतिः खंडितारा [ति] सैन्यः ।
प्रत्युद्यज्जैत्रयात्रासमसमयसमुद्भूतकेतुप्रसून -
[स्रा] ग [द्वा] ग्योद्वहत्या प्रतिहतविमतोद्यत्प्रतापप्रतीपः ॥ [७]

B. महाद्वारके दक्षिण (दायीं) ओर ।

तस्मादस्मिञ्जितान्नावनि जगति यथा धर्मजेतुर्जयंतो
गत्वा श्रीदेवराजो विजयनृपतिवागशिरागयशांक. ।
कोपाटोपप्रवृत्तप्रबलरणमिलद्विप्रतीपक्षमाप -
[क्ष्मा]श्रेणीनमस्त्रिविवहकबलनव्यग्रखड्गोरगेंद्रः ॥ [८]
वीरश्री देवराजो विजयनृपतयस्तारसंजातमूर्त्ति -
र्धर्त्ता भूमेर्विभाति प्रणतगिपुततेरार्त्तिजातस्य हर्त्ता ।

क्रूरक्रोधेद्धयुद्धोद्धुरकरटिघटाकर्णशूर्पप्रसर्पद् -
वातव्रातोपघातप्रतिहतविमतादभ्रभृत्यभ्रसंघः ॥ [९ [

यद्धाटीघोरघोटीखुरदलितधरारेणुभिर्व्वीर्य्यगर्ह्ये -
द्धूमै [स्तो] मायमानैः प्रतिनृपतिगणस्त्रीदृशः साश्रुधाराः ।

प्रोद्यद्दर्प्पप्रभूतप्रतिभटसुभटास्फोटनाटोपजाग्रद् -
रोषोत्कर्षांधकारध्वमणिरुदयते देवराजेश्वरोऽयं ॥ [१०]

विश्वस्मिन्विजयक्षितीशजनुषः श्रीदेवराजेशितु-
र्ल्लक्ष्मीं कीर्त्तिसितांडजं कलयते शौर्य्याख्यसूर्य्योदयात् ।
आशा यत्र पलाशतामुपगताः स्वर्णाचलः कर्णिका
भृंगा दिग्द्विप मतंगजा जलधयो मारंदबिंदूत्करा: ॥ [११]

विख्याते विजयात्मजे वितरति श्रीदेवराजेश्वरे
कर्णस्यानि वर्णना विगलिता वाच्या दधीच्यादयः ।
मेघानामपि मोघता परिणता चिंता न चिंतामणे:
स्वल्पाः कल्पमहीरुहाः प्रथयते स्वर्णैचिकीनीचतां ॥ [१२]

सोयं कीर्त्तिसरस्वतीवसुमतीवाणीवधूभिस्समं
भव्यो द्रीव्यति देवराजनृपतिर्भूदेवदिव्यद्रुमः ।
यश्शौरिर्ब्बलियाचनाविरहितश्चंद्रः कलंकोज्झितः
शक्रस्सत्यमगोत्रभिद्दिनकरश्चासत्यथोल्लंघनः ॥ [१३]

मदनमनोहरमूर्त्तिः महिळाजनमानसारसंहरणः ।
राजाधिराजराजादिमपदपरमेश्वरादिनिजविरुदः ॥ [१४]

शक्तौ वुक्कमहीपालो दाने हरिहरेश्वरः ।
शौर्य्ये श्रीदेवराजेशो ज्ञाने विजयभूपतिः ॥ [१५]

सोयं श्रीदेवराजेशो विद्याविनयविश्रुतः ।
प्रागुक्तपुरवीथ्यंतः पर्ण्णपूगीफलार्पणे ॥ [१६]

९

शाकेब्दे प्रमिते याते वसुसिंधुगुणेंदुभिः ।
पराभवाब्दे कार्त्तिक्यां धर्म्मकीर्त्तिप्रवृत्तये ॥ [१७]

स्याद्वादमतसमर्त्थं [न] खद्धितदुर्व्वादिगर्व्ववाग्विततेः ।
अष्टादशदोषमहामदगजनिकुरुंबमहितमृगराजः ॥ [१८]

भव्यांभोरुहभानोर्विद्विद्वृंदवंद्यस्य ।
मुक्तिवधूप्रियभर्त्तुः श्रीपार्श्वजि[ने]श्वरस्य करुणाब्धेः ॥ [१९]

भव्यपरितोषहेतुं शिलामयं सेतुमखिलधर्म्मस्य ।
चैत्यागारमचीकरदावरणिद्युमणिहिमकरस्थैर्य्यम् ॥ [२०]

सारांश

विजयनगर प्राचीन समयमें जैनियोंकी राजधानी थी। शक १२७६ (सं० ११[illegible]२) से यादववंशी दि० जैन राजाओंका राज्य था। इस वंशकी वंशावली निम्न भांति है :—

१. यदुकुलके बुक्क।
२. उसके पुत्र, हरिहर (द्वितीय), 'महाराव'
३. उसके पुत्र, देवराज (प्रथम)
४. उसके पुत्र, विजय या वीर-विजय (पं० २)।
५. उसके पुत्र देवराज (द्वितीय), अभिनव-देवराज।

अन्तिम महाराजा देवराजने अपने पराक्रमके कृत्य और अपना नाम अजरामर करनेके लिये अपने राजमहलके पास 'पान-सुपारी-बाजार' (पर्ण-पूगीफलापण, श्लो० १६) नामक बगीचेमें एक चैत्यालय (चैत्यागार) बनवाया और मन्दिरमें श्रीपार्श्वनाथस्वामीकी प्रतिमा विराजमान की।

नोट :—इस वर्णित विजयनगरके प्रथम या यादव वंशावलिके क्रममें बुक्कके पिता और बड़े भाईके नाम तथा वे शक मितियाँ, जिनका लेखमें कोई संकेत

नहीं हैं और न यहाँ ही नीचे टिप्पणीमें दी गयी हैं," मि० फ्लीटके उसी वंशके कालक्रम-चक्रसे[1] उद्धृत की जाती हैं। वे इस प्रकार हैं :—

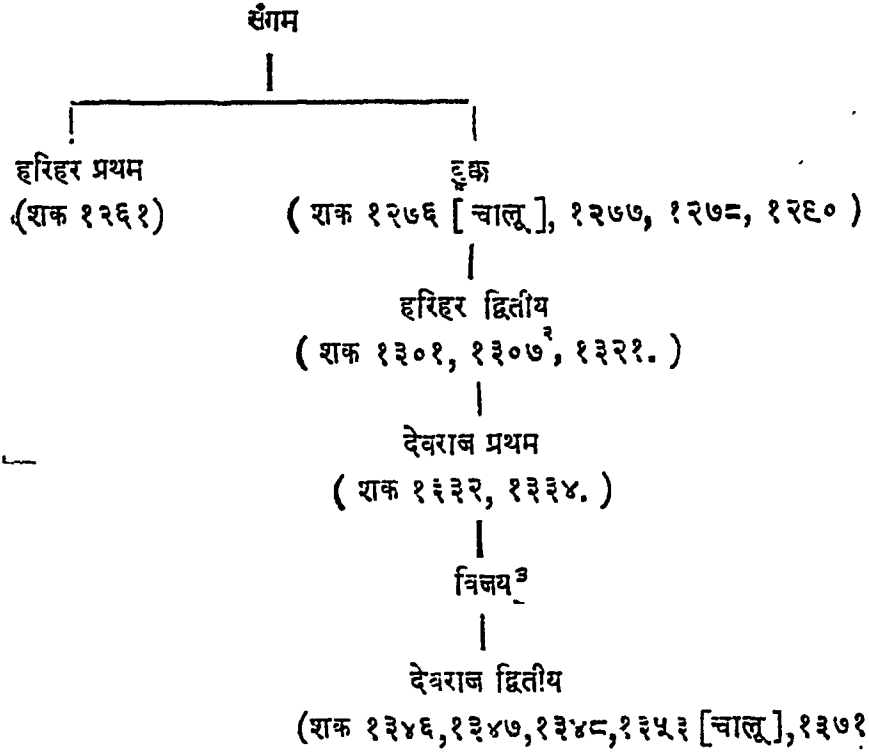

[South-Indian ins., Vol I, No I53 (p 160-167).]

---

1 Jour. Bo. Br. R. A. S. Vol XII. q. 339.

२ यह मिति शि० ले० नं० ५८१ की है।

३ मि० सोवैल (Sewell), Lists, Vol. I, p. 207, इस राजा के एक शिलालेख का उल्लेख करते हैं, जिसकी मिती शक १३४० (व्यतीत) कही जाती है।

६२१

वेगूर;—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न ।

[शक १३४६ = १४२७ ई०]

[वेगूरमें (वेगूर परगना), ध्वस्त जिन-वस्ति श्रवणप्पनदिन्नेमें पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति शक-वरुष १३४६ नेय पराभव-संवत्सरदलु श्री-मूल-संघद देशीय-गणद कोण्डकुन्दान्वयद पुस्तक-गच्छद ··· ··· ··· श्रीमतु प्र ··· ··· ···सिद्धान्ति-देव[र] शिष्यरप्प श्रीम शुभचन्द्रसिद्धान्तिदेवर गृहु चक्किमय्यन नागिय करियप्प-दण्डनायक, रप्प दण्ड ··· ··· ··· ··· मोरसु-नाडाळ्वन्दे काटि ··· ··· कलियूरग्रहार कोट्ट सर्व्वबाध-परिहारवागि चोक्किमय्य जिनालयं चन्द्रादित्यरुळ्ळनक सल्वन्तागि ··· ··· धर्मम नडसुवन्तागि ··· ··· ··· ··· (वे ही शापात्मक वाक्य) श्रीम ··· ··· ··· ··· ··· ण्डनायक चोक्कि-मय्य ··· ··· ··· ··· ··· दु निलिसिदनु कलु ··· ··· मडिसिकोट्ट ··· ···

[जिनशासनकी प्रशंसा ।

(उक्त मितिको), श्री-मूलसंघ, देशिय-गण, कोण्डकुन्दान्वय तथा पुस्तक-गच्छके प्र ··· ··· सिद्धान्ति-देवके शिष्य शुभचन्द्र-सिद्धान्ति-देवके गृहस्थ-शिष्य चक्किमय्यके (पुत्र) नागिय करियप्प-दण्डनायकने ··· ··· ··· ··· जब वे मोरसु-नाड् पर शासन कर रहे थे, कलियूर् अग्रहारके लिये दान (जो कि मिट गया है) किया, ताकि चोक्किमय्य जिनालय तबतक चालू रहे जबतक सूर्य और चन्द्रमा हैं । शाप]

[EC, IX, Bangalore tl., No. 82]

६२२

गिरनार—संस्कृत।

[सं० १४८५ = १४२८ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[Revised Lists ant. Bombay (ASI., XVI), p. 354-355, No 12, t. & tr.]

६२३

आनेवाळु—संस्कृत और कन्नड़।

[साधारण वर्ष १४३० ई० (लू० राहस)]

[आनेवाळु (वेट्टदपुर प्रदेश) में, बस्तिके रङ्ग-मण्डपमें भीतरके दाहिनी ओरकी दीवाल पर]

श्रीमतु **साधारण-संवत्सरद** माग-सुध १० यलु **आनेवाळ-चिक्कण-गौडर** मग्ळु **होन्नण-गौड**रु तम्म मग हुट्टिद **बोम्मण्ण-गोड**रिगे पुण्यवाग-वेकेन्दु कट्टिसिद **ब्रह्म-देव**रु पद्मावतिय बस्तिय धर्म्म-शासन श्री श्री।

[आनेवाळके चिक्कण-गौडके पुत्र होन्नण-गौडने अपनी चिरञ्जीव बोम्मण्ण-गौडकी पुण्यकी प्राप्तिके लिये ब्रह्मदेव और पद्मावतीकी बस्तिको बनवाया।]

[EC, IV, Hunsur tl., No. 62]

---

१. कंसके शक नागरी अक्षरोंमें हैं।

६२४

कारकल;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक सं० १३४३ = १४३२ ई०]

[गोम्मटेश्वर-मूर्तिस्तम्भके ठीक बाँयीं तरफ]

१. सूरितनु भैरवें-
२. द्रकुमार श्री पाण्ड्य
३. रायनिंदतिमु-
४. दर्दि । कारित गुंमट-
५. जिनपति चार श्री मू-
६. र्त्ति कुडुगे निमगमिम-
७. तमं ॥ श्री पाण्ड्यराय जय [॥]

[EI, VII, No. 14. D.]

[गोम्मटेश्वर-मूर्ति-स्तम्भके ठीक दाहिनी तरफ]

पंक्ति १. श्रीमद्देशीगणे
२. ते पनसोगे वलीश्वरः । ख्या -
३. योऽभूल्ललितकी-
४. र्त्याख्यस्तन्मुनीन्द्रोपदे-
५. शतः ॥ स्वस्ति श्रीशकभूपते-
६. स्त्रिशरवह्नी (न्) दौ विरोध्या-
७. दिकृद्वर्षे फाल्गुनसौ-
८. म्यवारधवलश्रीद्वा-
९. दशीसत् तिथौ । श्री सोमा-
१०. न्वय भैरवेन्द्रतनु-

११. जश्री वीरपाण्ड्येशिना नि—
[१२. र्माप्य प्रतिमाऽत्र बा-
१३. हुबलिनो जीयात् प्र-
१४. तिष्ठापिता ॥ शकवर्ष
१५. १३५३ श्री पाण्ड्यराय ॥

[शक राजाके विरोध्यादिकृत् वर्ष, अर्थात् १३५३वें वर्षके फाल्गुन शुक्ला १२, बुधवारके दिन सोम वंशके भैरवेन्द्रके पुत्र श्री वीर पाण्ड्येशी या श्री पाण्ड्यरायने यहाँ (कारकलमें) बाहुबलकी प्रतिमा बनाकर प्रतिष्ठित कराई। वह प्रतिमा जयवन्त रहे। यह कार्य उन्होंने देशीगणके पनसोगे शाखाकी परम्परामें होनेवाले ललित कीर्त्ति मुनोन्द्रके उपदेश से किया।]

[EI, VII, No. 14, C. IA, II, q. 353-354]

६२५

श्रवणवेल्गोला;—संस्कृत।

[शक १३५५ = १४३२ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० मा०]

६२६

आनेवाळु;—कन्नड़।

[काल—वर्ष प्रमादीच = १४३३A. D.]

[आनेवाळुमें ध्वस्त वस्तिकी छोटी सी जैन-प्रतिमाके पृष्ठपर]

प्रमादीच—संवत्सरद फाल्गुन-सु १०मी भानुवार अनन्तन प्रतिमे [अनन्तकी प्रतिमा]

[EC, IV, Hunsur tl., No. 60, t & tr.]

६२७

कार्कल—कन्नड़।

[शक सं० १३५८=१४३६ ई०]

[गोम्मटेश्वर मूर्ति स्तम्भके सामनेके ब्रह्मदेव स्तम्भ पर]

१. [illegible] शकनृपन १३५८ राक्षससंवत्स[द फ]ाल्गुन शु
२. १२ लु ॥ जिनदत्तान्वय भैरवतनय श्री [वी]रपां-
३. ड्यनृपतिगे वरमं । मनमोलुदीय [लु] नेल [सि]द
४. विनमक्कं ब्रह्मनीगे निमगमि [मत] मं ॥

अनुवाद—शक नृपके राक्षस नामके १३५८ वें वर्षमें फाल्गुन शुक्ला १२ के दिन, जिनदत्तके वंशमें होनेवाले भैरवके पुत्र **श्री वीरपाण्ड्य** नृपतिकी [illegible] इच्छाको पूर्ण करने के लिये यहाँपर प्रतिष्ठापित, जिनभक्त ब्रह्म [की प्रतिमा] तुम्हारी [प्रत्येक] मनोकामनाको पूरा करे।

[EI, VII, No., 14 E.]

६२८

देवगढ़;—संस्कृत।

[सं० १४९३ तथा शक १३५८=१४३६ ई०]

(पंक्ति ५)—संवत्सु १४९३ शाके १३५८ वर्षे वैशाष (ख) -वि (व) दि ५ गुरौ (रौ) दिने मूल-नक्षत्रे ॥

वृहस्पतिवार, ५ अप्रैल १४३६ ई०

शक १३५८—देवगढ़ जैन शिलालेख।

[INI, Nos. 287 & 375.]

६२९

पर्वत आबू—संस्कृत ।

[सं० १४९४ = १४३७ ई०]

श्वेताम्बर सम्प्रदाय का लेख ।

[Asiat. Res., XVI, p. 313, No. XXV, a.]

६३०

नागदा—संस्कृत ।

[सं० १९१४=१४३८ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[Bhavnagar inscriptions, p. 112-113, t. & tr.]

६३१

गिरनार—संस्कृत ।

[सं० १४९६ = १४३९ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[Revised Lists ant. rem. Bombay (ASI, XVI), p. 355, No. 13, a, t. & tr.]

६३२

राणपुर (जोधपुर जिला) संस्कृत ।

[सं० १४९६ = १४४० ई०]

[Bhavnagar inscriptions, p. 113-117, t. & tr.]

६३३

ग्वालियर;—प्राकृत ।

[सं० १३१७=१२६० ई०]

श्री आदिनाथाय नमः ॥ **संवत् १४८७ वर्षे** वैशाख ··· ७ शुक्रे पुनर्वसु नक्षत्र श्रीगोपालचलदुर्गे महाराजाधिराजराजा श्रीडुंग ··· [र सिंहराज्य] संवर्त्तमानो श्रीकाष्ठासंघे **मायू[थु]रान्वये पुष्करगणभट्टारक श्रीगु(गु)णकीर्त्तिदेव** तत्पदे यत्यः (शः) **कीर्त्तिदेवा** प्रतिष्ठाचार्य **श्रीपंडितरघू** (घू) तेषं । आम्नाये (म्नाये) अग्रोतवंशे मोद्गलगोत्रा सा ॥ धुरात्मा तस्य पुत्र साधु**भोपा** तस्य भार्या **नान्हो** । पुत्र प्रथम साधु **क्षेमसी** द्वितीय साधु**महाराजा** तृतीय **अ[ज]** चतुर्थ **धनपाल** पञ्चम साधु **पाल्का** । साधुक्षेमसी भार्या **नोरादेवी** पुत्र—ज्येष्ठपुत्र **मधायि** पति-कौल ॥ म—भार्या च ज्येष्ठा **सरसुती** पुत्र **मल्लिदास** द्वितीय भार्या **साध्वीसरा** पुत्र **चन्द्रपाल**। क्षेमसीपुत्र द्वितीय साधु **श्रीभोजराजा** भार्या देवस्य पुत्र **पूर्णपाल** ॥ एतेषां मध्ये श्री ॥ त्यादिविनतंत्राधिपति **काला** तदा प्रणमति ॥

अनुवाद—आदिनाथको नमस्कार । सं० १४८७ वे वैशाख सुदी ७, जब पुनर्वसु नक्षत्र उदित हो रहा था, और जिस समय महाराजाधिराज डूंगरेन्द्रदेव गोपाचल (आधुनिक ग्वालियर) के किलेमें राज्य कर रहे थे । तब काष्ठासंघके मयूर अन्वयके, पुष्कर गणके भट्टारक **गुणकीर्त्तिदेव**के बाद उनके पट्टाधीश **कीर्त्तिदेव** हुए । इसके बाद लेखमें पट्टाधीशके पदपर आसीन होनेवालोंमें प्रतिष्ठाचार्य पण्डित (पुरोहित) श्री**रघू**, तत्पश्चात् पण्डित श्री**भाया**के नाम आये हैं । श्री मायाके पुत्र 'साधु' भोपा, उसकी पत्नी नन्हीं थी । इसके बाद उनके पुत्र और पुत्रों की पत्नियों तथा उनके पुत्रोंके नाम आये हैं । अन्तमें

भायदेवके पुत्रका नाम पूर्णपाल बतलाया है। इनमेंसे आदिजिनसंघाधिपति काला[1] सदा प्रणाम करते हैं।

[JASB, XXXI, p. 404, a. ; p. 422-423, t. & tr.]

६३४

पर्वत आबू;—संस्कृत।

[सं० १४६७=१४४० ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[Asiat. Res. XVI, p. 313, No XXVII, a.]

६३५

श्रवणबेल्गोला;—संस्कृत।

[वर्ष क्षय=शक १३६८=१४४६ ई० (कीलहौर्न)]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

६३६

म्यूनिच;—संस्कृत।

[सं० १५०३ = १४४६ ई०]

[J. Klatt, IA, XXIII, p. 183, t. & tr.]

१—उपर्युक्त अनुवादकी शुद्धता बाबू राजेन्द्रलाल मित्रकी दृष्टिमें सन्देहास्पद है। 'काला' नाम उन्हें अशुद्ध मालूम पड़ता है। यह अनुवाद खाकी काम चलाऊ है।

६३७

माण्ट निडुगल्लु;—कन्नड ।

[बिना काल-निर्देशका, पर लगभग १४५० ई० ? (ल्यू. राइस) ।]

[निडुगल्लु-वेट्टपर मळे-मल्लिकाल्लुन मन्दिरके पासके पाषाणपर]

श्री-मूल-संघद वृषभसेन-भट्टारक-देवर गृहु वैश्यर
रामि-सेट्टियर मग विमी-सेट्टिय हेण्डति चन्द्रवेय निधिवि ॥

[मूलसंघके वृषभसेन-भट्टारकके गृहस्थ-शिष्य, वैश्य रामि-सेट्टिके पुत्र विमी-सेट्टिकी पत्नी चन्द्रवेका स्मारक यह है ।]

[E C, XII, Pavugada tl., No 56]

६३८

पर्वत आबू;—संस्कृत ।

[सं० १५०१=१४५२ ई०] श्वेताम्बर लेख ।

[Asiat. Res., XVI, p. 311, No XXI, a.]

६३९

टोंक;—संस्कृत (देवनागरी लिपि)

[काल—सं० १५१०=१४५३ ई०]

टोंक (राजपूताना) के नवाबके महलके पास चनवरी सन् १९०३ ई० में खुदाई होनेसे अचानक ११ जैन प्रतिमाएँ निकलीं । ये प्रतिमाएँ भिन्न-भिन्न ११ तीर्थङ्करों की हैं, जो पद्मासन-स्थित हैं, गोदके ऊपर जिनके बाएँ हाथके ऊपर दाहिना हाथ है और दाहिने हाथकी हथेलीका मुख ऊपरकी तरफ है । ये सब प्रतिमाएँ समानाकृति हैं, सिर्फ पार्श्वनाथ और सुपार्श्वनाथकी प्रतिमाके ऊपर सर्पका फण है तथा और प्रतिमाओंपर उनके भिन्न-भिन्न लाञ्छन (चिह्न)

हैं। वे सफेद संगमरमरके पत्थर की बनी हुई हैं और अच्छी तरह सुरक्षित दशामें हैं। उनकी बनावट कुछ भद्दी है। तीर्थङ्करोंके नाम तो नहीं प्रकट किये गये हैं, पर चिह्नोंसे उन्हें मालूम किया जा सकता है। वे निम्नलिखित भाँति हैं :—

१. **पार्श्वनाथ** (२८ इञ्च × २३ इञ्च) सप्तफणी सर्प सिर के ऊपर है, और सर्प चिह्न के तौरपर है।

२. **सुपार्श्वनाथ** (करीब २२ × १८ इञ्च). पञ्च-फणी सर्प सिर के ऊपर। स्वस्तिक चिह्न।

३. **महावीरनाथ** (करीब २२ × १८ इञ्च), सिंह का चिह्न है।

४. **नेमिनाथ** (करीब १६ × १५ इञ्च) शंख का चिह्न है।

५. **अजितनाथ** (करीब २१ × १७ इञ्च), हाथी का चिह्न है।

६. **मल्लिनाथ** (करीब २१ × १७ इञ्च) कलश का चिह्न।

७. **श्रेयान्सप्रभु** (करीब २१ × १७ इञ्च) गेंडे का चिह्न है।

८. **सुविधिनाथ** (करीब २१ × १७ इञ्च), मछली का चिह्न।

९. **सुमतिनाथ** (करीब १८ × १७ इञ्च) चकवे का चिह्न।

१०. पद्मप्रभ (करीब १६ × १३ इञ्च), कमल का चिह्न।

११. शान्तिनाथ (करीब १६ × १३ इञ्च), कच्छप (कछुआ) का चिह्न।

इन प्रतिमाओं के नीचे के पाषाणपर लेख है जो कि प्रायः मिलते-जुलते हैं और देवनागरी लिपि में भद्दे रूप से अशुद्ध **संस्कृतमें** लिखे हुए हैं। सबका काल **संवत् १५१०, माघ शुक्ला दशमी**, तदनुसार **रविवार १९ फरवरी, १४५३ ई०** है।

ये सब प्रतिमाएँ जैनोंके दिगम्बर सम्प्रदाय की हैं। यह इस बात से प्रमाणित होता है कि सब के ऊपर 'मूलसंघ' लिखा हुआ है और सब नग्न हैं। लेखों के अनुसार, इन सबकी प्रतिष्ठा **लापू** नाम के एक धनिक, तथा उसके पुत्र **साल्हा** और **पाल्हा** और उनकी क्रमशः **लद्धिमणी, सुहागिनी** (**सुगनश्री** भी कहते

थे) और गौरी नामक स्त्रियों के द्वारा हुई थी। ये लोग अपने को **जिनचन्द्र** का भक्त कहते थे और दिगम्बरान्नायी **खण्डेलवाल** जाति तथा **काकलीवाल** गोत्र के थे।

पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख बताता है कि ये पाषाण-लेख **लुक्करदेव** के राज्यकाल में उत्कीर्ण किए गए थे। ये लुक्करदेव उस समय के स्थानीय शासक रहे होंगे लेकिन इतिहास में उनका कोई पता नहीं चलता। उन प्रतिमाओं को संभवतः किसी मूर्तिभञ्जक द्वारा आपत्काल प्राप्त होनेपर किसीने छिपाया होगा।

श्रीमान् नवाब महोदय ने इन ११ प्रतिमाओं को, अजमेर के गवर्नमेंट म्यूजियम के बन जाने पर उसे उन्हें टोंक स्टेट के उपहार के रूपमें भेंट देने का संकल्प प्रकट किया था।

[Hiranand Shastri, A S P & U P annual Report 1903–1904 p. 61–62, a.]

६५०

ग्वालियर;—प्राकृत।

[सं० १५१०=१४५३ ई०]

(१) सिद्धि **संवत् १५१०** वर्षे माघसुदि ८ (अ)ष्टमै (म्यां) श्री **गोपगिरौ** महाराजाधिराज-

(२) जा श्री **डूंगरेन्द्रदेव**राज्यप्र [वर्त्तमाने] श्रीकाष्ठासंघे माथु (थु)-रान्वये भट्टारक श्री

(३) **हेमकीर्त्तिदेव**तत्पदे श्री **हेमकीर्त्तिदेव**तत्पदे श्री **विमलकीर्त्ति-देवाः** ... ...

(४) हिता ... ... सदाम्नाये अग्रोतवंशे गर्गगोत्रे सा... ... त

(५) योः पुत्रा ये दशाय श्रीवंद भार्या मालाही तस्य प्रवसापेयार रा... चीसा... ...डु

(६) तीयसा० हरिवंदभार्या जसोधर हितये ... ... णसीसा० सघासा० तृती

(७) यहेमा चतुर्थसा० रतीपुत्रसा० सह सापं ... मु सा० धंसा० सल्हाकु अेसेवं ए

(८) तेषां मध्ये साधु श्रीचंद्रपुत्र शेषा तथा हरिचंद्रदेवकी भार्या ... ...

(९) दीप्रमुखा नित्यं श्रीमहावीरप्रतिमा प्रतिष्ठाप्य भूरिभक्त्या प्रणमंति ॥

(१०) अङ्गुष्ठमात्रां प्रतिमां जिनस्य भक्त्या प्रतिष्ठापयतो महत्या। फलं वलं राज्य

(११) मनन्तसौख्यं भवस्य विच्छित्तिरथो विमुक्तिः ॥ शुभं भवतु सर्वेषां ॥

अनुवाद—संवत् १५१०की माघ सुदि ८मी को महाराजाधिराज राजा श्री **डूंगरेन्द्रदेव**के शासनकालमें काष्ठासंघके माथुर अन्वयके भट्टारक श्री **हेमकीर्त्तिदेव** हुए। उनके बाद **हेमकीर्त्तिदेव** तत्पश्चात् अ (वि)**मलकीर्त्तिदेव** हुए। (शेष अपठनीय है।)

[JASB, XXXI, p. 404, a.; p. 423–424, t. & tr.]

६४१

भारङ्गी;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[वर्ष धातु = १४५६ ई० (लू० राहस)]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्।
निरुपम-धातु-वत्सरद माधव-मासद शुद्ध-सप्तमी -।
रवरकरवारदोळ् दिनकरोदयवागद मन्ने सन्द सच् -।
चरिते जिनेन्द्र-रुन्द्र-पद-पद्मननोप्पिरे चित्त-वृत्तियोळ्।
... रुयिसि नाडे भागिरथ ताळ्दिदळायत-स्वर्ग-सौख्यमं ॥

अमवं श्री-वीतरागं तनगे निवदोळं दैवमा-योगि ···।
विनु सिद्धान्ताख्यराराध्यरु जिन-मत-वाराशि-संपूर्ण-चन्द्रं।
प्रभु बुळ्ळप्पं पितं मातुर-गुणवति मल्लब्बे तायेन्दोडी-शद्-
विम नोन्तर् ··· अरिविरे धरणी-चक्रदो ··· ··· ॥
सुखमय ··· ··· ··· भागीर् [थ] थि निरुपम-सौख्य यिप्प ··· प्रीतियं
··· ··· ··· ··· ··· भद्रमस्तु ··· ···

[भागीरथीका, जैन विधि-पूर्वक, मृत्युका स्मारक यह है। उसके पिताका नाम प्रभु बुल्लप्प, और माँका मल्लब्बे था]

[EC, VIII, Sorab tl., No. 331]

६४२

चित्तौड़;—संस्कृत।

[सं० १५१४=१४५७ ई०]

[एक चिकनी चट्टानपर जिसके बीचमें चरण-चिह्न हैं और जिसके अन्तमें गणेश और भैरवकी मूर्त्तियाँ हैं।]

(१) ॥ संवत् ५१४ (१५१४) वर्षे मार्ग्र (र्ग)-शुदि ३ श्री-भर्तृपुरीय-
गच्छे श्री-चूडामणि-भर्तृपुर-महा-दुर्गे श्री-गुहिलपुत्रवि-
(२) हार-श्री-बहादेव-आदिजिन-वामाङ्के दक्षिणाभिमुखद्वारगुफा (म्फा)-
यामेकविंशति-देवीनाम् चतुर्णाम् ··· पा-
(३) लानाम् चतुर्णाम् विनायकानां च पादुका-घटित-सहकार-सहिता च श्री-
देवी-चित्तोदरि-मूर्ति (र्तिः) स्था ··· (पिता ?)
(४)-श्री-भर्तृगच्छीय-महा-प्रभावक-श्री-आम्रदेव-सूरिभिः ॥ अत्यां मूर्त्तौ सा०
सोमा-सु०-सा०-हरपालेन मातृ-लोक-
(५) श्रेयसे = पुण्योपार्जना व्यधीयत ॥

[लेख स्पष्ट है। इसके अन्दर आये हुए 'भर्तृपुर' से भरतपुरका संकेत होता है, क्योंकि यह भी एक 'महादुर्ग' कहा जाता है। चट्टानके मध्यमें चरणचिह्नोंके नीचे "श्री-बाशि (खि) णि" अक्षर खुदे हुए हैं।]

[ASWI, Progress Report 1903-1904, p. 59, t.]

६४३

बवागञ्ज (माजवा);—**संस्कृत**।

[सं० १५१६=१४५९ ई०]

मन्दिरके दरवाजे पर।

स्वस्ति **श्रीसंवत् १५१६ वर्ष** मार्गशीर्षे वदि ६ रवौ सूरसेन-**मेहमुन्द**-राज्यश्रीकाष्ठासङ्घे **माथुर**गच्छे (च्छे) **पुष्कर**मणे भट्टारकः श्री**श्रीहेमकीर्त्ति-देवः** व्रतनियमस्वाध्यायानुष्ठान-तपोपशमैकनियमभट्टारक **श्रीहेमकीर्त्तिदेव**सच्छिष्य महावादवादीश्वर **रायवादी**पितामहसकलविद्वज्जनचक्रवर्त्तिनलः **श्रीकमल-कीर्त्तिदेवा** सच्छिष्यजिनसिद्धान्तपाठपयोधिनायकान्तरोपासीन मण्डलाचार्य **श्री-रत्नकीर्त्तिना** जीर्णोद्धारः कृतः बृहच्चैत्यालयपार्श्वे दशजिनवशतिकाहा कारोपीता भट्टेश्वर द्वितीयसं डालुभार्य्याखेतु द्वि (०) ना (०) पद्मिनी खेतुपुत्रसं० वाढासं० पारस एतैः इन्द्रजितः प्रतिमां प्रतिष्ठाप्य नित्यमर्चयन्तो पूजयन्तो वा शुभं तावच्छ्रीसङ्घस्य।

मन्दिरके उत्तरकी ओर।

संवत् १५१६ वर्षे शिल्पनागसुतरसालाशिलपूडाला सूत्रशाला जीर्णा यतः।

मन्दिरके पश्चिमकी ओर।

आचार्यश्री**रत्नकीर्त्ति**पंडितपाहु।

मन्दिरके दरवाजेके स्तम्भ पर।

योगीदंगमयाउसवोतराउल ।
प्रतिमाके चरणपरसे ।
कण्ठरनाथसाधु
चतुर विहतिहिलि
साकसाला हद प्रणति
लेख स्पष्ट है ।

[JASB XVIII, p. 951-953, No 3 t. & tr.]

६४४

पर्वत आबू—संस्कृत ।

[सं० १२१८ = १९६१ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[Asiat. Res., XVI, p. 298-299, Nos XIII & XIV, a.]

६४५

गिरनार—संस्कृत ।

[सं० १५२२=१४६५ ई०]

[नेमिनाथ मन्दिरके दक्षिणकी तरफके प्रवेशद्वारके प्राङ्गणमें टूटे हुए खम्भेकी पश्चिमी दीवालपर]

संवत् १५२२ श्री मूलसंघे श्री हर्षकीर्त्ति श्री पद्मकीर्त्ति भुवनकीर्त्ति ... ...

अनुवादः—सं० १५२२, श्री मूलसंघके श्री हर्षकीर्ति, पद्मकीर्ति, भुवनकीर्ति, ...

[ASI, XVI P. 355, No 13, b.]

६४६

भारङ्गी;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[वर्ष पार्थिव = १४६६ ई० (लू. गड्डस)]

[भारङ्गीमें, कल्लेश्वर-वस्तिके दूसरे पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥
स्वस्ति श्रीमति **मूल-संघ**-तिलके श्री-**नन्दि-संघोद्**भवे
स्वच्चे (च्छे) **पुस्तक-गच्छ**-शालिनि शुभे **देशी-गणे** यस्सुखी।
स्याद्वादारि-नगाशनिर्गुण-मणि-श्रेणी-महीयः-खनिः
श्रीमानेष चयस्यलं श्रुति-मुनिः कैवल्य-जन्मावनिः॥
शिष्यस्तस्य मुनेस्तिरस्कृत-तमस्तोमः समुद्यंश्रिरात्
स्याद्वादचलतश्चिदम्बरतले देदीप्यमानस्सदा।
दीनं विश्वमिदं कृपामृतभरैरुज्जीवयन् पावनः
चिह्नातीत-कलानिधिर्विजयते श्री-**देवचन्द्रो**मुनिः॥
तच्छिष्योऽभयचन्द्र-रुद्र-करुणा-सौधोल्लसन्निर्झरी-
सम्पूर्णामल-मानसः कलि-युगे श्रेयांश्च **गोपीपतेः**।
सूनुस्सूनृत-धर्म्म-कर्म्मणि रतः श्री-जैन-चूड़ामणिर्
दूरं **बुल्लप** इत्ययं प्रभुरय ख्यात्यात्मना शोभते।

यिन्तु नेगळ्तेवेत्ता-विभुविर्प्प ग्रामवाबुदेन्दडे॥

सारं **गुत्तिगे** सन्दु वर्प्प **पदिनेण्टुं-कम्पणं** भूमियोळ्।
सारं **नागरखण्ड**मन्तदोरोळिर्प्पं-ग्राम-सन्दोहदोळ्।
भारङ्गी-पुरमन्न-पण्ड-लसितं चैत्यालयानीक-वि-।
स्तारोद्यत्-कलशांशु-शोभित·····सारं जयत्-संस्तुतम्॥

आ-पुरमं भू-कान्ता- ।
नूपुरमं नूल-रत्नमय-गोपुरमम् ।
भूपति-सभाभिरामम् ।
गोप-प्रभु-सुनु-वुळ्ळपार्य पोरेवम् ॥
कलियं माङ्किरिसित्त तन्न चरितं कल्यावनीजातदोळ् ।
चलमं माडिदुदत्युदारते महा-धैर्य्य सुरोर्व्वीन्द्रदोळ् ।
मलेतत्तेन्दोडे वुळ्ळप-प्रभुगे भव्याचारदिं चागदिम् ।
विलसद्-धैर्य्यदिनी-धरातळदोळन्यर् प्पोललेनार्प्परे ॥

कं ॥ चागदे धन-रासियनुरु- ।
भोगदे तन्नायुरासियं समेयिसिदम् ।
त्यागं श्रेयांसनोळुरु- ।
योगं सुकुमारनल्लि समनेम्बिनेगम् ॥

वृ ॥ यिनितुं चोद्यमे राय-राज-गुरु-लोकाचार्य्यरास्थान-रज्- ।
जन-विद्विज्जन-चक्रिवर्त्तिगळनिं दुर्व्वादि-मातङ्ग-भे- ।
दन-पञ्चाननरोल्दु बोधिसिदवर् सिद्धान्त-योगीन्द्ररेन्द् ।
एने वुळ्ळप्पनोळुद्ध-कीर्त्तियुमनूनाचारमुं धर्म्ममुम् ॥
चिरमल्लितनुवाप्त-पूजेयोदवं सत्-सेवेयं भक्तियिम् ।
गुरुगळ्गम्मिगे माळ्परप्परो पेरर् मेणागरो माळ्पेनाम् ।
चिरमं धर्म्ममतेन्दु कोट्टदके भू-दानङ्गळं दीर्घ्यको- ।
त्करमं क्रट्टिसि वुळ्ळप-प्रभुवदेम् धर्म्मक्कडर्प्पादनो ॥

कं ॥ जिन-पद-युगदोळ् जिन-मुनि- ।
जन-सेवेयोळुचित-दानदोळ् सलियिसिदम् ।
मनमं तनुवं धनमम् ।
विनय-परं वुल्लपार्य्यनचलित-धैर्य्यम् ॥

इन्तु सुखदिनिर्प्पन्नेगं समाधि-कालमत्यासन्नमागे ।।

वृ।। जिन-पतियं जिनेश्वरन नाममना-जिन-नाम-पङ्क्तियेयम् ।
मनदोळमास्य-पङ्कजदोळं कर-शाखेयोळं समाधि सञ्-।
ननियिप कालदोळ् निलिसि सर्व्व-निवृत्तिगे सन्दु मुक्ति-सा-
धन-मननैदिदं त्रिदश-धाममनी-क्रमदिन्दे बुळ्ळपम् ।।

व ।। अन्तु पञ्च-परमेष्ठिगळ ध्यानदिं तां पडेद समाधि-कालद जय-क्रम मेन्तेन्दोडे ।।

अदु मूवत्तैदरिन्दं क्रमदोळे पदिनारागि मत्तारोळ् सन्-।
दुदु वन्दत्तैदरोळ् नाल्करोळेराडरोळिर्द्दोन्दरोळ् विन्दु नाका-
स्पदमं सैतित्तुदात्त-सत्त्व-जय-विलसद्-व्रर्ण्ण-सन्दोहमीयन्-।
दिदिना-जिह्वाग्रदोळ् सन्मतियिनेनलदेम् धन्यनो बुळ्ळपार्य्यम् ।।
सरिगाणेम् धरेयल्लि चागिगलोळेन्नोळ् पोल्के-वप्पन्नरम् ।
सुर-भूजं समनप्पोडप्पुददनां नोळ्पेम् समन्तेम्बवोल् ।
धरेयोळ् पोम्-मले सोर्द्द पाङ्गिनोळे चागं गेय्दु सोपानमाग्।
इरे धर्म्मं त्रिदिवक्के बुळ्ळपनमर्त्यावासमं पोर्द्दिदम् ।।
मान्यो राज-सभासु बुळळप-विभुर्य्यः पार्थिवे वत्सरे
मासे भाद्रपदे त्रयोदशि-तिथौ पत्तेऽर्क्कवारे सिते ।
श्रीमत्पञ्च-नमस्क्रियामय-सुधां स्वैरं पिबन् श्री-गुरून्
ध्यांस् ••• ••• समाधि-विधिना स प्राप दिव्यं श्रियम् ।।
आ-कल्पं भुवि बुळ्ळ [प]-प्रभु-यशस् स्थाय्यस्तु सं ••• •••
••• ••• ••• इत्यचीकरदिमामस्मै निपद्यां कलाम् ।।
तत्प्रेमात्म ••• ••• नाथ-परमाराध्य ••• ••• ••• ।
••• ••• ••• चन्द्र-सूरिरनिशं जीयादिदं शासनम् ।।
वर्ष-सहस्रदोळ् ••• दश-स ••• ••• ••• ••• ••• ।
वर्षमे पार्थिवं पुदिये भाद्रपदं वर-मासदोन्दु •• ••• ।

... ... सित-प ... ... प्रभा- ।
कर-वर-चारभागे विभु-हुळ्ळनैदिद् ... ... ॥

[जिन शासनकी प्रशंसा । मूल-संघ, नन्दि-संघ, पुस्तक-गच्छ, और देशि-गणके श्रुत-मुनिकी प्रशंसा । उनके शिष्य देवचन्द्र मुनि थे । उनके शिष्य गोपिपतिके पुत्र हुळ्ळर थे, जिन्हें अभयचन्द्रकी कृपासे यह अवसर प्राप्त हुआ था । जिस गाँवका वह अधीश था, वह नागरखण्ड था, जो १८ कम्पण देशके गुत्तिका गाँव था । इस नागरखण्डके गाँवोंमें एक गाँव मारङ्गि था, जिसमें उत्तमोत्तम चैत्यालय थे । हुल्लप की प्रशंसा, जिसने भूमिदान किया था और ताळाब (दीग्घिका) बनवाये थे । अपना अन्त नजदीक जानकर, उसने सभी नियत विधियोंको किया, और समाधि-की विधिसे (उक्त मितिको), स्वर्गको गया ।]

[EC, VIII Sorab tl, No 330]

६४७

पर्वत आबू;—संस्कृत ।

[सं० १२२१=११६८ ई०] श्वेताम्बर लेख ।

[Asiat. Res. XVI, p. 301, No. XVII, a.]

६४८

पर्वत आबू;—संस्कृत ।

[सं० १५२६ = ११७२ ई०] श्वेताम्बर लेख ।

[Asiat. Res. XVI, p. 299, No. XV, a.]

६४९

यिडुवणि;—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक १३९५ = १४७३ ई०]

[यिडुवणिमें, पार्श्वनाथ वस्तिके पाषाणपर]

श्री-**पार्श्व-तीर्थेश्वर**राय नमः निर्विघ्नमस्तु ॥

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

श्री-पञ्च-परमेष्ठिभ्यो नमः ।

नमस्तुङ्ग-इत्यादि ॥

स्वस्ति समधिगत-भु[व]नाश्रय श्री-पृथ्वी-मनो-वल्लभ महा-राजाधिराज राज-परमेश्वरनीश्वर-कुल-तिलक श्रीमन्महा-**विरूपाक्ष-महारायरु** राज्यवनु सुखसंकथाविनोददिं प्रतिपालिसुत्तमिद्दल्लि श्रीमन्महा-प्रभु **मलेय-हुलि-मार्त्ताण्ड निडिगेय**ण्ड-दण्डिगेय मनेयर गण्ड श्रीमन्महा-प्रभु **अयिसूर मुन्दुवण्ण-नायक**र वर-कुमार **भैरण्ण-नायक**रु **होरुगुप्पे-हेब्बयल-नाड**नु प्रतिपालिसुत्तमिद्दलि **इड्डुवणिय वलिय-गौड**र मग **नगिर-ठाविण आनेवळिगे** अग्रगण्यरप्प कोडे-हडर्प दीपमालेय कम्म अङ्क-टेङ्के-मुन्ताद-तेज-मान्य-वनुळ्ळ **हैवण्ण-नायक**रु **वुक्कण्ण-नायक**र अळिय **माळक-नायकिति**यर मग आहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दत्तावधा[त]रुमप्प **पारिस-गौड**रु तम्म बोडय भयिरण्ण-नायकरिगू तमगू पुण्य-वृद्धि-यशोवृद्धयर्थ-निमित्तवागि तम्म दानमूलद-सीमेय यिडुवणेयोळगे श्री-परिश्व-तीर्थङ्कर-चैत्यालयवनु माडिसिदनु तन्मुहूर्त्तके शुभमस्तु ॥ स्वस्ति श्री **जयाभ्युदय शालिवाहन-शक-वर्ष १३९५ नेय नन्दन-संवत्सरद वैशाख-शुद्ध १३ यन्दु** सूर्य्य-प्रतिष्ठेयाद घ २ ळिगेयल्लि चतुस्संघ-समन्वितदिं पञ्च-कल्याण-महोत्साहदिं सुमुहूर्त्तदिं श्री-पार्श्व-तीर्थेश्वर प्रतिष्ठेयं भैरण्ण-नायकर कारुण्य-वर-प्रसाददिं पारिस-गौ[ड]रु तम्मोडेरु भैरण्ण-वोडेयरिगू तनगू अभ्युदय-निश्रेयस-सुख-प्राप्ति-निमित्तवागि माड्सिदुदक्के भद्रं शुभं मङ्गलम् ॥

स्वल्पनवरत-विनमदमरेन्द्र-मौळि-माणिक्य-मयूख-बालातप-विलसित-पादारविन्द श्री-मदनादि-सिद्ध-प्रसिद्धनप्प विट्ठवाणिय श्री-पार्श्व-तीर्थेश्वररिगे मलेय-हुलिय मार्ग्गडनिडिग वेग्गु-दण्डिगेय मल्लेयर गण्ड उभय-नाना-देशिगळगे तवर्म्मनेयाद ऐश्वर्य्यपुर-वराधीश्वर श्रीमन्महामण्डलेश्वर **भैरण-नायकर** तम्म अम्म सिरु-मादेवियरिगू तम्मू तम्म आरोग्य-वर-प्रसाददिं सेवेयं माडुत्तं विट्ट पारिस-गौडरिगू पुण्य-वृद्धि-यशो-वृद्धयर्थ-निमित्तवागि कोट्ट धर्म्म-शासनद भाग-क्रमवेन्तेन्दरे। नाऊ आळुत्तं विट्ट होरनुम्बे हेब्बयल-नाडोळगण अप्पु-गौडन वक्कगन पाल कुळ ग २ । २ अक्षरदलु दिन्नुं-वन्नु-इप्पत्तिन कुळवनु श्री पार्श्व-तीर्थेश्वर नित्य-पूजा-महोत्साहके अमृतगडि वन्नु-नोत्तिन हिरिय-देवर हाल-धारे मृत्युञ्जय-चक्र-पूजे पञ्चामृतद अभिषेक सिद्ध-चक्र-पूजे सिद्धर हाल-धारे अडके यले गन्ध धूप एण्णे वाद्य-मुत्तादि समस्त-पूजा-वैचेके नाडु सोम-सूर्य-ग्रहणदल्लि धारा-पूर्व्वकदिं विट्टु कोट्ट भोग २ । २ इप्पत्तिन कुळ-स्थळद वृत्ति-भूमिगळ विवर (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा है) दिन्ना-वृत्ति भूमिगळ चतुस्सीमेगळिन्दोळगाद मोदल सिद्धायि ईम्मडि सिद्धाय अडके वन्द अडके-यले-मुत्तादि होरगुम्बे हेब्बयल-नाडोपादियल्लि वन्द नाना-उपोग मुन्दे येनु वन्द हदिनेन्-होदके-मुत्तागि एल्लवन्नू नाऊ नम्म स्त्री-पुत्र-ज्ञाति-सामन्त-दायादानुमतदिं नम्म स्व-रुचियिं चन्द्र-सूर्य-अग्नि-वायु-साक्षि-यागि..... एम-नायकर कर-कुमार भैरण-नायकरु वरसिकोट्ट शीला-शासनके मङ्गळ महा श्री श्री (यहाँ इसेशाका अन्तिम श्लोक तथा दानकी विस्तृत चर्चा आती है)।

- स्वस्ति श्री **विजयाभ्युदय-शालिवाहन-शक-वर्ष १२९६ नेय विजय-संवत्सरद कार्त्तिक शुद्ध ५ बुद (ध) वारदलु** स्वस्ति श्रीमद्-वादीन्द्र-**विशालकीर्त्ति-भट्टारक-स्वामिगळ** पुण्यदेशदिन्द स्वस्ति श्रीमन्महा-प्रभु-नुम्बु-वम्श-नायकर कुमार भैरण्ण नायकरु तमगे अभ्युदय-निश्रेयस-सुख-प्राप्ति-निमित्त-वागि **श्रेयसेइद नेमिनाथ-स्वामिगळ** नित्य पूजा-महोत्सवके कोट्ट धर्म्म-शासनद क्रमवेन्तेन्दरे (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा आती है) नम्म स्त्री-पुत्र-ज्ञाति-सामन्त-दायादानुमतदिन्दलू नाऊ नम्म स्व-रुचियिन्द चन्द्र-सूर्य-वायु-अग्नि-

सात्तियागि भैरण्ण-नायकर कुमार यिम्मडि-भैरवेन्द्रनू वरद शिला-शास[न]के मङ्गल महा श्री ॥ (हमेशाके अन्तिम श्लोक)।

इन्द्रः पृच्छति चाण्डालीं किमिदं पच्यते त्वया।
श्वान-मांसं सुरा-सिक्त कपालेन चिताग्निना ॥
देव-ब्राह्मण-वित्तानां बलादपहरन्ति ये।
तेषां पाद-रजो-भीत्या चर्मणा पिहितं मया ॥

(हमेशाका अन्तिम श्लोक)।

[पार्श्व-तीर्थेश्वरको नमस्कार। यह निर्विघ्न होवे। जिन-शासनकी प्रशंसा। पञ्च-परमेष्ठियोंको नमस्कार। शम्भुको नमस्कार इत्यादि।

जिस समय महाराजाधिराज, राज-परमेश्वर, ईश्वर-कुल-तिलक, महाविरूपाक्ष महाराय शान्ति एवं बुद्धिमत्तासे राज्य कर रहे थे:—और महाप्रभु, [illegible]यिसूर मुन्दुवण्ण-नायकका पुत्र भैरण्ण-नायक होरुगुप्पे हेन्वयल-नाड्की रक्षा कर रहे थे;—इदुवणि बलिय-गौडका पुत्र, जो नगिर-ठाकुरमें आनेवालियोंमें अग्रणी था, हैवण्ण-नायक, तथा दुकण्ण-नायकका दामाद, मालक-नायिकितिके पुत्र पारिस-गौडने ताकि पुण्य और ख्याति स्वयं अपनी तथा अपने शासक भयिरण्ण-नायककी बढ़ सके,—अपने दानमूल सीमेमें इदुवणेमें पार्श्वनाथ-तीर्थङ्करका चैत्यालय बनवाया था। और (उक्त मितिको) (पूर्व विगतोंको दुहराते हुए) भगवान्की स्थापना की गयी थी।

(नाना उपाधियोंवाले) इदुगणिके पार्श्व तीर्थेश्वरके लिये, ऐश्वर्यपुर-वराधीश्वर, महाप्रभु भैरण्ण-नायकने, जिससे कि पुण्य और ख्याति अपनी माता सिरु-मादेवी तथा अपनेतक, और उसकी सम्पत्तिके दास पार्श्व-गौडतक बढ़ सके,—निम्नलिखित शासन (लेख) प्रदान किया;—यहाँपर दैनिक पूजा, महोत्सव, भेंटें, तथा अभिषेक आदिके लिये तथा और भी खर्चोंके लिये,—हमने

सूर्यग्रहणके समय (उक्त) भूमियाँ, सूर्य और चन्द्रको साक्षी बनाकर दी हैं। इसेशाका अन्तिम श्लोक।

पारिस (पार्श्व)-गौड तथा दूसरे गौडोंने (जिनके नाम दिये हैं) (उक्त) भूमियाँ प्रदान कीं।]

[EC, VIII, Sagar tl., No. 60]

६५०

गोंडि;—संस्कृत-पद्य।

[सं० १२३६ = १२७६ ई०] श्वेताम्बर लेख।

[D. P. Khakhar, Report on remains in Kachh (ASWI, Selections, No. CLII), p. 88, No. 40, t.]

६५१

भिलरी;—संस्कृत और गुजराती।

[सं० १२६८ = १२८१ ई०] (श्वेताम्बर)

[J. Kirste, EI, II, No. V, No. 1, (p. 25), t. & tr.]

६५२

हरवे;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक सं० १२०१ = १२८२ ई०]

[हरवे (उच्यम्बळिळ परगना) में, शिवलिंगय्याके खेतके दक्षिणकी तरफ एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
भूयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

स्वस्ति श्री शक-वर्ष १२०४ सल्ल वर्त्तमान-शुभकृत्-संवत्सरद चैत्र-शु ५ लु हरवेय देवप्पगळ मग चन्द्रप्पनु तम्म कुल-स्वामी हरवेय वस्तिय आदि-परमेश्वरन

अमृत-पडि चातुव्वर्ण्णद दान तदर्त्थवागि **तगडूर** प्रभुगळु एनेगे दानार्त्थवागि कोट्ट क्षेत्रद स्थान-निर्द्देशद विवर। अरिन्द नैऋत्य-दिक्किनल्लि विभूतिय लिङ्गप्पयगळ गद्दे होल ग ३० तेङ्कलु विभूति-नङ्गप्पन होल तोटदिं पडुवलु येरे-होलक्के होक्क. वोणियिं वडगलु शिवनैय्यन अडुविं मूडण चतुस्सीमेयोळगाद स्थळ होल गद्दे अडके-तेङ्कु-एलेय-तोट ओळगाद क्षेत्रद सर्व्व मान्यवनू स्त्री-पुत्र-ज्ञाति-सापत्न-दायादाद्यनुमति पुरस्सरवागि आदीश्वरगे एनेगे धर्म्मार्त्थवागि त्रिवाचा कोट्टेनु। (हमेशाकी तरह अन्तिम श्लोक)

[हरवे के देवप्पके पुत्र चन्दप्पने, हरवे वस्तिके अपने कुल-देवता आदि-परमेश्वरकी पूजा का प्रबन्ध करने, तथा चतुर्व्वर्णको दान देनेके लिये, तगडूरके सरदारोंके द्वारा दी गयी भूमिका, सूखे खेतों, धान्यके खेतों, सुपारी, नारियल और पानके उद्यानों सहित—जो कि इस भूमिमें लगे हुए थे, दान किया। यह दान उसने अपनी स्त्री-पुत्र-ज्ञाति-सौतेली स्त्रियोंके पुत्रों और दायादों (उत्तराधिकारियों) की अनुमतिसे किया था।

[EC, IV, Chamarajnagar tl., No., 189]

६५३

चित्तौड़—संस्कृत।

[सं० १५४३ तथा शक १४०८ = १४८६ ई०]

[गोमुखके पासके जैन-मन्दिरका लेख जो कि एक चट्टानपर है, जिसमें ३ प्रतिमायें उत्कीर्ण हैं।]

(१) ॥ (चिह्न) ॥ संवत् १५४३ वर्षे शाके १४०८ प्र० मार्ग(र्ग)शीर्ष वदि १३ तिथौ गुरु-दिने। श्री-**चित्रकूट**-महा-दुर्गे। श्री-**रायमल्ल**-राजेन्द्र-विजे (व) य-राज्ये। सकल-श्री-सङ्घेन। स-तीर्थ। श्री-**स (सु)कोशल**-प्रतिमा कारिता। प्रतिष्ठि-

(२) ता। श्री-**खरतरगच्छे**। श्री **जिनसमुद्र-सूरिभि** (भिः) ॥

['रायमल्ल' स्पष्टतः वही राजमल्ल है जो कुम्भकर्णका पुत्र है, और उसके लिये विक्रम सं० १५४३, इस लेख द्वारा निर्दिष्ट, सबसे पूर्ववर्ती मिति है। लेखमें ...तरगच्छके जिनसमुद्र-सूरि द्वारा सुकोशलेश या ऋषभदेव तथा अन्य तीर्थों' (जो कि दो से अधिक नहीं हो सकते हैं, क्योंकि पाषाणपर उत्कीर्ण केवल ३ मूर्त्तियोंका ही उल्लेख है।) की प्रतिमाओंकी स्थापनाका वर्णन है।]

नोट :—जिनसमुद्रसूरिके विषयमें जाननेके लिये Ind. Ant. Vol XI. p. 249, No. 58 देखना चाहिये।

[ASWI, Progress Report 1903-1904, p. 59. t.]

६५४

होगेकेरी;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १४०६=१४८७ ई०]

[होगेकेरीमें, पार्श्वनाथ वस्तिके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥
श्रीमद्भू-भुवन-प्रसिद्धतर-जम्बूद्वीप-मध्यस्थ-नुड्-।
गामर्त्याचल-दक्षिणास्थ-भरतार्य्या-खण्ड-नैर्ऋत्य-दिक्-।
सीमोपाब्धि-तटोपकण्ठ-विलसद्-वर्णाश्रमाकीर्ण-भू-।
धामं तौळव देशमिर्प्पुदिळेयोळ् सप्ताङ्ग-सम्पत्तियिम्॥
अदरोळ् माङ्गल्यगेहं बहु-विध-विभव-प्रोल्लसच्चैत्यगेहम्।
तुदती-सन्तान-चन्माल्यमखिल-सुखि-त्यागि-भोगि-प्रवाहम्।
मृदवद्-हस्त्यश्व-यूथ-प्रबळ-पटु-भटाकीर्णमुत्तुङ्ग-सौधो-
दय-राजद्-राज-संगीतपुरमदेशेयल् प्रौढ़-सङ्गीयमानम्॥
कवि-गमकि-वादि-वाग्मि-।
प्रवेक-सङ्गीत-विषय-साहित्य-रसो-।

द्भव-चतुर-संस्तुत- ।
विविध-कला-भङ्गि-संगि सङ्गीतपुरम् ॥
अद्रनाळ्वं **साळुवेन्द्र**-क्षितिपति रिपु-मत्तेभ-कण्ठीरवं शा
रद-चञ्चच्चन्द्रिका-निर्म्मळ-ललित-यशः-पूरिताशान्तराळम् ।
मदन-प्रध्वंसि-चन्द्रप्रभ-जिन-चरण-द्वन्द्व-संसक्त-चित्तम् ।
सुदती-नेत्रान्तरङ्गोत्सव-कर-निज-सौभाग्य-कन्दर्प्प-देवन् ॥

अन्तातनखण्डित-प्रचण्ड-प्रताप-खर्व्वै-गर्व्व-निर्च्चित-भीष्म-ग्रीष्म-मार्त्तण्ड-मण्डलनुम-प्रतिहत-देदीप्यमान-निज-तेजः-पुञ्जनुं दन्दह्यमान-रिपु-वधू-हृदयनुं विशाल-भाल-तल चोचुम्यमान-जिन-चरण-नख-मयूखनुं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपाळन-क्रिया परिष्ठनुं चतुर-चतुष्पष्ठि-कला-कलापनुं रत्न-त्रय-मणि-करण्डायमानान्तःकरणनुं श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं श्री- **साळुवेन्द्र-महाराजं** निःकण्टकनागि सुखदिं राज्यं गेय्युत्तम् ॥

विनुत-प्रासाद-चैत्यालय-तल-विलसन्-मण्डपौघङ्गळिं कञ्-
चिन-मान-स्तम्भदिन्दा-पुरद वनद विन्यासदिं लोह-पापा-
ण-निबद्धानेक-बिम्बङ्गळिनुपकरण-व्रातदिं नित्य-दाना-
र्च्चनेयिन्दम् शास्त्र-दानं नेगळे नडसिदं धर्म्ममं शाळुवेन्द्रम् ॥

अनितु राज-धर्म्ममं धर्म्ममुमं पालिसुत्तम् ।
वरे साळवेन्द्रन चित्तम् ।
परितोषमनेयिदुवन्ते सेवा-तत्- ।
परनागि भक्ति-भरदिन्द् ।
इरे विगत-च्छद्म सुगुण-सद्मं **पद्मम्** ॥
हितनीतं प्रिय-सत्य-वाद-निपुणं धर्म्मार्त्थ-सम्पादकम् ।
चतुरं सच्चरित्रं दयार्द्र-हृदयं शास्त्रतानेम्मन्वया- ।
गतनी-पद्मण-मन्त्रियेन्दडे कुळिर्-क्कोडल्के साल्वेन्द्र-भू-
पतिया-चन्द्र-धरार्कमित्तनुरे मान्य-ग्राम-सम्पत्तियम् ॥
श्रीमद्-विश्रित-शालिवाहन-शकाब्दं नन्द-खाब्धीन्दु-सं-
ख्या-मानं नडेव प्लवंग-गत-पुष्य-स्याम-सत्-पञ्चमी- ।

स्तोमं गीष्पतिवारमोन्दिरे मनो-वाक्-काय-शुद्धं चतुस्-
सीमान्तोर्व्वियनष्ट-भोग-सहितं हेमाम्बु-धारा-युतम् ॥
प्रभुगळ् पुर-जन-परिजन- ।
सभासदर्म्मेच्चे साळुवेन्द्र-नृपाळम् ।
विभवदि पद्माण-मन्त्रिगे ।
शुभमल्वेन्दोगेयकेरेयनवनोल्दित्तम् ॥

अन्तु स-हिरण्योदक-दान-धारा-पूर्व्वकमागि कोट्ट वोगेयकेरेय-ग्राम-वोन्दर चतुस्सीमेयोळगण गद्दे-वेदलु-नोट-तुदिके-कळ-मने-कोठार-दोन्नु-दोम्बळि-वरि-वङ्कु-काणिके-कलुव-चेडिगे किनगु-वेमवोक्कलु-अङ्क-सुङ्क-दुष्टाळे-तळवारिके निधि-निक्षेप-सल-पाषाण-अक्षिणि-आगामि-सिद्ध-साध्यमेम्बष्ट-भोग-सर्व्व-स्वाम्य-सर्व्वादाय-प्राप्ति-सहित-मागिया-चन्द्रार्क्क-स्थायियागि पद्माणामात्यनन्वयक्कुदेन्दु कोट्ट सर्व्वमान्य-ग्राम-दान-शासन-वचनम् ॥

[जम्बूद्वीप, भरतक्षेत्र, उसमें तौलव-देशका वर्णन । उसमें संगीतपुर नगर तथा उसके राजा शाळुवेन्द्रका वर्णन ।

जिस समय महा-मण्डलेश्वर शाळुवेन्द्र-महाराज सुखसे राज्य कर रहे थे :— सुन्दर, ऊँचे-ऊँचे चैत्यालयों, मण्डपसमूहों, घण्टी सहित मानस्तम्भों और उद्यानोंसे साळुवेन्द्र धर्म्मको बढ़ा रहे थे । उनकी सेवामें तत्पर पद्म नामका व्यक्ति था । यह पद्माण (पद्म) हमारे खानदानमें से हुआ है अतः राजाने मन्त्री-पद्माणको ओगेयकेरे नामका गाँव दिया । उस गाँवमें बहुतसे शस्य (चावल) के खेत थे । ये सब उसने उसको दिये तथा इन सबका शासन (लेख) भी लिखकर दिया ।]

[EC, VIII, Sagar tl., No 163, Ist part]

६५५

होगेकेरी;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १४१२ = १४९० ई०]

[होगेकेरीमें, पार्श्वनाथ वस्तिके एक पाषाणपर]

नमस्तुङ्ग-इत्यादि ॥

स्वस्ति श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं **सङ्गि-राय-वोडेयर**वर कुमार **यिन्दगरस-वोडेयरु संगीतपुर**-वर-राजधानियलु यिद्दु **हाडवल्लिय** राज्य-मुन्ताद समस्त-राज्यङ्गळनु सद्धर्म्म-कथाप्रसङ्गदिं प्रतिपालिसुत्तं यिर्द्दिन **शालिवाहन-शक-वरुष १४१२ नेय सौम्य-संवत्सरद कार्त्तिक-व ७ शुक्रवारदलु** श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं **यिन्दगरस-वोडेयर** निरूपदिन्द **वोम्मण-सेट्टियर** मग **पदुमण-सेट्टियरु** वरसिद धर्म्मशासनद भाषा क्रमवेन्तेन्दरे यिन्दगरस-वोडेयर कैयलु **पदुमण-सेट्टि** मूलवनु कोण्डु आळुत्तं यिद्द **वोगेयकेरेय**-वोळगे चयि (चै) त्यालयवनु कट्टिसि पारिश्वतीर्थेश्वर प्रातष्ठेयनु माडि आ-पारिश्व-तीर्थेश्वररिङ्गे प्रतिदिन त्रि-काल-अभिषेक-पूजे मूरु कार्त्तिक-पूजे मूरु नन्दीश्वरद अष्टाह्निक शिवरात्रे अक्षय-तदिगे श्रुत-पञ्चमी कैयक्कियं होयिवल्लि जीवदयाष्टमी कैयक्किय सूसवल्लि गर्भावतरण जन्मा (जन्मा) भिषेक दीक्षा-कल्याण केवल-ज्ञान-कल्याण निर्व्वाण-कल्याणङ्गळेम्ब पारिश्व-तीर्थेश्वर पञ्च-कल्याण-मुन्ताद नैमित्तिकङ्गळल्लि माडुव अभिषेक-पूजे-धर्म्मङ्गळिङ्गे अङ्गरङ्ग-नैवेद्यंगळिङ्गे वोन्दु-तण्डु-तपस्विगळ आहार-दानके पूजक-भान्दारिगळु मालेयवरु मुन्तादवरिगे विङ्गडिसि माडिद धर्म्म-स्थळङ्गळ विवर (शेषमें दानकी विस्तृत चर्चा आदि है) ।

[शम्भुको नमस्कार इत्यादि ।

जिस समय महा-मण्डलेश्वर सङ्गी-राय-वोडेयर् का पुत्र इन्दगरस- वोडेयर् राजधानी सङ्गीतपुरमें था :—(उक्त मितिको) महा-मण्डलेश्वर इन्दगरस-

वोडेयरके हुक्मसे,-बोम्मण-सेट्टिके पुत्र पदुमण-सेट्टिने एक धर्म्म-शासन-पत्र लिखवाया, जिसकी भाषा इस प्रकार थी :—इन्दगरस-वोडेयरके हाथोंसे, पदुमण सेट्टिने [illegible] ने द्वारा शासित वोगेयकेरेके मौलिक अधिकारको प्राप्त करके उसने वहाँ एक चैत्यालय बनवाकर पार्श्ववतीर्थेश्वरको विराजमान किया। तथा पूजा और अभिषेक का प्रबन्ध करनेके लिये (जिसकी कि विस्तृत सूची दी हुई है) उसने (उक्त) भूमियोंका दान दिया। और इन सब लिखे हुए धर्म्मोंको चैत्यालयके उत्तरमें बनवाये गये मकानमें सुरक्षित रक्खा। मेरे एक हजार वर्ष बाद मेरे पुत्र, मेरी पीछेकी पीढ़ी और सन्तान मकानपर अधिकार कर सकते हैं, लगानकी देखभाल करते हुए (उक्त) धर्मोंको सञ्चालित कर सकते हैं। प्रत्येक चीजका खर्च नियमित रूपसे व्यवस्थित कर दिया गया है। (अन्तका लेख पढ़ा नहीं जा सकता।)]

[EC, VIII, Sagar tl., No. 163, III part.]

६५६

विद्रूरु;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक १४१३ = १४९१ ई०]

[विद्रूरुमें, जनार्दन मन्दिरके ताम्बेके पत्रपर]

श्रीमत्परम-गंभीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥
श्रीमत्-तौळव-देश-मिश्रित-महा सङ्गीत-सत्-पत्तने
वामातीन्द्र-महीन्द्र-चन्द्र-तनयः श्री-सङ्गि-राजात्मजः।
भास्वत्-काश्यप-गोत्र-सोम-कुलजः श्री-सङ्गराम्बोदर-
क्षीराम्भोधि-सुधाकरो नुत-जिनः श्री-साळुवेन्द्राधिपः॥
साक्षीकृत्य निज-प्रताप-दहनं गन्धर्व्व-पादाहति-
प्रोद्भूतोद्भट-धूळि-काण्ड-वसनं संयोज्य नीराजनम्।

खड्गाखङ्गि-ज-विस्फुलिंग-निवहैर् द्विट्-काष्ठ-भेदारवैः
वाद्यानोम्मडि-**साळुवेन्द्र**-नृपति र्वीर-श्रियं लब्धवान् ॥
असूत सूर्य्यो **यमुनां** पुरेति
कथा पृथिव्यां प्रथिता तथापि ।
श्री-साळुवेन्द्रासि-दिनेश-पुत्री
प्रताप-सूर्य्यं सुषुवे विचित्रम् ॥
प्रताप-तपनोत्फुल्ल-कीर्ति-कञ्जेष्ट-दिग्-दले ।
तारोद-विन्दुके यस्य लेभे हंस-श्रियं शशी ॥
विख्यातेम्मडि-साळुवेन्द्र-नृपतेः श्यामासि-सोमोद्भवा
मध्योन्मग्न-विराजमान-कमला प्रासूत * पत्यामहो ।
एकां शत्रु-करीन्द्र-मस्तक-गलद्-रक्तौघ-शोपा-नदीम्
अन्यां श्री-विबुधेश-सेवित-तटीं सत् कीर्त्ति-**भागीरथीम्** ॥
पातालोत्पललोचना-कटि-तटे चञ्चद्दुकूल-द्युतिम्
दिक्-कान्ताकुच-कुम्भयोः कलयते मुक्ता-कलाप-श्रियम् ।
देव-स्त्रो-कुटिलालकेषु नितरां मन्दार-माला-छविम्
कीर्त्तिः कार्त्तिक-कौमुदी-प्रविमला श्री-**साळुवेन्द्रा**धिप (:) ॥
व्यानम्रामर-पद्मराग-मकुट-ज्योतिश्छटा-रञ्जितौ
पादौ यस्य सरोजयोः कलयतो बालातप-श्री-युजोः ।
शोभां **वेणुपुरा**धिपः स भगवान् श्री-वर्द्धमानो जिनः
पायादिम्मडि-साळुवेन्द्र-नृपतिं भूपाळ-चूडामणिम् ॥

इत्याद्यनेक-विरुदावळी-विराजमान**सङ्गि-राय-वोडेयर**वर कुमार शुद्ध-सम्यक्त्व-रत्नाकरनेनिसिद श्रीमन्महा-मण्डलेश्वर **यिन्दगरस-वोडेयरु संगीतपुर**द राजधानियल्लिद्दु **विदिरुनाडु**-मुन्ताद समस्त-राज्यवनु प्रतिपालिसुत्त यिद्दिन **जयाभ्युदय-शालिवाहन-शक-वरुष १४१८ नेय** वर्त्तमानके सलुव **विरोधि**-

---

* ऐसा ही मूल में है : शायद 'पुत्र्यावहो' की जगह ऐसा हो गया है ।

ऋतु-संवत्सरद वैशाख-सुद्ध ५ आदिवार दलु श्रीमन्-महा-मण्डलेश्वर इन्दगरस-वोडेयरु तमगे पुण्यार्थवागि वरसिद धर्म्म-शासनद क्रमवेन्तेन्दरे विदिलूरे वस्तिय वर्द्धमान-स्वामिगळ अङ्ग-रङ्ग-नैवेद्य-नित्य-नैमित्तिक-जिन-पूजाङ्ग-विनियोग-मुन्ताद-श्री-कार्य्यक्के पूर्व्वदलि विट्टु-देवसवागि हिरण्योदक-धारा-पूर्व्वक-वागि-आ-चन्द्रार्क्क-स्थायियागि सर्व्वमान्यवागि बिट्ट भूमिगळ विवर (यहाँ दानकी विगत आती है) ई-बिट्ट-कुळ-स्थलद्वळ नीरड्डु नेलनरकलु नट्ट-कल्लु तेगदगळु गडियिन्दोळगाद चतुस्सीमेगे बन्द मक्कि हक्कु कानु काडाग्म नीरु दारि निधि-निक्षेप-अक्षीणि-आगामि-सिद्ध-साध्य-मुन्ताद तेव-मान्यगळनुळ ई-कुळ-स्थळंगळ नेरे काणिके कट्टाय वीडुगळु विराड-मुन्तागि आचौपुत्र-इल्लदे सर्व्वमान्यवागि आ-वर्द्धमान-तीर्थ-करिगे हिरण्योदक-धारा-पूर्व्वकवागि आ-चन्द्रार्क्क स्थायियागि विट्टु-देवस्व वागि शासनाङ्कितवागि नावु बिट्टु-कोट्ट धर्म्म-शासनद पट्टे यिन्तप्पुदक्के साक्षिगळु।

आदित्य-चन्द्रावनिलो-इत्यादि ॥

ई-धर्म्मके आ रोव्वरु तप्पिदवरु ऊर्ज्जन्त-गिरियल्लि सहस्रगो-ब्राह्मणर हतिय माडिद पापके होहरु वरदूवरे-द्वीपदोळगुळ चैत्य चैत्यालयदोळगुळ जिन-मुनिगळ वधसिद पापके होहरु (हमेशाके शापात्मक वाक्यावयव और श्लोक) यिन्दगरस वरह।

[जिनशासनकी प्रशंसा।

तौलव देशमें, प्रसिद्ध सङ्गीतपट्टनमें काश्यपगोत्र और सोम कुलके महाराव इन्द्रके पुत्र सङ्गि-रावके पुत्र राजा साळुवेन्द्र शोभायमान था। वह जिनभक्त था और उसकी माता सङ्कराम्बा थी। इम्मडि-साळुवेन्द्रके पराक्रमकी प्रशंसा, उसके यशकी प्रतिध्वनिका कीर्तन।

जिस समय इन और अन्य उपाधियों सहित, सङ्गी-राय-वोडेयरका पुत्र, महामण्डलेश्वर इन्दगरस-वोडेयर शाही नगर सङ्गीतपुरमें थे :—(उक्त मितिको),

पुण्यकी प्राप्तिके लिये, उसने निम्नलिखित दान दिया;—जो दान विदिरूर बस्तिके वर्धमान-स्वामीकी (उक्त) उपासना और पूजाके लिये पहले दिया गया था और फिर छोड़ दिया गया था निम्नलिखित थे;—(यहाँ पूरी-पूरी विगत दी हुई है)। ये भूमियाँ, (उक्त) सर्व अधिकारों सहित, वर्धमान-तीर्थंकरके लिये दे दी गयीं थीं।]

[EC, VIII, Sagar tl. No 164]

६५७

मलेयूर;—कब्बड़-भग्न।

[शक १४१४ = १४९२ ई०]

[उसी पहाड़ीपर, सम्पिगे-बागलुके पश्चिमकी ओर]

शुभमस्तु **शक-वरिष** १४१४ नेय वर्त्तमान-**परिधावि-संवत्सरद** चैत्र-शु १ लु **कनक-गिरिस्थ** श्री-**विजयनाथ** ··· ··· ··· यक्के **मलेयू** ··· ··· **दिमण्ण-सेट्टिय** ··· ··· ··· ट्टियरु **कनकगिरिय** ··· ··· समस्त ··· ··· १ के हत्तु होन्निगे यरडु हण बड्डियलु कोट्टद् अक्षरदलु इप्पत्तु होन्निगे बोप्पत्तु··· ··· ··· ··· १ के लक्ष ··· ··· ··· खं ½ कोळगद ··· ··· ··· दीप आरति-सेवे ··· ···

[मलेयूरके दिमण्ण-सेट्टिके [पुत्र] ··· ··· सेट्टिने कनक-गिरिपर स्थित विजयनाथदेवकी दीप-आरतिकी सेवाके लिये, प्रत्येक १० **होन्नु**पर २ **हण**के व्याजके हिसाबसे, २० **होन्नु**का दान किया था।]

[EC, IV, Chamarajnagar tl., No. 160]

६५८

होगेकेरी;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १४२० = १४९८ ई०]

[होगेकेरीमें, पार्श्वनाथ बस्तिके पाषाणपर]

श्रीमत्पार्श्व जिनेन्द्र-भक्तनमल-श्री-पण्डिताचार्य्य-सत्-।
प्रेमोद्यत्-प्रिय-शिष्यनप्रतिम-नागाम्त्रात्मजं सद्-गुण-।
स्तोम-ब्रह्म-तनूजनुत्तम-सु-पद्मा-वल्लभं मल्लिका-।
कामं पद्मण-मन्त्रि-मुख्यनेनेदं साल्वेन्द्र-चित्तोत्सवम् ॥
जिन-पादानति मस्तकके जिन-बिम्बालोकनं दृष्टिगा-।
जिन-शास्त्र-श्रवणं स्व-कर्ण-विवरके श्री जिन-स्तोत्रमा-।
पद्मके चिदात्म-भावने मनकं पात्र-दानं-कर-।
क्के निर्लालङ्कृतियागे पद्मण-महा-मन्त्रीशनेम् धन्यनो ॥
येनेर्गा-भूर-कुरावलोकनदिनेत्री-पोष्य-वर्गक्के तक्क्।
अनितुष्टी-धन-धान्य-सम्पदमदी साल्वेन्द्रनोल्देन्तु को-।
ट्टनितुं ग्राममनेन्तु धर्म्ममेनगा-चन्द्रार्क्कमप्पन्तु माळ्प्-।
इनिदोन्दे-कडे गण्ड-कल्पमेनितुं निश्चयिसिदं चित्तदोळ् ॥
जिन-चैत्यावासमं माडिसि समुचित-सालादियिं कूडे पार्श्वे-
सन बिम्ब-स्थापनं गय्दनुदिनमेसेवल् नित्य-पूजाभिधानम्।
मुनि-दानं तप्पदोळ्यिन्दीगेयकेरेयोळप्पन्ते तां कोट्ट शा-।
सनमं तच्छासन-प्रान्तदोळे बरिसिदं पद्मणांक-प्रधानम् ॥
शकाब्दे कालयुक्ते नरभट-गणिते १४२० चैत्र-शुक्लाष्टमी-सत्-
-वर्च्चें लीवत्तारे गवरिपु-करणे शूल-योगे मनोज्ञे।
निर्द्दोषे मीन-लग्ने सु-रुचिरमकरोत् पार्श्वनाथ-प्रतिष्ठाम्।
श्री-पद्मोद्भासि-पद्माकर-पुर-वसतौ पद्मनाभ-प्रधानः ॥

पल-कालं नित्य-पूजा-विधिगे मेपव तोण्टङ्गळं द्यागमं तान् ।
ओलविं नन्दादि-दीप्ति-प्रमुख-सकल-दीपक्के नैमित्तिकक्कम् ।
स्थलमीयाष्टाह्निकादि-प्रमुख-तिथिगमीयापणं पात्र-दानम् ।
नेलेयप्पन्तावगं वेर्प्पडिसि वरसिदं वृत्ति यं **पद्मनाभम्** ॥
कं ॥ अपरिमितमुचितमेम्बीय्- ।
उपकरणङ्गळने कोट्टु वैदिक-लौकिक- ।
निपुणनं ई अग्रण-सचिवं ।
सुपरीक्षितमागि वरसिदं शासनमम् ॥
पद्मं विनमित-जिन-पद- ।
पद्मं सज्जनरोळेसेव विगत-च्छद्मम् ।
पद्मा-प्रिय-कर-गुण-गण- ।
सद्मं नित्य-प्रसन्न-निज-मुख-पद्मम् ॥

[पार्श्व जिनेन्द्रका पूजक, पण्डिताचार्य्यका शिष्य, नागाम्ब और ब्रह्मका पुत्र, पद्माका पति तथा मल्लिकाका प्रिय,—साल्वेन्द्रका कृपापात्र, मुख्य मन्त्री पद्म था । उसकी जैन भक्तिका वर्णन । उसने एक जिन चैत्यालय बनवाया था, उसमें पार्श्वनाथ भगवान्‌की स्थापना कर दैनिक पूजा और मुनियोंके आहार दानके लिये प्रबन्ध किया था । (उक्त मितिको), मंत्री पद्मनाभने पद्माकरपुरमें पार्श्वनाथकी स्थापना की, और इसमेंसे (उक्त) विभिन्न कार्योंके लिये अलग-अलग हिस्से निकाल दिये, और एक शासन लिख दिया । पद्मकी प्रशंसा ।]

[EC, VIII, Sagar tl., No. 163. part II.]

६५६

शत्रुञ्जय;—प्राकृत ।

सं० १५···(·····ई०)

यह लेख श्वेताम्बर सम्प्रदाय का है ।

[G. Buhler, EI, II, No. VI,No. 117 (p. 86), a.]

६६०

पर्वत आबू;—संस्कृत ।

[सं० १५६६ = १५०९ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[Asiat. Res., XVI, p. 298, No. XII, a.]

६६१

श्रवणबेल्गोला;—कन्नड़ ।

[शक १४३२ = १५१० ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

६६२

बहादुरपुर (जिला अलवर);—संस्कृत

[सं० १५७३ = १५१६ ई०]

(श्वेताम्बर लेख ।)

[A. Cunningham, Reports, XX, p. 119–120]

६६३

मलेयूर;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक सं० १४४० = १५१८ ई०]

पहला लेख

[उसी पहाड़ीपर, दोणेके उत्तर और चलि-कल्लुके दक्षिण एक चट्टानपर]

श्री ॥ शाकेऽब्दे व्योम-पाथोनिधि-गति-शशि-संख्येश्वरे श्रावणे तत्-
कृष्णे पक्षेऽत्र तद्द्वादश-तिथि-युत-सत्-काव्य-वारे गुरोर्मे ।
आचक्रुो कन्यकायां यतिपति-मुनिचन्द्रार्य्य-वर्य्याग्रशिष्यो
लेभे चेतः-कृतार्हत्पदयुग-मुनिचन्द्रार्य्य-वर्यस्समाधिम् ॥

तच्छिष्य-वृषभदास-वर्ण्णना लिखितं पद्यमिदं **विद्यानन्दोपाध्यायेन** कृतम् । श्री ।

[यतिपति-मुनिचन्द्रार्य्यके मुख्य शिष्यने मुनिचन्द्रार्यके लिये समाधि बनाई ।[1] यह श्लोक उनके शिष्य वृषभदासने लिखा और इसको बनानेवाले थे विद्यानन्दोपाध्याय ।]

दूसरा लेख

[उसी पहाड़ीपर, सेनगण निषधिकी उत्तर-पूर्वकी चट्टानपर]

कालोग्र-गणद **मुनिचन्द्र-देव**र पाद अवर शिष्य **आदिदास** वरसिद

[कोल्लारगणके मुनिचन्द्र-देवके चरणचिह्न उनके शिष्य आदिदासके द्वारा स्थापित किये गये थे ।]

तीसरा लेख

[उसी पहाड़ीपर, मुनिचन्द्र-निषधिके एक पाषाणपर]

ईश्वर-संवत्सरद श्रावण-बहुल श्री-मूलसंघ-कोलाग्र-गणद **मुनिचन्द्र-देव**रिगे निषिधि ··· ··· अवर पादवन्नु अवर शिष्य **आदिदास** ··· **आवियण्ण**गळु माडिसिदरु श्री श्री श्री

श्रीमूलसंघ और कोलाग्र-गणके **मुनिचन्द्र देव**का स्मारक । उनके चरण-चिह्नोंकी स्थापना उनके शिष्य आदिदासने की थी । (यह कार्य) आवियण्णके द्वारा संपन्न किया गया था ।]

[EC,IV, Chamrajnagar tl., no 147, 148 and 161]

---

१ इस श्लोक का उपर्युक्त अर्थ गलत मालूम होता है । श्लोकार्थ से तो समाधि लेनेवाले स्वयं मुनि चन्द्रार्यके प्रधान शिष्य थे, न कि प्रधान शिष्य ने मुनि चन्द्रार्य के लिये समाधि बनायी । 'समाधि लेने'का अर्थ होता है 'समाधिको प्राप्त हुआ' न कि 'समाधि बनाई' । इसका कर्त्ता भी 'अग्रशिष्यो है।

६६४

कल्लबस्ति;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १४५२=१५२९ ई०]

[कल्लबस्ति (बगुज्जी परगना) में, कल्ल-बस्तिके सामनेके एक पाषाणपर]

श्री गणाधिपतये नमः ।

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥
श्रीमानादि-वराहोऽयं श्रियं दिशतु भूयसीम् ।
गाढ़मालिङ्गिता येन मेदिनी मोदते सदा ॥
नमस्तुङ्ग इत्यादि ॥

स्वस्ति श्री **जयाभ्युदय-शालिवाहन-शक-वरुष १४५२ सन्द वर्त्तमान । विकृतु-संवत्सरद । चैत्र-शुद्ध १० बुधवारदलु** श्रीमतु अरि-राय-गण्डर दावणि **वोम्मल-देवियर** कुमार श्री-**वीर-भैररस-वोडेयरु । कारकळद** सिंहासनदल्लि सुख-संकथा-विनोददिं राज्यं प्रतिपालिसुत्तिह कालदलि । अवर तङ्गि **काळल-देवियरु । बगुड्डिय सीमे**यनु स्व-धर्मदलु प्रतिपालिसुत्तिह कालदलु तम्म कुल-स्वामि **कल्ल-वस्ति**य पार्श्व-तीर्थंकररिगे नित्य-धर्म्मक्के विट्ट भूमिय क्रमवेन्तेन्दरे । ताबु तम्म कुमारति **रामा-देवि**-यरु । कालव माडिदलि । अवर हेसरलि । माडिद धर्म्म (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा आती है) मंगल महा श्री-**वोम्मरस** विट्ट हळि ··· यी-भूमियनु नाबु नम्म बगुड्डिय सीमेय पूर्व्व-प्रधानिगळु महाजनङ्गलु हलरु नाडु कोलविळियरु मुन्तादवर् समस्तरु साक्षियल्लि स-हिरण्योदक-दान-धारा-पूर्व्वकवागि धारेय-नेरदु कोट्टेवु आ-चन्द्रार्क-स्तिरवागि कोट्टेवु । हरगोल **वोम्म**-गदेय कल्ल-बस्तिय देवर अमृतपडिगे पूर्वदल्लि विट्ट दा नम्म क ··· कालव दल्लि विट्ट भूमि रव ६ उभय बीजवरि रव ११ ··· ··· भूमियनु देवरिगे विट्टेवु इदके राजिक ··· ··· वरसिद कल्ल-शासन (हमेशाके अन्तिम श्लोक)

अनुगच्छन्ति ये ··· ··· तुकं कौतुकान्वितम् ।
पदे पदे क्रतु-फलं लभते नात्र संशयः ॥

[जिस समय बोम्मल-देवीके पुत्र वीर-भैररस-वोडेयर कारकलकी गद्दीपर थे : और उनकी छोटी बहिन काळल-देवी वगुड्डि-सीमेकी रक्षा कर रही थी;—उसने अपने कुल-देवता कल्ल-वस्तिके पारिश्व (पार्श्व)-तीर्थङ्करकी दैनिक पूजाके लिये दान दिया। और जब उसकी पुत्री रामा देवी मर गई तब उसने अग्र-लिखित पुण्य-दान किया :—प्रतिदिन चावलकी २ अञ्जलि देना, पहिले मिले हुए ४० खमें भट्टके १५ ख और मिलाकर कुल ५५ ख; २ हमेशा जलनेके लिये दिये, और वार्षिक २४ ग घातुमें;—साथियोंके सामने (उक्त) भूमिका दान दिया। पाषाणका शासन उसीने उत्कीर्ण करवाया।]

[Ec, VII, Koppa tl. No .47.]

६६५-६६६

शत्रुंजय—प्राकृत ।

[संवत् १२८७ और शक सं० १४५३ = १५३० ई०]

ये दोनों लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायके हैं।

[G. Buhler, EI. II, No. VI, No. I (P. 42–47), t.]

६६७

हुन्मच—कछड़ ।

[बिना काल-निर्देशका, पर लगभग १५३० ई० का (लू० राइस)।]

[पद्मावती मन्दिरके प्राङ्गणमें एक पाषाण पर]

विद्यानन्द-स्वामिय ।
द्यो पन्यास-वाणि धरेयोळ्गेन्दुम

माघद्वादि-गजेन्द्र ।
मेघोद्धुर-सिंह-विवतियन्तेवोलेसेगुम् ॥
[illegible]यतियोळ् **विद्यानन्द-** ।
व्रतिपति-मुख्य-जात-वाणि विबुधर मनदोळ् ।
सततं रञ्जिसुतिर्क्कुम् ।
व्रति-विरहित-कान्त-रचित-माध्यद तेरदिम् ॥
विद्यानन्द-स्वाम्यन- ।
वद्योपन्यास-मुद्रे कविगळ मनदोळ् ।
सद्यं सुखकर **वाणन** ।
गद्यात्मक-काव्यदन्ते रञ्जिसि तोर्क्कुम् ॥
श्री-नञ्जरायपट्टणद् ।
आ-नृपति-**नञ्जन-देव**-भूपन सभेयोळ् ।
[illegible]न्दन-**मल्लि-भट्टो-** ।
दानमनुषे किडिसि मेपद **विद्यानन्द** ॥
श्रीरङ्ग-नगरकाव्यन ।
पेरङ्गिय मतमनळिदु विद्वत्-सभेयोळ् ।
शारदेयं वस-माडिये ।
धारिणिगभिवन्द्यनादे **विद्यानन्दा** ॥
श्री-**सान्तवेन्द्र**-राजन ।
केसरि-विक्रमन व्रङ्गुरास्थानदोळिन्त् ।
ई-साहित्यमनुर्व्वरे ।
गोसिसुवन्तुसुर्दे वादि-**विद्यानन्दा** ॥
श्री-**सालव-मल्लि रायन** ।
पूरगैणेयेनिसि तोर्प्प जाणन सभेयोळ् ।
सासनदोळधिकरादर ।

वासेयनु मनिसिदे वादि-**विद्यानन्दा** ॥
अर्ण्णव-वेष्टित-वसुधा- ।
कर्ण्णोपम-गुरु-नृपालनास्थानदोळेम् ।
कर्ण्णाट-दक्ष-कृतिथम् ।
वर्ण्णिसि जस वददे वादि-**विद्यानन्दा** ॥
वासव-समान-भाग्य- ।
श्री-**साळुव-देव-राय**नास्थानिकेयोळ् ।
पुसियेन्दखिळ-वायुरु- ।
शासनमं गेल्दु मेच्चिदे **विद्यानन्दा** ॥
नागरी-राज्यद राजर ।
••• लेनिसुव सभेगळल्लि विबुध-व्रातक्कू ।
अगणित-वाक्यामृतमं ।
सोगसिन्दीण्टिसिदे वादि-**विद्यानन्दा** ॥
कळशोद्भव-सम-शौर्य्यन ।
विळिगेय नरसिंह-भूपनास्थानिकेयोळ् ।
वेळगिदे जिन-दर्शनमम् ।
नाळिनाम्बक-सूनु-वैरि **विद्यानन्दा** ॥
कारकळ-नगरदाण्मन ।
भैरव-भूपाल-मौळियास्थानदोळेम् ।
सारतर-जैन धर्म्मन् ।
ओरन्तिरे वेळगि मेपदे **विद्यानन्दा** ॥
विदिरेय भव्य-जनङ्गळ ।
विदमल-चारित्र-भूष्य-हृदयर सभेयोळ् ।
पडे सिद्धान्तित-मतमम् ।
मुडदिं प्रकटिसिदे वादि-**विद्यानन्दा** ॥
नरपति-मणि-मुक्ताञ्चित- ।

नरसिंह-कुमार-**कृष्ण-राय**न समेयोळ् ।
पर-मत-वादि-वृन्दमन् ।
ओरसिदे वाग्वलदे वादि-**विद्यानन्दा** ॥
कोपण-मोदलाद-तीर्थदोळ् ।
अगणित-द्रव्यदिं देहाशा-विधियिन् ।
स्वपवर्गद फलकागिये ।
विपुलोदय माडि मेपदे **विद्यानन्दा** ॥
वेळगुळद गुम्मटेशन ।
चळन-द्वयदल्लि जैन-संघक्के महा- ।
कळ मुददे वसन-भूषण- ।
कळघौतद मळेय कपदे **विद्यानन्दा** ॥
श्री-**गोरसोप्पे**योळगण ।
[illegible]गम-वाद-सक्त-मुनिगळ गणमन् ।
राचदे पालिप कञ्चि- ।
दी-गुरु-कणियन्ते मेपदे **विद्यानन्दा** ॥

॥ वीर-श्री-वर-**देव-राज**-कृत-सत्-कल्याण-पूजोत्सवो

विद्यानन्द-महोदयैक-निलयः श्री-**सङ्कि-राजार्चितः** ।
पद्मा-नन्दन-**कृष्ण-देव**-विनुतः श्री-वर्द्धमानो जिनः
पायात् **साळुव-कृष्ण-देव**-नृपतिं श्रीशोऽर्द्धनारीश्वरः ॥
श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥
वर्द्धमानो जिनो जीयात् गौतमादि-मुनि-स्तुतः ।
[illegible]र्भार्चित-पादाब्जः परमार्हन्त्य-वैभवः ॥
स चतुर्दश-पूर्व्वेशो **भद्रबाहुर्ज्जयत्यरम्** ।
दश-पूर्व्व-धराधीश-विशाख-प्रमुखार्चितः ॥

तत्वार्थसूत्र-कर्त्तारमुमास्वाति-मुनीश्वरम् ।
श्रुतकेवलि-देशीयं वन्देऽहं गुण-मन्दिरम् ॥
श्री-कुन्दकुन्दान्वय-नन्दि-संघे
योगीश-राज्येन मतां ··· ··· ।
जाता महान्तो जित-वादि-पक्षाः
चारित्र-वेषा गुण-रत्न-भूषाः ॥
सिद्धान्तकीर्त्तिर्जिनदत्तराय-
प्रणूत-पादो जयतीद्ध-योगः ।
सिद्धान्त-वादी जिन-वादि-वन्द्यः
पद्मावती-मन्त्र ··· ती-कृतेज्यः ॥
जीयात् **समन्तभद्रस्य** देवागमन-संज्ञिनः
स्तोत्रस्य भाष्यं कृतवान्**कलङ्को** महर्द्धिकः ॥
अलञ्चकार यस्सर्वमाप्तमीमांसितं मतम् ।
स्वामि-विद्यादिनन्दाय नमस्तस्मै महात्मने ॥
यः प्रमाता पवित्राणां ·· ··· ··· ··· ।
विद्यानन्द-स्वामिनञ्च **विद्यानन्द**-महोदयम् ॥
विद्यानन्द-स्वामी
विरचितवान् श्लोकवार्त्तिकालङ्कारम् ।
जयति कवि-विबुध-तार्किक-
चूड़ामणिरमल-गुण-निलयः ॥
माणिक्यनन्दी जिनराज-वाणी-
प्राणाधिनाथः पर-वादि-मर्दी ।
चित्रं **प्रभाचन्द्र** इह क्षमायम्
मार्त्तण्ड-वृद्धौ नितरां व्यदीपित् ॥
सुखी ··· **न्यायकुमुद चन्द्रोदय**-कृते नमः ।
शाकटायन-कृत्सूत्र-न्यास-कर्त्रे व्रतीन्दवे ॥

न्यासं जिनेन्द्र-संज्ञं सकल-बुध-नुतं पाणिनीयस्य मूयो-
न्यासं शब्दावतारं मनुज-तति-हितं वैद्य-शास्त्रं च कृत्वा ।
यस्तत्त्वार्थस्य टीकां व्यरचयदिह तां भात्यसौ **पूज्यपाद-**।
स्वामी भूपाल-वन्द्यः स्व-पर-हित-वचः-पूर्ण-दृग्-बोध-वृत्तः ॥
वर्द्धमान-मुनीन्द्रस्य विद्या-मन्त्र-प्रभावतः ।
शार्दूलं स्व-वशीकृत्य **होय्सळोऽ**कारयद्धराम् ॥
होय्सळान्वय-भूपानां वृत्त-विद्या-प्रदायिनः ।
श्री-वर्द्धमान-योगीन्द्र-मुखास्ते गुरवोऽभवन् ॥
वासुपूज्य-व्रती भाति भव्य-सेव्यो बुधार्चितः ।
सिद्धान्त-वार्धि-शीतांशुः ··· रित्राधार-विग्रहः ॥
रिपु-वर्द्धन-**वल्लाळ-राय**-वन्द्य-क्रमाम्बुजः ।
अनेकान्त-नयोद्भासी **श्रीपालो** राजते **सुखी** ॥
भृत्यादानुवर्त्ती सन् राज-सेवा-पराङ्मुखः ।
संयतोऽपि च मोक्षार्थी ··· ··· **पात्रकेसरी** ॥
त्रिलोकसार-प्रमुख ··· ···
··· ··· ··· भुवि **नेमिचन्द्रः** ।
विभाति सैद्धान्तिक-सार्व्वभौमः
चामुण्ड-रायार्च्चित-पाद पद्मः ॥
रेजे **माधवचन्द्रो**ऽसौ निराकृत-मधूत्सवः ।
चैत्याश्रयी शुचि-रतिस्तदा श्रावण-तत्परः ॥
जीयाद्**भयचन्द्रो**ऽसौ मुनिस्सिद्धान्त-वेदिनाम् ।
चरमः **केशवार्य्येण** ··· ··· सत्य-पाणाश्रयः ॥
··· ··· ··· स-राज-सूर्यो
··· या-परः श्री- **जयकीर्त्ति-देवः** ।
विराजते शास्त्र-विदां वरेण्यः
सः···रमालिङ्गित-रम्य-गात्रः ॥

... ... शासन-श्रीमन् ... ... सेन इवावनौ ।
राजते **जिनचन्द्रार्य्य** ... ... यः ॥
आचार्य्य-वर्य्य ... ... विभाति विजिते ... ... ।
इन्द्रनन्दी जिनेन्द्रोक्तसंहिता-शास्त्र-विद्-वरः ॥
वसन्तकीर्त्तिर्व्वन-देश-वासी
विशालकीर्त्तिश्शुभकीर्त्ति-देवः ।
श्री-**पद्मनन्दी मुनि-माघनन्दी** ॥
जटा-प्रसिद्धामल-**सिंहनन्दी** ॥
व्यतिभाते गुणाधीशो धीमान् **चन्द्रप्रभो मुनिः** ।
वसुनन्दी माघचन्द्रो वीरनन्दी घनञ्जयः ।
वादिराजो धराधीश-वन्दितांघ्रि-सरोरुहः ॥
षट्-तर्क-वादि-जनताभय-दान-दक्षः
साहित्य-नन्दन-वनालि-विकासि-चैत्रः ।
श्री-**धर्म्मभूषण**-गुरुर्म्मुनिराज-सेव्यो
भट्टारको जयति सत्कविता-कलेन्दुः ॥
राजाधिराज-परमेश्वर-**देव-राय**-
भूपाल-मौळि-लसदङ्घ्रि-सरोज-युग्मः ।
श्री-वर्द्धमान-मुनि-वल्लभ-मौरव-मुख्यः
श्री**धर्म्मभूषण**-सुखी जयति क्षमाढ्यः ॥
विद्यानन्द-स्वामिनस्सूनु-वर्य्यस्
सञ्जातस्ते **सिंहकीर्त्ति-यतीन्द्रः** ।
ख्यातश्श्रीमान् पूर्ण्ण-चारित्र-गात्रो
दान-स्वर्भू-धेनु-मन्दार-देश्यः ॥
श्वेत-वर्ण्याकुलो भूमौ सर्व्वदा मरुदावृतः ।
सुदर्शनो **मेरुनन्दी** राजहंस-परिष्कृतः ॥
वर्द्धमानः प्रभाचन्द्रोऽमरकीर्त्तिर्गुणाकरः ।

विशालकीर्त्तिश्श्री-**नेमिचन्द्र**स्सिद्ध-गुणा इव ।
बामात्यश्चपतेर्द्दिने तत-नयो **वङ्गाळ्य**-देशावृत-
श्रीमद्-**दिल्लि**-पुरेड्-**महम्मुद**-**सुरित्राण**स्य माराकृतेः ।
निर्ज्जित्याशु सभावनौ जिन-गुरुब्रौद्धादि-वादि-व्रजम्
श्री-**भट्टारक**-**सिंहकीर्त्ति**-**मुनि-रा** ··· द्यैक-विद्या-गुरुः ॥
विशालकीर्त्तिर्व्वादीन्द्रः परमागम-कोविदः ।
भट्टारको **बलात्कार**-**गण**ाधीशो महा-तपः ॥
सिकन्दर-**सुरित्राण**-प्राप्त-सत्कारवैभवः ।
महा-वाद-जयोद्भूत-यशो-भूषित-विष्टपः ॥
श्री-**विरूपाक्ष**-**राय**स्य श्री-**विद्यानगरे**शिनः ।
सभायां वादि-सन्दोहं निर्ज्जित्य जय-पत्रकम् ॥
स्वीकृत्य च महा-प्रज्ञा-बलेन बुध-भू भुजैः ।
यतं सरस्वती-मूल-शासनं वा सदोज्ज्वलम् ॥
देवप्प दण्डनाथस्य नगरे श्रीमदारगे ।
प्रकाशित-महा-जैन-धर्म्मोऽभूद् भूसुरार्च्चितः ॥
विशालकीर्त्तिश्री-**विद्यानन्द**-**स्वामी**ति शब्दितः ।
अभवत् तनयस् **साळ्व**-**मल्लिराय**-नृपार्च्चितः ॥
आगम-त्रय-सर्व्वज्ञः कवित्व-गुण-भूषितः ।
नानोपन्यास-कुशलो वादि-मेघ-महा-मरुत् ॥
स्वामि-विद्यादिनन्दस्य भारती भाललोचनः ।
सूनुर्द्देवेन्द्रकीर्त्त्याख्यो जातो भट्टारकाग्रणीः ॥
श्रीमद्देवेन्द्रकीर्ति-व्रति-पद-नख-रुग्-मञ्जरी मंगलं मे
भूयात् तत्पादपार्श्वे मम नुति-विनमन्मस्तके मल्लिकामा ।
क्षैत्रे कर्प्पूर-पा ··· वदन-सरसिजे स्फार-सीयूष-धारा
कण्ठे मुक्ता-कलापस्त्ववयव-निकरे चन्द्र-युक्-चन्दन-श्रीः ॥
आनन्दाश्रु-सलिलैरपि भावयित्वा

भाल-स्थली-विरचिताञ्जलि कुट्मलेन ।
देवेन्द्रकीर्त्ति-चरणे मुखमर्प्पयामि
कामातुरः कुच-भरे स यथा तरुण्याः ॥
यत्पादाब्ज-नखेन्दु-कान्ति-लहरी-स्थानं जगत्पावनम्
यत्पादाब्जरजो-विलेपनमहो संसार-सन्ताप-हृत् ।
यत् कारुण्य-कटाक्ष-वीक्षणमपि क्षीरोद-पट्टाम्बरम्
यत् प्रेम् ··· सुधाशनं भव-भवे सोऽस्तु प्रियो मे गुरुः ॥
श्रीमान् **देवेन्द्रकीर्त्ति**र्य्यति-पति-मुकुरो मन्त्र-वादीभ-सिंहः
साहित्याम्भोधि-सूर्य्यो विमलतरतपः-श्री-समालिङ्गिताङ्गः ।
विद्यानन्दार्य्य-सूनुः कवि-विबुध-महा-पारिजातो विभाति
प्रायो भूताचलेन्द्रः पर-हित-चरितः शारदा-कर्ण्णपूरः ॥
श्री-**कृष्ण-राय**-सहजाच्युत-**राय**-मौलि-
विन्यस्त-पाद-कमलः कमनीय-मूर्त्तिः ।
देवेन्द्रकीर्त्ति-सुखिराड् जयति प्रसिद्धः
स्याद्वाद-शास्त्र-मकराकर-शीतरोचिः ॥
श्रीमद्देवेन्द्रकीर्त्ति-व्रतिप जिन-मताम्भोजिनी-भासि-भानो
सद्विद्या-नाथ-पाथोनिधि-विशद-शरत् ··· र-पीयूषभानो ।
एनो-बन्धासिधेनो मयि कुरु करुणां वाक्-सुधा-कामधेनो
विद्यानन्दार्य्य-सूनो गुण-मणि-विलसद्-रोहणाद्रीन्द्र-सानो ॥
वादावसान-विनमद्-वर-वादि-वक्त्र-
कञ्जात-जात-मुदिताश्रुज-विन्दु-वृन्दैः ।
मुक्ताफलैरिव मुहुः परिपूज्यमानम्
देवेन्द्रकीर्त्ति-चरणं शरणं व्रजामि ॥
सन्मार्गासक्त-चित्तं कुवलय-जनितामोद-सद्-वृद्धि-हेतुम्
सद्-वृत्तं चारु-बोधोज्वल-विबुध-नुतं सत्-कळानामधीशम् ।
क्ष्मणीभृत्-तुङ्ग-मौळि-प्रणिहित-विलसत्-पादमुच्चैरजस्रम्

विद्यानन्द-यतीन्द्रामृतकरमवतु श्री-पतिर्व्वर्द्धमानः ॥
वादि-प्रोद्दाम-वाचा-तिमिर-समुदय-प्रोच्चलद्-बाल-भानुस्
त्रैलोक्याखर्व्व-गर्व्व-स्मर-विपिन-महा-दीप्र-तेजः-कृशानुः ।
शास्त्राम्भोराशि-तारारमण-सदृश-देवेन्द्रकीर्त्यार्य्य-भानुर्
व्विद्यानन्दार्य्य-वर्य्यो जगति विजयते धर्म्म-भूमीध्र-सानुः ॥
साकारो वा भाति सौजन्य-राशिस्-
सर्व्वज्ञो वा मर्त्य-वेषस्तमिन्वे ।
सञ्चारी वा सर्व्व-शास्त्र-प्रपञ्चः
विद्यानन्द-स्वामि-वर्य्यो विभाति ॥
का सर्व्व विशदीकरोति विनतापत्यं भवेत् किं हरेः
भुंक्ते पूत-हविश्च कः खग-मृगादीनां च को वाश्रयः ।
क्वास्ते देव-ततिः प्रथा क्व नु कुतस्तन्तो भजन्ते मुदम्
विद्यानन्द-मुनावनङ्ग-विजयिन्युद्घोष्यमाणे सति ॥
क्वियानं दमुनाः वनं गवि चयिनि ॥
देवेन्द्रकीर्त्तिर्विन-पूजनेषु
विशालकीर्त्तिर्व्विबुधाधिपेषु ।
विश्वावनी-वल्लभ-पूज्य-पादो
विद्यादिनन्दी जयताद् धरित्र्याम् ॥
विद्यानन्द-स्वामि-शास्त्रोपमायै
शेषश्शम्भुं सेवते हार-भावात् ।
प्रायो लक्ष्म्यालिङ्गितांसं पुमान्सम्
पर्य्यङ्कत्वं प्राप्य साक्षादुपास्ते ॥
व्याचिख्यासति वैदुषी-भर-लसद्-व्याख्यान-कोलाहले
विद्यानन्द-मुनौ सभासु विदुषां कान्यस्य सूरेः कथा ।
खद्योति किमुदेति कान्तिरुदिते राका-सुधाधामनि
प्रौढे भास्वति भासि भाति ••• दैवी कथं दीधितिः ॥

वीर-श्री-वर-**देव-राय**-नृपतेस्सद्-भागिनेयेन वै
पद्माम्बा ••• गर्भ्भ-वार्द्धि-विधुना राजेन्द्र-वन्द्याङ्घ्रिणा ।
श्रीमत्-**साळुव-कृष्ण-देव**-धरणीकान्तेन भक्त्यार्चितो
विद्यानन्द-मुनीश्वरो विजयते स्याद्वाद-विद्या-फलः ॥
श्रीमद्**विद्यानन्द-स्वामिन**ममराचलं मन्ये ।
द्विज-विबुध-कवि-गुरूणां सन्दोहस्सेवतेऽन्यथा कथं भुवने ॥
किं वाणी चतुराननः किमथवा वाचस्पतिः किन्वसौ
विद्यानां विभवस् सहस्रवदनः साक्षादनन्तः किमु ।
इत्थं संसदि साधवस्समुदितास्संशेरते सादरम्
विद्यानन्द-मुनौ बुधेशभवन-व्याख्यानमातन्वति ॥
यो विद्यानगरी-धुरीण-विजय-श्री-**कृष्ण राय**-प्रभोर्
आस्थाने विदुषां गणं समजयत् पञ्चाननो वा गजम् ।
सद्-वाग्मिर्नखरैरुदात्त-विमल-ज्ञानाय तस्मै नमो
विद्यानन्द-मुनीश्वराय जगति प्रख्यात-सत्-कीर्त्तये ॥
विद्यानन्द-स्वामिनोऽभूत् सधर्म्मा
विख्यातोऽयं **नेमिचन्द्रो मुनोन्द्रः** ।
भूत-व्राताम्भोज-वैकासकारो
[•••] शास्त्राम्भोराशि-संवृद्धिकारी ॥
पोम्बुर्च्च-पार्श्वनाथस्य वसतिं श्री-त्रि-भूमिकाम् ।
कृत्वा प्रतिष्ठां महतीं सन्तनोति स्म भक्तितः ॥
विद्यानन्द-स्वामिनः पुण्य-मूर्त्तेः
जीयात् सूनुश्री-**विशालादिकीर्त्तिः** ।
विद्वद्वन्द्यः सर्व्व-शास्त्रावतारो
माद्यद्-वादीभेन्द्र-संघात-सिंहः ॥
वादि-**विशालकीर्त्ति**-सुखि-राड् विबुध-स्तुत-सद्-गुणोदयः
क्षमाधिप-संसदप्रतिम-वाक्य-निराकृत-सूरि-सन्ततिः ।

स्यात्पद-लाञ्छनान्वित-जिनागम-भावन-पूत-मानसो
भाति नृपाल-पूजित-पदः स-दयो जित-पुष्पसायकः ॥
चीयाद्**दमरकीर्त्या**ख्य-भट्टारक-शिरोमणिः ।
विशालकीर्त्ति योगीन्द्र-सधर्म्मा शास्त्र-कोविदः ॥
विशालकीर्त्तियोगीन्द्र-भट्टोदय-महीभृतः ।
देवेन्द्रकीर्त्ति-सुखि-राड् बालार्क्क इव भासते ॥
श्री-भैरवेन्द्र-वंशाब्धि-राव-**पाण्ड्य**-नृपार्चितः ।
चीयाद् देवेन्द्रकीर्त्यर्य्यो **विद्यानन्द**-महोदयः ॥
देवेन्द्रकीर्त्तिस्सिद्धार्थस् तद्वाणी प्रियकारिणी ।
धीमांस्तदुदितो वर्ण्णी वर्द्धमानो न किं भवेत् ॥
निर्भग्नात्म-निबन्धनस्स-करुणो निर्व्वाण-वाञ्छान्वितो
बाह्यार्त्थाखिलमाभिलाष-रहितो दूरीकृतोत्कल्पनः ।
स्व-च्छन्द-स्व ··· ··· ना भद्राङ्ग-लक्ष्म्या परम्
हित्वां मत्त-महा-करीव जयति श्री-**वर्द्धमानो मुनिः** ॥
ख्यात-श्री-वर्द्धमानोऽभूद् वीत-संसार-विभ्रमः ।
ज्ञातानुयोग-शास्त्रार्त्थो जातरूपा··· ··· स्वरुः ॥
यति ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· ··· दन ।
नूत-सद्-गुण-सन्तान-पूत-चिद्-भावना-मतिः ॥
जयति भुजबल-श्रीरार्य्य ··· सङ्घस्य
जिन-पति-मत-बुद्धिः स्वर्ग-मोक्षैक-सिद्धिः ।
जन-हित-मित-वाणी-लुप्त-कन्दर्प-वाणी
नव-तपन ··· ··· ··· ··· ··· ··· ॥
··· **दिन्द्रकीर्त्ति**-योगीन्द्र **विद्यानन्द**-महोदय ।
वर्द्धमान-दुघाराध्य भूयो भूयो नमोऽस्तुते ॥
सत्पुत्रो-जननीं निदाघ-तृषितः शैत्यं जलं कामिनी
कान्तं वारवधूः धनं यतिपतिः ··· ···यितं चातकः ।

मेघं भूरमणो जयं युधि यथा ध्यायत्यनस्तं तथा
विद्यानन्द-सुखीश्वरस्य चरणाम्भोजं मदीयं मनः ॥
वन्दे पद्मावतीं देवीं धारिणीन्द्र-मनः-प्रियाम् ।
श्री-सिन्धु ... ... ॥
देवेन्द्रकीर्त्ति-मुनिराज-तनूभवेन
श्री-**वर्द्धमान-सुखिना** गदितानि भान्ति ।
पद्यानि सद्-गुण-युतानि महोज्वलानि
विद्वत्-कवीन्द्र-गल-कर्ण्ण-विभूषणानि ॥
..... दया धर्म्मस्तावत् सद्-धर्म-शासन ।
श्रीरस्तु जगतां राजा धरां न्यायेन रक्षतु ॥
भान्तु षड्-दर्शनान्यु ... ... ॥
(वही अन्तिम श्लोक) ।
वर्द्धमान-मुनीन्द्रेण विद्य ..... वन्धुना ।
देवेन्द्रकीर्त्ति-महिता लिखिता ... ... ॥

[विद्यानन्द-स्वामीकी वाणीके तर्कसे वादि-राजेन्द्र भयभीत रहते हैं। विद्यानन्दि-व्रतिपतिके मुखसे निकली हुई वाणीको विद्वान् लोग भाष्य समझते हैं। उनके तर्ककी प्रशंसा। नञ्जराय पट्टणके राजा नञ्ज-देवकी सभामें उन्होंने नन्दन-मल्लि-भट्टका मुँह बन्द करके अपनेको 'विद्यानन्द' प्रसिद्ध किया। श्रीरङ्गनगरके कार्य्य (प्रवर्द्धक) यूरोपियनके मतको ध्वस्त करके एक विद्वत्परिषद्में उनने शारदा (सरस्वती) को बुलाया था। उन्होंने सातवेन्द्र (या सान्तवेन्द्र) राजके अनुपद्रवःदरबारमें दुनियाँ में प्रसार पा जानेवाली एक कविता पढ़ी थी। साल्व-मल्लि-रायकी एक विद्वत्परिषद्में अच्छे वादियोंको परास्त किया। गुरु-नृपालके दरबारमें एक कर्णाटक ग्रन्थका निर्म्माण करके उन्होंने प्रसिद्धि प्राप्त की। साळुव-देव-राय के दरबारमें सब वादियोंके सिद्धान्तोंको मिथ्या सिद्ध करनेमें उन्होंने महती सफलता प्राप्त की थी। नगरी राज्यके राजाओंकी सभाओंमें उन्होंने विद्वानोंको

अपनी वाणीके अमृतकी मधुरताका पान कराया। बिल्लिगेके राजा नरसिंहके दरबारमें उन्होंने जिनदर्शनको स्पष्ट रीतिसे समझाया। कारकल-नगरके शासक भैरवके दरबारमें उन्होंने जैन-धर्मकी बहुत अच्छी प्रभावना की थी। बिदिरेके जैनोंकी सभाओं की सम्पति प्राप्त करनेके लिये उन्होंने सिद्धान्तका प्रतिपादन किया। नरसिंहके पुत्र कृष्ण-रायके दरबारमें तुमने अपनी वाणीके बलसे परमतवादियोंके वर्णको हटा दिया। कोपण तथा अन्य दूसरों तीर्थोंमें तुमने महोत्सव करके अपनेको विद्यानन्द प्रसिद्ध किया। बेळुगुळके गोम्मटेशके दोनों चरणोंमें उन्होंने वर्षाके समान जैन संघके ऊपर बड़े प्रेमसे एक कपड़ों, आभूषणों, सोना और चान्दीका 'महाकल' डाला। गेरसोप्पेमें 'योगागमकी चर्चामें लगे हुए मुनिगणको मुख्य गुरुके तौरपर उनको सहायता देनेका कार्य अपने हाथमें लिया था।

वर्धमान जिन—जिन्हें वे देव-राज, सङ्गि-राज और कृष्ण-देव पूजते थे—साळुव-कृष्ण-देवकी रक्षा करें।

जिन शासनकी प्रशंसा। वर्द्धमान स्वामीकी स्तुति। चतुर्दशपूर्वियोंमें सिर-मौर भद्रबाहु थे, जिनकी पूजा विशाख तथा अन्य दशपूर्वी करते थे। तत्वार्थसूत्रके कर्त्ता उमास्वाति-मुनीश्वर हुए। जिनदत्त-रायके द्वारा पूजित सिद्धान्तकीर्ति थे, जिन्होंने एक विधिसे पद्मावतीको भी मन्त्रमुग्धकर दिया था। समन्तभद्रके देवागम-स्तोत्रका भाष्य बनानेवाले महर्धिक अकलङ्क हुए। श्लोक-वार्त्तिकालङ्कारके रचयिता विद्यानन्द-स्वामी हुए। माणिक्यनन्दी जिनराज-वाणीके पति, विरोधी वादियोंके परास्त करनेवाले थे। प्रभाचन्द्रने प्रमेयकमलमार्त्तण्ड और न्यायकुमुद-चन्द्रकी रचना की थी तथा शाकटायनके सूत्रोंपर न्यास बनानेवाले भी यही थे। पूज्यपाद-स्वामीने जैनेन्द्र नामका न्यास बनाया था, पाणिनीके सूत्रोंपर 'शब्दावतार' नामक न्यासका भी प्रणयन किया था, वैद्य-शास्त्र तथा तत्त्वार्थकी एक टीका (सर्वार्थसिद्धि नामकी) भी बनायी थी। वर्द्धमान मुनीन्द्र वे ही थे जिनके मंत्रके प्रभावसे होय्सलने बाघको वश किया था तथा फिर दुनियांपर शासन किया था। वासुपूज्य-व्रती हुए। बल्लाल-रायसे पूजित श्रीपाल सुखी हुए। पात्रकेसरी

हुए। त्रिलोकसार तथा अन्य दूसरे ग्रन्थोंके कर्त्ता नेमिचन्द्र सैद्धान्तिक-सार्व्वभौम हुए, जिनके चरण चामुण्डराय पूजते थे। माधवचन्द्र, अभयचन्द्र, जिनचन्द्रार्य्य, इन्द्रनन्दि, वसन्तकीर्त्ति, विशालकीर्त्ति, शुभकीर्त्ति-देव, पद्मनन्दि-मुनि, माधनन्दि तथा सिंहनन्दी हुए। चन्द्रप्रभ-मुनि, वसुनन्दि, माधचन्द्र, वीरनन्दि, धनञ्जय, वादिराज हुए। षट्-तर्क्कवक्ता धर्म्मभूषण-गुरु, जिनके चरण-कमलोंको राजाधिराज परमेश्वर, राजा देवराय नमन करता था। विद्यानन्द-स्वामीके एक अत्युत्तम पुत्र सिंहकीर्त्ति-व्रतीन्द्र हुए थे। अश्वपतिके समयमें यही एक महान् तार्किक था जिसने दिल्लीश्वर महमूद सुरित्राणकी सभामें बौद्ध और दूसरे वादियोंको परास्त किया था। विशालकीर्त्तिने जो एक अच्छे वक्ता थे और बलात्कारगणके मुख्य अग्रणी थे, सिकन्दर सुरित्राणसे अच्छा सन्मान पाया था। उन्होंने विद्यानगरके शासक विरूपाक्ष-रायकी सभामें परवादियोंके समुदायको परास्त कर एक विजयपत्र (a certificate of victory) प्राप्त किया था। देवप्प दण्डनाथके नगर आरगमें उन्होंने जैनधर्म्मका प्रतिपादन किया था और ब्राह्मणोंने उनका सन्मान किया था। विशालकीर्त्तिके विद्यानन्द-स्वामी नामका एक पुत्र था, जिसका साल्व-मल्लि-राय आदर करते थे। वह पुत्र तीनों आगमोंमें (धवल, जयधवल और महाबन्ध ही तीन आगमोंके नामसे प्रतीत होते हैं।) पारङ्गत, काव्यके गुणोंसे अलङ्कृत, कई टीकाओंके बनानेमें प्रवीण, परवादीरूपी मेघोंके लिये प्रचण्ड वायुके समान था।

स्वामी-विद्यानन्दके देवेन्द्रकीर्त्ति नामका एक पुत्र उत्पन्न हुआ था, जो भट्टारकोंमें अग्रणी था। उनकी स्तुति व प्रशंसा। उनके चरण-कमल कृष्ण-रायके भाई अच्युत-रायके मुकुटसे पूजित थे।

विद्यानन्द-मुनीश्वर राजा साळुव-कृष्ण-देवकी भक्तिसे पूजित थे। साळुव-कृष्ण-देव राजा वीर-श्री-वर देवरायकी बहिनके पुत्र थे, पद्माम्बा उनका नाम था।

विद्यानन्द-स्वामीके एक सधर्म्मा थे, जिनका नाम नेमिचन्द्र-मुनीन्द्र था। उन्होंने पोम्बुच्चमें पार्श्वनाथकी वसति (मन्दिर) तीन मञ्जिलकी बनवायी थी और बड़ी भक्तिके साथ इसकी प्रतिष्ठा की थी।

विशालकीर्त्तिके सधर्मा अमरकीर्त्तिका उल्लेख। विशालकीर्त्ति-योगीन्द्र-भट्टसे देवेन्द्रकीर्त्तिकी उत्पत्ति। देवेन्द्रकीर्त्यार्य्य—जो पाण्ड्य राज्यसे पूजित थे—वर्द्धमान-से उत्पन्न हुए थे। उनकी प्रशंसा।

देवेन्द्रकीर्त्ति मुनिराजके पुत्र वर्द्धमान-मुनीके द्वारा निर्मित श्लोक बहुत अच्छे हैं। जबतक पृथ्वीपर दया और 'धर्म्म' हैं तबतक यह 'धर्मशासन' स्थिर रहे।

रामचन्द्रके समयका यह धर्म शासन है।

विद्यानन्दके सम्बन्धी वर्द्धमान-मुनीन्द्रके द्वारा लिखित तथा देवेन्द्रकीर्त्तिके द्वारा आदृत और सम्मति-प्राप्त यह धर्मशासन हमेशा स्थिर रहे।]

[EC, VIII, Nagar tl., No. 46]

६६८

मद्दगिरि;—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न।

[वर्ष खर = १५३१ ई० ? (लू० राइस)।]

[मद्दगिरि (दोड्डेरि परगना) में, जैन-वस्तिमें एक पाषाणपर]

श्रीमत्परम-गम्भीर-इत्यादि ॥

क(ख)र-संवत्सरद वैशाख-शुध (द्ध) ५ लु जिनसेन-देवर शिष्यराद माणिक्य ··· ळचिसेनर मल्लिनाथ-स्वामि ··· ··· ··· गोवि-दानि-मयर हेण्डति चयम मल्लिनाथ-देवरिगे अमृत-पडिगे आहार-दानके ··· ···

[जिन शासनकी प्रशंसा। (उक्त सालमें), जिनसेन-देवके शिष्य माणिक्य ··· लचिसेन, मल्लिनाथ-स्वामिके ··· ··· ··· ··· ··· गोवि-दानिमयकी स्त्री चयमे (उक्त) भूमि पूजाके लिये मल्लिनाथ-देवको प्रदान की।]

[EC, XII, Maddagiri tl,. No. 14]

६६९—६७०—६७१

श्रवणबेलगोला;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

६७२

नरलै;—संस्कृत

[सं० १५९७ = १५४० ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[Bhavnagar ins., p. 140–143, t. & tr.]

६७३

अञ्जनगिरि;—कन्नड़-भग्न ।

[शक १४६६ = १५४४ ई०]

(अञ्जनगिरिमें एक पाषाणपर)

श्री शान्तिनाथाय नमः ॥ निर्व्विघ्नमस्तु ॥ शुभमस्तु ॥

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति श्री-**मूलसङ्घदेशीगण पुस्तकगच्छ कुण्डकुन्दान्वयद यिङ्गु-लेश्वर-बळिय** श्रीमद् **वेळुगुल-पुर**वराधीश्वर गुम्मट-जिनेश्वर-पादपद्ममत्तमधुक-रायमानराद तत्कालधर्म्मप्रवर्त्तकराद धर्म्माचार्य्यर विरुदावलि येन्तेन्दोडे ॥ पंडित-पुण्डरीक-कुलमं परिबोधिसियुर्व्वी-कोर्म्म-उद्दण्ड-कुवादिद्दुत्-तममनोडिसि कूडे दिग-म्बर-प्रभा-मण्डन-वृत्तंमं तळेदु भव्य-रथाङ्गमनोवुतावगं **पण्डित-देव**-सूर्य्यनेसेदं नयवाग्-रुचियिं निरन्तरम् ॥ स्वस्ति श्रीमद्-राय-राज-गुरु-मण्डलाचार्य्य भूवलय-वादीश्वर रायवादि-पितामह सकल-विद्वज्जन-चक्रवर्त्तिगळुं **वल्लालराय-जीवरक्ष-पालकाद्यनेक-विरुदावलि-विराजमानरुमप्प श्रीमच्चारुकीर्त्ति-पण्डित-देवरुगळ**

प्रशिष्यराद् तच्छिष्य **श्रीमद्भिनवचारुकीर्त्ति-पण्डित-देव**रगळ प्रियशिष्यराद् तत्पाग्रशिष्य श्रीमच्चारुकीर्त्तिपण्डित-देवरगळ सतीर्थ्यराद् श्रीमच्छान्ति-[क]र्त्ति-देवर [ग]ळ शक-वर्ष ॥ १४६६ सन्द वर्त्तमान **क्रोधि संवत्सरद** कार्त्तिक शुध १५ लू बरसिद शिला-शासनद क्रमवेन्ते-दोडे तम्म गुरु **श्रीमदभिनव-चारुकीर्त्ति पण्डित-देव**रगळु । कलि-काल-धर्म्म-तीर्थ-प्रवर्त्तन-निमित्तवागि तुवर्नावति-नदियिन्द स्वर्ं-प्रत्यक्षरागि **शान्ति-तीर्थेश्वरनु अनन्तनाथ-स्वामियु शक-वरुष १४५३** नेय विकृतु-संवत्सरद चैत्रदलु बिजे-माडलागि **अञ्जनगिरिय**-अग्र-निवासियागिर्द शान्तिनाथ-स्वामिय वसदिगे बिजेमाडिसि गिरियग्रदल्लि दारुमयद-वसदिय माडिसि खर-संवत्सरद चैत्रमासदल्लि स्वानुवराद **कोणसनगरद (गुड्ड) शान्तोपाध्याय**र कय्यिन्द प्रतिष्टेय माडिसि शिलामयवाद वसदिय माडिसेन्दु बुद्धि गतिसलागि आनन्द मुन्दे क्रोधि-संवत्सरद कार्त्तिक शु १५ नेलेगे कलु-गेलस हालदारिगल नडसिद विवर **नञ्जरायपट्टण**क्के सलुव [ग]ळ वृतन्हळि-मलगनकेरेय समस्त-हलरिं कलु-गेलसक्के सन्द होन्नु ग २०० हनसोगेय आदि-श्री-अव्वगळु अम्मन-होसहळिळय भुजबलि-श्री-अव्वगळिन्द गर्ब्ब-गृहव गैवल्लि कलु-गेलसक्के सन्दु ग ३० होन्नु तम्म गुरु श्रीमच्चारुकीर्त्ति-पण्डित-देव**रगळिगे तावित्तण्डक्के मूरु **हालदारे** मध्य-भागिलिलि वोन्दु-होत्तिन नैवेद्यक्के शेल सन्दु ग ५० आहार-दानक्के शेल सन्दु ग [५०] । शुभकृतु-संवत्सरद पा (फा) ल्गुन शु १५ लू अञ्जनगिरिय शान्तीश्वरगे विदिरे सीताळ-मळिगेय समस्त **हलरु** कन्नडिग-हलरु नानादेसिय-हलरु माडिद धर्म्म । [न्] आड कट्टिद कालु-नडे वोण्डक्के ग ०-१ वनु आहार-दानक्के कोडुवेयु येन्दु बरसिद ई धर्म्म-शासन थी-धर्मक्के तप्पिदवरु गो ब्राह्मर कोन्द दोषक्के होवरु [॥]

(बायीं ओर) **शक वरुष १४६५** नेय **शुभकृतु-संवत्सर**द चैत्र शुद्ध १३ बुधवार वृषभ-लग्न (न) दल्लि मुरु तण्ड **देहारगळु** कुल-प्रतिष्टे यायितु ॥ दानशासनलेगे हल्लि वयल गद्देय क्रयद मौल्य ग ७० कोलायरु होस गद्दे गैंदुदक्के कोट्टु ग ५० उमयं वेच्च ग १२० क्के आदाय श्रीमच्चारुकीर्त्ति-पण्डित-देवरुगळ शिष्यरु **हनसोगेय** आदि-श्री-अव्वगळु भुजबलि-श्री-अव्वगळिं ग २४ वस-

वप [त्त] द अनन्तमति-अव्वगळु नेमि-श्री-अव्वगळि सन्ददु ग २४ मुड्डि-सट्टिय विजेय् [अ]-श्री-अव्वगळि सन्ददु ग १० मलुगनहळिय आद्यकगळि सं ग १२ हारुव-सट्टिय विजेय-ण-शट्टिरि ग ३० कण्णनूर देव-रम्म-शट्टियरि ग १२ [ण्] सुं [डि] य अ [र] स ··· ··· (शेष भूमिमें गड़ा हुआ है) : (दायीं ओर) [पंक्ति ६९–१०७ में तीन वे ही अन्तिम श्लोक हैं जो 'स्वदत्तां परदत्तां, दानपालनयोर् तथा 'स्वदत्ताद्द्विगुणं' हैं]। ई माडिद धमवु आचन्द्रार्क्क-स्थायियागि नडेयलि येन्दु वरसिद धर्म्म-शासनक्के मङ्गल-महा श्री श्री ।

[श्री-मूलसङ्घ, देशीगण, पुस्तकगच्छ, कुण्डकुन्दान्वय, और इङ्गलेश्वर शाखाके एक पण्डित-देव थे । इनका नाम **चारुकीर्त्ति**-पण्डित-देव था । इन्होंने **बल्लाल-रायके** प्राणोंकी रक्षा की थी । इसीलिए इनको लेखमें 'बल्लालराय-जीवरक्षपालक' कहा गया है । इनके प्रशिष्यके शिष्य श्रीमदभिनवचारुकीर्त्ति-पण्डित-देव हुए । इनके प्रिय शिष्य श्रीमच्छान्तिकीर्त्ति-देव ने, शक वर्ष १४६६ के बीत जानेपर जब क्रोधी संवत्सर विद्यमान था, तब कार्त्तिककी पूर्णिमाको एक शिलालेख इस तरह लिखवाया :—

उसके (शान्तिदेवके) गुरू श्रीमदभिनवचारुकीर्त्ति-पण्डितदेवने—जब कि, कलिकालमें धर्म्मतीर्थकी प्रवृत्तिके लिये स्वयं शान्तितीर्थेश्वर और अनन्तनाथ-स्वामी शक-वर्ष १४५३, जो कि विकृत संवत्सर था, के चैत्रमें सुवर्णावती नदीके किनारेसे आकर प्रगट हुये,—अञ्जनगिरिके शिखरपर स्थित शान्तिनाथ स्वामीकी वसदिके दर्शन कर, तथा **खर** संवत्सरके चैत्र महीनेमें पहाड़ीकी चोटीपर एक लकड़ीकी वसदि बनवाकर उसकी प्रतिष्ठा अपने छोटे भाई कोनसनगुड्ड शान्तोपाध्यायके हाथ से करायी और एक पत्थरकी वसदिके बनानेका निर्देश किया ।

तत्पश्चात्, अगले वर्ष क्रोधी संवत्सरमें, कार्त्तिकी पूर्णिमाको जब पाषाणकी नींव पड़ गयी तब 'हालदारे' (शायद मन्दिरके खर्चके लिये किया गया [illegible] का जो संग्रह हुआ वह लेखमें दिया हुआ है । 'होन्नु' और 'गद्याण' ये उस समयके सिक्के विशेष हैं ।

शुभकृतु संवत्सरमें, फाल्गुणकी पूर्णिमाको समस्त 'हलरु' का 'धर्म्म' (शायद ट्रस्ट) 'धर्म्म-शासन (ट्रस्टडीड) में लिखकर किया गया। १४६५ शक वर्ष, [illegible] शोभकृतु वर्ष था, चैत्रशुक्ला त्रयोदशी, बुधवारको ३ शरीर रक्षक (देहारगळु) कुल-प्रतिष्ठाके लिये नियत किये गये थे ; इसके बाद एक दान-शालेके लिये जो चन्दा भरा गया था उसका वर्णन है।]

[EC, I, Coorg. ins., No. 10.]

६७४

गोवर्द्धनगिरि;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[विना काल-निर्देशका, पर लगभग १५६० ई० का (लू. राइस)]

[गोवर्द्धनगिरिमें, वेंकटरमण मन्दिरके सामनेके पीतलके खम्भेपर]

(मुख) श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम्॥

नमश् श्री-**नेमिनाथाय** जगदानन्द-दायिने।
यद्-बुद्धि-कामिनी-मध्ये त्रिलोकी त्रिवलीयते॥
लीलाघ्रातैकवल्ली-कुसुमवदभवत्कम्बुरारावमानाः
शैयाभूद् व्यालरूपा झटिति मुकुलिता तूणिवच्चारुशर्णम्।
पञ्चेषोरित्तु-चाप-प्रतिनिधिरभवद् भूतले यस्य शक्त्या
तं वन्दे मुक्ति-कान्ता-वश-गत-मनसं **नेमिनाथं** नितान्तम्॥
यत्कान्त्या भुवन-त्रये चुलुकिते कृष्णन्ति सर्व्वे जनाः
सर्व्वं विष्णुमयं जगत् प्रवचनं तस्मादभूद्भूतले।
श्रीऽस्मान् पातु बलोऽच्युतेश्वर-शिरोलङ्कार-पादाम्बुजो
दिव्य-ध्वान-पवित्रित-त्रि-भुवनः श्री-**नेमि-भट्टारकः**॥
अमृत-श्री-कान्तमागिर्दखिल-सुख-समुच्छ्राय मागिर्दनाना-

समल-प्रध्वंषि (सि) यागिद्दं निमिप-खग-संसेव्यमागिद्दं देवो-
त्तमनागीशोत्तमङ्गार्प्पित-निज-पदमागिद्दं वाराशि-चन्द्रो- ।
पममागिर्द्दि-निजाकारमे रामेगे विळासास्पदं **नेमिनाथा** ॥
यत्कारुण्यमशेष-भव्य-जगतां भास्वत्-तनुत्रायते
यद्-दिव्य-क्रम-मञ्जु-कञ्ज-युगळं श्री-देव-रत्नायते ।
यद्-वाक्-पंक्तिरपार-जन्म-जलधेः सेतु-प्रबन्धायते
सोऽयं रक्षतु रक्षिताखिळ-जनः श्री-**गुम्मटाधीश्वरः** ॥
वगेयल् श्री-योजण-श्रेष्टिय-विशद-यशो-मूर्त्ति सुस्फाटिकोद्यन् ।
मृगराजोद्दासनं चन्द्रनवोलेसेये तल्लक्ष्म-लक्ष्मी-प्रभा-पुञ्-
जगळेम्बन्तात्म-देह-प्रभेगलेसेयलोप्पिर्द्द नोल्द**ः**च्चण-श्रे- ।
ष्ठिगे निच्चं माळ्के नित्योत्सवमननुपमं **नेमिचन्द्रं** जिनेन्द्रम् ॥
जम्बू-द्वीप-महाब्ज-दक्षिण-दले श्री **भारते** विद्यते
देशः पश्चिम-वार्धि-पूर्व्व-तटगः श्री-**तौळव**ाख्यो महान् ।
तस्मिन्नम्बु-नदी-सु-दक्षिण-तटे श्री-पुण्ड्रवद्भासते
श्रीमत्**क्षेमपुरं** पुरन्दर-पुर-प्रख्यं स्फुरद्-गोपुरम् ॥
वर-जिन-चैत्य-गेह-नृप-सद्म-नियोगि-[···] वास-वैश्य-मुन्
दिर-निकुरम्बदिं विमल-धर्म्म-दयान्वित-दान-शौण्डरिम् ।
गुरु-यति-वृन्ददिं कवि-बुधोत्करदिं वर-भव्य-कोटियिम् ।
सुरुचिर-**गेरसोप्पे**यवोलाव-पुरं जगदोळ् प्रसिद्धमे ॥
श्रीमत्-क्षेमपुरेश्वरस्सकल-भू-भूपाल-चूड़ामणिः
श्रीमद्**देव-महीपति**र्व्विजयते सद्-राज-विद्या-पतिः ।
येनकारि कलौ महेन्द्र-विषयं श्री-**गुम्मटाधीशितुर्**
ल्लोकात्यद्भुत-मस्तकाभिषवणं जन्माभिषेकोपमम् ॥
आ-महाराजनन्वयमेन्तेन्दोडे ॥
जलनिधि-रेखे पत्रिंवळयं यन-वेले सु-केशरांळि भू- ।
तळमे नवाम्बुजं निज-यशं विशरन्मकरन्द गन्धमु- ।

चल-दिन-धर्म्म-सूर्य्यनिनलर्चिदुदं निज-हस्त-पद्मदोळ् ।
वळेदु सु-लीलेयिन्दरेवरा-पुरमं नृपराळ्दु पोगलुम् ॥

न्तगण्य-पुण्य-निधिगळ्दु कलि-मुख-हस्त मावनियङ्कार कठारिविणेवाद्यनेकान्वर्य-विरुदावळी-विराजमानरं **सोम-वंश काश्यप-गोत्र**-पवित्रमेनिसिद अनेक-भूपालकरा-पुरमनाळ्द बळिक्कम् ॥

तस्मिन् क्षेमपुरे नृपस्तममवत् सद्-वंश-मुक्ता-मणिः
तेजो-राशिरचिन्त्य-निर्म्मलतरश्चारित्रतात्मोदयः ।
सद्-वृत्त-प्रथित-स्फुरद्-गुरु-गुण-स्थानं जगद् भूषणम्
श्रीमद्-**भैरव-भूपति**र्जिन-मत-क्षीरोद-राकापतिः ॥
तदनुजवर-रत्नं **भैरवाख्य**स्ततोऽभूत्
तदवरज-शशाङ्कः श्रीमद्**दम्म-क्षितीशः** ।
तदुभय-नरपाभ्यामुत्तरे **साल्व-मल्ल**ः
क्षममवदवनीशस्तत्कनीयान् महीयान् ॥
द्विज-जन-सुर-धेनुः सोम-वंशाब्ध-भानुः
कृत-जिन-रथ-यात्रः काश्यगोदार-गोत्रः ।
वर-कलि-मुख-हस्तः सद्गुण-व्रात-शस्तस्
त्रिभुवन-भट-मल्लः श्री(सो)ऽमवत् **साल्व-मल्ल**ः ॥
पश्चात् **साळुव-मल्ल-राय**-नृपतेः श्री-भागिनेयाग्रणीः
क्षत्रोपाय-विचार-चारु-चतुर-श्री-**देव-राय**ोऽमवत् ।
श्रीमत्**पण्डित-राय**-राज-गुरु-सत्-पादाब्ज-पुण्यन्वयः
क्षमाङ्कोन्नत-वैभवाढ्य-नगरी-राज्ये ह-रत्नामणिः ॥
(दक्षिण मुख) तद्-भागिनेयोऽजनि **साल्व-मल्ल**स्
तुल्यानुजोऽभूद् वर-**भैरवेन्द्रः** ।
यौ लोक-पुण्येन वरां विमाताम्
जिनेन्द्र-चन्द्राविव सत्यशौ ॥

वृ ॥ समराम्भोराशियोळ् सुत्तुव सुळिगळिवेम्बन्ते नीनेरिदश्वो- ।
त्तमदिन्दं वेडेयङ्गळ् पसरिसे रिपु-राजेन्द्ररेरिद्दं मत्ते- ।
भ-महा-वानि-व्रजङ्गळ् पडगुगळत्रोलर्द्दल्के नुङ्गुत्तमिर्क्कुम् ।
क्रमदिं त्वत्पादयुग्मं मकर-युगदवोल् **साल्व-मल्ल**-क्षितीश ॥
श्रीमद्-**भैरव**-भूप-मेरुमनिशं ··· सर्व्व-देवालयम्
सद्-गो-मण्डलमाश्रमत्यपि यं अस्पृष्ट्वा द्विजेशं करैः ।
तन्मन्ये तवक-प्रताप-सवितुः साम्यश्च साद्राम्बरो
नाहं नाथमिति प्रकम्पित-तनुः सत्यापयत्यंशुमान् ॥

अन्ततिप्रसिद्धराद युवराजरेनिसिद इर्व्वरळियन्दिरिं भक्ति-युक्तराद उळिद राज-कुमाररिं दण्डोपनतराद अन्य-मण्डलिकरिन्दोलगिसिकोळ्पट्ट देव-रायं **तुळु-कोङ्कण-हैवे**-मुन्ताद भूमण्डलमं भूमण्डलाखण्डल-नेनिसि आळुत्तमिरेम् ।

आ-पोळल्लोळ् श्री **देव**-म- ।
हीपाल-सुपालितोरु-तेजोमान्य- ।
व्यापित-राज-श्रेष्ठि र- ।
मा-परिवृढनिर्प्पन**म्बण-श्रेष्ठि**-वरम् ॥
आतन कान्ते शील-गुणवन्ते कला-गुणवन्ते जैन-मार्ग्ग-
आतत चित्ते धर्म्म-पर-वित्ते जन-स्तुत-वृत्ते सत्कुल-
ख्यात सुरूपे सन्मति-कलापे विनिर्गत-कोपे एन्दुघा-
त्री-तळमोप्पे **देवरस्सियं** पोगुल्गुं गुण-रत्न राशियम् ॥

अवरिर्व्वरन्वयमन्तेन्दोडे ॥ श्रीमद्-राजाधिराजं **वनवसि-पुर**-वराधीश्वरं **कोङ्कण-हैव** राज्याधीशनप्प चन्दाऊरद **कदम्ब-कुल**-तिलक **कामि-देव-महाराजन** दण्डाधिनाथ कामेय-दण्णायकन सु-पुत्र **रामण-हेग्गडेगं** रामकगं पुट्टिद अष्ट-पुत्ररोळगे अतिप्रसिद्धनाद **योजन-श्रेष्ठिगे** तङ्कणनुं **रामक**नुमेम्ब इर्व्वरु कुल-वधुगळादरवरोळु तङ्कणङ्गे **रामण-श्रेष्ठियुं** रामकङ्गे **कल्प-सेट्टि**युमेम्ब तनुजरादर-वरोळ् कूडि ॥

कं ॥ प्रियतमेय दय्वदिन्दं । नयन-द्वयदिन्दे वक्त्रमोप्पुव-तेरदिम् ।
वयदङ्कदाने दन्त- । द्वयदिन्देसेवन्तेयोप्पिदं योचौणम् ॥

व ॥ अन्तेनिसिद **योजण-श्रेष्ठी** श्रीमद्**नन्तनाथन** चैत्यालयमं **क्षेमपुरद**ोळ् कट्टिसि अन्तामहदिर्द्द कीर्त्ति-पुण्यक्के नेलेयागिर्द्दु अन्त्य-कालदोळ् तन्न राज-श्रेष्ठि पदवियं तन्न पुत्ररिगोप्पिसि सुर-लोक-प्राप्तनादनिच्चलु ॥

कं ॥ **रामण-सेट्टिय** तनुजन् ।
कामनिमं तम्मग.ङ्कनातन तनयम् ।
श्री-महित-नागपङ्कन् ।
भूमीश्वर-मान्यनादनैदे वदान्यम् ॥

व ॥ **आ-नाग-सेट्टिय** कुल-स्त्रियरारेन्दोडे वातमनुं नागमनुमेन्दु विख्यादर नगरी-राज्यदोळ् प्रसिद्धमाद कुदुर-पुरदोळ् पुट्टिद सर्व्व-तेजो मान्यदिन्देसेव तोळहळ-वळिय आ-वातम्मगं हट्टिगन-वळिय आ-**नागप्प-श्रेष्ठि**गं तोटियण्ण-सेट्टियेम्ब सुपुत्रनादम् ॥ मत्तं नागमनन्वयमेन्तेन्दोडे ॥

कं ॥ विदु सिरिगे तवर्मनेयेनि- ।
सिद नगरी-सीमेयाद मागोडोळ् पु- ।
ट्टिद दण्डुवळिय सोवगिन ।
मोदलेनिसिदनल्ते नरस-नायकनेम्बम् ॥

अन्तेनिसिद नरसण-नायक्कं तन्न जन्म-स्थानमाद मागोडोळु चैत्यालयमं कट्टिसि श्री-**पार्श्व** तीर्थेश्वररनल्लि प्रतिष्ठेयम् माडिसि चतुर्व्विध-दानक्के यथायोग्यमागि क्षेत्रादिक्रमम् कोट्टु पुण्यके भाजनमादम् ॥ मत्तमातन मोम्मगळु मारक्कनं **हैवे**-राज्यक्के मुख्यवाद **हरियट्टेय**-सीमेगे बन्द अन्तरवळियल्लि हुट्टिद हट्टिगन-वळिय **नेमण-सेट्टि**गे कोडे अवर्ग्गे हुट्टिद नागमनमा-**नेमण-सेट्टि** तन्न तोदरळिय **नाग**[illegible]**-सेट्टि**गे धारापूर्व्वकं कोडे ॥

वृ ॥ पति-चित्तानुगुण-प्रवर्त्तनदिनत्यार्य्य-सौकर्य्य-सं- ।
युत-शीलोन्नतियिं जिनेन्द्र-पद-पूजासक्त-सद्-भक्तियिम् ।

सततोत्साह-सुदानदिं पर-हित-व्यापार-चातुर्य्यदिम् ।
क्षितियोळ् नागमनान्तळुत्तम-यशः-सौभाग्यमं भाग्यमम् ॥

कं ॥ आ-**नागप्प-श्रेष्ठि**गम् ।
आ-नागम्मङ्गे पुट्टिदर् स्सुतरिर्व्वर् ।
भू-नुतम्बणेरम्बी- ।
दानोन्नत-**मल्लि-सेट्टि**येम्बी-पेसरिम् ॥

व ॥अन्ता-**नागप्प-श्रेष्ठि** पुत्र-कळत्र-मित्ररोळ् कूडि सुखदिनिर्द्दम् ॥ (पश्चिम मुख) मत्तमम्बण-श्रेष्टिय कुल-स्त्रीयरारेन्दोडे मल्ल मनुं देवरसियुमेम्बिर्व्वरोळ् देवरसिय अन्वयमेन्तेन्दोडे ॥ धरेयोल् नेगळ्ते-बडेद पिरि-**योजण-श्रेष्टी**य पुत्र **रामण-सेट्टि**य सापत्नं **रामक्काम्बा**-गर्भोद्भिध-चन्द्रनेनिसिद **कल्लप्प-श्रेष्टि** दान-पूजादि-सत्-कृत्यदिं धरणियोळ् प्रसिद्धनादम् ॥

कं ॥ **कल्लप-सेट्टि**य तनुजम् ।
पुल्लशराकार-**योजण-श्रेष्टि**-वरम् ।
सल्ललित-यशं जिन-पद- ।
पल्लव-कमनीय-भक्ति-लतिकाव्रोगम् ॥

अन्ततिप्रसिद्धिनाद राज-श्रेष्टियाद योजण-श्रेष्टिगे तोगरसियोळ् पुट्टिद होलेयबळिगे श्रेष्टनाद देवी-सावन्तन वडहुट्टिद वङ्कन बळिलोळु चैत्यालयमं कट्टिसि धर्म्मं माडि प्रसिद्धनाद विदरु-नाडिगे मुख्यनाद माडु-गौडन तङ्कि वीरक्कनेम्ब कन्निके वधुवागे आ-योजन-श्रेष्टि सुखदिनिरुत्तं तन्न पितृ **कल्लप्प-श्रेष्टि**य नियोगदिं **क्षेम-पुर**-दोळु चैत्यालयमं द्वि-तलमागि कट्टिसि केळगण नेलेयोळु श्री-नेमीश्वरन प्रतिमेयं मेगण नेलेयोळु श्री-**गुम्मटनाथन** प्रतिकृतियं प्रतिष्ठेयं माडिसिद आ- **योजन-श्रेष्टि**य कीर्त्तिय मूर्त्तियन्ते पुण्यद पुञ्जदन्तिर्द्दा-चैत्यालयमेन्तेन्दोडे ।

वृ ॥ हरि-वंशारिष्टनेमि-स्थिर-निवसनदिन्दूर्ज्जयन्ताद्रियिं भा- ।
स्कर-रत्न-स्पर्शं-कूपोन्नतियिनुदिनं रोहणाद्रीन्द्रमं भा- ।

सुर-सौधर्म्मागमर्षि-स्थितियिनमर-शैलेन्द्रमं सत्पताको -।
त्करदिं नाट्याङ्गमं पोल्तेसवुदु भुवन-स्वामि-नेमीश-वासम् ॥

न्तेसेव चैत्यालयमं कट्टिसि सुखदिनिरुत्तमा-योवण-श्रेष्टि तनगं वीरक्कंगं पुट्टिद सुतरोळु ।

कं ॥ संगरसनिन्दे किरियळु ।
मंगल-गुणि कल्पपाङ्गनिन्दं पिरियळ- ।
नङ्गन चय-सिरियन्ते म- ।
नङ्गोळिर नतक्कनेम्ब कन्या-रत्नम् ॥ ,

व ॥ आ-क्षत्रिकेयं बट्टकळद सेट्टिकाररोलु मुख्यनेनिसिद संघकोव्वं ··· होळेयोळु चैत्यालयमं कट्टिसि दान-पूजादिगळिन्दति-प्रसिद्धेयाद कञ्चधिकारिय पेण्डाति माळधिकारितिगे पुट्टिद पारिसणधिकारिय तङ्गे गुम्मट-देविगं पुट्टिद **कञ्चण-सेट्टिगे** विवाह-पूर्व्वकं कोडे ।

कं ॥ आ यिर्व्वरिगं पुट्टिद- ।
ळायत-बलवाप्ति देवरसियेम्बळ् ताम् ।
कायद-रायन मोह-स- ।
हायद शक्तियवोलेशेव रूपोन्नतियिम् ॥
आकेयनुजाते मदन-प- ।
ताकेयवोल् बनद मनद कोनेयोल् निमिर्दा- ।
लोके सुते पुट्टिदळ् सी- ।
लोन्नते **मल्लि-देवि**येम्बी-पेसरिम् ॥

आ-(अ) नतक्कमिन्तोप्पुव पेण्-मक्कळिर्व्वरं पडदु अवरिर्व्वरोळ् पिरिय-मगळु देवरसियम् । तनगण्णनागल् वेडिद्दं **नागय्य-श्रेष्ठिय** मग अम्बुवण-श्रेष्टिगे विवाह-पूर्व्वं कुडे ।

कं ॥ रतियुं रतिपतियुं श्री-
सतियुं श्रीपतियुमिर्प्पन्तेरदिं भोग- ।

स्तितियननुभविसुत्तं जिन- ।
मतदोळति-प्रियरागि सुखदिन्दिर्द्दर् ॥

व ॥ अन्ता-दम्पतिगळिर्व्वरुं सुखदिनिरुतमोन्दानोन्दु-दिवसं वन्दना-भक्तियिं **नेमि-जिन**-चैत्यालयक्के बन्दु ।

वृ ॥ जन-नेत्र-भ्रमरावली-कुसुमितोद्यानं मुनीन्द्रौघ-चि- ।
त्त-नवीनाम्बुरुह-प्रभात-समयं विद्वज्जनस्तोत्र-दि- ।
व्य-नदी-पूर-हिमाचलं निज-महा-सौन्दर्य्यमेन्देम्ब सज्- ।
जनता-संस्तुति निन्नोळेनमर्दुदै श्री-**नेमि**-तीर्त्थेश्वर ॥

एम्बिवु मोदलाद स्तुतियिं **नेमि**-स्वामियं स्तुतियिसि मुनि-वृन्दारकरं वन्दिसि बळियं अभिनव-**समन्तभद्र**-मुनियिं धर्मम केळ्दु मनदे गोण्डु आ-दम्पतिगळिर्व्वरुं तमगे पुण्यार्थवागि तमगे अजनाद **योजण-श्रेष्टि** कट्टिसिद **नेमीश्वर**न चैत्यालयद मुन्दे मानस्तम्भमं माडिदयेवेन्दु गुरुगळिगे विन्नविसि तम्म गृहक्के पोदि तम्म वहवुट्टिदराद **कोटण-सेट्टि-मल्लि-सेट्टि**-मुन्ताद बान्धवानुमतदि तम्म चोडेयनेनिसिद देव-भूपालङ्गे ई-धम्मगार्य्यवनेचरिसि आ-महाराजननुमतदिं चतुस्संघदनुमतदिम् (उत्तर मुख) शुभ-दिन-दोळ् कांस्यमय-मानस्तम्भमं माडिसि दयेवेन्दु निश्चयिसिर्प्पन्नेगम् ।

कं ॥ कमलिनियुं कुमुदिनीयुम् ।
क्रमदिं कासार-लक्ष्मिगुदयिपवोल् श्री- ।
सम-देवरसिगे पुट्टिद- ।
रममेने पद्मरसि देवरसियेन्दिर्व्वर् ॥

अन्तिर्व्वरु-सुतेयरं पडेदु अदे-शुभ-सकुनमादन्ते कांस्यमय-मानस्तम्भमं माडिसि आ-चैत्यालयद मुन्दे प्रतिष्ठेयं माडिसिदरु । आ-(मा) मानस्तम्भक्के

कं ॥ पोन्न-कळसमने माडिसि ।
सन्नुत-पद्मरसि-देवरसि इर्व्वर् त्ताम् ।

उन्नत-मानस्तम्भकेय् ।
उन्नतियागिप्प-तेरदे पद्विन्दित्तर् ॥

-मानस्तम्भमेन्तेन्दोडे ॥

वृ ॥ भरदिं जन्माब्धियं दाण्टिसुव वर-महा-धर्म्ममेन्देम्ब पोतक्
उरुकूप-स्तम्भमम्बाङ्कन विशद-यशः-पट्टिका-स्तम्भमेम्बन्त् ।
इरे मानस्तम्भमा-कूटदोळेसेव चतुर्ज्जैन-बिम्बाङ्घ्रि-पूजा- ।
परिकीर्णोत्फार-पुष्पाञ्जलियोलेशेवुदी-व्योम-तारा-कदम्बम् ॥
श्रीमन्नेमीश्वरोद्यज्-जिन-गृह-पुरतः प्रस्फुरत्-कांस्य-मान-
स्तम्भं सद्धेमकुम्भं शुभमभिनव-सामन्तभद्रोपदेशात् ।
नागप्प-श्रेष्ठि-पुत्रः स्फुरदुरु-विभवादम्बण-श्रेष्ठि-वर्य्यः
सद्-धर्म्म-च्छत्र-दण्डं प्रमुदित-मनसाकारयद् भूरि-शोभम् ॥

अन्तु मान-स्तम्भमं माडिसिदरु ॥

[जिन-शासनकी प्रशंसाके बाद, नेमिनाथ भगवान्को नमस्कार और उनकी प्रशंसा । गुम्मटाधीश्वरसे रक्षा की कामना । अम्बण-श्रेष्ठीको नेमिचन्द्र जिनेन्द्र की ओरसे मङ्गल-कामना ।

जम्बू-द्वीपमें भारत देश, उसमें तौलव देश; उसमें अम्बुनदीके दक्षिण किनारे पर क्षेमपुर है । उसमें गेरसोप्पे नगरकी शोभाका वर्णन ।

क्षेमपुर का अधीश देव-महीपति था । इस महाराज के वंशावतार का वर्णनः—क्षेमपुर में पूर्व में कई राजा हुए । उनमें एक भैरव-भूपति था । यह जिन धर्म रूपी समुद्रके लिये चन्द्रमा था । उसके छोटे भाई भैरव, अम्ब-क्षितीश तथा साल्व-मल्ल थे । इनमेंसे साल्वमल्ल यद्यपि सबसे छोटा था, तथापि सबसे महान् था । उसको सोम-वंश तथा काश्यप-गोत्र का बताते हुए उसकी प्रशंसा की गयी है । उसके बाद, उसकी बहिनका पुत्र देवराय नगर और राज्य का वैसा ही बराबरीका रक्षक रहा । उसकी बहिनका पुत्र साल्व-मल्ल रहा, जिसका छोटा

भाई भैरवेन्द्र था। राजा साल्व-मल्लकी प्रशंसा। राजा भैरवकी मेरु-पर्वतसे उपमा देते हुए उसकी प्रशंसा।

जिस समय देवराय, इस तरह अनेकोंकी भक्तिके साथ तुळु, कोंकण, हैवे तथा दूसरे देशोंपर राज्य कर रहा था:—

उस नगरमें, राजा देवसे रक्षित, महाप्रसिद्ध, राजश्रेष्ठी अम्बण-श्रेष्ठी रहता था। उसकी पत्नी (प्रशंसा सहित) देवरसि थी। उनकी वंश-परम्पराका वर्णनः— राजाधिराज, वनवसि-पुरका मुख्य अधीश, कोंकण और हैव राज्यका मुख्य अधीश, चन्दाउर कदम्ब-कुल-तिलक कामिदेव-महाराज थे। उसके दण्डाधिनाथ कामेय-दण्णायकका पुत्र रामण-हेगडे और रामकके ८ पुत्र उत्पन्न हुए थे, जिनमें सबसे प्रसिद्ध **योजण-श्रेष्ठी** था, जिसकी दो स्त्रियें तङ्कण और रामक्क थीं। पहिलीके रामण-श्रेष्ठी तथा दूसरीके कल्य-सेट्टि हुआ। इन अपनी प्रिय दो भार्याओं सहित योजण समृद्ध हुआ। इस योजण-श्रेष्ठी क्षेमपुरमें अनन्तनाथ चैत्यालय बनवाकर तथा इसके अतिरिक्त और भी अगणित पुण्य प्राप्त करके अपना राज्य-श्रेष्ठिका पद अपने पुत्रोंको सौंपकर स्वर्गलोकको चला गया। दूसरी तरफ, रामण-सेट्टिका पुत्र तम्मन था, जिसका पुत्र नागप हुआ। उसके दो पत्नियाँ थीं, सातम और नागम। सातमसे हट्टिगमें तोटियण्ण-सेट्टि नामका पुत्र उत्पन्न हुआ। इसके बाद नागमका अवतार (उत्पत्ति) कैसे हुआ, यह बताया है। नागम और नागप्प-सेट्टिसे दो लड़के उत्पन्न हुए थे, अम्बण-श्रेष्ठिके मल्लम और देवरसि नामकी दो पत्नियाँ थी। इसके बाद देवरसिकी उत्पत्तिका वर्णन है।

जब ये दोनों अम्बण-श्रेष्ठी और देवरसि पूर्ण शान्ति और सुखसे रह रहे थे, एक दिन वे नेमि-जिन चैत्यालयमें आये, और नेमि-तीर्थेश्वरकी (उद्धृत) स्तुतिको दुहराते हुए मुनिगणका सम्मान किया। इसके बाद, अभिनव-समन्तभद्र-मुनिसे धर्म सुनकर और इसे हृदयमें धारण कर गुरूको सूचित किया कि वे अपने पितामह योजन-श्रेष्ठिके द्वारा बनवाये गये नेमीश्वर-चैत्यालयके सामने मानस्तम्भ बनवायेंगे। इसके बाद घर जाकर, अपने भाई कोरण-सेट्टि और मल्लि-सेट्टि और

अन्य रिश्तेदारोंसे सम्मति लेकर इन्होंने इस पुण्य-कार्यको करनेका इरादा देव-भूपालसे प्रकट किया। और महारावकी सम्मति, चतुर्विध संघकी सम्मतिपूर्वक, ऐसे शुभ दिन उन्होंने अपना इरादा पूरा किया तथा घण्टेकी धातु (Bell-metal) का स्तम्भ बनवा दिया। इसी अन्तरालमें, देवरसिके पद्मरसि और देवरसि नामकी युगल पुत्री उत्पन्न हुईं। उनकी ही ऊँचाई जितनी ऊँचाईका सुवर्ण-कलश चैत्यालयके सामने उस स्तम्भपर चढ़वाया।

इसके बाद मानस्तम्भका वर्णन है।]

[EC, VIII, Sagar tl., No. 55]

६७५

शत्रुञ्जय—प्राकृत।

[सं० १६२० = १५६३ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

६७६

सिरोही—संस्कृत।

[सं० १६३४ = १५७७ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[H. H. Wilson, Asiat. Res., XVI, P. 316, No XLIII, a]

६७७

हेग्गेरे;—कन्नड़।

[शक १५०० = १५७८ ई०]

[हेग्गेरेमें, वस्ति के एक पाषाणपर]

श्री शुभमस्तु स्वस्ति श्री जयाभ्युदय-शालिवाहन-शक-वरुषङ्गळु १५०० मेले प्रमाथि-संवत्सरद माघ-सुद १ लू श्रीमन्महामण्डलेश्वर श्रीपति-

राजगळ मग **राजय्य-देव-महा-अरसुगळ** कुमारर **वल्लभराज-देव-महा-अरसु**गळु तानु आळुतिद्द **मगरनाड** होयिसळ-राज्यक्के सलुव **वूडिहाळ-सीमे** योळगण वस्तिय चिन-देवरिगे कोट्ट भू-दानद **हेग्गेरे**य वस्तिय मान्यद जीर्णोद्धारद क्रमवेन्तेन्दरे **गुत्ति**य **हरदर सूरय्य**न मग **चिन्नवर**द **गोविन्द-सेट्टि**यु **हेग्गेरे**य वस्तिय देवर-मान्यव पालिसवेकेन्दु विन्नह माडिकोळलागि आतन विन्नहव पालिसलू तमगू अनेक-धर्माभिवृद्धियागवेकेन्दु **हेग्गेरे**य गौडनकेरेय केळगण (दानकी विगत) अक्षरदल्लू हदिनैदु-कोळग देवदायमान्यद गद्देयनू यी-आरभ्यवागि प्रतिवर्ष प्रति-फलदल्लू नीर-सरदियलि कोट्टु वहेऊ एन्दु **श्रीपति-राज**गळ वल्लभराज-देव-महा-अरसुगळू पालिस्त वस्तिय देवदाय भू-दान जीर्णोद्धारवह ... शासन (वे ही अन्तिम वाक्य) श्री **हेग्गेरे**य स्थळदल्लु काडारम्भद होल ख...४

[शुभमस्तु। स्वस्ति। (उक्तमितिको), महामण्डलेश्वर श्रीपति राजके पुत्र राजय्य-देव-महा-अरसुके पुत्र वल्लभराज-देव-यह अरसुने अपने द्वारा शासित मगर-नाड्में होय्सल राज्यके वूदिहाळ-सीमेमें वस्तिके जिन देवके लिये निम्न शासन, हेग्गेरे वस्तिके 'मान्य' की पुनः स्थापनाके लिये प्रदान किया; गुत्ति हरदरे-सूर्यके पुत्र चिन्नवर-गोविन्द-सेट्टिने इस बातका प्रार्थनापत्र देकर कि हेग्गेरे वस्तिके देवकी 'मान्य' चालू होनी चाहिये,—इस प्रार्थनापत्रको मान्य करनेके लिये, तथा अपनी समृद्धिके लिये, हम (उक्त) भूमियाँ जो कि कुल मिलाकर धान्यक्षेत्रके १५ कोळग (एक नाप-विशेष) होते हैं, फसलके समय जलका वार्षिक क्रम भी आजसे ही चालू करते हैं। वल्लभराज-देव-महा-अरसूके द्वारा प्रदत्त, वस्तिके देवदायका प्रस्थापक भूमिके दानका शासन ऐसा है। हेग्गेरे-स्थलमें (उक्त) शुष्क भूमिका दान भी हुआ।]

[EC, XII, Chik-Nayakan halli tl., No 22.]

६७८

शत्रुञ्जय—प्राकृत ।

[सं० १६४०=११८३ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

६७९

तारंगा—संस्कृत और गुजराती ।

[सं० १६४२=१५८५ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[J. Kriste, EI, II, no r, No 29 (P. 33-34),t. et. a.]

६८०

कारकल;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक सं० १५०८ =१५८६ ई०]

श्री वीतरागाय नमः ॥

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥१॥

आचन्द्रार्कं स्थिरं भूयादायुःश्रीजयसम्पदां ।

भैरवेन्द्रमहीकान्तः श्रीजिनेन्द्रप्रसादतः ॥२॥

अविघ्नमस्तु ॥ भद्रमस्तु ॥

तीर्थौघः सुखमक्षयं च कुरुताच्छ्रीपार्श्वनाथो बलं;

कीर्त्तिं नेमि-जिनः सुवीर-जिनपश्चायुःश्रियं दोर्व्वलिः ।

कल्याणान्यर-मल्लि-सुव्रत जिना [:] पोम्बुच्च पद्मावती;

क्ष्माचन्द्रार्कमभीष्टदास्तु सुचिरं श्री-भैरव-क्ष्मापतेः ॥३॥

श्रीमद्देशीगणे ख्याते पनसोगावलीश्वरः ।

योऽभूल्ललितकीर्त्याख्यस्तन्मुनीन्द्रोपदेशतः ॥४॥

श्रीमत्सोमकुलामृताम्बुधिविधुः श्रीजैनदत्तान्वयः
श्रीमद्भैरवराज तुङ्गभगिनि श्रीगुम्मटाम्बासुतः ।
श्रीमद्भोगिसुरेन्द्रचक्रिमहिम श्रीभैरवेन्द्रप्रभुः
श्रीरत्नत्रयभद्रधामजिनपान्निर्माप्य संसिद्धिभाक् ॥५॥
श्रीमच्छालिशकाब्दके च गलिते नागाभ्रबाणेन्दुभि-
श्चाब्दे सद् व्यय नाम्नि चैत्र-सित-षष्ठ्यां सौम्यवारे वृषे ।
लग्ने सन्मृगशीर्ष-भे चिरतरां श्रीभैरवेन्द्रेण ते
श्रीरत्नत्रयभद्रधामजिनपा भान्तु प्रतिष्ठापिताः ॥६॥

जिनाय नमः ॥ स्वस्ति श्री [॥] शालिवाहन शक वर्ष १५०८ नेय व्यय संवत्सरद चैत्र शुद्ध षष्ठियु बुधवार मृगशीर्ष-नक्षत्रवु वृषभलग्नदल्लु कलियुगाभिनव-भरतेश्वरचक्रवर्त्ती गुत्ति-हम्मिव्वरगण्ड [प] त्ति-पोम्बुच्च-पुर-वराधीश्वर मरे-होक्करकाव मारान्तवैरि मन्नेय-राय-मस्तकशूल षड्दर्शन स्थापना चार्य्य सोमवंशशिखामणि काश्यपगोत्रपवित्रीकरणदक्ष पोम्बुच्च-पद्मावती-लब्धवरप्रसाद सम्यक्त्वाद्यनेकगुणगणालंकृत जिन-गन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमाङ्ग अरि-वर्त्तारु-मण्डलीकर-गण्ड होम्चमाम्बिका-प्रियकुमार-भैररस-वोडेयर-अळियरे-निप श्रीमज्जिनदत्तराय-वंश-सुधाम्बुधिपूर्णचन्द्र श्रीमद्वीर-नरसिंह-वङ्कनरेन्द्र श्रीगुम्मटाम्बा-कुलदीपक-प्रियसूनु अरिराय-गण्डरडावणि श्रीमद्दिम्मडि-भैररस-वोडेयरु तमगे अभ्युदय-निःश्रेयस-लक्ष्मी-सुख-सम्प्राप्ति-निमित्तवागि कारकळद पाण्ड्यनगरियल्लि श्री-गुम्मटेश्वरन संनिधानदल्लि कैलासगिरि-सन्निभ-चिक्कवेट्टदल्लु ॥

श्रीकान्ताकुलवेश्म किं वरयशः-कान्ताप्रमोदागरं
भूकान्तारतिसद्म सज्जयवधू-क्रीडास्पदं किं पुनः ।
स्यात्कारोज्ज्वल-सन्नयद्वयमयी श्रीभारतीरङ्गभूः
स्वः श्री-मुक्ति-रमा-स्वयम्वरगृहं श्रीजैनगेहं वृषे ॥७॥

इन्तप्प सकलजनानन्दमन्दिरवाद सर्व्वतोभद्र-चतुर्म्मुख-रत्नत्रयरूप-**त्रिभुवन-तिलक-जिनचैत्यालयवनु** रोद्दद-गोव निकलङ्क-मल्ल वन्दरभाव परनारिसहोदर नडिदु-भाशेगे-तप्पुव-रायर-गण्ड सुवर्ण्णकलशस्थापनाचार्यरादकारण धर्म्म-साम्राज्य नायकरागि निजपुण्यानुबन्धि-पुण्यद प्रेरणेयिन्द तमगु तज्जिनभवन प्रेक्षकराद सकल-शीलगुणसम्पन्नराद चतुस्संघक्कू साक्षात्सम्मोक्षलक्ष्मीस्वयम्वरशालोपमन् आगि निर्म्मापिसि अनन्तसुखद सम्प्राप्तिनिमित्तवागि। आ नाल्कु-दिक्किनल्लू **अर-मल्लि-मुनिसुव्रत-तीर्त्थंकर**-प्रतिमेगळनू स्थापिसि। आ पश्चिम-दिग्भागदल्लि **चतुर्विंशति-तीर्त्थंकर**-प्रतिमेगळनू हदिनाल्कु बोक्कलु स्थानीकरु नडसुव अभिषेक-पूजे मुंतादवक्कु (।) मीले नडव अङ्गरङ्गवैभवादिकंगळिगू आ **भैररस-वोडेयरु** निव-न्तोपदि [द] राज्यवनाळुवाग आ **त्रिभुवन-तिलक-जिनचैत्यालय-दल्लि** आ प्रतिष्ठा-समयद पुण्यकालदल्लि तमगे पुण्यार्थवागि मूड **मुक्कडपिन-होळे**। तेङ्क **येम्णेय-होळे**। पड्डव **पोळ्लकळियद-होळे**। वडग **चलिमेय-होळे**। ई नाल्कु-होळेगळनु मीरेयागुळ्ळ। निदि (धि) निक्षेप। अक्षिणि आगा-

२५. म्य। चल पाषाण। सिद्ध साध्यंगळेम्ब (।) अष्ट-भोगंगळिगोळगाद **तेळार**-ग्रामवनू। अदरोळगे अक्कि मूडे ७०० नू। **रंजाळ-नल्लूर** सिद्धायदल्लु ग २३८-

२६. नू. धारापूर्व्वकवागि आचन्द्रार्कस्थायियप्पन्ते देवर्गे मा [ड्] ि- कोट्ट धर्म्मक्षेत्रव (द) विवर। आ क्षेत्रद चतुःसीमेयोळगल्ल हरवरि (री)-नुगतादवर-

२७. ल्लि सल्लुव गेणि-सिद्धाय वड्डिय-भट्ट हुरुळिय-अक्कि बोळक्के-कत्तिद-अक्कि होम्न-वड्डियक्कि सह सल्लुव अक्कि हाने ५० २ लेक्कद मूडे ७०० क्कं **नल्लु**-

२८. **रंजाळदल्लि** बोक्कलु-तार्क्क-णेयागि विट्ट सिद्धाय ग २३८ वरहक्कू सहवागि नडव धर्म्म। पड्डवण-बागिलल्लि बोक्कलु २ क्के मूड-होत्ति-

२९. न देवपूजगे चरु हाने ९ मीलु-चरु हाने ३ अक्षते-अक्कि हाने १ तोये पायस तुप्प कलसुमीलोगर ताळिल मुंताद पंच-भक्षक्के अक्कि हाने २

३०. कडुते २ अन्तु अक्कि हाने १५ कुडुते २ र लोकदल्लि वर्प । इक्के अक्कि मूडे ११० [।] उदयद पञ्चामृतदाभिषेकक्के ग ७ म २ पञ्चखज्जायक्के ग ७½ सिद्ध-

३१. चक्रद आराधनगे ग १२ प (फ) ल-वस्तुविगे ग १ म २ बैगिन हालधारेगे ग ½ म ४ गन्ध-धूपक्के ग ½ म ३ येम्ने हाड १२ क्के ग ८ म ४ अष्टाह्निक ३ क्के ग ३

३२. वर्षाभिषेक इक्के ग ६ अन्तु ग ४७ ॥ @ ॥ वडगण-वागिल वोक्कलु २ क्के मूरु होत्तिन देवपूजगे दिन इक्के चारुविगे अक्कि हाने (।) ९ मीलु [च] रुविगे

३३. अक्कि हाने ३ अक्षतगे अक्कि हाने १ तोये पायस तुप्प कलसुमी लोगर ताळिल मुन्ताद पञ्चभक्षक्के अक्कि हाने २ कुडुते २ अन्तु अक्कि

३४. दिन इक्के हाने १५ कुडुते २ र लेक्कदल्लि वर्ष (।) इक्के मूडे ११० [।] उदयद बैगिन हालधारेगे ग १½ म ३ पञ्चखज्जायक्के ग ७½ प (फ) ल-वस्तु-

३५. विगे ग १ म २ गन्धधूपक्के म ८ येम्ने हाद १२ क्के ग ८ म ४ अष्टाह्निक ३ क्के ग ३ वर्षाभिषेकक्के ग ६ अन्तु ग २८ म ७ ॥ ई लेक्कदल्लि मूड-वागिल वोक्क-

३६. लु २ क्के अक्कि मूडे ११० ग २८ म ७ ॥ आ-तेङ्क-वागिल वोक्कलु २ क्के अक्की (क्कि) मूडे ११० ग [२] ८ म ७ ॥ अन्तु वागिलु ४ क्के वोक्कलु ८ क्के वर्प (।) इक्के अक्कि मूडे ४४० ग १३३

३७. म १ ॥ @ ॥ पडुव-वागिल येड-बलद गुण्ड २ क्के वोक्कलु इक्के चरुविगे अक्कि हाने ५ र लेक्कदल्लि मूडे ३६ अक्षतगे अक्कि मूडे ४ उभयं मूडे ४० हाल-

३८. घारे ४ क्के ग ३½ म १ फलवस्तुविगें ग १ म २ गन्ध-धूपक्के म ३ येम्ने हाड ५ क्के ग ३½ अष्टाह्निक ३ क्के म ५½ वर्षामिषेकक्के ग १ अन्तु ग १० म १½ [।] ई लेक्कदल्लि

३९. वडग (।) मूड तेङ्कण गुंदङ्गळिगू । आ पडुवण **तीर्थंकरु** ब्रह्म पद्मावति गळिगू इह वोक्कलु ५ क्के अक्कि मूडे २०० ग ५० म ७½ =[1] उमर्य वोक्कलु

४०. ६ क्के अक्कि मूडे २४० ग ६० म ६ [।] **ब्रह्म-पद्मावतीय** ऐचरविगे अक्कि मूडे ४ = अन्त वोक्कलु १४ क्के अक्कि मूडे ६८४ ग १६४ ॥ @ ॥ दोळु-नागसर-कोम्बिनवर वन

४१. ६ क्के ग ३६ अडिपिन मूलितियर वन २ क्के अक्कि मूडे १६ बस्तिय-ल्लिर् तरस्विगळ् तण्ड ४ क्के शीतनिवारणेय-हच्छुड ८ क्कं कैय्यक्किय चुम्बुव सुदुव ह-

४२. च्छुड इक्कं सह हच्छुड ६ क्के ग ५ म २ मण्डेय तोळगरे येम्णेय हाड २ क्के ग २ अडुगव्वु सीगेगे सह म ८ अन्तु ग ८ = अन्तु अक्कि मूडे ७०० ग २३८ [॥]

४३. हिरिय-अरमनेय नालकु-चउ (वु) कद वोळगण बस्तिय **चन्द्रनाथ स्वामिय** अमृतपडिगे **आरूरल्लण**-ब्रवक्कळदल्लि विळियर-

४४. सर गुत्तु विम्मप्पनिन्द अक्कि मूडे २० बागिलरसर गुत्तु माण्डर्प्पा [डि] यिन्द अक्कि मूडे १० उमर्य मूडे ३० **नल्लूर**

४५. विक्किरुपाण्डिय-बाळिनल्लि ग ७½ बत्तिकोट्टिय-बाळिनल्लि ग ३ **पं(जा)-ळदल्लि** कम्डुवबाळिनल्लि ग ७½ अन्तु ग १८ । **गोवर्धनगिरिय-**स्तिय

---

१. यह यहाँ और आगे भी जहाँ कहीं आये, विराम का चिह्न समझना चाहिये ।

४६. **पार्श्वनाथ(थ)स्वामिय** अमृतपडिगे **मल्लिलद**-कम्बुळदल्लि अक्किय मूडे ३० आ मीलण दड्डि-मरुगळल्लि मूडे ४ [**नल्लू**] **र** नं० [वि] वेट्टि-नारणनल्लि

४७. अ [क्कि] मूडे ६ अं [तु] मू [डे] ४० [**के**] **लवसेय** सेटि-वेट्टिन हित्तिल [फ] लदल्लि [ग] ८ म २½ [॥] [इ] दु पञ्च-संसार-कालोरग-दष्ट-गाढ़-मूर्च्छित-नाना-संसारि-जीव-प्रबोधनक-

४८. र-पञ्च-महा-कल्याण-[वी] जोपम [वाद] जिनमन्त्र-पूतात्मन । श्री वीतराग । येन्द पञ्चाक्षरियनु पञ्चविंशति-मल-विदूर-परम-सम्यग्दृष्टिगळाद-कारण आ **भैरर**-

४९. **स-वोडेयरे** स्व-हस्तदिंद वो [प्प कोट्टु] दक्के इन्द्रवज्रा-[वृत्त] दिन्द [चतुर्विंशत्य] - क्षर-लिखित-पञ्चाक्षररूप-सर्वतोभद्र-चित्र-प्रबन्धदिं [द] रचिसिद चि [त्] र-

५०. श्लोक ॥ श्री-वीत-वीरागत-वीग-वीतं
श्री-राग-वीतं गतराग रागम् ।
श्रीगं ततं रागतरांगरा [ङ्गं]
श्री वीतरागं तत-वी [र]-गं तम् ॥ @ ॥ ८ ॥

[मंगलाचरणके बाद इस लेखमें (श्लो० २ और ३) तीर्थंकरों, दोर्बलि (बाहुबलि) और पोम्बुच्चकी पद्मावती देवीके आशीर्वादका दाता **भैरव** या **भैरवेन्द्र**, जिनको **भैररस-चोडेय** तथा **इम्मडि-भैररस-चोडेय** कर्णाटक गद्यमें कहा गया है, के लिये आह्वान किया गया है। इस सरदारको हम एकदम **भैरव-द्वितीय** कह सकते हैं। इन्हींके मामाको इसी लेखमें (श्लो० ५) भैरव प्रथम कह सकते हैं, जिनका नाम **भैरवराज** दिया है। आगे लेखसे पता चलता है कि **ललितकीर्ति मुनीन्द्र**, जो पनसोगे शाखा (गच्छ) देशीगणके थे, उनके उपदेशसे भैरव द्वि० ने 'रत्नत्रय' (श्लो० ५ तथा ७ वें श्लोक के बादके कन्नड़गद्यमें) मन्दिर, जिससे स्पष्टतः **चतुर्मुख वस्तो** का मतलब है, बनवाया था। श्लोक ६ तथा इसके बादके कन्नड़ गद्यमें

मन्दिरकी नींव रखने और प्रतिष्ठाका दिन दिया है। वह दिन शालि-(या शालिवाहन-) शक वर्ष १५०८, व्यय-संवत्सर, चैत्र शुक्ला छठी, शुक्रवार था, - उस समय **नक्षत्र** मृगशीर्ष या मृगशिरा तथा लग्न वृष या वृषभ था। श्लोक ६ के बाद के तथा ७ के बादके कन्नड़ गद्यमें भैरव द्वि० की विरुदावलि दी हुई है तथा मन्दिरका नाम **त्रिभुवनतिलक-जिन-चैत्यालय** (७ वें श्लोक के बादके गद्यमें) दिया है, जिसको 'सर्वतोभद्र' और 'चतुर्मुख' कहा गया है। यह **कारकलमें पाण्ड्यनगरी**में श्रीगुम्मटेश्वरके सन्निधानवर्ती **चिक्कबेट्ट** शैल-पर बनाया गया था। पाण्ड्यनगरी, वर्तमान हिरियङ्गडिकी तरह, एक दूसरी कारकलकी पार्श्ववर्ती उपनगरी थी जिसमें स्वयं चिक्कबेट्ट शैल, जिसपर चतुर्मुख बस्ती बनी हुई है, तन्नीय गोम्मटेश्वरकी मूर्ति और इन दोनोंके बीचमें से जाने वाली वह सकड़ी गली है जिसमें कुछ जैन गृहस्थोंके गृह तथा मठ अवस्थित हैं। स्थातनामा गुम्मटेश्वरकी मूर्तिकी प्रतिष्ठा करानेवाले पाण्ड्यराय या पाण्ड्यके नामसे यह नगरी प्रसिद्ध थी। आगे बताया गया है कि भैरव द्वि० ने मन्दिरके चारों ओर मुख्य दरवाजोंकी तरफ **अर, मल्लि** और **मुनि-व्रत** इन तीन तीर्थङ्करोंकी मूर्तियोंके विराजमान करवाया, तथा इन्हींके साथ बीचमें २४ चौबीसों तीर्थङ्करों की मूर्तियोंकी यक्ष-यक्षिणीके साथ स्थापना की। आगे पंक्ति २२ से ४२ में **तेलार** आनके दानका उल्लेख है, जिसने लगानके रूपमें ७०० 'मूड़े' धान्य (चावल) की प्राप्ति थी। इसके अतिरिक्त **रंजाळ** और **तल्लूर** ग्रामोंके 'सिद्धाय' (अर्थात् चालु लगान) में से २३८ 'पाय्याग' (या 'वट्ट', पं० २८) भी मिलते थे। इस आमदनीसे मन्दिरकी पूजाका प्रबन्ध होता। नित्य पूजन करनेवाले १४ स्थानिकों (पुजारियों) के कुटुम्ब इसी कामके लिये नियत थे। प्रत्येक दरवाजेकी वेदी पर कितना खर्च होता था, यह जिलजिलेवार इस शिलालेखमें दिया हुआ है। उससे पता चलता है कि किस ने अधिक खर्च पश्चिम दरवाजेकी वेदी पर होता था, क्योंकि वही मुख्य गिनी जाती थी। दूसरा इस दरवाजेकी प्रधानताका प्रमाण यह है कि उसी दरवाजेकी वेदी पर २४ तीर्थङ्कर विराजमान हैं। इस प्रधानताकी वजह ही

से उस पर ज्यादा खर्च होना भी स्वाभाविक था। माली और गायकोंके (गन्धर्वोंके) लिये भी खर्च इसी आमदनीसे बँधा हुआ था। मन्दिरमें बसने-वाले ब्रह्मचारी इत्यादिको वर्ष भरमें ८ कम्बल शीतनिवारणके लिये मिलते थे और एक कम्बल दैनिक भात-भिक्षाके संग्रहके लिये। उन्हें आवश्यक चीजें, जैसे, तेल, साबुन- ईन्धन भी मन्दिरसे ही मिलता था। पंक्ति ४३–४७में दो और दानोंका उल्लेख है जो कि उसी भैरव द्वि० के ही किये गये मालूम देते हैं। (१) पहला दान 'हिरियअरमने' (अर्थात् बड़ा महल) के प्रांगणमें स्थित 'बस्ति' के **चन्द्रनाथ** के नित्य पूजनके लिये और (२) **गोवर्धनगिरि**के टीले पर स्थित 'बस्ति' के **पार्श्वनाथ** के पूजनके लिये। अन्तिम ८ वें श्लोकमें पञ्चाक्षरी 'श्रीवीतराग' पर चित्रबन्ध शब्दालंकार है। इस लेखके परिचयमें श्री एच. कृष्णशास्त्री, बी. ए. ने अन्तिम चार पंक्तियाँ (८ वें श्लोकके बाद) मिटी हुई बताई हैं।

दाता और भैरव द्वितीय सोमकुल, काश्यपगोत्र तथा **जिनदत्त** या **जिन-दत्तराय**के वंशका था। वह **गुम्मटाम्बा** और वीरनरसिंह-वंगनरेन्द्रका पुत्र था। गुम्मटाम्बा **भैरव प्रथम**की बहिन थी। भैरव प्र० **होन्नमाम्बिका** का पुत्र था। भैरव द्वितीयके विरुद इसी लेखसे जानने चाहिये।]

[EI, VII, No. 10]

६८१

मद्रास;—कच्छ।

काल–[शक सं० १५१३ (१५९१ ई०)]

[साउथ कैनराके Sub-Court में]

स्वर संवत्सरमें, शक सम्वत् १५१३ (१५९१ ई०) में एक जैन-मन्दिरकी पूजाके प्रबन्धके लिए **किन्निग भूपाल** नामके युवराजके द्वारा कच्छके प्रान्तमें भूमिदान।

[ASSI,II, p. 14, No. 91, a.]

६८२-६८३

शत्रुञ्जय;—प्राकृत।

[सं० १६४०=१५६३ ई०]

(श्वेताम्बर लेख।)

६८४

अनहिलवाड-पाटन;—प्राकृत।

[सं० १६४१-१६४२ = १५६४-१५६५ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[G. Buhler, EI. I, No. XXXVII, (p. 319-324), t. et. a.]

६८५

शत्रुञ्जय;—प्राकृत।

[सं० १६४२ = १५६५ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

६८६

अनहिलवाड-पाटन;—संस्कृत

[सं० १६४२ = १५६५ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[J. Burgess and H. Consens, Art. of Northern Gujarat (ASI. XXXII) p. 44-45, tr.]

६८७

सिरोही;—संस्कृत ।

[सं० १६५३ = १५९६ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[H. H. Wilson, Asiat. Res., XVI, p. 316, No. XLIII, a.]

६८८

कोप्प;— संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १५२१=१५९९ ई०]

[कोप्प (कोप्प परगनामें) पश्चिमकी तरफ खाली पड़ी हुई जमीनमें एक पाषाणपर]

श्री-वीतरागाय नमः ।

श्रीमत्परम-गंभीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

नमस्तुङ्ग इत्यादि ॥

स्वस्ति श्री **जयाभ्युदय-शालिवाहन-शक-वरुष १५२१ सन्द वर्तमान-विळम्बि-संवत्सरद** चैत्र ब ७ **चन्द्रवारदलु** श्रीमतु **करिदल-बळिय मयिल-नायकर** मदवळिगे **तळार-बळिय दुग्गमन** मग **पांड्य-नायक** अवर तम्म **देरेनायकर कोप्पदल्लि** पलिन्त-**साधन चैत्यालय**वनु कट्टिसि प्रतिष्ठेय माडिसि अमृतपडिगे बिट्ट स्वास्ति-दिवर (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा है) **भयिर-रस-चोडेयरु** पारिश्वनाथ-देवरिगे आ-**कोप्प**-आयदलि धारेनेरद क्षेत्रभूमिय दिवर (यहाँ विशेष चर्चा आती है) **लिंगवन्त**नादव अळुदिदरे श्रीपर्वतदलि लिङ्ग वनु ... ... पापके होह विभूति-रुद्रालिगे होरगु **नामधारि**

आगि आदव इं-धर्मके अळुपिंदरे तिरुपति-श्रीरङ्ग-विष्णु-कञ्चिलि स्वामि-सेवे अळिद पापके होहरु इष्टर बळिक अळुपिंदरे एळनेनरक्के इळिवरु इदु तप्पदु (शेषमें सीमाओंके नाम हैं) **पाण्ड्य-न-बोडेरु कोप्पद**-बस्तिगे धारेनेरदु **मुदुकदानीळु** गद्दे भूमि २ क्के गडि ख १० उलिगददेन्दु **नरसीपुरद** महाजनङ्गळ कय्य क्रयक्के कोण्ड कागलु-गोडलु कले ख १८ कारु १२ उम ख ३० ··· ४० मट्ट पारिश्वनाथ-देवर बोळ-मागल्तरादवरिंगे ··· ··· (हमेशाके अन्तिम श्लोक)

[(उक्त मितिको) करिदलके नविल-नायककी पत्नी तळार-दुगम्मके पुत्र पाण्ड्य-नायक और उसके छोटे भाई देरे-नायकने कोप्पमें जाधन-चैत्यालय बनवाकर और उसमें प्रतिमा विराजमान करके, पूजनके लिये निम्नलिखित सम्पत्ति दानमें दी । (जो जमीन दी उसकी यहाँ विस्तृत चर्चा है) ।

और भयिरस-बोडेरने पारिश्वनाथ-देवके लिए कोप्पकी लगानमेंसे निम्नलिखित जमीन दानमें दी । (यहाँ जमीनकी कीमत दी हुई है) ।

लिंगवन्त और नामधारियोंके विरुद्ध भिन्न शाप । साक्षी ।

पाण्ड्यप्प-बोडेरने मुदकदानिमें कोप्पकी बस्तिके लिये (उक्त) और भी दान दिया तथा नरसीपुरके ब्राह्मणोंसे खरीदकर कुछ और जमीन भी दानमें दी ।]

[EC, VII, koppa tl. No 50]

६८६

वेणूर:—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक सं० १५२५ = १६०३ ई०]

[गोमटेश-मूर्तिस्तम्भके ठीक दाहिनी तरफ]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं [नं] जिनशासनम् ॥ [१]

शकवर्षेष्वतीते[षु वि]षयाब्धिशरेंदुषु ।
व [र्तमा] ने शोभकृति वत्सरे फाल्गुना [ख्यके ॥] [२॥]
मासेऽथ शुक्लपक्षेद्धदशम्यां गु [रुषु] ष्यके ।
सुलग्ने मिथुने देशी [गणांव] र दिनेशितुः [॥] [३॥]
बेळगुळाख्यपुरीपट्टस्थी [र] ब्धिनिशापतेः ।
चारुकीर्त्ति] मु [ने] र्दिव्यवाक्या**देनूरपत्तने** ॥ [४॥]
श्री **रायकुवर**स्याथ जामाता त [त्सहो] दरी- ।
पाण्ड्यकाख्यमहादेव्याः [सु] पुत्रः **पांड्य**भूपतेः ॥ [५॥]
अ [नु] ज [**स्ति**] **भरा** [**जा**]ख्यश्चा**मुंडा**न्वय[भूप]कः ।
अस्था [प] यत्प्रति [ष्ठाप्य] **भुजबल्य**ाख्यकं जिनं ॥ ६ ॥
शुभमस्तु ॥

[इस लेखमें बताया गया है कि **चामुण्ड** (प्रसिद्ध चामुण्डराज जिन्होंने श्रवण-बेल्गोळामें गोम्मटेशकी मूर्त्ति स्थापित की है) के वंशमें होनेवाले **तिम्मराजने पनूर** (वर्त्तमान वेणूर) में भुजबली (बाहुबली) जिनकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा करके स्थापना की। यह तिम्मराज **पाण्ड्य** नरेशका छोटा भाई, **पाण्ड्यक** रानीका पुत्र, तथा रायकुवरका जामाता था। उसने इस मूर्त्तिकी स्थापना बेल्गुळ (वर्त्तमान श्रवण-बेल्गोला) के भट्टारक, जो देशीगणके थे, की आज्ञासे की थी। मूर्त्तिकी स्थापना दिवस शक वर्ष **शोभकृत्** १५२५ के व्यतीत हो जानेपर फाल्गुन शुक्ला १०, पुष्यनक्षत्र, मिथुन लग्न था।]

[EC, VII, No 14, F.]

६९०

वेणूर;— कन्नड़।

[शक सं० १५२६ = १६०४ ई०]

[गोम्मटेश-मूर्तिस्तम्भके ठीक बायीं तरफ]

१. श्री शक्र [र्व] नं गणि [ने स]लिदि मि-
२. गुवद्दु लेक्कदु [ल्ल] शतदिप्पता [रि] नेय
३. शोभकृदब्द फाल्गुनाख्यमासाग्नि-
४. [त] शुक्लपक्ष दशमी गुरुपुष्यद शु-
५. [भ्न] ल [भ्न] दोळ् देशिगण [अ] ग्ग्यगुरु-
६. पंडितदे [व] न दिव्यवाक्य [दिं] ॥ [१] राय-
७. कुमार [नो] प्पुवळियं नवि पांड्य-
८. कदेवि [य पुत्रनत्र] सोमायतन-
९. श [इ] र्ध्वनुरुवाहसि पांड्यवृ-
१०. पानुचनुद्धदानराधेयनुदा-
११. र [पुंजळि] के पट्टनाळ्व नृपाग्रणि
१२. तिम्मनूर्जं श्रीयुतनं प्रति [ष्ठि]-
१३. [ष्ठि] द [न]दिदिना [न्] द [नं दि] न गुं [म] टेशनं ॥ [२॥]

[पहले शिलालेखकी तरह, इस लेखमें भी बताया गया है कि मूर्तिकी स्थापना तिम्मने की थी। इस लेखमें पूर्व सम्बन्धोंके साथ-साथ तिम्मको सोमवंशका दुरीण तथा पुंजळिकेका शासक बताया गया है। समय इस लेखमें १५२६ (शब्दोंमें) शक वर्ष है, जबकि पूर्व लेख १५२५ अतीत वर्षका है। 'गुम्मटेश' बाहुबलीका ही नामान्तर है।]

[EI, VII. No 14. F.]

६९१

मेलिगे;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १५३०=१६०८ ई०]

[मेलिगेमें, रङ्ग-मण्डपके दक्षिण-पश्चिमकी ओर आदिनाथ बस्तिमें एक पाषाणपर]

श्रीमद्**नन्तनाथाय** नमः

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

श्रीमद्-गीर्व्वाण-चक्रेट्-फणिपति-मकुटोद्भासि-माणिक्यमाला- ।
रोचिः-प्रक्षालित-श्री-चरण-नखिन-द्वन्द्व-विभास्यमानः ।
मानस्तम्भाम्बुजाताकर-कलित-लसत्-खातिकाद्युद्घ-शोभोऽ
सौ स्वान्त् सन्तोषयन् श्री-समवसृति-पतिर्भा **त्यनन्तो जिनेशः** ॥

स्वस्ति श्री **जयाभ्युदय-शालिवाहन-शक-परुष १५३० नेय सौम्य-संवत्सरद** माघ-शुद्ध १० आदिवारदलु ॥

वृ ॥ निद्रांभूत-महीश-वारिज-ततेः कुर्व्वन् विकास-श्रियम्
सन्मार्गाम्बर-भासमान-विसरत्-तेजो-निधिस्सर्वदा ।
वैरि-क्ष्मापति-भूरि-कैरव-कुलं सङ्कोचयन् सन्ततम्
श्रीमद्-**वेङ्कट-देव-राय**-तरणिस्तीव्र समुज्जृम्भते ॥

इत्याद्यनेक-विरुदावळि-विराजमानराद श्रीमद्-राजाधिराज राज-परमेश्वर श्री-वीर-प्रताप श्रीमद्-**वेङ्कटपति-देव-महारायरु** पेनगोण्डे सिंहासनारूढ़रागि प्रति-पालिसुत्तिर्द समस्त-राज्यङ्गळोळत्यतिशयमनुळवन्य-देशदोळु ॥

अन्तेसेववन्य-देशदोळ् ।
अन्तातीत-प्रकार-शोभा-रुचियम् ।

तां तळेदारगमेम्ब पु- ।
रं तोर्प्पुदु भुवनगिरिय मूडण-देसेयोळ् ॥

आ[त्रो]ळलमाळ्वननेक-चातुरी-धुरन्धरनाद चेङ्कटाद्रि-महीपाल नातन गुण-कथनमेन्तेने ॥

मत्तमा-भव्योत्तमन परम-गुरुविन प्रभावमेन्तेने ॥

श्रीमज्जैन-मताब्धिवर्द्धन-सुधासूतिर्म्महीपालक- ।
व्रात-स्तुत्य-पदाम्बुकात-युगलो भव्याब्ज-मानूपमः ।
दुर्व्वीर-स्मर-गर्व्व-पर्व्वत-पविर्न्नाना-का(क)ला-कोविदो ।
विद्यानन्द-मुनीश्वरो विजयते वादीभ-पञ्चाननः ॥

तच्छिष्य-परम्परायात-बलात्कार-गणाग्रगण्य श्रीमद्-राय-राजगुरु वसुन्धराचार्य्यवर्य्य महा-वाद-वादीश्वर राय-वादि-पितामह सकल-विद्या ..... माद्यनेकान्वर्त्य-विरुदावळि-विराजमान श्रीमद्-**देवेन्द्रकीर्त्ति-भट्टारक**-पदाम्भोज-दिवाकरायमान श्रीमद्**भिनव-विशालकीर्त्ति भट्टारक**-देव-पद-पयोज-मत्त-मधुकरायमान प्रवीण-**वोम्मण-श्रेष्ठिय** तनूजातनेन्तिर्द्दपनेने ॥

तत्यात्मजातो विख्यातस्सुकृती धार्म्मिकाग्रणीः ।
वोम्मणाख्यो वणिग्-मुख्योऽचालयत् तज्जिनालयम् ॥
नेमाम्बा नाम तत्पत्नी व्रत-शील-विभूषिता ।
तयोः पञ्च सुता जातास्स्मराकारा गुणोज्वळाः ॥

आ-कुमारकरय्वरेन्तिदरेने ।

श्रीमज्जिन-पादाम्भोज-युगल-भ्रमरोपमः ।
भाति श्री **वोम्मण**-श्रेष्ठी सत्य-शौच-गुणान्वितः ॥
यस्यानन्त-जिनेश्वरो निज-कुल-स्वामी त्रिलोकी-पतिर्
विद्यानन्द-मुनीश्वरो निज-गुरुर्व्वादीभ-कण्ठीरवः ।
...त्तं परमं जिनेन्द्र-गदितं येनोरु तत्त्वं महान् .
सोऽयं भाति मही-तले **पद्मण-श्रेष्ठी** गुणानां निधिः ॥
श्रीमान् कुवलयाह्लादी कलानामाश्रयो महान् ।
सद्भिः परिवृतो भाति **चन्दन-श्रेष्ठि**-चन्द्रमाः ॥
सर्व्व-श्रेष्ठिषु रत्नत्वाद् दान-पूजादि-तद्-विधौ ।
राजते **माणिक-श्रेष्ठी** नाम्नान्वर्थेन पुण्य-भाक् ॥

श्री जिनोदित सद्धर्म्म-कार्याणामादिमत्त्वतः ।
आदण्णाख्यो वणिग् भाति नामान्वर्थं दधत् सुधीः ॥

इन्तसंव सकल-गुण-समन्वितराद मेळिगेय **बोम्मण-सेट्टियर** मक्कळु **बोम्मण-सेट्टियरु** (औरोंके नाम दिये हैं) नाऊ तम्मोळेकस्तरागि नम्म अज्ज बोम्मि-सेट्टियरु कट्टिसिद वस्तियनु सिलामयवागि कट्टिसि ॥

श्री-विश्वावसु-वत्सरे शुभतरे ज्येष्ठे च मासे सिते
पक्षे सद्-दशमी-तिथौ सु-रुचिरे शुक्रे च वारे वरे ।
ऋक्षे चोत्तर-नाम्नि केसरि-महा-लग्ने प्रतिष्ठापितः
पद्म-श्रेष्ठि-वरेण शास्त्र-विधिनानन्ताख्य-तीर्थेश्वरः ॥

आ-श्रीमदनन्तनाथ स्वामिय नित्य-नैमित्तिक-पूजेगे । अमृतपडि । नन्दादीप्ति । अङ्ग-रङ्ग-वैभव-मुन्ताद समस्त-विनियोग-धर्म्म नडवदक्के बिट्ट भू-दान शासनद क्रम वेन्तेन्दरे (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा तथा वे ही अन्तिम श्लोक आते हैं) ।

मेलिगे बोम्मण-सेट्टर मक्कळु बोम्मण-सेट्टरु पदुमण-सेट्टरु सि (शि) लामय-वागि कट्टिसिद श्रीमदनन्तनाथ-स्वामि-चैत्यालयदल्लि नडव धर्म्मद विनियोगक्के कोट्ट सर्व्वमान्यद स्वास्तेगे वरद शिला-शासन मुत्तूर हेगडेर बोप्पित बोम्मण्ण-मल्लण्ण बोप्य ।

[अनन्तनाथके लिये नमस्कार । जिन शासनकी प्रशंसा ।
अनन्त जिनेशकी स्तुति ।

(उक्त मितिको), वेङ्कट-देव रायको सूर्यकी उपमा । जिस समय वेङ्कटपति-देव-महाराय पेनुगोण्डेकी राजगद्दीपर बैठे थे, उनके सारे राज्यमें अवन्य-देश प्रसिद्ध था । उस देशमें, भुवनगिरिके पूर्वमें, आरग शहर था । उस नगरका शासक वेङ्कटाद्रि-महीपाल था । उसके गुणोंका वर्णन ।

वेङ्कटाद्रि-नायकय्यका आश्रित बोम्मण-हेग्गडे था । उसकी प्रशंसा । वह मुत्तूर शासक था । इसके एक स्थान मेळिगेमें, जो निड्डवळ-नाड्के कोट्टूर-पाळ्में था, राज-श्रेष्ठी वर्द्धमान था । उसकी प्रशंसा । उसकी पत्नी नेमाम्बा थी । उसके पुत्र बोम्मण-श्रेष्ठीने एक जिनमन्दिर बनवाकर उसमें अनन्त जिनकी प्रतिष्ठा

की। उसके गुरू विशालकीर्त्ति भट्टारक थे। ये विद्यानन्द-मुनीश्वरके शिष्य, बलात्कारगणके प्रधान, राय-राजगुरु देवेन्द्रकीर्त्ति-भट्टारकके शिष्य थे। बोम्मण-श्रेष्ठीके पुत्र बोम्मणने मन्दिरकी रक्षा की थी। उसके पाँच पुत्र थे।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl., No. 166]

६९२-६९९

शत्रुंजय—प्राकृत।

[सं० १६७५ से सं० १६८३ = १६१९ ई० से १६२६ ई० तकके]

श्वेताम्बर लेख।

७००

गिरनार—संस्कृत।

[सं० १६८३=१६२६ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[ASI, XVI, p. 360, No. 31, t. & tr.]

७०१

शत्रुंजय;—प्राकृत।

[सं० १ [६]८४=१६२७ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

७०२

शत्रुंजय;—संस्कृत।

[संवत् १६८६ तथा शक सं० १५५१]

(बड़े आदीश्वर मन्दिरके उत्तर-पूर्वके छोटे आँगनमें, दिगम्बर जैन मन्दिरका यह शिलालेख है।)

पं० १. संवत् १६८६ वर्षे वैशाख सुदि ५ दुधे शाके १५५१ प्रवर्त्तमाने श्री मूलसङ्घे सरस्वतीगच्छे

२. बला [त्का] रगणे श्री कुंडकुंदाचार्य्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति-देवास्तत्पट्टे म० श्री भुवनकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे म० श्री ज्ञानभूषणदेवा-

३. स्तत्पट्टे म० श्री विजयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे म० श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे म० श्री सुमतिकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे म० श्री गुणकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे म० श्री वादिभूषणदेवास्तत्पट्टे म० श्री रामकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे म० श्री पद्मनन्दिगुरूपदेशात् पातसाहाश्रीशाहा-

४. ज्याहां विजयराज्ये श्री गुर्ज्जरदेशे श्री अहमदावाद नास्तव्य हुंवड़-ज्ञातीयवृहद्शा-खीयवाग्वरदेशस्थांतरीयनगरनौतनभद्रप्रासादोद्धरणधार साह सं० मोला भा० सं० लकु सु० संवत्सा भा० सं० लटकण भा० सं० ललतादै तयोः

५. दत्त निवकुलकमलविकाशनैकसूर्य्यावतारः दानगुणेन नृपतिश्रेयांससमः श्री-जिनबिंबप्रति-

६. ष्ठातीर्थयात्रादिधर्म्मकर्म्मकरणोत्सुकचित्तसंपत्ति श्रीरत्नश्री भा० सं० रूपादे द्वितीय भा० सं० मोहणदे तृतीय भा० सं० नं [थ] रंगदे द्वितीयसुत संघवी श्रीरामजी भा० सं० केशरदे तयोः सुत संघवी

७. डुगरसी भार्या सं० डाहमदे द्वितीयसुत संघवी [रायव] जी भा० सं० रमतादे [एते सर्वे] महासिद्धयोत्र श्री श [त्रुंजयनाम्नि] गिरौ श्री जिनप्रासादे श्री शान्तिनाथबिंबं कारयित्वा नित्यं प्रणमंति । शुभं भवतु [॥]

[भावार्थ—यह अभिलेख अहमदाबाद निवासी हुँवड (हूमड़) जातिके किन्हीं सद्गृहस्थोंने, जिनके नाम इस अभिलेखमें दिये हुए हैं, खुदवाया है। इसमें उनके द्वारा इस शत्रुञ्जय पर्वतपर श्री शान्तिनाथकी प्रतिमाके स्थापनकी सूचना मिलती है। यह बिंब प्रतिष्ठा संवत् १६८६, वैशाख सुदि ५, बुधवार, तथा शक सं० १५५१ के समय हुई थी। आम्नाय तथा भट्टारकोंकी परम्परा इस तरह चालू थी :—

मूलसंघ सरस्वतीगच्छ, बलात्कारगण, कुन्दकुन्द अन्वय, इसके बाद भट्टारकों की परम्पराका क्रम सकलकीर्त्ति, भुवनकीर्त्ति, ज्ञानभूषण, विजयकीर्त्ति, शुभचन्द्र, सुमतिकीर्त्ति, गुणकीर्त्ति, वादिभूषण, रामकीर्त्ति, और पद्मनन्दि। इस समय बादशाह श्री शाहाज्याहां (शाहजहाँ) का राज्य प्रवर्तमान था।]

[EI, II, p. 72.]

७०३

शत्रुञ्जय;—प्राकृत-भरत।

[सं० १६८६=१६२६ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

७०४

लखौर (Bihar Miridional);—संस्कृत।

[सं० १६८६=१६२६ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[H. T. Colebrook, Miscell, Essays, Vol. II (1837), p. 318–319, t et, tr; pl. VII, f.-s.]

७०५

मलेयूर;—कन्नड़-भरत।

[बिना काल-निर्देशका; लगभग १६३० ई० (लू० राइस).]

[उसी पर्वतपर, पार्श्वनाथ-बस्तिके प्राङ्गणमें पूर्वकी ओर एक पाषाणपर]

… … जीर्णोद्धारवनु माडि … जिन-मुनिगर प्रतिमे … अप्प तोरण-स्तम्भदलि राय-करणिक देवरसरु तम्म पितृगळु चन्दप्पगू मायि…निलसि दीप-स्तम्भ … तोरण … वनु माडिसिद

[तोरणके स्तम्भोंको सुधरवाकर और उनपर जिन-मुनियोंके प्रतिबिम्बोंकी स्थापनाकर राय-करणिक देवरसने, अपने पिता चण्डप्प तथा ••• ••• के नामपर, एक कीर्ति-स्तम्भ बनवाया।]

[EC, IV, Chamrajnagar tl., No. 156]

७०६-७०८

सरोत्रा;—संस्कृत और गुजराती।

[सं० १६८६ = १६३२ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[J. Kriste, EI, II, No. V, Nos. 20–26 (p. 31–33), t. et. a.]

७०९

श्रवणबेलगोला;—कन्नड़।

[शक १५५६ = १६३४ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

७१०

हलेबीड;—संस्कृत और कन्नड़।

[शक १५६०=१६३८ ई०]

[पार्श्वनाथ बस्तिके आँगनमें पाषाणपर]

ओंनमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

नमस्तुङ्ग इत्यादि ॥

पांयादाया[स] खेद-क्षुभित-फणि-फणा-रत्न-निर्य्यत्न-निर्य्यच्- ।

छाया-माया-पताङ्ग-द्युति-मुदित-वियद्-वाहिनी-चक्रवाकम् ।

अभ्रान्त-भ्रान्त-चूड़ा-तुहिनकर-करानीक-नालीक-नाळ- ।

च्छेदामोदानुधाव ··· रथ-खगं धूर्जटेस्ताण्डवं वः ॥

स्वस्ति श्री **जयाभ्युदय-शालिवाहन-शक वर्ष १५६० नेगे सलुव ईश्वर-संवत्सरद फाल्गुन शुद्ध ५ यु गुरुवारदल्लु** श्रीमद्वेलापुरी **चेन्न-वेङ्क-टेश्वर**-क्रम-कमल-युगळ ··· स्थिर-राज-हंसगद वैष्णव-मतामृत-वार्धि-प्रवर्द्धमान-पूर्ण सुधासूति-विम्बायमानराद प्रजा-पालन-मन्त्र-पालन-आत्म-पालन-कुल-पालन-समञ्जसत्व-सप्तांग-राज्य-सम्पन्नराद कोट्टभापेगे तेप्पुव घोरेगळ गण्ड दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपालकराद सामादि-चतुरुपाय-संयुतराद । पञ्चाङ्ग-सन्मन्त्र-गुण-समेतराद । रिपु-राय-शरभ-गण्ड-भेरुण्डराद वीर-क्षत्र-चूड़ामणि । शरणागत-वज्र-पञ्जरराद । सिन्धु-गोविन्द धवळांक-भीम मणिनागपुर-वराधीश्वर । बलिदु सप्तांग-हरण । **तुरक-दळ-विभाड** इत्याद्यनेक-विरुदावळी-विराजमानराद **कृष्णप्प-नायक-अय्य-**नवर कलि-कालाष्टम-चक्रवर्ति वेङ्कटाद्रिनायक-अध्ययनवरु **वेळूर**-राज्यवन्नु धर्म्मदिं प्रतिपालिसुतं यिरलु **हळेयबीड बिजय-पार्श्वनाथ-स्वामिय** वसदिय कम्भगळिगे **हुच्चप्प-देव**रु लिंग-मुद्रेय हाकलागि आ-लिङ्ग-मुद्रेयनु **विजयप्प**नु तोडेयलागि । सज्जन-शुद्ध-शिवाचार-सम्पन्नराद । **देव-पृथ्वी-महामहत्ति**नोळगाद अतिथिगळु । सूर्य्यन तेज चन्द्रन शान्त समुद्रद गम्भीर । नन्दिकेश्वरन प्रतिज्ञे कल्पवृक्षद फल बलिय वीरते रामन सयिरणे लक्ष्मणन हित-कार हरिश्चन्द्रन सत्य कोट्ट-भापेगे तप्पुवर मीसेय कोयिववरु । नरनन्ते तीर्त्थ-सिंह ··· मठ-मने-देवालय-जीर्णोद्धारकरं क्षमे-दयेवन्तरं विष्णुविनुपाय, ब्रह्मन चातुर्य्य हनुमन्तन शक्ति जाम्बवन युक्ति प्रह्लादन भक्ति नित्य-जप-शिव-पूजा-पञ्चाक्षरी-मन्त्रालंकृतराद देव-पृथ्वी-महा-महत्तु यी-स्थळद **हळेबीड बसवप्प-देव**रु **पुष्पु-गिरिय** पट्टद-देवरु-मुन्ताद देशा-भागद महा-महत्तुगळिगे **वेळूर-राज्यद जैन-सेट्टि**-गळु भगवदर्हत्परमेश्वर पाद-पद्माराधकराद स्याद्वाद-मत-गगन-सूर्य्यराद आहा-

रामय-मैत्र्य-शास्त्र-दान-विनोदरं । खण्ड-स्फुटित-जीर्ण-दिन-चैत्यालयोद्धारकरं दिन-गन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमाङ्गरादं सम्यक्त्वाद्यनेक-गुण-गणालंकृतरादं हासनद **देवप्प-सेट्टिय** दु-कुमार-पद्मण्ण-सेट्टि-मुन्तादं-समस्तर विन्नहं माडिकोळ्ळागि ... मेहा-महत्तु एक्तयरागि वा सिकोण्डु कट्टुमाडिसिद विवर । विभूति-नीळ्य-वन्तु माडिसिकोण्डु यी-विनय-**पार्श्वनाथ**-स्वामिगे पूजे-पुनस्कार-अङ्ग-रङ्ग-वैभव-दीपाराधने-अग्रयोदक-प्रभावना-मुखवाद जैनागमक्के सलुव धर्म्मव पूर्व्व-मर्य्यादे-यल्लि आ-चन्द्रार्क्क-स्थायियागि माडिकोळ्लि येन्दु वेळूर वेङ्कटाद्रि-नायक-अय्यन-वरिगे सकल-शास्त्राभ्यासोद्यार्थ-निमित्तवागि आ-दोरेय दक्षिण-दोर्-दण्डराद प्रधान-वंशोद्धारकराद पद-वाक्य-प्रमाण-परावार-पारङ्गतराद पर-पुरुषार्थ-परम-पण्डितराद । काळव्य-मंत्रि-प्रियाग्र-कुमार मंत्रि-कुलाग्र-गण्यराद कृष्णय्यनवर यी-धर्म्म-कार्य्य-वन्तु कयि-विडिदु पुरो-वृद्धिगे सलिसलागि आ-महा-महत्तु करसि कोट्ट शील-शासन यी-जैन-धर्म्मवक्के आचन्द्रार्कर्व्वन्तु विघ्नव माडिदरे आतनु तम्म महा-महत्त पदव कूडिवनल्ल शिवद्रोहि चक्रम-द्रोहि विभूति-रुद्राक्षिगे तप्पिदवनु कासि-रामेश्वरादि तीर्थ[illegible]लिङ्गक्के तप्पिदवरु यी-महा-महत्तिन वप्पि ॥ वर्द्धताम् जिनशासनम् ।

[यह लेख शक सं० १५६० के समयमें जैन और शैवोंके ऐक्यका तथा परधर्मसहिष्णुताका एक खासा नमूना है । इसमें मंगलाचरणमें पहले जैनदर्शन की प्रशंसा है, फिर शम्भू (महादेव) को नमस्कार किया है । इसमें बताया गया है कि (उक्त मितिको) जब कृष्णय्य-नामक-अय्यका पुत्र, कलिकालका अष्टम-चक्रवर्त्ती, वेङ्कटाद्रि-नामक-अय्य वेलूर-राज्यकी न्यायसे रक्षा कर रहा था, तब हुच्चप्प-देवने हलेबीडुके विजय-पार्श्वनाथ-बस्तिके खम्भोंपर लिङ्ग-मुद्रा लगायी और विजयप्पने उसको तोड़ दिया,—तब हलेबीडुके देवपृथ्वी-महामहत्तु, पुष्प-गिरिके पट्टदेव, तथा देशभागके अन्य महा-महत्तुओंने मिलकर यह आज्ञा निकाली कि जैन लोग चन्द्र, सूर्यके स्थायी होनेतक अपनी सब धार्मिक विधि कर सकते हैं ।]

[EC, V, Belur tl., No. 128.]

७११

शत्रुञ्जय;—प्राकृत ।

[सं० १६६६=१६३६ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

७१२

श्रवणबेलगोला;—संस्कृत ।

[शक १५६५=१६४३ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

७१३

श्रवणबेलगोला;—मराठी ।

[शक १५७०=१६४८ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

७१४–७१५

शत्रुञ्जय,—प्राकृत ।

[सं० १७१०=१६५३ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

७१६

सिरोही;—संस्कृत ।

[सं० १७१८=१६६१ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[H. H. Wilson, *Asiat. Res.*, XVI, p. 316, No. XLIII, a.] पुष्पु-

७१७

सिरोही,—संस्कृत।

[सं० १७२१ = १६६४ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[H. H. Wilson, Asiat. Res., XVI, p. 316, No. XLIII, a.]

७१८

श्रवणबेलगोला;—कन्नड़।

[वर्ष सौम्य = १६६६ ? ल. राइस)]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

७१९

मदने;—कन्नड़।

[शक १५९९ = १६७४ ई०]

[मदने ग्राममें, ग्राम-प्रवेशके पासके एक पाषाणपर]

श्री शक-वर्ष १५९५ नेय परिधावि-संवत्सरद कुय्य शुद्ध १० यल्लि श्रीमद्-मैसूर देव-राज-ओडेयरु बेळुगोळ चारुकीर्त्ति-पण्डिताचार्य्यर दान-शालेय जैन-संन्यासिगळिगे नित्य-अन्न-दानक्के सर्व्वमान्य-वागि धारादत्त-वागि कोट्ट मदणि-ग्रामवु मंगल महा श्री श्री श्री ॥

[(उक्त मितिको) मैसूरके देवराज-ओडेयरने बेळुगोळके चारुकीर्त्ति-पण्डिताचार्यकी दानशालाके जैन-संन्यासियोंको आहार-दान देनेके लिये मदणि गाँव दे दिया। महान् सौभाग्य।]

[EC, V, Channarayapatna tl., No. 273.]

७२०

मलेयूर;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[शक सं० १५९६ = १६७४ ई०]

[उसी पहाड़ीपर, वलि-कल्लुके उत्तर-पूर्वकी चट्टानपर]

शाके द्रव्य-पदार्थ-भूत-धरणी-संख्या-मिते वत्सरे
चानन्दे वर- पुष्य-मास-सित-पक्षे-पञ्चमी सत्तिथौ ॥
लक्ष्मीसेन-मुनीश्वरेण पर-दुर्वादीभ-सिंहेन वै
हेमाद्रौ वर-पार्श्वनाथ-जिनपे दीक्षा श्रिता सत्फला ॥

विजयप्पैय्य पाद वरसिदनु।

[लक्ष्मीसेन-मुनीश्वरने हेमाद्रिमें पार्श्वनाथ जिनालयके अन्दर दीक्षा ली। चरणचिह्न विजयप्पैय्यने स्थापित किये थे।]

[EC, IV, Chamrajnagar tl., No. 149.]

७२१

सिरोही;—संस्कृत।

[सं० १७३६ = १६७९ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[H. H. Wilson, Asiat. Res., XVI, p. 316, No. XLIII, a.]

७२२

श्रवणबेलगोला;—कन्नड़।

[शक १६०२ = १६८० ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

७२३

वेळ्ळूरु—संस्कृत और कन्नड़।

[विना कालनिर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १६८० ई० का]

[वेल्लूरु (नेल्लीकेरी परगना) में विमल-तीर्थंकरकी वस्तिमें बरण्डाकी दीवालपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

श्रीसमन्तभद्रमुनये नमः॥ श्रीमत्-डिल्ली-कोल्लापुर-जिनकञ्चि-पेमुगुण्डे-सिंहासनाधीश्वरादि **लक्ष्मीसेन-भट्टारक** प्रतिबोधदिन्द श्री-मैसूर **देवराज-वोडेयरु** धारा-दत्तवागि कोट्ट चैत्रदल्लि स्वशिष्यरह हुलिकल्ल पदुमण-सेट्टर सुतराद दो[illegible]ण-सेट्टर पुत्रराद **सक्करे-सेट्टरु** अभ्युदय-निश्श्रेयस-निमित्तवागि आ-चन्द्रार्क्क-वागि निर्म्मापिसिद **विमल-नाथन** चैत्यालयवु श्री

[जिनशासनकी प्रशंसा। समन्तभद्र-मुनिको नमस्कार। डि (दि) ल्ली, कोल्लापुर, जिनकञ्चि, और पेनुगोण्डेके सिंहासनाधीश लक्ष्मीसेन-भट्टारकके प्रति-बोधन (सम्मति) से मैसूरके **देवराज-वोडेयर**की दी हुई जमीनपर हुलिकल पदुमण-सेट्टिके पुत्र दोड्डादण्ण-सेट्टिके पुत्र सक्करे सेट्टि—जो कि लक्ष्मीसेन भट्टारक-के शिष्य थे—ने अपने अभ्युदयकी वृद्धिके निमित्त विमलनाथ चैत्यालय बनवाया था और यह कामना की थी कि यह चैत्यालय जबतक सूर्य-चन्द्र हैं तबतक इस पृथ्वीपर रहेगा।]

[EC, IV, Nagamangala, tl. No. 43]

७२४

हागलहल्लि—कन्नड़।

[शक स० १६२१ = १६९९ ई०]

[हागलहल्लि (कूलगेरी परगना) में, ईश्वर मन्दिरके दक्षिण-पूर्वके तेल-मिल (चक्की) के पासके एक पाषाणपर]

..... श्री-मूलसंघद ..... त्रिणक-गच्छद ध्यानधारण-मौनानुष्ठान-जप-समाधि-शील-गुण-सम्पन्नरप्प नियम चन्द्र-सिद्धान्तद अमल-विद्वत्-कुमुद-चन्द्र पण्डित-देव **आदिनाथ-पण्डित-देवर** गुड्डं **चाम-गौण्डं** शक-वर्ष-काल सावित्र आर-नूरैप्प(रिप्पतो)न्दनेय ईश्वर-संवत्सरद माघ-मासद सुद्ध-पञ्चदलु त्रयोदसि-सोमवारद अन्दु श्री-**तिप्पूरु तीर्थद**हल्लि-**हादिलवागिल** भूमिगारं **तेळ्ळर-कुलद** दरेयङ्ग-गौण्डन मगं **देव-गाउण्ड**मानन मगं **कालि-गाउण्डन** मगं **चाम-गाउण्डनु कल्ल-गाण**मं माडिसिदं मङ्गलमहा श्री ॥ **तिप्पूर्-तीर्थ**-दल्लि मानितद .. ..

[मूलसङ्घ, [तिं] त्रिणक-गच्छ के आदिनाथ-पण्डित-देवके श्रावक शिष्य, तेली जातिके, **तिप्पूर्-तीर्थ**के एक गाँव **हादिलवागिलु**के किसान चाम-गौडने एक पत्थरका तेल निकालनेका कोल्हू बनवाया।]

[EC, III, Malavalli tl., No. 48.]

७२५

खिक्का—प्राकृत

[सं० १७७३ और शक १६३८ = १७१६ ई०, श्वेताम्बर लेख।]

[D. P. Khakhar, Report on remains in kachh (ASWI, selections, No. CLII), p. 84, t.; p. 95 a. (ins. No. 23]

७३४-७३६

शत्रुञ्जय—प्राकृत ।

[सं० १८१० से १८१५ = १७५३ से १७५८ तक]

श्वेताम्बर लेख ।

७३७

गोडि—संस्कृत-ध्वस्त ।

[सं० १८२१ और शक १६८६ = १७६४ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

[D. P. Khakhar, Report on remains in Kachh (ASWI, selectoins, No. CLII), p. 88, t. p. 96 a (ins. No. 41).].

७३८

शत्रुञ्जय— प्राकृत ।

[सं० १८२२ = १७६५ ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

७३९

राजगिरि;—संस्कृत ।

[सं० १८२९ = १७७२ ई०]

[निम्न लेख रत्नागिरि के एक चरण पर है]

"ॐ सिद्धम् । संवत् १८२९के माघ महीनेके कृष्णपक्षकी छठी तिथिक हुगलीके रहनेवाले, ओसवाल और गडिल गोत्रके बुलाकीदासके पुत्र शा मानिक-

चन्द्रने राइएहमें रत्नगिरि पर्वतके मन्दिरको सुवरवाते समय श्री पार्श्वनाथ जिनके कनक-सदृश चरण-युगलकी स्थापना की।"

नोट—मूल लेखका पता नहीं है। यह उपर्युक्त अनुवाद अंग्रेजी अनुवादसे दिया जा रहा है।

[A. M. Broadlay, JASB, XLI, p. 250, tr.]

७४०

शत्रुञ्जय—प्राकृत।

[सं० १८१२ और शक १७७८ = १७५६ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

७४१

मांडवी—संस्कृत।

[सं० १८१५, शक १७१० = १७८८ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[J. Burgess & H. Cousens, Revised lists ant. rem. Bombay (ASI, XVI, p. 106, No. 2–4, t.]

७४२

पटना—संस्कृत।

[सं० १८१८ = १७६१ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

[L. A. Waddeli, Discovery of the exact site of Patliputra (Calcutta, 1892), p. 18, t. et. tr.]

७४३

राजगिरि;—संस्कृत ।

[सं० १८४८ = १७९१ ई०]

निम्न लेख (अनूदित) विपुलाचलपर मुनिसुव्रतनाथके मन्दिरमें है :—

"संवत् १८४८ के कार्त्तिक महीनेके कृष्णपक्षकी सप्तमी तिथिको श्री **अमृत धर्म वाचक**ने संघसहित विपुलाचलपर मुक्ति लाभ करनेवाले परम निर्वृत्त ऋषि (**The supremely liberated sage**) की प्रतिमाका निर्माण और संस्थापना की थी ।"

नोट :—मूल लेखका पता नहीं है । यह उपर्युक्त **अनुवाद** अंग्रेजी अनुवाद परसे दिया जा रहा है ।

[A. M. Broadley, JASB, XLI, p. 249, tr.]

७४४

मांडवी;—प्राकृत । आदिनाथके मन्दिरमें

[सं० १८५७ = १८०० ई०]

॥ संवत् १८५७ वर्षे वैशाखमासे कृष्णपक्षे दशमितिथौ शनौ श्री मुक्त संवत् सरस्वतिगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदा आचार्य्यलये भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति तदनुक्रमेण मुप श्रीतीजयकीर्ति तत्पदे भ० श्री नेमाचंद देवा तत्पदे भ० श्री चंद्रकीर्ति देवास्तत्पदे भ० श्री रामकीर्ति देवा तत्पदे भट्टारक श्री यशकीर्ति पुरुष देशात् मम उशाद्दी वलं पुण्यदयं (?) श्री **मांडवी** ग्रामे समस्त श्रीक्षीप्त श्री मूलनायक श्री आदिनाथ नित्यं प्रणम्यति ॥ श्री ॥ श्री शुभं भवतु ॥

[J. Burgess & H. Consens, Revised Lists ant. rem. Bombay (ASI, XVI), p. 106, No. 1. t.]

७४५-७४६

शत्रुंजय—प्राकृत ।

[सं० १८६० और शक १७२६ से सं० १८६१ और शक १७२६ तक
= ई० १८०३ से १८०४ तक]

श्वेताम्बर लेख ।

७५०

श्रवणबेलगोला;—कन्नड़ ।

[शक १७२१=१८०६ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

७५१

शत्रुञ्जय;—गुजराती ।

[सं० १८६७=१८१० ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

७५२

श्रवणबेलगोला;—कन्नड़ ।

[बिना कालनिर्देशका, पर लगभग १८१० ई० (लू. राइस)]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

७५३

मलेयूर—संस्कृत ।

[शक सं० १७३५ = १८१३ ई०]

[मलेयूर (उप्पमवल्लि परगना) में, पहाड़ी पर स्थित गुप्तद्दीन
ब्रह्म-देवस्के मार्गमें]

(पहला)

श्रीमद्-देवर-देव-वन्दित-जिनाङ्घ्रि-द्वन्द्व-सन्धारित-
प्रेमं वेट्ट समस्त-भव्य-जन-रिन्दं शोभितं सद्गुणो-
द्दामं **पुस्तक-गच्छ-देशि-गण**दोल् विभ्राजितं सत्कला-
रामं **भट्टाकलङ्क-मुनिपं** त्रैलोक्य-संपूजितम् ॥

[पुस्तकगच्छ और देशी-गणके **भट्टाकलंक-मुनिप** की प्रशंसा]

(दूसरा)

[उसी पहाड़ी पर, पाषाणोंके ढेरके पास, उत्तरकी तरफ दूसरी चट्टान पर]

श्रीमच्छाके शराग्नि-व्यसन-हिमगु-संख्यामिते श्रीमुखाब्दे
पौषे मासे त्रयोदश्यवनिज-दिवसे धातृ-भे चाप-लग्ने
श्रीमद्देशी-गणाग्र्यः कनकगिरि-वरे सिद्ध-सिंहासनेशः प्रापद्
भट्टाकलङ्कस्सुमरणविधिनास्मिन् गिरौ नाकलोकम् ॥

[पहले नं० के लेख का ही विषय इसमें है। देशीगणके अग्र्य (प्रधान), कनकगिरिके प्राप्त-सिंहासनके ईश भट्टाकलंकने इस टीले पर सुमरणपूर्वक स्वर्गलोक को प्राप्त किया, अर्थात् शरीर छोड़ा।]

[EC, IV, Chamrajnagar tl., No. 146 & 150]

७५४

शत्रुंजय;—प्राकृत।

[सं० १८७५ = १८१८ ई०]

श्वेताम्बर लेख।

७५५

मसार—संस्कृत ।

[सं० १८७६ = १८१६ ई०]

१. सं ८७६ वैशाख शुक्ले ६ **मूले संघे श्रीकुन्दकुन्दाचार्य्यान्वये** भट्टारक **विश्वभूषणजी** भट्टार

२. क श्री **जिनेन्द्रभूषणजो** भट्टारक **महेन्द्रभूषणजी** तदम्नके अग्रोतकान्वये कर्णिलगोत्रे श्री

३. सह-ची दशनावर सिंवस्य पुत्र श्री बाबू **संकरलालजो** तस्य पुत्र पुत्रश्चत्वारः बाबू श्री **रतनचन्दजी**

४. श्री बाबू **कीर्त्तिचन्द,** श्री बाबू **गुपालचन्द,** श्री बाबू **प्यारीलाल अरामनगर** वसिमिः **मसाढ़नग**

५. [illegible] न मन्दिर विम्ब प्रतिमाकर ..... अंग्रेवराज्ये वर्त्तमाने कारुपदेशे श्री

[इस लेख में सं० १८७६ को वैशाख शुक्ला ६ को, जब कि 'कारुप-देश' पर अंग्रेजी राज्य प्रवर्त्तमान था, (पार्श्वनाथ की) प्रतिमा मसाढ़ नगरके जैन मन्दिरमें अराम नगर (वर्त्तमान आरा=शाहाबाद) के बाबू शंकरलाल और उनके चार पुत्रोंके द्वारा समर्पित गयी थी। लेखमें आरा नगरके भट्टारकोंकी परम्परा भी वर्णित है। उस समय भट्टारक महेन्द्रभूषण जी विद्यमान थे।

[A. Cunningham Reports, III, P. 70, t. & a.]

७५६

पभोसा—संस्कृत ।

[सं० १८८१ = १८२४ ई०]

१. संवत् १८८१ मिते मार्गशीर्षशुक्लपक्षे शुक्रवास-

२. रे **काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये**

३. भट्टारक श्री **जगत्कीर्त्ति**स्तत्पट्टे भट्टारक श्री **ललितकी-**
४. **र्त्तिजी** तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गोयलगोत्रे प्रयागन-
५. गरवास्तव्यसाधु श्री**रायजीमल्ल**स्तदनुज**फेरुम-**
६. **ल्ल**स्तत्पुत्रसाधु श्री **मेहरचन्द**स्तद्भ्राता **सुमेरचन्द-**
७. स्तदनुजसाधु श्री**माणिक्यचन्द** स्तत्पुत्रसाधु श्री **हो-**
८. **रालालेन कौशांबी**नगरबाह्य **प्रभास**पर्वतोपरि श्री-
९. **पद्मप्रभ**जिनदीक्षाह्वान कल्याणकक्षेत्रे श्री जिन-
१०. बिंबप्रतिष्ठा कारिता अंग्रेजबहादुरराज्ये सु [शु] भं [॥]

अनुवाद—शुक्रवार, मार्गशीर्ष शुक्ला षष्ठी, सं० १८८१ के दिन, काष्ठासंघ, माथुरगच्छ, पुष्करगण, लोहाचार्यके अन्वय (परम्परा) में भट्टारक श्री जगत्कीर्त्ति उनके पट्टपर भट्टारक श्री ललितकीर्तिजी इनकी आम्नायमें अग्रोतक अन्वय (जाति) तथा गोयल गोत्रके प्रयाग नगरके रहनेवाले साधु (साहु = सेठ) श्री रायचीमल्ल, उनके अनुज फेरुमल्ल, उनके पुत्र साधु श्री मेहरचंद, उनके भ्राता सुमेरचंद, उनके अनुज साधु श्री माणिक्यचंद, उनके पुत्र साधु श्री हीरालालने कौशाम्बी नगरके बाहर प्रभास पर्वतके ऊपर श्री पद्मप्रभ (तीर्थङ्कर) के दीक्षा कल्याणक क्षेत्रमें श्री जिन (पार्श्वनाथ) बिंब प्रतिष्ठा कराई। यह काल अंग्रेज लोगोंके शासन का था [१८२४ ई०]।

[EI, II, NoXIX, No3 (P. 244)]

७५७

श्रवणबेलगोला—कन्नड़।

[शक १७४८ = १८२७ ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० मा०]

७५८

केलसूरु—संस्कृत ।

[काल लुप्त, (१८२८ ई० ? लू० राइस)]

[केलसूरु (केलसूरु परगना) में, वस्तिके अन्दरकी दीवालपर]

श्री **चन्द्रप्रभ**जिनेन्द्राय नमः ।

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति श्री-शकवत्सरे **त्रि**.....**षष्टि-त्रय-संख्ये** स्थिते
वर्षे **सम्प्रति सर्वधारिणि** सिते मासे तपस्ये तिथौ ।
मान्द्यां गुरुवासरे मृगशिरो-भे योग आयु ··· ···
··· **कर्णाटक**नामदेशविलसन्मध्यस्थिते ··· शुभे ॥
श्रीमान् यो **महिसूरु**नामनगरे सद्रत्नसिंहासना—
सीनः पार्थिव-**चामराज**-तनुभूरात्रेय-गोत्रोदितः ।
कुर्व्वन् सन्निह दुष्ट-निग्रहमतश्शिष्टानुरक्तां च सु-
प्रेक्षावान् पृथुपुण्यराशिरपि सत्पुण्योद्यमादि-क्षमः ॥
नानादेशनृपालमौलिविलसद्रत्नप्रभार्च्यक्रमां-
भोजो राज्यविचारणैकचतुरो भास्वान् वदान्याग्रणीः ।
तेजस्वी बिबुधौघरक्षणचणस्सुज्ञानलीलानिधि-
र्नानाशास्त्रविचारणो विजयते श्री **कृष्णराजो** नृपः ॥
तत्पादाश्रित-**शान्त-पण्डित**-सुतश्**श्रीवत्सगोत्रो**द्भवो
··· द्राजयस ··· नः प्रविलसद्विज्ञापनाकर्णनात् ।
दिव्ये हृद्यवधार्य पुण्यपुरुषस्सद्धर्मकृत्यं महान्
सोऽसौ ··· **केलसूरु**-नामनि पुरे चैत्याळयादि-स्थिताम् ॥

श्री-चन्द्रप्रभ-तीर्थकृद्विनयदेवज्वालनीदेविका-
विम्बानां ··· ··· पुनर्नवलसच्चित्रान्वितां शोभनाम् ।
प्राप्ताश्चर्यरसामकारयदपि श्रेष्ठां प्रतिष्ठां पुनः
··· ··· ··· शुभ ··· ··· नाट-गुरुणा वक्तुं यथैवन्मनः ॥
श्री मङ्गलं भवतु । वर्द्धतां जिन-शासनम् ।

[चन्द्रप्रभ-जिनेन्द्रको नमस्कार । जिन-शासनकी प्रशंसा ।

कर्नाटक देशके **महिसूर** नामक नगरमें राजा चामराजका पुत्र **राजा कृष्णराज** रत्नजटित सिंहासनपर बैठा,। वह दुष्टोंका निग्रह और शिष्टोंका पालन करता था । (उसकी प्रशंसा) उसने शान्त-पण्डितके पुत्र श्रीवत्स-गोत्रीय·····के प्रार्थना-पत्रसे **केलसूर**के चैत्यालयमें फिरसे तीर्थंकर चन्द्रप्रभ, विजय-देव तथा ज्वालिनी-देविकाके विम्बों (प्रतिमाओं) को स्थापित करवाया । चैत्यालयको भी सुधरवाकर उसको फिरसे चित्रित किया था ।]

[EC, IV, Gundlupet tl., No. 18]

७५९–७६३

शत्रुञ्जय—प्राकृत ।

[सं० १८८५ से १८८६ तक= १८२८ से १८२९ तक]

श्वेताम्बर लेख ।

७६४

नरसीपुर;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक १७४१=१८२९ ई०]

[नरसीपुर (नेम्मनहल्लि परगना) में, शान्तव्यके खेतमें एक पाषाण पर]

श्री दे

शुभमस्तु ।

श्रीमत्परम-गंभीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति श्री विजयाभ्युदय-शालिवाहन-शक-वरुष १७५१ विरोधि सं० कार्तिक-शु ५ भानु ॥ श्रीमद्राजाधिराज महाराज श्री-कृष्ण-राज-वाडेयरय्य-नवरु मैसूर-नगरदल्लि रत्न-सिंहासनारूढरागि पृथ्वी-साम्राज्यं गेय्यत्तु । दळवायिकेरेगे बन्तु दद्दु तदिशिकोण्डु अदरिंगे होद आनेयन्तु अप्पणे-मीरेगे गुण्डिनिन्द होरिसि एज्जरिंगे वपिस बगे ऐगळदेवन कोटे अमलुदार शान्तय्यन मग देवचन्द्रैयरगे निनागागि अप्पणे कोरिसिदन्तु ताळोकु-पैकि सागरद होबळि वळित नरसिंहपुरद ग्रामदल्लि वेदल्लु कं गु १२–० वरहद भूमिगे चतु-र्दिशिगू शीला-प्रतिष्ठे माडिसि कोट्टन्तु थी-शिलेगे पश्चिम होल-सारिगे तुण्डु खदा १ यिदके शेरिद अरु खद कुळ मोगलु कं० गु० १०–६ थी शिलेगे पूर्व हत्ति-होल १ क्के कुळ मोगलु कं गु १–४ उभय हन्नेरडु-वरहद भूमिगे थी-कार्तिक-ब १३ सोमवारदल्लु शिला-प्रतिष्ठे माडि नीत यीतन पुत्र-पौत्र-पारम्पर्यवागि निरुपाधिक-सर्वमान्यवागि अप्पणे कोरिसिद शासना ।

[जिन शासन की प्रशंसा ।

जिस समय मैसूरकी रत्नजटित गद्दीपर बैठकर राजाधिराज महाराज कृष्णराज वोडेयरय्य इस पृथ्वीपर राज्य कर रहे थे:—एक हाथी दळवायिकेरीमें आया और जङ्गलमें भाग गया । हाथीको मारकर राजाके पास लानेका हुक्म हुआ । ऐगळदेवनकोटेके अमलदार शान्तय्यके पुत्र देवचन्द्रने यह काम सम्पन्न किया, तो उसे इनाम मिलनेका हुक्म हुआ; और इनाम में उसे उपर्युक्त ताळुकेके सागर होबलि (प्रदेश) के नरसिंहपुर गाँवमें १२ वराह-जितने मूल्यकी सूखी जमीन दी गयी । इस भूमिको चारों ओर पत्थरोंकी निशानीसे अङ्कित कर दिया गया था । यह भूमि उसके पुत्रों, पौत्रों और सन्तान-परम्परासन्तानके उपभोगके लिये बिना किसी बाधाके, सब करोंसे मुक्त रूपमें दी गयी थी ।]

[EC, IV, Heggadadevan-Kote tl.; No. 51]

७६५

शत्रुञ्जय—प्राकृत ।

[सं० १८८७ = १८३० ई०]

श्वेताम्बर लेख ।

७६६

श्रवणबेल्गोला;—संस्कृत ।

[सं० १८८८ और शक १७५२ = १८३० ई०]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

७६७–७७७

शत्रुञ्जय—प्राकृत ।

[सं० १८८८ से सं० १८९३ तक = ई० १८३१ से १८३६

श्वेताम्बर लेख ।

७७८

मलेयूर;—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[शक सं० १७६० = १८३८ ई०]

[उसी पहाड़ीपर, चन्द्रप्रभ प्रतिमाके पश्चिमकी ओरकी चट्टानपर]

श्री श १७६० । स्वस्ति श्री वर्द्धमानाब्दः २५०१ विळम्बि-सं० वैशाख-शु ३ गु । सा । देवचन्द्रनु पितृ-सन्तानमं वरसिदं मङ्गलमहा श्री श्री श्री

[वर्द्धमान सं २५०१, शक १७६०, विळम्बि वर्षमें देवचन्द्रने अपने पूर्व-पुरुषोंकी परम्परा लिखवायी ।

[EC, IV, Chamarajnagar tl., No. 154.]

७७६–७६२

शत्रुञ्जय—प्राकृत ।

[सं० १८१७, शक १७६३ से सं० १९१६, शक १७८१ तक = ई० १८४० से ई० १८५६ तक] श्वेताम्बर लेख ।

७९३

कोथरा—संस्कृत ।

[सं० १९१८, शक १७८३ = १८६१ ई०] श्वेताम्बर लेख ।

[D. P. Khakhar, Report on remains in Kachh (ASWI, selectoins, No. CLII), p. 75-76, t.; p. 91 a (ins. No. 1).]

७६४–७६८

शत्रुञ्जय;—प्राकृत- ।

[सं० १९२१ से १९३० तक=ई० १८६४ से १८७३ तक] श्वेताम्बर लेख ।

७६६

शालिग्राम;—संस्कृत और कन्नड़ ।

[शक १८००=१८७८ ई०]

[शालिग्राममें, अनन्तनाथ-वस्तिके सामनेके स्तम्भपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति श्री विजयाभ्युदय-शालिवाहन-शकाब्दः १८०० नेय ईश्वर-संवत्सरद माघ-शु ५ लु स्वस्ति श्री पेनगोण्डे-शेनगण-संस्थानद श्रीलक्ष्मी-[illegible] भट्टारक-स्वामियवर शिष्यनाद यिद्गूरु पट्टण-शेत्रु वीरप्पनवर कुमार अण्णैयनवर कुमार हजूरु-मोतीखाने-वीरप्प तम्म तिम्मप्प सह शालिग्राम-

दल्लि यी-नूतनवाद चैत्यालय कट्टिसि श्री अनन्त-स्वामियन्नु स्वास्त्यक्षेत्र-सहित प्रतिष्ठे माडि यिरुवदक्के भद्रं शुभं मङ्गलं श्री ॥

[जिन शासन की प्रशंसा। सेनगणकी संस्थान पेनगोण्डेके लक्ष्मीसेन भट्टारक-स्वामी के शिष्य यिदगूरके पट्टण-शेट्टिके पुत्र अण्णैय्यके पुत्र **वीरप्प** और **तिम्मप्प** थे। तिम्मप्प छोटा भाई था। वीरप्प मोतीखानेके महलमें काम करता था। वीरप्पने शालिग्राममें इस नवीन चैत्यालय का निर्माण कराकर इसे **अनन्तस्वामी**को सौंप दिया।]

[EC, IV, Yedatore tl., No. 36]

८००–८०३

शत्रुञ्जय—प्राकृत।

[सं० १९३९ से १९४३ तक=ई० १८८२ से १८८६ तक]

श्वेताम्बर लेख।

८०४–८३०

श्रवणबेलगोला;—कन्नड़।

[अनिश्चित कालके]

[जै० शि० सं०, प्र० भा०]

८३१

तिरुमलै;—तामिल।

[काल अनिश्चित]

१ स्वस्ति श्री [॥] कडैकोट्-
२ टूर् तिरुमलैप्परवादिम-
३ ल्लर् माणाक्कर अरिष्टने-
४ मि आचार्य्यर् शेय्-
५ वित यच्चित्तिर-
६ मेनि ॥

अनुवाद—स्वस्ति ! श्री ! कडैक्कोट्टूरके अरिष्टनेमि-आचार्यने, जो तिरुमलैके परवादिमल्लके शिष्य थे, एक यक्षी की प्रतिमा बनवाई ।

[South Indian ins., I, No. 73 (p. 104–105) t. & tr.]

८३२

कलुगुमलै;—तामिल ।

[अनिश्चित काल]

१ श्री [॥] [आ] णनूर् सिंगणं-
२ दिक्कुरवडिगळ् मा-
३ णाक्कर् नागणन्दि-क्कुरव-
४ [डि] गळ् शे [य्] वित्त ति [रु] मेणि [॥]

अनुवाद—(यह) प्रतिमा आणनूरके पूज्य गुरु सिंहनन्दिके शिष्य पूज्य गुरु नागनन्दिने बनवायी थी ।

[EI, IV, p. 136, No. 6.]

८३३

वस्तीपुर;—कन्नड़-भग्न ।

[काल निश्चित नहीं]

[वस्तीपुरके उत्तरमें एक पाषाणपर]

क ॥ अकलङ्क ... ... !
वाक्-चन्द्रकीर्त्तियं घवळिसे दिगम्बर ।
... ... भव्य-प्रकार-चकोरं नलेय ।
... ... य कुटिल-वाइकन्य पदाम्भोजम् ॥

[अकलङ्ककी प्रशंसामें]

[EC, III, Seringapatam tl,. No. 145.]

८३४

चिदरवल्लि;—कन्नड ।

[विना काल-उल्लेखका]

[चिदरवल्लि (सोसले परगना) में, गाँवके पश्चिम बलगै रावळके खेतकी एक चट्टानपर]

अय-महित-कोण्डकुन्दा- । न्वय-सम्भव-देशिकाख्य-गणदोल् गुणिगळु ।
प्रिय-धर्म्मर् नेगळ्दरुपा- । त्त-यशर् ··· नन्दि-देवरी-वसुमतियोळ् ॥
आ-गुणिगळ शिष्यन्तियर् । आगमदिष्टदोळे नेगळ्दु तपदोळ् सलेका-
लागमनरिदाचति सन्द्- । ओगडिसदे नागि यर्व्वे-कान्तियरागळु ॥
तोरि ··· तप परि-ग्रहमं नेरे नोन्ताराधनातीत ··· मनदोळ् पडङ्गल-नरिदोप्पु-
तमध्दसमान ग ··· ··· भक्तियिन्दमपत्य-श्रीकारियमनात्माम्बिकेगे प्रत्यक्ष-परोक्ष-
विनयमं मान्य-चरित ··· ··· ···

[देशिक-गण और कोण्डकुन्दान्वयके ··· नन्दि-देवकी शिष्या नागियर्व्वे-कन्ति अपनी श्रद्धा और पवित्रताके लिये विख्यात थी । गृहीत व्रतोंकी परिपूर्णता-पूर्वक स्वर्गवास हो जानेसे, मातृक प्रेमके कारण, ··· माँकी स्मृतिमें···]

[EC, III, Tirum Kudlunarasipur, tl., No. 133]

८३५

वेरम्बाडि;—संस्कृत-भग्न ।

[विना काल निर्देशका]

[वेरम्बाडिमें (कुवनूर परगना) मारी मन्दिरके पास एक पाषाणपर]

ओं नमोऽर्हते भगवते चण्डोग्र-पारिश्वं (पार्श्व) नाथाय धरणेन्द्र-पद्मावती-सहिताय सर्व्वव्याधिहरं अळवुमोगे ··· ··· ··· नाना ··· श्री-पञ्च-परमेष्ठी ··· ··· ···

[ॐ। भगवान् अर्हत् चण्डोग्र-पार्श्वनाथको नमस्कार हो। वे धरणेन्द्र-पद्मावती सहित हैं। वे सब व्याधियोंको दूर करनेवाले हैं ··· ··· ··· ··· पाँच परमेष्ठी ··· ··· ··· ···]

[EC, IV, Gundlupet tl., No. 96]

८३६

जगवल्लु;—कन्नड़-भग्न।

[अनिश्चित काल्का]

[जगवल्लु (जगवल्लु परगने) में, जैन-बस्तिके पासके पाषाणपर]

स्वस्ति श्री कोण्डकुन्दान्वय देशी गणद्[मरचर-भट्टार]र शिष्यन्तिय अष्टोपवासदर कियागुणचन्द्र-भट्टार सवर्म्मगळु तोम्मचेळ वरिस त ··· वद्दुन वि ··· ··· निसिधिय कल्लनिरिसिद

कोण्डकुन्दान्वय तथा देसी-गणके अमरचर-भट्टारकी शिष्या, जो (महीनेमें) आठ दिनका उपवास करती थी और गुणचन्द्र-भट्टारकी साधिन थी, ९७ वर्षतक जीयी। उसके बहनोई या सालेने यह स्मारक खड़ा किया।]

[EC, V, Arsikere tl., No. 3.]

८३७

कोलूरु;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[वर्ष विरोधिकृत्]

[कोलूरमें, कुमरि-हक्कलुमें पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
भवात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम्॥

स्वस्ति श्रीमतु आदिनाथ-देव-पादाराधक सम्यक्त्व-रत्नाकर जिन-गन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमाङ्गेयप्प राजियव्वे-हेग्गडिति ४५ नेय विरोधिकृतु-

संवत्सरद माघ-सुध(द्ध)-पञ्चमी-बृहवारदन्दु कोळूरोळ् सुर-लोक प्राप्ते-यादळ् ॥ सरस्वतिगण-पुत्र-सुमति-पण्डित-शिष्य रूवारि सोमोजन पुत्र दुग्गयन वेस

[इस लेखमें किसी भी सुरलोक प्राप्तिका दिन दिया है और कोई विशेषता नहीं है।]

[EC, VIII, Sagar tl., No. 106]

८३८

हले-सोरब;—संस्कृत तथा कन्नड़।

[काल निश्चित नहीं]

[हले-सोरबमें, उसी स्थानपर एक दूसरे समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्।
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥ [१]

श्री **हेमचन्द्र-देवर** गुड्डु **दम गोडन** निषिधि श्री-वीतरागाय श्रीमत्तु यी-कल माडिदनु **सोरबद वयिरोजनु** ॥

लेख स्पष्ट है।

[EC, VIII, Sorab tl., No. 53.]

८३९

गिरनार;—संस्कृत-भग्न।

श्वेताम्बर लेख।

[ASI, XVI, P. 356, No. 15, t. & tr.]

८४०

गिरनार;—संस्कृत-भग्न।

श्वेताम्बर लेख।

[ASI, XVI, p. 356, No. 17, t. & tr.]

८४१

गिरनार;—संस्कृत।

[दक्षिणी प्रवेश-द्वारके पासके गिरिनारी मन्दिरके मण्डपमें भूमि-मञ्जिलके एक पाषाण-तलपर]

श्री सुमकीर्तिदेव साहुजाजाहुत साहु तेजकीर्ति देव।

अनुवादः—श्री सुमकीर्तिदेव और साहु जाजाके पुत्र साहु तेजकीर्तिदेव।

[ASI, XVI, p. 356-357, No. 18.]

८४२

भोलरी;—संस्कृत और गुजराती।

[काल अनिश्चित] श्वेताम्बर लेख।

[J. Kirste, EI, II, No. V, No. 3 (p. 25-26) t. & tr.]

८४३

रामनगर (अहिच्छत्र);—संस्कृत।

[काल अनिश्चित]

रामनगरके पुराने किलेसे उत्तरकी ओर कुछ १०० गज दूरीपर और नसरतगञ्जके पूर्वमें 'कतारि खेरा' नामकी एक बहुत छोटी पहाड़ी है। यह 'कतारि-खेरा' 'कोत्तरि खेरा'का अपभ्रंश (बिगड़ा हुआ रूप) मालूम पड़ता है। 'कोत्तरि खेरा'का अर्थ होता है 'मन्दिरका ढेर'। यहाँ जनरल कनिंघमने खम्भेका कङ्कडका चौखूँटा पाया और एक छोटे मन्दिरकी करीब-करीब लुप्तप्राय दीवालें खोज निकाली थीं। उसने पहिले इसे कोई बौद्ध-मन्दिर समझा, परन्तु पीछेसे वहाँ सिवा एक बुद्ध-मूर्तिके और कुछ न होनेसे, यह खयाल छोड़ दिया। लेकिन वहाँपर कुछ नग्न मूर्तियाँ निकलीं जोकि दिगम्बर जैन सम्प्रदायकी थीं। इससे उसने जैन मन्दिर समझा। पत्थरके एक परिवेषक (Railing) स्तम्भपर, जिसमें ऐसी मूर्तियोंकी ६ कतारें थीं, निम्नलिखित समर्थक लेख मिला:—

महाचार्य इन्द्रनन्दि शिष्य महादरि पार्श्वपतिस्य कोत्तरि ।
"इन्द्रनन्दिके शिष्य महादरि, पार्श्वपतिके मन्दिरको ॥"

यहाँ 'पार्श्वपति'से मतलब २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथसे ही है। एक दूसरी नग्न प्रतिमाके पाषाणपर 'नवग्रह' ये शब्द खुदे हुए थे, एक विशाल स्तम्भके खण्डपर उसके चारों ओर शेरके आकार बने हुए थे, जो कि महावीर स्वामीका चिह्न है। जैनोंमें 'अहिच्छत्र' अब भी एक पवित्र स्थान माना जाता है। इन लेखोंके अक्षरोंसे जनरल कनिंघम अनुमान करते हैं कि यह मन्दिर गुप्तकालकी अवनतिसे पहले बना था।

[Art, Ins. N-W-P-O (ASI, II), p. 28, t. & tr.]

८४४

खजुराहो;—संस्कृत ।

[काल अनिश्चित]

[२१ नं०के जिन-मन्दिरके द्वारके स्तम्भपर]

आचार्य स्री (श्री)-देवचन्द्रः (न्द्र) स्सिय (शिष्य) कुमुदचन्द्र (न्द्रः) ॥

[देवचन्द्रके शिष्य कुमुदचन्द्रका उल्लेख ।]

[ASWI, Progress Reports 1903-1904, 48, t.]

८४५-८४६

जैसलमेर;—संस्कृत ।

[सं० १४७३=१४१६ ई०] श्वेताम्बर लेख ।

शि० ले० ८४७—संवत् १४९३ = १४३६ ई०
" " ८४८— " १४९७ = १४४० ई०
" " ८४९— " १५०५ = १४४८ ई०
" " ८५०— " १५३६ = १४७९ ई०

समाप्त

अनुक्रमणिका (१)

जैन-शिला लेख संग्रह भाग १-२ में संग्रहीत शिला लेखों के स्थानों की अकारादि क्रम से नाम सूची। नाम के पश्चात् लेख नम्बर समझना चाहिये।

अङ्कदी १६६, १७८, १८५, १६४, २००, २०१, २४२, ३६७, ३७८
अजमेर ३०६, ३६१, ४१३, ४१७ ४१८, ४२१
अञ्जनगिरि ७६३
अञ्जनेरी (नासिक) ३१७
अनवेरी ४५८
अनहिलवाड पाटन ११६, ६८४, ६८६
अनेबलु ६२३, ६२७
अब्लूर ४३५, ४३६
अमरापुर ५२१
अर्थूणा २३६
अलहल्लि २५३
अलेसन्द्र ४११
अल्तम (कोल्हापुर) १०६
[illegible]लूर १०७
[illegible]वलवाडी २६७
आर्सी केरी ४६५
इसूर २२१
उदयगिरि (उड़ीसा) २४५
उदयगिरि (सांची) ६१
उद्रि २६१, ४३१, ४६१, ५७६, ५८८, ५६६
एचिगनहल्लि ५६७
एलेवाल ३८६
एलोरा ४८१
ऐहोले १०८, २४७, ४४४
कडकोल ४४२, ४६०, ५०८, ५२५
कडत्र १२४
कडूर १५०
कण्ठकोट ५१०, ५३१
कदवन्ती १६३
कणवे २३०, २३२, ५६१
कवली ३५१
कम्बदहल्लि २६६, २६४, ३७२
करडालु ३८३, ३८४

कडगुण्ड ३४७
कलस ५२२
कलसगेरी ३१८
कलहोली ४४६
कलुचुम्बरु १४४
कलुगुमले ८३२
कल्भावी १८२
कल्य ५६६
कल्लवलि ६६४
कल्लूरगुड्डा २७७
कहायूं (गोरखपुर) ६३
कांगड़ा १२६
कारकल ६२४, ६२७, ६८०
कुप्पटूरु २०६, ५५५, ५६३, ६०५
कुम्तरहल्लि १६६
कुम्सी १४६
कूलगेरी १३६
केलसुरु ७५८
कैदाल ३३३
कोणूर (वेळगांव) २२७, २७६
कोयरा ७६३
कोन्नूर १२७, ३३५
कोप्प ६८८
कोलूरु ८३७
कोल्हापुर ३०२, ३२०
क्यातनहल्लि १३८, ३८७
खजुराहो १४७, १७६, २२५, ३२६ ३३१, ३४०, ३४३, ३४४, ३५६, ३६२, ४४
खम्भात ५३६
गिरनार ११, १४१, ३४५, ३४६, ३६८, ३६६, ४४५, ४६४ ४७६, ४७७, ४७६, ४६३ ५१८, ५२३, ५२६, ५३० ५३७, ५४६, ५५३, ५७६ ६२२, ६३१, ६४५, ७०० ८३६, ८४१
गुडिगेरी २१०
गुण्डलूपेट ४२५
गुन्त्री २४४
गेदी ६५०, ७३७
गोग्ग ४५१, ४५५, ४५६
गोवर्धनगिरि ६७४
ग्वालियर ६३३, ६४०
चत्रदहल्लि ३००
चल्य २८७
चामराजनगर २६४
चिकमगलूर ४१२, ५२६
चिक्कमागडी ४०८, ४२२, ४२३, ४२४, ४२७, ५०२, ५१३,
चिक्क-हनसोगे १७५, १६५, १६६, २२३, २३६, २४१,

चित्तौड़ ३३२, ५१६, ६४२, ६५३,
चिदरवल्लि ८३४
[illegible]ाथ (ग्वालियर) ६०८
चवगल्लु ८३६
जैसलमेर ८४५, ८५०
टोंक (राजपूताना) ६३६
तगडुरा २६५
तट्टेकेरे २१६
तवनन्दी ५३४, ५४०, ५६८, ५६६, ५७७, ५७८
तलगुण्ड ४१६
तारङ्गा ६७६
वि[illegible]२६२
तिरुमलै १७१, १७४, ४३४, ५५७, ८३१
तिरुप्परुत्तिक्कुण्रु ५८१, ५८७
तेवर तेप्पा ३७७
तेरदल २८०, ४०२, ४१४
दान साले २४८, ४६८
दावनगिरी (गेरी) २४६
दिळमाल ४८३
दिल्ली (टोपरा) १
दीडगूरु ३५३
दूब्बु[illegible]२२८, २३५
देवगढ़ १२८, ६१७, ६२८
देवगिरि ६७, ६८, १०५
देवरहल्लि १२१
देवळापुर १२०
दोद्द-कणगालु १८०
दोहद ३८२
धरमपुर ६०६
नडोले ३५७, ३५८
नन्दी (माँण्ट गोपीनाथ) ११८
नरसीपुर ७६४
नल्लूर १८३, १८४
नाखौर (बिहार) ७०४
नागदा ६३०
नाडलाई ६७२
नित्तूर ४३६-४४१, ४६६
निदिगि २६७
नेसगीं (बेळगाँव) २४६
नोणमङ्गल ६०, ६४
नौसारी १२५
पटना ७४२
पण्डितरहल्लि ३५२
पञ्चपाण्डव मलै ११५, १६७
पालनपुर ३५०
पुरले २६६, ४५०, ४६६
पेग्गूर १५४
बक्कलगेरे ५५२
बंकापुर १८७, २७२
बड़नगर १२६

वन्दालिके १४०, २०७, ४३३, ४३८ ४४८, ४५६
वन्दूर ३७३
बयाना (राजपूताना) १७६
बवागल्ल (माळवा) ३७०, ३७१, ६४३
बलगाम्वे १८१, २०४, २०८, २१७ ४२०, ४५३
बसवनपुर ४१०
बस्ती ३२८
बस्तीपुर ५८२, ८३३
बहादुरपुर (अलवर) ६६२
बादामी ३१२
बामणी ३३४
बाळ होन्नूर २३१
बिजौली ३७४, ३८६
बिदरे १५८
बिदरूर ६५६
बिलियूर १३१
बेगूर ६२१
बेतूर ५११
बेरम्बाडि ८३५
बेलगाँव ४५४
बेळवत्ते ११६
बेळ होङ्गळक ३६६
बेलुरु १७२
बेलूर ३०५
बेल्लुरु ७२३
बोगादि ३१६
भारङ्गी ६१०, ६४१, ६४६
भिलरी (भीलरी) ६५१, ८४२
मत्तावार २६२, २७३, ३२१
मथुरा ४, ५, ८-१०, १२-५२, ५४-८६, ८८, ८६, ६२, १६१, १७३, २११
मदनूर (नेल्लोर) १४३
मदने ७१६
मदलापुर २२४
मद्दागिरि ६६८
मद्रास ६८१
मन्ने १२२, १२३
मर्करा ६५
मर्कुली ३७६
मलेयूर ४०१, ५६०, ५८०, ६००, ६१५, ६५७, ६६३, ७०५, ७२०, ७५३, ७७८
मसार ५८६, ७५५
महोबा २५२, ३२५, ३३७, ३४१, ३४२, ३६०, ३६१, ३६५
माँण्ट आबू ४१५, ४१६, ४७१-४७४, ४८०, ४८२, ४८६, ५३६, ५५०, ५५४, ६२६, ६२४,

६३८, ६४४, ६४७, ६४८, ६६०
मल्लिनिडुगल्लु ४७८, ६३७
मॉण्ट शिवगंगा ३१५
मॉण्ट सुन्ध (राजपूताना) ५०७
माण्डव्री ७४१, ७४४
मुगुलूर २६५, ३१७, ३२७, ३८०
मुत्तत्ति २७५
मुत्सन्द्र १७०
मुल्लूर १७७, १८८, १६१, २०२, २०६, ५६०
मूडबिद्रि ३७५
मूलगुण्ड १३७
मेलिगे ६६१
म्यूनिच ६३६
यल्लादहल्लि ३२४
यिडुवणि ६४६
यीदगुरु ४३२
वराङ्गना ६१६
वरुण १५६
वल्लीमलै १३३-१३६
विजयनगर ५८५, ६२०
शुक्ति १३
वेणूर ६८६, ६६०
वैकुण्ठ (उदयगिरि) ३
राजगिर ८७, ७३६, ७४३
राणपुर ६३२
रामनगर ५३, ८४३
रायबाग ३१४, ४४६
रावनदूर ५८४
रोहो ४४७, ४८७
लक्ष्मेश्वर १०६, १११, ११३, ११४, १४६
लन्दन ३३६
शत्रुञ्जय ६५६, ६६५, ६६६, ६७५, ६७८, ६८२, ६८३, ६८५, ६६२–६६६, ७०१–७०३, ७११, ७१४, ७१५, ७२७-७३१, ७३४-७३६, ७३८ ७४०, ७४५, ७४६, ७५४, ७५६-७६३, ७६५, ७६७-७७७, ७६४-७६८, ८००-८०३
श्रवणबेल्गोला ११०, ११२, ११७, १५१, १५२, १५५, १५६, १५७, १६२, १६३, १६५, १६८, १६६, २२६, २३३, २५४–२६१, २६८, २७०, २७१, २७८, २७६, २८१–२८३, २८५, २८६, २६०, २६६, २६८, ३०३, ३०४,

३०६, ३१०, ३११, ३२३,
३३५, ३४८, ३५४, ३५५,
३६२, ३६३, ३८८, ३९२,
३९५–४००, ४०३–४०७,
४२८–४३०, ४६१, ४६३,
४७५, ४९२, ४९८, ५०१,
५०५, ५१२, ५१५–५१७,
५२०, ५२७, ५२८, ५३३,
५४३, ५५२, ५६५, ५७२,
५७३, ५७५, ५९१, ५९६,
६०२, ६०७, ६१६, ६२५,
६३५, ६६१, ६६९–६७१,
७०६, ७१२, ७१३, ७१८,
७२२, ७२६, ७३२, ७५०,
७५२, ७५७, ७६६, ८०४–
८३०
सण्ड २४३
सरोत्रा ७०६, ७०८
सरगूरु ६१८
साबनूर २८८
सालिग्राम ७९९
सिक्का ७२५
सिग्गाम्वे ४४३
सिन्दीगेरी ३०७, ३०८
सियालबेट ४६२, ४८८, ५०६,
५३२,
सिरोही ६७१, ६८७, ७१६ ७१७,
७२१, ७३३,
सुकद्दरे २७४
सूदी (धारवाड़) १४३
सोमवार १९२, २३४, २३६
सोराब ४५७
सोहनिया १४८, १५३
सौंदन्ति १३०, १६०, २०५, २३७
४७०,
हट्टण २१८
हट्टण ३९४
हन्तुरु २९३
हरवे ६५२
हर केरी २२२
हलेवीड २६६, ३०१, ४२६, ४९९
५१४, ५२४, ५४९, ७१०
हलेसोराव ५९३, ६०३, ८३८
हल्सी (बेलगांव) ९६, ९९–१०४
हागल हल्लि ७२४
हाथी गुम्फा (उदयगिरि) २
हादिकल्लु ६१२
हिरे-आवलि (हिरियावली) २८६,
३२२, ५३५, ५३८, ५४१, ५४४
५४७, ५५६, ५५८, ५५९,

५६२, ५६४, ५७०, ५७४,
५८३, ५८८, ५९२, ५९४,
५९५, ५९८, ६०१, ६०४,
६०६, ६११, ६१३, ६१४
हीरे हल्लि ४९६, ५०४
हुम्मच १३२, १७५, १९७, १९८,
२०३, २१२, २१६, २२६,
२३८, ३२६, ४६७, ४९४,
४९७, ५००, ५०३, ५०९,
५४२, ५९७, ६६७
हुलुहल्लि ५७१
हुल्ली गेरी ३७६
हूनशी कट्टि (वेङ्गाँव) २९२
हेगोरी ३५६, ३६४, ५४५, ६७७
हेब्बडे २५१
हेमत्ती १६४
हेरगू ३३९, ३८५, ३९०
हेरे केरी ३४९, ४८४, ४८९
होगेकेरी ६५४, ६५५, ६५८
होन्नूर २५०
होन्नेन हल्लि ५५१
होन्नाड १८६
होलल् केरी ३३८, ४६०
होस होळलु २८४

अनुक्रमणिका २

[विशेष नाम सूची]

इस अनुक्रमणिका में जैन मुनि, आर्यिका, कवि, संघ, गण, गच्छ, ग्रन्थ तथा राजा, रानी, गृहस्थों और सब प्रकार के नाम समाविष्ट किये गये हैं। नाम के पश्चात् अंक, लेख नम्बर समझने चाहिये।

अ

अकलङ्क ३०५, ३१३, ३१६, ३२४, ३२६, ३४७, ४१०, ५०३, ६६७, ७५३

अक्खादेवी ३४६

अग्रोतक (अन्वय) ७५५, ७५६

अङ्ग ३०५, ३१३

अङ्गडि ३६७

अङ्गणि ३७८

अङ्गरन ३०५

अच्युत वीरेन्द्र शिक्यप ४०१

अच्युत राजेन्द्र ४०१

अच्युत राय ६६७

अजमेर ३०६, ३६१, ४१३, ४१७, ४१८, ४२१

जयपाळ ३६१

जित[illegible]ळन ३१६

अजित सेन (भट्टारक, पण्डितदेव) ३०५, ३१६, ३२६, ३२७, ३४७, ३५१, ३७३, ३७५, ४१०

अञ्जनगिरि ६७३

अञ्जनेरी ३१७

अडळवंश ३१५

अतिगैमान् ४३४

अत्तिमव्वे ३२६

अदळ कुळ ३१५

अदळ जिनालय ३१५

अदळ वंश ३३३

अदळराम ३३३

अदळ समुद्र ३३३

अदलेश्वर-देवगृह ३१५

अदिग ३५१

अद्रि ४३१

अनन्तकीर्ति ४२७
अनन्तवीर्य ३२६
अॅनवरी ४५८
अनहिळ वाड पाटन ६८४, ६८६
अण्ण ३१३
अन्नूर ४३५, ४३६
अभयचन्द्र (सिद्धान्त चक्रवर्ती–) ४३७, ४३६, ५१४, ५२४, ५८४, ६१०, ६४६, ६६७
अभिनन्द देव ३३४
अभिनव चारुकीर्ति ६७३
अभिनव देवराज (देवराज II) ६२०
अभिनव विशालकीर्ति (भट्टारक) ६६१
अभिनव समन्तभद्र ६७४
अमरापुर ५२१
अमितव्य ४५२
अमृत दण्डाधीश ४५२
अम्बर (नाम) ३०५ क
अम्बिकादेवी ३४६
अम्मण ३४६
अटकळ ३१८
अय्यण ४०८
अवन्ति ३०५क, ३१३
अरसियकेरे (आर्सीकेरे) ४६५
अरिष्टनेमि (आचार्य) ८३१
अरिहर राव (बुक्क राव) ५८१
अरुङ्गळ (अन्वय) ३२६, ३४७, ३५१, ३७३, ३७५, ३७६, ३८०, ४१०, ४२५,
अरुहन हल्लि ३१८,
अर्थूणा ३०५ क
अर्हनन्दि मुनि ३२४
अर्हनन्दि सिद्धान्तदेव ३३४
अर्हसुगिरि (पर्वत) ४३४
अळियादेवी ३४६
अलेसन्द्र ४११
अश्वपति ६६७
असवर मारय्य ४५०
अहोबळ पण्डित ३५१

आ

आचारसार (ग्रन्थ) ३३५
आबिरगे खोल्ळ ३२०
आदण्णगौड ३३८
आदिदास ६६३
आदिदेव मुनि ५८४
आदिनाथ पण्डितदेव ७२४
आदि गतुण्डि ४६६
आबू ४१५, ४१६, ४७१—४७४, ४८०, ४८६, ५३६, ५५०, ५५४, ६२६, ६३४, ६३८, ६४४, ६४७, ६४८, ६६०,

आनेवाळु ६२३, ६२६
आन्ध्र ३१३.
आलन्दे ४३५
आलूरु ३३६
आळोक ३०५ क
आल्वखेद ३०८
आल्लू ३३६
आल्हण ३२६
आसन्दिनाड ३०८
आस्त ४२१
आहवमल्ळ ३१७, ४०८, ४५२

इ

इङ्गुलेश्वर वळि ४११, ४६५, ५१४, ५२१, ५२४, ५७१, ५८४, ६००, ६७३
इम्मडि दण्डनायक बिट्टियण्ण ३०५
इन्दगरस वोडेयर ६५५, ६५६
इन्द्र (महाराज) ६५६
इन्द्रनन्दि ४१०, ६६७, ८४३
इरुग (दण्डेश) ५८५
इरुगप्प ५८१ ५८७
इरुङ्गोळ ४७८

ई

ईचण ४५१
ईश्वर चमूपति ३५२

उ

उच्चङ्गि ३०५, ३१८, ३५१
उच्छूणक (नगर) ३०५ क
उज्जयन्त ३४६
उदयण ३०५
उदयचन्द्र ३४३
उदयादित्य ३०५, ३०८, ३२४, ३४७ ३७३, ३७६, ४११, ४४८
उद्दरे ४३१
उद्रि ४६१, ५७६, ५८८, ५६६,
उमयक्के ३१६
उमयव्वे ३१६
उमास्वाति ६६७
उर्व्वाडि ३१८
उर्व्वीतिळक ३२६

ए

एकान्तद रामय्य ४३५
एक्क गौड ४०८
एक्कळ ४३१
एक्कोटि जिनालय ३१८
एचव दण्डनायकिति ४११
एचळदेवि ३०८, ३१ ३६४, ४१ ४७०, ४६६

एचिगन हल्लि ५६७
एप्पत्तर ३२२
एरग ३४७
एरिंगि ४३४
एरेगङ्ग ३०५
एरेयङ्ग ३०५, ३१३, ३६२, ३७३ ३७६, ३६४, ४११, ४४८
एळम्बल्लि ३८६
एळाचार्य ५८५
एलूरा ४८१
एलेवाळ ३८६
[illegible] जिनालय ३२७

ऐ

ऐहोले ४४४
ऐचिसेट्टि ४४४

ओ

ओड्डुग (नृप) ३२६

क

कञ्चि ३१३
कञ्चि गोण्ड ३०८, ३२४,
कञ्चिगोण्ड विक्रमसंग ३०५
कञ्चि-वर ३४७
कटुक ३०५ क
कडकोल ४४६, ४६७, ५०८, ५२५
कडवे वोप्प ४४८
कडुचरितेय ३२४
कणाद ३०५
कण्ठकोट ५१०, ५३१
कत्तेय ऐचिसेट्टि ४४२
कदुले (नदी) ३१८
कदम्बकुळ ३४६
कदम्बसेट्टि ३५१
कनक जिनालय ३१३
कनकसेन ३०५, ३१६, ३२६, ३२७ ३४७, ३७३
कनकियब्बरसि ३१३
कनिळ (गोत्र) ७५५
कन्दर राय ५११
कन्दार (कळचुरि) ४०८
कन्दारदेव ५०२
कन्न (द्वितीय) ४५४
कन्यादान ३०८
कन्ह ३०५ क
कपिळदेव मणिवोज्ञ ३५१
कब्बली ३५१
कमलकीर्ति ५८६
कमलकीर्तिदेव ६४३
कम्बदहल्लि ३७२
कम्बरस ३७८

कम्बेनहल्लि ४३७
कय्याळ ३३३
कवडमय्य ४२६
करडालु ३८३, ३८४
करण ३१३
करियक्कण ३१८
करिगुण्ड ३४७
कळपाळ ३०५, ३०८, ३३४
कळपोडे ४४६
कलवन्त ३४७
कलस ५२२
कळहोंली ४४६
कळाळ महादेवी ५२२
कलिकार्तवीर्य ४५३
कलिदेव ३१८, ४७०
कलिंग ३०५, ३१३
कलुगुमलै ८३२
कलुकणिनाड ३१८
कल्य ५६६
कल्याण ३५६
कल्लवासी ६६४
कल्लिसेट्टि ३७७
कल्लेश्वर ३१८
कश्यप प्रजापति ३०५
कसळगेरी ३१८
काञ्ची गोण्ड ३२७
काञ्चीपुर ३०५, ३१८
काञ्चीसंघ ६३३, ६४०
काणाद्र ३१६
काणूरगण (क्रणूरगण) ३१३, ३५३, ३७७, ३८६, ४०८, ४३१, ४५६, ५३४, ५४०, ५८२
कामदेव (सामन्त) ३२०
कामदेव (महामण्डलेश्वर) ४३५
कामव्वे ४८६
कामभूमिपति ३४६
कामळ ३३४
कामळदेवी ३२४
कामिकव्वे ३२४
कामिदेव ६७४
कामेय दण्णायक ६७४
कायस्थ ३०५ क
कारकळ ६२४, ६२७, ६८
कारुपदेश ७५५
कार्तवीर्य ३३६, ४४६, ४
कार्तवीर्यप्रथम ४५४
कार्तवीर्य द्वितीय ४५४
कार्तवीर्य तृतीय ४५४
कार्तवीर्य (चतुर्थ) ४४६, ४७०
कार्तवीर्यदेव (महासामन्त)
काळ ३६०

काळञ्जर ३६५
काळाञ्जन (किला) ४७८
कालिदास ३१२
काश्यपगोत्र ३०५, ३४७
काष्ठासंघ ५८६, ६४३, ७५६
किन्निग भूपाळ ६८०
किरण विनालय ३१६
किरणगण्वे ३२४
किसुकल्ल ३०५
कीरग्राम ४८५
कीर्ति ४३१
कीर्तिगावुण्ड ४५७
कीर्तिदेव ६३३
कीर्तिपाळ ३६१
कीर्तिराज ३२०, ३३४
कुण्डिदण्ड ३२०
कुण्डिदेशदण्ड ३३४
कुण्डी ३२०
कुन्तळदेश ३१३, ३२६, ४०८
कुप्पटूरु ५५५, ५६३, ६०५
कुमारपण्डित ४८४
कुमारपाळदेव ३३२
कुमार सिंह ३४०
कुमारसेन ३०५, ४१०
कुमारसेन देव ३२६
कुमुदचन्द्र देव ४३२
कुमुदन्दु ४४४
कुरु ३१३
कुरुक्षेत्र ३१२, ३३३
कुळचन्द्र मुनि ३३४
कुळचन्द्र सिद्धान्त ३०७
कुळभूषण ४३१, ५२४
कूके ३३६
कूचिराज ५११
कृष्ण (रट्ट) ४४६
कृष्णप्प ७१०
कृष्णराज ७५८
कृष्णराय ६६७
केतमल्ल ३८६
केतिसेट्टि ३१३
केरल ३०८
केरेय ३३३
केरेयम ४०८
केरेयमसेट्टि ३८६
केलसूरु ७५८
केलसे सावोज ४८४
केलेमल्लदेवि ३०८
केलेयळदेवि ४११
केलेयब्बरस ३०८, ३४७, ४११
केल्ले गौण्ड ३५१
केशव ३१३
केशव देव ३३३

केसिराज ४७०
कैकोण्डु ३०५
कैदाल ३३३
कोङ्कण ३०८
कोङ्ग ३०५, ३२४
कोङ्गु ३३३
कोटण सेट्टि ६७४
कोटिनायक (महामण्डलिक) ५४४, ५४७
कोटि-सेट्टि ३१३
कोट्ट दत्ति ३२८
कोडकणि ४५७
कोण्ड कुन्दान्वय (कुन्द कुन्दान्वय) ३०७, ३१३, ३२४, ३२६, ३३५, ३३६, ३५२ ३५६, ३६४, ३७२, ३७७, ३८४, ३८६, ३६४, ४०२, ४११, ४३६, ४४६, ४६६, ४६७, ४७८, ५१४, ५२१, ५२४, ५२६, ५३८, ५४७, ५५१, ५६०, ५६१, ५७१, ५८०, ५८२, ५८४, ५८५, ५६० ६००, ६२१, ६७३, ७०२, ७५५, ८३४, ८३६,
कोण्डगण्ड ३२४
कोत्तु ३०७
कोथरा ७६२
कोप्प ६८८
कोन्नूर ३३५
कोळनूर ३३५
कोलेश्वर पण्डित ३१७
कोळाग्र गण ६६३
कोळार ४७०
कोलूरु ८३७
कोल्हापुर ३२०, ३३४, ४०२
कौशळ ३१३
कौशिक मुनि ३२४
क्यातन हल्लि ३८७
क्षुल्लकपुर ३२०, ३३४
क्षेमकीर्ति ६४०, ६४३
क्षेमपुर ६७३

ख

खजुराहो ३२६, ३३०, ३३१, ३४३, ३४४, ३५६, ८४४
खण्डेलवाल ६३६
खम्भात ५३६

खरतरगच्छ ६५३
खरपुर १४६

ग

गङ्ग ३१३, ३१८, ३२८, ३३३,
गङ्गकुळ ३०५, ३१३
गङ्गदेव ३२०, ३३४
गङ्गनाडि ३२८
गङ्गपुत्र ३३३
गङ्गप्पय ३०७
गङ्गवंश ३१३
गङ्गवाडि ३०५, ३०७, ३०८, ३१८
३१६, ३२४, ३२७, ३३३
गंगराव (दण्डनीश) ४११
गङ्गराज्य ३२६
गङ्गा ३०५
गङ्गाम्बिके ३८६
गङ्गेयन मारेय ४७८
गङ्गेश्वरदेव ३३३
गङ्गेश्वरावास ३३३
गडिमेन्दु देव ३१५
गडुद गङ्ग ३३३
गण्डम ४५२
गण्ड विन्नीगरा ३०७, ३३३
गण्डगदीय दे. ३२०, ३२४
गण्डादि ३०८
गदानन्दी ३०६
गद्याण ३१२, ३३८, ६७३
गन्धविमुक्त ४११, ४२४
गन्धि सेट्टि ३६४
गागिदेव ३२७
गामुण्ड ३२१
गावणिग ३८६
गिरनार ३४५, ३४६, ३६८, ३६६
४४५, ४६४, ४७६, ४७७
४७६, ४६३, ५१८, ५२३
५२६, ५३०, ५३७, ५४६
५५३, ५७६, ६२२, ६३१
६४५, ७००, ८३६, ८४०
८४१
गुडुदगङ्ग ३३३
गुणकीर्ति देव ६३३, ७०२
गुणचन्द्र ३०६
गुणचन्द्र सिद्धान्तदेव ३५६, ३६४
गुणभद्र ५११
गुणसेन ५४२, ६१२
गुणसेन सिद्धनाथ ५०३
गुण्डलूपेट ४२५
गुत्त ३३३
गुप्तकुळ ४४८
गुम्मटपुर ६१८

गुम्मटाम्बा ६८०
गुम्म सेट्टि ४३२
गुळियणन ३०५
गूवळ ३२०, ३३४
गूवळ द्वितीय ३३४
गूलिय वाचिदेव ३३३
गूलूरु ३३३
गृच्छपिच्छाचार्य ३२४, ५८५
गेगोल्ल ३३४
गेडि ६५०, ७३७
गेरसोप्पे ६७३
गोकाक (तालुका) ४४६
गोगिराज ३१७
गोग्ग ४५१, ४५५, ४५६
गोग्गण पण्डित ३०५
गोग्गि ३२६
गोण्ड ३३६
गोतम स्वामि ३२६, ३४७
गोप चमूप ६०६
गोपीपति ६०५, ६४६
गोयल गोत्र ७५६
गोवनसेट्टि ३१६
गोविदेव ३५६
गोविन्द ३२७, ४७८
गोविन्द जिनालय ३२७
गोवर्धनगिरि ६७५, ६८०
गोरव गावुण्ड ४२५
गोरीकुल ६१७
गोङ्कदेव रस ४०२
गोङ्कळ ३२०, ३३४
गोव्योजन ३३४
गौज ३२१
गौड़ ३०५, ३१३
ग्वालियर ६३३, ६४०
ग्रहपति (अन्वय) ३३०, ३३६

च

चक्रकूट ३५१
चक्रवर्ति भट्टारक ३०५
चक्रेश्वर ३१३, ४८१
चक्रेश्वरी ३०५ क
चङ्गाल्व ३२४, ३७७, ४५२
चट्टदेव ३१८
चट्टयनायक ४५२
चट्टळदेवि ३२६, ४०८, ४३१
चट्टिग ३१३
चट्टियक्क ३५१
चट्टियब्बरसि ३१३
चतुरानन ३०८
चन्दककोज ३२८
चन्दवे ३५२

चन्दिकब्बे ३५२
चन्द्र ४७०
चन्द्रकीर्ति ५४५, ५७१, ६००
चन्द्रदेव (भट) ४५३
चन्द्रप्रभ (मुनि) ३१७, ३५१, ४१०
४५६, ५५५, ६६७
चन्द्रादित्य ३२०, ३३४
चन्द्रसेन सूरि ५८८
चन्द्रिका (महादेवी) ४४६, ४४६
चन्न पारिश्यदेव ३३३
चळवरिय ३३२
चळवरिवेश्वर देव ३३३
चलिग[illegible]ब्बोव ४६८
चल्लय्य हेग्गडे ३७६
चाकि गौडि ४०८
चाणक्य ३३६
चाणिक्य ३०८
चान्द्रायण देव ३८४
चामवे दण्डनायक ३०८, ४११
चामराव ७५८
चामुण्डराव ३०५ क, ६६७, ६७६
चावळदेवी ३०८
चाविमव्वे गावुडि ३७७
चाविमव्व, ३३६
चावुण्ड ३४७
चारुकीर्ति पण्डिताचार्य ४३८, ५२४,
५६१, ६७३
७१६
चालुक्य ३१२, ३१३, ३१४, ३१६
३२२, ३२६, ३३२
चालुक्यचक्री ३१३
चालुक्यामरण ३०८
चिकमगलूर ३२०, ४१२, ५२६
चिक्कतायी ४०१
चिक्क मागडि ४०८, ४२२–४२४,
५२७, ५०२, ५२३
चिण्णराव दण्डाधीश ३०५
चित्तौड़ ३३२, ५१६, ६४२, ६५३
चित्रकूट गिरि ३३२
चिदम्बल्लि ८३४
चिनकुरली ३२८
चिन्तामणि ४१०
चूड़ामणि ४१०
चेङ्गिरि ३०५
चेन्न पार्श्वनाथ ३३६
चेन्नवे नायक ३३३
चेर ३०५
चैच (दण्डाधिनायक) ५८५
चोघारेकाम गावुण्ड ३३४
चोळ ३०५, ३०८, ३१३, ३१८,
३१६, ३२४
चौण्ड राय ३४७

छ

छत्रसेन ३०५ क

ज

जकवे (जक्कव्वे) २२१, ३४७, ३५३, ३८५, ४२७

जक्क गवुण्डि ४६६

जक्कणव्वे ३०८, ४०८

जक्कियक्कने ३०८

जक्कियव्वे ३३६

जक्कले ३३६, ४२७

जगदेक-महीश ३१३

जगदेव ३४६

जतिग ३२०, ३३४

जननाथपुर ३०८, ३२४

जयकीर्ति ३३२, ५७१

जयकुमार ३०८

जयकेशिदेव ३४६

जयतिमति ३०५ क

जयदेकमल्लदेव ३१२, ३१३, ३१४, ३२२, ३२६, ३४७, ४०८

जयसिंह देव ३०५, ३१४, ३१७, ३२६, ४०८, ५११

जवगल्लु ८३६

जसहड ३४६

जाङ्गळ ३१३

जाल्ह ३३६

जिड्डुळिगे ३१३, ४३१

जिड्वळिगे ३२२

जितचन्द्र ३४३

जिनचन्द्र ३७६, ४५२, ६३६, ६६७

जिनदत्तराय ६६७, ६८०

जिनसमुद्रसूरि ६५३

जिनसेन ५११, ५६७

जिनेन्द्र भूषण (भट्टारक) ७५५

जिन्ने देवर ३२८

जैनेन्द्र (न्यास) ६६७

जैसळमेर ८४५–८५०

झ

झञ्झा-सिलहार ३१७

ट–ड

टोंक ६३६

डाकरस दण्डनायक ०३८, ४११

डूंगरेन्द्र देव ६३३, ६४०

त

तटका ४३४

तवनिधि ५६६

तवनन्दि ५३४, ५४०, ५६८, ५७७, ५७८

तळकाडु (तलेकाड) ३०७, ३०८, ३१८, ३२८, ३४४, ३४७, ३५१
तलगुण्ड ४१६
तलपाटक ३०५ क
तलवन पुर ३५१
तलेमले ३२४
तानभूषण ७०२
तारंगा ६७६
तिन्त्रिणीक ३१३, ३७७, ३८६, ४०८ ४३१, ४५६, ५८२, ७२४
तिम्मरा ६८६, ६६०,
तिरुप्परत्तिक्कुण्ड ५८१, ५८७
तिरुमलै ४२४, ७२६
तुङ्गभद्रा ३१६
तुण्डीर मण्डल ४३४
तुरुष्क ३१३
तुळापुरुष ३०७, ३०८
तुळुनाड ३४७
तेद (दण्डाधिनाय) ४१४
तेलुगि ४१४
तेवरतेव ७७७
तेरदळ ४०२, ४१४
तेलुक्क ३१७
तैल ३२६, ३४६, ४०८,
तैलदण्डाधिप ३४७
तैलप देव ३१३, ३४६
तैलशान्तर ३४६
तैलहराय ३४६
तौळव देव ६५४
त्रिभुवन कीर्ति राजुल ५२१, ५४५
त्रिभुवनपाळ ३६१
त्रिभुवनमल्लदेव ३०७, ३०८, ३१३, ३२६, ३२८, ३३३, ३४६
त्रिविक्रम ३२६
त्रिलोकसार ६६७
त्रिशस्तम्भ प्रमाण ३३४
त्रैविद्य ३४७
त्रैविद्य देव ३०५, ३२६, ३२७
त्रैविद्यावर ३३५
त्रैलोक्यमल्ल ३१३

द

दक्षिण मथुरा ३०५
दमवसन्त ६१७
दमवमरस ४३१
दयापाल देव ३२६
दरविळ संघ ३२६

दशवर्म्म ३१३
दशरथ ३१७
डाकरस ३०७, ३०८
दानसाले ४६८
दामनन्दि त्रैविद्य ३६४
दासिमरसु (सेनानायक) ३१४
दिब्बूर ३३३
दिमण्ण सेट्टि ६५७
दिवाकर पण्डित ३१७
दिळमाळ ४८३
दीडगुरु ३५६
दृढ़प्रहार ३१७
देकणब्बे ३४७
देकवे दण्डनायक ३०८, ४११
देकि सेट्टि ३८६
देक्कब्बे ३२१
देगाड ३२४
देदू ३३६, ३४३
देवकीर्ति पण्डितदेव ४११
देवगढ़ ६१७, ६२८
देवचन्द्र (पण्डितदेव) ४११, ५६३ ६४६, ७७८ ८४४
देवपृथ्वी महामहत्तु ७१०
देवप्प (दण्डनाथ) ६६७
देवभद्र मुनिप ३५६
देव महीपति ६७४
देवनन्द (मुनि) ३७१
देवरस (दण्ड नायक) ३२६
देवराज ३२४
देवराज ओडेयरु ७१६
देवराज वोडेयर ७२३
देवराज प्रथम, द्वितीय ६२०
देवराय ६०५, ६०६, ६११–६१३, ६१५, ६१६, ६६७
देवलब्बे ३२७
देवलापुर ३१८
देवागमस्तोत्र ६६७
देवि सेट्टि ४२६
देवेन्द्र कीर्ति ६६७, ६६१
देवेन्द्र ब्रुध (पण्डित) ३२१
देशिय गण ३०७, ३२४, ३५२, ३५६, ३६४, ३७२, ३६४, ४०२, ४११, ४२६, ४३६, ४४३, ४६५, ४६६, ४६७ ४७८, ५००, ५१४ ५२१, ५२४, ५२६ ५४४, ५४५, ५४७ ५४८, ५५१, ५६० ५६१, ५६३, ५७१ ५८०, ५६०, ६००

६२१, ६२४, ६४६
६७३, ६८०, ६८६
७५३, ८३४, ८३६
दोरसमुद्र ३०५, ३०७, ३२४, ३२७
३२८, ३३३, ३३६, ३४७
३७६, ३८५
दोहद ३८२
द्याणक ३३२
द्वादशसोमपुर ३०५
द्वारावती ३०५, ३०७, ३०८, ३१७
३१८, ३२४, ३२७, ३३३
३३६, ३४७, ३५१
द्रविड संघ ३०५, ३१६, ३२६, ३२७
३४७, ३५१, ३७३, ३७५
३७६, ३८०, ४१०, ४२५
४६६

ध

धनञ्जय ६६७
धर्मकीर्ति ३१६
धर्मचन्द्र ७१७
धनपाळ ३२७
धर्मपुर ६०६
धर्मभूषण (भट्टारक) ५८५, ६६७

न

नखौर ७०४
नगमङ्गळ ३१६
नङ्गळ ३१८, ३१६
नङ्गलि ३०७, ३२८, ३३३, ३३६
नञ्ज देव ६६७
नञ्जराय पट्टण ६६७
नडेसि कोण्डु ३३८
नडोले ३५७-३५८
नन्दनमल्लि सेट्टि ३०५
नन्दि देव ४६१
नन्दि गण ३२६
नन्दि संघ ३४७, ३७३, ३७५, ३८०
४१०, ४२५, ५८५, ६१७
६४६
नन्न ४५४
नन्निय गंग ४३१
नन्निशान्तर ३२६, ३४६
नन्नि सेट्टि ३५१
नयकीर्ति (सिद्धान्तदेव) ३३६, ३६४
४०८, ४२३
४५२, ५८०
नव नन्द ४४८
नरलै ६७२
नरसिंग ३१६, ४३१
नरसिंह भूप ३५६, ६६७
नरसिंह देव ३२८, ३४७
नरसिंग नायक ३६४

नरसिंह ३२४, ३३३, ३३६, ३५२ ३६७, ४५२
नरसिंग सेट्टि ३१४
नरसिंह वर्म्म ३०५, ३०८, ३२४
नरसीपुर ७६४
नरेन्द्रकीर्ति-त्रैविद्यदेव ३२४
नाकण ३०८
नाकि-सेट्टि ३२७, ३५२, ३६७
नाग ३१८
नागगौड ४५५
नागणण ओडेयर ६१८
नागदा ६३०
नागनन्दि ८३२
नागवल्लिकुळ ३६६
नागवे ३५२
नागर खण्ड ३७७, ३८६, ४०८, ४४६
नागर वंश ३०५ क
नागियक्क ३२७
नाडवल सेट्टि ३०५
नाडाळव ३३३
नायक वसव ३३३
नारण वेग्गडे ३२१, ३६४
नारसिघ देव ३३३, ३३६, ३४७ ३५२, ३६७, ४५२
नारसिंघ होय्सळ गावुण्ड ३५१
नारसिंह ३२७, ३७६, ३६४, ४११ ४४८, ४६६, ४६६
नारायण गृह ३३३
निगुलर ३२४
नित्तूर ३४७, ४३६, ४४०, ४४५ ४६६
निम्ब देव ४०२
निम्ब देव सामन्त ३५२४
निम्मडि दण्डनायक ३०५
निवर्तन ३२०
निरुगुण्ड नाड ३४७
नुन्न वंश ४०८, ४४८
नूर्म्मडि तैळ ४०८
नेक्कळ ३१३
नेगलु ३२७
नेमदण्डेश ३७२
नेमिचन्द्र (भट्टारक) ४५०, ६६७
नेमिचन्द्र सैद्धान्तिक ४४६
नेमि देव ४६६
नेमिनाथ ३३६, ३३७, ३४६
नेमि पण्डित ४७८
नेळ मङ्गळ ३१५
नेल्कुदरे ३५१
नोणम्बवाडि ३०५, ३३६, ३२८
नोळम्ब वाडि ३०५, ३०७, ३०८ ३१८, ३२४, ३३३
न्याय कुमुदचन्द्र ६६७

प

पङ्क देव ३०८
पञ्च वसदि ३२६
पंडना ७४२
पट्टण स्वामी ३०५
पट्टद देव ७१०
पडुमसेन ५२५
पण्डित रहल्लि ३५२
पण्डिताचार्य ६१०
पदळ रादित्य ३३३
पद्मकीर्ति ६४५
पद्मण (मंत्री) ६५४
पद्मनन्दि मुनिप ४३१
पद्मनन्दि व्रतीन्द्र ३१३
पद्मनन्दि ४०८, ५५१, ५८५, ६१७, ७०२
पद्मनाभ (विभु) ३१६
पद्मनाभ मंत्री ६५८
पद्मप्रभ मळधारिदेव ४६६, ४६८ ४७८
पद्मळ देवि ३०८, ४५४
पद्मसेन (मुनि) ५११
पद्माम्बा ६६७
पद्मावती ४५४
पद्मावता गेरे ३५२
पद्मियक्क ३३६, ४२०
पद्मोवे ४२०
पनसोगे शाखा (गच्छ) ६२४, ६८०
पमोसा ७५६
पम्पादेवी ३२६
परमानन्द देव ३१२
परमारवंश ३०५ क
परमार्दि देव ३६५
परवादिमल्ल ३०५, ३१६, ३२८, ४१०
पलसिगे ३०५
पल्लव ३०५, ३०८, ३२४
पणिधर ३२६
पाणुमडउरी (महामहत्तम) ३१७
पाण्ड्य ३०५, ६२४, ६२७
पाण्ड्य कुळ ३०८, ३२४
पाण्ड्य नायक ६८८
पात्रकेसरि स्वामी ३०५
पानुङ्गळ ३०५
पापाक ३०५ क
पापे ३३६
पारिश्वसेन भट्टारकस्वामि ३३८
पारिसण्ण ३४७
पारिसय्य ३४७
पार्श्वदेव (मुनि) ३८०
पार्श्वदेव ३१६, ३१८, ३२२, ३३३
पार्श्वदेव (प्रभु) ३७२

पार्श्वपुर ३२४
पार्श्वसेनबोव ४६७
पाळदेव ३१२
पालनपुर ३५०
पाहिल्ल ३४३
पाहुक ३०५ क
पिरुङ्गोण देव ५२१
पुरले ४५०, ४६६
पुरातन मुनि ४०८
पुरुषोत्तम भट्ट ४३५
पुस्तक गच्छ ३२४, ३५२, ३५६, ३६४
३७२, ३६४, ४०२, ४३६
४६५, ४६६, ४७८, ५१४
५२१, ५२४, ५२६, ५५१
५६०, ५६१, ५७१, ५८०
५८४, ५६०, ६००, ६२१
६४६, ६७३, ७५३
पुष्कर गण ६३३, ६४३, ७५६
पुष्पसेन ३७३, ५०३, ५८७
पूजक ३६०
पूज्यपाद स्वामी ६६७
पूर्ण चन्द्र ६०६
पृथ्वीराम ४५४
पेक्कम सेट्टि ४८६
पेरुमालु कन्ति ५०४
पेरुमालु महीश ५७१
पेरुमाले देव ४६६, ५७१
पेर्गडे ३२२
पेद्दोरे ३५१
पेर्म्म ३२२
पेर्म्माडि देव ३१८, ६२७, ३५६
४०८
पोगरि गच्छ ३२२
पोगले गच्छ ५११
पोन्न ३४६
पोय्सळ ३०८, ३२४, ३७६, ३६४
४११, ४६६
पोम्बुर्च्च ३२६
पोम्बुच्च पुर ३४६, ६८०
प्रताप नायक ३३८
प्रथम (राजा) ४४६
प्रभाचन्द्र ४५२, ४७०, ६१७, ६६७
प्रमेय कमळ मार्तण्ड ६६७
प्रयाग ३३३
प्रसन्न गंगाधर ३३३

ब

वडगण कोटिय ३०५
वडगलु ३३८
वनङ्गु ४०८
वन वसे ३०५, ३०७, ३०८, ३११
३१८, ३२४, ३३३, ३३६
३५१

वनवसे नाड ४४८
वनवासि ३२८
वनवासि मण्डल ३७७
वनवासे ३५१
वन शंकरी ३१२
वनिहट्टि ४७०
वन्दणि ३४६
वन्दलिके ३१३, ४३३, ४३८, ४४८, ४५६
वन्दूर ३७३
वप्पिनृप ४७८
वल्ल सेन वोव ४६८
वम्मण दण्डनाथ ३२२
पद्मणा ३२६, ३६०
वम्म नृप ४७८
वम्मय्य ४१२
वम्मिसेट्टि ३६४, ३७७
वम्मोज (सुनार) ५१३
वम्म्योजन ३३४
वयिचय दण्डनाथ ६१८
ववागञ्ज ३७०, ३७१, ६४३
वर्म्म ४५२
वलगाम्वे ४२०, ४५३
वलात्कारगण ४४४, ५६६, ५८५ ६६७, ६६१, ७०२
वल्ल ४१४
वल्लय्य नायक ३५६
वल्लाल देव ३०८, ३२०, ३३४ ३४७, ३७३, ३७६ ३८५, ३८७, ३६४ ४११, ४२७, ४३१ ४४८, ४५२, ४५७ ४६१, ४६५, ४६६
वल्लाल राय ६६७, ६७३
वल्लुदेव ३०८
वसव ३३३
वसवन पुर ४१०
वस्ति (स्थान) ३२८
वस्तीपुर ५८२, ८३३
वहादुरपुर ६६२
वाचय ३३३
वाचळ देवी ३२६
वाचिगे ३३३
वाचिदेव ३३३
वाणरासि (वारणासि) ३३३
वादामी ३१२
वान्धव नगर ४४८
वामणी ३३४
वालचन्द्र ३५३, ३६४, ४२६, ४४३ ४६६, ५००, ५१४, ५२१ ५२४, ५४५
वालचन्द्र (पण्डित देव) ४३६

बाहुक ३०५ क
बाहुबली (दण्डनायक) ४११
बाहुबलि पण्डितदेव ५८०
बाहुबलि मळधारि ५५१
बाहुबलीव्रती ५६७
बिजोली ३७४, ३८६
बिज्जियब्बे ४७०
बिज्जलदेव ३४६, ४०८, ४३५, ४४८
बिज्जल देवि ३४६
बिट्टिग ३५२, ४३१
बिट्टिदे ३३६
बिट्टिदेव ३१५, ३४७, ३५६, ३७३, ३७६
बिट्टियण ३०५
बिट्टिसेट्टि ३२७
बिट्टेन्दु ३०७
बिण्डिगन बिले ३७२
बिम्मल देवि ३४७
बिदरूरू ६५६
बिल्लहराज ४१६
बीच ४५४
बीजेपोळ ३०५
बीडिनलु ३०७
बीरदेव ३२६
बीरल देवि ३२६
बुक्क महीपति ५८५
बुक्क महाराय ५६१, ५६६, ५६६, ५७४
बुक्कराज ५७६
बुक्कराय ५८६, ६१८, ६१६, ६२०
बुच्चङ्गि गोण्ड ३३३
बूचिमय्य ३७६
बूचिवेगाडे ३२१
बूचिराज ३७६
बूतुगपेर्म्माडिय ३०५
बूवयनायक ३८३
बुल्लप्प (प्रभु) ६४१, ६४६
बृहद्गच्छ ५१६
बेक्क ३८१
बेङ्गि ३१६, ३२४
बेचि देव ३३३
बेडिकोण्डु ३३८
बेतुरु ५११
बेदलु भूमि ३३८
बेनवाम्बिके ३३३
बेलगाँव ४५४
बेवपाळ ३६१
बेरम्बवाडि ८३५
बेळहोङ्गळ (बेलगांव) ३६६
बेलुहूर ३०८

वेलूर ३०५
वेळवोल ३३३
वेल्लूरु ७३५
वैचप्प ५७६
वोगादि ३१६
वोघदेव ४४८
वोवसेट्टि ४४८
वोप्प ३१३, ४०८
वोप्पदण्डाधिनाथ ४६६
वोप्पगावुण्ड ४०८
वोप्पगौण्ड ३७७
वोप्पदेव ४०८, ४११, ४६६
वोप्प (चमूप) ४२१
वोप्पादेवी ३०८
वोम्मण हेग्गेडे ६६१
वोम्मनहल्लि ४०८
वोम्मले ४२२
वोळङ्गदेव ६०८
वौद्ध ३१६
ब्रह्म ४४६
ब्रह्म भूपाळ ४४८, ४६७
ब्रह्मय्य सेनवोव ४६७
ब्रह्मवंश ३१८
ब्रह्मेश्वर ३०७, ३०८
ब्रह्म शेलेय हल्लिकोप्प ४३५

भ

भद्रबाहु ३२६, ३४७, ६६७
भद्रङ्ग ३१३
भद्रादित्य ३४७
भरत ३०७, ३०८, ३४६, ३४७, ३७६, ४२७
भरतराज ३२७
भरतिम्मेय दण्डनायक ४११
भरतेश्वर ४११
भरतेश्वर दण्डनायक ३०८
भाइल्लवंश ३०५ क
भानुकीर्ति सिद्धान्तेश ३१३, ३१८, ३४६, ३७७, ३८६, ४४८
भायिदेव ४१४
भारङ्गी ६१०, ६४१, ६४६
भारद्वाज गोत्र ३०८
भिळरी ६५१
भिल्लम ३१७
भीमप्प ३२७
भीमचिनाळ्य ३३३
भीमवे ३३३
भीम समुद्र ३३३
भीळरी ८४२
भुजबळ सागर ३२६

भुवनकीर्ति ६४५, ७०२
भूतनाथ ४७०
भूमिदान ३०८
भूलोकमल्ल ३१३, ४०८
भूषण ३०५ क
भैरव प्रथम (भैरवराज) ६८०
भैरवभूपति ६७४
भैरव द्वितीय (भैरवेन्द्र) ६८०
भैरव (शासक) ६६७
भैषज्य शास्त्र ३१८
भोग नृप ४७८
भोगव [ती] (नदी) ३१६
भोजदेव ३२०, ३२४

म

मकरध्वज ३८६
मगध ३१३
मङ्गिनृप ४७८
मडलूर ३३४
मण्डपपुर ६१७
मण्डनमुद्द ४२७
मण्डिलपुर ३३६
मत्तावार ३२१
मत्तिकापुर ३२१
मथुरान्वयी ३०५ क
मदनवर्मदेव ३३७, ३४२, ३४३, ३४४
मदनश्री (आर्यिका) ४१८
मद्दने ७१६
मदसारद ६१७
मद्दगिरि ६६८
मद्रास ६८?
मधुरा ३४६
मधुरापुर ३०८
मध्यदेश ३१३
मम्बट ३०५ क
मयूर (अन्वय) ६३३, ६४०
मल्द वोल्ल ३५२
मल्दुन मल्लिदेव ३२२
मस्से नाड ३०५
मरिकली ३७६
मरियाने दण्डनायक ३०७, ३०८
३४७, ३७६
४११
मरुगरे नाड ३३३
मरुदेवी ३६४
मर्कुली ३७६
मलधारि स्वामि ३२६, ३२७
मलालकेरे ४६५
मलेनाड ३४७
मलेयूर ४०१, ५६०, ५८०, ६१
६५७, ६६३, ७०५, ७२
७५३, ७७८

मल्ल (मंत्री, दण्डाधिनाथ) ४४८
मल्लगौण्ड ३४७
मल्लिकार्जुन ४४६, ४४६, ४५३, ४५४, ४७०
मल्लिदेव रस (महामण्डलेश्वर) ४५६
मल्लिनाथ स्वामि ६६८
मल्लिसेट्टि ४६६, ५२१, ६७४
मल्लिपेण मलधारि ३०५, ३१६, ३४७, ३५१, ३७३
मल्लिपेण देव ५०४
मल्ले गावुण्डि ४२४
मल्लोज ३४७
मसण ४०५, ४५७
मसण गावुण्ड ५२७
मसणि सेट्टि ३२७
मसार (महासार) ५८६, ७५५
महदेव प्रथम, तृतीय ४७०
महदेव राय ५११
महदेवण्ण ५४०
महमूद सुरत्राण ६६७
महसेन ५११
महागण ३४३
महादान ३०७
महादेव (दण्डनायक) ३१२, ४३१, ४५७
महालक्ष्मी देवी ४०२
महाविरूपाक्ष महाराय ६४६
महिसुरु (देश) ७५८
महीचन्द्र ३४३
महीपति ३३६
महीपाळ ४२१
महेन्द्रभूषण (भट्टारक) ७५५
महेश्वर ४१०
महोवा ३२५, ३३७, ३४१, ३४२ ३६०, ३६१, ३६५
माकव ३६४
माकवे गावुण्ड ३५१
माघनन्दि देव ३०७, ३०८, ३१३, ३२०, ३३४, ४११, ४६५, ५१४, ५२४, ५७१, ६६७
माघचन्द्र ६६७
माच ३५६
माचगावुण्डि ४६६
माचोज ३१८
माचण दण्डनायक ३०८
माचले ३१८
माचियक्क ३५२, ३६४
माडिराज ३१६
माडुव माचळय्य ३२१
मांडवी ७४१, ७४४
माणिकद ३२७

माणिक्य देव ४१८
माणक्यदोळलु ३२८
माणिक्यनन्दि ३२०, ३५६, ३६४ ६६७, ६६८
माणिक्यसेन ३२२
मॉण्ट निडुगल्लु ४७८, ६३७
मार्तण्ड देव ३१३
माथुरगच्छ ६४३, ७५६
मादरसवोडेयर ५८६
मादिराज ३७३
मादिराज (प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ) ४७०
मादेवि ३३३, ४३१, ४७०
मादेय ३२३
माधव ३१६, ३४७
माधवचन्द्र ५३४, ५६८, ६६७
माधवदण्डनायक ३६४ ५४०
मान्यखेट ३३३
मावळय ३२१
मारगावुण्ड ५०८
मारचन्द्र मलधारि ६०३
मारम ३२७
मारसिग ३१३, ३२०, ३३४, ४३१
मारव्वे ३१८
माराय ३०८
मारसमुद्र ३३३
मारिसेट्टि ३१६, ३२७
मारुगोण्डी वसदि ३०५
माळ (चमूनाथ) ४३१
माळव्वेय ४४०, ४४१
माळियक्क ४०८
माळवे सेट्टिकव्वे ४६६
माळिसेट्टि ४२०
माळियक्के ४३६
माळोज ३४७
मादुल ३३६
मीमांसक ३१६
मुगुळी ३२७
मुगुळिय ३१६
मुगुलूर ३१६, ३२७, ३८०
मुदुगेरे ३३३
मुनिचन्द्र ३१३, ३२४, ३७७, ३८६, ४०८, ४३१, ४४८, ४६७ ४७०, ५७१, ६६३
मुनिभद्र देव ५८८, ५८६, ६११
मुम्मुरि दण्ड ४०८
मुद्दगावुण्ड ३२२
मुद्दरसि ३७२
मुद्दव्वे ४२३
मुद्दय्य ४०८
मुद्दगौड ४१२
मुरारि देव ४३८

मुरारि केशवदेव ४०८
मुल्लूर ५६०
मूडहल्लि ३७५
मूवत्ति ३०८
मूलराजा ३३२
मूलसंघ ३१३, ३१८, ३२०, ३२२, ३२४, ३३४, ३३८, ३३६, ३५२, ३५३, ३५६, ३६४, ३७२, ३७७, ३८६, ३६४, ४०२, ४०८, ४११, ४१३, ४२६, ४३१, ४३६, ४४४, ४५६, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८ ४६०, ५००, ५०८, ५११, ५१४, ५२१, ५२५, ५२६, ५३८, ५४१, ५४४, ५४५, ५४७, ५४८, ५४६, ५६०, ५६१, ५६४, ५७१, ५८०, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५६०, ५६२, ६००, ६२१, ६३६, ६४५, ६४६, ६६३, ६७१, ७०२, ७२४, ७५५
मृड ३३२
मेघचन्द्र ५६७
मेघचन्द्र मुनि ३३५
मेघचन्द्र भट्टारक ३६४
मेघचन्द्र (सिद्धान्तदेव) ४५२
मेघपाषाण गच्छ ३५३
मेलिगे ६६१
मैलुगि देव ४०८
मौर्य्य ४४८
मौंट शिवगङ्गा ३१५
म्यूनिख़ ६३६

य

यदुकुळ ३०५, ३३३
यवनिका (राजा) ४३४
यल्लाद हल्लि ३२४
यादव (कुळ) ३०५, ३०७, ३०८, ३१७, ३१६ ३२४, ३२७, ३४७
यादव (वंश) ३१७, ३३६
यान्त देव ४१३
यिडगूर ४३२
यिडुवणि ६४६
युद्धर ३१३
येक्कळ ३१३
येचियक्क ३०८
योगदण्डाधिप ३२२
योगेश्वर (दण्डनायक) ३२२
योजग श्रेष्टी ६०४
योद्दरे नाक ३३३

र

रकसिमय्य ३४७
रक्कस गङ्ग ३२६
रट्ट (राष्ट्रकूट) ३६६
रत्नकीर्ति ६१७, ६४३
रत्नपाळ ३६०
रत्नसिद्धान्त देव ४३२
रम्मार सिंह ३२०
रविसेट्टि ४५२
रसिन्द्र ३०५
राचमल्ल ३२६
राजगिरि ७३६, ७४३
राजनाथ देव ५८५
राजनारायण शम्भुवराज ५५७
राजय्यदेव महाअरसु ६७७
राजराज ४३४
राणपुर ६३२
राणुगि ४८१
रामकीर्ति ३३२, ७०२
रामगौण्ड ५८६
रामचन्द्र ६६७
रामचन्द्र मुनि ३७०, ३७१
रामचन्द्र मलधारि ५४४, ५५६, ५५८ ५७०, ५७४
रामचन्द्र, (रामदेव यादव) ४२६, ५११ ५३५, ५३८ ५४०, ५४१
रामणन्दि व्रतिपति ३१३, ४३१
रामदेव ३१२, ३४३
रामनगर ८४३
रामिगौडि ५६५
रामेश्वर देव ३३३
रायनारायण ४६०
रायनारायण आहवमल्ल ४०८
रायबाग ३१४, ४४६
रायमल्ल (राजमल्ल) ६५३
रायरायपुर ३०५
रावणन्दि सिद्धान्ती ४०८
रुम्मिणी ३०५
रुद्रभट ४७०
रूपनारायण चैत्य ३३४
रूपनारायण जिनालयाचार्य ३२०
रूपनारायण देव ४०२
रेच, रेचि, रेचरस ४०८, ४४८, ४६५
रेब्ब ४४६, ४४६
रेबुक ४५२
रेसब्बे ४०८
रोडेय देव ३२६
रोहो ४४७, ४८७

ल

लक्ना देवि ३४७, ३६४, ४५३
लक्ष्मण या लक्ष्मीदेव प्रथम ४७०
लक्ष्मिणी ६३६

लक्ष्मी ३०५ क
लक्ष्मीदेव प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ ४७०
लक्ष्मीधर ३२६
लक्ष्मीसेन भट्टारक ५८८, ७२३, ७६६
लक्ष्मीसेन मुनीश्वर ७२०
लच्चल देवी ४०८
लच्छव्वे ४२७
लन्दन ३३६
ललितकीर्ति ४४८, ४५६, ५६०, ६३४, ६८०
लल्लाक ३०५ क
लल्लुक ३०५
लाट ३२५, ३४१, ३३७
लापू ६२८
लाहड (साधु) ४१७
लाहड ३१७
लूङ्कर देव ६३६
लोक गावुण्ड ३५१, ३७७
लोकनन्द (मुनि) ३७१
लोकावत ३०५
लोहाचार्य (अन्वय) ७५६

व

वक्कलेरि ४५२
वक्रगच्छ ३२६
वक्रग्रीव ५८५
वक्रग्रीवर्ष्य ३१६
वक्रग्रीवाचार्य ३०५, ३४७, ५८५
वङ्ग ३१३
वज्रनन्दी ३०५, ३७३, ३८०, ५०४
वट्टिग ३१७
वम्मळदेव ३४७
वयळूनाड ३०८
वराङ्गना (ग्राम) ६१६
वराट ३१३
वर्धमान (मुनि) ५८५, ६६७
वर्धमान देव ३४७
वर्धमान (साधु) ४१३
वळवाड (स्थान) ३२०, ३३४
वल्लमराज ६७७
वशिष्ट (गृहपति) ४७०
वसन्तकीर्ति ६६७
वसुनन्दि ६६७
वस्तुपाळ ३६१
वाचरस ३०७
वाणद वलिय ४७८
वादिभूषण ७०२
वादिराज ३१६, ३२६, ३२७, ३४७, ३७३, ५०३, ६१०, ६६७
वादिराजेन्द्र ३०५
वादीभ सिंह ३०५, ३२६
वामन ३४७

वाळमान्वय ३०५ क
वासव ३०५ क
वासन्तिकादेवी ३०५, ३०८, ३२४
वासुदेव ३२०
वासुपूज्य सिद्धान्त देव, ३२६, ३२७, ३४७, ३७३, ३७६, ३८०, ४५५, ४६६, ५८२, ६६७
विक्रम ४०८
विक्रम गङ्ग ३०८, ३२४, ३२७
विक्रम शान्तर ३२६
विक्रमादित्य ३१३, ३८६
विजयकीर्ति ५६०, ५६८, ७०२
विजयनगर ५८५, ५६४, ६१६, ६२०
विजयप्प ८१०
विजयप्पैय्य ७२०
विजयदेव ३७३
विजयनारायण ३२४
विजय भट्टारक ३०५
विजय भूपति ६१६, ६२०
विजयमुनि ३१६
विजयराज ३०५ क
विजयादित्य देव ३२०, ३३४
विजय समुद्र ४४८
विदिरुनाडु ६५६
विद्यानन्द उपाध्याय ६६३
विद्यानन्द मुनीश्वर ६६१
विद्यानन्द स्वामी ४०१, ६६७
विनयादित्य ३०८, ३४७, ३७३ ३७६, ४११, ४४८ ४६६
विमळकीर्ति ६४०
विमळचन्द्र ४१०
विमलचन्द्राचार्य ३०५
विवीके ३३६
विरूपाक्ष राय ६६७
विशाख ६६७
विशालकीर्ति ६६७
विश्वभूषण (भट्टारक) ७५५
विष्णु ३०५, ३०८, ३४७, ४११
विष्णु (भूप) ३०७, ३१६, ३२४, ३२७, ३५६, ३७३ ४५२, ४६६
विष्णु (दण्डाधिनाथ) ३०५
विष्णुवर्धन देव ३०५, ३०८, ३१५ ३१८, ३१६, ३२४ ३२७, ३३३, ३५१ ३६४, ४४८, ४६६
विष्णुवर्धन (पोय्सळ) ३०५
विष्णुसमुद्र ३०८
विष्णु सामन्त (विट्टिदेव) ३५६

विष्णु सामन्त ३१५
वीरगङ्ग ३०७, ३०८, ३२८, ३३३
वीरनन्दि ३३५, ४७८, ६६७
वीर नरसिंहवंग नरेन्द्र ६८०
वीर वल्लाल ४२०
वीर वल्लाल देव ४१२, ४२४, ४२५
४२६, ४२७, ४५६
४५८
वीर सेन ५११, ५६४, ५८३
वीर सेन पण्डितदेव ३२२
वीरोव ४२२
वुद्धि ३१३
वुल्हा (साधु=साहु) ३६१
वृषभदास वर्णी ६६३
वेङ्कटदेव राय ६६१
वेग्गडे ३२१
वैद्य दण्डनाथ ५८१, ५८७
वैद्य सेनवोव ४६८
वेणुग्राम ४४८
वेणूर ६८६, ६६०
वेत्तुदयण ३०५
वोर्ण ३१६
वोण्डादि सेट्टिय ३०५
वोदण गौड ३३८

श

शक्रन ३१३
शत्रुञ्जय ६५६, ६६५, ६६६, ६७५,
६७८, ६८२, ६८३, ६८५,
६६२–६६६, ७०१. ७०३,
७११, ७१४, ७१५, ७२७–
७३१, ७३४–७३६, ७३८,
७४०, ७४५, ७४६, ७५४,
७५६–७६३, ७६५, ७६७–
७७७, ७७६–७६२, ७६४,
७६८, ८०० –८०३,
शब्दावतार ६६७
शर्व्व ३३२
शशाङ्क पुर ३५१
शङ्कम ४०८
शङ्कर सामन्त ४०८
शंकिस ३२२
शाकम्भरी ३३२
शान्त ३४७
शान्तण गौड ३३८
शान्तरादित्य ३४६
शान्तर कुल ३४६
शान्तलदेवी ३५३, ३७६, ४११

शान्तिकीर्ति देव ६७३
शान्तिदेव ४१०
शान्ति नाम ३०६
शान्तियक ३०५, ३१३
शान्तियण ३४७
शान्तिवर्मा ४५४
शालिग्राम ७६६
शालिपुर ३३२
शालुवेन्द्र ६५४
शाहाज्याहां (शाहजहां) ७०२
शिवगङ्गेशाद्रि ३१५
शिवबुद्ध ४५३
शिवराज ३२८
शीलहार (वंश) ३२०, ३३४
शुक्रवार दरवाजा ३२०
शुभकीर्ति पण्डित देव ४८६, ६६७
शुभचन्द्र ४३३, ४४६, ४४८, ४४६, ४५४, ४५६; ४६५, ४७०, ५६२, ६१७, ६२१, ७०२
शुभनन्दि सैद्धान्तिक ५२४
श्रयकुळ ३१२
श्रवणबेल्गोला ३०३, ३०४, ३०६, ३१०, ३११, ३२३, ३३५, ३४८, ३५४, ३५५, ३६२, ३६३, ३८८, ३६३, ३६५–४००, ४०३–४०७, ४२८–४३०, ४६१, ४६३, ४७५, ४६३, ४६८, ५०१, ५०५, ५१२, ५१५–५१७, ५२०, ५२७, ५२८, ५३३, ५४३, ५५२, ५६५, ५७२, ५७३, ५७५, ५६१, ५ ६, ६०२, ६०७, ६१६, ६२५, ६३५, ६६१, ६६६–६७१, ७०६, ७१२, ७१३, ७१८, ७२२, ७२६, ७३२, ७५०, ७५२, ७५७, ७६६, ८०४–८३०
श्रीकण्ठव्रतिप ४५७
श्रीधर ३२४
श्रीधर प्रथम, द्वितीय, तृतीय ४७०
श्रीधर पर्वत ५५५
श्रीनन्दि भट्टारक ४६०, ५०८
श्रीनायक ३१५
श्रीपति ६०५
श्रीपतिराज ६७७
श्रीपाठक ३३५

श्रीपालत्रैविद्यदेव ३०५, ३१६, ३१६, ३२६, ३२७, ३४७, ३५१, ३७३, ३७६
श्रीमुख ३३८
श्रीवल्लभदेव ३२६
श्रीविजय ३२६
श्रीरङ्गनगर ६६७
श्रीराव ३१७
श्रीसमुदाय ५१४
श्रीसंघ (मूलसंघ) ५२४
श्रुतकीर्ति ५८४
श्रुतमुनि ५६३, ६००, ६१०
श्रेयांस ३२६
श्रेयांस भट्टारक ५२६
श्लोकवार्तिकालंकार ६६७

ष

षडानन ३०८

स

सकलकीर्ति ७०२
सकलचन्द्रदेव ४२४, ४३१, ५८२
सत्याश्रय ३१३, ४०८
सत्यभामा ३०५
सत्यवाक्कुल ३०८, ३१६, ३२२, ३२६
सपादलक्ष ३३२
सपादलक्षभूमि ३५६
सबरसिङ्गि सेट्टि ४४३
समय दिवाकर ४१०
समन्त भद्र स्वामी ३०५, ३१३, ३१६, ३२४, ३२६, ३३७, ४१०, ६६७
समिद्धेश्वर ३३२
सवगोन ३०७
सवपते ३३६
सरगुरु ६१८
सरस्वती गच्छ ७०२
सरोत्रा ७०६—७०८
सल ३७६
सह्याचल ३०५
संकयनायक ४२३
संकर सेट्टि ३७३
सङ्कगावुण्ड ३८६, ४३६
सङ्गिराय वोडेयर ६५४, ६५५, ६५६
संगीतपुर ६५४—६५६
संघवी ७०२
सागरनन्दि सिद्धान्तदेव ३२४, ४६५
साधा ३६१
साधु हालण ४१३
साधुसाल्हे ३४३
सान्तलिगे ३२६
सान्तवेन्द्र ६६७
सान्तियक्क ४२३

सामन्त कञ्जासन ३१५
सामन्त भट्ट ३५६
सामन्त भीम ३५६
सामन्त सोवेयनायक ३१८
सामन्त लक्ष्मण ३३४
सावड ३०५ क
सावदेव ३४६
सामन्तदेव गावुण्ड
सावन्त मारय्य ४५०
सावन्त सोम ३१८
साविमल ३०८
सारस्वत गच्छ ५८५
सालिवाहण ३४६
साळुव कृष्णदेव ६६७
साळुव देवराय ६६७
साळुवेन्द्र ६५६
साल्वमल्लिराय ६६७
साल्वमल्ल ६७४
साल्हू ३३६
साहस गङ्ग (होय्सळ) ४११
साहि आळम्मक (अळप् खां) ६१७
साहणि विट्टिग ३५२
सांभर ३३२
सिकन्दर सुरत्राण ६६७
सिक्का ७२५
सगेनाड ३७६
सिंगाम्वे ४५३
सिद्धराज ३३२
सिद्धान्तकीर्ति ६६७
सिद्धान्तदेव ३०७, ३१३, ३२०
सिद्धान्तदेव मुनिप ६१०
सिद्धान्ति देव ६२१
सिद्धान्तियतीश ५६४
सिद्धान्ताचार्य ६०५
सिद्धार्थ ३१२
सिङ्गलिक ३०५
सिङ्गिदेव ३४६
सिन्दगेरेय ३०७, ३०८
सिन्धराज ३०५ क
सिहनृप ३४६
सिंह कीर्ति ६६७
सिंहण देव ४६०
सिंहनन्द्याचार्य ३२६, ३४७, ३७३, ५६६, ५८५ ६६७, ८३२
सिंहळ ३०५
सियाळवेट ४६२, ४८८, ५०६, ५३२
सिवने ३४६
सिरिचन्द्र ३४३
सिरियण्ण ५६६
सिरोही ६७६, ६८७, ७१६, ७१७ ७२१, ७३३

सीगेनाड ३१६
सीली ३०५ क
सुङ्कहेग्गडे ३६०
सुगन्धवर्ति वारह ४७०
सुगुणि देवी (कोङ्गाल्व) ५६०
सुग्गगौण्ड ३१८
सुग्गियब्बरसि ३१३
सुन्ध (पर्वत) ५०७
सुदत्त मुनिप ४५७
सुमतिकीर्ति ७०२
सुमति भट्टारक ३७३
सुल्तान हुशंगगोरी ६१७
सूर्माक ३०५ क
सूरनहल्लि ३२४
सूरस्थ गण ३१८, ४६०
सूर्यचमूपति ४४८
सेउणचन्द्र (द्वितीय, तृतीय) ३१७
सेउणदेव ३१७
सेट्टरनागप्प ३३८
सेन (राजा) ४४६, ४५३
सेन (रट्ट) ४४६
सेन (कालसेन) ४५४
सेनगण ३२२, ५११, ५३८, ६११ ७६६
सेन बोवमारय्यने ३३३
सेनुवपुर ३४६
सोम ३१३, ३६४, ४०८, ४४८ ४५७, ५२६
सोमण्णगौड ३३८
सोमदण्णायक ४६०
सोमदेव ४१८
सोमनाथ ३२४
सोमब्बे ४३३
सोमल देवी ४३३, ४५१, ४५५, ४५६
सोमय ४६४
सोमव्य ३२८
सोमव्य (हेग्गडे) ४६०
सोमेश ४६६
सोमेश्वर ४०८
सोमेश्वर तृतीय (चालुक्य) ३१४
सोमेश्वर चतुर्थ ४३५
सोवरस ३०७
सोविदेव ३७७, ३८६, ४०८
सोविसेट्टि ३६४
सोरब ३२२, ४५७
सोसेवूर ३०८, ३६७
सौगत ३१६
सौम्यनाथ ३०५
सौंदत्ति ४७०
स्थिरमति ३०५ क

हगरटगे ४४६
हट्ण ३६४
हडपवल्ल ३२०
हनसोगे (बलि) ३७२, ५२६, ५५१
५६०
हनसोगे (शाखा) ४४६
हनेयव्वे ३४७
हरवे ६५२
हरि ३४७
हरियप्प वोडेयर ५५८, ५५६, ५६५
हरिहरदेवी ३५६, ३८४
हरिहर राय ५५५, ५७७–५७६,
५८८, ५८६, ५६४,
५६८, ६०१, ६०४,
६०५, ६११, ६१५,
६२०
हरिहर द्वितीय (बुक्क द्वितीय) ५८१
हरिहरेश्वर ५८५
हर्य्यले (महासती) ३८३
हलदारे ६७३
हलसिगे ३०७, ३२४, ३३६, ३३३
हलेवीड ४२६, ४६६, ५१४, ५२४
५४८, ५४६, ७१०
हलेसोरव ५६३, ८३८
हल्लिय ३०७
हस्तिनापुर ५६४
हस्सन ३१६
हर्षकीर्ति ६४५
हागल हल्लि ७२४
हादिकल्लु ६१२
हानुङ्गल गोण्ड ३१८, ३२८
हानुङ्गल ३०७, ३३३, ३३६, ३५१
हाविन हेरिलगे ३२०
हालू ३६१
हिन्दण तोट ३३८
हिमशीतळ ३१६
हिरिय केरे ३३३, ३३८
हिरिय केरेयकेलगण ३०५
हिरिय दण्डनायक ४६६
हिरिय महलिगे ४३८
हिरे आवलि ३२२, ५३५, ५३८,
५४१, ५४४, ५४७,
५५६, ५५६, ५५८,
५५६, ५६२, ५६४,
५७०, ५७४, ५८३,
५८६, ५६२, ५६४,
५६५, ५६८, ६०१,
६०४, ६०६, ६११,
६१३, ६१४

हीरे हल्लि ४६६, ५०४
हुच्चप्प ७१०
हुम्मच ३२६, ४६७, ४६४, ४६७, [illegible], ५०३, ५०६, ६६७
हुम्मट वाति ७०२
हुलियेर पुर ३५६
हुलिगेरे ४३५
हुलुहल्लि ५७१
हुल्लीगेरी ३७६
हूविन वाग ३१४
हेगडि चक्कय्य ३५३
हेगड ३१६
हेगो[illegible] ३५६
हेग[illegible] ३२१
हेगरे [illegible]४, ५४५, ६७७
हेगणे चक्कण ३५६
हेरणगेरे ३५६
हेब्बिडि ३१८
हेमकीर्ति ६४०, ६४३
हेमचन्द्र ८३८
हेमचन्द्र भट्टारक ५६०
हेरगू ३३६, ३८५, ३८६
हेरिके ३३३
हेरेकेरी ३४६, ४८४, ४८६
हेगडे ३२८
हेता ३०५ क
होगेकेरी ६५४, ६५५, ६५८
होन ३२४
होन्न ३५६, ६७३
होन्न गोडण्ड ४६६
होन्नमाम्बिका ६८०
होय्सल ३१८, ३२७, ३३६, ३४७, ४६५, ६६७
होय्सळ गाहुण्ड ३५१
होय्सळदेव ३०७, ३१६, ३२४, ३२७
होय्सल विष्णु ३१८
होम्बुच्च ५६७
होली ६१७
होलेयब्बे गेरेय ३०५
होल्लकेरे ३३८, ४६०
होसकेरी ३१६
होसतूर ३७८